SEERATE MUSTAFA (HINDI)

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़सीन ज़िन्दगी के ह़ालाते मुबारका पर
मुश्तमिल मदनी गुलदस्ता

तख़रीज शुदा

सीरते मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم

-: मोअल्लिफ़ :-

शैखुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي

MC 1226

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

*तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब "**सीरते मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" **उर्दू** ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस किताब में अगर किसी जगह **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **Email** या **Whats App** ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311

Email : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ॢ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हसीन ज़िन्दगी के हालाते मुबारका पर मुश्तमिल मदनी गुलदस्ता

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

मोअल्लिफ़

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी

عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

शो'बए तख़रीज (दा'वते इस्लामी)

: नाशिर :

मक्तबतुल मदीना, अह़मदाबाद-1

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله

नाम किताब : सीरते मुस्तफ़ा (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)

मोअल्लिफ़ : शैखुल हदीस हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए तख़रीज)

सिने तबाअ़त : जमादिल अव्वल, सि. 1435 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, अहमदाबाद - 1

: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :

फ़ेहरिस

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

"बना आशिक़े मुस्तफ़ा या इलाही" के अठ्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "18 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : "अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।" (الجامع الصغیر،ص۵۵۷،الحدیث۹۳۲۶، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

दो मदनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल इम्कान इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़्ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर

अन्डर लाइन करूंगा ﴾14﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इल्मे दीन रोज़ाना कम अज़् कम चार सफ़्हात पढ़ कर इल्मे दीन हासिल करने के सवाब का हक़दार बनूंगा ﴾15﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾16﴿ इस ह़दीसे पाक "**تَهَادَوْا تَحَابُّوْا**" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी" (مؤطا امام مالك، ج۲،ص۴۰۷، رقم: ۱۷۳۱،دارالمعرفة بيروت) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾17﴿ इस किताब के मुत़ालए का सारी उम्मत को ईसाले सवाब करूंगा ﴾18﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

*अच्छी अच्छी **निय्यतों** से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** और **पेम्फ़लेट मक्तबतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं।*

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये

बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है । तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए । हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक, 1425 हि.

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों की हिदायत और रहनुमाई के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन अपने मुक़द्दस अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को मबऊ़स फ़रमाता रहा और सब से आख़िर में उस ने अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया जो अ़रब व अ़जम में बे मिस्ल और अस्ल व नस्ल, ह़सब व नसब में सब से ज़ियादा पाकीज़ा हैं, अ़क़्ल व फ़िरासत व दानाई और बुर्दबारी में फ़ज़ूं तर, इ़ल्म व बसीरत में सब से बरतर, यक़ीने मोह़कम और अ़ज़्मे रासिख़ में सब से क़वी तर, रह़मो करम में सब से ज़ियादा रह़ीम व शफ़ीक़ हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन के रूह़ व जिस्म को मुसफ़्फ़ा और ऐ़ब व नक़्स से इन को मुनज़्ज़ा रखा, ऐसी ह़िक्मत व दानाई से इन को नवाज़ा कि जिस ने अन्धी आंखों, ग़ाफ़िल दिलों और बहरे कानों को खोल दिया अल ग़रज़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसे फ़ज़ाइल व मह़ासिन और मनाक़िब के साथ मख़्सूस किया है जिस का इह़ात़ा मुमकिन नहीं।

इन में बा'ज़ औसाफ़ वोह हैं कि जिन की तसरीह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में फ़रमा दी कि आप को अपनी मख़्लूक़ में अ़ला वजहिल कमाल जाहो जलाल के साथ ज़ाहिर फ़रमाया और मह़ासिने जमीला, अख़्लाक़े ह़मीदा, मनासिबे करीमा, फ़ज़ाइले ह़मीदा से मुम्ताज़ फ़रमाया, आप के मरातिबे आ़लिया पर लोगों को ख़बरदार किया और उन्हें आप के अख़्लाक़ व आदाब की ता'लीम दी और बन्दों को उन पर ए'तिसाम व इल्तेज़ाम के वुजूब की तल्क़ीन की और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त और पैरवी का हुक्म दिया, इरशाद फ़रमाया :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ۲۱،الاحزاب:۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।*

सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِى इस आयते मुबारका के तह्त फ़रमाते हैं : इन का अच्छी तरह इत्तिबाअ़ करो और दीने इलाही की मदद करो और रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का साथ न छोड़ो और रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर चलो येह बेहतर है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से मरवी है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उस की ख़्वाहिश मेरे लाए हुए के ताबेअ़ न हो जाए।

(مشكاة المصابيح، كتاب الايمان، باب الاعتصام...الخ، ج١، ص٥٤، الحديث:١٦٧)

और एक ह़दीस में इरशाद है, जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشكاة المصابيح، كتاب الايمان، باب الاعتصام...الخ، ج١، ص٥٥، الحديث:١٧٥)

इन अह़ादीस से वाज़ेह़ हुवा कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की पैरवी ईमान के कामिल होने और जन्नत में आप का क़ुर्ब पाने का ज़रीआ़ है और हर मुसलमान येह ख़्वाहिश करेगा कि वोह इन ने'मतों से सरफ़राज़ हो लिहाज़ा इसे चाहिये कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्वाल, अफ़्आ़ल, ह़ालात और सीरते त़य्यिबा का बग़ौर मुत़ालआ़ कर के अपनी ज़िन्दगी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त और आप की सुन्नतों पर अ़मल करते हुए गुज़ारे।

सीरते त़य्यिबा पर हर ज़माने के उ़लमा ने अपने अपने ज़ौक़ और माह़ोल की ज़रूरिय्यात के मुत़ाबिक़ काम किया लेकिन येह वोह बह़्रे ना पैदा कनार है जिस में हर एक को बिसात़ भर ग़व्वासी के बा वुजूद अपने इ़ज्ज़ का ए'तिराफ़ रहा, हुनूज़ येह सिल्सिलए मुबारका जारी है अ़रबी ज़बान के इ़लावा उर्दू ज़बान में

भी इस मौज़ूअ़ पर कई कुतुब तस्नीफ़ की जा चुकी हैं। ज़ेरे नज़र किताब **"सीरते मुस्तफ़ा"** रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा ज़िन्दगी की अगर्चे एक मुख़्तसर झलक पेश करती है, ताहम इस किताब में ह़याते रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुख़्तलिफ़ पहलूओं को निहायत ख़ूब सूरती से जामेअ़ अन्दाज़ में पेश किया गया है जिन का मुत़ालआ़ हर मुसलमान के लिये निहायत मुफ़ीद है।

"दा'वते इस्लामी" की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** इस मदनी गुलदस्ते को दौरे जदीद के तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुए पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है, जिस में मदनी उ़लमाए किराम دَامَ فُيُوْضُهُم ने दर्जे ज़ैल काम करने की कोशिश की है :

✿ किताब की नई कम्पोज़िंग, जिस में रुमूज़े अवक़ाफ़ का भी ख़याल रखने की कोशिश की गई है ✿ एह़तियात़ के साथ मुकर्रर प्रूफ़ रीडिंग ताकि अग़्लात़ का इम्कान कम हो ✿ दीगर नुस्ख़ों से तक़ाबुल और ह़वाला जात की ह़त्तल मक्दूर तख़्रीज ✿ अ़रबी इबारात और आयाते क़ुरआनिया के मतन की तत़्बीक़ व तस्ह़ीह़ ✿ और आख़िर में माख़ज़ व मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नामों, इन के सिने वफ़ात और मत़ाबेअ़ के साथ ज़िक्र कर दी गई है।

इस किताब को ह़त्तल मक्दूर अह़सन अन्दाज़ में पेश करने में उ़लमाए किराम ने जो मेह़नत व कोशिश की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़बूल फ़रमाए, इन्हें बेहतरीन जज़ा दे और इन के इ़ल्म व अ़मल में बरकतें अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शो'बए तख़्रीज मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم

الـحـمد للّٰه نحمده و نستعينه و نستغفره و نـؤمن به و نتوكل عليه و نعوذ باللّٰه من شرور انـفسنا و من سيئات اعمالنا من يهد اللّٰه فلا مضل له و من يضلله فلا هادى له و نشهد ان لآ الٰـه الا اللّٰه وحده لا شريک له و نشهد ان سيدنا و مولانا محمدا عبده و رسوله. اللّٰهم صل على سيدنا و مولانا محمد و علٰى اٰله و صحبه اجمعين ابد الآبدين برحمتک يا ارحم الراحمين.

शरफ़े इनतिसाब

हुज़ूर शहनशाहे कौनैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अ़ज़मत में एक नाकारा उम्मती का नज़रानए अ़क़ीदत

یا رسول اللہ! بہ درگاہت پناہ آوردہ ام

ہیچو کاہے عاجزم، کوہِ گناہ آوردہ ام

ख़ाक बोसे ना'लैने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल आ'ज़मी عُفِيَ عَنْهُ

अ़र्ज़े मुअल्लिफ़

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस جَلَّ جَلَالُہٗ का बे शुमार शुक्र है कि मेरी एक बहुत ही देरीना और बहुत बड़ी क़ल्बी तमन्ना पूरी हो गई कि बहुत से मवानेअ़ के बा वुजूद **हुज़ूरे** अक़्दस, शहनशाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की सीरते मुक़द्दसा के अहम उ़न्वानों पर येह चन्द अवराक़ लिखने की मुझे सआ़दत नसीब हो गई। فالحمد للّٰہ علی احسانہ

येह किताब अगर्चे अपने मौज़ूअ़ के ए'तिबार से बहुत ही मुख़्तसर है लेकिन بِحَمْدِاللّٰہِ تَعَالٰی सीरते नबविय्या के ज़रूरी मज़ामीन की एक ह़द तक जामेअ़ है, जिस को मैं चमनिस्ताने सीरत के गुलहाए रंगारंग का एक मुक़द्दस और ह़सीन गुलदस्ता बना कर **"सीरते मुस्तफ़ा"** के नाम से नाज़िरीन की ख़िदमत में पेश करने की रूहानी मसर्रत ह़ासिल कर रहा हूं।

मुख़्तसर क्यूं ?

पहले ख़याल था कि सीरते मुक़द्दसा के तमाम उ़न्वानों पर कई जिल्दों में एक मबसूत़ व मुफ़स्सल किताब तह़रीर करूं मगर बचन्द वुजूह मुझे अपने इस ख़याल से रुजूअ़ करना पड़ा।

अव्वलन : येह कि मुझ से पहले हर ज़माने में और हर ज़बान में हज़ारों ख़ुश नसीबों को **हुज़ूर** रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मुक़द्दस सीरत पर किताबें लिखने की सआ़दत ह़ासिल हुई और اِنْ شَآءَاللّٰہ تَعَالٰی क़ियामत तक हज़ारों लाखों ख़ुश बख़्त मुसलमान इस सआ़दत से सरफ़राज़ होते रहेंगे। बहुत से ख़ुश क़िस्मत मुसन्निफ़ीन हज़ारों सफ़ह़ात पर कई कई जिल्दों में बड़ी

बड़ी ज़ख़ीम किताबें इसी मज़्मून पर लिख कर सआ़दते कौनैन से सरफ़राज़ और दौलते दारैन से मालामाल हो गए और इस में शक नहीं कि इन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने अपनी इन ज़ख़ीम किताबों में सीरते नबविय्या के तमाम अहम उ़न्वानों पर सैर ह़ासिल तफ़ासील फ़राहम की हैं लेकिन फिर भी इन में से कोई भी येह दा'वा नहीं कर सकता कि हम ने शहनशाहे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सीरते पाक के तमाम गोशों को मुकम्मल कर के उस के तमाम जुज़्इय्यात का इह़ात़ा कर लिया है क्यूं कि सीरते नबविय्या का हर उ़न्वान वोह बह़्रे ना पैदा कनार है कि इस को पार कर लेना बड़े बड़े अहले इ़ल्म के लिये उतना ही दुश्वार है जितना कि आस्मान के चांद सितारों को तोड़ कर अपने दामन में रख लेना।

अब ज़ाहिर है कि जो काम इ़ल्म व अ़मल के उन सर बुलन्द पहाड़ों से न हो सका भला मुझ जैसे नाकारा इन्सान से इस काम के अन्जाम पा जाने का क्यूंकर तसव्वुर किया जा सकता है? इस लिये मुझे इसी में अपनी ख़ैरियत नज़र आई कि सिर्फ़ चन्द अवराक़ की एक किताब सीरते नबविय्या के मौज़ूअ़ पर लिख कर मुसन्निफ़ीने सीरत की मुक़द्दस फ़ेहरिस्त में अपना नाम लिखवा लूं और उन बुज़ुर्गों की सफ़े नआ़ल में जगह पा लेने की सआ़दत ह़ासिल कर लूं।

सानियन : येह कि इन्सानी मसरूफ़ियात के इस दौर में जब कि मुसलमानों को अपनी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी से बिल्कुल ही फ़ुरसत नहीं मिल रही है और इ़ल्मी तह़क़ीक़ात से इन की हिम्मतें कोताह और दिल चस्पियां ना पैद हो चुकी हैं और ज़ेह्न व ह़ाफ़िज़े की क़ुव्वतें भी काफ़ी ह़द तक माऊफ़ व कमज़ोर हो चुकी हैं, आज कल के मुसलमानों से येह उम्मीद फ़ुज़ूल नज़र आई कि वोह त़वील व मुफ़स्सल और मोटी मोटी किताबों को पढ़ कर उस के मज़ामीन को अपने ज़ेह्न व ह़ाफ़िज़े में मह़फ़ूज़ रख सकेंगे। लिहाज़ा इस ह़ाल व माह़ोल का लिह़ाज़ करते हुए मेरे ख़याल में येही मुनासिब

मा'लूम हुवा कि सीरते नबविय्या के मौज़ूअ़ पर एक इतनी मुख़्तसर और जामेअ़ किताब लिख दी जाए जिस को मुस्लिम त़बक़ा अपने क़लील तरीन अवक़ाते फ़ुरसत में सिर्फ़ चन्द निशस्तों के अन्दर पढ़ डाले और इस को अपने ज़ेहन व ह़ाफ़िज़े में मह़फ़ूज़ रखे।

सालिसन : येह कि मेरे नज़्दीक इस मौज़ूअ़ पर मबसूत़ व मुफ़स्सल किताब की तदवीन व तालीफ़ तो बहुत ही आसान काम है मगर इस की त़बाअ़त व इशाअ़त का इनतिज़ाम करना ग़रीब त़बक़ा उ़लमा के लिये इतना ही मुश्किल काम है जितना कि हिमालया की बुलन्द चोटियों को सर कर लेना, क्यूं कि मुसलमानाने अहले सुन्नत का मालदार त़बक़ा लग़्व और फ़ुज़ूल कामों में तो लाखों की दौलत उड़ा देने को अपने लिये इतना ही आसान समझता है जितना कि अपनी नाक पर से मख्खी उड़ा देने को, लेकिन किसी दीनी व मज़्हबी किताब की त़बाअ़त या इस की ख़रीदारी में इस के लिये एक नया पैसा लगा देना इतना ही दुश्वार और कठिन काम है जितना कि अपनी खाल को उतार कर पामाल कर देना। येह वोह तल्ख़ ह़क़ीक़त है कि जिस की तल्ख़ी से बार बार तजरिबात के काम व दहन बिगड़ चुके हैं लिहाज़ा इन तजरिबात की बिना पर मैं ने येही बेहतर समझा कि मैं बस इतनी ही ज़ख़ीम किताब लिखूं जिस की त़बाअ़त व इशाअ़त के अख़्राजात का सारा बार मैं ख़ुद ही उठा सकूं और मुझे किसी के आगे दस्ते सुवाल दराज़ करने की ज़रूरत न पड़े।

सबबे तालीफ़

अव्वलन : तो ख़ुद एक मुद्दते दराज़ से येह नेक तमन्ना मेरे दिल की गहराइयों में मोजज़न रहती थी कि मैं अपने क़लम से हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़िन्दगी पर कोई किताब लिख कर इन बुज़ुर्गाने मिल्लत का कफ़्श बरदार बन जाऊं जिन्हों ने सीरते नबविय्या की तस्नीफ़ व तालीफ़ में अपनी उ़म्रों का सरमाया सर्फ़ कर के ऐसी तिजारते आख़िरत की, कि इस के नफ़्अ़ में उन्हें "رضى الله عنهم ورضوا عنه" की दौलते दारैन का

ख़ज़ाना मिल गया। (या'नी अल्लाह तआ़ला उन से खुश हो गया और वोह अल्लाह तआ़ला से खुश हो गए।)

फिर मज़ीद बरआं मेरी तस्नीफ़ात के क़द्रदानों ने भी बार बार तक़ाज़ा किया कि सीरते मुबारका के मुक़द्दस मौज़ूअ़ पर भी कुछ न कुछ आप ज़रूर लिख दें और उन करम फ़रमाओं का येह मुख़्लिसाना इस्रार इस ह़द तक मेरे सर पर सुवार हो गया कि मैं इस से इन्कार व फ़िरार की ताब न ला सका।

फिर "समन्दे नाज़ पे इक और ताज़ियाना हुवा" कि अग़्यार ने बार बार येह त़ा'ना मारा कि उ़लमाए अहले सुन्नत मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का दा'वा तो करते हैं मगर उर्दू ज़बान में सीरते नबविय्या के मौज़ूअ़ पर इन लोगों ने बहुत ही कम लिखा, बर ख़िलाफ़ इस के मुल्क की दूसरी जमाअ़तों के क़लम कारों ने इस मौज़ूअ़ पर इस क़दर ज़ियादा लिखा कि उर्दू किताबों की मार्केट में सीरत की बहुत किताबें मिल रही हैं जो सब उन्ही लोगों के ज़ोरे क़लम की रहीने मिन्नत हैं।

येह हैं वोह अस्बाब व मुह़र्रिकात जिन से मुतअस्सिर हो कर अपनी ना अहली और इ़ल्मी सरमाया से इफ़्लास के बा वुजूद मुझे क़लम उठाना पड़ा और कसरते कार व हुजूमे अफ़्कार के मह़शर सतां में अपनी गूना गूं मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद चन्द अवराक़ का येह मज्मूआ़ पेश करना पड़ा।

इस किताब को मैं ने ह़त्तल इमकान अपनी त़ाक़त भर जाज़िबे क़ल्बो नज़र और जामेअ़ होने के साथ मुख़्तसर बनाने की कोशिश की है अब येह फ़ैसला नाज़िरीने किराम की निगाहे नक़्दो नज़र का दस्त नगर है कि मैं अपनी कोशिशों में किसी ह़द तक काम्याब हुवा या नहीं ?

हुजूमे मवानेअ़

यकुम जुमादल उख़्रा सि. 1395 हि. का दिन मेरी तारीख़े ज़िन्दगी में यादगार रहेगा क्यूं कि इस्तिख़ारा के बा'द इसी तारीख़ को मैं ने इस किताब की "**बिस्मिल्लाह**" तह़रीर की मगर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान कि अभी चन्द ही सफ़ह़ात लिखने पाया था कि बिल्कुल ही ना गहां रियाह़ी दर्दे गुर्दा का इतना

शदीद दौरा पड़ा कि मैं अपनी ज़िन्दगी से मायूस होने लगा और टांडा से मकान जा कर मुसल्सल एक माह तक साहिबे फ़राश रहा। फिर रमज़ान सि. 1395 हि. में मरज़ से इफ़ाक़ा हुवा तो नक़ाहत ही के आलम में ब हालते रोज़ा इस काम को शुरूअ़ किया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! कि इस की बरकत से रोज़ बरोज़ सिह़्ह़त व ताक़त में इज़ाफ़ा होता गया और काम आगे बढ़ता रहा। मगर फिर 3 शव्वाल सि. 1395 हि. को अचानक आशोबे चश्म का आ़रिज़ा लाहि़क़ हो गया और फिर काम बन्द हो गया। एक माह के बा'द लिखने पढ़ने के क़ाबिल हुवा तो जाड़ों का छोटा दिन, दोनों वक़्त का मद्रसा, ख़ुतूत के जवाबात, अह़बाब से मुलाक़ातें, इन मशाग़िल की वजह से तस्नीफ़ व तालीफ़ के लिये दिन भर क़लम पकड़ने की फ़ुरसत ही नहीं मिलती थी, मजबूरन सर्दियों की रातों में लिहाफ़ ओढ़ कर लिखना पड़ा। फिर बड़ी मुश्किल येह दरपेश थी कि टांडा में ज़रूरी किताबों का मिलना दुश्वार था और मद्रसे की मसरूफ़ियात के बाइस मुल्क की किसी लाएब्रेरी में नहीं जा सकता था। मजबूरन उन्ही चन्द किताबों की मदद से जो अपने पास थीं काम चलाना पड़ा, जिन के ह़वाले जा बजा इस किताब में आप मुलाह़ज़ा फ़रमाएंगे।

फिर अवाख़िरे सफ़र सि. 1396 हि. में ना गहानी तौर पर येह ह़ादिसा गुज़रा कि मेरी प्यारी जवान बेटी आ़रिफ़ा ख़ातून मर्हूमा मरज़े सरसाम में मुब्तला हो गई और 27 सफ़र सि. 1396 हि. को वफ़ात पा गई। इस सदमए जांकाह ने मेरे दिलो दिमाग़ को झन्झोड़ कर रख दिया। फिर रबीउ़ल अव्वल सि. 1396 हि. में जल्सों का ऐसा तांता बंधा कि एक माह में तक़रीबन बारह जल्सों में तक़रीरें करना पड़ीं और ब हालते सफ़र इस का मौक़अ़ ही नहीं था कि कुछ लिख सकता। ग़रज़ रोज़ बरोज़ ना मुसाइद ह़ालात ने क़दम क़दम पर मुझे क़लम उठाने से रोका मगर بِحَمْدِاللّٰهِ تَعَالٰی इन तूफ़ानों के तलातुम में भी मेरे अ़ज़्म व इस्तिक़ामत की किश्ती नहीं डग मगाई और मैं फ़ुरसत के अवक़ात में चलते फिरते चन्द सत़रें लिखता ही रहा। ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस अ़लीम व ख़बीर है कि इन होशरुबा ह़ालात में इस किताब का सिर्फ़

चौदह माह की क़लील मुद्दत में मुकम्मल हो जाना इस को इस के सिवा कुछ भी नहीं कह सकता कि

ذٰلِکَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ (1)

*या'नी येह **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल है वोह जिस को चाहता है अपना फ़ज़्ल अ़ता फ़रमाता है और **अल्लाह** तआ़ला बहुत बड़े फ़ज़्ल वाला है।*

मुल्तजियाना गुज़ारिश

जिन परेशान कुन ह़ालात में इस किताब की तरतीब व तालीफ़ हुई है वोह आप के सामने हैं इस लिये अगर नाज़िरीने किराम को इस में कोई कमी या ख़ामी नज़र आए, तो मैं बहुत ही शुक्र गुज़ार होउंगा कि वोह मेरी इस्लाह़ फ़रमा कर मुझे अपना मम्नूने एह़सान बनाएं और इस किताब का मुत़ालआ़ करने के बा'द अज़ राहे करम एक कार्ड लिख कर मुझे अपने तअस्सुरात से ज़रूर मुत्तलअ़ फ़रमाएं ताकि आयन्दा एडीशनों में ख़ामियों की तक्मील और आप के हुक्मों की ता'मील कर के तलाफ़िये माफ़ात कर सकूं।

शुक्रिया व दुआ़

आख़िर में अपने शागिर्दे रशीद व अ़ज़ीज़ सईद मौलवी मुह़म्मद ज़हीर आ़लम साहि़ब आसी क़ादिरी नेपाली سَلَّمَهُ اللّٰه تعَالٰی का शुक्रिया अदा करता हूं कि उन्हों ने इस किताब का इम्ला तह़रीर करने और ह़वालों को तलाश करने में निहायत ही इख़्लास के साथ मेरी मदद की। इसी त़रह़ अपने दूसरे तलमीज़े बा तमीज़ अख़ी फ़िल्लाह मौलवी मुह़म्मद नईमुल्लाह साहि़ब मुजद्दिदी फ़ैज़ी سَلَّمَهُ اللّٰه تعَالٰی का भी शुक्र गुज़ार हूं कि वोह मेरी दूसरी तस्नीफ़ात की त़रह़ इस किताब की कोपियों और प्रूफ़ों की तस्ह़ीह़ और इस की त़बाअ़त व इशाअ़त की जिद्दो जोहद में मेरे शरीके कार रहे। मौला तआ़ला इन दोनों अ़ज़ीज़ों को ने'मते कौनैन से सरफ़राज़ और दौलते दारैन से मालामाल फ़रमाए और मेरी इस तालीफ़

(1) پ۲۸، الجمعة:٤

को मक़्बूल फ़रमा कर इस को क़बूल फ़िलअर्ज़ की करामतों से नवाज़े और इस को उम्मते मुस्लिमा के लिये ज़रीअ़ए रुश्दो हिदायत और मुझ गुनहगार के लिये ज़ादे आख़िरत व सामाने मग़्फ़िरत बनाए।

آمین بجاہ سید المرسلین صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وعلی الہ الطیبین و اصحابہ المکرمین وعلی من تبعھم الی یوم الدین برحمتہ وھو ارحم الراحمین.

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल आ'ज़मी عُفِیَ عَنْهُ
यकुम शा'बान सि. 1396 हि. टांडा

मस्जिद से मह़ब्बत की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ *रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम* صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : "जो मस्जिद से उल्फ़त (मह़ब्बत) रखता है अल्लाह तआ़ला उस से उल्फ़त रखता है।"* (طبرانی اوسط حدیث۲۳۷۹)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی *इस की शर्ह़ में लिखते हैं : "मस्जिद से उल्फ़त, रिज़ाए इलाही के लिये इस में ए'तिकाफ़, नमाज़, ज़िक्रुल्लाह और शरई मसाइल सीखने सिखाने के लिये बैठे रहने की आ़दत बनाना है और अल्लाह तआ़ला का उस बन्दे से मह़ब्बत करना इस त़रह़ है कि अल्लाह तआ़ला उस को अपने सायए रह़मत में जगह अ़त़ा फ़रमाता और उस को अपनी ह़िफ़ाज़त में दाख़िल फ़रमाता है।"* (فیض القدیر ج٦ ص١٠٧)

मुक़द्दमतुल किताब

सीरते नबविय्या علٰی صاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام का मौज़ूअ़ इस क़दर दिलकश, ईमान अफ़्रोज़ और रूह़ परवर उ़न्वान है कि आ़शिक़ाने रसूल के लिये इस चमनिस्तान की गुलचीनी, ईमानी क़ल्ब व रूह़ के लिये फ़रह़ व सुरूर की ऐसी "बिहिश्ते ख़ुल्द" है कि जन्नतुल फ़िरदौस की हज़ारों रा'नाइयां इस के एक एक फूल से रंगो बू की भीक मांगने को अपने लिये सरमायए इफ़्तिख़ार तसव्वुर करती हैं। इसी लिये उन ह़क़ परस्त उ़लमाए रब्बानिय्यीन ने जिन के मुक़द्दस सीनों में मह़ब्बते रसूल के हज़ारों फूल खिले हुए हैं इस ईमानी उ़न्वान और नूरानी मौज़ूअ़ पर अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक क़लम चलाते चलाते अपनी जानें क़ुरबान कर दीं। चुनान्चे आज हर ज़बान में सीरते नबविय्या की किताबों का इतना बड़ा ज़ख़ीरा हमारे सामने मौजूद है कि दुन्या में किसी बड़े से बड़े शहनशाह की सवानेहे ह़यात के बारे में इस का लाखवां बल्कि करोड़वां हिस्सा भी आ़लमे वजूद में न आ सका।

वोह आ़शिक़ाने रसूल जो सीरत नवीसी की बदौलत आस्माने इ़ज़्ज़त व अ़ज़्मत में सितारों की त़रह़ चमकते और चमनिस्ताने शोहरत में फूलों की त़रह़ महकते हैं उन ख़ुश नसीब आ़लिमों की फ़ेहरिस्त इतनी त़वील है कि उन का ह़स्रो शुमार हमारी त़ाक़त व इक़्तिदार से बाहर है। मिसाल के त़ौर पर हम यहां उन चन्द मश्हूर उ़लमाए सीरत के मुक़द्दस नामों का उन के सिने वफ़ात के साथ ज़िक्र करते हैं जो बारगाहे इलाही में ज़ाकिरे रसूल होने की ह़ैसिय्यत से इस क़दर मक़्बूल हैं कि अगर अय्यामे क़ह़त़ में नमाज़े इस्तिस्क़ा के बा'द इन बुज़ुर्गों के नामों का वसीला पकड़ कर ख़ुदा से दुआ़ मांगी जाए तो फ़ौरन ही बाराने रह़मत का नुज़ूल हो जाए और अगर

मजालिस में इन सईद रूहों का तज़्किरा छेड़ दिया जाए तो रह़मत के फ़िरिश्ते अपने मुक़द्दस बाज़ूओं और परों को फैला कर उन मह़फ़िलों का शामियाना बना दें।

चन्द मुसन्निफ़ीने सीरत

ख़ुलफ़ाए राशिदीन बल्कि ख़लीफ़ए आ़दिल ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उमवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त से कुछ क़ब्ल तक चूंकि ह़दीसों का लिखना मम्नूअ़ क़रार दे दिया गया था ताकि क़ुरआनो ह़दीस में ख़ल्त़ मल्त़ न होने पाए इस लिये सीरते नबविय्या के मौज़ूअ़ पर ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की कोई तस्नीफ़ आ़लमे वुजूद में न आ सकी मगर ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में जब अह़ादीसे नबविय्या की किताबत का आ़म त़ौर पर चर्चा हुवा तो दौरे ताबिई़न में "मुह़द्दिसीन" के साथ साथ सीरते नबविय्या के मुसन्निफ़ीन का भी एक त़ब्क़ा पैदा हो गया।

ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم सीरते नबविय्या के मौज़ूअ़ पर किताबें तो तस्नीफ़ न कर सके मगर वोह अपनी याद दाश्त से ज़बानी त़ौर पर अपनी मजालिस, अपनी दर्सगाहों, अपने ख़ुत़्बात में अह़ादीसे अह़काम के साथ साथ सीरते नबविय्या के मज़ामीन भी बयान करते रहते थे। इसी लिये अह़ादीस की त़रह़ मज़ामीने सीरत की रिवायतों का सर चश्मा भी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ही की मुक़द्दस शख़्सिय्यतें हैं।

बहर ह़ाल दौरे ताबिई़न से ग्यारहवीं सदी तक चन्द मुक़्तदर मुह़द्दिसीन व मुसन्निफ़ीने सीरत के अस्माए गिरामी मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। ग्यारहवीं सदी के बा'द वाले मुसन्निफ़ीन के नामों को हम ने इस फ़ेहरिस्त में इस लिये जगह नहीं दी कि येह लोग दर ह़क़ीक़त अगले मुसन्निफ़ीन ही के ख़ोशाचीन व फ़ैज़ याफ़्ता हैं।

1 हज़रते उर्वह बिन ज़ुबैर ताबेई (मुतवफ़्फ़ा सि. 92 हि.)
2 हज़रते आ़मिर बिन शराहील इमाम शा'बी (मुतवफ़्फ़ा सि. 104 हि.)
3 हज़रत अबान बिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते उ़समान (मुतवफ़्फ़ा सि. 105 हि.)
4 हज़रत वह्ब बिन मुनब्बेह यमनी (मुतवफ़्फ़ा सि. 110 हि.)
5 हज़रत आ़सिम बिन उ़मर बिन क़तादा (मुतवफ़्फ़ा सि. 120 हि.)
6 हज़रत शरजील बिन सा'द (मुतवफ़्फ़ा सि. 123 हि.)
7 हज़रत मुह़म्मद बिन शहाब ज़ोहरी (मुतवफ़्फ़ा सि. 124 हि.)
8 हज़रत इस्माईल बिन अ़ब्दुर्रह़मान सदी (मुतवफ़्फ़ा सि. 127 हि.)
9 हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र बिन ह़ज़्म (मुतवफ़्फ़ा सि.135 हि.)
10 हज़रत मूसा बिन अ़क़बा (साहिबुल मग़ाज़ी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 141 हि.)
11 हज़रत मुअ़म्मर बिन राशिद (मुतवफ़्फ़ा सि. 150 हि.)
12 हज़रत मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ (साहिबुल मग़ाज़ी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 150 हि.)
13 हज़रत ज़ियाद बकाई (मुतवफ़्फ़ा सि.183 हि.)
14 हज़रत मुह़म्मद बिन उ़मर वाक़िदी (साहिबुल मग़ाज़ी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 207 हि.)
15 हज़रत मुह़म्मद बिन सा'द (साहिबुत्तबक़ात) (मुतवफ़्फ़ा सि. 230 हि.)
16 हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (मुसन्निफ़े बुख़ारी शरीफ़) (मुतवफ़्फ़ा सि. 256 हि.)
17 हज़रत मुस्लिम बिन ह़ज्जाज क़ुशैरी (मुसन्निफ़े मुस्लिम शरीफ़) (मुतवफ़्फ़ा सि. 261 हि.)
18 हज़रत अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन क़ुतैबा (मुतवफ़्फ़ा सि. 267 हि.)
19 हज़रत अबू दावूद सुलैमान बिन अश्अ़स सजिस्तानी साहिबुस्सुनन (मुतवफ़्फ़ा सि. 275 हि.)
20 हज़रत अबू ईसा मुह़म्मद बिन ईसा तिरमिज़ी (मुसन्निफ़े जामेअ़ तिरमिज़ी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 279 हि.)

《21》 ह़ज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद यज़ीद बिन माजह क़ज़्वेनी (साह़िबुस्सुनन) (मुतवफ़्फ़ा सि. 273 हि.)

《22》 ह़ज़रत अबू अ़ब्दुर्रह़मान अह़मद बिन शुऐ़ब नसाई (मुसन्निफ़े सुनने नसाई) (मुतवफ़्फ़ा सि. 303 हि.)

《23》 ह़ज़रत मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी (साह़िबुत्तारीख़) (मुतवफ़्फ़ा सि. 310 हि.)

《24》 ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ग़नी बिन सईद इमामुन्नसब (मुतवफ़्फ़ा सि. 332 हि.)

《25》 ह़ज़रत अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह (साह़िबुल ह़िल्या) (मुतवफ़्फ़ा सि. 430 हि.)

《26》 ह़ज़रत शैख़ुल इस्लाम अबू उ़मर ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़ब्दुल बर (मुतवफ़्फ़ा सि. 463 हि.)

《27》 ह़ज़रत अबू बक्र अह़मद बिन ह़ुसैन बैहक़ी (मुतवफ़्फ़ा सि. 458 हि.)

《28》 ह़ज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी इयाज़ (साह़िबुश्शिफ़ा) (मुतवफ़्फ़ा सि. 544 हि.)

《29》 ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह सुहैली (साह़िबुर्रौज़ुल उनुफ़) (मुतवफ़्फ़ा सि. 581 हि.)

《30》 ह़ज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अल जौज़ी (साह़िबे शरफ़ुल मुस्त़फ़ा) (मुतवफ़्फ़ा सि. 597 हि.)

《31》 ह़ज़रत अह़मद बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र क़स्त़लानी (साह़िबे मवाहिबुल्लदुन्निय्यह) (मुतवफ़्फ़ा सि. 923 हि.)

《32》 ह़ज़रत इमाम शरफ़ुद्दीन अ़ब्दुल मुअमिन दमयात़ी (साह़िबे सीरते दमयात़ी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 705 हि.)

《33》 ह़ज़रत इब्ने सय्यिदुन्नास बसरी (साह़िबे उ़यूनुल असर) (मुतवफ़्फ़ा सि. 734 हि.)

《34》 ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ अ़लाउद्दीन मुग़लत़ाई (साह़िबुल इशारह इला सीरतुल मुस्त़फ़ा) (मुतवफ़्फ़ा सि. 762 हि.)

《35》 ह़ज़रत अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (शारेह़े बुख़ारी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 852 हि.)

《36》 ह़ज़रत अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद ऐ़नी (शारेह़े बुख़ारी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 855 हि.)

﴾37﴿ हज़रत अबुल हसन अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अहमद सम्हूदी (साहिबुल वफ़ाउल वफ़ा) (मुतवफ़्फ़ा सि. 911 हि.)

﴾38﴿ हज़रत मुहम्मद बिन यूसुफ़ सालिही (साहिबुस्सीरतुश्शामिय्यह) (मुतवफ़्फ़ा सि. 942 हि.)

﴾39﴿ हज़रत अ़ली बिन बुरहानुद्दीन (साहिबुस्सीरतुल हलबिय्यह) (मुतवफ़्फ़ा सि. 1044 हि.)

﴾40﴿ हज़रत शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी (साहिबे मदारिजुन्नुबुव्वह) (मुतवफ़्फ़ा सि. 1052 हि.)

सीरत क्या है ?

कुदमाए मुहद्दिसीन व फुक़हा "मग़ाज़ी व सियर" के उ़न्वान के तहत में फ़क़त़ ग़ज़वात और इस के मुतअ़ल्लिक़ात को बयान करते थे मगर सीरते नबविय्या के मुसन्निफ़ीन ने इस उ़न्वान को इस क़दर वुस्अ़त दे दी कि **हुज़ूर** रहमते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत से वफ़ाते अक़्दस तक के तमाम मराहिले हयात, आप की ज़ात व सिफ़ात, आप के दिन रात और तमाम वोह चीज़ें जिन को आप की ज़ाते वाला सिफ़ात से तअ़ल्लुक़ात हों ख़्वाह वोह इन्सानी ज़िन्दगी के मुआ़मलात हों या नुबुव्वत के मो'जिज़ात हों इन सब को "किताबे सीरत" ही के अब्वाब व फ़ुसूल और मसाइल शुमार करने लगे।

चुनान्चे ए'लाने नुबुव्वत से पहले और बा'द के तमाम वाक़िआ़त काशानए नुबुव्वत से जबले हिरा के ग़ार तक और जबले हिरा के ग़ार से जबले सौर के ग़ार तक और हरमे का'बा से ताइफ़ के बाज़ार तक और मक्का की चरागाहों से मुल्के शाम की तिजारत गाहों तक और अज़्वाजे मुतहहरात رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُنَّ के हुजरों की ख़ल्वत गाहों से ले कर इस्लामी ग़ज़वात की रज़्म गाहों तक आप की हयाते मुक़द्दसा के हर हर लम्हे में आप की मुक़द्दस सीरत का आफ़्ताबे आ़लम ताब जल्वा गर है।

इसी तरह ख़ुलफ़ाए राशिदीन हों या दूसरे सहाबए किराम, अज़्वाजे मुतहहरात हों या आप की औलादे इज़ाम, इन सब की किताबे ज़िन्दगी के

अवराक़ पर सीरते नुबुव्वत के नक़्शो निगार फूलों की त़रह़ महकते, मोतियों की त़रह़ चमकते और सितारों की त़रह़ जग मगाते हैं। और येह तमाम मज़ामीन सीरते नबविय्या के "**शजरतुल ख़ुल्द**" ही की शाख़ें, पत्तियां, फूल और फल हैं। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

मुल्के अ़रब

येह बर्रे आ'ज़म एशिया के जनूब मग़रिब में वाक़ेअ़ है चूंकि इस मुल्क के तीन त़रफ़ समुन्दर ने और चौथी त़रफ़ से दरियाए फ़ुरात़ ने जज़ीरे की त़रह़ घेर रखा है इस लिये इस मुल्क को "जज़ीरतुल अ़रब" भी कहते हैं। इस के शिमाल में शाम व इराक़, मग़रिब में बह़्रे अह़मर (बुह़ैरए क़ुल्ज़ुम) जो मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से ब जानिबे मग़रिब तक़्रीबन सतत्तर (77) किलो मीटर के फ़ासिले पर है और जुनूब में बह़्रे हिन्द और मशरिक़ में ख़लीज अ़मान व ख़लीज फ़ारस हैं। इस मुल्क में क़ाबिले ज़राअ़त ज़मीनें कम हैं और इस का कसीर हि़स्सा पहाड़ों और रेगिस्तानी सह़राओं पर मुश्तमिल है। (تاریخ دول العرب والاسلام جلد۱ص۳)

उ़लमाए जुग़राफ़िया ने ज़मीनों की त़बई साख़्त के लिह़ाज़ से इस मुल्क को आठ हि़स्सों में तक़्सीम किया है।

﴾1﴿ हि़जाज़	﴾2﴿ यमन	﴾3﴿ ह़ज़रमोत	﴾4﴿ महरा
﴾5﴿ अ़मान	﴾6﴿ बह़रीन	﴾7﴿ नज्द	﴾8﴿ अह़क़ाफ़

(تاریخ دول العرب والاسلام ج۱ص۳)

हि़जाज़

येह मुल्क के मग़रिबी हि़स्से में बह़्रे अह़मर (बुह़ैरए क़ुल्ज़ुम) के साह़िल के क़रीब वाक़ेअ़ है। हि़जाज़ से मिले हुए साह़िले समुन्दर को जो नशीब में वाक़ेअ़ है "तिहामा" या "ग़ौर" (पस्त ज़मीन) कहते और हि़जाज़ से मशरिक़ की जानिब जो मुल्क का हि़स्सा है वोह "नज्द" (बुलन्द ज़मीन) कहलाता है। "हि़जाज़"

चूंकि ''तिहामा'' और ''नज्द'' के दरमियान ह़ाजिज़ और ह़ाइल है इसी लिये मुल्क के इस ह़िस्से को ''ह़िजाज़'' कहने लगे। (دول العرب والاسلام ج۱ ص۴)

ह़िजाज़ के मुन्दरिजए जै़ल मक़ामात तारीखे़ इस्लाम में बहुत ज़ियादा मश्हूर हैं।

मक्कए मुकर्रमा, मदीनए मुनव्वरह, बद्र, उहुद, खै़बर, फ़दक, हुनैन, ताइफ़, तबूक, ग़दीर ख़ुम वग़ैरा।

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام का शहर ''मदयन'' तबूक के मह़ाज़ में बह़रे अह़मर के साह़िल पर वाके़अ़ है। मक़ाम ''ह़जर'' में जो वादी अलकु़रा है वहां अब तक अ़ज़ाब से क़ौमे समूद की उलट पलट कर दी जाने वाली बस्तियों के आसार पाए जाते हैं। ''ताइफ़'' ह़िजाज़ में सब से ज़ियादा सर्द और सर सब्ज़ मक़ाम है और यहां के मेवे बहुत मश्हूर हैं।

मक्कए मुकर्रमा

ह़िजाज़ का येह मश्हूर शहर मशरिक़ में ''जबले अबू कु़बैस'' और मग़रिब में ''जबले क़ुईक़आ़न'' दो बड़े बड़े पहाड़ों के दरमियान वाके़अ़ है और इस के चारों त़रफ़ छोटी छोटी पहाड़ियों और रैतीले मैदानों का सिल्सिला दूर दूर तक चला गया है। इसी शहर में हु़जू़र शहनशाहे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत हुई।

इस शहर और इस के अत़राफ़ में मुन्दरिजए जै़ल मश्हूर मक़ामात वाके़अ़ हैं। का'बए मुअ़ज़्ज़मा, सफ़ा मर्वह, मिना, मुज़्दलिफ़ा, अ़रफ़ात, ग़ारे ह़िरा, ग़ारे सौर, जबले तन्ई़म, जिइ़र्राना वग़ैरा।

मक्कए मुकर्रमा की बन्दरगाह और हवाई अड्डा ''जद्दा'' है। जो तक़रीबन चौवन किलो मीटर से कुछ ज़ाइद के फ़ासिले पर बुह़ैरए कुल्ज़ुम के साह़िल पर वाके़अ़ है।

मक्कए मुकर्रमा में हर साल जु़ल ह़िज्जा के महीने में तमाम दुन्या के लाखों मुसलमान बह़री, हवाई और ख़ुश्की के रास्तों से ह़ज के लिये आते हैं।

मदीनए मुनव्वरह

मक्कए मुकर्रमा से तक़्रीबन तीन सो बीस किलो मीटर के फ़ासिले पर मदीनए मुनव्वरह है जहां मक्कए मुकर्रमा से हिजरत फ़रमा कर **हुज़ूरे** अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और दस बरस तक मुक़ीम रह कर इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाते रहे और इसी शहर में आप का मज़ारे मुक़द्दस है जो मस्जिदे नबवी के अन्दर **"गुम्बदे ख़ज़रा"** के नाम से मश्हूर है।

मदीनए मुनव्वरह से तक़्रीबन साढ़े चार किलो मीटर जानिब शिमाल को "उहुद" का पहाड़ है जहां ह़क़्क़ो बात़िल की मश्हूर लड़ाई "जंगे उहुद" लड़ी गई इसी पहाड़ के दामन में **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के चचा ह़ज़रत सय्यिदुश्शुहदा ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मज़ारे मुबारक है जो जंगे उहुद में शहीद हुए।

मदीनए मुनव्वरह से तक़्रीबन पांच किलो मीटर की दूरी पर "मस्जिदे क़ुबा" है। येही वोह मुक़द्दस मक़ाम है जहां हिजरत के बा'द **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने क़ियाम फ़रमाया और अपने दस्ते मुबारक से इस मस्जिद को ता'मीर फ़रमाया इस के बा'द मदीनए मुनव्वरह में तशरीफ़ लाए और मस्जिदे नबवी की ता'मीर फ़रमाई। मदीनए मुनव्वरह की बन्दरगाह "यम्बअ़" है जो मदीनए मुनव्वरह से एक सो सतरह किलो मीटर के फ़ासिले पर बुह़ैरए क़ुल्ज़ुम के साह़िल पर वाक़ेअ़ है।

ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अ़रब में क्यूं ?

अगर हम अ़रब को कुर्रए ज़मीन के नक़्शे पर देखें तो इस के मह़ल्ले वुक़ूअ़ से येही मा'लूम होता है कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुल्के अ़रब को एशिया, यूरोप और अफ़्रीक़ा तीन बर्रे आ'ज़मों के वस्त़ में जगह दी है इस से बख़ूबी येह समझ में आ सकता है कि अगर तमाम दुन्या की हिदायत के वासित़े एक वाह़िद मर्कज़ क़ाइम करने के लिये हम किसी जगह का इनतिख़ाब करना चाहें तो मुल्के अ़रब ही इस के लिये सब से

ज़ियादा मोज़ूं और मुनासिब मक़ाम है। ख़ुसूसन हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने पर नज़र कर के हम कह सकते हैं कि जब अफ़्रीक़ा और यूरोप और एशिया की तीन बड़ी बड़ी सल्तनतों का तअ़ल्लुक़ मुल्के अ़रब से था तो ज़ाहिर है कि मुल्के अ़रब से उठने वाली आवाज़ को इन बर्रे आ'ज़मों में पहुंचाए जाने के ज़राएअ़ बख़ूबी मौजूद थे। ग़ालिबन येही वोह हिक्मते इलाहिय्यह है कि अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को मुल्के अ़रब में पैदा फ़रमाया और इन को अक़्वामे आ़लम की हिदायत का काम सिपुर्द फ़रमाया। (وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم)

अ़रब की सियासी पोज़ीशन

हुज़ूर नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादते मुबारका के वक़्त मुल्के अ़रब की सियासी ह़ालत का येह ह़ाल था कि जनूबी हिस्से पर सल्तनते ह़ब्शा का और मशरिक़ी हिस्से पर सल्तनते फ़ारस का क़ब्ज़ा था और शिमाली टुकड़ा सल्तनते रूम की मशरिक़ी शाख़ सल्तनते क़ुस्तुन्तुनिया के ज़ेरे असर था। अन्दरूने मुल्क ब ज़ो'मे ख़ुद मुल्के अ़रब आज़ाद था लेकिन इस पर क़ब्ज़ा करने के लिये हर एक सल्तनत कोशिश में लगी हुई थी और दर ह़क़ीक़त इन सल्तनतों की बाहमी रक़ाबतों ही के तुफ़ैल में मुल्के अ़रब आज़ादी की ने'मत से बहरा वर था।

अ़रब की अख़्लाक़ी ह़ालत

अ़रब की अख़्लाक़ी ह़ालत निहायत ही अबतर बल्कि बद से बदतर थी जहालत ने इन में बुत परस्ती को जनम दिया और बुत परस्ती की ला'नत ने इन के इन्सानी दिलो दिमाग़ पर क़ाबिज़ हो कर इन को तवह्हुम परस्त बना दिया था वोह मुज़ाहिरे फ़ित़रत की हर चीज़ पथ्थर, दरख़्त, चांद, सूरज, पहाड़, दरिया वग़ैरा को अपना मा'बूद समझने लग गए थे और ख़ुद साख़्ता मिट्टी और पथ्थर की मूरतों की इबादत करते थे। अ़क़ाइद की ख़राबी के साथ साथ इन के आ'माल व अफ़्आ़ल बेहद बिगड़े हुए थे, क़त्ल, रहज़नी, जूआ, शराब नोशी, ह़राम कारी, औ़रतों का इग़्वा, लड़कियों को

ज़िन्दा दरगोर करना, अ़य्याशी, फ़ोह़्श गोई, ग़रज़ कौन सा ऐसा गन्दा और घिनावना अ़मल था जो इन की सरशत में न रहा हो। छोटे बड़े सब के सब गुनाहों के पुतले और पाप के पहाड़ बने हुए थे।

ह़ज़रते इब्राहीम की औलाद

बानिये का'बा ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के एक फ़रज़न्द का नामे नामी ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام है जो ह़ज़रते बीबी हाजिरा के शिकमे मुबारक से पैदा हुए थे। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने उन को और उन की वालिदा ह़ज़रते बीबी हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को मक्कए मुकर्रमा में ला कर आबाद किया और अ़रब की ज़मीन इन को अ़त़ा फ़रमाई।

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के दूसरे फ़रज़न्द का नामे नामी ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ السَّلَام है जो ह़ज़रते बीबी सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के मुक़द्दस शिकम से तवल्लुद हुए थे। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने उन को मुल्के शाम अ़त़ा फ़रमाया। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की तीसरी बीवी ह़ज़रते क़त़ूरह के पेट से जो औलाद "मुदैन" वग़ैरा हुए इन को आप ने यमन का अ़लाक़ा अ़त़ा फ़रमाया।

औलादे ह़ज़रते इस्माईल

ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام के बारह बेटे हुए और इन की औलाद में ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने इस क़दर बरकत अ़त़ा फ़रमाई कि वोह बहुत जल्द तमाम अ़रब में फैल गए यहां तक कि मग़रिब में मिस्र के क़रीब तक इन की आबादियां जा पहुंचीं और जनूब की त़रफ़ इन के ख़ैमे यमन तक पहुंच गए और शिमाल की त़रफ़ इन की बस्तियां मुल्के शाम से जा मिलीं। ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام के एक फ़रज़न्द जिन का नाम "क़ैदार" था बहुत ही नामवर हुए और इन की औलाद ख़ास मक्का में आबाद रही और येह लोग अपने बाप की त़रह़ हमेशा का'बए मुअ़ज़्ज़मा की ख़िदमत करते रहे जिस को दुन्या में तौह़ीद की सब से पहली दर्सगाह होने का शरफ़ ह़ासिल है।

इन्ही क़ैदार की औलाद में "अ़दनान" नामी निहायत ऊलुल अ़ज़्म शख़्स पैदा हुए और "अ़दनान" की औलाद में चन्द पुश्तों के बा'द "क़ुसी" बहुत ही जाहो जलाल वाले शख़्स पैदा हुए जिन्हों ने मक्कए मुकर्रमा में मुश्तरिका हुकूमत की बुन्याद पर सि. 440 ई. में एक सल्त़नत क़ाइम की और एक क़ौमी मजलिस (पार्लामेन्ट) बनाई जो "दारुन्नदवा" के नाम से मश्हूर है और अपना एक क़ौमी झन्डा बनाया जिस को "लिवा" कहते थे और मुन्दरजे ज़ैल चार ओ़हदे क़ाइम किये। जिन की ज़िम्मादारी चार क़बीलों को सोंप दी।

﴾1﴿ रिफ़ादह ﴾2﴿ सक़ायह ﴾3﴿ हिजाबह ﴾4﴿ क़ियादह

"क़ुसी" के बा'द इन के फ़रज़न्द "अ़ब्दे मनाफ़" अपने बाप के जा नशीन हुए फिर इन के फ़रज़न्द "हाशिम" फिर इन के फ़रज़न्द "अ़ब्दुल मुत्तलिब" यके बा'द दीगरे एक दूसरे के जा नशीन होते रहे। इन्ही अ़ब्दुल मुत्तलिब के फ़रज़न्द हज़रते अ़ब्दुल्लाह हैं। जिन के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हमारे **हुज़ूर** रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं। जिन की मुक़द्दस सीरते पाक लिखने का ख़ुदा वन्दे आ़लम ने अपने फ़ज़्ल से हम को शरफ़ अ़ता फ़रमाया है।

सीरतुन्नबी पढ़ने का त़रीक़ा

इस किताब का मुत़ालआ़ आप इस त़रह़ न करें जिस त़रह़ आ़म त़ौर पर लोग नॉविलों या क़िस्सा कहानियों या तारीख़ी किताबों को निहायत ही ला परवाई के साथ पाकी नापाकी हर ह़ालत में पढ़ते रहते हैं और निहायत ही बे तवज्जोगी के साथ पढ़ कर इधर उधर डाल दिया करते हैं बल्कि आप इसे जज़्बए अ़क़ीदत और वालिहाना जोशे मह़ब्बत के साथ इस किताब का मुत़ालआ़ करें कि येह शहनशाहे दारैन और मह़बूबे रब्बुल मशरिक़ैन वल मग़रिबैन की ह़याते त़य्यिबा और उन की सीरते मुक़द्दसा का ज़िक्रे जमील है जो हमारी ईमानी अ़क़ीदतों का मर्कज़ और हमारी इस्लामी

ज़िन्दगी का मह्वर है । येह मह्बूबे खुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की उन क़ाबिले एह्तिराम अदाओं का बयान है जिन पर काएनाते आलम की तमाम अ़ज़्मतें क़ुरबान हैं, लिहाज़ा इस के मुतालए के वक़्त आप को अदबो एह्तिराम का पैकर बन कर और ता'ज़ीमो तौक़ीर के जज़्बाते सादिक़ा से अपने क़ल्बो दिमाग़ को मुनव्वर कर के इस तसव्वुर के साथ इस की एक एक सत्र को पढ़ना चाहिये कि इस का एक एक लफ़्ज़ मेरे लिये ह़सनात व बरकात का ख़ज़ाना है और गोया मैं **हुज़ूर** रह्मतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मुक़द्दस दरबार में हाज़िर हूं और आप की इन प्यारी प्यारी अदाओं को देख रहा हूं और आप के फ़ैज़े सोह्बत से अन्वार हासिल कर रहा हूं । ह़ज़रते अबू इब्राहीम तजीबी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने इरशाद फ़रमाया है कि

"हर मोमिन पर वाजिब है कि जब वोह रह्मते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का ज़िक्र करे या उस के सामने आप का ज़िक्र किया जाए तो वोह पुर सुकून हो कर नियाज़ मन्दी व आजिज़ी का इज़्हार करे, और अपने क़ल्ब में आप की अ़ज़्मत और हैबत व जलाल का ऐसा ही तअस्सुर पैदा करे जैसा कि आप के रू बरू हाज़िर होने की सूरत में आप के जलाल व हैबत से मुतअस्सिर होता ।" (شفاء ج۲ص۳۲)

और ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि **हुज़ूरे** अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की वफ़ाते अक़्दस के बा'द भी हर उम्मती पर आप की उतनी ही ता'ज़ीमो तौक़ीर लाज़िम है जितनी कि आप की ज़ाहिरी ह़यात में थी । चुनान्चे ख़लीफ़ए बग़दाद अबू जा'फ़र मन्सूर अ़ब्बासी जब मस्जिदे नबवी में आ कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगा तो ह़ज़रते इमामे मालिक رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस को येह कह कर डांट दिया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन ! यहां बुलन्द आवाज़ से गुफ़्तगू न कीजिये क्यूं कि **अल्लाह** तआला ने क़ुरआन में अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार का येह अदब सिखाया कि

لَا تَـرْفَعُوْآ اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ (1) या'नी नबी के दरबार में अपनी आवाज़ों को बुलन्द न करो।

"وان حرمته ميتا كحرمته حيا" और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते अक़्दस के बा'द भी हर उम्मती पर आप की उतनी ही ता'ज़ीम वाजिब है जितनी कि आप की ज़ाहिरी ह़यात में थी। येह सुन कर ख़लीफ़ा लरज़ा बर अन्दाम हो कर नर्म पड़ गया। (شفاء شريف ج٢ص٣٢ و ص٣٣)

बहर ह़ाल सीरते मुक़द्दसा की किताबों को पढ़ते वक़्त अदबो एह़तिराम लाज़िम है और बेहतर येह है कि जब पढ़ना शुरूअ़ करे तो दुरूद शरीफ़ पढ़ कर किताब शुरूअ़ करे और जब तक दिल जमई बाक़ी रहे पढ़ता रहे और जब ज़रा भी उक्ताहट मह़सूस करे तो पढ़ना बन्द कर दे और बे तवज्जोगी के साथ हरगिज़ न पढ़े।

والله تعالىٰ هو الموفق والمعين وصلى الله تعالىٰ عليه وعلىٰ اله وصحبه اجمعين

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : اَلسِّوَاكُ مَطْهَرَةٌ لِلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِلرَّبِّ या'नी "मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी का सबब है।" (سنن ابنِ ماجه، ص٢٤٩٥، حديث٢٨٩)

1..... پ٢٦، الحجرات:٢

हुज़ूर ताजदारे दो आलम

صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

की मक्की ज़िन्दगी

मुहम्मद वोह किताबे कौन का तुग़राए पेशानी

मुहम्मद वोह ह़रीमे कुद्स का शम्ए शबिस्तानी

मुबश्शिर जिस की बिअ्सत का ज़ुहूरे ईसा मरयम

मुसद्दिक़ जिस की अ़ज़्मत का लबे मूसा इमरानी

(علیہم الصلوٰۃ والسلام)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ سَرْمَدًا صَلِّ عَلٰى حَبِيْبِكَ الْمُصْطَفٰى وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَبَدًا

حَسْبِیْ رَبِّیْ جَلَّ اللّٰه　　نُوْرِ مُحَمَّدْ صَلَّی اللّٰه

لَا مَقْصُوْدَ اِلَّا اللّٰه　　چل میرے خامہ! بِسْمِ اللّٰه

पहला बाब

ख़ानदानी हालात

नसब नामा

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का नसब शरीफ़ वालिदे माजिद की त़रफ़ से येह है :

﴾1﴿ हज़रत मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ﴾2﴿ बिन अ़ब्दुल्लाह ﴾3﴿ बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब ﴾4﴿ बिन हाशिम ﴾5﴿ बिन अ़ब्दे मनाफ़ ﴾6﴿ बिन क़ुसी ﴾7﴿ बिन किलाब ﴾8﴿ बिन मुर्रह ﴾9﴿ बिन का'ब ﴾10﴿ बिन लवी ﴾11﴿ बिन ग़ालिब ﴾12﴿ बिन फ़हर ﴾13﴿ बिन मालिक ﴾14﴿ बिन नज़्र ﴾15﴿ बिन किनाना ﴾16﴿ बिन ख़ुज़ैमा ﴾17﴿ बिन मुदरिकह ﴾18﴿ बिन इल्यास ﴾19﴿ बिन मज़र ﴾20﴿ बिन नज़ार ﴾21﴿ बिन मअ़द ﴾22﴿ बिन अ़दनान ।[1] (بخاری ج۱، باب مبعث النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

और वालिदए माजिदा की त़रफ़ से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का शजरए नसब येह है :

﴾1﴿ हज़रत मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ﴾2﴿ बिन आमिना ﴾3﴿ बिन्ते वह्ब ﴾4﴿ बिन अ़ब्दे मनाफ़ ﴾5﴿ बिन ज़हरा ﴾6﴿ बिन किलाब ﴾7﴿ बिन मुर्रह ।[2]

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مبعث النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ج۲، ص۵۷۳

2 ......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، اولاد عبد المطلب، ص۴۸

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वालिदैन का नसब नामा "**किलाब बिन मुर्रह**" पर मिल जाता है और आगे चल कर दोनों सिल्सिले एक हो जाते हैं । "**अ़दनान**" तक आप का नसब नामा सहीह़ सनदों के साथ ब इत्तिफ़ाके़ मुअर्रिख़ीन साबित है इस के बा'द नामों में बहुत कुछ इख़्तिलाफ़ है और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब भी अपना नसब नामा बयान फ़रमाते थे तो "अ़दनान" ही तक ज़िक्र फ़रमाते थे ।

(کرمانی بحوالہ حاشیہ بخاری ج۱،ص۵۴۳)

मगर इस पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि "**अ़दनान**" ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में से हैं, और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं ।

ख़ानदानी शराफ़त

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ख़ानदान व नसब नजाबत व शराफ़त में तमाम दुन्या के ख़ानदानों से अशरफ़ व आ'ला है और येह वोह ह़क़ीक़त है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के बद तरीन दुश्मन कुफ़्फ़ारे मक्का भी कभी इस का इन्कार न कर सके । चुनान्चे अबू सुफ़्यान ने जब वोह कुफ़्र की ह़ालत में थे बादशाहे रूम हरक़िल के भरे दरबार में इस ह़क़ीक़त का इक़रार किया कि "هو فينا ذو نسب" या'नी नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم "आ़ली ख़ानदान" हैं ।[1] (بخاری ج۱ص۴)

ह़ालां कि उस वक़्त वोह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के बद तरीन दुश्मन थे और चाहते थे कि अगर ज़रा भी कोई गुन्जाइश मिले तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ाते पाक पर कोई ऐब लगा कर बादशाहे रूम की नज़रों से आप का वक़ार गिरा दें ।

---

1 ......صحيح البخاری ، كتاب بدء الوحی ، باب ٦، ج١، ص١٠ مفصلاً

मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام की अवलाद में से "किनाना" को बर गुज़ीदा बनाया और "किनाना" में से "क़ुरैश" को चुना, और "क़ुरैश" में से "बनी हाशिम" को मुन्तख़ब फ़रमाया, और "बनी हाशिम" में से मुझ को चुन लिया। [1] (مشکوٰۃ فضائل سید المرسلین)

बहर ह़ाल येह एक मुसल्लमा ह़क़ीक़त है कि

لَهُ النَّسَبُ الْعَالِیْ فَلَیْسَ كَمِثْلِهٖ

حَسِیْبٌ نَسِیْبٌ مُنْعَمٌ مُتَكَرَّمٌ

या'नी हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ानदान इस क़दर बुलन्द मर्तबा है कि कोई भी ह़सब व नसब वाला और ने'मत व बुज़ुर्गी वाला आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मिस्ल नहीं है।

क़ुरैश

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदाने नुबुव्वत में सभी ह़ज़रात अपनी गूना गूं ख़ुसूसियात की वजह से बड़े नामी गिरामी हैं। मगर चन्द हस्तियां ऐसी हैं जो आसमाने फ़ज़्लो कमाल पर चांद तारे बन कर चमके। इन बा कमालों में से "फ़ुहर बिल मालिक" भी हैं इन का लक़ब "क़ुरैश" है और इन की अवलाद क़ुरैशी या "क़ुरैश" कहलाती है।

"फ़ुहर बिल मालिक" क़ुरैश इस लिये कहलाते हैं कि "क़ुरैश" एक समुन्दरी जानवर का नाम है जो बहुत ही ताक़त वर होता है, और समुन्दरी जानवरों को खा डालता है येह तमाम जानवरों पर हमेशा ग़ालिब ही रहता है कभी मग़लूब नहीं होता चूंकि "फ़ुहर बिल मालिक" अपनी शुजाअ़त और ख़ुदा दाद ताक़त की बिना पर तमाम क़बाइले अ़रब पर ग़ालिब थे इस लिये तमाम अहले

अ़रब इन को "**कुरैश**" के लक़ब से पुकारने लगे। चुनान्चे इस बारे में "शमरख़ बिन अ़म्र हि़मयरी" का शे'र बहुत मशहूर है कि

وَ قُرَيْشٌ هِيَ الَّتِي تَسْكُنُ الْبَحْرَ بِهَا سُمِّيَتْ قُرَيْشٌ قُرَيْشًا

या'नी "**कुरैश**" एक जानवर है जो समुन्दर में रहता है। इसी के नाम पर क़बीलए कुरैश का नाम "**कुरैश**" रख दिया गया।[1]

(زرقانی علی المواہب ج۱ص۷۶)

हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मां बाप दोनों का सिलसिलए नसब "फ़हर बिन मालिक" से मिलता है इस लिये **हु़ज़ूरे** अकरम صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मां बाप दोनों की त़रफ़ से "कुरैशी" हैं।

हाशिम

हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के परदादा "हाशिम" बड़ी शानो शौकत के मालिक थे। इन का अस्ली नाम "अ़म्र" था इनतिहाई बहादुर, बेह़द सख़ी, और आ'ला दरजे के मेहमान नवाज़ थे। एक साल अ़रब में बहुत सख़्त क़ह़त़ पड़ गया और लोग दाने दाने को मोह़ताज हो गए तो येह मुल्के शाम से ख़ुश्क रोटियां ख़रीद कर ह़ज के दिनों में मक्का पहुंचे और रोटियों का चूरा कर के ऊंट के गोश्त के शोरबे में सरीद बना कर तमाम ह़ाजियों को ख़ूब पेट भर कर खिलाया। उस दिन से लोग इन को "**हाशिम**" (रोटियों का चूरा करने वाला) कहने लगे।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۸)

चूंकि येह "**अ़ब्दे मनाफ़**" के सब लड़कों में बड़े और बा सलाहि़य्यत थे इस लिये अ़ब्दे मनाफ़ के बा'द का'बा के मुतवल्ली और

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواہب،المقصد الاول فی تشریف اللہ تعالٰی...الخ،ج۱،ص۱۴۴

2 ......مدارج النبوت ، قسم اول ، باب اول ، ج۲،ص۸وشرح الزرقانی علی المواہب، المقصد الاول فی تشریف اللّٰہ تعالٰی...الخ ،ج۱،ص۱۳۸

सज्जादा नशीन हुए। बहुत ह़सीन व ख़ूब सूरत और वजीह थे जब सिने शुऊ़र को पहुंचे तो इन की शादी मदीने में क़बीला ख़ज़्रज के एक सरदार अ़म्र की साहिब ज़ादी से हुई जिन का नाम "सलमा" था। और उन के साहिब ज़ादे "अ़ब्दुल मुत्त़लिब" मदीना ही में पैदा हुए चूंकि हाशिम पच्चीस साल की उ़म्र पा कर मुल्के शाम के रास्ते में ब मक़ाम "ग़ज़्ज़ा" इनतिक़ाल कर गए। इस लिये अ़ब्दुल मुत्त़लिब मदीना ही में अपने नाना के घर पले बढ़े, और जब सात या आठ साल के हो गए तो मक्का आ कर अपने ख़ानदान वालों के साथ रहने लगे।

अ़ब्दुल मुत्त़लिब

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के दादा "अ़ब्दुल मुत्त़लिब" का अस्ली नाम "शैबा" है। येह बड़े ही नेक नफ़्स और आ़बिदो ज़ाहिद थे। "ग़ारे ह़िरा" में खाना पानी साथ ले कर जाते और कई कई दिनों तक लगातार ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ रहते। रमज़ान शरीफ़ के महीने में अकसर ग़ारे ह़िरा में ए'तिकाफ़ किया करते थे, और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ध्यान में गोशा नशीन रहा करते थे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नूरे नुबुव्वत इन की पेशानी में चमकता था और इन के बदन से मुश्क की ख़ुश्बू आती थी। अहले अ़रब ख़ुसूसन क़ुरैश को इन से बड़ी अ़क़ीदत थी। मक्का वालों पर जब कोई मुसीबत आती या क़ह़त़ पड़ जाता तो लोग अ़ब्दुल मुत्त़लिब को साथ ले कर पहाड़ पर चढ़ जाते और बारगाहे ख़ुदा वन्दी में इन को वसीला बना कर दुआ़ मांगते थे तो दुआ़ मक़्बूल हो जाती थी। येह लड़कियों को ज़िन्दा दरगोर करने से लोगों को बड़ी सख़्ती के साथ रोकते थे और चोर का हाथ काट डालते थे। अपने दस्तर ख़्वान से परन्दों को भी खिलाया करते थे इस लिये इन का लक़ब "**मुत़इमुत्त़ीर**" (परन्दों को खिलाने वाला) है। शराब और ज़िना को ह़राम जानते थे और अ़क़ीदे के लिहाज़ से "**मुवह़्ह़िद**" थे। "ज़मज़म शरीफ़" का

कूंआं जो बिल्कुल पट गया था आप ही ने उस को नए सिरे से खुदवा कर दुरुस्त किया, और लोगों को आबे ज़मज़म से सैराब किया। आप भी का'बे के मुतवल्ली और सज्जादा नशीन हुए। अस्हाबे फ़ील का वाक़िआ़ आप ही के वक़्त में पेश आया। एक सो बीस बरस की उ़म्र में आप की वफ़ात हुई।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۷۲)

अस्हाबे फ़ील का वाक़िआ़

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की पैदाइश से सिर्फ़ पचपन दिन पहले यमन का बादशाह "अबरहा" हाथियों की फ़ोज ले कर का'बा ढाने के लिये मक्का पर ह़म्ला आवर हुवा था। इस का सबब येह था कि "अबरहा" ने यमन के दारुस्सल्त़नत "सन्आ़" में एक बहुत ही शानदार और आ़लीशान "गिरजा घर" बनाया और येह कोशिश करने लगा कि अ़रब के लोग बजाए ख़ानए का'बा के यमन आ कर इस गिरजा घर का ह़ज किया करें। जब मक्का वालों को येह मा'लूम हुवा तो क़बीलए "किनाना" का एक शख़्स ग़ैज़ो ग़ज़ब में जल भुन कर यमन गया, और वहां के गिरजा घर में पाख़ाना फिर कर उस को नजासत से लतपत कर दिया। जब अबरहा ने येह वाक़िआ़ सुना तो वोह त़ैश में आपे से बाहर हो गया और ख़ानए का'बा को ढाने के लिये हाथियों की फ़ोज ले कर मक्का पर ह़म्ला कर दिया। और उस की फ़ोज के अगले दस्ते ने मक्का वालों के तमाम ऊंटों और दूसरे मवेशियों को छीन लिया उस में दो सो या चार सो ऊंट अ़ब्दुल मुत्त़लिब के भी थे।[2] (زرقانی ج۱ص۸۵)

---

1 ......شـرح الـزرقـانـی علی المواهب، المقصد الاول فی تشریف اللّٰه تعالٰی...الخ، ج۱، ص۱۳۵۔۱۳۸مـخـتـصـراً والمواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،المقصد الاول فی تشریف اللّٰه تعالٰی...الخ ،ج۱،ص۱۵۵

2 ......شرح الزرقانی علی المواهب،المقصد الاول،عام الفیل وقصة ابرهة،ج۱،ص۱۵۶۔۱۵۸ ملتقطاً

अ़ब्दुल मुत्तलिब को इस वाक़िए से बड़ा रन्ज पहुंचा। चुनान्चे आप इस मुआ़मले में गुफ़्तगू करने के लिये उस के लश्कर में तशरीफ़ ले गए। जब अबरहा को मा'लूम हुवा कि क़ुरैश का सरदार उस से मुलाक़ात करने के लिये आया है तो उस ने आप को अपने ख़ैमे में बुला लिया और जब अ़ब्दुल मुत्तलिब को देखा कि एक बुलन्द क़ामत, रो'बदार और निहायत ही ह़सीनो जमील आदमी हैं जिन की पेशानी पर नूरे नुबुव्वत का जाहो जलाल चमक रहा है तो सूरत देखते ही अबरहा मरऊ़ब हो गया। और बे इख़्तियार तख़्ते शाही से उतर कर आप की ता'ज़ीमो तक्रीम के लिये खड़ा हो गया और अपने बराबर बिठा कर दरयाफ़्त किया कि कहिये : सरदारे क़ुरैश ! यहां आप की तशरीफ़ आवरी का क्या मक़्सद है ? अ़ब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया कि हमारे ऊंट और बकरियां वग़ैरा जो आप के लश्कर के सिपाही हांक लाए हैं आप उन सब मवेशियों को हमारे सिपुर्द कर दीजिये। येह सुन कर अबरहा ने कहा कि ऐ सरदारे क़ुरैश ! मैं तो येह समझता था कि आप बहुत ही ह़ौसला मन्द और शानदार आदमी हैं। मगर आप ने मुझ से अपने ऊंटों का सुवाल कर के मेरी नज़रों में अपना वक़ार कम कर दिया। ऊंट और बकरी की ह़क़ीक़त ही क्या है ? मैं तो आप के का'बे को तोड़ फोड़ कर बरबाद करने के लिये आया हूं, आप ने उस के बारे में कोई गुफ़्तगू नहीं की ! अ़ब्दुल मुत्तलिब ने कहा कि मुझे तो अपने ऊंटों से मत्लब है का'बा मेरा घर नहीं है बल्कि वोह ख़ुदा का घर है। वोह ख़ुद अपने घर को बचा लेगा। मुझे का'बे की ज़रा भी फ़िक्र नहीं है।[1] येह सुन कर अबरहा अपने फ़िरऔ़नी लहजे में कहने लगा कि ऐ सरदारे मक्का ! सुन लीजिये ! मैं का'बे को ढा कर उस की ईंट से ईंट बजा दूंगा, और रूए ज़मीन से इस का नामो निशान मिटा दूंगा क्यूं कि मक्का वालों ने मेरे गिरजा घर की बड़ी बे ह़ुर्मती की है इस लिये मैं इस का इनतिक़ाम लेने के लिये का'बे को मिस्मार कर देना ज़रूरी समझता हूं।

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،المقصد الاول،عام الفيل وقصة ابرهة،ج١،ص١٦١ ملخصاً

अ़ब्दुल मुत्तलिब ने फ़रमाया कि फिर आप जानें और खुदा जाने। मैं आप से सिफ़ारिश करने वाला कौन ? इस गुफ़्तगू के बा'द अबरहा ने तमाम जानवरों को वापस कर देने का हुक्म दे दिया। और अ़ब्दुल मुत्तलिब तमाम ऊंटों और बकरियों को साथ ले कर अपने घर चले आए और मक्का वालों से फ़रमाया कि तुम लोग अपने अपने माल मवेशियों को ले कर मक्का से बाहर निकल जाओ। और पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ कर और दरों में छुप कर पनाह लो।[1] मक्का वालों से येह कह कर फिर खुद अपने ख़ानदान के चन्द आदमियों को साथ ले कर ख़ानए का'बा में गए और दरवाज़े का ह़ल्क़ा पकड़ कर इनतिहाई बे क़रारी और गिर्या व ज़ारी के साथ दरबारे बारी में इस त़रह़ दुआ़ मांगने लगे कि

لَاهُمَّ اِنَّ الْمَرْءَ يَمْنَعُ رَحْلَهٗ فَامْنَعْ رِحَالَكْ

وَانْصُرْ عَلٰى اٰلِ الصَّلِيْبِ وَعَابِدِيْهِ اَلْيَوْمَ اٰلَكْ

ऐ **अल्लाह** ! बेशक हर शख़्स अपने अपने घर की ह़िफ़ाज़त करता है। लिहाज़ा तू भी अपने घर की ह़िफ़ाज़त फ़रमा, और सलीब वालों और सलीब के पुजारियों (ईसाइयों) के मुक़ाबले में अपने इताअ़त शिआ़रों की मदद फ़रमा।

अ़ब्दुल मुत्तलिब ने येह दुआ़ मांगी और अपने ख़ानदान वालों को साथ ले कर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए और खुदा की क़ुदरत का जल्वा देखने लगे।[2] अबरहा जब सुब्ह़ को का'बा ढाने के लिये अपने लश्करे जर्रार और हाथियों की क़ित़ार के साथ आगे बढ़ा और मक़ामे "मग़मस" में पहुंचा तो खुद उस का हाथी जिस का नाम "**मह़मूद**" था एक दम बैठ गया। हर चन्द मारा, और बार बार ललकारा मगर हाथी नहीं उठा।[3]

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،المقصد الاول،عام الفیل وقصة ابرهة،ج۱،ص۱۶۱ملخصاً

2 ......شرح الزرقانی علی المواهب،المقصد الاول،عام الفیل وقصة ابرهة ،ج۱،ص۱۵۷

3 ......شرح الزرقانی علی المواهب،المقصد الاول،عام الفیل وقصة ابرهة،ج۱،ص۱۶۲ملخصاً

इसी हाल में क़हरे इलाही अबाबीलों की शक्ल में नुमूदार हुवा और नन्हे नन्हे परन्दे झुंड के झुंड जिन की चोंच और पन्जों में तीन तीन कंकरियां थीं समुन्दर की जानिब से ह़रमे का'बा की त़रफ़ आने लगे। अबाबीलों के इन दल बादल लश्करों ने अबरहा की फ़ौजों पर इस ज़ोर शोर से संगबारी शुरूअ़ कर दी कि आन की आन में अबरहा के लश्कर, और उस के हाथियों के परख़्चे उड़ गए। अबाबीलों की संगबारी ख़ुदा वन्दे क़ह्हार व जब्बार के क़हरो ग़ज़ब की ऐसी मार थी कि जब कोई कंकरी किसी फ़ील सुवार के सर पर पड़ती थी तो वोह उस आदमी के बदन को छेदती हुई हाथी के बदन से पार हो जाती थी। अबरहा की फ़ोज का एक आदमी भी ज़िन्दा नहीं बचा और सब के सब अबरहा और उस के हाथियों समेत इस त़रह़ हलाक व बरबाद हो गए कि उन के जिस्मों की बोटियां टुकड़े टुकड़े हो कर ज़मीन पर बिखर गईं। चुनान्चे क़ुरआने मजीद की "सूरए फ़ील" में ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने इस वाक़िए का ज़िक्र करते हुए इरशाद फ़रमाया कि :

اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصۡحٰبِ الۡفِيۡلِ○اَلَمۡ يَجۡعَلۡ كَيۡدَهُمۡ فِىۡ تَضۡلِيۡلٍ○ وَّاَرۡسَلَ عَلَيۡهِمۡ طَيۡرًا اَبَابِيۡلَ○ تَرۡمِيۡهِمۡ بِحِجَارَةٍ مِّنۡ سِجِّيۡلٍ○ فَجَعَلَهُمۡ كَعَصۡفٍ مَّاۡكُوۡلٍ○ (1)

या'नी (ऐ मह़बूब) क्या आप ने न देखा कि आप के रब ने उन हाथी वालों का क्या ह़ाल कर डाला क्या उन के दाउं को तबाही में न डाला और उन पर परन्दों की टुकड़ियां भेजीं ताकि उन्हें कंकर के पथ्थरों से मारें तो उन्हें चबाए हुए भुस जैसा बना डाला।

जब अबरहा और उस के लश्करों का येह अन्जाम हुवा तो अ़ब्दुल मुत्त़लिब पहाड़ से नीचे उतरे और ख़ुदा का शुक्र अदा किया। उन की इस करामत का दूर दूर तक चरचा हो गया और तमाम अहले अ़रब इन को एक ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग की ह़ैसिय्यत से क़ाबिले एह़तिराम समझने लगे।(2)

---

1 ......پ ٣٠،الفيل:١_٥

2 ......شرح الزرقاني على المواهب،المقصد الاول،عام الفيل وقصة ابرهة ،ج١،ص١٦٤

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह हमारे हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे माजिद हैं। येह अ़ब्दुल मुत्त़लिब के तमाम बेटों में सब से ज़ियादा बाप के लाडले और प्यारे थे। चूंकि इन की पेशानी में नूरे मुह़म्मदी अपनी पूरी शानो शौकत के साथ जल्वा गर था इस लिये हुस्नो ख़ूबी के पैकर, और जमाले सूरत व कमाले सीरत के आईना दार, और इ़फ़्फ़त व पारसाई में यक्ताए रोज़गार थे। क़बीलए क़ुरैश की तमाम ह़सीन औ़रतें इन के हुस्नो जमाल पर फ़रेफ़्ता और इन से शादी की ख़्वास्त गार थीं। मगर अ़ब्दुल मुत्त़लिब इन के लिये एक ऐसी औ़रत की तलाश में थे जो हुस्नो जमाल के साथ साथ ह़सब व नसब की शराफ़त और इ़फ़्फ़त व परसाई में भी मुम्ताज़ हो। अ़जीब इत्तिफ़ाक़ कि एक दिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शिकार के लिये जंगल में तशरीफ़ ले गए थे मुल्के शाम के यहूदी चन्द अ़लामतों से पहचान गए थे कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां के वालिदे माजिद येही हैं। चुनान्चे उन यहूदियों ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बारहा क़त्ल कर डालने की कोशिश की। इस मरतबा भी यहूदियों की एक बहुत बड़ी जमाअ़त मुसल्लह़ हो कर इस निय्यत से जंगल में गई कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तन्हाई में धोके से क़त्ल कर दिया जाए मगर **अल्लाह** तआ़ला ने इस मरतबा भी अपने फ़ज़्लो करम से बचा लिया। आ़लमे ग़ैब से चन्द ऐसे सुवार ना गहां नुमूदार हुए जो इस दुन्या के लोगों से कोई मुशाबहत ही नहीं रखते थे, उन सुवारों ने आ कर यहूदियों को मार भगाया और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ब ह़िफ़ाज़त उन के मकान तक पहुंचा दिया। "वह्ब बिन मनाफ़" भी उस दिन जंगल में थे और उन्हों ने अपनी आंखों से येह सब कुछ देखा, इस लिये उन को ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बे इनतिहा मह़ब्बत व अ़क़ीदत पैदा हो गई, और घर आ कर येह अ़ज़्म कर लिया कि मैं अपनी नूरे नज़र ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

की शादी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ही से करूंगा। चुनान्चे अपनी इस दिली तमन्ना को अपने चन्द दोस्तों के ज़रीए उन्हों ने अ़ब्दुल मुत्त़लिब तक पहुंचा दिया। खुदा की शान कि अ़ब्दुल मुत्त़लिब अपने नूरे नज़र ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के लिये जैसी दुल्हन की तलाश में थे, वोह सारी खूबियां ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا बिन्ते वह्ब में मौजूद थीं। अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने इस रिश्ते को खुशी खुशी मन्ज़ूर कर लिया। चुनान्चे चौबीस साल की उ़म्र में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ हो गया और नूरे मुह़म्मदी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मुन्तक़िल हो कर ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا के शिकमे अत़्हर में जल्वा गर हो गया और जब ह़म्ल शरीफ़ को दो महीने पूरे हो गए तो अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को खजूरें लेने के लिये मदीने भेजा, या तिजारत के लिये मुल्के शाम रवाना किया, वहां से वापस लौटते हुए मदीने में अपने वालिद के नन्हाल "बनू अ़दी बिन नज्जार" में एक माह बीमार रह कर पच्चीस बरस की उ़म्र में वफ़ात पा गए। और वहीं "दारे नाबिग़ा" में मदफ़ून हुए।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۱۰۱ومدارج جلد۲ص۱۴)

क़ाफ़िले वालों ने जब मक्का वापस लौट कर अ़ब्दुल मुत्त़लिब को ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की बीमारी का ह़ाल सुनाया तो उन्हों ने ख़बर गीरी के लिये अपने सब से बड़े लड़के "ह़ारिस" को मदीने भेजा। उन के मदीने पहुंचने से क़ब्ल ही ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ राहिये मुल्के बक़ा हो चुके थे। ह़ारिस ने मक्का वापस आ कर जब वफ़ात की ख़बर सुनाई तो सारा घर मातम कदा बन गया और बनू हाशिम के हर घर में मातम बरपा हो गया। खुद ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا ने अपने मर्हूम शोहर का ऐसा पुरदर्द मरसिया कहा है कि जिस को सुन कर आज भी दिल दर्द से

1 ......مدارج النبوت، قسم دوم، باب اول، ج۲، ص۱۲۔۱٤ ملتقطاً

भर जाता है। रिवायत है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात पर फ़िरिश्तों ने ग़मगीन हो कर बड़ी ह़सरत के साथ येह कहा कि इलाही عَزَّ وَجَلَّ ! तेरा नबी यतीम हो गया। ह़ज़रते ह़क़ ने फ़रमाया : क्या हुवा ? मैं उस का ह़ामी व ह़ाफ़िज़ हूं।[1] (مدارج النبوة ج۲ ص۱۴)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का तर्का एक लौंडी "उम्मे ऐमन" जिस का नाम "बरकह" था कुछ ऊंट कुछ बकरियां थीं, येह सब तर्का हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को मिला। "उम्मे ऐमन" बचपन में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की देखभाल करती थीं खिलातीं, कपड़ा पहनातीं, परवरिश की पूरी ज़रूरिय्यात मुहय्या करतीं, इस लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तमाम उ़म्र "उम्मे ऐमन" की दिलजूई फ़रमाते रहे अपने मह़बूब व मुतबन्ना ग़ुलाम ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से उन का निकाह़ कर दिया, और उन के शिकम से ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ पैदा हुए।[2] (आ़म्मए कुतुबे सियर)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا का ईमान

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के वालिदैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बारे में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है कि वोह दोनों मोमिन हैं या नहीं ? बा'ज़ उ़लमा इन दोनों को मोमिन नहीं मानते और बा'ज़ उ़लमा ने इस मस्अले में तवक़्क़ुफ़ किया और फ़रमाया कि इन दोनों को मोमिन या काफ़िर कहने से ज़बान को रोकना चाहिये और इस का इ़ल्म ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ के सिपुर्द कर देना चाहिये, मगर अहले सुन्नत के उ़लमाए मुह़क़्क़िक़ीन मसलन इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी व अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी व इमाम क़ुरतुबी व ह़ाफ़िज़ुश्शाम इब्ने नासिरुद्दीन व ह़ाफ़िज़ शम्सुद्दीन दिमश्क़ी व क़ाज़ी अबू बक्र इब्नुल अ़रबी मालिकी व शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी व साहि़बुल इक्लील मौलाना अ़ब्दुल ह़क़ मुहाजिर मदनी

1 ......مدارج النبوت ، قسم دوم، باب اول ، ج۲،ص۱۴

2 ......الاستیعاب، کتاب النساء و کناھن، باب الباء ،ج٤،ص٣٥٦ودلائل النبوة للبیھقی، باب ذکر رضاع النبی صلی اللّٰه علیه وسلم مرضعته ...الخ،ج١،ص١٥٠

رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی वग़ैरा का येही अ़क़ीदा और क़ौल है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मां बाप दोनों यक़ीनन बिला शुबा मोमिन हैं। चुनान्चे इस बारे में ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इरशाद है कि

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को मोमिन न मानना येह उ़लमाए मुतक़द्दिमीन का मस्लक है लेकिन उ़लमाए मुतअख़्ख़िरीन ने तह़क़ीक़ के साथ इस मस्अले को साबित किया है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बल्कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के तमाम आबाओ अज्दाद ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام तक सब के सब "मोमिन" हैं और इन ह़ज़रात के ईमान को साबित करने में उ़लमाए मुतअख़्ख़िरीन के तीन त़रीक़े हैं :

अव्वल : येह कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और आबाओ अज्दाद सब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के दीन पर थे, लिहाज़ा "मोमिन" हुए। **दुवुम :** येह कि येह तमाम ह़ज़रात हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ए'लाने नुबुव्वत से पहले ही ऐसे ज़माने में वफ़ात पा गए जो ज़मानए "फ़त्रत" कहलाता है और इन लोगों तक हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दा'वते ईमान पहुंची ही नहीं लिहाज़ा हरगिज़ हरगिज़ इन ह़ज़रात को काफ़िर नहीं कहा जा सकता बल्कि इन लोगों को मोमिन ही कहा जाएगा। **सिवुम :** येह कि अल्लाह तआ़ला ने इन ह़ज़रात को ज़िन्दा फ़रमा कर इन की क़ब्रों से उठाया और इन लोगों ने कलिमा पढ़ कर हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तस्दीक़ की और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वालिदैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को ज़िन्दा करने की ह़दीस अगर्चे बज़ाते ख़ुद ज़ईफ़ है मगर इस की सनदें इस क़दर कसीर हैं कि येह ह़दीस "सह़ीह़" और "ह़सन" के दरजे को पहुंच गई है।

और येह वोह इ़ल्म है जो उ़लमाए मुतक़द्दिमीन पर पोशीदा रह गया जिस को ह़क़ तआ़ला ने उ़लमाए मुतअख़्ख़िरीन पर मुन्कशिफ़ फ़रमाया और अल्लाह तआ़ला जिस को चाहता है अपने फ़ज़्ल से अपनी रह़मत के साथ

ख़ास फ़रमा लेता है और शैख़ जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने इस मस्अले में चन्द रसाइल तस्नीफ़ किये हैं और इस मस्अले को दलीलों से साबित किया है और मुख़ालिफ़ीन के शुब्हात का जवाब दिया है।(1)

(اشعۃ اللمعات ج اول ص ۷۱۸)

इसी तरह ख़ातिमतुल मुफ़स्सिरीन हज़रते शैख़ इस्माईल हक़्क़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का बयान है कि

इमाम कुरतुबी ने अपनी किताब "तज़्किरा" में तहरीर फ़रमाया कि हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब "हिज्जतुल वदाअ़" में हम लोगों को साथ ले कर चले और "हुजून" की घाटी पर गुज़रे तो रन्जो ग़म में डूबे हुए रोने लगे और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को रोता देख कर मैं भी रोने लगी। फिर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी ऊंटनी से उतर पड़े और कुछ देर के बा'द मेरे पास वापस तशरीफ़ लाए तो ख़ुश ख़ुश मुस्कुराते हुए तशरीफ़ लाए। मैं ने दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप पर मेरे मां बाप कुरबान हों, क्या बात है ? कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रन्जो ग़म में डूबे हुए ऊंटनी से उतरे और वापस लौटे तो शादां व फ़रहां मुस्कुराते हुए तशरीफ़ फ़रमा हुए तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं अपनी वालिदा हज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا की क़ब्र की ज़ियारत के लिये गया था और मैं ने **अल्लाह** तआ़ला से सुवाल किया कि वोह उन को ज़िन्दा फ़रमा दे तो ख़ुदा वन्दे तआ़ला ने उन को ज़िन्दा फ़रमा दिया और वोह ईमान लाईं।(2)

और "**अल इश्बाहि वन्नज़ाइर**" में है कि हर वोह शख़्स जो कुफ़्र की हालत में मर गया हो उस पर ला'नत करना जाइज़ है बजुज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا के,

---

1 ......اشعة اللمعات ، كتاب الجنائز، باب زيارة القبور،الفصل الاول،ج١،ص٧٦٥

2 ......روح البيان،سورة البقرة تحت الآية:١١٩،ج١،ص٢١٧

क्यूं कि इस बात का सुबूत मौजूद है कि अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों को ज़िन्दा फ़रमाया और येह दोनों ईमान लाए।(1)

येह भी ज़िक्र किया गया है कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने मां बाप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की क़ब्रों के पास रोए और एक खुश्क दरख़्त ज़मीन में बो दिया, और फ़रमाया कि अगर येह दरख़्त हरा हो गया तो येह इस बात की अ़लामत होगी कि इन दोनों का ईमान लाना मुमकिन है। चुनान्चे वोह दरख़्त हरा हो गया फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ की बरकत से वोह दोनों अपनी अपनी क़ब्रों से निकल कर इस्लाम लाए और फिर अपनी अपनी क़ब्रों में तशरीफ़ ले गए।

और इन दोनों का ज़िन्दा होना, और ईमान लाना, न अ़क़्लन मुह़ाल है न शरअ़न क्यूं कि कुरआन शरीफ़ से साबित है कि बनी इस्राईल के मक़्तूल ने ज़िन्दा हो कर अपने क़ातिल का नाम बताया इसी त़रह़ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दस्ते मुबारक से भी चन्द मुर्दे ज़िन्दा हुए।(2) जब येह सब बातें साबित हैं तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के ज़िन्दा हो कर ईमान लाने में भला कौन सी चीज़ मानेअ़ हो सकती है ? और जिस ह़दीस में येह आया है कि "मैं ने अपनी वालिदा के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत की इजाज़त त़लब की तो मुझे इस की इजाज़त नहीं दी गई।" येह ह़दीस हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के ज़िन्दा हो कर ईमान लाने से बहुत पहले की है। क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का ज़िन्दा हो कर ईमान लाना येह "ह़िज्जतुल वदाअ़" के मौक़अ़ पर हुवा है (जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के विसाल से चन्द ही माह पहले का वाक़िआ़ है) और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के मरातिब व दरजात हमेशा बढ़ते ही रहे तो हो सकता है कि पहले हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

---

1 ......الاشباہ والنظائر، کتاب الحظر والاباحۃ،ص۲۴۸

2 ......روح البیان،سورۃ البقرۃ تحت الآیۃ:۱۱۹،ج۱،ص۲۱۷

को ख़ुदा वन्दे तआ़ला ने येह शरफ़ नहीं अ़ता फ़रमाया था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا मुसलमान हों मगर बा'द में इस फ़ज़्ल व शरफ़ से भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को सरफ़राज़ फ़रमा दिया कि आप के वालिदैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को साहिबे ईमान बना दिया[1] और क़ाज़ी इमाम अबू बक्र इब्नुल अ़रबी मालिकी से येह सुवाल किया गया कि एक शख़्स येह कहता है कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के आबाओ अजदाद जहन्नम में हैं, तो आप ने फ़रमाया कि येह शख़्स मलऊ़न है। क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया है कि

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ (2) (احزاب)

*या'नी जो लोग **अल्लाह** और उस के रसूल को ईज़ा देते हैं **अल्लाह** तआ़ला उन को दुन्या व आख़िरत में मलऊ़न कर देगा।*

हाफ़िज़ शम्सुद्दीन दिमिश्क़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस मस्अले को अपने ना'तिया अश्आ़र में इस त़रह़ बयान फ़रमाया है :

حَبَـا اللّٰـهُ النَّبِیَّ مَزِیْدَ فَضْلٍ   عَلٰی فَضْلٍ وَّكَانَ بِهٖ رَءُوْفًا

अल्लाह तआ़ला ने नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام को फ़ज़्ल बालाए फ़ज़्ल से भी बढ़ कर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई और **अल्लाह** तआ़ला उन पर बहुत मेहरबान है।

فَـاَحْیَـا اُمَّـهٗ وَكَذَا اَبَاهُ   لِاِیْـمَانٍ بِهٖ فَضْلًا لَّطِیْفًا

क्यूं कि ख़ुदा वन्दे तआ़ला ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मां बाप को **हुज़ूर** पर ईमान लाने के लिये अपने फ़ज़्ले लत़ीफ़ से ज़िन्दा फ़रमा दिया।

---

1 ......روح البیان،سورۃ البقرۃ تحت الآیۃ:۱۱۹،ج۱،ص۲۱۷

2 ......پ۲۲،الاحزاب:۵۷

فَسَلِّمْ فَالْقَدِيْمُ بِهٖ قَدِيْرٌ وَاِنْ كَانَ الْحَدِيْثُ بِهٖ ضَعِيْفًا

तो तुम इस बात को मान लो क्यूं कि ख़ुदा वन्दे क़दीम इस बात पर क़ादिर है अगर्चे येह ह़दीस ज़ईफ़ है।[1]

(انتہی ملتقطاً تفسیر روح البیان ج۱ص۲۱۷تا۲۱۸)

साहि़बुल इक्लील ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुहाजिर मदनी **قدس سره الغنى** ने तह़रीर फ़रमाया कि अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी ने मिश्कात की शर्ह़ में फ़रमाया है कि "हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا को **अल्लाह** तआ़ला ने ज़िन्दा फ़रमाया, यहां तक कि वोह दोनों ईमान लाए और फिर वफ़ात पा गए।" येह ह़दीस सह़ीह़ है और जिन मुह़द्दिसीन ने इस ह़दीस को सह़ीह़ बताया है उन में से इमाम क़ुरतुबी और शाम के ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस इब्ने नासिरुद्दीन भी हैं और इस में त़ा'न करना बे मह़ल और बे जा है, क्यूं कि करामात और ख़ुसूसिय्यात की शान ही येह है कि वोह क़वाइ़द और आ़दात के ख़िलाफ़ हुवा करती हैं।

चुनान्चे हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का मौत के बा'द उठ कर ईमान लाना, येह ईमान उन के लिये नाफ़ेअ़ है ह़ालां कि दूसरों के लिये येह ईमान मुफ़ीद नहीं है, इस की वजह येह है कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا को निस्बते रसूल की वजह से जो कमाल ह़ासिल है वोह दूसरों के लिये नहीं है और हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ह़दीस ليت شعرى ما فعل ابواى (काश ! मुझे ख़बर होती कि मेरे वालिदैन के साथ क्या मुआ़मला किया गया) के बारे में इमाम सुयूत़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "दुर्रे मन्सूर" में फ़रमाया है कि येह ह़दीस मुरसल और ज़ईफ़ुल अस्नाद है।

(اکلیل علی مدارک التنزیل ج۲ص۱۰)

---

1 ......روح البيان، سورة البقرة تحت الآية:١١٩، ج١، ص٢١٧

बहर कैफ़ मुन्दरिजए बाला इक्तिबासात जो मो'तबर किताबों से लिये गए हैं इन को पढ़ लेने के बा'द हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ वालिहाना अक़ीदत और ईमानी महब्बत का येही तक़ाज़ा है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और तमाम आबाओ अजदाद बल्कि तमाम रिश्तेदारों के साथ अदबो एहतिराम का इल्तिज़ाम रखा जाए। बजुज़ उन रिश्तेदारों के जिन का काफ़िर और जहन्नमी होना कुरआन व हदीस से यक़ीनी तौर पर साबित है जैसे "अबू लहब" और उस की बीवी "**حمالة الحطب**" बाक़ी तमाम क़राबत वालों का अदब मल्हूज़े ख़ातिर रखना लाज़िम है क्यूं कि जिन लोगों को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से निस्बते क़राबत हासिल है उन की बे अदबी व गुस्ताख़ी यक़ीनन हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ईज़ा रसानी का बाइस होगा और आप कुरआन का फ़रमान पढ़ चुके कि जो लोग अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा देते हैं, वोह दुन्या व आख़िरत में मलऊन हैं।

इस मस्अले में आ'ला हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ां साहिब क़िब्ला बरेल्वी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه का एक मुहक़्क़िक़ाना रिसाला भी है जिस का नाम "शुमूलिल इस्लाम लि आबाइल किराम" है। जिस में आप ने निहायत ही मुफ़स्सल व मुदल्लल तौर पर येह तहरीर फ़रमाया है कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आबाओ अजदाद मुवहि्हद व मुस्लिम हैं। (وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم)

बरकाते नुबुव्वत का इज़्हार

जिस त़रह सूरज निकलने से पहले सितारों की रूपोशी, सुब्हे सादिक़ की सफ़ेदी, शफ़क़ की सुर्ख़ी सूरज निकलने की ख़ुश ख़बरी देने लगती हैं इसी त़रह जब आफ़्ताबे रिसालत के तुलूअ़ का ज़माना क़रीब आ गया तो अत़राफ़े आ़लम में बहुत से ऐसे अ़जीब अ़जीब वाक़िआ़त और ख़वारिक़े आ़दात बत़ौरे

अ़लामात के ज़ाहिर होने लगे जो सारी काएनात को झंझोड़ झंझोड़ कर येह बिशारत देने लगे कि अब रिसालत का आफ़्ताब अपनी पूरी आबो ताब के साथ तुलूअ़ होने वाला है।

चुनान्चे अस्ह़ाबे फ़ील की हलाकत का वाक़िआ़, ना गहां बाराने रह़मत से सर ज़मीने अ़रब का सर सब्ज़ो शादाब हो जाना, और बरसों की ख़ुश्क साली दफ़्अ़ हो कर पूरे मुल्क में ख़ुशह़ाली का दौर दौरा हो जाना, बुतों का मुंह के बल गिर पड़ना, फ़ारस के मजूसियों की एक हज़ार साल से जलाई हुई आग का एक लम्ह़े में बुझ जाना, किस्रा के मह़ल का ज़ल्ज़ला, और इस के चौदह कंगूरों का मुन्हदिम हो जाना, "हमदान" और "क़ुम" के दरमियान छे मील लम्बे छे मील चौड़े "बह़रए सावह" का यकायक बिल्कुल ख़ुश्क हो जाना, शाम और कूफ़ा के दरमियान वादिये "समावह" की ख़ुश्क नदी का अचानक जारी हो जाना, **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की वालिदा के बदन से एक ऐसे नूर का निकलना जिस से "बसरा" के मह़ल रौशन हो गए। येह सब वाक़िआ़त इसी सिल्सिले की कड़ियां हैं जो **हुज़ूर** علیہ الصلوات و التسلیمات की तशरीफ़ आवरी से पहले ही "मुबश्शरात" बन कर आ़लमे काएनात को येह ख़ुश ख़बरी देने लगे कि [1]

मुबारक हो वोह शह पर्दे से बाहर आने वाला है
गदाई को ज़माना जिस के दर पर आने वाला है

ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام से क़ब्ले ए'लाने नुबुव्वत जो ख़िलाफ़े आ़दात और अ़क़्ल को ह़ैरत में डालने वाले वाक़िआ़त सादिर होते हैं उन को शरीअ़त की इस्तिलाह़ में "इरहास" कहते हैं और ए'लाने नुबुव्वत के बा'द इन्ही को "मो'जिज़ा" कहा जाता है। इस लिये मज़्कूरा बाला तमाम वाक़िआ़त

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانی، ولادته...الخ، ج ١، ص ٢١٨ ...... ٢٣١

"इरहास" हैं जो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ए'लाने नुबुव्वत करने से क़ब्ल ज़ाहिर हुए जिन को हम ने "बरकाते नुबुव्वत" के उ़न्वान से बयान किया है। इस क़िस्म के वाक़िआ़त जो "इरहास" कहलाते हैं उन की ता'दाद बहुत ज़ियादा है, इन में से चन्द का ज़िक्र हो चुका है चन्द दूसरे वाक़िआ़त भी पढ़ लीजिये।[1]

﴿1﴾ मुह़द्दिस अबू नुऐ़म ने अपनी किताब "दलाइलुन्नुबुव्वह" में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُمَا की रिवायत से येह ह़दीस बयान की है कि जिस रात हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم का नूरे नुबुव्वत ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की पुश्ते अक़्दस से ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا के बत़्ने मुक़द्दस में मुन्तक़िल हुवा, रूए ज़मीन के तमाम चौपायों, ख़ुसूसन क़ुरैश के जानवरों को अल्लाह तआ़ला ने गोयाई अ़त़ा फ़रमाई और उन्हों ने ब ज़बाने फ़सीह़ ए'लान किया कि आज अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वोह मुक़द्दस रसूल शिकमे मादर में जल्वा गर हो गया जिस के सर पर तमाम दुन्या की इमामत का ताज है और जो सारे आ़लम को रौशन करने वाला चराग़ है। मशरिक़ के जानवरों ने मग़रिब के जानवरों को बिशारत दी। इसी त़रह़ समुन्दरों और दरियाओं के जानवरों ने एक दूसरे को येह ख़ुश ख़बरी सुनाई कि ह़ज़रते अबुल क़ासिम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत का वक़्त क़रीब आ गया।[2] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۱۰۸)

﴿2﴾ ख़त़ीब बग़दादी ने अपनी सनद के साथ येह ह़दीस रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पैदा हुए तो मैं ने देखा कि एक बहुत बड़ी बदली आई जिस में रौशनी के साथ

1 ......النبراس شرح شرح العقائد،اقسام الخارق سبعة،ص٢٧٢،ملتقطاً

2 ......المواهب اللدنية، المقصدالاول، آيات حمله،ج١،ص٦٢

घोड़ों के हुनहुनाने और परन्दों के उड़ने की आवाज़ थी और कुछ इन्सानों की बोलियां भी सुनाई देती थीं। फिर एक दम हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे सामने से ग़ैब हो गए और मैं ने सुना कि एक ए'लान करने वाला ए'लान कर रहा है कि मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को मशरिक़ व मग़रिब में गश्त कराओ और इन को समुन्दरों की भी सैर कराओ ताकि तमाम काएनात को इन का नाम, इन का हुल्या, इन की सिफ़त मा'लूम हो जाए और इन को तमाम जानदार मख़्लूक़ या'नी जिन्नो इन्स, मलाएका और चरन्दों व परन्दों के सामने पेश करो और इन्हें हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की सूरत, हज़रते शीस عَلَيْهِ السَّلَام की मा'रिफ़त, हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की शुजाअत, हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िल्लत, हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बान, हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की रिज़ा, हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की फ़साहत, हज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की हिक्मत, हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की बिशारत, हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की शिद्दत, हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام का सब्र, हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام की त़ाअ़त, हज़रते यूशुअ़ عَلَيْهِ السَّلَام का जिहाद, हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़, हज़रते दान्याल عَلَيْهِ السَّلَام की महब्बत, हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام का वक़ार, हज़रते यहूया عَلَيْهِ السَّلَام की इस्मत, हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का ज़ोहद अ़त़ा कर के इन को तमाम पैग़म्बरों के कमालात और अख़्लाक़े ह़सना से मुज़य्यन कर दो।[1] इस के बा'द वोह बादल छट गया। फिर मैं ने देखा कि आप रेशम के सब्ज़ कपड़े में लिपटे हुए हैं और उस कपड़े से पानी टपक रहा है और कोई मुनादी ए'लान कर रहा है कि वाह वा ! क्या ख़ूब मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को तमाम दुन्या पर क़ब्ज़ा दे दिया गया और काएनाते आ़लम की कोई चीज़ बाक़ी न रही जो इन के क़ब्ज़ए इक़्तिदार व ग़लबए इत़ाअ़त में न हो। अब मैं ने चेहरए अन्वर को देखा तो चौदहवीं के चांद की त़रह चमक रहा था और बदन से पाकीज़ा मुश्क की ख़ुश्बू आ रही थी फिर तीन शख़्स नज़र

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، ولادته...الخ، ج١، ص٢١٢......٢١٥

आए, एक के हाथ में चांदी का लोटा, दूसरे के हाथ में सब्ज़ ज़ुमर्रद का तृश्त, तीसरे के हाथ में एक चमकदार अंगूठी थी । अंगूठी को सात मरतबा धो कर उस ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के दोनों शानों के दरमियान मोहरे नुबुव्वत लगा दी, फिर हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) को रेशमी कपड़े में लपेट कर उठाया और एक लम्हे के बा'द मुझे सिपुर्द कर दिया ।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۱۱۳تا ص۱۱۵)

दूसरा बाब

बचपन

विलादते बा सआदत

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तारीखे़ पैदाइश में इख़्तिलाफ़ है । मगर क़ौले मश्हूर येही है कि वाक़िअए "अस्हाबे फ़ील" से पचपन दिन के बा'द 12 रबीउ़ल अव्वल ब मुताबिक़ 20 एप्रिल सि. 571 ई. विलादते बा सआदत की तारीख़ है । अहले मक्का का भी इसी पर अ़मल दर आमद है कि वोह लोग बारहवीं रबीउ़ल अव्वल ही को काशानए नुबुव्वत की ज़ियारत के लिये जाते हैं और वहां मीलाद शरीफ़ की महफ़िलें मुन्अ़क़िद करते हैं ।[2]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۱۴)

तारीखे़ आ़लम में येह वोह निराला और अ़ज़्मत वाला दिन है कि इसी रोज़ आ़लमे हस्ती के ईजाद का बाइ़स, गर्दिशे लैलो नहार का मत़लूब, ख़ल्के़ आदम का रम्ज़, किश्तिये नूह़ की ह़िफ़ाज़त का राज़, बानिये का'बा की दुआ़, इब्ने मरयम की बिशारत का ज़ुहूर हुवा । काएनाते वुजूद के उलझे हुए गेसूओं को संवारने वाला, तमाम जहान के बिगड़े निज़ामों को सुधारने वाला या'नी

---

1 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی، ولادتہ...الخ،ج۱،ص۲۱۵......۲۱٦

2 ......مدارج النبوت ، قسم دوم ، باب اول، ج۲،ص۱٤ ملخصاً

वोह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला — मुरादें ग़रीबों की बर लाने वाला
मुसीबत में ग़ैरों के काम आने वाला — वोह अपने पराए का ग़म खाने वाला
फ़क़ीरों का मावा, ज़ईफ़ों का मल्जा — यतीमों का वाली, ग़ुलामों का मौला

सनदुल अस्फ़िया, अशरफ़ुल अम्बिया, अहमदे मुज्तबा, मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم आलमे वुजूद में रौनक़ अफ़रोज़ हुए और पाकीज़ा बदन, नाफ़ बरीदा, ख़तना किये हुए ख़ुश्बू में बसे हुए ब हालते सज्दा, मक्कए मुकर्रमा की मुक़द्दस सर ज़मीन में अपने वालिदे माजिद के मकान के अन्दर पैदा हुए बाप कहां थे जो बुलाए जाते और अपने नौ निहाल को देख कर निहाल होते। वोह तो पहले ही वफ़ात पा चुके थे। दादा बुलाए गए जो उस वक़्त तवाफ़े का'बा में मश्ग़ूल थे। येह ख़ुश ख़बरी सुन कर दादा "अ़ब्दुल मुत्तलिब" ख़ुश ख़ुश ह़रमे का'बा से अपने घर आए और वालिहाना जोशे महब्बत में अपने पोते को कलेजे से लगा लिया। फिर का'बे में ले जा कर ख़ैरो बरकत की दुआ मांगी और **"मुहम्मद"** नाम रखा।[1] आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के चचा अबू लहब की लौंडी "सुवैबा" ख़ुशी में दौड़ती हुई गई और "अबू लहब" को भतीजा पैदा होने की ख़ुश ख़बरी दी तो उस ने इस ख़ुशी में शहादत की उंगली के इशारे से "सुवैबा" को आज़ाद कर दिया जिस का समरा अबू लहब को येह मिला कि उस की मौत के बा'द उस के घर वालों ने उस को ख़्वाब में देखा और हाल पूछा, तो उस ने अपनी उंगली उठा कर येह कहा कि तुम लोगों से जुदा होने के बा'द मुझे कुछ (खाने पीने) को नहीं मिला बजुज़ इस के कि "सुवैबा" को आज़ाद करने के सबब से इस उंगली के ज़रीए कुछ पानी पिला दिया जाता हूं।[2] (بخاری ج۲ باب وامہاتکم التی ارضعنکم)

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، ولادته...الخ، ج۱، ص۲۳۲

2 ......صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب وامهاتکم اللا تی ارضعنکم، الحدیث:۵۱۰۱، ج۳، ص۴۳۲ والمواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، ذکر رضاعه صلی الله علیه وسلم...الخ، ج۱، ص۲۵۹

इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक बहुत ही फ़िक्र अंगेज़ और बसीरत अफ़रोज़ बात तह़रीर फ़रमाई है जो अहले मह़ब्बत के लिये निहायत ही लज़्ज़त बख़्श है, वोह लिखते हैं कि

इस जगह मीलाद करने वालों के लिये एक सनद है कि येह आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शबे विलादत में ख़ुशी मनाते हैं और अपना माल ख़र्च करते हैं। मत़लब येह है कि जब अबू लहब को जो काफ़िर था और उस की मज़म्मत में क़ुरआन नाज़िल हुवा, आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की विलादत पर ख़ुशी मनाने, और बांदी का दूध ख़र्च करने पर जज़ा दी गई तो उस मुसलमान का क्या ह़ाल होगा जो आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मह़ब्बत में सरशार हो कर ख़ुशी मनाता है और अपना माल ख़र्च करता है।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۱۹)

मौलूदुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

जिस मुक़द्दस मकान में **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की विलादत हुई, तारीख़े इस्लाम में उस मक़ाम का नाम "मौलूदुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم" (नबी की पैदाइश की जगह) है, येह बहुत ही मुतबर्रिक मक़ाम है। सलात़ीने इस्लाम ने इस मुबारक यादगार पर बहुत ही शानदार इमारत बना दी थी, जहां अहले ह़रमैने शरीफ़ैन और तमाम दुन्या से आने वाले मुसलमान दिन रात मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ मुन्अ़क़िद करते और सलातो सलाम पढ़ते रहते थे। चुनान्चे ह़ज़रते शाह वलिय्युल्लाह साह़िब मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "फ़ुयूज़ुल ह़रमैन" में तह़रीर फ़रमाया है कि मैं एक मरतबा उस मह़फ़िले मीलाद में ह़ाज़िर हुवा, जो मक्कए मुकर्रमा में बारहवीं रबीउ़ल अव्वल को "मौलूदुन्नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم" में मुन्अ़क़िद हुई थी जिस वक़्त विलादत का ज़िक्र पढ़ा

1 ......مدارج النبوت، قسم دوم باب اول، ذکر نسب وحمل وولادت...الخ، ج۲، ص۱۹

जा रहा था तो मैं ने देखा कि यक बारगी उस मजलिस से कुछ अन्वार बुलन्द हुए, मैं ने उन अन्वार पर ग़ौर किया तो मा'लूम हुवा कि वोह रह़मते इलाही और उन फ़िरिश्तों के अन्वार थे जो ऐसी मह़फ़िलों में ह़ाज़िर हुवा करते हैं। (فیوض الحرمین)

जब ह़िजाज़ पर नज्दी ह़ुकूमत का तसल्लुत़ हुवा तो मक़ाबिरे जन्नतुल मअ़ला व जन्नतुल बक़ीअ़ के गुम्बदों के साथ साथ नज्दी ह़ुकूमत ने इस मुक़द्दस यादगार को भी तोड़ फोड़ कर मिस्मार कर दिया और बरसों येह मुबारक मक़ाम वीरान पड़ा रहा, मगर मैं जब जून सि. 1959 ई. में इस मर्कज़े ख़ैरो बरकत की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा तो मैं ने उस जगह एक छोटी सी बिल्डिंग देखी जो मुक़फ़्फ़ल थी। बा'ज़ अ़रबों ने बताया कि अब इस बिल्डिंग में एक मुख़्तसर सी लाएब्रेरी और एक छोटा सा मक्तब है, अब इस जगह न मीलाद शरीफ़ हो सकता है न सलातो सलाम पढ़ने की इजाज़त है। मैं ने अपने साथियों के साथ बिल्डिंग से कुछ दूर खड़े हो कर चुपके चुपके सलातो सलाम पढ़ा, और मुझ पर ऐसी रिक़्क़त त़ारी हुई कि मैं कुछ देर तक रोता रहा।

दूध पीने का ज़माना

सब से पहले ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अबू लहब की लौंडी "ह़ज़रते सुवैबा" का दूध नोश फ़रमाया फिर अपनी वालिदए माजिदा ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दूध से सैराब होते रहे, फिर ह़ज़रते ह़लीमा सा'दिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप को अपने साथ ले गईं और अपने क़बीले में रख कर आप को दूध पिलाती रहीं और इन्हीं के पास आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के दूध पीने का ज़माना गुज़रा।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ ص۱۸)

शुरफ़ाए अ़रब की आ़दत थी कि वोह अपने बच्चों को दूध पिलाने के लिये गिर्दो नवाह़ देहातों में भेज देते थे देहात की साफ़ सुथरी

1 ......مدارج النبوت ، قسم دوم ،باب اول، ج۲،ص۱۸،۱۹ ملخصاً

आबो हवा में बच्चों की तन्दुरुस्ती और जिस्मानी सिह्हत भी अच्छी हो जाती थी और वोह ख़ालिस और फ़सीह़ अ़रबी ज़बान भी सीख जाते थे क्यूं कि शहर की ज़बान बाहर के आदमियों के मेलजोल से ख़ालिस और फ़सीह़ व बलीग़ ज़बान नहीं रहा करती।

ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का बयान है कि मैं "बनी सा'द" की औ़रतों के हमराह दूध पीने वाले बच्चों की तलाश में मक्का को चली। इस साल अ़रब में बहुत सख़्त काल पड़ा हुवा था, मेरी गोद में एक बच्चा था, मगर फ़क्रो फ़ाक़ा की वजह से मेरी छातियों में इतना दूध न था जो उस को काफ़ी हो सके। रात भर वोह बच्चा भूक से तड़पता और रोता बिलबिलाता रहता था और हम उस की दिलजूई और दिलदारी के लिये तमाम रात बैठ कर गुज़ारते थे। एक ऊंटनी भी हमारे पास थी। मगर उस के भी दूध न था। मक्कए मुकर्रमा के सफ़र में जिस ख़च्चर पर मैं सुवार थी वोह भी इस क़दर लाग़र था कि क़ाफ़िले वालों के साथ न चल सकता था मेरे हमराही भी इस से तंग आ चुके थे। बड़ी बड़ी मुश्किलों से येह सफ़र तै हुवा जब येह क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा पहुंचा तो जो औ़रत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को देखती और येह सुनती कि येह यतीम हैं तो कोई औ़रत आप को लेने के लिये तय्यार नहीं होती थी, क्यूं कि बच्चे के यतीम होने के सबब से ज़ियादा इन्आ़मो इक्राम मिलने की उम्मीद नहीं थी। इधर ह़ज़रते ह़लीमा सा'दिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की क़िस्मत का सितारा सुरय्या से ज़ियादा बुलन्द और चांद से ज़ियादा रौशन था, इन के दूध की कमी इन के लिये रह़मत की ज़ियादती का बाइ़स बन गई, क्यूं कि दूध कम देख कर किसी ने इन को अपना बच्चा देना गवारा न किया।

ह़ज़रते ह़लीमा सा'दिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अपने शोहर "ह़ारिस बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा" से कहा कि येह तो अच्छा नहीं मा'लूम होता कि मैं ख़ाली हाथ वापस जाऊं इस से तो बेहतर येही है कि मैं इस यतीम ही को ले चलूं, शोहर ने इस को मंज़ूर कर लिया और ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

उस दुर्रे यतीम को ले कर आईं जिस से सिर्फ़ हज़रते हलीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और हज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ही के घर में नहीं बल्कि काएनाते आलम के मशरिक़ व मग़रिब में उजाला होने वाला था। येह खुदा वन्दे कुद्दूस का फ़ज़्ले अज़ीम ही था कि हज़रते हलीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सोई हुई क़िस्मत बेदार हो गई और सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन की आग़ोश में आ गए। अपने ख़ैमे में ला कर जब दूध पिलाने बैठीं तो बाराने रहमत की तरह बरकाते नुबुव्वत का ज़ुहूर शुरूअ़ हो गया, खुदा की शान देखिये कि हज़रते हलीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुबारक पिस्तान में इस क़दर दूध उतरा कि रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने भी और इन के रज़ाई भाई ने भी खूब शिकम सैर हो कर दूध पिया, और दोनों आराम से सो गए, उधर उंटनी को देखा तो उस के थन दूध से भर गए थे। हज़रते हलीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शोहर ने उस का दूध दोहा। और मियां बीवी दोनों ने खूब सैर हो कर दूध पिया और दोनों शिकम सैर हो कर रात भर सुख और चैन की नींद सोए।

हज़रते हलीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का शोहर **हुज़ूर** रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की येह बरकतें देख कर हैरान रह गया, और कहने लगा कि हलीमा ! तुम बड़ा ही मुबारक बच्चा लाई हो। हज़रते हलीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा कि वाक़ेई मुझे भी येही उम्मीद है कि येह निहायत ही बा बरकत बच्चा है और खुदा की रहमत बन कर हम को मिला है और मुझे येही तवक़्क़ोअ़ है कि अब हमारा घर ख़ैरो बरकत से भर जाएगा।[1]

हज़रते हलीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि इस के बा'द हम रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपनी गोद में ले कर मक्कए मुकर्रमा से अपने गाऊं की तरफ़ रवाना हुए तो मेरा वोही ख़च्चर अब इस क़दर तेज़ चलने लगा कि किसी की सुवारी उस की गर्द

1 ......مدارج النبوت، قسم دوم، باب اول، ج۲، ص۱۹، ۲۰ ملخصاً والمواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، ذکر رضاعه صلى الله عليه وسلم، ج۱، ص۷۹

को नहीं पहुंचती थी, क़ाफ़िले की औ़रतें हैरान हो कर मुझ से कहने लगीं कि ऐ ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ! क्या येह वोही ख़च्चर है जिस पर तुम सुवार हो कर आई थीं या कोई दूसरा तेज़ रफ़्तार ख़च्चर तुम ने ख़रीद लिया है ? अल ग़रज़ हम अपने घर पहुंचे वहां सख़्त क़ह़त़ पड़ा हुवा था तमाम जानवरों के थन में दूध ख़ुश्क हो चुके थे, लेकिन मेरे घर में क़दम रखते ही मेरी बकरियों के थन दूध से भर गए, अब रोज़ाना मेरी बकरियां जब चरागाह से घर वापस आतीं तो उन के थन दूध से भरे होते ह़ालां कि पूरी बस्ती में और किसी को अपने जानवरों का एक क़त़रा दूध नहीं मिलता था मेरे क़बीले वालों ने अपने चरवाहों से कहा कि तुम लोग भी अपने जानवरों को उसी जगह चराओ जहां ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के जानवर चरते हैं। चुनान्चे सब लोग उसी चरागाह में अपने मवेशी चराने लगे जहां मेरी बकरियां चरती थीं, मगर यहां तो चरागाह और जंगल का कोई अ़मल दख़्ल ही नहीं था येह तो रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के बरकाते नुबुव्वत का फ़ैज़ था जिस को मैं और मेरे शोहर के सिवा मेरी क़ौम का कोई शख़्स नहीं समझ सकता था।(1)

अल ग़रज़ इसी त़रह़ हर दम हर क़दम पर हम बराबर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की बरकतों का मुशाहदा करते रहे यहां तक कि दो साल पूरे हो गए और मैं ने आप का दूध छुड़ा दिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तन्दुरुस्ती और नश्वो नुमा का ह़ाल दूसरे बच्चों से इतना अच्छा था कि दो साल में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ूब अच्छे बड़े मा'लूम होने लगे, अब हम दस्तूर के मुत़ाबिक़ रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को उन की वालिदा के पास लाए और उन्हों ने ह़स्बे तौफ़ीक़ हम को इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ा।(2)

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم دوم ،باب اول، ج۲،ص ۲۰ ملتقطاً

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب، من خصائصه صلی اللّٰه علیه وسلم ،ج۱،ص۲۷۹ والمواھب اللدنیة ، ذکر رضاعه صلی اللّٰه علیه وسلم،ج۱،ص۸۲

गो क़ाइदे के मुताबिक़ अब हमें रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को अपने पास रखने का कोई ह़क़ नहीं था, मगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की बरकाते नुबुव्वत की वजह से एक लम्ह़े के लिये भी हम को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की जुदाई गवारा नहीं थी। अ़जीब इत्तिफ़ाक़ कि उस साल मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में वबाई बीमारी फैली हुई थी चुनान्चे हम ने उस वबाई बीमारी का बहाना कर के ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को रिज़ा मन्द कर लिया और फिर हम रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को वापस अपने घर लाए और फिर हमारा मकान रह़मतों और बरकतों की कान बन गया और आप हमारे पास निहायत ख़ुश व ख़ुर्रम हो कर रहने लगे। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم कुछ बड़े हुए तो घर से बाहर निकलते और दूसरे लड़कों को खेलते हुए देखते मगर ख़ुद हमेशा हर क़िस्म के खेलकूद से अ़लाह़िदा रहते।[1] एक रोज़ मुझ से कहने लगे कि अम्माजान ! मेरे दूसरे भाई बहन दिन भर नज़र नहीं आते येह लोग हमेशा सुब्ह़ को उठ कर रोज़ाना कहां चले जाते हैं ? मैं ने कहा कि येह लोग बकरियां चराने चले जाते हैं, येह सुन कर आप ने फ़रमाया : मादरे मेहरबान ! आप मुझे भी मेरे भाई बहनों के साथ भेजा कीजिये। चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के इस्रार से मजबूर हो कर आप को ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपने बच्चों के साथ चरागाह जाने की इजाज़त दे दी। और आप रोज़ाना जहां ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की बकरियां चरती थीं तशरीफ़ ले जाते रहे और बकरियां चरागाहों में ले जा कर उन की देखभाल करना जो तमाम अम्बिया और रसूलों عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत है आप ने अपने अ़मल से बचपन ही में अपनी एक ख़स्लते नुबुव्वत का इज़्हार फ़रमा दिया।[2]

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،من خصائصه صلی اللّٰه علیه وسلم، ج ۱،ص۲۷۸ماخوذاً

2 ......مدارج النبوت ،قسم دوم ، باب اول ، ج ۲،ص ۲۱

शक्के सद्र

एक दिन आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चरागाह में थे कि एक दम ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا के एक फ़रज़न्द "ज़मरह" दौड़ते और हांपते कांपते हुए अपने घर पर आए और अपनी मां ह़ज़रते बीबी ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا से कहा कि अम्माजान ! बड़ा ग़ज़ब हो गया, मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) को तीन आदमियों ने जो बहुत ही सफ़ेद लिबास पहने हुए थे, चित लिटा कर उन का शिकम फाड़ डाला है और मैं इसी ह़ाल में उन को छोड़ कर भागा हुवा आया हूं। येह सुन कर ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا और उन के शोहर दोनों बद ह़वास हो कर घबराए हुए दौड़ कर जंगल में पहुंचे तो येह देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बैठे हुए हैं। मगर ख़ौफ़ो हिरास से चेहरा ज़र्द और उदास है, ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا के शोहर ने इनतिहाई मुश्फ़िक़ाना लहजे में प्यार से चुमकार कर पूछा कि बेटा ! क्या बात है ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तीन शख़्स जिन के कपड़े बहुत ही सफ़ेद और साफ़ सुथरे थे मेरे पास आए और मुझ को चित लिटा कर मेरा शिकम चाक कर के उस में से कोई चीज़ निकाल कर बाहर फेंक दी और फिर कोई चीज़ मेरे शिकम में डाल कर शिगाफ़ को सी दिया लेकिन मुझे ज़र्रा बराबर भी कोई तक्लीफ़ नहीं हुई।[1]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۲۱)

येह वाक़िआ़ सुन कर ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا और उन के शोहर दोनों बेह़द घबराए और शोहर ने कहा कि ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ! मुझे डर है कि इन के ऊपर शायद कुछ आसेब का असर है लिहाज़ा बहुत जल्द तुम इन को इन के घर वालों के पास छोड़ आओ। इस के

1 ......مدارج النبوت، قسم دوم، باب اول، ج۲،ص۲۱ ملخصاً والمواھب اللدنیۃ ، ذکر رضاعہ صلی اللہ علیہ وسلم، ج۱،ص۸۲

बा'द ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا आप को ले कर मक्कए मुकर्रमा आईं क्यूं कि उन्हें इस वाक़िए से येह ख़ौफ़ पैदा हो गया था कि शायद अब हम कमा ह़क़्क़ुहू इन की ह़िफ़ाज़त न कर सकेंगे। ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने जब मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के सिपुर्द किया तो उन्हों ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ! तुम तो बड़ी ख़्वाहिश और चाह के साथ मेरे बच्चे को अपने घर ले गई थीं फिर इस क़दर जल्द वापस ले आने की वजह क्या है ? जब ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने शिकम चाक करने का वाक़िआ़ बयान किया और आसेब का शुबा ज़ाहिर किया तो ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया कि हरगिज़ नहीं, ख़ुदा की क़सम ! मेरे नूरे नज़र पर हरगिज़ हरगिज़ कभी भी किसी जिन्न या शैत़ान का अ़मल दख़्ल नहीं हो सकता। मेरे बेटे की बड़ी शान है। फिर अय्यामे ह़म्ल और वक़्ते विलादत के ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़त सुना कर ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को मुत़्मइन कर दिया और ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को आप की वालिदए माजिदा के सिपुर्द कर के अपने गाऊं में वापस चली आईं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी वालिदए माजिदा की आग़ोशे तरबिय्यत में परवरिश पाने लगे।[1]

शक़्क़े सद्र कितनी बार हुवा ?

ह़ज़रते मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साह़िब मुह़द्दिसे देहलवी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने सूरए **"अलम नश्रह़"** की तफ़्सीर में फ़रमाया है कि चार मर्तबा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस सीना चाक किया गया और उस में नूर व ह़िक्मत का ख़ज़ीना भरा गया।

पहली मरतबा जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के घर थे जिस का ज़िक्र हो चुका। इस की ह़िक्मत येह थी

---

1 ......المواهب اللدنية ، ذكر رضاعه صلى الله تعالى عليه وسلم، ج١،ص٨٢ وشرح الزرقاني على المواهب ، شق صدره صلى الله عليه وسلم ،ج١،ص٢٨٠، ٢٨١

कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन वस्वसों और ख़्यालात से महफ़ूज़ रहें जिन में बच्चे मुब्तला हो कर खेलकूद और शरारतों की त़रफ़ माइल हो जाते हैं। दूसरी बार दस बरस की उ़म्र में हुवा ताकि जवानी की पुर आशोब शहवतों के ख़त़रात से आप बे ख़ौफ़ हो जाएं। तीसरी बार ग़ारे हिरा में शक़्क़े सद्र हुवा और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ल्ब में नूरे सकीना भर दिया गया ताकि आप वह़्ये इलाही के अ़ज़ीम और गिरांबार बोझ को बरदाश्त कर सकें। चौथी मरतबा शबे मे'राज में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का मुबारक सीना चाक कर के नूर व हि़क्मत के ख़ज़ानों से मा'मूर किया गया, ताकि आप के क़ल्बे मुबारक में इतनी वुस्अ़त और सलाहि़य्यत पैदा हो जाए कि आप दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ की तजल्लियों, और कलामे रब्बानी की हैबतों और अ़ज़्मतों के मुतह़म्मिल हो सकें।

उम्मे ऐमन

जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर से मक्कए मुकर्रमा पहुंच गए और अपनी वालिदए मोह़तरमा के पास रहने लगे तो ह़ज़रते "उम्मे ऐमन" जो आप के वालिदे माजिद की बांदी थीं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ाति़र दारी और ख़िदमत गुज़ारी में दिन रात जी जान से मसरूफ़ रहने लगीं। उम्मे ऐमन का नाम "बरकह" है येह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को आप के वालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मीरास में मिली थीं। येही आप को खाना खिलाती थीं कपड़े पहनाती थीं आप के कपड़े धोया करती थीं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से उन का निकाह़ कर दिया था जिन से ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पैदा हुए।[1] (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم)

---

1 ......مدارج النبوت،قسم دوم،باب اول،ج۲،ص۲۳ والمواهب اللدنية،ذكر حضانته صلى الله عليه وسلم ، ج۱،ص۹۷

बचपन की अदाएं

हज़रते हलीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बयान है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का गहवारा या'नी झूला फ़िरिश्तों के हिलाने से हिलता था और आप बचपन में चांद की त़रफ़ उंगली उठा कर इशारा फ़रमाते थे तो चांद आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उंगली के इशारों पर ह़रकत करता था। जब आप की ज़बान खुली तो सब से अव्वल जो कलाम आप की ज़बाने मुबारक से निकला वोह येह था الـلّٰه اكبر اللّٰه اكبرالحمد للّٰه رب العالمين وسبحان اللّٰه بكرة واصيلا बच्चों की आ़दत के मुत़ाबिक़ कभी भी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कपड़ों में बोल व बराज़ नहीं फ़रमाया। बल्कि हमेशा एक मुअ़य्यन वक़्त पर रफ़्ए ह़ाजत फ़रमाते। अगर कभी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शर्मगाह खुल जाती तो आप रो रो कर फ़रयाद करते। और जब तक शर्मगाह न छुप जाती आप को चैन और क़रार नहीं आता था और अगर शर्मगाह छुपाने में मुझ से कुछ ताख़ीर हो जाती तो ग़ैब से कोई आप की शर्मगाह छुपा देता। जब आप अपने पाउं पर चलने के क़ाबिल हुए तो बाहर निकल कर बच्चों को खेलते हुए देखते मगर ख़ुद खेलकूद में शरीक नहीं होते थे लड़के आप को खेलने के लिये बुलाते तो आप फ़रमाते कि मैं खेलने के लिये नहीं पैदा किया गया हूं।[1] (مدارج النبوة ج٢ ص٢١)

ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की वफ़ात

हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ जब छे बरस की हो गई तो आप की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को साथ ले कर मदीनए मुनव्वरह आप के दादा के नन्हियाल बनू अ़दी बिन नज्जार में रिश्तेदारों की मुलाक़ात या अपने शोहर की क़ब्र की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गईं।

1 ......مدارج النبوت ، قسم دوم ، باب اول، ج٢،ص٢٠

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे माजिद की बांदी उम्मे ऐमन भी इस सफ़र में आप के साथ थीं वहां से वापसी पर "अब्वा" नामी गाऊं में ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वफ़ात हो गई और वोह वहीं मदफ़ून हुईं । वालिदे माजिद का साया तो विलादत से पहले ही उठ चुका था अब वालिदए माजिदा की आग़ोशे शफ़्क़त का ख़ातिमा भी हो गया । लेकिन ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का येह दुर्रे यतीम जिस आग़ोशे रह़मत में परवरिश पा कर परवान चढ़ने वाला है वोह इन सब ज़ाहिरी अस्बाबे तरबिय्यत से बे नियाज़ है ।(1)

ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वफ़ात के बा'द ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मक्कए मुकर्रमा लाईं और आप के दादा अ़ब्दुल मुत्त़लिब के सिपुर्द किया और दादा ने आप को अपनी आग़ोशे तरबिय्यत में इनतिहाई शफ़्क़त व मह़ब्बत के साथ परवरिश किया और ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप की ख़िदमत करती रहीं । जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ आठ बरस की हो गई तो आप के दादा अ़ब्दुल मुत्त़लिब का भी इनतिक़ाल हो गया ।(2)

अबू त़ालिब के पास

अ़ब्दुल मुत्त़लिब की वफ़ात के बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब ने आप को अपनी आग़ोशे तरबिय्यत में ले लिया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की नेक ख़स्लतों और दिल लुभा देने वाली बचपन की प्यारी प्यारी अदाओं ने अबू त़ालिब को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ऐसा गिरवीदा बना दिया कि मकान के अन्दर और बाहर हर वक़्त आप को अपने साथ ही रखते । अपने साथ खिलाते

---

1 ......المواهب اللدنية ، ذكر رضاعه صلى الله تعالى عليه وسلم، ج١،ص٨٨ملخصاً

2 ......شرح الزرقاني على المواهب،ذكر وفاة امه...الخ،ج١،ص٣٥٣

पिलाते, अपने पास ही आप का बिस्तर बिछाते और एक लम्हे के लिये भी कभी अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने देते थे।[1]

अबू तालिब का बयान है कि मैं ने कभी भी नहीं देखा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم किसी वक़्त भी कोई झूट बोले हों या कभी किसी को धोका दिया हो, या कभी किसी को कोई ईज़ा पहुंचाई हो, या बेहूदा लड़कों के पास खेलने के लिये गए हों या कभी कोई ख़िलाफ़े तहज़ीब बात की हो। हमेशा इनतिहाई खुश अख़्लाक़, नेक अत्वार, नर्म गुफ़्तार, बुलन्द किरदार और आ'ला दरजे के पारसा और परहेज़ गार रहे।

आप की दुआ से बारिश

एक मरतबा मुल्के अरब में इनतिहाई ख़ौफ़नाक क़हत़ पड़ गया। अहले मक्का ने बुतों से फ़रयाद करने का इरादा किया मगर एक हसीनो जमील बूढ़े ने मक्का वालों से कहा कि ऐ अहले मक्का ! हमारे अन्दर अबू तालिब मौजूद हैं जो बानिये का'बा हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْهِ السَّلَام की नस्ल से हैं और का'बे के मुतवल्ली और सज्जादा नशीन भी हैं। हमें उन के पास चल कर दुआ की दर ख़्वास्त करनी चाहिये। चुनान्चे सरदाराने अरब अबू तालिब की ख़िदमत में हाज़िर हुए और फ़रयाद करने लगे कि ऐ अबू तालिब ! क़हत़ की आग ने सारे अरब को झुलसा कर रख दिया है। जानवर घास, पानी के लिये तरस रहे हैं और इन्सान दाना पानी न मिलने से तड़प तड़प कर दम तोड़ रहे हैं। क़ाफ़िलों की आमदो रफ़्त बन्द हो चुकी है और हर तरफ़ बरबादी व वीरानी का दौर दौरा है। आप बारिश के लिये दुआ कीजिये। अहले अरब की फ़रयाद सुन कर अबू तालिब का दिल भर आया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को अपने साथ ले कर हरमे का'बा में गए। और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को दीवारे का'बा से टेक लगा कर बिठा दिया और दुआ मांगने में मश्गूल हो गए। दरमियाने

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،ذکروفاة امه...الخ، ج۱،ص۳۵٤

दुआ़ में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी अंगुश्ते मुबारक को आस्मान की त़रफ़ उठा दिया एक दम चारों त़रफ़ से बदलियां नुमूदार हुईं और फ़ौरन ही इस ज़ोर का बाराने रह़मत बरसा कि अ़रब की ज़मीन सैराब हो गई। जंगलों और मैदानों में हर त़रफ़ पानी ही पानी नज़र आने लगा। चटियल मैदानों की ज़मीनें सर सब्ज़ो शादाब हो गईं। क़ह़त़ दफ़्अ़ हो गया और काल कट गया और सारा अ़रब ख़ुशह़ाल और निहाल हो गया।

चुनान्चे अबू त़ालिब ने अपने उस त़वील क़सीदे में जिस को उन्हों ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मद्ह़ में नज़्म किया है इस वाक़िए़ को एक शे'र में इस त़रह़ ज़िक्र किया है कि

وَاَبْيَضَ يُسْتَسْقَى الْغَمَامُ بِوَجْهِهٖ ثِمَالُ الْيَتَامِىْ عِصْمَةٌ لِّلْاَرَامِلِ

या'नी वोह (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ऐसे गोरे रंग वाले हैं कि इन के रुख़े अन्वर के ज़रीए़ बदली से बारिश त़लब की जाती है वोह यतीमों का ठिकाना और बेवाओं के निगह्बान हैं।[1]

(زرقانی علی المواہب ج۱ص۱۹۰)

उम्मी लक़ब

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का लक़ब "उम्मी" है इस लफ़्ज़ के दो मा'ना हैं या तो येह "उम्मुल क़ुरा" की त़रफ़ निस्बत है। "उम्मुल क़ुरा" मक्कए मुकर्रमा का लक़ब है। लिहाज़ा "उम्मी" के मा'ना मक्कए मुकर्रमा के रहने वाले या "उम्मी" के येह मा'ना हैं कि आप ने दुन्या में किसी इन्सान से लिखना पढ़ना नहीं सीखा। येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा है कि दुन्या में किसी ने भी आप को नहीं पढ़ाया या लिखाया। मगर ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने आप को इस क़दर इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया कि आप का सीना अव्वलीन व आख़िरीन के उ़लूम व मआ़रिफ़ का ख़ज़ीना बन गया। और आप पर ऐसी किताब

[1] ......شرح الزرقانی علی المواھب، ذکر وفاۃ امه وما یتعلق بابویه صلی اللّٰه علیه وسلم، ج۱، ص۳۵۵

नाज़िल हुई जिस की शान تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَىْءٍ (हर हर चीज़ का रौशन बयान) है। हज़रते मौलाना जामी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه ने क्या ख़ूब फ़रमाया है कि

نگار من کہ بہ مکتب نرفت و خط ننوشت

بغمزہ سبق آموز صد مدرس شد

या'नी मेरे महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم न कभी मक्तब में गए, न लिखना सीखा मगर अपने चश्म व अब्रू के इशारे से सेकड़ों मुदर्रिसों को सबक़ पढ़ा दिया।

ज़ाहिर है कि जिस का उस्ताद और ता'लीम देने वाला ख़ल्लाक़े आ़लम جَلَّ جَلَالُهٗ हो भला उस को किसी और उस्ताद से ता'लीम ह़ासिल करने की क्या ज़रूरत होगी? आ'ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेल्वी قُدِّسَ سِرُّهُ الْعَزِيْز ने इरशाद फ़रमाया कि

ऐसा उम्मी किस लिये मिन्नत कुशे उस्ताज़ हो

क्या किफ़ायत इस को اقرء ربك الاكرم ***नहीं***

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के उम्मी लक़ब होने का ह़क़ीक़ी राज़ क्या है? इस को तो ख़ुदा वन्दे अ़ल्लामुल ग़ुयूब के सिवा और कौन बता सकता है? लेकिन ब ज़ाहिर इस में चन्द ह़िक्मतें और फ़वाइद मा'लूम होते हैं।

अव्वल : येह कि तमाम दुन्या को इ़ल्म व ह़िक्मत सिखाने वाले **ह़ुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हों और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का उस्ताद सिर्फ़ ख़ुदा वन्दे आ़लम ही हो, कोई इन्सान आप का उस्ताद न हो ताकि कभी कोई येह न कह सके कि पैग़म्बर तो मेरा पढ़ाया हुवा शागिर्द है।

दुवुम : येह कि कोई शख़्स कभी येह ख़याल न कर सके कि फ़ुलां आदमी **ह़ुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का उस्ताद था तो शायद वोह **ह़ुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से ज़ियादा इ़ल्म वाला होगा।

सिवुम : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के बारे में कोई येह वह्म भी न कर सके कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चूंकि पढ़े लिखे आदमी थे इस लिये उन्हों ने खुद ही कुरआन की आयतों को अपनी त़रफ़ से बना कर पेश किया है और कुरआन इन्हीं का बनाया हुवा कलाम है।

चहारुम : जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सारी दुन्या को किताब व ह़िक्मत की ता'लीम दें तो कोई येह न कह सके कि पहली और पुरानी किताबों को देख देख कर इस क़िस्म की अनमोल और इन्क़िलाब आफ़रीं ता'लीमात दुन्या के सामने पेश कर रहे हैं।

पन्जुम : अगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का कोई उस्ताद होता तो आप को उस की ता'ज़ीम करनी पड़ती, ह़ालां कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ालिक़े काएनात ने इस लिये पैदा फ़रमाया था कि सारा आ़लम आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम करे, इस लिये ह़ज़रते ह़क़ جل شانہ ने इस को गवारा नहीं फ़रमाया कि मेरा मह़बूब किसी के आगे ज़ानूए तलम्मुज़ तह करे और कोई इस का उस्ताद हो।

(وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم)

सफ़रे शाम और बुहै़रा

जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ बारह बरस की हुई तो उस वक़्त अबू त़ालिब ने तिजारत की ग़रज़ से मुल्के शाम का सफ़र किया। अबू त़ालिब को चूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बहुत ही वालिहाना मह़ब्बत थी इस लिये वोह आप को भी इस सफ़र में अपने हमराह ले गए। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ए'लाने नुबुव्वत से क़ब्ल तीन बार तिजारती सफ़र फ़रमाया। दो मरतबा मुल्के शाम गए और एक बार यमन तशरीफ़ ले गए, येह मुल्के शाम का पहला सफ़र है इस सफ़र के दौरान "बुसरा" में "बुहै़रा" राहिब (ईसाई साधू) के पास आप का क़ियाम हुवा। उस ने तौरात व इन्जील में बयान की हुई नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां की निशानियों से

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देखते ही पहचान लिया और बहुत अ़क़ीदत और एह़तिराम के साथ उस ने आप के क़ाफ़िले वालों की दा'वत की और अबू त़ालिब से कहा कि येह सारे जहान के सरदार और रब्बुल आ़लमीन के रसूल हैं, जिन को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने रह़मतुल्लिल आ़लमीन बना कर भेजा है। मैं ने देखा है कि शजरो ह़जर इन को सज्दा करते हैं और अब्र इन पर साया करता है और इन के दोनों शानों के दरमियाने मोहरे नुबुव्वत है। इस लिये तुम्हारे ह़क़ में येही बेहतर होगा कि अब तुम इन को ले कर आगे न जाओ और अपना माले तिजारत यहीं फ़रोख़्त कर के बहुत जल्द मक्का चले जाओ। क्यूं कि मुल्के शाम में यहूदी लोग इन के बहुत बड़े दुश्मन हैं। वहां पहुंचते ही वोह लोग इन को शहीद कर डालेंगे। बुह़ैरा राहिब के कहने पर अबू त़ालिब को ख़त़रा मह़सूस होने लगा। चुनान्चे उन्हों ने वहीं अपनी तिजारत का माल फ़रोख़्त कर दिया और बहुत जल्द **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपने साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा वापस आ गए। बुह़ैरा राहिब ने चलते वक़्त इनतिहाई अ़क़ीदत के साथ आप को सफ़र का कुछ तोशा भी दिया।[1]

(ترمذی ج۲ باب ماجاء فی بدءِ نبوۃ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

तीसरा बाब

ए'लाने नुबुव्वत से पहले के कारनामे

जंगे फ़ुज्जार

इस्लाम से पहले अ़रबों में लड़ाइयों का एक त़वील सिलसिला जारी था। इन्ही लड़ाइयों में से एक मश्हूर लड़ाई "जंगे फ़ुज्जार" के नाम से मश्हूर है। अ़रब के लोग ज़ुल क़ा'दह,

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب ، باب ماجاء فی بدء نبوة النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث: ۳٦٤٠، ج٥، ص٣٥٦ والسیرة النبویة لابن ہشام، قصة بحیری، ص٧٣

ज़ुल हिज्जा, मुहर्रम और रजब, इन चार महीनों का बेहद एहतिराम करते थे और इन महीनों में लड़ाई करने को गुनाह जानते थे। यहां तक कि आम तौर पर इन महीनों में लोग तलवारों को नियाम में रख देते। और नेज़ों की बरछियां उतार लेते थे। मगर इस के बा वुजूद कभी कभी कुछ ऐसे हंगामी हालात दरपेश हो गए कि मजबूरन इन महीनों में भी लड़ाइयां करनी पड़ीं। तो इन लड़ाइयों को अहले अ़रब "हुरूबे फ़ुज्जार" (गुनाह की लड़ाइयां) कहते थे। सब से आख़िरी जंगे फ़ुज्जार जो "क़ुरैश" और "क़ैस" के क़बीलों के दरमियान हुई उस वक़्त **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ बीस बरस की थी। चूंकि क़ुरैश इस जंग में ह़क़ पर थे, इस लिये अबू त़ालिब वग़ैरा अपने चचाओं के साथ आप ने भी इस जंग में शिर्कत फ़रमाई। मगर किसी पर हथयार नहीं उठाया। सिर्फ़ इतना ही किया कि अपने चचाओं को तीर उठा उठा कर देते रहे। इस लड़ाई में पहले क़ैस फिर क़ुरैश ग़ालिब आए और आख़िरे कार सुल्ह़ पर इस लड़ाई का ख़ातिमा हो गया।[1] (سیرت ابن ہشام ج۲ ص۱۸۶)

ह़ल्फ़ुल फ़ुज़ूल

रोज़ रोज़ की लड़ाइयों से अ़रब के सेकड़ों घराने बरबाद हो गए थे। हर त़रफ़ बद अम्नी और आए दिन की लूटमार से मुल्क का अम्नो अमान ग़ारत हो चुका था। कोई शख़्स अपनी जान व माल को महफ़ूज़ नहीं समझता था। न दिन को चैन, न रात को आराम, इस वह़शत नाक सूरते हाल से तंग आ कर कुछ सुल्ह़ पसन्द लोगों ने जंगे फ़ुज्जार के ख़ातिमे के बा'द एक इस्लाही तह़रीक चलाई। चुनान्चे बनू हाशिम, बनू ज़हरा, बनू असद वग़ैरा क़बाइले क़ुरैश के बड़े बड़े सरदारान अ़ब्दुल्लाह बिन जदआन के मकान पर जम्अ़ हुए और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، خروجه الى الشام، ج١، ص٣٦٢ والسيرة النبوية لابن هشام، حرب الفجار، ص٧٥

चचा ज़ुबैर बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब ने येह तज्वीज़ पेश की, कि मौजूदा ह़ालात को सुधारने के लिये कोई मुआ़हदा करना चाहिये । चुनान्चे ख़ानदाने क़ुरैश के सरदारों ने "बक़ाए बाहम" के उसूल पर "जियो और जीने दो" के क़िस्म का एक मुआ़हदा किया और ह़लफ़ उठा कर अ़ह्द किया कि हम लोग :

﴾1﴿ मुल्क से बे अम्नी दूर करेंगे । ﴾2﴿ मुसाफ़िरों की ह़िफ़ाज़त करेंगे । ﴾3﴿ ग़रीबों की इमदाद करते रहेंगे । ﴾4﴿ मज़्लूम की ह़िमायत करेंगे । ﴾5﴿ किसी ज़ालिम या ग़ासिब को मक्का में नहीं रहने देंगे ।

इस मुआ़हदे में **ह़ुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم भी शरीक हुए और आप को येह मुआ़हदा इस क़दर अ़ज़ीज़ था कि ए'लाने नुबुव्वत के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि इस मुआ़हदे से मुझे इतनी ख़ुशी हुई कि अगर इस मुआ़हदे के बदले में कोई मुझे सुर्ख़ रंग के ऊंट भी देता तो मुझे इतनी ख़ुशी नहीं होती । और आज इस्लाम में भी अगर कोई मज़्लूम "یـاآل حلف الفضول" कह कर मुझे मदद के लिये पुकारे तो मैं उस की मदद के लिये तय्यार हूं ।

इस तारीख़ी मुआ़हदे को "**ह़ल्फ़ुल फ़ुज़ूल**" इस लिये कहते हैं कि क़ुरैश के इस मुआ़हदे से बहुत पहले मक्का में क़बीलए "जरहम" के सरदारों के दरमियान भी बिल्कुल ऐसा ही एक मुआ़हदा हुवा था । और चूंकि क़बीलए जरहम के वोह लोग जो इस मुआ़हदे के मुह़र्रिक थे उन सब लोगों का नाम "फ़ज़्ल" था या'नी फ़ज़्ल बिन ह़ारिस और फ़ज़्ल बिन वदाआ़ और फ़ज़्ल बिन फ़ुज़ाला इस लिये इस मुआ़हदे का नाम "ह़ल्फ़ुल फ़ुज़ूल" रख दिया गया, या'नी उन चन्द आदमियों का मुआ़हदा जिन के नाम "फ़ज़्ल" थे ।[1] (سیرت ابن ہشام ج۱ ص۱۳۴)

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام ، حرب الفجار، ص ٥٦

मुल्के शाम का दूसरा सफ़र

जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की उम्र शरीफ़ तक़रीबन पच्चीस साल की हुई तो आप की अमानत व सदाक़त का चरचा दूर दूर तक पहुंच चुका था। ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا मक्का की एक बहुत ही मालदार औ़रत थीं। इन के शोहर का इनतिक़ाल हो चुका था। इन को ज़रूरत थी कि कोई अमानत दार आदमी मिल जाए तो उस के साथ अपनी तिजारत का माल व सामान मुल्के शाम भेजें। चुनान्चे इन की नज़्रे इनतिख़ाब ने इस काम के लिये **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को मुन्तख़ब किया और कहला भेजा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मेरा माले तिजारत ले कर मुल्के शाम जाएं जो मुआ़वज़ा मैं दूसरों को देती हूं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अमानत व दियानत दारी की बिना पर मैं आप को उस का दुगना दूंगी। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली और तिजारत का माल व सामान ले कर मुल्के शाम को रवाना हो गए। इस सफ़र में ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपने एक मो'तमद ग़ुलाम "मैसरह" को भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ रवाना कर दिया ताकि वोह आप की ख़िदमत करता रहे। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुल्के शाम के मश्हूर शहर "बुसरा" के बाज़ार में पहुंचे तो वहां "नस्तूरा" राहिब की ख़ानक़ाह के क़रीब में ठहरे। "नस्तूरा" मैसरह को बहुत पहले से जानता पहचानता था। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सूरत देखते ही "नस्तूरा" मैसरह के पास आया और दरयाफ़्त किया कि ऐ मैसरह ! येह कौन शख़्स हैं जो इस दरख़्त के नीचे उतर पड़े हैं। मैसरह ने जवाब दिया कि येह मक्का के रहने वाले हैं और ख़ानदाने बनू हाशिम के चश्मो चराग़ हैं इन का नामे नामी "**मुह़म्मद**" और लक़ब "**अमीन**" है। नस्तूरा ने कहा कि सिवाए नबी के इस दरख़्त के नीचे आज तक कभी कोई नहीं उतरा। इस लिये मुझे यक़ीने कामिल है कि "**नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां**" येही हैं। क्यूं कि आख़िरी नबी की तमाम निशानियां जो मैं ने तौरैत व इन्जील में पढ़ी हैं वोह सब मैं इन में देख रहा हूं। काश ! मैं उस वक़्त ज़िन्दा

रहता जब येह अपनी नुबुव्वत का ए'लान करेंगे तो मैं इन की भरपूर मदद करता और पूरी जां निसारी के साथ इन की ख़िदमत गुज़ारी में अपनी तमाम उ़म्र गुज़ार देता। ऐ मैसरह ! मैं तुम को नसीहृत और वसिय्यत करता हूं कि ख़बरदार ! एक लम्हे के लिये भी तुम इन से जुदा न होना और इनतिहाई ख़ुलूस व अ़क़ीदत के साथ इन की ख़िदमत करते रहना क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन को "ख़ातमुन्नबिय्यीन" होने का शरफ़ अ़ता फ़रमाया है।[1]

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बुसरा के बाज़ार में बहुत जल्द तिजारत का माल फ़रोख़्त कर के मक्कए मुकर्रमा वापस आ गए। वापसी में जब आप का क़ाफ़िला शहरे मक्का में दाख़िल होने लगा तो हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا एक बालाख़ाने पर बैठी हुई क़ाफ़िले की आमद का मन्ज़र देख रही थीं। जब उन की नज़र **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर पड़ी तो उन्हें ऐसा नज़र आया कि दो फ़िरिश्ते आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के सर पर धूप से साया किये हुए हैं। हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के क़ल्ब पर इस नूरानी मन्ज़र का एक ख़ास असर हुवा और वोह फ़र्ते अ़क़ीदत से इनतिहाई वालिहाना महृब्बत के साथ येह हसीन जल्वा देखती रहीं। फिर अपने ग़ुलाम मैसरह से उन्हों ने कई दिन के बा'द इस का ज़िक्र किया तो मैसरह ने बताया कि मैं तो पूरे सफ़र में येही मन्ज़र देखता रहा हूं। और इस के इलावा मैं ने बहुत सी अ़जीबो ग़रीब बातों का मुशाहदा किया है। फिर मैसरह ने नस्तूरा राहिब की गुफ़्तगू और उस की अ़क़ीदत व महृब्बत का तज़किरा भी किया। येह सुन कर हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को आप से बे पनाह क़ल्बी तअ़ल्लुक़ और बेहृद अ़क़ीदत व महृब्बत हो गई और यहां तक इन का दिल झुक गया कि इन्हें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से निकाह़ की रग़बत हो गई।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ ص۲۷)

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم دوم ، باب دوم، ج۲،ص۲۷

2 ......مدارج النبوت ، قسم دوم ، باب دوم، ج۲،ص۲۷

निकाह़

ह़ज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا माल व दौलत के साथ इनतिहाई शरीफ़ और इफ़्फ़त मआब ख़ातून थीं । अहले मक्का इन की पाक दामनी और पारसाई की वजह से इन को त़ाहिरा (पाकबाज़) कहा करते थे । इन की उ़म्र चालीस साल की हो चुकी थी पहले इन का निकाह़ अबू हाला बिन ज़रारह तमीमी से हुवा था और उन से दो लड़के "हिन्द बिन अबू हाला" और "हाला बिन अबू हाला" पैदा हो चुके थे । फिर अबू हाला के इनतिक़ाल के बा'द ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दूसरा निकाह़ "अ़तीक़ बिन आ़बिद मख़्ज़ूमी" से किया । इन से भी दो अवलाद हुई, एक लड़का "अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक़" और एक लड़की "हिन्द बिन्ते अ़तीक़" । ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दूसरे शोहर "अ़तीक़" का भी इनतिक़ाल हो चुका था । बड़े बड़े सरदाराने क़ुरैश इन के साथ अ़क़्दे निकाह़ के ख़्वाहिश मन्द थे लेकिन उन्हों ने सब पैग़ामों को ठुकरा दिया । मगर **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पैग़म्बराना अख़्लाक़ व आ़दात को देख कर और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ह़ैरत अंगेज़ ह़ालात को सुन कर यहां तक इन का दिल आप की त़रफ़ माइल हो गया कि ख़ुद बख़ुद इन के क़ल्ब में आप से निकाह़ की रग़बत पैदा हो गई । कहां तो बड़े बड़े मालदारों और शहरे मक्का के सरदारों के पैग़ामों को रद कर चुकी थीं और येह त़ै कर चुकी थीं कि अब चालीस बरस की उ़म्र में तीसरा निकाह़ नहीं करूंगी और कहां ख़ुद ही **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की फूफी ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बुलाया जो उन के भाई अ़वाम बिन ख़ुवैलद की बीवी थीं । उन से **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के कुछ ज़ाती ह़ालात के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल कीं फिर "नफ़ीसा" बिन्ते उमय्या के ज़रीए ख़ुद ही **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास निकाह़ का पैग़ाम भेजा । मश्हूर इमामे सीरत मुह़म्मद बिन

इस्हाक़ ने लिखा है कि इस रिश्ते को पसन्द करने की जो वजह हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने खुद हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से बयान की है वोह खुद उन के अल्फ़ाज़ में येह है : اِنِّیۡ قَدۡ رَغِبۡتُ فِیۡکَ لِحُسۡنِ خُلُقِکَ وَصِدۡقِ حَدِیۡثِکَ या'नी मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अच्छे अख़्लाक़ और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सच्चाई की वजह से आप को पसन्द किया।(1)

(زرقانی علی المواہب ج۱ص۲۰۰)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस रिश्ते को अपने चचा अबू तालिब और ख़ानदान के दूसरे बड़े बूढ़ों के सामने पेश फ़रमाया। भला हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا जैसी पाक दामन, शरीफ़, अक़्ल मन्द और मालदार औरत से शादी करने को कौन न कहता ? सारे ख़ानदान वालों ने निहायत खुशी के साथ इस रिश्ते को मन्ज़ूर कर लिया। और निकाह़ की तारीख़ मुक़र्रर हुई और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और अबू तालिब वग़ैरा अपने चचाओं और ख़ानदान के दूसरे अफ़राद और शुरफ़ाए बनी हाशिम व सरदाराने मुज़िर को अपनी बरात में ले कर हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के मकान पर तशरीफ़ ले गए और निकाह़ हुवा। इस निकाह़ के वक़्त अबू तालिब ने निहायत ही फ़सीह़ व बलीग़ ख़ुत़्बा पढ़ा। इस ख़ुत़्बे से बहुत अच्छी तरह इस बात का अन्दाज़ा हो जाता है कि ए'लाने नुबुव्वत से पहले आप के ख़ानदानी बड़े बूढ़ों का आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ कैसा ख़याल था और आप के अख़्लाक़ व आदात ने इन लोगों पर कैसा असर डाला था।(2) अबू तालिब के उस ख़ुत़्बे का तर्जमा येह है :

तमाम ता'रीफ़ें उस ख़ुदा के लिये हैं जिस ने हम लोगों को हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की नस्ल और हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में बनाया और हम को मअ़द और मुज़िर ख़ानदान

---

1 ......المواھب اللدنية مع شرح الزرقانی،تزوجه علیه السلام من خديجة،ج۱،ص ۳۷۰۔۳۷۴ مختصراً

2 ......المواھب اللدنية مع شرح الزرقانی،تزوجه علیه السلام من خديجة،ج۱،ص۳۷۶ مختصراً

में पैदा फ़रमाया और अपने घर (का'बे) का निगहबान और अपने ह़रम का मुन्तज़िम बनाया और हम को इ़ल्म व ह़िक्मत वाला घर और अम्न वाला ह़रम अ़त़ा फ़रमाया और हम को लोगों पर ह़ाकिम बनाया।

येह मेरे भाई का फ़रज़न्द मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह है। येह एक ऐसा जवान है कि क़ुरैश के जिस शख़्स का भी इस के साथ मुवाज़ना किया जाए येह उस से हर शान में बढ़ा हुवा ही रहेगा। हां माल इस के पास कम है लेकिन माल तो एक ढलती हुई छाउं और अदल बदल होने वाली चीज़ है। अम्मा बा'द ! मेरा भतीजा मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) वोह शख़्स है जिस के साथ मेरी क़राबत और क़ुरबत व मह़ब्बत को तुम लोग अच्छी त़रह़ जानते हो। वोह ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से निकाह़ करता है और मेरे माल में से बीस ऊंट महर मुक़र्रर करता है और इस का मुस्तक़्बिल बहुत ही ताबनाक, अ़ज़ीमुश्शान और जलीलुल क़द्र है।[1] (زرقانی علی المواهب ج۱ص۲۰۱)

जब अबू त़ालिब अपना येह वल्वला अंगेज़ ख़ुत़्बा ख़त्म कर चुके तो ह़ज़रते बीबी ख़दीजा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नोफ़िल ने भी खड़े हो कर एक शानदार ख़ुत़्बा पढ़ा। जिस का मज़्मून येह है :

ख़ुदा ही के लिये ह़म्द है जिस ने हम को ऐसा ही बनाया जैसा कि ऐ अबू त़ालिब ! आप ने ज़िक्र किया और हमें वोह तमाम फ़ज़ीलतें अ़त़ा फ़रमाई हैं जिन को आप ने शुमार किया। बिला शुबा हम लोग अ़रब के पेश्वा और सरदार हैं और आप लोग भी तमाम फ़ज़ाइल के अहल हैं। कोई क़बीला आप लोगों के फ़ज़ाइल का इन्कार नहीं कर सकता और कोई शख़्स आप लोगों के फ़ख़्रो शरफ़ को

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى،تزوجه عليه السلام من خديجة،ج١،ص٣٧٦ ملخصاً ومدارج النبوت ، قسم دوم ، باب دوم ، ج٢،ص٢٨

रद नहीं कर सकता और बेशक हम लोगों ने निहायत ही रग़्बत के साथ आप लोगों के साथ मिलने और रिश्ते में शामिल होने को पसन्द किया। लिहाज़ा ऐ कुरैश ! तुम गवाह रहो कि ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھَا को मैं ने मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) की ज़ौजिय्यत में दिया चार सो मिस्क़ाल महर के बदले।[1]

ग़रज़ हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا के साथ **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام का निकाह हो गया और **हुज़ूर** मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का ख़ानए मईशत अज़्दवाजी ज़िन्दगी के साथ आबाद हो गया। हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا तक़रीबन 25 बरस तक **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की ख़िदमत में रहीं और इन की ज़िन्दगी में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने कोई दूसरा निकाह नहीं फ़रमाया और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के एक फ़रज़न्द हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ के सिवा बाक़ी आप की तमाम औलाद हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھَا ही के बत़्न से पैदा हुई। जिन का तफ़्सीली बयान आगे आएगा।

हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا ने अपनी सारी दौलत **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के क़दमों पर कुरबान कर दी और अपनी तमाम उ़म्र **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ग़म गुसारी और ख़िदमत में निसार कर दी जिन की तफ़्सील आयन्दा सफ़ह़ात में तह़रीर की जाएगी।

का'बे की ता'मीर

आप صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की रास्त बाज़ी और अमानत व दियानत की ब दौलत ख़ुदा वन्दे आ़लम عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को इस क़दर मक़्बूले ख़लाइक़ बना दिया और अ़क़्ले सलीम और बे मिसाल दानाई का ऐसा अ़ज़ीम जौहर अ़ता फ़रमा दिया कि कम उ़म्री में आप صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अ़रब के बड़े बड़े सरदारों के झगड़ों का ऐसा ला जवाब फ़ैसला फ़रमा

[1] شرح الزرقانی علی المواھب ،تزوجه علیه السلام من خدیجة، ج ۱، ص ۳۷۷

दिया कि बड़े बड़े दानिश्वरों और सरदारों ने इस फ़ैसले की अ़ज़मत के आगे सर झुका दिया, और सब ने बिल इत्तिफ़ाक़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपना ह़कम और सरदारे अ़ज़ीम तस्लीम कर लिया। चुनान्चे इस क़िस्म का एक वाक़िआ़ ता'मीरे का'बा के वक़्त पेश आया जिस की तफ़्सील येह है कि जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की उ़म्र पेंतीस (35) बरस की हुई तो ज़ोरदार बारिश से ह़रमे का'बा में ऐसा अ़ज़ीम सैलाब आ गया कि का'बे की इमारत बिल्कुल ही मुन्हदिम हो गई। ह़ज़रते इब्राहीम व ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام का बनाया हुवा का'बा बहुत पुराना हो चुका था। इमालक़ा, क़बीलए जरहम और क़ुसी वग़ैरा अपने अपने वक़्तों में इस का'बे की ता'मीर व मरम्मत करते रहते थे मगर चूंकि इमारत नशीब में थी इस लिये पहाड़ों से बरसाती पानी के बहाव का ज़ोरदार धारा वादिये मक्का में हो कर गुज़रता था और अकसर ह़रमे का'बा में सैलाब आ जाता था। का'बे की ह़िफ़ाज़त के लिये बालाई ह़िस्से में क़ुरैश ने कई बन्द भी बनाए थे मगर वोह बन्द बार बार टूट जाते थे। इस लिये क़ुरैश ने येह तै किया कि इमारत को ढा कर फिर से का'बे की एक मज़बूत इमारत बनाई जाए जिस का दरवाज़ा बुलन्द हो और छत भी हो।[1] चुनान्चे क़ुरैश ने मिलजुल कर ता'मीर का काम शुरूअ़ कर दिया। इस ता'मीर में **ह़ुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم भी शरीक हुए और सरदाराने क़ुरैश के दोश बदोश पथ्थर उठा उठा कर लाते रहे। मुख़्तलिफ़ क़बीलों ने ता'मीर के लिये मुख़्तलिफ़ ह़िस्से आपस में तक़्सीम कर लिये। जब इमारत "ह़जरे अस्वद" तक पहुंच गई तो क़बाइल में सख़्त झगड़ा खड़ा हो गया। हर क़बीला येही चाहता था कि हम ही "**ह़जरे अस्वद**" को उठा कर दीवार में नस्ब करें। ताकि हमारे क़बीले के लिये येह फ़ख़्र व ए'ज़ाज़ का बाइस बन जाए। इस कश्मकश में चार दिन गुज़र गए यहां तक नौबत पहुंची कि तलवारें निकल आईं बनू अ़ब्दुद्दार और बनू अ़दी के

1 ......السيرة الحلبية، باب بنيان قريش الكعبة...الخ، ج١،ص٢٠٤ مختصراً

क़बीलों ने तो इस पर जान की बाज़ी लगा दी और ज़मानए जाहिलिय्यत के दस्तूर के मुत़ाबिक़ अपनी क़स्मों को मज़्बूत़ करने के लिये एक प्याले में ख़ून भर कर अपनी उंगलियां उस में डबो कर चाट लीं। पांचवें दिन ह़रमे का'बा में तमाम क़बाइले अ़रब जम्अ़ हुए और इस झगड़े को तै करने के लिये एक बड़े बूढ़े शख़्स ने येह तज्वीज़ पेश की, कि कल जो शख़्स सुब्ह़ सवेरे सब से पहले ह़रमे का'बा में दाख़िल हो उस को पन्च मान लिया जाए। वोह जो फ़ैसला कर दे सब उस को तस्लीम कर लें। चुनान्चे सब ने येह बात मान ली। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान कि सुब्ह़ को जो शख़्स ह़रमे का'बा में दाख़िल हुवा वोह **हुज़ूर** रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ही थे। आप को देखते ही सब पुकार उठे कि वल्लाह येह "अमीन" हैं लिहाज़ा हम सब इन के फ़ैसले पर राज़ी हैं। आप صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस झगड़े का इस त़रह़ तस्फ़िया फ़रमाया कि पहले आप ने येह हुक्म दिया कि जिस जिस क़बीले के लोग ह़जरे अस्वद को उस के मक़ाम पर रखने के मुद्दई हैं उन का एक एक सरदार चुन लिया जाए। चुनान्चे हर क़बीले वालों ने अपना अपना सरदार चुन लिया। फिर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी चादरे मुबारक को बिछा कर ह़जरे अस्वद को उस पर रखा और सरदारों को हुक्म दिया कि सब लोग इस चादर को थाम कर मुक़द्दस पथ्थर को उठाएं। चुनान्चे सब सरदारों ने चादर को उठाया और जब ह़जरे अस्वद अपने मक़ाम तक पहुंच गया तो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने मुतबर्रक हाथों से इस मुक़द्दस पथ्थर को उठा कर उस की जगह रख दिया। इस त़रह़ एक ऐसी ख़ूंरेज़ लड़ाई टल गई जिस के नतीजे में न मा'लूम कितना ख़ून ख़राबा होता।[1] (سیرت ابن ہشام ج۱ص۱۹۶تا۱۹۷)

ख़ानए का'बा की इमारत बन गई लेकिन ता'मीर के लिये जो सामान जम्अ़ किया गया था वोह कम पड़ गया इस लिये एक

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، حديث بنيان الكعبة ...الخ، ص ٧٩

त़रफ़ का कुछ हिस्सा बाहर छोड़ कर नई बुन्याद क़ाइम कर के छोटा सा का'बा बना लिया गया का'बए मुअ़ज़्ज़मा का येही हिस्सा जिस को कुरैश ने इमारत से बाहर छोड़ दिया "ह़त़ीम" कहलाता है जिस में का'बए मुअ़ज़्ज़मा की छत का परनाला गिरता है।

का'बा कितनी बार ता'मीर किया गया ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने "तारीखे़ मक्का" में तह़रीर फ़रमाया है कि "ख़ानए का'बा" दस मरतबा ता'मीर किया गया :

《1》 सब से पहले फ़िरिश्तों ने ठीक "बैतुल मा'मूर" के सामने ज़मीन पर ख़ानए का'बा को बनाया। 《2》 फिर ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने इस की ता'मीर फ़रमाई। 《3》 इस के बा'द ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के फ़रज़न्दों ने इस इमारत को बनाया। 《4》 इस के बा'द ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह और उन के फ़रज़न्दे अरजुमन्द ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इस मुक़द्दस घर को ता'मीर किया। जिस का तज़किरा कुरआने मजीद में है। 《5》 क़ौमे इमालक़ा की इमारत। 《6》 इस के बा'द क़बीलए जरहम ने इस की इमारत बनाई। 《7》 कुरैश के मूरिसे आ'ला "क़ुसी बिन किलाब" की ता'मीर। 《8》 कुरैश की ता'मीर जिस में खुद **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने भी शिर्कत फ़रमाई और कुरैश के साथ खुद भी अपने दोशे मुबारक पर पथ्थर उठा उठा कर लाते रहे। 《9》 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के तज्वीज़ कर्दा नक़्शे के मुत़ाबिक़ ता'मीर किया। या'नी **ह़त़ीम** की ज़मीन को का'बे में दाख़िल कर दिया। और दरवाज़ा सत़्ह़े ज़मीन के बराबर नीचा रखा और एक दरवाज़ा मशरिक़ की जानिब और एक दरवाज़ा मग़रिब की सम्त बना दिया। 《10》 अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान उमवी के ज़ालिम गवर्नर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शहीद कर दिया। और इन के

बनाए हुए का'बे को ढा दिया। और फिर ज़मानए जाहिलिय्यत के नक़्शे के मुताबिक़ का'बा बना दिया। जो आज तक मौजूद है।

लेकिन ह़ज़रते अ़ल्लामा ह़ल्बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी सीरत में लिखा है कि नए सिरे से का'बे की ता'मीरे जदीद सिर्फ़ तीन ही मरतबा हुई है :

﴾1﴿ ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की ता'मीर ﴾2﴿ ज़मानए जाहिलिय्यत में क़ुरैश की इमारत और इन दोनों ता'मीरों में दो हज़ार सात सो पेंतीस (2735) बरस का फ़ासिला है ﴾3﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ता'मीर जो क़ुरैश की ता'मीर के बयासी साल बा'द हुई।

ह़ज़राते मलाएका और ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام और उन के फ़रज़न्दों की ता'मीरात के बारे में अ़ल्लामा ह़ल्बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि येह सह़ीह़ रिवायतों से साबित ही नहीं है। बाक़ी ता'मीरों के बारे में उन्हों ने लिखा कि येह इमारत में मा'मूली तरमीम या टूट फूट की मरम्मत थी। ता'मीरे जदीद नहीं थी।[1] وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

(حاشیہ بخاری ج۱ص۲۱۵باب فضل مکہ)

मख़्सूस अह़बाब

ए'लाने नुबुव्वत से क़ब्ल जो लोग **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मख़्सूस अह़बाब व रुफ़क़ा थे वोह सब निहायत ही बुलन्द अख़्लाक़, आ़ली मर्तबा, होश मन्द और बा वक़ार लोग थे। इन में सब से ज़ियादा मुक़र्रब ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे जो बरसों आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ वत़न और सफ़र में रहे। और तिजारत नीज़ दूसरे कारोबारी मुआ़मलात में हमेशा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के शरीके कार व राज़दार रहे। इसी त़रह़ ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

---

1 ......حاشیۃ صحیح البخاری، کتاب المناسك، باب فضل مکۃ و بنیانها، حاشیۃ:٤، ج١، ص٢١٥

के चचाज़ाद भाई ह़ज़रते ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो कु़रैश के निहायत ही मुअ़ज़्ज़ज़ रईस थे और जिन का एक खुसूसी शरफ़ येह है कि उन की विलादत ख़ानए का'बा के अन्दर हुई थी, येह भी **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मख़्सूस अह़बाब में ख़ुसूसी इम्तियाज़ रखते थे।[1]

ह़ज़रते ज़माद बिन सा'लबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो ज़मानए जाहिलिय्यत में ति़बाबत और जराही का पेशा करते थे येह भी अह़बाबे ख़ास में से थे। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ए'लाने नुबुव्वत के बा'द येह अपने गाऊं से मक्का आए तो कुफ़्फ़ारे कु़रैश की ज़बानी येह प्रोपेगन्डा सुना कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) मजनून हो गए हैं। फिर येह देखा कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم रास्ते में तशरीफ़ ले जा रहे हैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पीछे लड़कों का एक ग़ोल है जो शोर मचा रहा है। येह देख कर ह़ज़रते ज़माद बिन सा'लबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कुछ शुबा पैदा हुवा और पुरानी दोस्ती की बिना पर इन को इनतिहाई रन्जो क़लक़ हुवा। चुनान्चे येह **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास आए और कहने लगे कि ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)! मैं त़बीब हूं और जुनून का इलाज कर सकता हूं। येह सुन कर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना के बा'द चन्द जुम्ले इरशाद फ़रमाए जिन का ह़ज़रते ज़माद बिन सा'लबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़ल्ब पर इतना गहरा असर पड़ा कि वोह फ़ौरन ही मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए।[2]

(مشکوۃ باب علامات النبوۃ ص ۲۲۵ و مسلم ج اول ص ۲۸۵ کتاب الجمعہ)

ह़ज़रते क़ैस बिन साइब मख़्ज़ूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तिजारत के कारोबार में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के शरीके कार रहा करते थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के गहरे दोस्तों में से थे। कहा करते थे कि

---

1 ......اسد الغابة فی معرفة الصحابة، حکیم بن حزام، ج۲، ص۵۸ مختصراً

2 ......مشکاة المصابیح، کتاب الفضائل والشمائل، باب علامات النبوة، الفصل الاول، الحدیث: ۵۸۶۰، ج۲، ص۳۷٤

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का मुआ़मला अपने तिजारती शुरका के साथ हमेशा निहायत ही साफ़ सुथरा रहता था और कभी कोई झगड़ा पेश नहीं आता था।[1] (استیعاب ج۲ص۵۳۷)

मुवह्हि़दीने अ़रब से तअ़ल्लुक़ात

अ़रब में अगर्चे हर त़रफ़ शिर्क फैल गया था और घर घर में बुत परस्ती का चरचा था। मगर इस माह़ोल में भी कुछ ऐसे लोग थे जो तौह़ीद के परस्तार और शिर्क व बुत परस्ती से बेज़ार थे। इन्ही ख़ुश नसीबों में ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल हैं। येह अ़लल ए'लान शिर्क व बुत परस्ती से इन्कार और जाहिलिय्यत की मुशरिकाना रस्मों से नफ़रत का इज़्हार करते थे। येह ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चचाज़ाद भाई हैं। शिर्क व बुत परस्ती के ख़िलाफ़ ए'लाने मज़म्मत की बिना पर इन का चचा "ख़त्ताब बिन नुफ़ैल" इन को बहुत ज़ियादा तक्लीफ़ें दिया करता था। यहां तक कि इन को मक्के से शहर बदर कर दिया था और इन को मक्का में दाख़िल नहीं होने देता था। मगर येह हज़ारों ईज़ाओं के बा वुजूद अ़क़ीदए तौह़ीद पर पहाड़ की त़रह़ डटे हुए थे। चुनान्चे आप के दो शे'र बहुत मश्हूर हैं जिन को येह मुशरिकीन के मेलों और मज्मओं में बा आवाज़े बुलन्द सुनाया करते थे कि

اَرَبًّا وَّاحِدًا اَمْ اَلْفَ رَبٍّ ۔۔۔ اَدِیْنُ اِذَا تُقُسِّمَتِ الْاُمُوْرُ

تَرَکْتُ اللَّاتَ وَالْعُزّٰی جَمِیْعًا ۔۔۔ کَذَالِكَ یَفْعَلُ الرَّجُلُ الْبَصِیْرُ

या'नी क्या मैं एक रब की इत़ाअ़त करूं या एक हज़ार रब की? जब कि लोगों के दीनी मुआ़मलात तक़्सीम हो चुके हैं। मैं ने तो लात व उ़ज़्ज़ा को छोड़ दिया है। और हर बसीरत वाला ऐसा ही करेगा।[2]

(سیرت ابن ہشام ج۱ص۲۲۶)

---

1 ......الاستیعاب، حرف القاف، ج۳، ص۳٤۹

2 ......السیرۃ النبویۃ لابن هشام، زید بن عمرو بن نفیل، ص۹۰

येह मुशरिकीन के दीन से मुतनफ़्फ़िर हो कर दीने बरह़क़ की तलाश में मुल्के शाम चले गए थे। वहां एक यहूदी आ़लिम से मिले। फिर एक नसरानी पादरी से मुलाक़ात की और जब आप ने यहूदी व नसरानी दीन को क़बूल नहीं किया तो उन दोनों ने "दीने ह़नीफ़" की त़रफ़ आप की रहनुमाई की जो ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का दीन था और उन दोनों ने येह भी बताया कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام न यहूदी थे न नसरानी, और वोह एक ख़ुदाए वाह़िद के सिवा किसी की इ़बादत नहीं करते थे। येह सुन कर ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल मुल्के शाम से मक्का वापस आ गए। और हाथ उठा उठा कर मक्का में ब आवाज़े बुलन्द येह कहा करते थे कि ऐ लोगो ! गवाह रहो कि मैं ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दीन पर हूं।[1] (سیرت ابن ہشام ج ۱ ص ۲۲۵)

ए'लाने नुबुव्वत से पहले हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल को बड़ा ख़ास तअ़ल्लुक़ था और कभी कभी मुलाक़ातें भी होती रहती थीं। चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रावी हैं कि एक मरतबा वह़्य नाज़िल होने से पहले हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मक़ामे "बलदह़" की तराई में ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के सामने दस्तर ख़्वान पर खाना पेश किया। जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने खाने से इन्कार कर दिया, तो ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल कहने लगे कि मैं बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ किये हुए जानवरों का गोश्त नहीं खाता। मैं सिर्फ़ वोही ज़बीह़ा खाता हूं जो अल्लाह तआ़ला के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया हो। फिर क़ुरैश के ज़बीह़ों की बुराई बयान करने लगे और क़ुरैश को मुख़ात़ब कर के कहने लगे कि बकरी को अल्लाह तआ़ला ने पैदा फ़रमाया और अल्लाह तआ़ला ने इस के लिये आस्मान से पानी बरसाया और ज़मीन से घास उगाई। फिर ऐ क़ुरैश ! तुम बकरी को

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، زيد بن عمرو بن نفيل، ص٩٣ وصحيح البخاري، كتاب مناقب الانصار، باب حديث زيد بن عمرو بن نفيل، الحديث:٣٨٢٧، ج٢، ص٥٦٧

अल्लाह के ग़ैर (बुतों) के नाम पर ज़ब्ह़ करते हो ?[1]

हज़रते अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا कहती हैं कि मैं ने ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल को देखा कि वोह ख़ानए का'बा से टेक लगाए हुए कहते थे कि ऐ जमाअ़ते क़ुरैश ! ख़ुदा की क़सम ! मेरे सिवा तुम में से कोई भी हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के दीन पर नहीं है ।[2]

(بخاری ج ا باب حدیث زید بن عمرو بن نفیل ص ۵۴۰)

कारोबारी मशाग़िल

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का अस्ल ख़ानदानी पेशा तिजारत था और चूंकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बचपन ही में अबू त़ालिब के साथ कई बार तिजारती सफ़र फ़रमा चुके थे । जिस से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को तिजारती लैन दैन का काफ़ी तजरिबा भी ह़ासिल हो चुका था । इस लिये ज़रीअ़ए मआ़श के लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तिजारत का पेशा इख़्तियार फ़रमाया । और तिजारत की ग़रज़ से शाम व बुसरा और यमन का सफ़र फ़रमाया । और ऐसी रास्त बाज़ी और अमानत व दियानत के साथ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तिजारती कारोबार किया कि आप के शुरकाए कार और तमाम अहले बाज़ार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को "अमीन" के लक़ब से पुकारने लगे ।

एक काम्याब ताजिर के लिये अमानत, सच्चाई, वा'दे की पाबन्दी, ख़ुश अख़्लाक़ी तिजारत की जान हैं । इन ख़ुसूसिय्यात में मक्का के ताजिर "अमीन" صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जो तारीख़ी शाहकार पेश किया है उस की मिसाल तारीख़े आ़लम में नादिरे रोज़गार है ।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबिल ह़म्सा सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि नुज़ूले वह़्य और ए'लाने नुबुव्वत से पहले मैं ने आप

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب حدیث زید بن عمرو بن نفیل، الحدیث:۳۸۲۶، ج۲، ص ۵۶۷

2 ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب حدیث زید بن عمرو بن نفیل، الحدیث:۳۸۲۸، ج۲، ص ۵۶۸

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कुछ ख़रीदो फ़रोख़्त का मुआमला किया। कुछ रक़म मैं ने अदा कर दी, कुछ बाक़ी रह गई थी। मैं ने वा'दा किया कि मैं अभी अभी आ कर बाक़ी रक़म भी अदा कर दूंगा। इत्तिफ़ाक़ से तीन दिन तक मुझे अपना वा'दा याद नहीं आया। तीसरे दिन जब मैं उस जगह पहुंचा जहां मैं ने आने का वा'दा किया था तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को उसी जगह मुन्तज़िर पाया। मगर मेरी इस वा'दा ख़िलाफ़ी से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के माथे पर इक ज़रा बल नहीं आया। बस सिर्फ़ इतना ही फ़रमाया कि तुम कहां थे ? मैं इस मक़ाम पर तीन दिन से तुम्हारा इनतिज़ार कर रहा हूं।[1] (سنن ابوداؤد ج۲ ص۳۳۴ باب فی العدۃ مجتبائی)

इसी तरह एक सहाबी हज़रते साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब मुसलमान हो कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो लोग उन की ता'रीफ़ करने लगे तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं इन्हें तुम्हारी निस्बत ज़ियादा जानता हूं। हज़रते साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं मैं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर फ़िदा हों आप ने सच फ़रमाया, ए'लाने नुबुव्वत से पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मेरे शरीके तिजारत थे और क्या ही अच्छे शरीक थे, आप ने कभी लड़ाई झगड़ा नहीं किया था।[2]

(سنن ابوداؤد ج۲ ص۳۱۷ باب کراھیۃ المراء مجتبائی)

ग़ैर मा'मूली किरदार

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का ज़मानए तुफ़ूलियत ख़त्म हुवा और जवानी का ज़माना आया तो बचपन की तरह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की जवानी भी आ़म लोगों से निराली थी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का शबाब मुजस्समे हया और चाल चलन इस्मत व वक़ार का कामिल नमूना था। ए'लाने नुबुव्वत से क़ब्ल हुज़ूर

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی العدۃ ، الحدیث:٤٩٩٦، ج٤، ص٣٨٨

2 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی کراھیۃ المراء، الحدیث٤٨٣٦، ج٤، ص٣٤٢

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तमाम ज़िन्दगी बेहतरीन अख़्लाक़ व आ़दात का ख़ज़ाना थी। सच्चाई, दियानत दारी, वफ़ादारी, अ़ह्द की पाबन्दी, बुज़ुर्गों की अ़ज़मत, छोटों पर शफ़्क़त, रिश्तेदारों से मह़ब्बत, रह़्म व सख़ावत, क़ौम की ख़िदमत, दोस्तों से हमदर्दी, अ़ज़ीज़ों की ग़म ख़्वारी, ग़रीबों और मुफ़्लिसों की ख़बर गीरी, दुश्मनों के साथ नेक बरताव, मख़्लूक़े ख़ुदा की ख़ैर ख़्वाही, ग़रज़ तमाम नेक ख़स्लतों और अच्छी अच्छी बातों में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इतनी बुलन्द मन्ज़िल पर पहुंचे हुए थे कि दुन्या के बड़े से बड़े इन्सानों के लिये वहां तक रसाई तो क्या ? इस का तसव्वुर भी मुमकिन नहीं है।

कम बोलना, फ़ुज़ूल बातों से नफ़रत करना, ख़न्दा पेशानी और ख़ुशरूई के साथ दोस्तों और दुश्मनों से मिलना। हर मुआ़मले में सादगी और सफ़ाई के साथ बात करना **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ख़ास शेवा था।

हि़र्स, त़म्अ़, दग़ा, फ़रेब, झूट, शराब ख़ोरी, बदकारी, नाच गाना, लूटमार, चोरी, फ़ोहूश गोई, इश्क़ बाज़ी, येह तमाम बुरी आ़दतें और मज़मूम ख़स्लतें जो ज़मानए जाहिलिय्यत में गोया हर बच्चे के ख़मीर में होती थीं **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी इन तमाम उ़यूब व नक़ाइस से पाक साफ़ रही। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रास्त बाज़ी और अमानत व दियानत का पूरे अ़रब में शोहरा था और मक्का के हर छोटे बड़े के दिलों में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के बरगुज़ीदा अख़्लाक़ का ए'तिबार और सब की नज़रों में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का एक ख़ास वक़ार था।

बचपन से तक़रीबन चालीस बरस की उ़म्र शरीफ़ हो गई लेकिन ज़मानए जाहिलिय्यत के माह़ोल में रहने के बा वुजूद तमाम मुशरिकाना रुसूम, और जाहिलाना अत़्वार से हमेशा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का दामने इस्मत पाक ही रहा। मक्का शिर्क व बुत परस्ती का सब से बड़ा मर्कज़ था। ख़ुद ख़ानए का'बा में तीन सो साठ बुतों की पूजा होती थी।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के ख़ानदान वाले ही का'बे के मुतवल्ली और सज्जादा नशीन थे। लेकिन इस के बा वुजूद आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने कभी भी बुतों के आगे सर नहीं झुकाया।

ग़रज़ नुज़ूले वह्य और ए'लाने नुबुव्वत से पहले भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़िन्दगी अख़्लाक़े ह़सना और मह़ासिन अफ़्आ़ल का मुजस्समा और तमाम उ़यूब व नक़ाइस से पाक व साफ़ रही। चुनान्चे ए'लाने नुबुव्वत के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के दुश्मनों ने इनतिहाई कोशिश की, कि कोई अदना सा ऐब या ज़रा सी ख़िलाफ़े तहज़ीब कोई बात आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की ज़िन्दगी के किसी दौर में भी मिल जाए तो उस को उछाल कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के वक़ार पर ह़म्ला कर के लोगों की निगाहों में आप को ज़लीलो ख़्वार कर दें। मगर तारीख़ गवाह है कि हज़ारों दुश्मन सोचते सोचते थक गए लेकिन कोई एक वाक़िआ़ भी ऐसा नहीं मिल सका जिस से वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم पर अंगुश्त नुमाई कर सकें। लिहाज़ा हर इन्सान इस ह़क़ीक़त के ए'तिराफ़ पर मजबूर है कि बिला शुबा **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم का किरदार इन्सानिय्यत का एक ऐसा मुह़य्यिरुल उ़क़ूल और ग़ैर मा'मूली किरदार है जो नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिवा किसी दूसरे के लिये मुमकिन ही नहीं है। येही वजह है कि ए'लाने नुबुव्वत के बा'द सईद रूहें आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم का कलिमा पढ़ कर तन मन धन के साथ इस त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم पर कुरबान होने लगीं कि उन की जां निसारियों को देख कर शम्अ़ के परवानों ने जां निसारी का सबक़ सीखा। और ह़क़ीक़त शनास लोग फ़र्ते अ़क़ीदत से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के हुस्ने सदाक़त पर अपनी अ़क़्लों को कुरबान कर के आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के बताए हुए इस्लामी रास्ते पर आ़शिक़ाना अदाओं के साथ ज़बाने ह़ाल से येह कहते हुए चल पड़े कि

चलो वादिये इ़श्क़ में पा बरह्ना ! येह जंगल वोह है जिस में कांटा नहीं है

चौथा बाब

ए'लाने नुबुव्वत से बैअ़ते अ़क़्बा तक

जब हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़िन्दगी का चालीसवां साल शुरूअ़ हुवा तो ना गहां आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ाते मुक़द्दस में एक नया इनक़िलाब रूनुमा हो गया कि एक दम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ख़ल्वत पसन्द हो गए और अकेले तन्हाई में बैठ कर ख़ुदा की इबादत करने का ज़ौक़ व शौक़ पैदा हो गया । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अकसर अवक़ात ग़ौरो फ़िक्र में पाए जाते थे और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का बेशतर वक़्त मनाज़िरे कुदरत के मुशाहदे और काएनाते फ़ित्रत के मुतालए़ में सर्फ़ होता था । दिन रात ख़ालिके़ काएनात की ज़ात व सिफ़ात के तसव्वुर में मुस्तग्रक़ और अपनी क़ौम के बिगड़े हुए हालात के सुधार और इस की तदबीरों के सोच बिचार में मसरूफ़ रहने लगे और उन दिनों एक नई बात येह भी हो गई कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अच्छे अच्छे ख़्वाब नज़र आने लगे और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का हर ख़्वाब इतना सच्चा होता कि ख़्वाब में जो कुछ देखते उस की ता'बीर सुब्हे सादिक़ की त़रह़ रौशन हो कर ज़ाहिर हो जाया करती थी ।[1] (بخاری ج۱ص۲)

ग़ारे ह़िरा

मक्कए मुकर्रमा से तक़्रीबन तीन मील की दूरी पर **"जबले ह़िरा"** नामी पहाड़ के ऊपर एक ग़ार (खोह) है जिस को **"ग़ारे ह़िरा"** कहते हैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अकसर कई कई दिनों का खाना पानी साथ ले कर इस ग़ार के पुर सुकून माह़ोल के अन्दर ख़ुदा की इबादत में मसरूफ़ रहा करते थे । जब खाना पानी ख़त्म हो जाता तो कभी ख़ुद घर पर आ कर ले जाते और

---

1 ......صحيح البخاری، کتاب بدء الوحی ، باب ۳،الحدیث:۳، ج۱،ص۷ مختصراً

कभी हज़रत बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا खाना पानी ग़ार में पहुंचा दिया करती थीं । आज भी येह नूरानी ग़ार अपनी अस्ली हालत में मौजूद और ज़ियारत गाहे ख़लाइक़ है ।[1]

पहली वह्य

एक दिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **"ग़ारे हिरा"** के अन्दर इबादत में मश्ग़ूल थे कि बिल्कुल अचानक ग़ार में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास एक फ़िरिश्ता ज़ाहिर हुवा । (येह हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام थे जो हमेशा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम उस के रसूलों عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तक पहुंचाते रहे हैं) फ़िरिश्ते ने एक दम कहा कि "पढ़िये" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मैं पढ़ने वाला नहीं हूं ।" फ़िरिश्ते ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को पकड़ा और निहायत गर्म जोशी के साथ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से ज़ोरदार मुआ़नक़ा किया फिर छोड़ कर कहा कि "पढ़िये" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फिर फ़रमाया कि "मैं पढ़ने वाला नहीं हूं ।" फ़िरिश्ते ने दूसरी मरतबा फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को अपने सीने से चिमटाया और छोड़ कर कहा कि "पढ़िये" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फिर वोही फ़रमाया कि "मैं पढ़ने वाला नहीं हूं ।" तीसरी मरतबा फिर फ़िरिश्ते ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को बहुत ज़ोर के साथ अपने सीने से लगा कर छोड़ा और कहा कि

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّکَ الَّذِیْ خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝
اِقْرَاْ وَرَبُّکَ الْاَکْرَمُ ۝ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ۝[2]

येही सब से पहली वह्य थी जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर नाज़िल हुई । इन आयतों को याद कर के हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

---

1 ......ارشاد الساری لشرح صحیح البخاری، کتاب کیف کان بدء الوحی...الخ ، باب ۳، تحت الحدیث:۳، ج۱،ص ۱۰۵۔۱۰۷ ملتقطاًوملخصاً

2 ..... *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया आदमी को ख़ून की फटक से बनाया पढ़ो और तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम जिस ने क़लम से लिखना सिखाया आदमी को सिखाया जो न जानता था ।* (پ۳۰،العلق:۱۔۵)

अपने घर तशरीफ़ लाए। मगर इस वाक़िए से जो बिल्कुल ना गहानी तौर पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को पेश आया इस से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक पर लरज़ा तारी था। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने घर वालों से फ़रमाया कि मुझे कमली उढ़ाओ। मुझे कमली उढ़ाओ। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ख़ौफ़ दूर हुवा और कुछ सुकून हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से ग़ार में पेश आने वाला वाक़िआ बयान किया और फ़रमाया कि "मुझे अपनी जान का डर है।" येह सुन कर हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने कहा कि नहीं, हरगिज़ नहीं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की जान को कोई ख़त़रा नहीं है। ख़ुदा की क़सम! अल्लाह तआला कभी भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को रुस्वा नहीं करेगा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तो रिश्तेदारों के साथ बेहतरीन सुलूक करते हैं! दूसरों का बार खुद उठाते हैं। खुद कमा कमा कर मुफ़्लिसों और मोहताजों को अ़त़ा फ़रमाते हैं। मुसाफ़िरों की मेहमान नवाज़ी करते हैं और ह़क़ व इन्साफ़ की ख़ातिर सब की मुसीबतों और मुश्किलात में काम आते हैं।

इस के बा'द ह़ज़रते ख़दीजा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपने चचाज़ाद भाई "वरक़ा बिन नौफ़िल" के पास ले गईं। वरक़ा उन लोगों में से थे जो "मुवह़्ह़िद" थे और अहले मक्का के शिर्क व बुत परस्ती से बेज़ार हो कर "नसरानी" हो गए थे और इन्जील का इबरानी ज़बान से अ़रबी में तर्जमा किया करते थे। बहुत बूढ़े और नाबीना हो चुके थे। हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने उन से कहा कि भाईजान! आप अपने भतीजे की बात सुनिये। वरक़ा बिन नौफ़िल ने कहा कि बताइये। आप ने क्या देखा है? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ग़ारे हिरा का पूरा वाक़िआ बयान फ़रमाया। येह सुन कर वरक़ा बिन नौफ़िल ने कहा कि येह तो वोही फ़िरिश्ता है जिस को अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास भेजा था। फिर वरक़ा

बिन नौफ़िल कहने लगे कि काश ! मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ए'लाने नुबुव्वत के ज़माने में तन्दुरुस्त जवान होता । काश ! मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रहता जब आप की क़ौम आप को मक्का से बाहर निकालेगी । येह सुन कर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने (तअ़ज्जुब से) फ़रमाया कि क्या मक्का वाले मुझे मक्का से निकाल देंगे ? तो वरक़ा ने कहा : जी हां ! जो शख़्स भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तरह नुबुव्वत ले कर आया लोग उस के साथ दुश्मनी पर कमर बस्ता हो गए ।

इस के बा'द कुछ दिनों तक वह्य उतरने का सिल्सिला बन्द हो गया और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم वह्य के इनतिज़ार में मुज़्तरिब और बे क़रार रहने लगे । यहां तक कि एक दिन **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم कहीं घर से बाहर तशरीफ़ ले जा रहे थे कि किसी ने "या मुहम्मद" (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) कह कर पुकारा । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने आस्मान की त़रफ़ सर उठा कर देखा तो येह नज़र आया कि वोही फ़िरिश्ता (ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام) जो ग़ार में आया था आस्मान व ज़मीन के दरमियान एक कुरसी पर बैठा हुवा है । येह मन्ज़र देख कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक में एक ख़ौफ़ की कैफ़िय्यत पैदा हो गई और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मकान पर आ कर लेट गए और घर वालों से फ़रमाया कि मुझे कम्बल उढ़ाओ । मुझे कम्बल उढ़ाओ । चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم कम्बल ओढ़ कर लेटे हुए थे कि ना गहां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर सूरए "**मुद्दस्सिर**" की इब्तिदाई आयात नाज़िल हुई और रब तआ़ला का फ़रमान उतर पड़ा कि

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝ قُمْ فَاَنْذِرْ ۝ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝ [1] (بخاری ج۱ ص۳)

या'नी ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले खड़े हो जाओ फिर डर सुनाओ और अपने रब ही की बड़ाई बोलो और अपने कपड़े पाक रखो और बुतों से दूर रहो ।

---

1 ......پ۲۹،المدثر:۱۔۵وصحیح البخاری، کتاب بدء الوحی، باب ۳،الحدیث:۴،۳،ج۱،ص۷

इन आयात के नुज़ूल के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने दा'वते इस्लाम के मन्सब पर मामूर फ़रमा दिया और आप ख़ुदा वन्दे तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ दा'वते ह़क़ और तब्लीग़े इस्लाम के लिये कमर बस्ता हो गए।

दा'वते इस्लाम के लिये तीन दौर

पहला दौर

तीन बरस तक हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم इनतिहाई पोशीदा त़ौर पर निहायत राज़दारी के साथ तब्लीग़े इस्लाम का फ़र्ज़ अदा फ़रमाते रहे और इस दरमियान में औ़रतों में सब से पहले ह़ज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا और आज़ाद मर्दों में सब से पहले ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और लड़कों में सब से पहले ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और ग़ुलामों में सब से पहले ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ईमान लाए। फिर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की दा'वत व तब्लीग़ से ह़ज़रते उ़समान, ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم भी जल्द ही दामने इस्लाम में आ गए। फिर चन्द दिनों के बा'द ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़, ह़ज़रते अबू सलमह अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल असद, ह़ज़रते अरक़म बिन अबू अरक़म, ह़ज़रते उ़समान बिन मज़ऊ़न और उन के दोनों भाई ह़ज़रते क़ुदामा और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم भी इस्लाम में दाख़िल हो गए। फिर कुछ मुद्दत के बा'द ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी व ह़ज़रते सुहैब रूमी, ह़ज़रते उ़बैदा बिन अल ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब, सई़द बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल और इन की बीवी फ़ात़िमा बिन्ते अल ख़त्त़ाब ह़ज़रते उ़मर की बहन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया। और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم की चची ह़ज़रते उम्मुल फ़ज़्ल ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब की

बीवी और ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُم भी मुसलमान हो गईं। इन के इलावा दूसरे बहुत से मर्दों और औ़रतों ने भी इस्लाम लाने का शरफ़ ह़ासिल कर लिया।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۲۴۶)

वाज़ेह़ रहे कि सब से पहले इस्लाम लाने वाले जो ''साबिक़ीने अव्वलीन'' के लक़ब से सरफ़राज़ हैं उन खुश नसीबों की फ़ेहरिस्त पर नज़र डालने से पता चलता है कि सब से पहले दामने इस्लाम में आने वाले वोही लोग हैं जो फ़ित़रतन नेक त़ब्अ़ और पहले ही से दीने ह़क़ की तलाश में सरगर्दां थे और कुफ़्फ़ारे मक्का के शिर्क व बुत परस्ती और मुशरिकाना रुसूमे जाहिलिय्यत से मुतनफ़्फ़िर और बेज़ार थे। चुनान्चे नबिय्ये बरह़क़ के दामन में दीने ह़क़ की तजल्ली देखते ही येह नेक बख़्त लोग परवानों की त़रह़ शमए़ नुबुव्वत पर निसार होने लगे और मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए।

दूसरा दौर

तीन बरस की इस खुफ़्या दा'वते इस्लाम में मुसलमानों की एक जमाअ़त तय्यार हो गई इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर सूरए **''शुअ़रा''** की आयत وَاَنۡذِرۡ عَشِیۡرَتَکَ الۡاَقۡرَبِیۡنَ ۙ[2] नाज़िल फ़रमाई और खुदा वन्दे तआ़ला का हुक्म हुवा कि ऐ मह़बूब ! आप अपने क़रीबी ख़ानदान वालों को खुदा से डराइये तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने एक दिन कोहे सफ़ा की चोटी पर चढ़ कर **''या मा'शरे कुरैश''** कह कर क़बीलए कुरैश को पुकारा। जब सब कुरैश जम्अ़ हो गए तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम ! अगर मैं तुम लोगों से येह कह दूं कि इस पहाड़ के पीछे एक लश्कर छुपा हुवा है जो तुम पर ह़म्ला करने वाला है तो क्या तुम लोग

---

1 ......المواھب اللدنیۃ،دقائق حقائق بعثتہ،ج۱،ص۱۱۵،۱۱۶وشرح الزرقانی علی المواھب، ذکر اول من آمن باللّٰہ ورسولہ،ج۱،ص۴۵۵،۴۶۰ملتقطاًوملخصاً

2 ..... *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब अपने क़रीब तर रिश्तेदारों को डराओ।* (پ۱۹، الشعرآء:۲۱۴)

मेरी बात का यक़ीन कर लोगे ? तो सब ने एक ज़बान हो कर कहा कि हां ! हां ! हम यक़ीनन आप صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की बात का यक़ीन कर लेंगे क्यूं कि हम ने आप صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को हमेशा सच्चा और अमीन ही पाया है। आप صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अच्छा तो फिर मैं येह कहता हूं कि मैं तुम लोगों को अ़ज़ाबे इलाही से डरा रहा हूं और अगर तुम लोग ईमान न लाओगे तो तुम पर अ़ज़ाबे इलाही उतर पड़ेगा। येह सुन कर तमाम कुरैश जिन में आप صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का चचा अबू लहब भी था, सख़्त नाराज़ हो कर सब के सब चले गए और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शान में ऊल फ़ूल बकने लगे।[1] (بخاری ج۲ص۷۰۲وعامہ تفاسیر)

तीसरा दौर

अब वोह वक़्त आ गया कि ए'लाने नुबुव्वत के चौथे साल सूरए ह़जर की आयत **فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ**[2] नाज़िल फ़रमाई और ह़ज़रते ह़क़ جل شانہ ने येह हुक्म फ़रमाया कि ऐ मह़बूब ! आप को जो हुक्म दिया गया है उस को अ़लल ए'लान बयान फ़रमाइये। चुनान्चे इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अ़लानिया त़ौर पर दीने इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाने लगे। और शिर्क व बुत परस्ती की खुल्लम खुल्ला बुराई बयान फ़रमाने लगे। और तमाम कुरैश बल्कि तमाम अहले मक्का बल्कि पूरा अ़रब आप की मुख़ालफ़त पर कमर बस्ता हो गया। और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और मुसलमानों की ईज़ा रसानियों का एक तूलानी सिल्सिला शुरूअ़ हो गया।[3]

रह़मते आ़लम पर ज़ुल्मो सितम

कुफ़्फ़ारे मक्का ख़ानदाने बनू हाशिम के इनतिक़ाम और लड़ाई भड़क उठने के ख़ौफ़ से **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को क़त्ल तो नहीं कर

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر،باب ولاتخزنی...الخ،الحدیث:٤٧٧٠،ج٣،ص٢٩٤ بتغیر

2..... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तो अ़लानिया कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है।* (پ١٤،النحل:٩٤)

3 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، الاجهار بدعوته ،ج١،ص٤٦١،٤٦٢

सके लेकिन त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ों और ईज़ा रसानियों से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ज़ुल्मो सितम का पहाड़ तोड़ने लगे। चुनान्चे सब से पहले तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के काहिन, साह़िर, शाइ़र, मजनून होने का हर कूचा व बाज़ार में ज़ोरदार प्रोपेगन्डा करने लगे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पीछे शरीर लड़कों का ग़ौल लगा दिया जो रास्तों में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर फब्तियां कसते, गालियां देते और येह दीवाना है, येह दीवाना है, का शोर मचा मचा कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ऊपर पथ्थर फेंकते। कभी कुफ़्फ़ारे मक्का आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के रास्तों में कांटे बिछाते। कभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक पर नजासत डाल देते। कभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को धक्का देते। कभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मुक़द्दस और नाज़ुक गरदन में चादर का फन्दा डाल कर गला घोंटने की कोशिश करते।

रिवायत है कि एक मरतबा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ह़रमे का'बा में नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक दम संगदिल काफ़िर उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के गले में चादर का फन्दा डाल कर इस ज़ोर से खींचा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का दम घुटने लगा। चुनान्चे येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बे क़रार हो कर दौड़ पड़े और उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ को धक्का दे कर दफ़्अ़ किया और येह कहा कि क्या तुम लोग ऐसे आदमी को क़त्ल करते हो जो येह कहता है कि "मेरा रब **अल्लाह** है।" इस धक्कम धक्का में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुफ़्फ़ार को मारा भी और कुफ़्फ़ार की मार भी खाई।[1]

(زرقانی ج۱ص۲۵۲و بخاری ج۱ص۵۴۴)

कुफ़्फ़ार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मो'जिज़ात और रूह़ानी तासीरात व तसर्रुफ़ात को देख कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को सब से बड़ा जादूगर कहते। जब **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب،الاجھاربدعوتہ ام اذیتہ،ج۱،ص۴٦٨وصحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار،باب مالقی النبی واصحابہ...الخ،الحدیث:۳۸۵٦،ج۲،ص۵۷۵

क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत फ़रमाते तो येह कुफ़्फ़ार क़ुरआन और क़ुरआन को लाने वाले (जिब्रील) और क़ुरआन को नाज़िल फ़रमाने वाले (**अल्लाह** तआ़ला) को और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को गालियां देते । और गली कूचों में पहरा बिठा देते कि क़ुरआन की आवाज़ किसी के कान में न पड़ने पाए और तालियां पीट पीट कर और सीटियां बजा बजा कर इस क़दर शोर मचाते कि क़ुरआन की आवाज़ किसी को सुनाई नहीं देती थी । **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब कहीं किसी आ़म मज्मअ़ में या कुफ़्फ़ार के मेलों में क़ुरआन पढ़ कर सुनाते या दा'वते ईमान का वा'ज़ फ़रमाते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का चचा अबू लहब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पीछे चिल्ला चिल्ला कर कहता जाता था कि ऐ लोगो ! येह मेरा भतीजा झूटा है, येह दीवाना हो गया है, तुम लोग इस की कोई बात न सुनो । (مَعَاذَاللّٰه)

एक मरतबा **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم "ज़ुल मजाज़" के बाज़ार में दा'वते इस्लाम का वा'ज़ फ़रमाने के लिये तशरीफ़ ले गए और लोगों को कलिमए ह़क़ की दा'वत दी तो अबू जह्ल आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर धूल उड़ाता जाता था और कहता था कि ऐ लोगो ! इस के फ़रेब में मत आना, येह चाहता है कि तुम लोग लात व उ़ज़्ज़ा की इ़बादत छोड़ दो ।[1]

(مسند امام احمد ج۴ وغیره)

इसी त़रह़ एक मरतबा जब कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ह़रमे का'बा में नमाज़ पढ़ रहे थे ऐन ह़ालते नमाज़ में अबू जह्ल ने कहा कि कोई है ? जो आले फ़ुलां के ज़ब्ह़ किये हुए ऊंट की ओझड़ी ला कर सज्दे की ह़ालत में इन के कन्धों पर रख दे । येह सुन कर उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ काफ़िर उठा और उस ओझड़ी को ला कर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दोश मुबारक पर रख दिया । **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم सज्दे में थे देर तक ओझड़ी कन्धे और गरदन पर पड़ी

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، احاديث رجال من اصحاب النبى ، الحديث:۲۳۲۵۲، ج۹،ص ۶۲

रही और कुफ़्फ़ार ठठ्ठा मार मार कर हंसते रहे और मारे हंसी के एक दूसरे पर गिर गिर पड़ते रहे। आख़िर ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا जो उन दिनों अभी कमसिन लड़की थी आई और उन काफ़िरों को बुरा भला कहते हुए उस ओझड़ी को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दोश मुबारक से हटा दिया। हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक पर कु़रैश की इस शरारत से इनतिहाई सदमा गुज़रा और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर तीन मरतबा येह दुआ़ मांगी कि "اَللّٰهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ" या'नी ऐ अल्लाह ! तू कु़रैश को अपनी गरिफ़्त में पकड़ ले, फिर अबू जह्ल, उ़त्बा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़, वलीद बिन उ़त्बा, उमय्या बिन ख़लफ़, अ़म्मारा बिन वलीद का नाम ले कर दुआ़ मांगी कि इलाही ! तू इन लोगों को अपनी गरिफ़्त में ले ले। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम ! मैं ने इन सब काफ़िरों को जंगे बद्र के दिन देखा कि इन की लाशें ज़मीन पर पड़ी हुई हैं। फिर इन सब कुफ़्फ़ार की लाशों को निहायत ज़िल्लत के साथ घसीट कर बद्र के एक गढ़े में डाल दिया गया और हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इन गढ़े वालों पर ख़ुदा की ला'नत है।[1]

(بخاری ج۱ ص۷۴ باب المرأۃ تطرح الخ)

चन्द शरीर कुफ़्फ़ार

जो कुफ़्फ़ारे मक्का हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दुश्मनी और ईज़ा रसानी में बहुत ज़ियादा सरगर्म थे उन में से चन्द शरीरों के नाम येह हैं :

﴾1﴿ अबू लहब ﴾2﴿ अबू जह्ल ﴾3﴿ अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस ﴾4﴿ ह़ारिस बिन क़ैस बिन अ़दी ﴾5﴿ वलीद बिन मुग़ीरा ﴾6﴿ उमय्या बिन ख़लफ़ ﴾7﴿ उबय्य बिन ख़लफ़ ﴾8﴿ अबू क़ैस बिन

1 ......صحیح البخاری، کتاب الصلوۃ، باب المرأۃ تطرح عن المصلی...الخ، الحدیث: ۵۲۰، ج۱، ص۱۹۳

फ़ाकिहा ﴾9﴿ आ़स बिन वाइल ﴾10﴿ नज़्र बिन हा़रिस ﴾11﴿ मुनब्बेह बिन अल ह़ज्जाज ﴾12﴿ ज़ुहैर बिन अबी उमय्या ﴾13﴿ साइब बिन सैफ़ी ﴾14﴿ अ़दी बिन ह़मरा ﴾15﴿ अस्वद बिन अ़ब्दुल असद ﴾16﴿ आ़स बिन सई़द बिन अल आ़स ﴾17﴿ आ़स बिन हाशिम ﴾18﴿ उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ ﴾19﴿ ह़कम बिन अबिल आ़स। येह सब के सब हु़ज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पड़ोसी थे और इन में से अकसर बहुत ही मालदार और साहि़बे इक़्तिदार थे और दिन रात सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी में मसरूफ़े कार रहते थे। (نعوذ باللہ من ذالک)

मुसलमानों पर मज़ालिम

हु़ज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ साथ ग़रीब मुसलमानों पर भी कुफ़्फ़ारे मक्का ने ऐसे ऐसे ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े कि मक्का की ज़मीन बिलबिला उठी। येह आसान था कि कुफ़्फ़ारे मक्का इन मुसलमानों को दम ज़दन में क़त्ल कर डालते मगर इस से उन काफ़िरों का जोशे इनतिक़ाम का नशा नहीं उतर सकता था क्यूं कि कुफ़्फ़ार इस बात में अपनी शान समझते थे कि इन मुसलमानों को इतना सताओ कि वोह इस्लाम को छोड़ कर फिर शिर्क व बुत परस्ती करने लगें। इस लिये क़त्ल कर देने की बजाए कुफ़्फ़ारे मक्का मुसलमानों को त़रह़ त़रह़ की सज़ाओं और ईज़ा रसानियों के साथ सताते थे। मगर ख़ुदा की क़सम ! शराबे तौह़ीद के इन मस्तों ने अपने इस्तिक़्लाल व इस्तिक़ामत का वोह मन्ज़र पेश कर दिया कि पहाड़ों की चोटियां सर उठा उठा कर ह़ैरत के साथ इन बला कुशाने इस्लाम के जज़्बए इस्तिक़ामत का नज़ारा करती रहीं। संगदिल, बे रह़्म और दरिन्दा सिफ़त काफ़िरों ने इन ग़रीब व बेकस मुसलमानों पर जब्रो इक्राह और ज़ुल्मो सितम का कोई दक़ीक़ा बाक़ी नहीं छोड़ा मगर एक मुसलमान के पाए इस्तिक़ामत में भी ज़र्रा बराबर तज़ल्ज़ुल नहीं पैदा हुवा और एक मुसलमान का बच्चा भी इस्लाम से मुंह फैर कर काफ़िर व मुरतद नहीं हुवा।

कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन ग़ुरबा मुस्लिमीन पर जोरो जफ़ाकारी के बे पनाह अन्दौह नाक मज़ालिम ढाए और ऐसे ऐसे रूह फ़रसा और जां सोज़ अज़ाबों में मुब्तला किया कि अगर इन मुसलमानों की जगह पहाड़ भी होता तो शायद डग मगाने लगता। सह़राए अ़रब की तेज़ धूप में जब कि वहां की रैत के ज़र्रात तन्नूर की त़रह़ गर्म हो जाते। इन मुसलमानों की पुश्त को कोड़ों की मार से ज़ख़्मी कर के उस जलती हुई रैत पर पीठ के बल लिटाते और सीनों पर इतना भारी पथ्थर रख देते कि वोह करवट न बदलने पाएं लोहे को आग में गर्म कर के इन से उन मुसलमानों के जिस्मों को दाग़ते, पानी में इस क़दर डुब्कियां देते कि उन का दम घुटने लगता। चटाइयों में इन मुसलमानों को लपेट कर उन की नाकों में धुवां देते जिस से सांस लेना मुश्किल हो जाता और वोह कर्ब व बेचैनी से बद ह़वास हो जाते।

ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह उस ज़माने में इस्लाम लाए जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अरक़म बिन अबू अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर में मुक़ीम थे और सिर्फ़ चन्द ही आदमी मुसलमान हुए थे। क़ुरैश ने इन को बेह़द सताया। यहां तक कि कोइले के अंगारों पर इन को चित लिटाया और एक शख़्स इन के सीने पर पाउं रख कर खड़ा रहा। यहां तक कि इन की पीठ की चरबी और रुत़ूबत से कोइले बुझ गए। बरसों के बा'द जब ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह वाक़िआ़ ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने बयान किया तो अपनी पीठ खोल कर दिखाई। पूरी पीठ पर सफ़ेद सफ़ेद दाग़ धब्बे पड़े हुए थे। इस इ़ब्रत नाक मन्ज़र को देख कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का दिल भर आया और वोह रो पड़े।[1] (طبقات ابن سعد ج۳ تذکرہ خباب)

[1]......الطبقات الکبری لابن سعد ، خباب بن الارت رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ ، ج۳،ص۱۲۲،۱۲۳

हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जो उमय्या बिन ख़लफ़ काफ़िर के गुलाम थे। इन की गरदन में रस्सी बांध कर कूचा व बाज़ार में इन को घसीटा जाता था। इन की पीठ पर लाठियां बरसाई जाती थीं और ठीक दोपहर के वक़्त तेज़ धूप में गर्म गर्म रैत पर इन को लिटा कर इतना भारी पथ्थर इन की छाती पर रख दिया जाता था कि इन की ज़बान बाहर निकल आती थी। उमय्या काफ़िर कहता था कि इस्लाम से बाज़ आ जाओ वरना इसी त़रह़ घुट घुट कर मर जाओगे। मगर इस ह़ाल में भी ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पेशानी पर बल नहीं आता था बल्कि ज़ोर ज़ोर से "अह़द, अह़द" का ना'रा लगाते थे और बुलन्द आवाज़ से कहते थे कि ख़ुदा एक है। ख़ुदा एक है।(1)

(سیرت ابن ہشام ج۱ص ۳۱۷ تا ص ۳۱۸)

ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को गर्म गर्म बालू पर चित लिटा कर कुफ़्फ़ारे कु़रैश इस क़दर मारते थे कि येह बेहोश हो जाते थे। इन की वालिदा ह़ज़रते बीबी सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को इस्लाम लाने की बिना पर अबू जह्ल ने इन की नाफ़ के नीचे ऐसा नेज़ा मारा कि येह शहीद हो गईं। ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिद ह़ज़रते यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी कुफ़्फ़ार की मार खाते खाते शहीद हो गए। ह़ज़रते सुहैब रूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कुफ़्फ़ारे मक्का इस क़दर त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यत देते और ऐसी ऐसी मारधाड़ करते कि येह घन्टों बेहोश रहते। जब येह हिजरत करने लगे तो कुफ़्फ़ारे मक्का ने कहा कि तुम अपना सारा माल व सामान यहां छोड़ कर मदीना जा सकते हो। आप ख़ुशी ख़ुशी दुन्या की दौलत पर लात मार कर अपनी मताए ईमान को साथ ले कर मदीना चले गए।(2)

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، اسلام حمزة، ج۱، ص٤٩٨

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب ، اسلام حمزة، ج۱، ص٤٩٦ـ٤٩٧ مختصراً

हज़रते अबू फ़कीहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सफ़्वान बिन उमय्या काफ़िर के गुलाम थे और हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ ही मुसलमान हुए थे। जब सफ़्वान को इन के इस्लाम का पता चला तो उस ने इन के गले में रस्सी का फन्दा डाल कर इन को घसीटा और गर्म जलती हुई ज़मीन पर इन को चित लिटा कर सीने पर वज़्नी पथ्थर रख दिया जब इन को कुफ़्फ़ार घसीट कर ले जा रहे थे तो रास्ते में इत्तिफ़ाक़ से एक गुबरीला नज़र पड़ा। उमय्या काफ़िर ने त़ा'ना मारते हुए कहा कि "देख तेरा खुदा येही तो नहीं है।" हज़रते अबू फ़कीहा ने फ़रमाया कि "ऐ काफ़िर के बच्चे ! ख़ामोश, मेरा और तेरा खुदा अल्लाह है।" येह सुन कर उमय्या काफ़िर ग़ज़बनाक हो गया और इस ज़ोर से इन का गला घोंटा कि वोह बेहोश हो गए और लोगों ने समझा कि इन का दम निकल गया।

इसी त़रह़ हज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भी इस क़दर मारा जाता था कि इन के जिस्म की बोटी बोटी दर्द मन्द हो जाती थी।[1]

हज़रते बीबी लुबैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जो लौंडी थीं। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब कुफ़्र की ह़ालत में थे इस ग़रीब लौंडी को इस क़दर मारते थे कि मारते मारते थक जाते थे मगर हज़रते लुबैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उफ़ तक नहीं करती थीं बल्कि निहायत जुरअत व इस्तिक़्लाल के साथ कहती थीं कि ऐ उ़मर ! अगर तुम खुदा के सच्चे रसूल पर ईमान नहीं लाओगे तो खुदा तुम से ज़रूर इनतिक़ाम लेगा।[2]

हज़रते ज़नीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घराने की बांदी थीं। येह मुसलमान हो गईं तो इन को इस क़दर काफ़िरों ने मारा कि इन की आंखें जाती रहीं। मगर खुदा वन्दे तआ़ला

1 ......السيرة الحلبية، باب استخفائه و اصحابه...الخ، ج١،ص٤٢٤ مختصراً

2 ......السيرة الحلبية، باب استخفائه و اصحابه...الخ، ج١،ص٤٢٥

ने **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की दुआ से फिर इन की आंखों में रौशनी अ़ता फ़रमा दी तो मुशरिकीन कहने लगे कि येह मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के जादू का असर है।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۲۷۰)

इसी त़रह़ ह़ज़रते बीबी "नहदिया" और ह़ज़रते बीबी उम्मे उ़बैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी बांदियां थीं। इस्लाम लाने के बा'द कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन दोनों को त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें दे कर बे पनाह अज़िय्यतें दीं मगर येह अल्लाह वालियां सब्रो शुक्र के साथ इन बड़ी बड़ी मुसीबतों को झेलती रहीं और इस्लाम से इन के क़दम नहीं डग मगाए।[2]

ह़ज़रते यारे ग़ारे मुस्त़फ़ा अबू बक्र सिद्दीक़े बा सफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने किस किस त़रह़ इस्लाम पर अपनी दौलत निसार की इस की एक झलक येह है कि आप ने इन ग़रीब व बेकस मुसलमानों में से अकसर की जान बचाई। आप ने ह़ज़रते बिलाल व आ़मिर बिन फ़ुहैरा व अबू फ़कीहा व लुबैना व ज़नीरा व नहदिया व उम्मे उ़नैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم इन तमाम ग़ुलामों को बड़ी बड़ी रक़में दे कर ख़रीदा और सब को आज़ाद कर दिया और इन मज़्लूमों को काफ़िरों की ईज़ाओं से बचा लिया।[3] (زرقانی علی المواہب وسیرت ابن ہشام ج۱ص۳۱۹)

ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब दामने इस्लाम में आए तो मक्का में एक मुसाफ़िर की हैसिय्यत से कई दिन तक ह़रमे का'बा में रहे। येह रोज़ाना ज़ोर ज़ोर से चिल्ला चिल्ला कर अपने इस्लाम का ए'लान करते थे और रोज़ाना कुफ़्फ़ारे क़ुरैश इन को इस क़दर मारते थे कि

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب، اسلام حمزة، ج۱، ص۵۰۲

2 ......شرح الزرقانی علی المواهب، اسلام حمزة، ج۱، ص۵۰۲

3 ......شرح الزرقانی علی المواهب، اسلام حمزه، ج۱، ص۵۰۲ والسیرة الحلبیة، باب استخفائه واصحابه...الخ، ج۱، ص۴۲۵

नोट : सीरत की कुतुब में इन का नाम तीनों त़रह़ आया है : उम्मे उ़नैस, उम्मे उ़बैस और उम्मे उ़मैस।

येह लहूलुहान हो जाते थे और उन दिनों में आबे ज़मज़म के सिवा इन को कुछ भी खाने पीने को नहीं मिला ।[1]

(بخاری ج۱ص۵۴۴باب اسلام ابی ذر)

वाज़ेह रहे कि कुफ़्फ़ारे मक्का का येह सुलूक सिर्फ़ ग़रीबों और ग़ुलामों ही तक महदूद नहीं था बल्कि इस्लाम लाने के जुर्म में बड़े बड़े मालदारों और रईसों को भी इन ज़ालिमों ने नहीं बख़्शा । हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ जो शहरे मक्का के एक मतमूल और मुमताज़ मुअ़ज़्ज़ीन में से थे मगर इन को भी ह़रमे का'बा में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने इस क़दर मारा कि इन का सर ख़ून से लतपत हो गया । इसी त़रह़ हज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ जो निहायत मालदार और साहि़बे इक़्तिदार थे । जब येह मुसलमान हुए तो ग़ैरों ने नहीं बल्कि ख़ुद इन के चचा ने इन को रस्सियों में जकड़ कर ख़ूब ख़ूब मारा । हज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ बड़े रो'ब और दबदबे के आदमी थे मगर इन्हों ने जब इस्लाम क़बूल किया तो इन के चचा इन को चटाई में लपेट कर इन की नाक में धुवां देते थे जिस से इन का दम घुटने लगता था । हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के चचाज़ाद भाई और बहनोई हज़रते सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ कितने जाहो ए'ज़ाज़ वाले रईस थे मगर जब इन के इस्लाम का हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को पता चला तो इन को रस्सी में बांध कर मारा और साथ ही हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अपनी बहन हज़रते बीबी फ़ाति़मा बिन्ते अल ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا को भी इस ज़ोर से थप्पड़ मारा कि उन के कान के आवेज़े गिर पड़े और चेहरे पर ख़ून बह निकला ।[2]

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب مناقب الانصار، باب اسلام ابی ذر رضی اللّٰہ عنہ ، الحدیث:۳۸۶۱،ج۲، ص۵۷۶

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب، اسلام عمرالفاروق رضی اللّٰہ عنہ ، ج۲،ص۵

कुफ़्फ़ार का वफ़्द बारगाहे रिसालत में

एक मरतबा सरदाराने क़ुरैश ह़रमे का'बा में बैठे हुए येह सोचने लगे कि आख़िर इतनी तकालीफ़ और सख़्तियां बरदाश्त करने के बा वुजूद मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) अपनी तब्लीग़ क्यूं बन्द नहीं करते ? आख़िर इन का मक़्सद क्या है ? मुमकिन है येह इ़ज़्ज़त व जाह या सरदारी व दौलत के ख़्वाहां हों । चुनान्चे सभों ने उ़त्बा बिन रबीआ़ को **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास भेजा कि तुम किसी त़रह़ उन का दिली मक़्सद मा'लूम करो । चुनान्चे उ़त्बा तन्हाई में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मिला और कहने लगा कि ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) आख़िर इस दा'वते इस्लाम से आप का मक़्सद क्या है ? क्या आप मक्का की सरदारी चाहते हैं ? या इ़ज़्ज़त व दौलत के ख़्वाहां हैं ? या किसी बड़े घराने में शादी के ख़्वाहिश मन्द हैं ? आप के दिल में जो तमन्ना हो खुले दिल के साथ कह दीजिये । मैं इस की ज़मानत लेता हूं कि अगर आप दा'वते इस्लाम से बाज़ आ जाएं तो पूरा मक्का आप के ज़ेरे फ़रमान हो जाएगा और आप की हर ख़्वाहिश और तमन्ना पूरी कर दी जाएगी । उ़त्बा की येह साह़िराना तक़रीर सुन कर **हुज़ूर** रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जवाब में क़ुरआने मजीद की चन्द आयतें तिलावत फ़रमाईं । जिन को सुन कर उ़त्बा इस क़दर मुतअस्सिर हुवा कि उस के जिस्म का रोंगटा रोंगटा और बदन का बाल बाल ख़ौफ़े ज़ुल जलाल से लरज़ने और कांपने लगा और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुंह पर हाथ रख कर कहा कि मैं आप को रिश्तेदारी का वासित़ा दे कर दरख़्वास्त करता हूं कि बस कीजिये । मेरा दिल इस कलाम की अ़ज़मत से फटा जा रहा है । उ़त्बा बारगाहे रिसालत से वापस हुवा मगर उस के दिल की दुन्या में एक नया इनक़िलाब रूनुमा हो चुका था । उ़त्बा एक बड़ा ही साह़िरुल बयान ख़त़ीब और इनतिहाई फ़सीह़ो बलीग़ आदमी था । उस ने वापस लौट कर सरदाराने क़ुरैश से कह दिया कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) जो कलाम पेश करते हैं वोह न जादू है न कहानत न शाइरी बल्कि वोह कोई और ही चीज़ है । लिहाज़ा मेरी राय है कि

तुम लोग उन को उन के ह़ाल पर छोड़ दो। अगर वोह काम्याब हो कर सारे अ़रब पर ग़ालिब हो गए तो इस में हम कुरैशियों ही की इ़ज़्ज़त बढ़ेगी, वरना सारा अ़रब उन को ख़ुद ही फ़ना कर देगा मगर कुरैश के सरकश काफ़िरों ने उ़त्बा का येह मुख़्लिसाना और मुदब्बिराना मश्वरा नहीं माना बल्कि अपनी मुख़ालफ़त और ईज़ा रसानियों में और ज़ियादा इज़ाफ़ा कर दिया।[1] (زرقانی علی المواهب ج ۱ ص ۲۵۸ وسیرت ابن ہشام ج ۱ ص ۲۹۴)

कुरैश का वफ़्द अबू त़ालिब के पास

कुफ़्फ़ारे कुरैश में कुछ लोग सुल्ह़ पसन्द भी थे वोह चाहते थे कि बातचीत के ज़रीए़ सुल्ह़ो सफ़ाई के साथ मुआ़मला तै हो जाए। चुनान्चे कुरैश के चन्द मुअ़ज़्ज़ज़ रूअसा अबू त़ालिब के पास आए और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की दा'वते इस्लाम और बुत परस्ती के ख़िलाफ़ तक़रीरों की शिकायत की। अबू त़ालिब ने निहायत नर्मी के साथ उन लोगों को समझा बुझा कर रुख़्सत कर दिया लेकिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ुदा के फ़रमान فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ[2] की ता'मील करते हुए अ़लल ए'लान शिर्क व बुत परस्ती की मज़म्मत और दा'वते तौह़ीद का वा'ज़ फ़रमाते ही रहे। इस लिये कुरैश का गुस्सा फिर भड़क उठा। चुनान्चे तमाम सरदाराने कुरैश या'नी उ़त्बा व शैबा व अबू सुफ़्यान व आ़स बिन हिशाम व अबू जह्ल व वलीद बिन मुग़ीरा व आ़स बिन वाइल वग़ैरा वग़ैरा सब एक साथ मिल कर अबू त़ालिब के पास आए और येह कहा कि आप का भतीजा हमारे मा'बूदों की तौहीन करता है इस लिये या तो आप दरमियान में से हट जाएं और अपने भतीजे को हमारे सिपुर्द कर दें या फिर आप भी खुल कर उन के साथ मैदान में निकल पड़ें ताकि हम दोनों में से एक

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، قول عتبة بن ربيعة فى امر رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم،ص١١٤،١١٥ملخصاً و المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى،اسلام حمزة،ج١،ص٤٧٩،٤٨٠

2..... *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अ़लानिया कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है।* (پ ۱۴، الحجر: ۹۴)

का फ़ैसला हो जाए। अबू तालिब ने कुरैश का तेवर देख कर समझ लिया कि अब बहुत ही ख़तरनाक और नाज़ुक घड़ी सर पर आन पड़ी है। ज़ाहिर है कि अब कुरैश बरदाश्त नहीं कर सकते और मैं अकेला तमाम कुरैश का मुक़ाबला नहीं कर सकता। अबू तालिब ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को इनतिहाई मुख़्लिसाना और मुशिफ़क़ाना लहजे में समझाया कि मेरे प्यारे भतीजे ! अपने बूढ़े चचा की सफ़ेद दाढ़ी पर रह्म करो और बुढ़ापे में मुझ पर इतना बोझ मत डालो कि मैं उठा न सकूं। अब तक तो कुरैश का बच्चा बच्चा मेरा एह्तिराम करता था मगर आज कुरैश के सरदारों का लबो लहजा और उन का तेवर इस क़दर बिगड़ा हुवा था कि अब वोह मुझ पर और तुम पर तलवार उठाने से भी दरेग़ नहीं करेंगे। लिहाज़ा मेरी राय येह है कि तुम कुछ दिनों के लिये दा'वते इस्लाम मौक़ूफ़ कर दो। अब तक हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़ाहिरी मुईन व मददगार जो कुछ भी थे वोह सिर्फ़ अकेले अबू तालिब ही थे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने देखा कि अब इन के क़दम भी उखड़ रहे हैं। चचा की गुफ़्तगू सुन कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने भर्राई हुई मगर जज़्बात से भरी हुई आवाज़ में फ़रमाया कि चचाजान ! ख़ुदा की क़सम ! अगर कुरैश मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे हाथ में चांद ला कर दे दें तब भी मैं अपने इस फ़र्ज़ से बाज़ न आऊंगा। या तो ख़ुदा इस काम को पूरा फ़रमा देगा या मैं ख़ुद दीने इस्लाम पर निसार हो जाऊंगा। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की येह जज़्बाती तक़रीर सुन कर अबू तालिब का दिल पसीज गया और वोह इस क़दर मुतअस्सिर हुए कि उन की हाशिमी रगों के ख़ून का क़तरा क़तरा भतीजे की मह्ब्बत में गर्म हो कर खौलने लगा और इनतिहाई जोश में आ कर कह दिया कि जाने अ़म ! जाओ मैं तुम्हारे साथ हूं। जब तक मैं ज़िन्दा हूं कोई तुम्हारा बाल बीका नहीं कर सकता।[1] (سیرت ابن ہشام ج۱ص۲۶۶وغیرہ)

1 ......السيرة النبوية لابن هشام ،مباداة رسول الله صلى الله عليه وسلم...الخ، ص١٠٣، ١٠٤ملخصاً

हिजरते ह़बशा सि. 5 नबवी

कुफ़्फ़ारे मक्का ने जब अपने ज़ुल्मो सितम से मुसलमानों पर अ़र्सए ह़यात तंग कर दिया तो **ह़ुज़ूर** रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मुसलमानों को "ह़बशा" जा कर पनाह लेने का हुक्म दिया।

नज्जाशी

ह़बशा के बादशाह का नाम "**अस्ह़मा**" और लक़ब "**नज्जाशी**" था। ईसाई दीन का पाबन्द था मगर बहुत ही इन्साफ़ पसन्द और रह़्म दिल था और तौरात व इन्जील वग़ैरा आस्मानी किताबों का बहुत ही माहिर आ़लिम था।

ए'लाने नुबुव्वत के पांचवें साल रजब के महीने में ग्यारह मर्द और चार औ़रतों ने ह़बशा की जानिब हिजरत की। इन मुहाजिरीने किराम के मुक़द्दस नाम ह़स्बे ज़ैल हैं।

﴾1,2﴿ ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी बीवी ह़ज़रत बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के साथ जो **ह़ुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की साह़िब ज़ादी हैं। ﴾3,4﴿ ह़ज़रते अबू ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी बीवी ह़ज़रते सहला बिन्ते सुहैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के साथ। ﴾5,6﴿ ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी अहलिया ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के साथ। ﴾7,8﴿ ह़ज़रते आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी ज़ौजा ह़ज़रते लैला बिन्ते अबी ह़श्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के साथ। ﴾9﴿ ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ। ﴾10﴿ ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ। ﴾11﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ। ﴾12﴿ ह़ज़रते उ़समान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ। ﴾13﴿ ह़ज़रते अबू सबरा बिन अबी रहम या ह़ातिब बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا।

﴾14﴿ ह़ज़रते सुहैल बिन बैज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ । ﴾15﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ।(1) (زرقانی علی المواہب ج۱ص۲۷۰)

कुफ़्फ़ारे मक्का को जब इन लोगों की हिजरत का पता चला तो उन ज़ालिमों ने इन लोगों की गरिफ़्तारी के लिये इन का तआ़क़ुब किया लेकिन येह लोग किश्ती पर सुवार हो कर रवाना हो चुके थे। इस लिये कुफ़्फ़ार नाकाम वापस लौटे। येह मुहाजिरीन का क़ाफ़िला ह़बशा की सर ज़मीन में उतर कर अम्नो अमान के साथ खुदा की इ़बादत में मसरूफ़ हो गया। चन्द दिनों के बा'द ना गहां येह ख़बर फैल गई कि कुफ़्फ़ारे मक्का मुसलमान हो गए। येह ख़बर सुन कर चन्द लोग ह़बशा से मक्का लौट आए मगर यहां आ कर पता चला कि येह ख़बर ग़लत़ थी। चुनान्चे बा'ज़ लोग तो फिर ह़बशा चले गए मगर कुछ लोग मक्का में रूपोश हो कर रहने लगे लेकिन कुफ़्फ़ारे मक्का ने उन लोगों को ढूंड निकाला और उन लोगों पर पहले से भी ज़ियादा ज़ुल्म ढाने लगे तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने लोगों को ह़बशा चले जाने का हुक्म दिया। चुनान्चे ह़बशा से वापस आने वाले और इन के साथ दूसरे मज़्लूम मुसलमान कुल तिरासी (83) मर्द और अठ्ठारह औ़रतों ने ह़बशा की जानिब हिजरत की।(2)

(زرقانی علی المواہب ج۱ص۲۸۷)

कुफ़्फ़ार का सफ़ीर नज्जाशी के दरबार में

तमाम मुहाजिरीन निहायत अम्नो सुकून के साथ ह़बशा में रहने लगे। मगर कुफ़्फ़ारे मक्का को कब गवारा हो सकता था कि

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، الھجرۃ الاولی الی الحبشۃ ، ج۱، ص۵۰۳، ۵۰۶ملخصاً

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب، الھجرۃ الاولی الی الحبشۃ ، ج۱، ص۵۰۳، ۵۰۶
والمواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی، الھجرۃ الثانیۃ الی الحبشۃ...الخ، ج۲،ص۳۱
وشرح الزرقانی علی المواھب،باب دخول الشعب ...الخ،ج۲،ص۱۶

फ़रज़न्दाने तौह़ीद कहीं अम्नो चैन के साथ रह सकें । इन ज़ालिमों ने कुछ तह़ाइफ़ के साथ "अ़म्र बिन अल आ़स" और "अ़म्मारा बिन वलीद" को बादशाहे ह़बशा के दरबार में अपना सफ़ीर बना कर भेजा । इन दोनों ने नज्जाशी के दरबार में पहुंच कर तोह़फ़ों का नज़राना पेश किया और बादशाह को सज्दा कर के येह फ़रयाद करने लगे कि ऐ बादशाह ! हमारे कुछ मुजरिम मक्का से भाग कर आप के मुल्क में पनाह गुज़ीन हो गए हैं । आप हमारे उन मुजरिमों को हमारे ह़वाले कर दीजिये । येह सुन कर नज्जाशी बादशाह ने मुसलमानों को दरबार में त़लब किया । और ह़ज़रते अ़ली رَضِی اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ के भाई ह़ज़रते जा'फ़र رَضِی اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ मुसलमानों के नुमाइन्दा बन कर गुफ़्तगू के लिये आगे बढ़े और दरबार के आदाब के मुत़ाबिक़ बादशाह को सज्दा नहीं किया बल्कि सिर्फ़ सलाम कर के खड़े हो गए । दरबारियों ने टोका तो ह़ज़रते जा'फ़र رَضِی اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि हमारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुदा के सिवा किसी को सज्दा करने से मन्अ़ फ़रमाया है । इस लिये मैं बादशाह को सज्दा नहीं कर सकता ।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۲۸۸)

इस के बा'द ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِی اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ ने दरबारे शाही में इस त़रह़ तक़रीर शुरूअ़ फ़रमाई कि

"ऐ बादशाह ! हम लोग एक जाहिल क़ौम थे । शिर्क व बुत परस्ती करते थे । लूटमार, चोरी, डकैती, ज़ुल्मो सितम और त़रह़ त़रह़ की बदकारियों और बद आ'मालियों में मुब्तला थे । **अल्लाह** तआ़ला ने हमारी क़ौम में एक शख़्स को अपना रसूल बना कर भेजा जिस के ह़सब व नसब और सिद्क़ो दियानत को हम पहले से जानते थे, उस रसूल ने हम

---

1 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی، الھجرۃ الثانیۃ الی الحبشۃ...الخ، ج۲، ص۳۳

والمواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی،الھجرۃ الاولی الی الحبشۃ...الخ،ج۱،ص۵۰۶

को शिर्क व बुत परस्ती से रोक दिया और सिर्फ़ एक खुदाए वाहिद की इबादत का हुक्म दिया और हर क़िस्म के ज़ुल्मो सितम और तमाम बुराइयों और बदकारियों से हम को मन्अ़ किया। हम उस रसूल पर ईमान लाए और शिर्क व बुत परस्ती छोड़ कर तमाम बुरे कामों से ताइब हो गए। बस येही हमारा गुनाह है जिस पर हमारी क़ौम हमारी जान की दुश्मन हो गई और उन लोगों ने हमें इतना सताया कि हम अपने वत़न को ख़ैरबाद कह कर आप की सल्त़नत के ज़ेरे साया पुर अम्न ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। अब येह लोग हमें मजबूर कर रहे हैं कि हम फिर उसी पुरानी गुमराही में वापस लौट जाएं।"

हज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तक़रीर से नज्जाशी बादशाह बेहद मुतअस्सिर हुवा। येह देख कर कुफ़्फ़ारे मक्का के सफ़ीर अ़म्र बिन अल आ़स ने अपने तरकश का आख़िरी तीर भी फेंक दिया और कहा कि ऐ बादशाह ! येह मुसलमान लोग आप के नबी हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के बारे में कुछ दूसरा ही ए'तिक़ाद रखते हैं जो आप के अ़क़ीदे के बिल्कुल ही ख़िलाफ़ है। येह सुन कर नज्जाशी बादशाह ने हज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इस बारे में सुवाल किया तो आप ने सूरए मरयम की तिलावत फ़रमाई। कलामे रब्बानी की तासीर से नज्जाशी बादशाह के क़ल्ब पर इतना गहरा असर पड़ा कि उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और उस की आंखों से आंसू जारी हो गए। हज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि हमारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हम को येही बताया है कि हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام खुदा के बन्दे और उस के रसूल हैं जो कंवारी मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शिकमे मुबारक से बिग़ैर बाप के खुदा की क़ुदरत का निशान बन कर पैदा हुए। नज्जाशी बादशाह ने बड़े ग़ौर से हज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तक़रीर को सुना और येह कहा कि बिला शुबा इन्जील और क़ुरआन दोनों एक ही आफ़्ताबे हिदायत के दो नूर हैं और यक़ीनन हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام खुदा के बन्दे

और उस के रसूल हैं और मैं गवाही देता हूं कि बेशक ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم खुदा के वोही रसूल हैं जिन की बिशारत ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने इन्जील में दी है और अगर मैं दस्तूरे सल्त़नत के मुत़ाबिक़ तख़्ते शाही पर रहने का पाबन्द न होता तो मैं खुद मक्का जा कर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की जूतियां सीधी करता और उन के क़दम धोता। बादशाह की तक़रीर सुन कर उस के दरबारी जो कट्टर क़िस्म के ईसाई थे नाराज़ व बरहम हो गए मगर नज्जाशी बादशाह ने जोशे ईमानी में सब को डांट फटकार कर ख़ामोश कर दिया। और कुफ़्फ़ारे मक्का के तोह़फ़ों को वापस लौटा कर अ़म्र बिन अल आ़स और अ़म्मारा बिन वलीद को दरबार से निकलवा दिया और मुसलमानों से कह दिया कि तुम लोग मेरी सल्त़नत में जहां चाहो अम्नो सुकून के साथ आराम व चैन की ज़िन्दगी बसर करो। कोई तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।[1] (زرقانی ج۱ ص۲۸۸)

वाज़ेह़ रहे कि नज्जाशी बादशाह मुसलमान हो गया था। चुनान्चे उस के इनतिक़ाल पर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरह में उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। ह़ालां कि नज्जाशी बादशाह का इनतिक़ाल ह़बशा में हुवा था और वोह ह़बशा ही में मदफ़ून भी हुए मगर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ग़ाइबाना उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर उन के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत फ़रमाई।

ह़ज़रते अबू बक्र और इब्ने दुग़न्ना

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने भी ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की मगर जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मक़ाम "बर्कुल ग़म्माद" में पहुंचे तो क़बीलए क़ारा का सरदार "मालिक बिन दुग़न्ना" रास्ते में मिला और दरयाफ़्त किया कि क्यूं? ऐ अबू बक्र! कहां चले? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

[1] ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی،الھجرۃ الثانیۃالی الحبشۃ...الخ،ج۲،ص۳۳

ने अहले मक्का के मज़ालिम का तज़किरा फ़रमाते हुए कहा कि अब मैं अपने वत़न मक्का को छोड़ कर ख़ुदा की लम्बी चौड़ी ज़मीन में फिरता रहूंगा और ख़ुदा की इबादत करता रहूंगा। इब्ने दुग़ुन्ना ने कहा कि ऐ अबू बक्र ! आप जैसा आदमी न शहर से निकल सकता है न निकाला जा सकता है। आप दूसरों का बार उठाते हैं, मेहमानाने ह़रम की मेहमान नवाज़ी करते हैं, ख़ुद कमा कमा कर मुफ़्लिसों और मोह़ताजों की माली इमदाद करते हैं, ह़क़ के कामों में सब की इमदाद व इआनत करते हैं। आप मेरे साथ मक्का वापस चलिये मैं आप को अपनी पनाह में लेता हूं। इब्ने दुग़ुन्ना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ज़बर दस्ती मक्का वापस लाया और तमाम कुफ़्फ़ारे मक्का से कह दिया कि मैं ने अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपनी पनाह में ले लिया है। लिहाज़ा ख़बरदार ! कोई इन को न सताए। कुफ़्फ़ारे मक्का ने कहा कि हम को इस शर्त़ पर मन्ज़ूर है कि अबू बक्र अपने घर के अन्दर छुप कर क़ुरआन पढ़ें ताकि हमारी औ़रतों और बच्चों के कान में क़ुरआन की आवाज़ न पहुंचे। इब्ने दुग़ुन्ना ने कुफ़्फ़ार की शर्त़ को मन्ज़ूर कर लिया। और ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ चन्द दिनों तक अपने घर के अन्दर क़ुरआन पढ़ते रहे मगर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जज़्बए इस्लामी और जोशे ईमानी ने येह गवारा नहीं किया कि मा'बूदाने बात़िल लात व उ़ज़्ज़ा की इ़बादत तो अ़लल ए'लान हो और मा'बूदे बरह़क़ **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत घर के अन्दर छुप कर की जाए। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने घर के बाहर अपने सह़न में एक मस्जिद बना ली और इस मस्जिद में अ़लल ए'लान नमाज़ों में बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन पढ़ने लगे और कुफ़्फ़ारे मक्का की औ़रतें और बच्चे भीड़ लगा कर क़ुरआन सुनने लगे। येह मन्ज़र देख कर कुफ़्फ़ारे मक्का ने इब्ने दुग़ुन्ना को मक्का बुलाया और शिकायत की, कि अबू बक्र घर के बाहर क़ुरआन पढ़ते हैं। जिस को सुनने के लिये उन के गिर्द हमारी औ़रतों और बच्चों का मेला लग जाता है। इस से हम को बड़ी तक्लीफ़ होती है लिहाज़ा

तुम उन से कह दो कि या तो वोह घर में कुरआन पढ़ें वरना तुम अपनी पनाह की ज़िम्मादारी से दस्त बरदार हो जाओ। चुनान्चे इब्ने दुग़ुन्ना ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से कहा कि ऐ अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ! आप घर के अन्दर छुप कर कुरआन पढ़ें वरना मैं अपनी पनाह से कनारा कश हो जाऊंगा इस के बा'द कुफ़्फ़ारे मक्का आप को सताएंगे तो मैं इस का ज़िम्मादार नहीं होउंगा। येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि ऐ इब्ने दुग़ुन्ना ! तुम अपनी पनाह की ज़िम्मादारी से अलग हो जाओ मुझे **अल्लाह** तआ़ला की पनाह काफ़ी है और मैं उस की मरज़ी पर राज़ी ब रिज़ा हूं।[1] (بخاری ج۱ص۳۰۷باب جوار ابی بکر الصدیق)

ह़ज़रते ह़म्ज़ा मुसलमान हो गए

ए'लाने नुबुव्वत के छटे साल ह़ज़रते ह़म्ज़ा और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا दो ऐसी हस्तियां दामने इस्लाम में आ गईं जिन से इस्लाम और मुसलमानों के जाहो जलाल और इन के इ़ज़्ज़तो इक़्बाल का परचम बहुत ही सर बुलन्द हो गया। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के चचाओं में ह़ज़रते ह़म्ज़ा को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से बड़ी वालिहाना मह़ब्बत थी और वोह सिर्फ़ दो तीन साल **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से उ़म्र में ज़ियादा थे और चूंकि इन्हों ने भी ह़ज़रते सुवैबा का दूध पिया था इस लिये **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के रज़ाई भाई भी थे। ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ बहुत ही त़ाक़त वर और बहादुर थे और शिकार के बहुत ही शौक़ीन थे। रोज़ाना सुब्ह़ सवेरे तीर कमान ले कर घर से निकल जाते और शाम को शिकार से वापस लौट कर ह़रम में जाते, ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते और कुरैश के सरदारों की मजलिस में कुछ देर बैठा

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الکفالۃ ، باب جوار ابی بکر رضی اللّٰہ عنہ فی عہد النبی...الخ، الحدیث:۲۲۹۷،ج۲،ص۷۵

करते थे। एक दिन ह़स्बे मा'मूल शिकार से वापस लौटे तो इब्ने जुदआ़न की लौंडी और ख़ुद इन की बहन ह़ज़रते बीबी सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इन को बताया कि आज अबू जह्ल ने किस किस त़रह़ तुम्हारे भतीजे ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ बे अदबी और गुस्ताख़ी की है। येह माजरा सुन कर मारे ग़ुस्से के ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़ून खौलने लगा। एक दम तीर कमान लिये हुए मस्जिदे ह़राम में पहुंच गए और अपनी कमान से अबू जह्ल के सर पर इस ज़ोर से मारा कि उस का सर फट गया और कहा कि तू मेरे भतीजे को गालियां देता है ? तुझे ख़बर नहीं कि मैं भी उसी के दीन पर हूं। येह देख कर क़बीलए बनी मख़्ज़ूम के कुछ लोग अबू जह्ल की मदद के लिये खड़े हो गए तो अबू जह्ल ने येह सोच कर कि कहीं बनू हाशिम से जंग न छिड़ जाए येह कहा कि ऐ बनी मख़्ज़ूम ! आप लोग ह़म्ज़ा को छोड़ दीजिये। वाक़ेई आज मैं ने इन के भतीजे को बहुत ही ख़राब ख़राब क़िस्म की गालियां दी थीं।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۴۴وزرقانی ج۱ص۲۵۶)

ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुसलमान हो जाने के बा'द ज़ोर ज़ोर से इन अश्आ़र को पढ़ना शुरूअ़ कर दिया :

حَمِدْتُّ اللّٰهَ حِيْنَ هَدٰى فُؤَادِىْ   اِلَى الْاِسْلَامِ وَالدِّيْنِ الْحَنِيْفِ

मैं **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करता हूं जिस वक़्त कि उस ने मेरे दिल को इस्लाम और दीने ह़नीफ़ की त़रफ़ हिदायत दी।

اِذَا تُلِيَتْ رَسَائِلُهٗ عَلَيْنَا!   تَحَدَّرَ دَمْعُ ذِى اللُّبِّ الْحَصِيْفِ

जब अह़कामे इस्लाम की हमारे सामने तिलावत की जाती है तो बा कमाल अ़क़्ल वालों के आंसू जारी हो जाते हैं।

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، اسلام حمزۃ رضی اللّٰہ عنہ ،ج۱،ص۴۷۷ودلائل النبوۃ للبیھقی ، ذکر اسلام حمزۃ بن عبدالمطلب رضی اللّٰہ عنہ ،ج۲،ص۲۱۳

وَاَحْمَدُ مُصْطَفًى فِيْنَا مُطَاعٌ فَلَا تَغْشَوْهُ بِالْقَوْلِ الْعَنِيْفِ

और ख़ुदा के बरगुज़ीदा अहमद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हमारे मुक़्तदा हैं तो (ऐ काफ़िरो) अपनी बातिल बक्वास से इन पर ग़लबा मत हासिल करो।

فَلَا وَاللّٰهِ نُسْلِمُهٗ لِقَوْمٍ! وَلَمَّا نَقْضِ فِيْهِمْ بِالسُّيُوْفِ

तो ख़ुदा की क़सम ! हम इन्हें क़ौमे कुफ़्फ़ार के सिपुर्द नहीं करेंगे। हालां कि अभी तक हम ने उन काफ़िरों के साथ तलवारों से फ़ैसला नहीं किया है।[1] (زرقانی ج۱ص۲۵۶)

हज़रते उमर का इस्लाम

हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इस्लाम लाने के बा'द तीसरे ही दिन हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ भी दौलते इस्लाम से मालामाल हो गए। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने के वाक़िआत में बहुत सी रिवायात हैं।

एक रिवायत येह है कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक दिन ग़ुस्से में भरे हुए नंगी तलवार ले कर इस इरादे से चले कि आज मैं इसी तलवार से पैग़म्बरे इस्लाम का ख़ातिमा कर दूंगा। इत्तिफ़ाक़ से रास्ते में हज़रते नुऐम बिन अ़ब्दुल्लाह क़ुरैशी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मुलाक़ात हो गई। येह मुसलमान हो चुके थे मगर हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इन के इस्लाम की ख़बर नहीं थी। हज़रते नुऐम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने पूछा कि क्यूं ? ऐ उमर ! इस दोपहर की गर्मी में नंगी तलवार ले कर कहां चले ? कहने लगे कि आज बानिये इस्लाम का फ़ैसला करने के लिये घर से निकल पड़ा हूं। इन्हों ने कहा कि पहले अपने घर की ख़बर लो। तुम्हारी बहन "फ़ातिमा बिन्ते अल ख़त्ताब" और तुम्हारे बहनोई "सईद बिनज़ैद"

---

1 ......المواھب اللدنیة، فصل فی ترتیب دعوة النبی صلی اللّٰه علیه وسلم، ج۱، ص۱۲۰،۱۲۱

भी तो मुसलमान हो गए हैं ! येह सुन कर आप बहन के घर पहुंचे और दरवाज़ा खट खटाया । घर के अन्दर चन्द मुसलमान छुप कर क़ुरआन पढ़ रहे थे । ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आवाज़ सुन कर सब लोग डर गए और क़ुरआन के अवराक़ छोड़ कर इधर उधर छुप गए । बहन ने उठ कर दरवाज़ा खोला तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ चिल्ला कर बोले कि ऐ अपनी जान की दुश्मन ! क्या तू भी मुसलमान हो गई है ? फिर अपने बहनोई ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर झपटे और उन की दाढ़ी पकड़ कर उन को ज़मीन पर पटख़ दिया और सीने पर सुवार हो कर मारने लगे । इन की बहन ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने शोहर को बचाने के लिये दौड़ पड़ीं तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन को ऐसा त़मांचा मारा कि उन के कानों के झूमर टूट कर गिर पड़े और उन का चेहरा ख़ून से लहू लुहान हो गया । बहन ने साफ़ साफ़ कह दिया कि उ़मर ! सुन लो, तुम से जो हो सके कर लो मगर अब इस्लाम दिल से नहीं निकल सकता । ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बहन का ख़ून आलूदा चेहरा देखा और उन का अ़ज़्मो इस्तिक़ामत से भरा हुवा येह जुम्ला सुना तो उन पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और एक दम दिल नर्म पड़ गया । थोड़ी देर तक ख़ामोश खड़े रहे । फिर कहा कि अच्छा तुम लोग जो पढ़ रहे थे मुझे भी दिखाओ । बहन ने क़ुरआन के अवराक़ को सामने रख दिया । उठा कर देखा तो इस आयत पर नज़र पड़ी कि سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ۝[1] इस आयत का एक एक लफ़्ज़ सदाक़त की तासीर का तीर बन कर दिल की गहराई में पैवस्त होता चला गया और जिस्म का एक एक बाल लरज़ा बर अन्दाम होने लगा । जब इस आयत पर पहुंचे कि

---

1 ...... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह*** *की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है ।* (پ۲۷، الحدید:۱)

اٰمِنُوۡا بِاللّٰہِ وَرَسُوۡلِہٖ(1) तो बिल्कुल ही बे क़ाबू हो गए और बे इख़्तियार पुकार उठे कि "اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ" येह वोह वक़्त था कि **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हज़रते अरक़म बिन अबू अरक़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के मकान में मुक़ीम थे हज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बहन के घर से निकले और सीधे हज़रते अरक़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के मकान पर पहुंचे तो दरवाज़ा बन्द पाया, कुन्डी बजाई, अन्दर के लोगों ने दरवाज़े की झरी से झांक कर देखा तो हज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ नंगी तलवार लिये खड़े थे। लोग घबराए और किसी में दरवाज़ा खोलने की हिम्मत नहीं हुई मगर हज़रते ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि दरवाज़ा खोल दो और अन्दर आने दो अगर नेक निय्यती के साथ आया है तो उस का ख़ैर मक़्दम किया जाएगा वरना उसी की तलवार से उस की गरदन उड़ा दी जाएगी। हज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अन्दर क़दम रखा तो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुद आगे बढ़ कर हज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बाज़ू पकड़ा और फ़रमाया कि ऐ ख़त्ताब के बेटे ! तू मुसलमान हो जा आख़िर तू कब तक मुझ से लड़ता रहेगा ? हज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बा आवाज़े बुलन्द कलिमा पढ़ा। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मारे ख़ुशी के ना'रए तक्बीर बुलन्द फ़रमाया और तमाम ह़ाज़िरीन ने इस ज़ोर से اَللّٰهُ اَكْبَر का ना'रा मारा कि मक्का की पहाड़ियां गूंज उठीं। फिर हज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहने लगे कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! येह छुप छुप कर ख़ुदा की इ़बादत करने के क्या मा'ना ? उठिये हम का'बे में चल कर अ़लल ए'लान ख़ुदा की इ़बादत करेंगे और ख़ुदा की क़सम ! मैं कुफ़्र की ह़ालत में जिन जिन मजलिसों में बैठ कर इस्लाम की मुख़ालफ़त करता रहा हूं अब उन तमाम मजालिस में अपने इस्लाम का ए'लान करूंगा। फिर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

1.....*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ।*

(پ۲۷،الحدید:۷)

सहाबा की जमाअ़त को ले कर दो कि़तारों में रवाना हुए। एक सफ़ के आगे आगे ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ चल रहे थे और दूसरी सफ़ के आगे आगे ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे। इस शान से मस्जिदे ह़राम में दाखि़ल हुए और नमाज़ अदा की और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़रमे का'बा में मुशरिकीन के सामने अपने इस्लाम का ए'लान किया। येह सुनते ही हर त़रफ़ से कुफ़्फ़ार दौड़ पड़े और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मारने लगे और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी उन लोगों से लड़ने लगे। एक हंगामा बरपा हो गया। इतने में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मामूं अबू जहल आ गया। उस ने पूछा कि येह हंगामा कैसा है? लोगों ने बताया कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुसलमान हो गए हैं इस लिये लोग बरहम हो कर इन पर ह़म्ला आवर हुए हैं। येह सुन कर अबू जहल ने ह़त़ीमे का'बा में खड़े हो कर अपनी आस्तीन से इशारा कर के ए'लान कर दिया कि मैं ने अपने भान्जे उ़मर को पनाह दी। अबू जहल का येह ए'लान सुन कर सब लोग हट गए। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि इस्लाम लाने के बा'द मैं हमेशा कुफ़्फ़ार को मारता और उन की मार खाता रहा यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस्लाम को ग़ालिब फ़रमा दिया।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۲۷۲)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुसलमान होने का एक सबब येह भी बताया गया है कि ख़ुद ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे कि मैं कुफ़्र की ह़ालत में कुरैश के बुतों के पास ह़ाज़िर था इतने में एक शख़्स गाय का एक बछड़ा ले कर आया और उस को बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ किया। फिर बड़े ज़ोर से चीख़ मार कर किसी ने येह कहा कि ''یَاجَلِیْحُ اَمْرٌ نَّجِیْحٌ رَجُلٌ فَصِیْحٌ یَقُوْلُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ۔''

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب،اسلام عمر الفاروق رضی اللّٰہ عنہ، ج۲، ص۵۔۱۰ والمواھب اللدنیۃ، ھجرتہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ج۱،ص۱۲۵،۱۲۶ ملتقطاً

येह आवाज़ सुन कर सब लोग वहां से भाग खड़े हुए। लेकिन मैं ने येह अ़ज़्म कर लिया कि मैं इस आवाज़ देने वाले की तह़क़ीक़ किये बिग़ैर हरगिज़ हरगिज़ यहां से नहीं टलूंगा। इस के बा'द फिर येही आवाज़ आई कि يَاجَلِيْحُ اَمْرٌ نَّجِيْحٌ رَجُلٌ فَصِيْحٌ يَقُوْلُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ या'नी ऐ खुली हुई दुश्मनी करने वाले ! एक काम्याबी की चीज़ है कि एक फ़साह़त वाला आदमी "لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ" कह रहा है। हालां कि बुतों के आस पास मेरे सिवा दूसरा कोई भी नहीं था। इस के फ़ौरन ही बा'द **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी नुबुव्वत का ए'लान फ़रमाया। इस वाक़िए से ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बेह़द मुतअस्सिर थे। इस लिये इन के इस्लाम लाने के अस्बाब में इस वाक़िए को भी कुछ न कुछ ज़रूर दख़्ल है।[1]

(بخاری ج۱ص ۵۴۶وزرقانی ج۱ص ۲۷۶باب اسلام عمر)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने बहुत ज़ियादा सताया तो आ़स बिन वाइल सहमी ने भी आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को अपनी पनाह में ले लिया जो ज़मानए जाहिलिय्यत में आप का ह़लीफ़ था इस लिये ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कुफ़्फ़ार की मारधाड़ से बच गए।[2]

(بخاری باب اسلام عمر ج۱ص ۵۴۵)

शअ़बे अबी त़ालिब सि. 7 नबवी

ए'लाने नुबुव्वत के सातवें साल सि. 7 नबवी में कुफ़्फ़ारे मक्का ने जब देखा कि रोज़ बरोज़ मुसलमानों की ता'दाद बढ़ती जा रही है और ह़ज़रते ह़म्ज़ा व ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا जैसे बहादुराने

1 ......صحيح البخارى ، كتاب مناقب الانصار، باب اسلام عمر بن الخطاب رضى الله عنه،
الحديث:٣٨٦٦، ج٢،ص٥٧٨

2 ......صحيح البخارى ، كتاب مناقب الانصار، باب اسلام عمر بن الخطاب رضى الله عنه،
الحديث:٣٨٦٤، ج٢،ص٥٧٨ ملخصاً

क़ुरैश भी दामने इस्लाम में आ गए तो ग़ैज़ो ग़ज़ब में येह लोग आपे से बाहर हो गए और तमाम सरदाराने क़ुरैश और मक्का के दूसरे कुफ़्फ़ार ने येह स्कीम बनाई कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और आप के ख़ानदान का मुकम्मल बायकॉट कर दिया जाए और इन लोगों को किसी तंग व तारीक जगह में मह़सूर कर के इन का दाना पानी बन्द कर दिया जाए ताकि येह लोग मुकम्मल त़ौर पर तबाह व बरबाद हो जाएं। चुनान्चे इस ख़ौफ़नाक तज्वीज़ के मुत़ाबिक़ तमाम क़बाइले क़ुरैश ने आपस में येह मुआ़हदा किया कि जब तक बनी हाशिम के ख़ानदान वाले **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को क़त्ल के लिये हमारे ह़वाले न कर दें

﴾1﴿ कोई शख़्स बनू हाशिम के ख़ानदान से शादी बियाह न करे।

﴾2﴿ कोई शख़्स इन लोगों के हाथ किसी क़िस्म के सामान की ख़रीदो फ़रोख़्त न करे।

﴾3﴿ कोई शख़्स इन लोगों से मेलजोल, सलाम व कलाम और मुलाक़ात व बात न करे।

﴾4﴿ कोई शख़्स इन लोगों के पास खाने पीने का कोई सामान न जाने दे। मन्सूर बिन इ़क्रमा ने इस मुआ़हदे को लिखा और तमाम सरदाराने क़ुरैश ने इस पर दस्तख़त़ कर के इस दस्तावेज़ को का'बे के अन्दर आवेज़ां कर दिया। अबू त़ालिब मजबूरन **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और दूसरे तमाम ख़ानदान वालों को ले कर पहाड़ की उस घाटी में जिस का नाम "शअ़बे अबी त़ालिब" था पनाह गुज़ीन हुए। अबू लहब के सिवा ख़ानदाने बनू हाशिम के काफ़िरों ने भी ख़ानदानी ह़मिय्यत व पासदारी की बिना पर इस मुआ़मले में **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का साथ दिया और सब के सब पहाड़ के इस तंग व तारीक दुर्रे में मह़सूर हो कर क़ैदियों की ज़िन्दगी बसर करने लगे। और येह तीन बरस का ज़माना इतना सख़्त और कठिन गुज़रा कि बनू हाशिम दरख़्तों के पत्ते और सूखे चमड़े पका पका कर खाते थे। और इन के बच्चे भूक प्यास की शिद्दत से तड़प तड़प कर दिन रात रोया करते थे। संगदिल और ज़ालिम काफ़िरों ने

हर त़रफ़ पहरा बिठा दिया था कि कहीं से भी घाटी के अन्दर दाना पानी न जाने पाए।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۲۷۸)

मुसल्सल तीन साल तक **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और ख़ानदाने बनू हाशिम इन होशरुबा मसाइब को झेलते रहे यहां तक कि ख़ुद क़ुरैश के कुछ रह़्म दिलों को बनू हाशिम की इन मुसीबतों पर रह़्म आ गया और उन लोगों ने इस ज़ालिमाना मुआ़हदे को तोड़ने की तह़रीक उठाई। चुनान्चे हिशाम बिन अ़म्र आ़मिरी, ज़ुहैर बिन अबी उमय्या, मुत़इम बिन अ़दी, अबुल बख़्तरी, ज़म्आ़ बिन अल अस्वद वग़ैरा येह सब मिल कर एक साथ ह़रमे का'बा में गए और ज़ुहैर ने जो अ़ब्दुल मुत्त़लिब के नवासे थे कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को मुख़ात़ब कर के अपनी पुरजोश तक़रीर में येह कहा कि ऐ लोगो ! येह कहां का इन्साफ़ है ? कि हम लोग तो आराम से ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं और ख़ानदाने बनू हाशिम के बच्चे भूक प्यास से बे क़रार हो कर बिलबिला रहे हैं। ख़ुदा की क़सम ! जब तक इस वह़शियाना मुआ़हदे की दस्तावेज़ फाड़ कर पाउं से न रौंद दी जाएगी मैं हरगिज़ हरगिज़ चैन से नहीं बैठ सकता। येह तक़रीर सुन कर अबू जह्ल ने तड़प कर कहा कि ख़बरदार ! हरगिज़ हरगिज़ तुम इस मुआ़हदे को हाथ नहीं लगा सकते। ज़म्आ़ ने अबू जह्ल को ललकारा और इस ज़ोर से डांटा कि अबू जह्ल की बोलती बन्द हो गई। इसी त़रह़ मुत़इम बिन अ़दी और हिशाम बिन अ़म्र ने भी ख़म ठोंक कर अबू जह्ल को झिड़क दिया और अबुल बख़्तरी ने तो साफ़ साफ़ कह दिया कि ऐ अबू जह्ल ! इस ज़ालिमाना मुआ़हदे से न हम पहले राज़ी थे और न अब हम इस के पाबन्द हैं।

इसी मज्मअ़ में एक त़रफ़ अबू त़ालिब भी बैठे हुए थे। उन्हों ने कहा कि ऐ लोगो ! मेरे भतीजे मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) कहते हैं कि उस मुआ़हदे की दस्तावेज़ को कीड़ों ने खा डाला है और

[1]......المواهب اللدنية ، هجرته صلى الله عليه وسلم، ج ١، ص ١٢٦

सिर्फ़ जहां जहां खुदा का नाम लिखा हुवा था उस को कीड़ों ने छोड़ दिया है। लिहाज़ा मेरी राय येह है कि तुम लोग उस दस्तावेज़ को निकाल कर देखो अगर वाक़ेई उस को कीड़ों ने खा लिया है जब तो उस को चाक कर के फेंक दो। और अगर मेरे भतीजे का कहना ग़लत साबित हुवा तो मैं मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को तुम्हारे हवाले कर दूंगा। येह सुन कर मुत़इम बिन अ़दी का'बे के अन्दर गया और दस्तावेज़ को उतार लाया और सब लोगों ने उस को देखा तो वाक़ेई बजुज़ **अल्लाह** तआ़ला के नाम के पूरी दस्तावेज़ को कीड़ों ने खा लिया था। मुत़इम बिन अ़दी ने सब के सामने उस दस्तावेज़ को फाड़ कर फेंक दिया। और फिर क़ुरैश के चन्द बहादुर बा वुजूदे कि येह सब के सब उस वक़्त कुफ़्र की हालत में थे हथयार ले कर घाटी में पहुंचे और ख़ानदाने बनू हाशिम के एक एक आदमी को वहां से निकाल लाए और उन को उन के मकानों में आबाद कर दिया। येह वाक़िआ़ सि. 10 नबवी का है। मन्सूर बिन इक्रमा जिस ने इस दस्तावेज़ को लिखा था उस पर येह क़हरे इलाही टूट पड़ा कि उस का हाथ शल हो कर सूख गया।[1]

(مدارج النبوۃ ج۲ ص۴۶ وغیرہ)

ग़म का साल सि. 10 नबवी

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم "शअ़बे अबी त़ालिब" से निकल कर अपने घर में तशरीफ़ लाए और चन्द ही रोज़ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ज़ुल्मो सितम से कुछ अमान मिली थी कि अबू त़ालिब बीमार हो गए और घाटी से बाहर आने के आठ महीने बा'द इन का इनतिक़ाल हो गया।

अबू त़ालिब की वफ़ात **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये एक बहुत ही जां गुदाज़ और रूह फ़रसा हादिसा था क्यूं कि बचपन से जिस त़रह प्यार व महब्बत के साथ अबू त़ालिब ने

1 ......مدارج النبوت، قسم دوم ، باب سوم، ج۲،ص٤٦ مختصراً

आप صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की परवरिश की थी और ज़िन्दगी के हर मोड़ पर जिस जां निसारी के साथ आप की नुस्रत व दस्त गीरी की और आप के दुश्मनों के मुक़ाबिल सीना सिपर हो कर जिस त़रह़ आलामो मसाइब का मुक़ाबला किया इस को भला **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم किस त़रह़ भूल सकते थे।

अबू त़ालिब का ख़ातिमा

जब अबू त़ालिब मरज़ुल मौत में मुब्तला हो गए तो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि ऐ चचा ! आप कलिमा पढ़ लीजिये। येह वोह कलिमा है कि इस के सबब से मैं ख़ुदा के दरबार में आप की मग़्फ़िरत के लिये इस्रार करूंगा। उस वक़्त अबू जह्ल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या अबू त़ालिब के पास मौजूद थे। उन दोनों ने अबू त़ालिब से कहा कि ऐ अबू त़ालिब ! क्या आप अ़ब्दुल मुत्त़लिब के दीन से रू गर्दानी करेंगे ? और येह दोनों बराबर अबू त़ालिब से गुफ़्त्गू करते रहे यहां तक कि अबू त़ालिब ने कलिमा नहीं पढ़ा बल्कि उन की ज़िन्दगी का आख़िरी क़ौल येह रहा कि "मैं अ़ब्दुल मुत्त़लिब के दीन पर हूं।" येह कहा और उन की रूह़ परवाज़ कर गई। **हुज़ूर** रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस से बड़ा सदमा पहुंचा और आप صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं आप के लिये उस वक़्त तक दुआ़ए मग़्फ़िरत करता रहूंगा जब तक **अल्लाह** तआ़ला मुझे मन्अ़ न फ़रमाएगा। इस के बा'द येह आयत नाज़िल हो गई कि

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝[1]

या'नी नबी और मोमिनीन के लिये येह जाइज़ ही नहीं कि वोह

---

1 ......پ ۱۱، التوبة: ۱۱۳

मुशरिकीन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ मांगें अगर्चे वोह रिश्तेदार ही क्यूं न हों। जब इन्हें मा'लूम हो चुका है कि मुशरिकीन जहन्नमी हैं।[1]
(بخاری ج۱ ص ۵۴۸ باب قصہ ابی طالب)

हज़रते बीबी ख़दीजा की वफ़ात

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक पर अभी अबू तालिब के इनतिक़ाल का ज़ख़्म ताज़ा ही था कि अबू तालिब की वफ़ात के तीन दिन या पांच दिन के बा'द हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا भी दुन्या से रिह्लत फ़रमा गईं। मक्का में अबू तालिब के बा'द सब से ज़ियादा जिस हस्ती ने रह्मते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुस्रत व हिमायत में अपना तन मन धन सब कुछ कुरबान किया वोह हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की ज़ाते गिरामी थी। जिस वक़्त दुन्या में कोई आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का मुख़्लिस मुशीर और ग़म ख़्वार नहीं था हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ही थीं कि हर परेशानी के मौक़अ़ पर पूरी जां निसारी के साथ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ग़म ख़्वारी और दिलदारी करती रहती थीं इस लिये अबू तालिब और हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا दोनों की वफ़ात से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मददगार और ग़म गुसार दोनों ही दुन्या से उठ गए जिस से आप के क़ल्बे नाज़ुक पर इतना अ़ज़ीम सदमा गुज़रा कि आप ने इस साल का नाम "आ़मुल हुज़्न" (ग़म का साल) रख दिया।

हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने रमज़ान सि. 10 नबवी में वफ़ात पाई। ब वक़्ते वफ़ात पैंसठ बरस की उ़म्र थी। मक़ामे हजून (क़ब्रिस्तान जन्नतुल मअ़्ला) में मदफ़ून हुईं। हुज़ूर रह्मते आ़लम

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب مناقب الانصار، باب قصة ابی طالب، الحديث: ۳۸۸٤، ج۲، ص۵۸۳ وشرح الزرقانی علی المواهب، وفاة خديجة و ابی طالب، ج۲، ص۳۸، ٤۲ ملخصاً

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم खुद ब नफ़्से नफ़ीस क़ब्र में उतरे और अपने मुक़द्दस हाथों से उन की लाश को ज़मीन के सिपुर्द फ़रमाया।[1] (زرقانی ج۱ص۲۹۶)

ताइफ़ वग़ैरा का सफ़र

मक्का वालों के इनाद और सरकशी को देखते हुए जब हुज़ूर रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को उन लोगों के ईमान लाने से मायूसी नज़र आई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तब्लीग़े इस्लाम के लिये मक्का के क़ुर्बो जवार की बस्तियों का रुख़ किया। चुनान्चे इस सिल्सिले में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ''ताइफ़'' का भी सफ़र फ़रमाया। इस सफ़र में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के गुलाम हज़रते ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के हमराह थे। ताइफ़ में बड़े बड़े उमरा और मालदार लोग रहते थे। उन रईसों में ''अम्र'' का ख़ानदान तमाम क़बाइल का सरदार शुमार किया जाता था। येह लोग तीन भाई थे। अब्दे यालील, मसऊद, हबीब। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उन तीनों के पास तशरीफ़ ले गए और इस्लाम की दा'वत दी। उन तीनों ने इस्लाम क़बूल नहीं किया बल्कि इनतिहाई बेहूदा और गुस्ताख़ाना जवाब दिया। उन बद नसीबों ने इसी पर बस नहीं किया बल्कि ताइफ़ के शरीर गुन्डों को उभार दिया कि येह लोग हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ बुरा सुलूक करें। चुनान्चे लुच्चों लफ़ंगों का येह शरीर गुरौह हर तरफ़ से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर टूट पड़ा और येह शरारतों के मुजस्समे आप पर पथ्थर बरसाने लगे यहां तक कि आप के मुक़द्दस पाउं ज़ख़्मों से लहू लुहान हो गए।[2] और आप के मोज़े और ना'लैन मुबारक ख़ून से भर गए। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ज़ख़्मों से बेताब हो कर बैठ जाते तो येह ज़ालिम इनतिहाई बे दर्दी के साथ आप का बाज़ू पकड़ कर उठाते और जब आप चलने लगते तो फिर आप

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، وفاۃ خدیجۃو ابی طالب، ج۲،ص۴۸

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب، وفاۃ خدیجۃو ابی طالب، ج۲،ص۵۰،۵۱

पर पथ्थरों की बारिश करते और साथ साथ ता'ना ज़नी करते। गालियां देते। तालियां बजाते। हंसी उड़ाते। ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दौड़ दौड़ कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर आने वाले पथ्थरों को अपने बदन पर लेते थे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को बचाते थे यहां तक कि वोह भी ख़ून में नहा गए और ज़ख़्मों से निढाल हो कर बे क़ाबू हो गए। यहां तक कि आख़िर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अंगूर के एक बाग़ में पनाह ली। येह बाग़ मक्का के एक मश्हूर काफ़िर उ़त्बा बिन रबीआ़ का था। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का येह ह़ाल देख कर उ़त्बा बिन रबीआ़ और उस के भाई शैबा बिन रबीआ़ को आप पर रह़्म आ गया और काफ़िर होने के बा वुजूद ख़ानदानी ह़मिय्यत ने जोश मारा। चुनान्चे उन दोनों काफ़िरों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को अपने बाग़ में ठहराया और अपने नसरानी ग़ुलाम "अ़द्दास" के हाथ से आप की ख़िदमत में अंगूर का एक ख़ोशा भेजा। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बिस्मिल्लाह पढ़ कर ख़ोशे को हाथ लगाया तो अ़द्दास तअ़ज्जुब से कहने लगा कि इस अत़राफ़ के लोग तो येह कलिमा नहीं बोला करते ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम्हारा वत़न कहां है ? अ़द्दास ने कहा कि मैं "शहर नैनवा" का रहने वाला हूं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह ह़ज़रते यूनुस बिन मत्ता عَلَیْہِ السَّلَام का शहर है। वोह भी मेरी त़रह़ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के पैग़म्बर थे। येह सुन कर अ़द्दास आप के हाथ पाउं चूमने लगा और फ़ौरन ही आप का कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۳۰۰)

इसी सफ़र में जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मक़ाम "नख़ला" में तशरीफ़ फ़रमा हुए और रात को नमाज़े तहज्जुद में क़ुरआने मजीद पढ़ रहे थे तो "नसीबैन" के जिन्नों की एक

1 ......المواھب اللدنیة ، ھجرتہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ج۱،ص۱۳۶،۱۳۷

जमाअ़त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और क़ुरआन सुन कर येह सब जिन्न मुसलमान हो गए। फिर उन जिन्नों ने लौट कर अपनी क़ौम को बताया तो मक्कए मुकर्रमा में जिन्नों की जमाअ़त ने फ़ौज दर फ़ौज आ कर इस्लाम क़बूल किया। चुनान्चे क़ुरआने मजीद में सूरए जिन्न की इब्तिदाई आयतों में ख़ुदा वन्दे आ़लम ने इस वाक़िए़ का तज़्किरा फ़रमाया है।[1] (زرقانی ج۱ص۳۰۳)

मक़ामे नख़्ला में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने चन्द दिनों तक क़ियाम फ़रमाया। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मक़ामे "ह़िरा" में तशरीफ़ लाए और क़ुरैश के एक मुमताज़ सरदार मुत़इम बिन अ़दी के पास येह पैग़ाम भेजा कि क्या तुम मुझे अपनी पनाह में ले सकते हो? अ़रब का दस्तूर था कि जब कोई शख़्स इन से ह़िमायत और पनाह त़लब करता तो वोह अगर्चे कितना ही बड़ा दुश्मन क्यूं न हो वोह पनाह देने से इन्कार नहीं कर सकते थे। चुनान्चे मुत़इम बिन अ़दी ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को अपनी पनाह में ले लिया और उस ने अपने बेटों को हुक्म दिया कि तुम लोग हथयार लगा कर ह़रम में जाओ और मुत़इम बिन अ़दी खुद घोड़े पर सुवार हो गया और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को अपने साथ मक्का लाया और ह़रमे का'बा में अपने साथ ले कर गया और मज्मए़ आ़म में ए'लान कर दिया कि मैं ने मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) को पनाह दी है। इस के बा'द **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इत़्मीनान के साथ ह़जरे अस्वद को बोसा दिया और का'बे का त़वाफ़ कर के ह़रम में नमाज़ अदा की और मुत़इम बिन अ़दी और इस के बेटों ने तलवारों के साए में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को आप के दौलत ख़ाने तक पहुंचा दिया।[2] (زرقانی ج۱ص۳۰۶)

इस सफ़र के मुद्दतों बा'द एक मरतबा उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से

---

1 ......المواھب اللدنیة ، ھجرته صلی اللّٰه علیه وسلم، ج ۱، ص۱۳۷، ۱۳۸ ملتقطاً

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب، ذکر الجن، ج ۲، ص ٦٦ ملخصاً

दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم क्या जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त कोई दिन आप पर गुज़रा है ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि हां ऐ आ़इशा ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا वोह दिन मेरे लिये जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त था जब मैं ने ताइफ़ में वहां के एक सरदार "अ़ब्दे यालील" को इस्लाम की दा'वत दी। उस ने दा'वते इस्लाम को ह़क़ारत के साथ ठुकरा दिया और अहले ताइफ़ ने मुझ पर पथराव किया। मैं इस रन्जो ग़म में सर झुकाए चलता रहा यहां तक कि मक़ामे "क़र्नुस्सआ़लिब" में पहुंच कर मेरे होशो ह़वास बजा हुए। वहां पहुंच कर जब मैं ने सर उठाया तो क्या देखता हूं कि एक बदली मुझ पर साया किये हुए है उस बादल में से ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने मुझे आवाज़ दी और कहा कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की क़ौम का क़ौल और उन का जवाब सुन लिया और अब आप की ख़िदमत में पहाड़ों का फ़िरिश्ता ह़ाज़िर है। ताकि वोह आप के हुक्म की ता'मील करे। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का बयान है कि पहाड़ों का फ़िरिश्ता मुझे सलाम कर के अ़र्ज़ करने लगा कि ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! **अल्लाह** तआ़ला ने आप की क़ौम का क़ौल और उन्हों ने आप को जो जवाब दिया है वोह सब कुछ सुन लिया है और मुझ को आप की ख़िदमत में भेजा है ताकि आप मुझे जो चाहें हुक्म दें और मैं आप का हुक्म बजा लाऊं। अगर आप चाहते हैं कि मैं "अख़्शबैन" (अबू क़ुबैस और क़ुईक़आन) दोनों पहाड़ों को इन कुफ़्फ़ार पर उलट दूं तो मैं उलट देता हूं। येह सुन कर **हुज़ूर** रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जवाब दिया कि नहीं बल्कि मैं उम्मीद करता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला इन की नस्लों से अपने ऐसे बन्दों को पैदा फ़रमाएगा जो सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की ही इ़बादत करेंगे और शिर्क नहीं करेंगे।[1] (بخاری باب ذکر الملائکہ ج۱ ص۴۵۸ وزرقانی ج۱ص۲۹۷)

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب بدء الخلق، باب اذا قال احدکم آمین...الخ، الحدیث:۳۲۳۱، ج۲، ص۳۸۶و شرح الزرقانی علی المواھب، خروجہ الی الطائف ،ج۲، ص۵۱ ، ۵۲ ملخصاً

क़बाइल में तब्लीग़े इस्लाम

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का त़रीक़ा था कि ह़ज के ज़माने में जब कि दूर दूर के अ़रबी क़बाइल मक्का में जम्अ़ होते थे तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तमाम क़बाइल में दौरा फ़रमा कर लोगों को इस्लाम की दा'वत देते थे। इसी त़रह़ अ़रब में जा बजा बहुत से मेले लगते थे जिन में दूर दराज़ के क़बाइले अ़रब जम्अ़ होते थे। इन मेलों में भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तब्लीग़े इस्लाम के लिये तशरीफ़ ले जाते थे। चुनान्चे अ़क्काज़, मुजना, ज़ुल मजाज़ के बड़े बड़े मेलों में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने क़बाइले अ़रब के सामने दा'वते इस्लाम पेश फ़रमाई। अ़रब के क़बाइल बनू आ़मिर, मुह़ारिब, फ़ज़ारा, ग़स्सान, मुर्रह, सुलैम, अ़ब्स, बनू नस्र, कन्दा, कल्ब, उ़ज़्रा, ह़ज़ारिमा वग़ैरा इन सब मशहूर क़बाइल के सामने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस्लाम पेश फ़रमाया मगर आप का चचा अबू लहब हर जगह आप के साथ साथ जाता और जब आप किसी क़बीले के सामने वा'ज़ फ़रमाते तो अबू लहब चिल्ला चिल्ला कर येह कहता कि "येह दीन से फिर गया है, येह झूट कहता है।"[1] (زرقانی ج۱ص۳۰۹)

क़बीलए बनू ज़ह्ल बिन शैबान के पास जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी आप के साथ थे। इस क़बीले का सरदार "मफ़रूक़" आप की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और उस ने कहा कि ऐ क़ुरैशी बरादर ! आप लोगों के सामने कौन सा दीन पेश करते हैं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ख़ुदा एक है और मैं उस का रसूल हूं। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सूरए अन्आ़म की चन्द आयतें

---

[1]......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، ذكر عرض المصطفٰی صلی اللّٰه عليه وسلم نفسه...الخ، ج۲،ص۷۳والسيرة النبوية لابن هشام،عرض رسول اللّٰه صلی اللّٰه عليه وسلم..الخ،ص۱۶۸ملخصاً

तिलावत फ़रमाई । येह सब लोग आप की तक़रीर और क़ुरआनी आयतों की तासीर से इनतिहाई मुतअस्सिर हुए लेकिन येह कहा कि हम अपने उस ख़ानदानी दीन को भला एक दम कैसे छोड़ सकते हैं ? जिस पर हम बरसहा बरस से कारबन्द हैं । इस के इलावा हम मुल्के फ़ारस के बादशाह किस्रा के ज़ेरे असर और रइय्यत हैं । और हम येह मुआ़हदा कर चुके हैं कि हम बादशाहे किस्रा के सिवा किसी और के ज़ेरे असर नहीं रहेंगे । **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन लोगों की साफ़गोई की ता'रीफ़ फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि ख़ैर, ख़ुदा अपने दीन का ह़ामी व नासिर और मुईन व मददगार है ।[1] (روض الانف بحوالہ سیرۃ النبی)

पांचवां बाब

मदीने में आफ़्ताबे रिसालत की तजल्लियां

"मदीनए मुनव्वरह" का पुराना नाम "यसरब" है । जब **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस शहर में सुकूनत फ़रमाई तो इस का नाम "मदीनतुन्नबी" (नबी का शहर) पड़ गया । फिर येह नाम मुख़्तसर हो कर "**मदीना**" मशहूर हो गया । तारीख़ी हैसिय्यत से येह बहुत पुराना शहर है । **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जब ए'लाने नुबुव्वत फ़रमाया तो इस शहर में अ़रब के दो क़बीले "औस" और "ख़ज़रज" और कुछ "यहूदी" आबाद थे । औस व ख़ज़रज कुफ़्फ़ारे मक्का की त़रह़ "बुत परस्त" और यहूदी "अहले किताब" थे । औस व ख़ज़रज पहले तो बड़े इत्तिफ़ाक़ो इत्तिह़ाद के साथ मिलजुल कर रहते थे मगर फिर अ़रबों की फ़ित़रत के मुत़ाबिक़ इन दोनों क़बीलों में लड़ाइयां शुरूअ़ हो गईं । यहां तक कि आख़िरी लड़ाई जो तारीख़े अ़रब में "जंगे बआ़स" के नाम से मशहूर है इस क़दर होलनाक और ख़ूंरेज़ हुई कि इस लड़ाई में औस व ख़ज़रज के तक़रीबन तमाम नामवर बहादुर लड़ भिड़ कर कट मर गए और येह दोनों क़बीले बेह़द कमज़ोर हो गए । यहूदी अगर्चे ता'दाद में

---

1 ......الروض الانف (مترجم)، ج ٢، ص ٣٤٨

बहुत कम थे मगर चूंकि वोह ता'लीम याफ़्ता थे इस लिये औस व ख़ज़रज हमेशा यहूदियों की इल्मी बरतरी से मरऊ़ब और उन के ज़ेरे असर रहते थे।

इस्लाम क़बूल करने के बा'द रसूले रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मुक़द्दस ता'लीम व तरबिय्यत की बदौलत औस व ख़ज़रज के तमाम पुराने इख़्तिलाफ़ात ख़त्म हो गए और येह दोनों क़बीले शीरो शकर की त़रह़ मिलजुल कर रहने लगे। और चूंकि इन लोगों ने इस्लाम और मुसलमानों की अपने तन मन धन से बे पनाह इमदाद व नुस्रत की इस लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इन खुश बख़्तों को "अन्सार" के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से सरफ़राज़ फ़रमा दिया और क़ुरआने करीम ने भी इन जां निसाराने इस्लाम की नुस्रते रसूल व इमदादे मुस्लिमीन पर इन खुश नसीबों की मद्ह़ो सना का जा बजा ख़ुत़्बा पढ़ा और अज़ रूए शरीअ़त अन्सार की मह़ब्बत और इन की जनाब में हुस्ने अ़क़ीदत तमाम उम्मते मुस्लिमा के लिये लाज़िमुल ईमान और वाजिबुल अ़मल क़रार पाई। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ اَجْمَعِیْن)

मदीने में इस्लाम क्यूं कर फैला

अन्सार गो बुत परस्त थे मगर यहूदियों के मेलजोल से इतना जानते थे कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान का ज़ुहूर होने वाला है और मदीने के यहूदी अकसर अन्सार के दोनों क़बीलों औस व ख़ज़रज को धम्कियां भी दिया करते थे कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान के ज़ुहूर के वक़्त हम उन के लश्कर में शामिल हो कर तुम बुत परस्तों को दुन्या से नेस्तो नाबूद कर डालेंगे। इस लिये नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान की तशरीफ़ आवरी का यहूद और अन्सार दोनों को इनतिज़ार था।

सि. 11 नबवी में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मा'मूल के मुताबिक़ ह़ज में आने वाले क़बाइल को दा'वते इस्लाम देने के लिये मिना के मैदान में तशरीफ़ ले गए और क़ुरआने मजीद

की आयतें सुना सुना कर लोगों के सामने इस्लाम पेश फ़रमाने लगे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मिना में अ़क़बा (घाटी) के पास जहां आज "मस्जिदुल अ़क़बा" है तशरीफ़ फ़रमा थे कि क़बीलए ख़ज़रज के छे आदमी आप के पास आ गए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन लोगों से उन का नाम व नसब पूछा। फिर कुरआन की चन्द आयतें सुना कर उन लोगों को इस्लाम की दा'वत दी जिस से येह लोग बेहद मुतअस्सिर हो गए और एक दूसरे का मुंह देख कर वापसी में येह कहने लगे कि यहूदी जिस नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान की ख़ुश ख़बरी देते रहे हैं यक़ीनन वोह नबी येही हैं। लिहाज़ा कहीं ऐसा न हो कि यहूदी हम से पहले इस्लाम की दा'वत क़बूल कर लें। येह कह कर सब एक साथ मुसलमान हो गए और मदीने जा कर अपने अहले ख़ानदान और रिश्तेदारों को भी इस्लाम की दा'वत दी। उन छे ख़ुश नसीबों के नाम येह हैं: ﴾1﴿ हज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर बिन नाबी। ﴾2﴿ हज़रते अबू उमामा अस्अ़द बिन ज़रारह ﴾3﴿ हज़रते औ़फ़ बिन ह़ारिस ﴾4﴿ हज़रते राफ़ेअ़ बिन मालिक ﴾5﴿ हज़रते कुत़्बा बिन आ़मिर बिन ह़दीदा ﴾6﴿ हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन रय्याब।[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ اَجْمَعِیْن)

(مدارج النبوۃ ج۲ص۵۱وزرقانی ج۱ص۳۱۰)

बैअ़ते अ़क़बए ऊला

दूसरे साल सि. 12 नबवी में ह़ज के मौक़अ़ पर मदीने के बारह अश्ख़ास मिना की इसी घाटी में छुप कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से बैअ़त हुए। तारीख़े इस्लाम में इस बैअ़त का नाम "बैअ़ते अ़क़बए ऊला" है।

साथ ही इन लोगों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से येह दरख़्वास्त भी की, कि अह़कामे इस्लाम की ता'लीम के लिये कोई मुअ़ल्लिम भी इन

---

1 ......مدارج النبوت، قسم دوم، باب سوم، ج۲،ص۵۱۔۵۲ والمواھب اللدنیۃ، ھجرتہ صلی اللہ علیہ وسلم، ج۱،ص۱۴۱

लोगों के साथ कर दिया जाए। चुनान्चे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इन लोगों के साथ मदीनए मुनव्वरह भेज दिया। वोह मदीने में हज़रते अस्अ़द बिन ज़ुरारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मकान पर ठहरे और अन्सार के एक एक घर में जा जा कर इस्लाम की तब्लीग़ करने लगे और रोज़ाना एक दो नए आदमी आग़ोशे इस्लाम में आने लगे। यहां तक कि रफ़्ता रफ़्ता मदीने से क़ुबा तक घर घर इस्लाम फैल गया।

क़बीलए औस के सरदार हज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ही बहादुर और बा असर शख़्स थे। हज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जब उन के सामने इस्लाम की दा'वत पेश की तो उन्हों ने पहले तो इस्लाम से नफ़रत व बेज़ारी ज़ाहिर की मगर जब हज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन को क़ुरआने मजीद पढ़ कर सुनाया तो एक दम उन का दिल पसीज गया और इस क़दर मुतअस्सिर हुए कि सआ़दते ईमान से सरफ़राज़ हो गए। इन के मुसलमान होते ही इन का क़बीला "औस" भी दामने इस्लाम में आ गया।

उसी साल बक़ौले मश्हूर माहे रजब की सत्ताईसवीं रात को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ब हालते बेदारी "**मे'राजे जिस्मानी**" हुई। और इसी सफ़रे मे'राज में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं जिस का तफ़्सीली बयान اِنْ شَآءَاللّٰہ मो'जिज़ात के बाब में आएगा।(1)

बैअ़ते अ़क़बए सानिया

इस के एक साल बा'द सि. 13 नबवी में हज के मौक़अ़ पर मदीने के तक़रीबन बहत्तर अश्ख़ास ने मिना की इसी घाटी में अपने बुत परस्त साथियों से छुप कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के दस्ते हक़ परस्त पर बैअ़त की और येह अ़ह्द किया कि हम लोग आप

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، العقبة الاولى ومصعب بن عمير، ص ١٧١-١٧٤

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की और इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिये अपनी जान कुरबान कर देंगे । इस मौक़अ़ पर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी मौजूद थे जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे। उन्हों ने मदीने वालों से कहा कि देखो ! मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने ख़ानदान बनी हाशिम में हर त़रह़ मोह़तरम और बा इ़ज़्ज़त हैं। हम लोगों ने दुश्मनों के मुक़ाबले में सीना सिपर हो कर हमेशा इन की हिफ़ाज़त की है। अब तुम लोग इन को अपने वत़न में ले जाने के ख़्वाहिश मन्द हो तो सुन लो ! अगर मरते दम तक तुम लोग इन का साथ दे सको तो बेहतर है वरना अभी से कनारा कश हो जाओ । येह सुन कर ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ तैश में आ कर कहने लगे कि "हम लोग तलवारों की गोद में पले हैं ।" ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इतना ही कहने पाए थे कि ह़ज़रते अबुल हैसम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बात काटते हुए येह कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! हम लोगों के यहूदियों से पुराने तअ़ल्लुक़ात हैं। अब ज़ाहिर है कि हमारे मुसलमान हो जाने के बा'द येह तअ़ल्लुक़ात टूट जाएंगे । कहीं ऐसा न हो कि जब **अल्लाह** तआ़ला आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ग़लबा अ़त़ा फ़रमाए तो आप हम लोगों को छोड़ कर अपने वत़न मक्का चले जाएं। येह सुन कर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि तुम लोग इत़मीनान रखो कि "तुम्हारा ख़ून मेरा ख़ून है" और यक़ीन करो "मेरा जीना मरना तुम्हारे साथ है। मैं तुम्हारा हूं और तुम मेरे हो। तुम्हारा दुश्मन मेरा दुश्मन और तुम्हारा दोस्त मेरा दोस्त है ।"(1)

(زرقانی علی المواہب ج ۱ ص ۳۱۷ وسیرت ابن ہشام ج ۲ ص ۴۴۱ تا ۴۴۲)

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، العقبة الاولى ومصعب بن عمير، ص١٧٥، ١٧٦ وشرح الزرقاني على المواهب، ذكر عرض رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم نفسه...الخ، ج٢، ص٨٥ـ ٨٨ ملتقطاً

जब अन्सार येह बैअ़त कर रहे थे तो ह़ज़रते सा'द बिन ज़ुरारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने या ह़ज़रते अ़ब्बास बिन नज़्ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि मेरे भाइयो ! तुम्हें येह भी ख़बर है ? कि तुम लोग किस चीज़ पर बैअ़त कर रहे हो ? ख़ूब समझ लो कि येह अ़रबो अ़जम के साथ ए'लाने जंग है। अन्सार ने तै़श में आ कर निहायत ही पुरजोश लहजे में कहा कि हां ! हां ! हम लोग इसी पर बैअ़त कर रहे हैं। बैअ़त हो जाने के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस जमाअ़त में से बारह आदमियों को नक़ीब (सरदार) मुक़र्रर फ़रमाया। इन में नव आदमी क़बीलए ख़ज़रज के और तीन अश्ख़ास क़बीलए औस के थे जिन के मुबारक नाम येह हैं :

《1》 ह़ज़रते अबू उमामा अस्अ़द बिन ज़ुरारह 《2》 ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ 《3》 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा 《4》 ह़ज़रते राफ़ेअ़ बिन मालिक 《5》 ह़ज़रते बरा बिन मा'रूर 《6》 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र 《7》 ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा 《8》 ह़ज़रते मुन्ज़िर बिन उ़मर 《9》 ह़ज़रते उ़बादा बिन साबित। येह नव आदमी क़बीलए ख़ज़रज के हैं। 《10》 ह़ज़रते उसैद बिन हु़ज़ैर 《11》 ह़ज़रते सा'द बिन ख़ैसमा 《12》 ह़ज़रते अबुल हैसम बिन तैहान। येह तीन शख़्स क़बीलए औस के हैं।[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ اَجْمَعِیْن) (زرقانی علی المواہب ج۱ص۳۱۷)

इस के बा'द येह तमाम ह़ज़रात अपने अपने डेरों पर चले गए। सुब्ह़ के वक़्त जब क़ुरैश को इस की इत्तिलाअ़ पहुंची तो वोह आग बगूला हो गए और उन लोगों ने डांट कर मदीने वालों से पूछा कि क्या तुम लोगों ने हमारे साथ जंग करने पर मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) से बैअ़त की है ? अन्सार के कुछ साथियों ने जो मुसलमान नहीं हुए थे अपनी ला इल्मी ज़ाहिर की। येह सुन कर क़ुरैश वापस चले गए मगर जब तफ़्तीश व तह़क़ीक़ात के बा'द कुछ

---

1 ......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام،اسماء النقباء الاثنی عشر...الخ،ص۱۷۷،۱۷۸وشرح الزرقانی علی المواھب ، ذکر عرض المصطفٰی صلی اللّٰہ علیہ وسلم نفسہ...الخ،ج۲،ص۸۰،۸۷

अन्सार की बैअ़त का हाल मा'लूम हुवा तो कुरैश ग़ैज़ो ग़ज़ब में आपे से बाहर हो गए और बैअ़त करने वालों की गरिफ्तारी के लिये तआ़कुब किया मगर कुरैश ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सिवा किसी और को नहीं पकड़ सके। कुरैश ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपने साथ मक्का लाए और उन को कै़द कर दिया मगर जब जुबैर बिन मुत़इम और ह़ारिस बिन ह़र्ब बिन उमय्या को पता चला तो इन दोनों ने कुरैश को समझाया कि ख़ुदा के लिये सा'द बिन उ़बादा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को फ़ौरन छोड़ दो वरना तुम्हारी मुल्के शाम की तिजारत ख़त़रे में पड़ जाएगी। येह सुन कर कुरैश ने ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा को कै़द से रिहा कर दिया और वोह ब ख़ैरियत मदीना पहुंच गए।[1]

(سیرتِ ابن ہشام ج۴ ص۴۴۹ تا ۴۵۰)

हिजरते मदीना

मदीनए मुनव्वरह में जब इस्लाम और मुसलमानों को एक पनाह गाह मिल गई तो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम को आ़म इजाज़त दे दी कि वोह मक्का से हिजरत कर के मदीना चले जाएं। चुनान्चे सब से पहले ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हिजरत की। इस के बा'द यके बा'द दीगरे दूसरे लोग भी मदीना रवाना होने लगे। जब कुफ़्फ़ारे कुरैश को पता चला तो उन्हों ने रोक टोक शुरूअ़ कर दी मगर छुप छुप कर लोगों ने हिजरत का सिल्सिला जारी रखा यहां तक कि रफ़्ता रफ़्ता बहुत से सह़ाबए किराम मदीनए मुनव्वरह चले गए। सिर्फ़ वोही ह़ज़रात मक्का में रह गए जो या तो काफ़िरों की कै़द में थे या अपनी मुफ़्लिसी की वजह से मजबूर थे।

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،اسماء النقباء الاثنى عشر...الخ،ص١٧٨-١٧٩

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को चूंकि अभी तक ख़ुदा की त़रफ़ से हिजरत का हुक्म नहीं मिला था इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्का ही में मुक़ीम रहे और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا को भी आप ने रोक लिया था। लिहाज़ा येह दोनों शमए़ नुबुव्वत के परवाने भी आप ही के साथ मक्का में ठहरे हुए थे।

कुफ़्फ़ार कॉन्फ़्रन्स

जब मक्का के काफ़िरों ने येह देख लिया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم और मुसलमानों के मददगार मक्का से बाहर मदीना में भी हो गए और मदीना जाने वाले मुसलमानों को अन्सार ने अपनी पनाह में ले लिया है तो कुफ़्फ़ारे मक्का को येह ख़त़रा मह़सूस होने लगा कि कहीं ऐसा न हो कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم) भी मदीना चले जाएं और वहां से अपने ह़ामियों की फ़ौज ले कर मक्का पर चढ़ाई न कर दें। चुनान्चे इस ख़त़रे का दरवाज़ा बन्द करने के लिये कुफ़्फ़ारे मक्का ने अपने दारुन्नदवा (पन्चायत घर) में एक बहुत बड़ी कॉन्फ़्रन्स मुन्अ़क़िद की। और येह कुफ़्फ़ारे मक्का का ऐसा ज़बर दस्त नुमाइन्दा इजतिमाअ़ था कि मक्का का कोई भी ऐसा दानिश्वर और बा असर शख़्स न था जो इस कॉन्फ़्रन्स में शरीक न हुवा हो। ख़ुसूसिय्यत के साथ अबू सुफ़्यान, अबू जह्ल, उ़त्बा, जुबैर बिन मुत़इम, नज़्र बिन ह़ारिस, अबुल बुख़्तरी, ज़म्आ़ बिन अस्वद, ह़कीम बिन ह़िज़ाम, उमय्या बिन ख़लफ़ वग़ैरा वग़ैरा तमाम सरदाराने क़ुरैश इस मजलिस में मौजूद थे। शैत़ाने लईन भी कम्बल ओढ़े एक बुज़ुर्ग शैख़ की सूरत में आ गया। क़ुरैश के सरदारों ने नाम व नसब पूछा तो बोला कि मैं **"शैख़े नज्द"** हूं। इस लिये इस कॉन्फ़्रन्स में आ गया हूं कि मैं तुम्हारे मुआ़मले में अपनी राय भी पेश कर दूं। येह सुन कर क़ुरैश के सरदारों ने इब्लीस को भी अपनी कॉन्फ़्रन्स में शरीक कर लिया और कॉन्फ़्रन्स की कारवाई शुरूअ़ हो गई। जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

का मुआ़मला पेश हुवा तो अबुल बख़्तरी ने येह राय दी कि इन को किसी कोठरी में बन्द कर के इन के हाथ पाउं बांध दो और एक सूराख़ से खाना पानी इन को दे दिया करो। **शैख़े नज्दी** (शैत़ान) ने कहा कि येह राय अच्छी नहीं है। ख़ुदा की क़सम ! अगर तुम लोगों ने उन को किसी मकान में क़ैद कर दिया तो यक़ीनन उन के जां निसार अस्ह़ाब को इस की ख़बर लग जाएगी और वोह अपनी जान पर खेल कर उन को क़ैद से छुड़ा लेंगे।

अबुल अस्वद रबीआ़ बिन अ़म्र आ़मिरी ने येह मश्वरा दिया कि इन को मक्का से निकाल दो ताकि येह किसी दूसरे शहर में जा कर रहें। इस त़रह़ हम को इन के क़ुरआन पढ़ने और इन की तब्लीग़े इस्लाम से नजात मिल जाएगी। येह सुन कर **शैख़े नज्दी** ने बिगड़ कर कहा कि तुम्हारी इस राय पर ला'नत, क्या तुम लोगों को मा'लूम नहीं कि **मुह़म्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के कलाम में कितनी मिठास और तासीर व दिलकशी है ? ख़ुदा की क़सम ! अगर तुम लोग इन को शहर बदर कर के छोड़ दोगे तो येह पूरे मुल्के अ़रब में लोगों को क़ुरआन सुना सुना कर तमाम क़बाइले अ़रब को अपना ताबेए़ फ़रमान बना लेंगे और फिर अपने साथ एक अ़ज़ीम लश्कर को ले कर तुम पर ऐसी यलग़ार कर देंगे कि तुम इन के मुक़ाबले से आ़जिज़ व लाचार हो जाओगे और फिर बजुज़ इस के कि तुम इन के ग़ुलाम बन कर रहो कुछ बनाए न बनेगी इस लिये इन को जिला वत़न करने की तो बात ही मत करो।

अबू जह्ल बोला कि साह़िबो ! मेरे ज़ेह्न में एक राय है जो अब तक किसी को नहीं सूझी येह सुन कर सब के कान खड़े हो गए और सब ने बड़े इश्तियाक़ के साथ पूछा कि कहिये वोह क्या है ? तो अबू जह्ल ने कहा कि मेरी राय येह है कि हर क़बीले का एक एक मश्हूर बहादुर तलवार ले कर उठ खड़ा हो और सब यक्बारगी ह़म्ला कर के मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को क़त्ल कर डालें। इस तदबीर से ख़ून करने का

जुर्म तमाम क़बीलों के सर पर रहेगा। ज़ाहिर है कि ख़ानदाने बनू हाशिम इस ख़ून का बदला लेने के लिये तमाम क़बीलों से लड़ने की ताक़त नहीं रख सकते। लिहाज़ा यक़ीनन वोह ख़ूनबहा लेने पर राज़ी हो जाएंगे और हम लोग मिलजुल कर आसानी के साथ ख़ूनबहा की रक़म अदा कर देंगे। अबू जहल की येह ख़ूनी तज्वीज़ सुन कर **शैख़े नज्दी** मारे ख़ुशी के उछल पड़ा और कहा कि बेशक येह तदबीर बिल्कुल दुरुस्त है। इस के सिवा और कोई तज्वीज़ क़ाबिले क़बूल नहीं हो सकती। चुनान्चे तमाम शुरकाए कॉन्फ़्रन्स ने इत्तिफ़ाक़े राय से इस तज्वीज़ को पास कर दिया और मजलिसे शूरा बरख़ास्त हो गई और हर शख़्स येह ख़ौफ़नाक अज़्म ले कर अपने अपने घर चला गया। ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने क़ुरआने मजीद की मुन्दरिजए ज़ैल आयत में इस वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि

وَاِذْ یَمْكُرُ بِكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِیُثْبِتُوْكَ اَوْ یَقْتُلُوْكَ اَوْ یُخْرِجُوْكَ ؕ وَیَمْكُرُوْنَ وَیَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَیْرُ الْمٰكِرِیْنَ۝(1)

(ऐ महबूब याद कीजिये) जिस वक़्त कुफ़्फ़ार आप के बारे में ख़ुफ़्या तदबीर कर रहे थे कि आप को क़ैद कर दें या क़त्ल कर दें या शहर बदर कर दें येह लोग ख़ुफ़्या तदबीर कर रहे थे और अल्लाह ख़ुफ़्या तदबीर कर रहा था और अल्लाह की पोशीदा तदबीर सब से बेहतर है।

अल्लाह तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर क्या थी ? अगले सफ़्हे पर इस का जल्वा देखिये कि किस त़रह़ उस ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त फ़रमाई और कुफ़्फ़ार की सारी स्कीम को किस त़रह़ उस क़ादिरे क़य्यूम ने तहस नहस फ़रमा दिया।[2] (ابن ہشام)

1 ......پ۹،الانفال : ۳۰

2 ......السيرة النبوية لابن هشام،هجرة الرسول صلى الله عليه وسلم،ص ۱۹۱-۱۹۳

हिजरते रसूल का वाक़िआ

जब कुफ़्फ़ार **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के क़त्ल पर इत्तिफ़ाक़ कर के कॉन्फ़्रन्स ख़त्म कर चुके और अपने अपने घरों को रवाना हो गए तो ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام रब्बुल आ़लमीन का हुक्म ले कर नाज़िल हो गए कि ऐ मह़बूब ! आज रात को आप अपने बिस्तर पर न सोएं और हिजरत कर के मदीना तशरीफ़ ले जाएं। चुनान्चे ऐ़न दोपहर के वक़्त **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि सब घर वालों को हटा दो कुछ मश्वरा करना है। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! आप पर मेरे मां बाप क़ुरबान यहां आप की अहलिया (ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के सिवा और कोई नहीं है। (उस वक़्त ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शादी हो चुकी थी) **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे हिजरत की इजाज़त फ़रमा दी है। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! मुझे भी हमराही का शरफ़ अ़ता फ़रमाइये। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चार महीने से दो ऊंटनियां बबूल की पत्ती खिला खिला कर तय्यार की थीं कि हिजरत के वक़्त येह सुवारी के काम आएंगी। अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! इन में से एक ऊंटनी आप क़बूल फ़रमा लें। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि क़बूल है मगर मैं इस की क़ीमत दूंगा। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बा दिले ना ख़्वास्ता फ़रमाने रिसालत से मजबूर हो कर इस को क़बूल किया। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तो उस वक़्त बहुत कम उ़म्र थीं लेकिन उन की बड़ी बहन ह़ज़रते

बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھَا ने सामाने सफ़र दुरुस्त किया और तोशादान में खाना रख कर अपनी कमर के पटके को फाड़ कर दो टुकड़े किये। एक से तोशादान को बांधा और दूसरे से मशक का मुंह बांधा। येह वोह क़ाबिले फ़ख़्र शरफ़ है जिस की बिना पर इन को "ज़ातुन्नताक़ैन" (दो पटके वाली) के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से याद किया जाता है।

इस के बा'द **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने एक काफ़िर को जिस का नाम "अ़ब्दुल्लाह बिन उरैक़त़" था जो रास्तों का माहिर था राहनुमाई के लिये उजरत पर नोकर रखा और इन दोनों ऊंटनियों को उस के सिपुर्द कर के फ़रमाया कि तीन रातों के बा'द वोह इन दोनों ऊंटनियों को ले कर "ग़ारे सौर" के पास आ जाए। येह सारा निज़ाम कर लेने के बा'द **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अपने मकान पर तशरीफ़ लाए।[1]

(بخاری ج۱ص۵۵۳تا۵۵۴ باب ہجرت النبی صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

काशानए नुबुव्वत का मुह़ासरा

कुफ़्फ़ारे मक्का ने अपने प्रोग्राम के मुत़ाबिक़ काशानए नुबुव्वत को घेर लिया और इनतिज़ार करने लगे कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم सो जाएं तो इन पर क़ातिलाना ह़म्ला किया जाए। उस वक़्त घर में **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास सिर्फ़ अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ थे। कुफ़्फ़ारे मक्का अगर्चे रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के बद तरीन दुश्मन थे मगर इस के बा वुजूद **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की अमानत व दियानत पर कुफ़्फ़ार को इस क़दर ए'तिमाद था कि वोह अपने क़ीमती माल व सामान को **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास अमानत रखते थे। चुनान्चे उस वक़्त भी बहुत सी अमानतें काशानए नुबुव्वत में थीं। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि तुम

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی صلی اللّٰہ علیہ و سلم و اصحابہ، الحدیث: ۳۹۰۵، ج۲، ص۵۹۲ و السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، ھجرۃ الرسول صلی اللّٰہ علیہ و سلم، ص۱۹۲۔۱۹۳

मेरी सब्ज़ रंग की चादर ओढ़ कर मेरे बिस्तर पर सो रहो और मेरे चले जाने के बा'द तुम कुरैश की तमाम अमानतें इन के मालिकों को सोंप कर मदीने चले आना।

येह बड़ा ही ख़ौफ़नाक और बड़े सख़्त ख़तरे का मौक़अ़ था। हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मा'लूम था कि कुफ़्फ़ारे मक्का **हुज़ूर** को क़त्ल का इरादा कर चुके हैं मगर **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के इस फ़रमान से कि तुम कुरैश की सारी अमानतें लौटा कर मदीने चले आना हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को यक़ीने कामिल था कि मैं ज़िन्दा रहूंगा और मदीने पहुंचूंगा इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का बिस्तर जो आज कांटों का बिछोना था, हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये फूलों की सेज बन गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बिस्तर पर सुब्ह तक आराम के साथ मीठी मीठी नींद सोते रहे। अपने इसी कारनामे पर फ़ख़्र करते हुए शेरे ख़ुदा ने अपने अश्आ़र में फ़रमाया कि

وَقَیْتُ بِنَفْسِیْ خَیْرَمَنْ وَطِیَٔ الثَّرٰی   وَمَنْ طَافَ بِالْبَیْتِ الْعَتِیْقِ وَبِالْحَجَرِ

मैं ने अपनी जान को ख़तरे में डाल कर उस ज़ाते गिरामी की हिफ़ाज़त की जो ज़मीन पर चलने वालों और ख़ानए का'बा व हत़ीम का तवाफ़ करने वालों में सब से ज़ियादा बेहतर और बुलन्द मर्तबा हैं।

رَسُوْلُ اِلٰہٍ خَافَ اَنْ یَّمْکُرُوْا بِہٖ   فَنَجَّاہُ ذُوالطَّوْلِ الْاِلٰہُ مِنَ الْمَکْرِ

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को येह अन्देशा था कि कुफ़्फ़ारे मक्का इन के साथ ख़ुफ़्या चाल चल जाएंगे मगर ख़ुदा वन्दे मेहरबान ने इन को काफ़िरों की ख़ुफ़्या तदबीर से बचा लिया।[1]

(زرقانی علی المواہب ج۱ص۳۲۲)

---

1 ......مدارج النبوت ،قسم دوم ، با ب چہارم، ج۲،ص۵۸وشرح الزرقانی علی المواھب، باب ھجرۃ المصطفٰی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ،ج۲،ص۹۵والسیرۃ النبویۃ لابن ھشام، ھجرۃ الرسول صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ص۱۹۴

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बिस्तरे नुबुव्वत पर जाने विलायत को सुला कर एक मुठ्ठी ख़ाक हाथ में ली और सूरए यासीन की इब्तिदाई आयतों को तिलावत फ़रमाते हुए नुबुव्वत ख़ाने से बाहर तशरीफ़ लाए और मुह़ासरा करने वाले काफ़िरों के सरों पर ख़ाक डालते हुए उन के मज्मअ़ से साफ़ निकल गए। न किसी को नज़र आए न किसी को कुछ ख़बर हुई। एक दूसरा शख़्स जो इस मज्मअ़ में मौजूद न था उस ने इन लोगों को ख़बर दी कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) तो यहां से निकल गए और चलते वक़्त तुम्हारे सरों पर ख़ाक डाल गए हैं। चुनान्चे इन कोर बख़्तों ने अपने सरों पर हाथ फैरा तो वाक़ेई उन के सरों पर ख़ाक और धूल पड़ी हुई थी।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ ص۵۷)

रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने दौलत ख़ाने से निकल कर मक़ाम "ह़ज़ूरा" के पास खड़े हो गए और बड़ी ह़सरत के साथ "का'बा" को देखा और फ़रमाया कि ऐ शहरे मक्का ! तू मुझ को तमाम दुन्या से ज़ियादा प्यारा है। अगर मेरी क़ौम मुझ को तुझ से न निकालती तो मैं तेरे सिवा किसी और जगह सुकूनत पज़ीर न होता। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से पहले ही क़रार दाद हो चुकी थी। वोह भी उसी जगह आ गए और इस ख़याल से कि कुफ़्फ़ारे मक्का हमारे क़दमों के निशान से हमारा रास्ता पहचान कर हमारा पीछा न करें फिर येह भी देखा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पाए नाज़ुक ज़ख़्मी हो गए हैं ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपने कन्धों पर सुवार कर लिया और इस त़रह़ ख़ारदार झाड़ियों और नोकदार पथ्थरों वाली पहाड़ियों को रौंदते हुए उसी रात "ग़ारे सौर" पहुंचे।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ ص۵۸)

---

1 ......مدارج النبوت ،قسم دوم ، با ب چهارم، ج۲، ص۵۷

2 ......مدارج النبوت ،قسم دوم ، با ب چهارم، ج۲، ص۵۷ وشرح الزرقانی علی المواهب، باب هجرة المصطفٰی...الخ، ج۲، ص۱۰۸

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पहले खुद ग़ार में दाख़िल हुए और अच्छी तरह ग़ार की सफ़ाई की और अपने बदन के कपड़े फाड़ फाड़ कर ग़ार के तमाम सूराख़ों को बन्द किया। फिर **हुज़ूरे** अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ग़ार के अन्दर तशरीफ़ ले गए और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की गोद में अपना सर मुबारक रख कर सो गए। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक सूराख़ को अपनी एड़ी से बन्द कर रखा था। सूराख़ के अन्दर से एक सांप ने बार बार यारे ग़ार के पाउं में काटा मगर हज़रते सिद्दीक़े जां निसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस ख़याल से पाउं नहीं हटाया कि रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ख़्वाबे राहत में ख़लल न पड़ जाए मगर दर्द की शिद्दत से यारे ग़ार के आंसूओं की धार के चन्द क़तरात सरवरे काएनात के रुख़्सार पर निसार हो गए। जिस से रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बेदार हो गए और अपने यारे ग़ार को रोता देख कर बे क़रार हो गए पूछा : अबू बक्र ! क्या हुवा ? अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मुझे सांप ने काट लिया है। येह सुन कर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ज़ख़्म पर अपना लुआबे दहन लगा दिया जिस से फ़ौरन ही सारा दर्द जाता रहा। **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तीन रात इस ग़ार में रौनक़ अफ़रोज़ रहे।[1]

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जवान फ़रज़न्द हज़रते अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोज़ाना रात को ग़ार के मुंह पर सोते और सुब्ह सवेरे ही मक्का चले जाते और पता लगाते कि कुरैश क्या तदबीरें कर रहे हैं ? जो कुछ ख़बर मिलती शाम को आ कर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अर्ज़ कर देते। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ग़ुलाम हज़रते आमिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

---

1 ......المواهب اللدنية والزرقانی ،باب هجرة المصطفٰی صلی اللّٰه عليه وسلم ...الخ، ج٢،ص١٢١ و المواهب اللدنيةمع شرح الزرقانی، باب هجرة المصطفٰی صلی اللّٰه عليه وسلم...الخ،ج٢،ص١٢٧

कुछ रात गए चरागाह से बकरियां ले कर ग़ार के पास आ जाते और इन बकरियों का दूध दोनों आ़लम के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और उन के यारे ग़ार पी लेते थे।[1] (زرقانی علی المواھب ج ۱ ص ۳۳۹)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तो ग़ारे सौर में तशरीफ़ फ़रमा हो गए। उधर काशानए नुबुव्वत का मुह़ासरा करने वाले कुफ़्फ़ार जब सुब्ह़ को मकान में दाख़िल हुए तो बिस्तरे नुबुव्वत पर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे। ज़ालिमों ने थोड़ी देर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछगछ कर के आप को छोड़ दिया। फिर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तलाश व जुस्तजू में मक्का और अत़राफ़ व जवानिब का चप्पा चप्पा छान मारा। यहां तक कि ढूंडते ढूंडते ग़ारे सौर तक पहुंच गए मगर ग़ार के मुंह पर उस वक़्त ख़ुदा वन्दी ह़िफ़ाज़त का पहरा लगा हुवा था। या'नी ग़ार के मुंह पर मकड़ी ने जाला तन दिया था और कनारे पर कबूतरी ने अन्डे दे रखे थे। येह मन्ज़र देख कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश आपस में कहने लगे कि इस ग़ार में कोई इन्सान मौजूद होता तो न मकड़ी जाला तनती न कबूतरी यहां अन्डे देती। कुफ़्फ़ार की आहट पा कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कुछ घबराए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! अब हमारे दुश्मन इस क़दर क़रीब आ गए हैं कि अगर वोह अपने क़दमों पर नज़र डालेंगे तो हम को देख लेंगे। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि

لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا — *मत घबराओ ! ख़ुदा हमारे साथ है।*

इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़ल्ब पर सुकून व इत़मीनान का ऐसा सकीना उतार दिया कि वोह बिल्कुल ही बे ख़ौफ़ हो गए।[2] ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़

---

1 ......المواھب اللدنية و الزرقانى،باب هجرة المصطفٰى صلى الله عليه وسلم...الخ،ج۲،ص۱۲۷

2 ......المواھب اللدنية و الزرقانى ،باب هجرة المصطفٰى صلى الله عليه وسلم...الخ ، ج۲، ص۱۲۳ ملخصاً ومدارج النبوت ،قسم دوم ، باب چهارم، ج۲،ص۵۹

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ की येही वोह जां निसारियां हैं जिन को दरबारे नुबुव्वत के मशहूर शाइर ह़स्सान बिन साबित अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने क्या ख़ूब कहा है कि

وَثَانِیُ اثْنَیْنِ فِی الْغَارِ الْمُنِیْفِ وَقَدْ　　طَافَ الْعَدُوُّ بِهٖ اِذْ صَاعَدَ الْجَبَلَا

और दो में के दूसरे (अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ) जब कि पहाड़ पर चढ़ कर बुलन्द मर्तबा ग़ार में इस ह़ाल में थे कि दुश्मन उन के इर्द गिर्द चक्कर लगा रहा था।

وَکَانَ حِبَّ رَسُوْلِ اللّٰهِ قَدْ عَلِمُوْا　　مِنَ الْخَلَائِقِ لَمْ یَعْدِلْ بِهٖ بَدَلَا

और वोह (अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के मह़बूब थे। तमाम मख़्लूक़ इस बात को जानती है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने किसी को भी इन के बराबर नहीं ठहराया।[1]

(زرقانی علی المواہب ج۱ص ۳۳۷)

बहर ह़ाल चौथे दिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم यकुम रबीउ़ल अव्वल दो शम्बा के दिन ग़ारे सौर से बाहर तशरीफ़ लाए। अ़ब्दुल्लाह बिन उरैक़त़ जिस को रहनुमाई के लिये किराए पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने नोकर रख लिया था वोह क़रार दाद के मुत़ाबिक़ दो ऊंटनियां ले कर ग़ारे सौर पर ह़ाज़िर था। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم अपनी ऊंटनी पर सुवार हुए और एक ऊंटनी पर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ और ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ बैठे और अ़ब्दुल्लाह बिन उरैक़त़ आगे आगे पैदल चलने लगा और आ़म रास्ते से हट कर साह़िले समुन्दर के ग़ैर मा'रूफ़ रास्तों से सफ़र शुरूअ़ कर दिया।[2]

1 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی، باب ھجرۃ المصطفٰی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، ج۲،ص ۱۲٤

2 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی، باب ھجرۃ المصطفٰی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، ج۲، ص۱۲۸،۱۲۹ ملخصاً

सो ऊंट का इन्आ़म

उधर अहले मक्का ने इश्तिहार दे दिया था कि जो शख़्स मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) को गरिफ़्तार कर के लाएगा उस को एक सो ऊंट इन्आ़म मिलेगा। इस गिरां क़द्र इन्आ़म के लालच में बहुत से लालची लोगों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तलाश शुरूअ़ कर दी और कुछ लोग तो मन्ज़िलों दूर तक तआ़कुब में गए।[1]

उम्मे मा'बद की बकरी

दूसरे रोज़ मक़ामे क़ुदैद में उम्मे मा'बद आ़तिका बिन्ते ख़ालिद ख़ुज़ाइय्या के मकान पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का गुज़र हुवा। उम्मे मा'बद एक ज़ईफ़ा औ़रत थी जो अपने ख़ैमे के सह़्न में बैठी रहा करती थी और मुसाफ़िरों को खाना पानी दिया करती थी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उस से कुछ खाना ख़रीदने का क़स्द किया मगर उस के पास कोई चीज़ मौजूद न थी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने देखा कि उस के ख़ैमे के एक जानिब एक बहुत ही लाग़र बकरी है। दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या येह दूध देती है ? उम्मे मा'बद ने कहा : नहीं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम इजाज़त दो तो मैं इस का दूध दोह लूं। उम्मे मा'बद ने इजाज़त दे दी और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने "बिस्मिल्लाह" पढ़ कर जो उस के थन को हाथ लगाया तो उस का थन दूध से भर गया और इतना दूध निकला कि सब लोग सैराब हो गए और उम्मे मा'बद के तमाम बरतन दूध से भर गए। येह मो'जिज़ा देख कर उम्मे मा'बद और उन के ख़ावन्द दोनों मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۶۱)

---

1 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،باب ھجرۃ المصطفٰی صلی اللّٰہ علیہ وسلم..الخ،ج۲،ص۱۱۰

2 ......مدارج النبوت ،قسم دوم ، با ب چهارم، ج۲،ص٦١ والمواھب اللدنیةمع شرح الزرقانی، باب ھجرۃ المصطفٰی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ،ج۲،ص۱۳۰

रिवायत है कि उम्मे मा'बद की येह बकरी सि. 18 हि. तक ज़िन्दा रही और बराबर दूध देती रही और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में जब "आ़मुर्रमाद" का सख़्त क़ह़त़ पड़ा कि तमाम जानवरों के थनों का दूध ख़ुश्क हो गया उस वक़्त भी येह बकरी सुब्ह़ व शाम बराबर दूध देती रही।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۳۴۶)

सुराक़ा का घोड़ा

जब उम्मे मा'बद के घर से हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم आगे रवाना हुए तो मक्का का एक मश्हूर शह सुवार सुराक़ा बिन मालिक बिन जा'शम तेज़ रफ़्तार घोड़े पर सुवार हो कर तआ़क़ुब करता नज़र आया। क़रीब पहुंच कर ह़म्ला करने का इरादा किया मगर उस के घोड़े ने ठोकर खाई और वोह घोड़े से गिर पड़ा मगर सो ऊंटों का इन्आ़म कोई मा'मूली चीज़ न थी। इन्आ़म के लालच ने उसे दोबारा उभारा और वोह ह़म्ले की निय्यत से आगे बढ़ा तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की दुआ़ से पथरीली ज़मीन में उस के घोड़े का पाउं घुटनों तक ज़मीन में धंस गया। सुराक़ा येह मो'जिज़ा देख कर ख़ौफ़ व दहशत से कांपने लगा और अमान ! अमान ! पुकारने लगा। रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का दिल रह़मो करम का समुन्दर था। सुराक़ा की लाचारी और गिर्या ज़ारी पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का दरियाए रह़मत जोश में आ गया। दुआ़ फ़रमा दी तो ज़मीन ने उस के घोड़े को छोड़ दिया। इस के बा'द सुराक़ा ने अ़र्ज़ किया कि मुझ को अम्न का परवाना लिख दीजिये। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के हुक्म से ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सुराक़ा के लिये अम्न की तह़रीर लिख दी। सुराक़ा ने उस तह़रीर को अपने तरकश में रख लिया और वापस लौट गया। रास्ते में जो शख़्स भी हु़ज़ूर

[1] ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی، باب ھجرۃ المصطفٰی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، ج۲،ص۱۴۲

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के बारे में दरयाफ़्त करता तो सुराक़ा उस को येह कह कर लौटा देते कि मैं ने बड़ी दूर तक बहुत ज़ियादा तलाश किया मगर आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उस तरफ़ नहीं हैं । वापस लौटते हुए सुराक़ा ने कुछ सामाने सफ़र भी **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में बतौरे नज़राना के पेश किया मगर आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने क़बूल नहीं फ़रमाया ।[1]

(بخاری باب ہجرۃ النبی ج ا ص ۵۵۴ و زرقانی ج ا ص ۳۴۶ و مدارج النبوۃ ج ۲ ص ۶۲)

सुराक़ा उस वक़्त तो मुसलमान नहीं हुए मगर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की अ़ज़मते नुबुव्वत और इस्लाम की सदाक़त का सिक्का उन के दिल पर बैठ गया । जब **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़त्हे मक्का और जंगे त़ाइफ़ व हुनैन से फ़ारिग़ हो कर "जिइर्राना" में पड़ाव किया तो सुराक़ा उसी परवानए अम्न को ले कर बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हो गए और अपने क़बीले की बहुत बड़ी जमाअ़त के साथ इस्लाम क़बूल कर लिया ।[2] (دلائل النبوۃ ج ۲ ص ۱۵ و مدارج النبوۃ ج ۲ ص ۶۲)

वाज़ेह़ रहे कि येह वोही सुराक़ा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं जिन के बारे में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने इल्मे ग़ैब से ग़ैब की ख़बर देते हुए येह इरशाद फ़रमाया था कि ऐ सुराक़ा ! तेरा क्या ह़ाल होगा जब तुझ को मुल्के फ़ारस के बादशाह किस्रा के दोनों कंगन पहनाए जाएंगे ? इस इरशाद के बरसों बा'द जब ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में ईरान फ़त्ह़ हुवा और किस्रा के कंगन दरबारे ख़िलाफ़त में लाए गए तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، الحدیث:۳۹۰۶،ج۲،ص۵۹۳

2 ......مدارج النبوت ،قسم دوم ، با ب چہارم، ج۲،ص۶۲ وشرح الزرقانی علی المواھب، قصۃ سراقۃ، ج۲، ص۱۴۵ ملخصاً

फ़रमान की तस्दीक़ व तह्क़ीक़ के लिये वोह कंगन ह़ज़रते सुराक़ा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ को पहना दिये और फ़रमाया कि ऐ सुराक़ा ! رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ येह कहो कि अल्लाह तआ़ला ही के लिये ह़म्द है जिस ने इन कंगनों को बादशाहे फ़ारस किस्रा से छीन कर सुराक़ा बदवी को पहना दिया ।[1] ह़ज़रते सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने सि. 24 हि. में वफ़ात पाई । जब कि ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ थे । (زرقانی علی المواہب ج۱ ص۲۴۶ و ص۳۴۸)

बुरैदा अस्लमी का झन्डा

जब हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मदीना के क़रीब पहुंच गए तो "बुरैदा अस्लमी" क़बीलए बनी सहम के सत्तर सुवारों को साथ ले कर इस लालच में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की गरिफ़्तारी के लिये आए कि क़ुरैश से एक सो ऊंट इन्आ़म मिल जाएगा । मगर जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने आए और पूछा कि आप कौन हैं ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं **मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** हूं और ख़ुदा का **रसूल** हूं । जमाल व जलाले नुबुव्वत का उन के क़ल्ब पर ऐसा असर हुवा कि फ़ौरन ही कलिमए शहादत पढ़ कर दामने इस्लाम में आ गए और कमाले अ़क़ीदत से येह दरख़्वास्त पेश की, कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! मेरी तमन्ना है कि मदीने में हुज़ूर का दाख़िला एक झन्डे के साथ होना चाहिये, येह कहा और अपना इमामा सर से उतार कर अपने नेज़े पर बांध लिया और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अ़लम बरदार बन कर मदीना तक आगे आगे चलते रहे । फिर दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! आप मदीने में कहां उतरेंगे ? ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मेरी ऊंटनी ख़ुदा की त़रफ़ से मामूर है । येह जहां बैठ जाएगी वोही मेरी क़ियाम गाह है ।[2]

(مدارج النبوۃ ج۲ ص۶۲)

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب، قصة سراقة، ج۲،ص۱٤٥

2 ......مدارج النبوت ،قسم دوم ، با ب چهارم، ج۲،ص٦۲

हज़रते ज़ुबैर के बेश क़ीमत कपड़े

इस सफ़र में हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से हज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मुलाक़ात हो गई जो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फूफी हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہا के बेटे हैं। येह मुल्के शाम से तिजारत का सामान ले कर आ रहे थे। इन्हों ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में चन्द नफ़ीस कपड़े बतौरे नज़राना के पेश किये जिन को ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने क़बूल फ़रमा लिया।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۶۳)

शहनशाहे रिसालत मदीने में

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की आमद आमद की ख़बर चूंकि मदीने में पहले से पहुंच चुकी थी और औरतों बच्चों तक की ज़बानों पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी का चरचा था। इस लिये अहले मदीना आप के दीदार के लिये इनतिहाई मुश्ताक़ व बे क़रार थे। रोज़ाना सुब्ह़ से निकल निकल कर शहर के बाहर सरापा इनतिज़ार बन कर इस्तिक़्बाल के लिये तय्यार रहते थे और जब धूप तेज़ हो जाती तो ह़सरत व अफ़्सोस के साथ अपने घरों को वापस लौट जाते। एक दिन अपने मा'मूल के मुताबिक़ अहले मदीना आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की राह देख कर वापस जा चुके थे कि ना गहां एक यहूदी ने अपने क़लए़ से देखा कि ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सुवारी मदीने के क़रीब आन पहुंची है। उस ने ब आवाज़े बुलन्द पुकारा कि ऐ मदीने वालो ! लो तुम जिस का रोज़ाना इनतिज़ार करते थे वोह कारवाने रह़मत आ गया। येह सुन कर तमाम

---

1 ......مدارج النبوت ،قسم دوم ، باب چهارم، ج۲،ص۶۳ مختصراًودلائل النبوة للبيهقی، باب من استقبل رسول اللّٰه صلی اللّٰه عليه وسلم ،ج۲،ص۴۹۸

अन्सार बदन पर हथयार सजा कर और वज्द व शादमानी से बे क़रार हो कर दोनों आ़लम के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का इस्तिक़्बाल करने के लिये अपने घरों से निकल पड़े और ना'रए तक्बीर की आवाज़ों से तमाम शहर गूंज उठा।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۶۳وغیرہ)

मदीनए मुनव्वरह से तीन मील के फ़ासिले पर जहां आज "मस्जिदे क़ुबा" बनी हुई है। 12 रबीउ़ल अव्वल को **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रौनक़ अफ़रोज़ हुए और क़बीलए अ़म्र बिन औ़फ़ के ख़ानदान में ह़ज़रते कुलसूम बिन हदम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मकान में तशरीफ़ फ़रमा हुए। अहले ख़ानदान ने इस फ़ख़्रो शरफ़ पर कि दोनों आ़लम के मेज़बान इन के मेहमान बने اَللّٰهُ اَکْبَر का पुरजोश ना'रा मारा। चारों त़रफ़ से अन्सार जोशे मसर्रत में आते और बारगाहे रिसालत में **सलातो सलाम** का नज़रानए अ़क़ीदत पेश करते। अकसर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم जो **हुज़ूर** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पहले हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरह आए थे वोह लोग भी उस मकान में ठहरे हुए थे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ भी हुक्मे नबवी के मुत़ाबिक़ क़ुरैश की अमानतें वापस लौटा कर तीसरे दिन मक्का से चल पड़े थे वोह भी मदीना आ गए और इसी मकान में क़ियाम फ़रमाया और ह़ज़रते कुलसूम बिन हदम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और इन के ख़ानदान वाले इन तमाम मुक़द्दस मेहमानों की मेहमान नवाज़ी में दिन रात मसरूफ़ रहने लगे।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۶۳وبخاری ج۱ص۵۶۰)

اَللّٰهُ اَکْبَر ! अ़म्र बिन औ़फ़ के ख़ानदान में ह़ज़रते सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم व सय्यिदुल औलिया और सालिहीने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के नूरानी इजतिमाअ़ से ऐसा समां बंध गया होगा कि

---

1 ......مدارج النبوت ،قسم دوم ، با ب چہارم، ج۲،ص۶۳ملخصاً

2 ......دلائل النبوۃ للبیھقی، باب من استقبل رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، ج۲، ص۴۹۹۔۵۰۰ ملتقطاً ومدارج النبوت ،قسم دوم ، با ب چہارم، ج۲،ص۶۳ملخصاً

ग़ालिबन चांद, सूरज और सितारे ह़ैरत के साथ इस मज्मअ़ को देख कर ज़बाने ह़ाल से कहते होंगे कि येह फ़ैसला मुश्किल है कि आज अन्जुमने आस्मान ज़ियादा रौशन है या ह़ज़रते कुलसूम बिन हदम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का मकान ? और शायद ख़ानदाने अ़म्र बिन औ़फ़ का बच्चा बच्चा जोशे मसर्रत से मुस्कुरा मुस्कुरा कर ज़बाने ह़ाल से येह नग़्मा गाता होगा कि

उन के क़दम पे मैं निसार जिन के क़ुदूमे नाज़ ने
उजड़े हुए दियार को रश्के चमन बना दिया

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ
وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! **हुज़ूर** रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की "मक्की ज़िन्दगी" आप पढ़ चुके। अब हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की "मदनी ज़िन्दगी" पर सिनह वार वाक़िआ़त तह़रीर करने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं। आप भी इस के मुत़ालए़ से आंखों में नूर और दिल में सुरूर की दौलत ह़ासिल करें।

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल आ'ज़मी عُفِیَ عَنْهُ
28 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1395 हि.
घोसी (ब ह़ालते अ़लालत)

हुज़ूर ताजदारे दो आ़लम

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

की मदनी ज़िन्दगी

तआ़लल्लाह ज़ाते मुस्त़फ़ा का हुस्ने लासानी

कि यक्जा जम्अ़ हैं जिस में तमाम औसाफ़े इम्कानी

दुआ़ए यूनुसी, ख़ुल्क़े ख़लीली, सब्रे अय्यूबी

जलाले मूसवी, ज़ोहदे मसीही़, हुस्ने किन्आ़नी

(صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

छटा बाब

हिजरत का पहला साल

सि. 1 हि.

मस्जिदे क़ुबा

"क़ुबा" में सब से पहला काम एक मस्जिद की ता'मीर थी। इस मक़्सद के लिये **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते कुलसूम बिन हदम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की एक ज़मीन को पसन्द फ़रमाया जहां ख़ानदाने अ़म्र बिन औ़फ़ की खजूरें सुखाई जाती थीं इसी जगह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुक़द्दस हाथों से एक मस्जिद की बुन्याद डाली। येही वोह मस्जिद है जो आज भी "मस्जिदे क़ुबा" के नाम से मश्हूर है और जिस की शान में क़ुरआन की येह आयत नाज़िल हुई :

لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ط فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ط وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ٥[1] (توبہ)

*यक़ीनन वोह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले ही दिन से परहेज़ गारी पर रखी हुई है वोह इस बात की ज़ियादा ह़क़दार है कि आप इस में खड़े हों इस (मस्जिद) में ऐसे लोग हैं जिन को पाकी बहुत पसन्द है और **अल्लाह** तआ़ला पाक रहने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है।*

इस मुबारक मस्जिद की ता'मीर में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के साथ साथ खुद **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم भी ब नफ़्से नफ़ीस अपने दस्ते मुबारक से इतने बड़े बड़े पथ्थर उठाते थे कि उन के बोझ से जिस्मे नाज़ुक ख़म हो जाता था और अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के जां निसार अस्ह़ाब में से कोई अ़र्ज़ करता या रसूलल्लाह ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर

1 ......پ ۱۱،التوبة:۱۰۸

हमारे मां बाप कु़रबान हो जाएं आप छोड़ दीजिये हम उठाएंगे, तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उस की दिलजूई के लिये छोड़ देते मगर फिर उसी वज़्न का दूसरा पथ्थर उठा लेते और ख़ुद ही उस को ला कर इमारत में लगाते और ता'मीरी काम में जोश व वल्वला पैदा करने के लिये सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के साथ आवाज़ मिला कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के येह अश्आ़र पढ़ते जाते थे कि

اَفْلَحَ مَنْ يُّعَالِجُ الْمَسْجِدَا وَيَقْرَءُ الْقُرْاٰنَ قَائِمًا وَّقَاعِدًا

وَلَا يَبِيْتُ اللَّيْلَ عَنْهُ رَاقِدًا

वोह काम्याब है जो मस्जिद ता'मीर करता है और उठते बैठते कुरआन पढ़ता है और सोते हुए रात नहीं गुज़ारता।[1] (وفاء الوفاء ج۱ ص۱۸۰)

मस्जिदुल जुमुआ़

चौदह या चौबीस रोज़ के कि़याम में मस्जिदे कु़बा की ता'मीर फ़रमा कर जुमुआ़ के दिन आप "कु़बा" से शहरे मदीना की त़रफ़ रवाना हुए, रास्ते में क़बीलए बनी सालिम की मस्जिद में पहला जुमुआ़ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पढ़ा। येही वोह मस्जिद है जो आज तक "मस्जिदुल जुमुआ़" के नाम से मश्हूर है। अहले शहर को ख़बर हुई तो हर त़रफ़ से लोग जज़्बाते शौक़ में मुश्ताक़ाना इस्तिक़्बाल के लिये दौड़ पड़े। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दादा अ़ब्दुल मुत्त़लिब के नन्हाली रिश्ते दार "बनू अल नज्जार" हथयार लगाए "कु़बा" से शहर तक दो रोया सफ़ें बांधे मस्ताना वार चल रहे थे। आप रास्ते में तमाम क़बाइल की मह़ब्बत का शुक्रिया अदा करते और सब को ख़ैरो

1 ......وفاء الوفاء لسمهودى ، الباب الثالث، الفصل العاشرفى دخول النبى صلى اللّٰه عليه وسلم...الخ،المجلد الاول،الجزء الاول،ص۲۵۳

बरकत की दुआ़एं देते हुए चले जा रहे थे। शहर क़रीब आ गया तो अहले मदीना के जोशो ख़रोश का येह आ़लम था कि पर्दा नशीन ख़वातीन मकानों की छतों पर चढ़ गईं और येह इस्तिक़्बालिया अश्आ़र पढ़ने लगीं कि

طَلَعَ لْبَدْرُ عَلَيْنَا　مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاع

وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا　مَا دَعٰى لِلّٰهِ دَاعِى

हम पर चांद तुलूअ़ हो गया वदाअ़ की घाटियों से, हम पर ख़ुदा का शुक्र वाजिब है। जब तक **अल्लाह** से दुआ़ मांगने वाले दुआ़ मांगते रहें।

اَيُّهَا الْمَبْعُوْثُ فِيْنَا　جِئْتَ بِالْاَمْرِ الْمُطَاع

اَنْتَ شَرَّفْتَ الْمَدِيْنَةَ　مَرْحَبًا يَاخَيْرَ دَاع

ऐ वोह ज़ाते गिरामी ! जो हमारे अन्दर मबऊ़स किये गए। आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह दीन लाए जो इत़ाअ़त के क़ाबिल है आप ने मदीने को मुशर्रफ़ फ़रमा दिया तो आप के लिये "ख़ुश आमदीद" है ऐ बेहतरीन दा'वत देने वाले।

فَلَبِسْنَا ثَوْبَ يَمَنٍ　بَعْدَ تَلْفِيْقِ الرِّقَاع

فَعَلَيْكَ اللّٰهُ صَلّٰى　مَا سَعٰى لِلّٰهِ سَاع

तो हम लोगों ने यमनी कपड़े पहने ह़ालां कि इस से पहले पैवन्द जोड़ जोड़ कर कपड़े पहना करते थे तो आप पर **अल्लाह** तआ़ला उस वक़्त तक रह़मतें नाज़िल फ़रमाए जब तक **अल्लाह** के लिये कोशिश करने वाले कोशिश करते रहें।

मदीने की नन्ही नन्ही बच्चियां जोशे मसर्रत में झूम झूम कर और दफ़ बजा बजा कर येह गीत गाती थीं कि

نَحْنُ جَوَارٍ مِّنْ بَنِى النَّجَّارِ　　يَاحَبَّذَا مُحَمَّدٌ مِّنْ جَارِ

हम ख़ानदाने "बनू अन्नज्जार" की बच्चियां हैं, वाह क्या ही ख़ूब हुवा कि हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हमारे पड़ोसी हो गए। हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन बच्चियों के जोशे मसर्रत और इन की वालिहाना महब्बत से मुतअस्सिर हो कर पूछा कि ऐ बच्चियो ! क्या तुम मुझ से महब्बत करती हो ? तो बच्चियों ने यक ज़बान हो कर कहा कि "जी हां ! जी हां ।" येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुश हो कर मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि "मैं भी तुम से प्यार करता हूं ।"(1) (زرقانی علی المواہب ج۱ ص۳۵۹،۳۶۰)

छोटे छोटे लड़के और ग़ुलाम झुंड के झुंड मारे ख़ुशी के मदीने की गलियों में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की आमद आमद का ना'रा लगाते हुए दौड़े फिरते थे। सहाबिये रसूल बरा बिन आ़ज़िब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जो फ़रहत व सुरूर और अन्वारो तजल्लियात हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मदीने में तशरीफ़ लाने के दिन ज़ाहिर हुए न इस से पहले कभी ज़ाहिर हुए थे न इस के बा'द ।(2) (مدارج النبوۃ ج۲ ص۶۵)

अबू अय्यूब अन्सारी का मकान

तमाम क़बाइले अन्सार जो रास्ते में थे इनतिहाई जोशे मसर्रत के साथ ऊंटनी की मुहार थाम कर अ़र्ज़ करते या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप हमारे घरों को शरफ़े नुज़ूल बख़्शें मगर आप उन सब मुहिब्बीन से येही फ़रमाते कि मेरी ऊंटनी की मुहार छोड़ दो जिस जगह ख़ुदा को मन्ज़ूर होगा उसी जगह मेरी ऊंटनी बैठ जाएगी । चुनान्चे जिस जगह आज मस्जिदे नबवी

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب،خاتمۃ فی وقائع متفرقۃ...الخ،ج۲،ص۱۵۶،۱۵۷، ۱۶۰۔۱۶۹ ملتقطاً وصحیح البخاری ، کتاب الصلوۃ، باب ھل تنبش قبور...الخ، الحدیث:۴۲۸،ج۱،ص۱۶۵

2 ......مدارج النبوت ،قسم دوم ، با ب چھارم، ج۲،ص۶۳وشرح الزرقانی علی المواھب، خاتمۃ فی وقائع متفرقۃ...الخ،ج۲،ص۱۶۵ ملخصاً

शरीफ़ है उस के पास ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मकान था उसी जगह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ऊंटनी बैठ गई और ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त से आप का सामान उठा कर अपने घर में ले गए और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन्ही के मकान पर क़ियाम फ़रमाया। ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ऊपर की मन्ज़िल पेश की मगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुलाक़ातियों की आसानी का लिह़ाज़ फ़रमाते हुए नीचे की मन्ज़िल को पसन्द फ़रमाया। ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दोनों वक़्त आप के लिये खाना भेजते और आप का बचा हुवा खाना तबर्रुक समझ कर मियां बीवी खाते। खाने में जहां हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की उंगलियों का निशान पड़ा होता हुसूले बरकत के लिये ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उसी जगह से लुक़्मा उठाते और अपने हर क़ौल व फ़े'ल से बे पनाह अदब व एह़तिराम और अ़क़ीदत व जां निसारी का मुज़ाहरा करते। एक मरतबा मकान के ऊपर की मन्ज़िल पर पानी का घड़ा टूट गया तो इस अन्देशे से कि कहीं पानी बह कर नीचे की मन्ज़िल में न चला जाए और हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को कुछ तक्लीफ़ न हो जाए, ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सारा पानी अपने लिह़ाफ़ में खुश्क कर लिया, घर में येही एक लिह़ाफ़ था जो गीला हो गया। रात भर मियां बीवी ने सर्दी खाई मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ज़र्रा बराबर तक्लीफ़ पहुंच जाए येह गवारा नहीं किया। सात महीने तक ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इसी शान के साथ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मेज़बानी का शरफ़ ह़ासिल किया। जब मस्जिदे नबवी और इस के आस पास के हुजरे तय्यार हो गए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उन हुजरों में अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के साथ क़ियाम पज़ीर हो गए।[1] (زرقانی علی المواہب، ج۱،ص۳۵۷وغیرہ)

---

1 ......المواهب اللدنية والزرقانى، خاتمة فى وقائع متفرقة...الخ، ج۲، ص ۱۶۰-۱۶۳، ۱۸۶

हिजरत का पहला साल क़िस्म क़िस्म के बहुत से वाक़िआ़त को अपने दामन में लिये है मगर इन में से चन्द बड़े बड़े वाक़िआ़त को निहायत इख़्तिसार के साथ हम तह़रीर करते हैं।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम का इस्लाम

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मदीने में यहूदियों के सब से बड़े आ़लिम थे, ख़ुद इन का अपना बयान है कि जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्का से हिजरत फ़रमा कर मदीने में तशरीफ़ लाए और लोग जूक़ दर जूक़ इन की ज़ियारत के लिये हर त़रफ़ से आने लगे तो मैं भी उसी वक़्त ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और जूंही मेरी नज़र जमाले नुबुव्वत पर पड़ी तो पहली नज़र में मेरे दिल ने येह फ़ैसला कर दिया कि येह चेहरा किसी झूटे आदमी का चेहरा नहीं हो सकता। फिर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने वा'ज़ में येह इरशाद फ़रमाया कि

اَيُّهَا النَّاسُ اَفْشُوا السَّلَامَ وَاَطْعِمُوا الطَّعَامَ وَصِلُوا الْاَرْحَامَ وَصَلُّوْا بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ

ऐ लोगो ! सलाम का चरचा करो और खाना खिलाओ और (रिश्तेदारों के साथ) सिलए रेहमी करो और रातों को जब लोग सो रहे हों तो तुम नमाज़ पढ़ो।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम फ़रमाते हैं कि मैं ने **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को एक नज़र देखा और आप के येह चार बोल मेरे कान में पड़े तो मैं इस क़दर मुतअस्सिर हो गया कि मेरे दिल की दुन्या ही बदल गई और मैं मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का दामने इस्लाम में आ जाना येह इतना अहम वाक़िआ़ था कि मदीने के यहूदियों में खलबली मच गई।[1]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۶۲وبخاری وغیرہ)

---

1 ......مدارج النبوت ،قسم سوم ، باب اول، ج۲،ص۶۶ملخصاًو المستدرک للحاکم، کتاب البر و الصله،باب ارحموا اهل الارض..الخ،الحدیث۷۳۵۹،ج۵،ص۲۲۱ملخصًا

हुज़ूर के अहलो अ़याल मदीने में

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब कि अभी ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के मकान ही में तशरीफ़ फ़रमा थे आप ने अपने ग़ुलाम ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा और ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا को पांच सो दिरहम और दो ऊंट दे कर मक्का भेजा ताकि येह दोनों साहिबान अपने साथ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के अहलो अ़याल को मदीना लाएं। चुनान्चे येह दोनों ह़ज़रात जा कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की दो साहिब ज़ादियों ह़ज़रते फ़ातिमा और ह़ज़रते उम्मे कुलसूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मुत़ह्हरा उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद और ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को मदीना ले आए। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की साहिब ज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا न आ सकीं क्यूं कि उन के शोहर ह़ज़रते अबुल आ़स बिन अर्रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन को मक्का में रोक लिया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की एक साहिब ज़ादी ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने शोहर ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ "ह़बशा" में थीं। इन्ही लोगों के साथ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ भी अपने सब घर वालों को साथ ले कर मक्का से मदीना आ गए इन में ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी थीं येह सब लोग मदीना आ कर पहले ह़ज़रते ह़ारिसा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के मकान पर ठहरे।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۷۲)

मस्जिदे नबवी की ता'मीर

मदीने में कोई ऐसी जगह नहीं थी जहां मुसलमान बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ सकें इस लिये मस्जिद की ता'मीर निहायत

---

1 ......مدارج النبوت ،قسم سوم ، باب اول، ج۲،ص۶۷ مختصراًوشرح الزرقانی علی المواھب،ذکر بناء المسجد النبوی...الخ،ج۲،ص۱۸۶

ज़रूरी थी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की क़ियाम गाह के क़रीब ही "बनू अल नज्जार" का एक बाग़ था। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिद ता'मीर करने के लिये उस बाग़ को क़ीमत दे कर ख़रीदना चाहा। उन लोगों ने येह कह कर "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! हम ख़ुदा ही से इस की क़ीमत (अज्रो सवाब) लेंगे।" मुफ़्त में ज़मीन मस्जिद की ता'मीर के लिये पेश कर दी लेकिन चूंकि येह ज़मीन अस्ल में दो यतीमों की थी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों यतीम बच्चों को बुला भेजा। उन यतीम बच्चों ने भी ज़मीन मस्जिद के लिये नज़्र करनी चाही मगर हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस को पसन्द नहीं फ़रमाया। इस लिये ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के माल से आप ने इस की क़ीमत अदा फ़रमा दी।[1] (مدارج النبوۃ، ج۲،ص۶۸)

इस ज़मीन में चन्द दरख़्त, कुछ खन्डरात और कुछ मुशरिकों की क़ब्रें थीं। आप ने दरख़्तों के काटने और मुशरिकीन की क़ब्रों को खोद कर फेंक देने का हुक्म दिया। फिर ज़मीन को हमवार कर के ख़ुद आप ने अपने दस्ते मुबारक से मस्जिद की बुन्याद डाली और कच्ची ईंटों की दीवार और खजूर के सुतूनों पर खजूर की पत्तियों से छत बनाई जो बारिश में टपकती थी। इस मस्जिद की ता'मीर में सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُم के साथ ख़ुद हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم भी ईंटें उठा उठा कर लाते थे और सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُم को जोश दिलाने के लिये उन के साथ आवाज़ मिला कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रज्ज़ का येह शे'र पढ़ते थे कि

اَللّٰهُمَّ لَا خَيْرَ اِلَّا خَيْرُ الْاٰخِرَة   فَاغْفِرِ الْاَنْصَارَ وَ الْمُهَاجِرَة[2]

(بخاری ج۱ص۶۱)

---

1 ......مدارج النبوت ،قسم سوم،باب اول،ج۲،ص٦٧،٦٨

2 ......صحيح البخاری ، كتاب الصلوة ، باب هل تنبش قبور مشركی الجاهلية...الخ، الحديث: ٤٢٨،ج١، ص١٦٥

ऐ अल्लाह ! भलाई तो सिर्फ़ आख़िरत ही की भलाई है। लिहाज़ा ऐ अल्लाह ! तू अन्सार व मुहाजिरीन को बख़्श दे। इसी मस्जिद का नाम "मस्जिदे नबवी" है। येह मस्जिद हर क़िस्म के दुन्यवी तकल्लुफ़ात से पाक और इस्लाम की सादगी की सच्ची और सहीह़ तस्वीर थी, इस मस्जिद की इमारते अव्वल तूल व अ़र्ज़ में साठ गज़ लम्बी और चव्वन गज़ चौड़ी थी और इस का क़िब्ला बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ बनाया गया था मगर जब क़िब्ला बदल कर का'बे की त़रफ़ हो गया तो मस्जिद के शिमाली जानिब एक नया दरवाज़ा क़ाइम किया गया। इस के बा'द मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मस्जिदे नबवी की तजदीद व तौसीअ़ होती रही।

मस्जिद के एक कनारे पर एक चबूतरा था जिस पर खजूर की पत्तियों से छत बना दी गई थी। इसी चबूतरे का नाम "सुफ़्फ़ा" है जो सह़ाबा घरबार नहीं रखते थे वोह इसी चबूतरे पर सोते बैठते थे और येही लोग "अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा" कहलाते हैं।[1]

(مدارج النبوۃ،ج۲،ص۶۹ و بخاری)

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के मकानात

मस्जिदे नबवी के मुत्तसिल ही आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के लिये हुजरे भी बनवाए। उस वक़्त तक ह़ज़रते बीबी सौदह और ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا निकाह़ में थीं इस लिये दो ही मकान बनवाए। जब दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात आती गईं तो दूसरे मकानात बनते गए। येह मकानात भी बहुत ही सादगी के साथ बनाए गए थे। दस दस हाथ लम्बे छे छे, सात सात हाथ चौड़े कच्ची ईंटों की दीवारें, खजूर की पत्तियों की छत वोह भी इतनी नीची कि आदमी खड़ा हो कर छत को छू लेता,

---

1 ......مدارج النبوت ،قسم سوم ، باب اول، ج۲،ص۶۸ ملخصاً والمواھب اللدنیۃ والزرقانی،ذکر بناء المسجد النبوی...الخ،ج۲،ص۱۸۶

दरवाज़ों में किवाड़ भी न थे कम्बल या टाट के पर्दे पड़े रहते थे।[1]
(طبقات ابن سعد وغیرہ)

اَللّٰهُ اَكْبَر ! येह है शहनशाहे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह काशानए नुबुव्वत जिस की आस्ताना बोसी और दरबानी जिब्रील के लिये सरमायए सआ़दत और बाइसे इफ़्तिख़ार थी।

अल्लाह अल्लाह ! वोह शहनशाहे कौनैन जिस को ख़ालिक़े काएनात ने अपना मेहमान बना कर अ़र्शे आ'ज़म पर मस्नद नशीन बनाया और जिस के सर पर अपनी मह़बूबियत का ताज पहना कर ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियां जिस के हाथों में अ़ता फ़रमा दीं और जिस को काएनाते आ़लम में क़िस्म क़िस्म के तसर्रुफ़ात का मुख़्तार बना दिया, जिस की ज़बान का हर फ़रमान कुन की कुन्जी, जिस की निगाहे करम के एक इशारे ने उन लोगों को जिन के हाथों में ऊंटों की मुहार रहती थी उन्हें अक़्वामे आ़लम की क़िस्मत की लगाम अ़त़ा फ़रमा दी। اَللّٰهُ اَكْبَر ! वोह ताजदारे रिसालत जो सुल्त़ाने दारैन और शहनशाहे कौनैन है उस की ह़रम सरा का येह आ़लम ! ऐ सूरज ! बोल, ऐ चांद ! बता, तुम दोनों ने इस ज़मीन के बे शुमार चक्कर लगाए हैं मगर क्या तुम्हारी आंखों ने ऐसी सादगी का कोई मन्ज़र कभी भी और कहीं भी देखा है ?

मुहाजिरीन के घर

मुहाजिरीन जो अपना सब कुछ मक्का में छोड़ कर मदीना चले गए थे, उन लोगों की सुकूनत के लिये भी **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मस्जिदे नबवी के क़ुर्बो जवार ही में इनतिज़ाम फ़रमाया। अन्सार ने बहुत बड़ी क़ुरबानी दी कि निहायत फ़राख़ दिली के साथ अपने मुहाजिर भाइयों के लिये अपने मकानात और ज़मीनें दीं और मकानों की ता'मीरात में हर क़िस्म की इमदाद बहम पहुंचाई जिस से मुहाजिरीन की आबादकारी में बड़ी सुहूलत हो गई।

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب،ذکر بناء المسجد النبوی...الخ،ج۲،ص۱۸۵

सब से पहले जिस अन्सारी ने अपना मकान हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को बतौरे हिबा के नज़्र किया उस ख़ुश नसीब का नामे नामी ह़ज़रते ह़ारिसा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ है, चुनान्चे अज़्वाजे मुत़ह्हरात के मकानात ह़ज़रते ह़ारिसा बिन नो'मान ही की ज़मीन में बनाए गए।[1] (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की रुख़्सती

ह़ज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم से निकाह़ तो हिजरत से क़ब्ल ही मक्का में हो चुका था मगर इन की रुख़्सती हिजरत के पहले ही साल मदीने में हुई। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक प्याला दूध से लोगों की दा'वते वलीमा फ़रमाई।[2]

(مدارج النبوۃ، ج۲،ص۷۰)

अज़ान की इब्तिदा

मस्जिदे नबवी की ता'मीर तो मुकम्मल हो गई मगर लोगों को नमाज़ों के वक़्त जम्अ़ करने का कोई ज़रीआ़ नहीं था जिस से नमाज़े बा जमाअ़त का इनतिज़ाम होता, इस सिल्सिले में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मश्वरा फ़रमाया, बा'ज़ ने नमाज़ों के वक़्त आग जलाने का मश्वरा दिया, बा'ज़ ने नाक़ूस बजाने की राय दी मगर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ग़ैर मुस्लिमों के इन त़रीक़ों को पसन्द नहीं फ़रमाया। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह तज्वीज़ पेश की, कि हर नमाज़ के वक़्त किसी आदमी को भेज दिया जाए जो पूरी मुस्लिम आबादी में नमाज़ का ए'लान कर दे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस राय को पसन्द फ़रमाया

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،ذکربناء المسجدالنبوی...الخ، ج۲، ص۱۸۵ ملخصاً

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم ، با ب اول، ج۲،ص۶۹-۷۰ملخصاً

और हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म फ़रमाया कि वोह नमाज़ों के वक़्त लोगों को पुकार दिया करें। चुनान्चे वोह "اَلصَّلٰوۃُ جَامِعَۃٌ" कह कर पांचों नमाज़ों के वक़्त ए'लान करते थे, इसी दरमियान में एक सहाबी हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़्वाब में देखा कि अज़ाने शरई के अल्फ़ाज़ कोई सुना रहा है। इस के बा'द **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और दूसरे सहाबा को भी इसी क़िस्म के ख़्वाब नज़र आए। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस को मिन जानिबिल्लाह समझ कर क़बूल फ़रमाया और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया कि तुम बिलाल को अज़ान के कलिमात सिखा दो क्यूं कि वोह तुम से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ हैं। चुनान्चे उसी दिन से शरई अज़ान का त़रीक़ा जो आज तक जारी है और क़ियामत तक जारी रहेगा शुरूअ़ हो गया।[1] (زرقانی، ج۲،ص۳۷۶وبخاری)

अन्सार व मुहाजिर भाई-भाई

हज़राते मुहाजिरीन चूंकि इनतिहाई बे सरो सामानी की हालत में बिल्कुल ख़ाली हाथ अपने अहलो अ़याल को छोड़ कर मदीना आए थे इस लिये परदेस में मुफ़्लिसी के साथ वह्शत व बेगानगी और अपने अहलो अ़याल की जुदाई का सदमा मह्सूस करते थे। इस में शक नहीं कि अन्सार ने इन मुहाजिरीन की मेहमान नवाज़ी और दिलजूई में कोई कसर नहीं उठा रखी लेकिन मुहाजिरीन देर तक दूसरों के सहारे ज़िन्दगी बसर करना पसन्द नहीं करते थे क्यूं कि वोह लोग हमेशा से अपने दस्त व बाज़ू की कमाई खाने के ख़ूगर थे। इस लिये ज़रूरत थी कि मुहाजिरीन की परेशानी को दूर करने और इन के लिये मुस्तक़िल ज़रीअ़ए मआ़श मुहय्या करने के

---

1 ......المواھب اللدنیۃ والزرقانی،باب بدء الاذان ، ج۲،ص۱۹۴۔۱۹۷ ملخصاً

लिये कोई इनतिज़ाम किया जाए। इस लिये हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़याल फ़रमाया कि अन्सार व मुहाजिरीन में रिश्तए उख़ुव्वत (भाईचारा) क़ाइम कर के इन को भाई भाई बना दिया जाए ताकि मुहाजिरीन के दिलों से अपनी तन्हाई और बे कसी का एह़सास दूर हो जाए और एक दूसरे के मददगार बन जाने से मुहाजिरीन के ज़रीअ़ए मआ़श का मस्अला भी ह़ल हो जाए। चुनान्चे मस्जिदे नबवी की ता'मीर के बा'द एक दिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मकान में अन्सार व मुहाजिरीन को जम्अ़ फ़रमाया इस वक़्त तक मुहाजिरीन की ता'दाद पेंतालीस या पचास थी। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अन्सार को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया कि येह मुहाजिरीन तुम्हारे भाई हैं फिर मुहाजिरीन व अन्सार में से दो दो शख़्स को बुला कर फ़रमाते गए कि येह और तुम भाईभाई हो। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के इरशाद फ़रमाते ही येह रिश्तए उख़ुव्वत बिल्कुल ह़क़ीक़ी भाई जैसा रिश्ता बन गया। चुनान्चे अन्सार ने मुहाजिरीन को साथ ले जा कर अपने घर की एक एक चीज़ सामने ला कर रख दी और कह दिया कि आप हमारे भाई हैं इस लिये इन सब सामानों में आधा आप का और आधा हमारा है। ह़द हो गई कि ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ अन्सारी, जो ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ मुहाजिर के भाई क़रार पाए थे इन की दो बीवियां थीं, ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से कहा कि मेरी एक बीवी जिसे आप पसन्द करें मैं उस को त़लाक़ दे दूं और आप उस से निकाह़ कर लें।

اَللّٰهُ اَكْبَر ! इस में शक नहीं कि अन्सार का येह ईसार एक ऐसा बे मिसाल शाहकार है कि अक़्वामे आ़लम की तारीख़ में इस की मिसाल मुश्किल से ही मिलेगी मगर मुहाजिरीन ने क्या तर्ज़े अ़मल इख़्तियार किया येह भी एक क़ाबिले तक़्लीद तारीख़ी कारनामा है। ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की

इस मुख़्लिसाना पेशकश को सुन कर ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने शुक्रिया के साथ येह कहा कि **अल्लाह** तआ़ला येह सब माल व मताअ़ और अहलो अ़याल आप को मुबारक फ़रमाए मुझे तो आप सिर्फ़ बाज़ार का रास्ता बता दीजिये। उन्हों ने मदीने के मश्हूर बाज़ार "क़ैनुक़ाअ़" का रास्ता बता दिया। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बाज़ार गए और कुछ घी, कुछ पनीर ख़रीद कर शाम तक बेचते रहे। इसी त़रह़ रोज़ाना वोह बाज़ार जाते रहे और थोड़े ही अ़र्से में वोह काफ़ी मालदार हो गए और उन के पास इतना सरमाया जम्अ़ हो गया कि उन्हों ने शादी कर के अपना घर बसा लिया। जब येह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो **ह़ुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम ने बीवी को कितना महर दिया ? अ़र्ज़ किया कि पांच दिरहम बराबर सोना। इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें बरकतें अ़त़ा फ़रमाए तुम दा'वते वलीमा करो अगर्चे एक बकरी ही हो।[1]

(بخاری، باب الولیمۃ ولو بشاۃ، ص ۷۷۷، ج ۲)

और रफ़्ता रफ़्ता ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तिजारत में इतनी ख़ैरो बरकत और तरक़्क़ी हुई कि ख़ुद इन का क़ौल है कि "मैं मिट्टी को छू देता हूं तो सोना बन जाती है" मन्क़ूल है कि इन का सामाने तिजारत सात सो ऊंटों पर लद कर आता था और जिस दिन मदीने में इन का तिजारती सामान पहुंचता था तो तमाम शहर में धूम मच जाती थी।[2] (اسد الغابہ، ج ۳، ص ۳۱۴)

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रह़ दूसरे मुहाजिरीन ने भी दुकानें खोल लीं। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कपड़े की तिजारत करते थे। ह़ज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب مناقب الانصار، باب اخاء النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، الحدیث:۳۷۸۱، ج۲،ص ۵۵۵

2 ......اسد الغابۃ ، عبدالرحمن بن عوف رضی اللّٰہ عنہ ، ج۳،ص۴۹۸ مختصراً

"क़ैनुक़ाअ़" के बाज़ार में खजूरों की तिजारत करने लगे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी तिजारत में मश्ग़ूल हो गए थे। दूसरे मुहाजिरीन ने भी छोटी बड़ी तिजारत शुरूअ़ कर दी। ग़रज़ बा वुजूदे कि मुहाजिरीन के लिये अन्सार का घर मुस्तक़िल मेहमान ख़ाना था मगर मुहाजिरीन ज़ियादा दिनों तक अन्सार पर बोझ नहीं बने बल्कि अपनी मेह़नत और बे पनाह कोशिशों से बहुत जल्द अपने पाउं पर खड़े हो गए।

मश्हूर मुअर्रिख़े इस्लाम ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बर्र رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि येह अ़क़्दे मुआख़ात (भाईचारे का मुआ़हदा) तो अन्सार व मुहाजिरीन के दरमियान हुवा, इस के इलावा एक ख़ास "अ़क़्दे मुआख़ात" मुहाजिरीन के दरमियान भी हुवा जिस में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने एक मुहाजिर को दूसरे मुहाजिर का भाई बना दिया। चुनान्चे ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और ह़ज़रते त़ल्ह़ा व ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और ह़ज़रते उ़समान व ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के दरमियान जब भाईचारा हो गया तो ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दरबारे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! आप ने अपने सह़ाबा को एक दूसरे का भाई बना दिया लेकिन मुझे आप ने किसी का भाई नहीं बनाया। आख़िर मेरा भाई कौन है ? तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि اَنْتَ اَخِیْ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃ या'नी तुम दुन्या और आख़िरत में मेरे भाई हो।[1]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۷۱)

यहूदियों से मुआ़हदा

मदीने में अन्सार के इलावा बहुत से यहूदी भी आबाद थे। उन यहूदियों के तीन क़बीले बनू क़ैनुक़ाअ़, बनू नज़ीर, क़ुरीज़ा मदीने के अत़राफ़ में आबाद थे और निहायत मज़्बूत़ मह़ल्लात और

1 ......مدارج النبوت ،قسم سوم ، با ب اول، ج۲،ص ۷۱

मुस्तह्कम क़लए बना कर रहते थे। हिजरत से पहले यहूदियों और अन्सार में हमेशा इख़्तिलाफ़ रहता था और वोह इख़्तिलाफ़ अब भी मौजूद था और अन्सार के दोनों क़बीले औस व ख़ज़रज बहुत कमज़ोर हो चुके थे। क्यूं कि मश्हूर लड़ाई "जंगे बआ़स" में इन दोनों क़बीलों के बड़े बड़े सरदार और नामवर बहादुर आपस में लड़ लड़ कर क़त्ल हो चुके थे और यहूदी हमेशा इस क़िस्म की तदबीरों और शरारतों में लगे रहते थे कि अन्सार के येह दोनों क़बाइल हमेशा टकराते रहें और कभी भी मुत्तहि़द न होने पाएं। इन वुजूहात की बिना पर **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने यहूदियों और मुसलमानों के आयन्दा तअ़ल्लुक़ात के बारे में एक मुआ़हदे की ज़रूरत मह़सूस फ़रमाई ताकि दोनों फ़रीक़ अम्नो सुकून के साथ रहें और आपस में कोई तसादुम और टकराव न होने पाए। चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अन्सार और यहूद को बुला कर मुआ़हदे की एक दस्तावेज़ लिखवाई जिस पर दोनों फ़रीक़ों के दस्तख़त़ हो गए।

इस मुआ़हदे की दफ़्आ़त का ख़ुलासा ह़स्बे ज़ैल है :

《1》 ख़ूनबहा (जान के बदले जो माल दिया जाता है) और फ़िदया (क़ैदी को छुड़ाने के बदले जो रक़म दी जाती है) का जो त़रीक़ा पहले से चला आता था अब भी वोह क़ाइम रहेगा।

《2》 यहूदियों को मज़्हबी आज़ादी ह़ासिल रहेगी इन के मज़्हबी रुसूम में कोई दख़्ल अन्दाज़ी नहीं की जाएगी।

《3》 यहूदी और मुसलमान बाहम दोस्ताना बरताव रखेंगे।

《4》 यहूदी या मुसलमानों को किसी से लड़ाई पेश आएगी तो एक फ़रीक़ दूसरे की मदद करेगा।

《5》 अगर मदीने पर कोई ह़म्ला होगा तो दोनों फ़रीक़ मिल कर ह़म्ला आवर का मुक़ाबला करेंगे।

﴾6﴿ कोई फ़रीक़ कुरैश और इन के मददगारों को पनाह नहीं देगा।

﴾7﴿ किसी दुश्मन से अगर एक फ़रीक़ सुल्ह करेगा तो दूसरा फ़रीक़ भी इस मुसालहत में शामिल होगा लेकिन मज़्हबी लड़ाई इस से मुस्तसना रहेगी।[1] (سیرتِ ابن ہشام ج۴ص ۵۰۱تا۵۰۲)

मदीने के लिये दुआ

चूंकि मदीने की आबो हवा अच्छी न थी यहां त़रह़ त़रह़ की वबाएं और बीमारियां फैलती रहती थीं इस लिये कसरत से मुहाजिरीन बीमार होने लगे। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ शदीद लरज़ा बुख़ार में मुब्तला हो कर बीमार हो गए और बुख़ार की शिद्दत में येह ह़ज़रात अपने वत़न मक्का को याद कर के कुफ़्फ़ारे मक्का पर ला'नत भेजते थे और मक्का की पहाड़ियों और घासों के फ़िराक़ में अश्आर पढ़ते थे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस मौक़अ़ पर येह दुआ फ़रमाई कि या अल्लाह ! हमारे दिलों में मदीने की ऐसी ही मह़ब्बत डाल दे जैसी मक्का की मह़ब्बत है बल्कि इस से भी ज़ियादा और मदीने की आबो हवा को सिह़ह़त बख़्श बना दे और मदीने के साअ़ और मुद (नाप तोल के बरतनों) में ख़ैरो बरकत अ़त़ा फ़रमा और मदीने के बुख़ार को "जुह़फ़ा" की त़रफ़ मुन्तक़िल फ़रमा दे।[2] (مدارج جلد۲ص۷۰وبخاری)

ह़ज़रते सलमान फ़ारसी मुसलमान हो गए

सि. 1 हि. के वाक़िआत में ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम लाने का वाक़िआ भी बहुत अहम है। येह फ़ारस के रहने वाले थे। इन के आबाओ अजदाद बल्कि इन

---

1 ......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام،ھجرۃ الرسول صلی اللّٰہ علیہ وسلم،ص ۲۰۱،۲۰۲

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم ، باب اول، ج۲،ص ۷۰

के मुल्क की पूरी आबादी मजूसी (आतश परस्त) थी। येह अपने आबाई दीन से बेज़ार हो कर दीने हक़ की तलाश में अपने वत़न से निकले मगर डाकूओं ने इन को गरिफ़्तार कर के अपना गुलाम बना लिया फिर इन को बेच डाला। चुनान्चे येह कई बार बिकते रहे और मुख़्तलिफ़ लोगों की गुलामी में रहे। इसी त़रह़ येह मदीना पहुंचे, कुछ दिनों तक ईसाई बन कर रहे और यहूदियों से भी मेलजोल रखते रहे। इस त़रह़ इन को तौरैत व इन्जील की काफ़ी मा'लूमात ह़ासिल हो चुकी थीं।[1] येह **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो पहले दिन ताज़ा खजूरों का एक त़बाक़ ख़िदमते अक़्दस में येह कह कर पेश किया कि येह "सदक़ा" है। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस को हमारे सामने से उठा कर फ़ुक़रा व मसाकीन को दे दो क्यूं कि मैं सदक़ा नहीं खाता। फिर दूसरे दिन खजूरों का ख़्वान ले कर पहुंचे और येह कह कर कि येह "हदिय्या" है सामने रख दिया तो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सह़ाबा को हाथ बढ़ाने का इशारा फ़रमाया और ख़ुद भी खा लिया। इस दरमियान में ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दोनों शानों के दरमियान जो नज़र डाली तो "मोहरे नुबुव्वत" को देख लिया चूंकि येह तौरात व इन्जील में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान की निशानियां पढ़ चुके थे इस लिये फ़ौरन ही इस्लाम क़बूल कर लिया।[2] (مدارج جلد۲ص۷۱وغیرہ)

नमाज़ों की रक्अ़त में इज़ाफ़ा

अब तक फ़र्ज़ नमाज़ों में सिर्फ़ दो ही रक्अ़तें थीं मगर हिजरत के साले अव्वल ही में जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीना तशरीफ़ लाए तो ज़ोहर व अ़स्र व इशा में चार चार रक्अ़तें फ़र्ज़ हो गईं लेकिन सफ़र की ह़ालत में अब भी वोही दो रक्अ़तें क़ाइम रहीं इसी को सफ़र की ह़ालत में नमाज़ों में "क़स्र" कहते हैं।[3] (مدارج جلد۲ص۷۱)

---

1 ......الطبقات الكبرى لابن سعد،سلمان الفارسی ، ج٤،ص٥٦-٥٩ ملخصاً
2 ......مدارج النبوت ،قسم سوم ، با ب اول، ج۲،ص۷۰-۷۱
3 ......مدارج النبوت ،قسم سوم ، با ب اول، ج۲،ص۷۱

तीन जां निसारों की वफ़ात

इस साल ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم में से तीन निहायत ही शानदार और जां निसार ह़ज़रात ने वफ़ात पाई जो दर ह़क़ीक़त इस्लाम के सच्चे जां निसार और बहुत ही बड़े मुईन व मददगार थे।

अव्वल : ह़ज़रते कुलसूम बिन हदम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ येह वोह ख़ुश नसीब मदीना के रहने वाले अन्सारी हैं कि **ह़ुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब हिजरत फ़रमा कर "क़ुबा" में तशरीफ़ लाए तो सब से पहले इन्ही के मकान को शरफ़े नुज़ूल बख़्शा और बड़े बड़े मुहाजिरीन सह़ाबा भी इन्ही के मकान में ठहरे थे और इन्हों ने दोनों आ़लम के मेज़बान को अपने घर में मेहमान बना कर ऐसी मेज़बानी और मेहमान नवाज़ी की, कि क़ियामत तक तारीख़े रिसालत के सफ़ह़ात पर इन का नामे नामी सितारों की त़रह़ चमकता रहेगा।

दुवुम : ह़ज़रते बरा बिन मा'रूर अन्सारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ येह वोह शख़्स हैं कि "बैअ़ते अ़क़बए सानिया" में सब से पहले **ह़ुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त की और येह अपने क़बीले "ख़ज़रज" के नक़ीबों में थे।

सिवुम : ह़ज़रते अस्अ़द बिन ज़ुरारह अन्सारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ येह बैअ़ते अ़क़बए ऊला और बैअ़ते अ़क़बए सानिया की दोनों बैअ़तों में शामिल रहे और येह पहले वोह शख़्स हैं जिन्हों ने मदीने में इस्लाम का डंका बजाया और हर घर में इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा।

जब मज़्कूरा बाला तीनों मुअ़ज़्ज़ज़ीन सह़ाबा ने वफ़ात पाई तो मुनाफ़िक़ीन और यहूदियों ने इस की ख़ुशी मनाई और **ह़ुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को त़ा'ना देना शुरूअ़ किया कि अगर येह पैग़म्बर होते तो **अल्लाह** तआ़ला इन को येह सदमात क्यूं पहुंचाता ? ख़ुदा की शान कि ठीक उसी

ज़माने में कुफ़्फ़ार के दो बहुत ही बड़े बड़े सरदार भी मर कर मुर्दार हो गए। एक "आ़स बिन वाइल सहमी" जो ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़ातेह़े मिस्र का बाप था। दूसरा "वलीद बिन मुग़ीरा" जो ह़ज़रते ख़ालिद सैफ़ुल्लाह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बाप था।(1)

रिवायत है कि "वलीद बिन मुग़ीरा" जां कनी के वक़्त बहुत ज़ियादा बेचैन हो कर तड़पने और बे क़रार हो कर रोने लगा और फ़रयाद करने लगा तो अबू जह्ल ने पूछा कि चचाजान ! आख़िर आप की बे क़रारी और इस गिर्या व ज़ारी की क्या वजह है ? तो "वलीद बिन मुग़ीरा" बोला कि मेरे भतीजे ! मैं इस लिये इतनी बे क़रारी से रो रहा हूं कि मुझे अब येह डर है कि मेरे बा'द मक्का में मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) का दीन फैल जाएगा। येह सुन कर अबू सुफ़्यान ने तसल्ली दी और कहा कि चचा ! आप हरगिज़ हरगिज़ इस का ग़म न करें मैं ज़ामिन होता हूं कि मैं दीने इस्लाम को मक्का में नहीं फैलने दूंगा।(2) चुनान्चे अबू सुफ़्यान अपने इस अ़ह्द पर इस त़रह़ क़ाइम रहे कि मक्का फ़त्ह़ होने तक वोह बराबर इस्लाम के ख़िलाफ़ जंग करते रहे मगर फ़त्ह़े मक्का के दिन अबू सुफ़्यान ने इस्लाम क़बूल कर लिया और फिर ऐसे सादिक़ुल इस्लाम बन गए कि इस्लाम की नुस्रत व ह़िमायत के लिये ज़िन्दगी भर जिहाद करते रहे और इन्ही जिहादों में कुफ़्फ़ार के तीरों से इन की आंखें ज़ख़्मी हो गईं और रौशनी जाती रही। येही वोह ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं जिन के सपूत बेटे ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं। (مدارج النبوۃ ج۲ص۷۳وغیرہ)

इसी साल सि. 1 हि. में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत हुई। हिजरत के बा'द मुहाजिरीन के यहां सब से पहला बच्चा जो पैदा हुवा वोह येही ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं। इन की वालिदा ह़ज़रते बीबी अस्मा जो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

---

1 ......مدارج النبوت ،قسم سوم ، با ب اول، ج۲،ص۷۳ملخصاً

2 ......مدارج النبوت ،قسم سوم ، با ب اول، ج۲،ص۷۳

की साहि़बज़ादी हैं पैदा होते ही इन को ले कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुईं। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन को अपनी गोद में बिठा कर और खजूर चबा कर इन के मुंह में डाल दी। इस त़रह़ सब से पहली गि़ज़ा जो इन के शिकम में पहुंची वोह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का लुआ़बे दहन था। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की पैदाइश से मुसलमानों को बेह़द ख़ुशी हुई इस लिये कि मदीना के यहूदी कहा करते थे कि हम लोगों ने मुहाजिरीन पर ऐसा जादू कर दिया है कि इन लोगों के यहां कोई बच्चा पैदा ही नहीं होगा।[1] (زرقانی ج۱ص۴۶۰واکمال)

सातवां बाब

हिजरत का दूसरा साल

सि. 2 हि.

सि. 1 हि. की त़रह़ सि. 2 हि. में भी बहुत से अहम वाक़िआ़त वुक़ूअ़ पज़ीर हुए जिन में से चन्द बड़े बड़े वाक़िआ़त येह हैं :

क़िब्ले की तब्दीली

जब तक हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्का में रहे ख़ानए का'बा की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ते रहे मगर हिजरत के बा'द जब आप मदीना तशरीफ़ लाए तो ख़ुदा वन्दे तआ़ला का येह हुक्म हुवा कि आप अपनी नमाज़ों में "बैतुल मुक़द्दस" को अपना क़िब्ला बनाएं। चुनान्चे आप सोलह या सत्तरह महीने तक बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ते रहे मगर आप के दिल की तमन्ना येही थी कि का'बा ही को क़िब्ला बनाया जाए। चुनान्चे आप अकसर आस्मान की त़रफ़ चेहरा

---

1 ......اکمال فی اسماء الرجال لصاحب المشکوٰۃ، حرف العین، ص۶۰٤والسیرۃ الحلبیۃ، باب ھجرۃ الی المدینۃ، ج۲،ص۱۱۰

उठा उठा कर इस वह्‌ये इलाही का इनतिज़ार फ़रमाते रहे यहां तक कि एक दिन **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की क़ल्बी आरज़ू पूरी फ़रमाने के लिये क़ुरआन की येह आयत नाज़िल फ़रमा दी कि

قَدْ نَرٰی تَقَلُّبَ وَجْھِکَ فِی السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّیَنَّکَ قِبْلَةً تَرْضٰھَا ۪ فَوَلِّ وَجْھَکَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ[1] (بقرہ)

हम देख रहे हैं बार बार आप का आस्मान की त़रफ़ मुंह करना तो हम ज़रूर आप को फैर देंगे उस क़िब्ले की त़रफ़ जिस में आप की ख़ुशी है तो अभी आप फैर दीजिये अपना चेहरा मस्जिदे ह़राम की त़रफ़

चुनान्चे **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم क़बीलए बनी सलमह की मस्जिद में नमाज़े ज़ोहर पढ़ा रहे थे कि ह़ालते नमाज़ ही में येह वह्‌य नाज़िल हुई और नमाज़ ही में आप ने बैतुल मुक़द्दस से मुड़ कर ख़ानए का'बा की त़रफ़ अपना चेहरा कर लिया और तमाम मुक़्तदियों ने भी आप की पैरवी की । इस मस्जिद को जहां येह वाक़िआ़ पेश आया "मस्जिदुल क़िब्लतैन" कहते हैं और आज भी येह तारीख़ी मस्जिद ज़ियारत गाहे ख़वास व अ़वाम है जो शहरे मदीना से तक़रीबन दो कीलो मीटर दूर जानिबे शिमाल मग़रिब वाक़ेअ़ है ।

इस क़िब्ला बदलने को "तह़वीले क़िब्ला" कहते हैं । तह़वीले क़िब्ला से यहूदियों को बड़ी सख़्त तक्लीफ़ पहुंची जब तक **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ते रहे तो यहूदी बहुत ख़ुश थे और फ़ख़्र के साथ कहा करते थे कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) भी हमारे ही क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ कर के इबादत करते हैं मगर जब क़िब्ला बदल गया तो यहूदी इस क़दर बरहम और नाराज़ हो गए कि वोह येह त़ा'ना देने लगे कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

1 ......پ۲،البقرة:۱٤٤

चूंकि हर बात में हम लोगों की मुख़ालफ़त करते हैं इस लिये इन्हों ने मह्ज़ हमारी मुख़ालफ़त में क़िब्ला बदल दिया है। इसी त़रह़ मुनाफ़िक़ीन का गुरौह भी त़रह़ त़रह़ की नुक्ता चीनी और क़िस्म क़िस्म के ए'तिराज़ात करने लगा तो इन दोनों गुरौहों की ज़बान बन्दी और दहन दोज़ी के लिये ख़ुदा वन्दे करीम ने येह आयतें नाज़िल फ़रमाईं :

سَیَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِیْ كَانُوْا عَلَیْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ یَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ (1) وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِیْ كُنْتَ عَلَیْهَاۤ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ یَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ یَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَیْهِ ؕ وَ اِنْ كَانَتْ لَكَبِیْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِیْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ (2)(بقرہ)

अब कहेंगे बे वुक़ूफ़ लोगों में से किस ने फैर दिया मुसलमानों को इन को उस क़िब्ले से जिस पर वोह थे आप कह दीजिये कि पूरब पच्छिम सब ***अल्लाह*** *ही का है वोह जिसे चाहे सीधी राह चलाता है और (ऐ मह़बूब) आप पहले जिस क़िब्ला पर थे हम ने वोह इसी लिये मुक़र्रर किया था कि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पाउं फिर जाता है और बिला शुबा येह बड़ी भारी बात थी मगर जिन को* ***अल्लाह*** *तआला ने हिदायत दे दी है (उन के लिये कोई बड़ी बात नहीं)*

पहली आयत में यहूदियों के ए'तिराज़ का जवाब दिया गया कि ख़ुदा की इबादत में क़िब्ले की कोई ख़ास जिहत ज़रूरी नहीं है। उस की इबादत के लिये पूरब, पच्छिम, उत्तर, दख्खिन, सब जिहतें बराबर हैं **अल्लाह** तआला जिस जिहत को चाहे अपने बन्दों के लिये क़िब्ला मुक़र्रर फ़रमा दे लिहाज़ा इस पर किसी को ए'तिराज़ का कोई ह़क़ नहीं है। दूसरी आयत में मुनाफ़िक़ीन की ज़बान बन्दी की गई है जो तह़वीले क़िब्ला के बा'द हर त़रफ़ येह प्रोपेगन्डा

1 ......پ ۲، البقرۃ: ۱۴۲　　2 ......پ ۲، البقرۃ: ۱۴۳

करने लगे थे कि पैग़म्बरे इस्लाम तो अपने दीन के बारे में खुद ही मुतरद्दिद हैं कभी बैतुल मुक़द्दस को क़िब्ला मानते हैं कभी कहते हैं कि का'बा क़िब्ला है। आयत में तह्वीले क़िब्ला की हिक्मत बता दी गई कि मुनाफ़िक़ीन जो महूज़ नुमाइशी मुसलमान बन कर नमाज़ें पढ़ा करते थे वोह क़िब्ला के बदलते ही बदल गए और इस्लाम से मुन्हरिफ़ हो गए। इस तरह ज़ाहिर हो गया कि कौन सादिक़ुल इस्लाम है और कौन मुनाफ़िक़ और कौन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की पैरवी करने वाला है और कौन दीन से फिर जाने वाला।[1] (आम कुतुबे तफ़्सीर व सीरत)

लड़ाइयों का सिलसिला

अब तक **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को खुदा की तरफ़ से सिर्फ़ येह हुक्म था कि दलाइल और मौइज़ए हसना के ज़रीए लोगों को इस्लाम की दा'वत देते रहें और मुसलमानों को कुफ़्फ़ार की ईज़ाओं पर सब्र का हुक्म था इसी लिये काफ़िरों ने मुसलमानों पर बड़े बड़े ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े, मगर मुसलमानों ने इनतिक़ाम के लिये कभी हथयार नहीं उठाया बल्कि हमेशा सब्रो तहम्मुल के साथ कुफ़्फ़ार की ईज़ाओं और तक्लीफ़ों को बरदाश्त करते रहे लेकिन हिजरत के बा'द जब सारा अ़रब और यहूदी इन मुठ्ठी भर मुसलमानों के जानी दुश्मन हो गए और इन मुसलमानों को फ़ना के घाट उतार देने का अ़ज़्म कर लिया तो खुदा वन्दे क़ुद्दूस ने मुसलमानों को येह इजाज़त दी कि जो लोग तुम से जंग की इब्तिदा करें उन से तुम भी लड़ सकते हो।

चुनान्चे 12 सफ़र सि. 2 हि. तवारीखे इस्लाम में वोह यादगार दिन है जिस में खुदा वन्दे किरदगार ने मुसलमानों को कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में तलवार उठाने की इजाज़त दी और येह आयत नाज़िल फ़रमाई कि

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،تحويل القبلة...الخ،ج۲،ص۲٤٦،۲٤۹، ۲٥٠

ومدارج النبوت ، قسم سوم، باب دوم، ج۲،ص۷۳ملخصاً

اُذِنَ لِلَّذِیْنَ یُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْاؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِیْرُۙ (1)

जिन से लड़ाई की जाती है (मुसलमान) उन को भी अब लड़ने की इजाज़त दी जाती है क्यूं कि वोह (मुसलमान) मज़्लूम हैं और ख़ुदा इन की मदद पर यक़ीनन क़ादिर है

हज़रते इमाम मुहम्मद बिन शिहाब ज़ोहरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة का क़ौल है कि जिहाद की इजाज़त के बारे में येही वोह आयत है जो सब से पहले नाज़िल हुई।[2] मगर तफ़्सीरे इब्ने जरीर में है कि जिहाद के बारे में सब से पहले जो आयत उतरी वोह येह है :

وَقَاتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَكُمْ (3)(بقره)

ख़ुदा की राह में उन लोगों से लड़ो जो तुम लोगों से लड़ते हैं।

बहर हाल सि. 2 हि. में मुसलमानों को ख़ुदा वन्दे तआला ने कुफ़्फ़ार से लड़ने की इजाज़त दे दी मगर इब्तिदा में येह इजाज़त मशरूत थी या'नी सिर्फ़ उन्हीं काफ़िरों से जंग करने की इजाज़त थी जो मुसलमानों पर हम्ला करें। मुसलमानों को अभी तक इस की इजाज़त नहीं मिली थी कि वोह जंग में अपनी त़रफ़ से पहल करें लेकिन ह़क़ वाज़ेह़ हो जाने और बात़िल ज़ाहिर हो जाने के बा'द चूंकि तब्लीग़े ह़क़ और अह़कामे इलाही की नश्रो इशाअ़त **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर फ़र्ज़ थी इस लिये तमाम उन कुफ़्फ़ार से जो इनाद के त़ौर पर ह़क़ को क़बूल करने से इन्कार करते थे जिहाद का हुक्म नाज़िल हो गया ख़्वाह वोह मुसलमानों से लड़ने में पहल करें या न करें क्यूं कि ह़क़ के ज़ाहिर हो जाने के बा'द ह़क़ को क़बूल करने के लिये मजबूर करना और बात़िल को जबरन तर्क

---

1 ......پ۱۷،الحج:۳۹

2 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، کتاب المغازی،ج۲،ص۲۱۸

3 ......تفسیر الطبری لابن جریر،پ۲،البقرة تحت الآیة:۱۹۰،ج۲،ص۱۹۵وشرح الزرقانی علی المواھب، کتاب المغازی ،ج۲،ص۲۱۸

कराना येह ऐन हिक्मत और बनी नौअ़ इन्सान की सलाह़ व फ़लाह़ के लिये इनतिहाई ज़रूरी था। बहर ह़ाल इस में कोई शक नहीं कि हिजरत के बा'द जितनी लड़ाइयां भी हुईं अगर पूरे माह़ोल को गहरी निगाह से बग़ौर देखा जाए तो येही ज़ाहिर होता है कि येह सब लड़ाइयां कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से मुसलमानों के सर पर मुसल्लत़ की गईं और ग़रीब मुसलमान ब दरजए मजबूरी तलवार उठाने पर मजबूर हुए। मसलन मुन्दरिजए ज़ैल चन्द वाक़िआ़त पर ज़रा तन्क़ीदी निगाह से नज़र डालिये।

《1》 **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब अपना सब कुछ मक्का में छोड़ कर इनतिहाई बे कसी के आ़लम में मदीना चले आए थे। चाहिये तो येह था कि कुफ़्फ़ारे मक्का अब इत़मीनान से बैठे रहते कि उन के दुश्मन या'नी रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और मुसलमान उन के शहर से निकल गए मगर हुवा येह कि इन काफ़िरों के ग़ैज़ो ग़ज़ब का पारा इतना चढ़ गया कि अब येह लोग अहले मदीना के भी दुश्मने जान बन गए। चुनान्चे हिजरत के चन्द रोज़ बा'द कुफ़्फ़ारे मक्का ने रईसे अन्सार "अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य" के पास धम्कियों से भरा हुवा एक ख़त़ भेजा। "अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य" वोह शख़्स है कि वाक़िअ़ए हिजरत से पहले तमाम मदीना वालों ने इस को अपना बादशाह मान कर इस की ताजपोशी की तय्यारी कर ली थी मगर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मदीना तशरीफ़ लाने के बा'द येह स्कीम ख़त्म हो गई। चुनान्चे इसी ग़म व ग़ुस्से में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य उ़म्र भर मुनाफ़िक़ों का सरदार बन कर इस्लाम की बैख़ कनी करता रहा और इस्लाम व मुसलमानों के ख़िलाफ़ त़रह़ त़रह़ की साज़िशों में मसरूफ़ रहा।[1] (بخاری باب التسلیم فی مجلس فیہ اخلاط ج۲ ص۹۲۴)

बहर कैफ़ कुफ़्फ़ारे मक्का ने इस दुश्मने इस्लाम के नाम जो ख़त़ लिखा उस का मज़मून येह है कि तुम ने हमारे आदमी

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام ، نبذمن ذكر المنافقين،ص ٢٤٠ وسنن ابی داود ، كتاب الخراج والفیء...الخ، باب فی خبر النفير،الحديث:٣٠٠٤،ج٣،ص ٢١٢

(मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) को अपने यहां पनाह दे रखी है हम ख़ुदा की क़सम खा कर कहते हैं कि या तो तुम लोग उन को क़त्ल कर दो या मदीने से निकाल दो वरना हम सब लोग तुम पर ह़म्ला कर देंगे और तुम्हारे तमाम लड़नेवाले जवानों को क़त्ल कर के तुम्हारी औ़रतों पर तसर्रुफ़ करेंगे ।[1] (ابوداؤدج۲ص۶۷باب فی خبرالنفیر)

जब **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ारे मक्का के इस तहदीद आमेज़ और ख़ौफ़नाक ख़त़ की ख़बर मा'लूम हुई तो आप ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य से मुलाक़ात फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि "क्या तुम अपने भाइयों और बेटों को क़त्ल करोगे ।" चूंकि अकसर अन्सार दामने इस्लाम में आ चुके थे इस लिये अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य ने इस नुक्ते को समझ लिया और कुफ़्फ़ारे मक्का के हुक्म पर अ़मल नहीं कर सका ।

﴾2﴿ ठीक उसी ज़माने में ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो क़बीलए औस के सरदार थे उ़मरह अदा करने के लिये मदीने से मक्का गए और पुराने तअ़ल्लुक़ात की बिना पर "उमय्या बिन ख़लफ़" के मकान पर क़ियाम किया । जब उमय्या ठीक दोपहर के वक़्त उन को साथ ले कर त़वाफ़े का'बा के लिये गया तो इत्तिफ़ाक़ से अबू जह्ल सामने आ गया और डांट कर कहा कि ऐ उमय्या ! येह तुम्हारे साथ कौन है ? उमय्या ने कहा कि येह मदीना के रहने वाले "सा'द बिन मुआ़ज़" हैं । येह सुन कर अबू जह्ल ने तड़प कर कहा कि तुम लोगों ने बे धर्मों (मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और सह़ाबा) को अपने यहां पनाह दी है । ख़ुदा की क़सम ! अगर तुम उमय्या के साथ में न होते तो बच कर वापस नहीं जा सकते थे । ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने भी इनतिहाई जुरअत और दिलेरी के साथ येह जवाब दिया कि अगर तुम लोगों ने हम को का'बे की ज़ियारत

---

1 ......سنن ابی داود ، کتاب الخراج والفیء...الخ،باب فی خبر النفیر، الحدیث: ٣٠٠٤، ج٣،ص٢١٢

से रोका तो हम तुम्हारी शाम की तिजारत का रास्ता रोक देंगे ।[1]

(بخاری کتاب المغازی ج۲ص۵۶۳)

﴾3﴿ कुफ़्फ़ारे मक्का ने सिर्फ़ इन्ही धम्कियों पर बस नहीं किया बल्कि वोह मदीने पर ह़म्ले की तय्यारियां करने लगे और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और मुसलमानों के क़त्ले आ़म का मन्सूबा बनाने लगे । चुनान्चे **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم रातों को जाग जाग कर बसर करते थे और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُم आप का पहरा दिया करते थे । कुफ़्फ़ारे मक्का ने सारे अ़रब पर अपने असरो रुसूख़ की वजह से तमाम क़बाइल में येह आग भड़का दी थी कि मदीने पर ह़म्ला कर के मुसलमानों को दुन्या से नेस्तो नाबूद करना ज़रूरी है ।

मज़्कूरा बाला तीनों वुजूहात की मौजूदगी में हर आ़क़िल को येह कहना ही पड़ेगा कि इन ह़ालात में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ह़िफ़ाज़ते ख़ुद इख़्तियारी के लिये कुछ न कुछ तदबीर करनी ज़रूरी ही थी ताकि अन्सार व मुहाजिरीन और ख़ुद अपनी ज़िन्दगी की बक़ा और सलामती का सामान हो जाए ।

चुनान्चे कुफ़्फ़ारे मक्का के ख़त़रनाक इरादों का इ़ल्म हो जाने के बा'द **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपनी और सह़ाबा की ह़िफ़ाज़ते ख़ुद इख़्तियारी के लिये दो तदबीरों पर अ़मल दरआमद का फ़ैसला फ़रमाया ।

अव्वल : येह कि कुफ़्फ़ारे मक्का की शामी तिजारत जिस पर इन की ज़िन्दगी का दारो मदार है इस में रुकावट डाल दी जाए ताकि वोह मदीने पर ह़म्ले का ख़याल छोड़ दें और सुल्ह़ पर मजबूर हो जाएं ।

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب المغازی، باب ذکر النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم من یقتل ببدر،الحدیث:۳۹۵۰، ج۳،ص۳

दुवुम : येह कि मदीने के अत़राफ़ में जो क़बाइल आबाद हैं उन से अम्नो अमान का मुआ़हदा हो जाए ताकि कुफ़्फ़ारे मक्का मदीने पर ह़म्ले की निय्यत न कर सकें। चुनान्चे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन्ही दो तदबीरों के पेशे नज़र सह़ाबए किराम के छोटे छोटे लश्करों को मदीने के अत़राफ़ में भेजना शुरूअ़ कर दिया और बा'ज़ बा'ज़ लश्करों के साथ ख़ुद भी तशरीफ़ ले गए। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के येह छोटे छोटे लश्कर कभी कुफ़्फ़ारे मक्का की नक़्लो ह़रकत का पता लगाने के लिये जाते थे और कहीं बा'ज़ क़बाइल से मुआ़हदए अम्नो अमान करने के लिये रवाना होते थे। कहीं इस मक़्सद से भी जाते थे कि कुफ़्फ़ारे मक्का की शामी तिजारत का रास्ता बन्द हो जाए। इसी सिल्सिले में कुफ़्फ़ारे मक्का और उन के ह़लीफ़ों से मुसलमानों का टकराव शुरूअ़ हुवा और छोटी बड़ी लड़ाइयों का सिल्सिला शुरूअ़ हो गया। इन्ही लड़ाइयों को तारीख़े इस्लाम में "**ग़ज़वात व सराया**" के उ़न्वान से बयान किया गया है।

ग़ज़्वा व सरिय्या का फ़र्क़

यहां मुसन्निफ़ीने सीरत की येह इस्तिलाह़ याद रखनी ज़रूरी है कि वोह जंगी लश्कर जिस के साथ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم भी तशरीफ़ ले गए उस को "ग़ज़्वा" कहते हैं और वोह लश्करों की टोलियां जिन में हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام शामिल नहीं हुए उन को "सरिय्या" कहते हैं।[1]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۷۶وغیرہ)

"ग़ज़्वात" या'नी जिन जिन लश्करों में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم शरीक हुए उन की ता'दाद में मुअर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है। "मवाहिबे लदुन्निय्या" में है कि "ग़ज़्वात" की ता'दाद "सत्ताईस" है और रौज़तुल अह़बाब में येह लिखा है कि "ग़ज़्वात की ता'दाद" एक क़ौल की बिना

1 ......مدارج النبوت ،قسم سوم ، با ب دوم، ج۲،ص۷۶وشرح الزرقانی علی المواھب، کتاب المغازی، ج۲، ص۲۱۹،۲۲۰

पर "इक्कीस" और बा'ज़ के नज़्दीक "चौबीस" है और बा'ज़ ने कहा कि "पच्चीस" और बा'ज़ ने लिखा "छब्बीस" है।[1]

(زرقانی علی المواہب ج ا ص ۳۸۸)

मगर ह़ज़रते इमाम बुख़ारी ने ह़ज़रते ज़ैद बिन अरक़म सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जो रिवायत तह़रीर की है इस में ग़ज़्वात की कुल ता'दाद "उन्नीस" बताई गई है[2] और इन में से जिन नव ग़ज़्वात में जंग भी हुई वोह येह हैं :

﴾1﴿ जंगे बद्र ﴾2﴿ जंगे उहुद ﴾3﴿ जंगे अह़ज़ाब ﴾4﴿ जंगे बनू क़ुरैज़ा ﴾5﴿ जंगे बनू अल मुस्त़लिक़ ﴾6﴿ जंगे ख़ैबर ﴾7﴿ फ़त्हे मक्का ﴾8﴿ जंगे ह़ुनैन ﴾9﴿ जंगे त़ाइफ़[3]

"सराया" या'नी जिन लश्करों के साथ **ह़ुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तशरीफ़ नहीं ले गए उन की ता'दाद बा'ज़ मुअर्रिख़ीन के नज़्दीक "सेंतालीस" और बा'ज़ के नज़्दीक "छप्पन" है।

इमाम बुख़ारी ने मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ से रिवायत किया है कि सब से पहला ग़ज़्वा "अब्वा" और सब से आख़िरी ग़ज़्वा "तबूक" है और सब से पहला "सरिय्या" जो मदीने से जंग के लिये रवाना हुवा वोह "सरिय्यए ह़म्ज़ा" है जिस का ज़िक्र आगे आता है।[4]

ग़ज़्वात व सराया

हिजरत के बा'द का तक़रीबन कुल ज़माना "ग़ज़्वात व सराया" के एहतिमाम व इनतिज़ाम में गुज़रा इस लिये कि अगर "ग़ज़्वात" की कम से कम ता'दाद जो रिवायात में आई हैं। या'नी "उन्नीस" और "सराया" की कम से कम ता'दाद जो रिवायतों में है या'नी "सेंतालीस" शुमार कर ली

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب، کتاب المغازی، ج۲، ص۲۲۰

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة العشیرة...الخ، الحدیث:۳۹۴۹، ج۳، ص۳

3 ......شرح الزرقانی علی المواهب، کتاب المغازی، ج۲، ص۲۲۱

4 ......شرح الزرقانی علی المواهب، کتاب المغازی، ج۲، ص۲۲۱،۲۲۹، ۲۲۴ ملتقطاً

जाए तो नव साल में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को छोटी बड़ी ''छियासठ'' लड़ाइयों का सामना करना पड़ा लिहाज़ा ''ग़ज़वात व सराया'' का उ़न्वान हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सीरते मुक़द्दसा का बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान हि़स्सा है और بحمدہ تعالیٰ इन तमाम ग़ज़वात व सराया और इन के वुजूह व अस्बाब का पूरा पूरा ह़ाल इस्लामी तारीख़ों में मज़्कूर व मह़्फ़ूज़ है, मगर येह इतना लम्बा चौड़ा मज़्मून है कि हमारी इस किताब का तंग दामन उन तमाम मज़ामीन को समेटने से बिल्कुल ही क़ासिर है लेकिन बड़ी मुश्किल येह है कि अगर हम बिल्कुल ही इन मज़ामीन को छोड़ दें तो यक़ीनन ''सीरते रसूल'' का मज़्मून बिल्कुल ही नाक़िस और ना मुकम्मल रह जाएगा इस लिये मुख़्तसर त़ौर पर चन्द मश्हूर ग़ज़वात व सराया का यहां ज़िक्र कर देना निहायत ज़रूरी है ताकि सीरते मुक़द्दसा का येह अहम बाब भी नाज़िरीन के लिये नज़र अफ़रोज़ हो जाए।

सरिय्यए ह़म्ज़ा

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने, हिजरत के बा'द जब जिहाद की आयत नाज़िल हो गई तो सब से पहले जो एक छोटा सा लश्कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले के लिये रवाना फ़रमाया उस का नाम ''सरिय्यए ह़म्ज़ा'' है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने चचा ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को एक सफ़ेद झन्डा अ़त़ा फ़रमाया और उस झन्डे के नीचे सिर्फ़ 30 मुहाजिरीन को एक लश्करे कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले के लिये भेजा जो तीन सो की ता'दाद में थे और अबू जहल उन का सिपह सालार था। ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ''सैफ़ुल बह़्र'' तक पहुंचे और दोनों त़रफ़ से जंग के लिये सफ़ बन्दी भी हो गई लेकिन एक शख़्स मज्दी बिन अ़म्र जुहनी ने जो दोनों फ़रीक़ का ह़लीफ़ था बीच में पड़ कर लड़ाई मौक़ूफ़ करा दी।[1] (مدارج جلد۲ص۷۸وزُرقانی ج۱ص۳۹۰)

[1]......المواهب اللدنية والزرقانى، بعث حمزة، ج٢،ص٢٢٤ ومدارج النبوت، قسم سوم، باب دوم، ج ٢، ص٧٨

सरिय्यए उ़बैदा बिन अल ह़ारिस

इसी साल साठ या अस्सी मुहाजिरीन के साथ हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़बैदा बिन अल ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सफे़द झन्डे के साथ अमीर बना कर "राबिग़" की त़रफ़ रवाना फ़रमाया। इस सरिय्ये के अ़लम बरदार ह़ज़रते मुस्त़ह़ बिन असासा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे। जब येह लश्कर "सनिय्यए मुर्रह" के मक़ाम पर पहुंचा तो अबू सुफ़्यान और अबू जहल के लड़के इकरिमा की कमान में दो सो कुफ़्फ़ारे कुरैश जम्अ़ थे दोनों लश्करों का सामना हुवा। ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुफ़्फ़ार पर तीर फेंका येह सब से पहला तीर था जो मुसलमानों की त़रफ़ से कुफ़्फ़ारे मक्का पर चलाया गया। ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुल आठ तीर फेंके और हर तीर निशाने पर ठीक बैठा। कुफ़्फ़ार इन तीरों की मार से घबरा कर फ़िरार हो गए इस लिये कोई जंग नहीं हुई।[1]

(مدارج جلد۲ص۷۸وزرقانی ج۱ص۳۹۲)

सरिय्यए सा'द बिन अबी वक़्क़ास

इसी साल माह ज़ुल क़ा'दह में ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बीस सुवारों के साथ हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस मक़्सद से भेजा ताकि येह लोग कुफ़्फ़ारे कुरैश के एक लश्कर का रास्ता रोकें, इस सरिय्ये का झन्डा भी सफे़द रंग का था और ह़ज़रते मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस लश्कर के अ़लम बरदार थे। येह लश्कर रातों रात सफ़र करते हुए जब पांचवें दिन मक़ामे "ख़िरार" पर पहुंचा तो पता चला कि मक्का के कुफ़्फ़ार एक दिन पहले ही फ़िरार हो चुके हैं इस लिये किसी तसादुम की नौबत ही नहीं आई।[2] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۳۹۲)

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب دوم، ج۲، ص۷۸ والمواهب اللدنية والزرقاني، سرية عبيدة المطلبي، ج۲،ص۲۲٦،۲۲۷

2 ......المواهب اللدنية والزرقاني،سرية سعد بن مالك رضی الله تعالى عنه،ج۲،ص۲۲۸،۲۲۹

ग़ज़्वए अबवा

इस ग़ज़्वे को "ग़ज़्वए वदान" भी कहते हैं। येह सब से पहला ग़ज़्वा है या'नी पहली मरतबा **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जिहाद के इरादे से माहे सफ़र सि. 2 हि. में साठ मुहाजिरीन को अपने साथ ले कर मदीने से बाहर निकले। हज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ को मदीने में अपना ख़लीफ़ा बनाया और हज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ को झन्डा दिया और मक़ामे "अबवा" तक कुफ़्फ़ार का पीछा करते हुए तशरीफ़ ले गए मगर कुफ़्फ़ारे मक्का फ़िरार हो चुके थे इस लिये कोई जंग नहीं हुई। "अबवा" मदीने से अस्सी मील दूर एक गाऊं है जहां **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा हज़रते आमिना का मज़ार है। यहां चन्द दिन ठहर कर क़बीलए बनू ज़मरा के सरदार "मख़्शी बिन अ़म्र ज़मरी" से इमदादे बाहमी का एक तहरीरी मुआ़हदा किया और मदीना वापस तशरीफ़ लाए इस ग़ज़्वे में पन्दरह दिन आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीना से बाहर रहे।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۳۹۳)

ग़ज़्वए बवात़

हिजरत के तेरहवें महीने सि. 2 हि. में मदीने पर हज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ाकिम बना कर दो सो मुहाजिरीन को साथ ले कर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जिहाद की निय्यत से रवाना हुए। इस ग़ज़्वे का झन्डा भी सफ़ेद था और अ़लम बरदार हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ थे। इस ग़ज़्वे का मक़्सद कुफ़्फ़ारे मक्का के एक तिजारती क़ाफ़िले का रास्ता रोकना था। इस क़ाफ़िले का सालार "उमय्या बिन ख़लफ़ जमह़ी" था और इस क़ाफ़िले में एक सो कुरैशी कुफ़्फ़ार और ढाई हज़ार ऊंट थे। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم इस क़ाफ़िले की तलाश में मक़ामे "बवात़" तक तशरीफ़

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،اول المغازی،ج۲،ص۲۲۹، ۲۳۰ والسیرة الحلبیة، باب ذکر مغازیه،ج۲ ، ص۱۷۳، ۱۷٤ ملتقطاً

ले गए मगर कुफ़्फ़ारे कुरैश का कहीं सामना नहीं हुवा इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم बिग़ैर किसी जंग के मदीना वापस तशरीफ़ लाए।[1] (زرقانی علی المواہب ج۱ص۳۹۳)

ग़ज़्वए सफ़्वान

इसी साल "करज़ बिन जा'फ़र फ़हरी" ने मदीने की चरागाह में डाका डाला और कुछ ऊंटों को हांक कर ले गया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हज़रते ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ को मदीने में अपना ख़लीफ़ा बना कर और हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ को अ़लम बरदार बना कर सहाबा की एक जमाअ़त के साथ वादिये सफ़्वान तक उस डाकू का तआ़कुब किया मगर वोह इस क़दर तेज़ी के साथ भागा कि हाथ नहीं आया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीना वापस तशरीफ़ लाए। वादिये सफ़्वान "बद्र" के क़रीब है इसी लिये बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने इस ग़ज़्वे का नाम "ग़ज़्वए बद्रे ऊला" रखा है। इस लिये येह याद रखना चाहिये कि ग़ज़्वए सफ़्वान और ग़ज़्वए बदरे ऊला दोनों एक ही ग़ज़्वे के दो नाम हैं।[2] (مدارج جلد۲ص۷۹)

ग़ज़्वए ज़िल उ़शैरह

इसी सि. 2 हि. में कुफ़्फ़ारे कुरैश का एक क़ाफ़िला माले तिजारत ले कर मक्का से शाम जा रहा था। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم डेढ़ सो या दो सो मुहाजिरीन सहाबा को साथ ले कर उस क़ाफ़िले का रास्ता रोकने के लिये मक़ामे "ज़िल उ़शैरह" तक तशरीफ़ ले गए जो "यमबूअ़" की बन्दर गाह के क़रीब है मगर यहां पहुंच कर मा'लूम हुवा कि क़ाफ़िला बहुत आगे बढ़ गया है। इस लिये कोई टकराव नहीं हुवा मगर येही क़ाफ़िला जब शाम से वापस लौटा और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم उस की मुज़ाहमत के लिये निकले तो जंगे बद्र का मा'रिका पेश आ गया जिस का मुफ़स्सल ज़िक्र आगे आता है।[3] (زرقانی ج۱ص۳۹۵)

---

1 ......المواهب اللدنية والزرقاني ، غزوة بواط، ج۲،ص ۲۳۱،۲۳۲

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم، باب دوم ، ج۲،ص۷۹

3 ......المواهب اللدنية و الزرقاني، غزوة العشيرة، ج۲، ص ۲۳۲۔۲۳۴

सरिय्यए अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श

इसी साल माहे रजब सि. 2 हि. में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अमीरे लश्कर बना कर उन की मा तह़ती में आठ या बारह मुहाजिरीन का एक जथ रवाना फ़रमाया, दो दो आदमी एक एक ऊंट पर सुवार थे । **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को लिफ़ाफ़े में एक मोहर बन्द ख़त़ दिया और फ़रमाया कि दो दिन सफ़र करने के बा'द इस लिफ़ाफ़े को खोल कर पढ़ना और इस में जो हिदायात लिखी हुई हैं उन पर अ़मल करना । जब ख़त़ खोल कर पढ़ा तो उस में येह दर्ज था कि तुम त़ाइफ़ और मक्का के दरमियान मक़ामे "नख़्ला" में ठहर कर क़ुरैश के क़ाफ़िलों पर नज़र रखो और सूरते ह़ाल की हमें बराबर ख़बर देते रहो । येह बड़ा ही ख़त़रनाक काम था क्यूं कि दुश्मनों के ऐन मर्कज़ में क़ियाम कर के जासूसी करना गोया मौत के मुंह में जाना था मगर येह सब जां निसार बे धड़क मक़ामे "नख़्ला" पहुंच गए । अ़जीब इत्तिफ़ाक़ कि रजब की आख़िरी तारीख़ को येह लोग नख़्ला में पहुंचे और इसी दिन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का एक तिजारती क़ाफ़िला आया जिस में अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी और अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़ीरा के दो लड़के उ़समान व नौफ़िल और ह़कम बिन कैसान वग़ैरा थे और ऊंटों पर खजूर और दूसरा माले तिजारत लदा हुवा था ।

अमीरे सरिय्या ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने साथियों से फ़रमाया कि अगर हम इन क़ाफ़िले वालों को छोड़ दें तो येह लोग मक्का पहुंच कर हम लोगों की यहां मौजूदगी से मक्का वालों को बा ख़बर कर देंगे और हम लोगों को क़त्ल या गरिफ़्तार करा देंगे और अगर हम इन लोगों से जंग करें तो आज रजब की आख़िरी तारीख़ है लिहाज़ा शहरे ह़राम में जंग करने का गुनाह हम पर लाज़िम होगा । आख़िर येही राय क़रार पाई कि इन लोगों से जंग कर के अपनी जान के ख़त़रे को दफ़्अ़ करना चाहिये । चुनान्चे ह़ज़रते वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह तमीमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक

ऐसा ताक कर तीर मारा कि वोह अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी को लगा और वोह उसी तीर से क़त्ल हो गया और उ़समान व ह़कम को इन लोगों ने गरिफ़्तार कर लिया, नौफ़िल भाग निकला। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ऊंटों और उन पर लदे हुए माल व अस्बाब को माले ग़नीमत बना कर मदीना लौट आए और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में इस माले ग़नीमत का पांचवां हिस्सा पेश किया।(1)

(زُرقانی علی المواہب ج۱ص۳۹۸)

जो लोग क़त्ल या गरिफ़्तार हुए वोह बहुत ही मुअ़ज़्ज़ज़ ख़ानदान के लोग थे। अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी जो क़त्ल हुवा अ़ब्दुल्लाह ह़ज़्रमी का बेटा था। अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी पहला काफ़िर था जो मुसलमानों के हाथ से मारा गया। जो लोग गरिफ़्तार हुए या'नी उ़समान और ह़कम, इन में से उ़समान तो मुग़ीरा का पोता था जो क़ुरैश का एक बहुत बड़ा रईस शुमार किया जाता था और ह़कम बिन कैसान हिशाम बिन अल मुग़ीरा का आज़ाद कर्दा ग़ुलाम था। इस बिना पर इस वाक़िए ने तमाम कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को ग़ैज़ो ग़ज़ब में आग बगूला बना दिया और "ख़ून का बदला ख़ून" लेने का ना'रा मक्का के हर कूचा व बाज़ार में गूंजने लगा और दर ह़क़ीक़त जंगे बद्र का मा'रिका इसी वाक़िए का रद्दे अ़मल है। चुनान्चे ह़ज़रते उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि जंगे बद्र और तमाम लड़ाइयां जो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से हुईं उन सब का बुन्यादी सबब अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी का क़त्ल है जिस को ह़ज़रते वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह तमीमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तीर मार कर क़त्ल कर दिया था।(2) (تاریخ طبری ص۱۲۸۴)

जंगे बद्र

"बद्र" मदीनए मुनव्वरह से तक़रीबन अस्सी मील के फ़ासिले पर एक गाऊं का नाम है जहां ज़मानए जाहिलिय्यत में

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، سرية امير المؤمنين عبدالله بن جحش، ج۲، ص۲۳۸

2 ......تاريخ الطبرى، الجزء۲، ص۱۳۱ المكتبة الشاملة

सालाना मेला लगता था। यहां एक कूंआं भी था जिस के मालिक का नाम "बद्र" था उसी के नाम पर इस जगह का नाम "बद्र" रख दिया गया। इसी मक़ाम पर जंगे बद्र का वोह अ़ज़ीम मा'रिका हुवा जिस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश और मुसलमानों के दरमियान सख़्त ख़ूंरेज़ी हुई और मुसलमानों को वोह अ़ज़ीमुश्शान फ़त्हे मुबीन नसीब हुई जिस के बा'द इस्लाम की इ़ज़्ज़त व इक़्बाल का परचम इतना सर बुलन्द हो गया कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की अ़ज़्मतो शौकत बिल्कुल ही ख़ाक में मिल गई। **अल्लाह** तआ़ला ने जंगे बद्र के दिन का नाम "यौमुल फ़ुरक़ान" रखा।[1] क़ुरआन की सूरए अनफ़ाल में तफ़्सील के साथ और दूसरी सूरतों में इजमालन बार बार इस मा'रिके का ज़िक्र फ़रमाया और इस जंग में मुसलमानों की फ़त्हे मुबीन के बारे में एह़सान जताते हुए ख़ुदा वन्दे आ़लम ने क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○[2]

*और यक़ीनन ख़ुदा वन्दे तआ़ला ने तुम लोगों की मदद फ़रमाई बद्र में जब कि तुम लोग कमज़ोर और बे सरो सामान थे तो तुम लोग **अल्लाह** से डरते रहो ताकि तुम लोग शुक्र गुज़ार हो जाओ।*

जंगे बद्र का सबब

जंगे बद्र का अस्ली सबब तो जैसा कि हम तह़रीर कर चुके हैं "अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी" के क़त्ल से कुफ़्फ़ारे क़ुरैश में फैला हुवा ज़बर दस्त इश्तिआ़ल था जिस से हर काफ़िर की ज़बान पर येही एक ना'रा था कि "ख़ून का बदला ख़ून ले कर रहेंगे।"

---

1 ......المواهب اللدنية و الزرقاني، باب غزوة بدرالكبرى، ج٢،ص٢٥٥۔٢٥٦

2 ......پ٤،اٰل عمرٰن: ١٢٣

मगर बिल्कुल ना गहां येह सूरत पेश आ गई कि कुरैश का वोह क़ाफ़िला जिस की तलाश में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मक़ामे "ज़िल उ़शैरह" तक तशरीफ़ ले गए थे मगर वोह क़ाफ़िला हाथ नहीं आया था बिल्कुल अचानक मदीने में ख़बर मिली कि अब वोही क़ाफ़िला मुल्के शाम से लौट कर मक्का जाने वाला है और येह भी पता चल गया कि इस क़ाफ़िले में अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब व मख़रिमा बिन नौफ़िल व अ़म्र बिन अल आ़स वग़ैरा कुल तीस या चालीस आदमी हैं और कुफ़्फ़ारे कुरैश का माले तिजारत जो उस क़ाफ़िले में है वोह बहुत ज़ियादा है। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे कुरैश की टोलियां लूटमार की निय्यत से मदीने के अत़राफ़ में बराबर गश्त लगाती रहती हैं और "करज़ बिन जाबिर फ़हरी" मदीने की चरागाहों तक आ कर ग़ारत गरी और डाका ज़नी कर गया है लिहाज़ा क्यूं न हम भी कुफ़्फ़ारे कुरैश के इस क़ाफ़िले पर ह़म्ला कर के उस को लूट लें ताकि कुफ़्फ़ारे कुरैश की शामी तिजारत बन्द हो जाए और वोह मजबूर हो कर हम से सुल्ह़ कर लें। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का येह इरशादे गिरामी सुन कर अन्सार व मुहाजिरीन इस के लिये तय्यार हो गए।

मदीने से रवानगी

चुनान्चे 12 रमज़ान सि. 2 हि. को बड़ी उ़जलत के साथ लोग चल पड़े, जो जिस ह़ाल में था उसी ह़ाल में रवाना हो गया। इस लश्कर में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ न ज़ियादा हथयार थे न फ़ौजी राशन की कोई बड़ी मिक्दार थी क्यूं कि किसी को गुमान भी न था कि इस सफ़र में कोई बड़ी जंग होगी।

मगर जब मक्का में येह ख़बर फैली कि मुसलमान मुसल्लह़ हो कर कुरैश का क़ाफ़िला लूटने के लिये मदीने से चल पड़े हैं तो मक्का में एक जोश फैल गया और एक दम कुफ़्फ़ारे कुरैश की फ़ौज का दल बादल मुसलमानों पर ह़म्ला करने के लिये तय्यार हो गया। जब

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस की इत्तिलाअ़ मिली तो आप ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को जम्अ़ फ़रमा कर सूरते हाल से आगाह किया और साफ़ साफ़ फ़रमा दिया कि मुमकिन है कि इस सफ़र में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के क़ाफ़िले से मुलाक़ात हो जाए और येह भी हो सकता है कि कुफ़्फ़ारे मक्का के लश्कर से जंग की नौबत आ जाए। इरशादे गिरामी सुन कर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते उ़मर फ़ारूक़ और दूसरे मुहाजिरीन ने बड़े जोशो ख़रोश का इज़्हार किया मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अन्सार का मुंह देख रहे थे क्यूं कि अन्सार ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर बैअ़त करते वक़्त इस बात का अ़हद किया था कि वोह उस वक़्त तलवार उठाएंगे जब कुफ़्फ़ार मदीने पर चढ़ आएंगे और यहां मदीने से बाहर निकल कर जंग करने का मुआ़मला था।[1]

अन्सार में से क़बीलए ख़ज़रज के सरदार हज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर देख कर बोल उठे कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! क्या आप का इशारा हमारी त़रफ़ है ? ख़ुदा की क़सम ! हम वोह जां निसार हैं कि अगर आप का हुक्म हो तो हम समुन्दर में कूद पड़ें इसी त़रह अन्सार के एक और मुअ़ज़्ज़ज़ सरदार हज़रते मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जोश में आ कर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! हम हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम की त़रह येह न कहेंगे कि आप और आप का ख़ुदा जा कर लड़े बल्कि हम लोग आप के दाएं से, बाएं से, आगे से, पीछे से लड़ेंगे। अन्सार के इन दोनों सरदारों की तक़रीर सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का चेहरा ख़ुशी से चमक उठा।[2]

(بخاری غزوہ بدر ج۲ ص۵۶۴)

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم، باب دوم ، ج۲،ص ۸۱۔۸۳ملخصاً

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ٤، قول اللّٰه تعالٰی، الحدیث:۳۹۵۲، ج۳، ص ٥ مختصرًا و المواهب اللدنیة و الزرقانی، باب غزوة بدر الکبریٰ، ج۲، ص ۲٦٥ ۔ ۲٦۷

मदीने से एक मील दूर चल कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने लश्कर का जाएज़ा लिया, जो लोग कम उ़म्र थे उन को वापस कर देने का हुक्म दिया क्यूं कि जंग के पुर ख़त़र मौक़अ़ पर भला बच्चों का क्या काम ?

नन्हा सिपाही

मगर इन्ही बच्चों में ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के छोटे भाई ह़ज़रते उ़मैर बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी थे। जब उन से वापस होने को कहा गया तो वोह मचल गए और फूट फूट कर रोने लगे और किसी त़रह़ वापस होने पर तय्यार न हुए। उन की बे क़रारी और गिर्या व ज़ारी देख कर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का क़ल्बे नाज़ुक मुतअस्सिर हो गया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन को साथ चलने की इजाज़त दे दी। चुनान्चे ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस नन्हे सिपाही के गले में भी एक तलवार ह़माइल कर दी। मदीने से रवाना होने के वक़्त नमाज़ों के लिये ह़ज़रते इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को आप ने मस्जिदे नबवी का इमाम मुक़र्रर फ़रमा दिया था लेकिन जब आप मक़ामे "रौह़ा" में पहुंचे तो मुनाफ़िक़ीन और यहूदियों की त़रफ़ से कुछ ख़त़रा मह़सूस फ़रमाया इस लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मदीने का ह़ाकिम मुक़र्रर फ़रमा कर इन को मदीना वापस जाने का हुक्म दिया और ह़ज़रते आ़सिम बिन अ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मदीने के चढ़ाई वाले गाऊं पर निगरानी रखने का हुक्म सादिर फ़रमाया।

इन इनतिज़ामात के बा'द हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم "बद्र" की जानिब चल पड़े जिधर से कुफ़्फ़ारे मक्का के आने की ख़बर थी। अब कुल फ़ौज की ता'दाद तीन सो तेरह थी जिन में साठ मुहाजिर और बाक़ी अन्सार थे। मन्ज़िल ब मन्ज़िल सफ़र फ़रमाते हुए जब आप मक़ामे "सफ़रा" में पहुंचे तो दो आदमियों को जासूसी के लिये रवाना

फ़रमाया ताकि वोह क़ाफ़िले का पता चलाएं कि वोह किधर है ? और कहां तक पहुंचा है ?[1] (زُرقانی ج۱ص۴۱۱)

अबू सुफ्यान की चालाकी

उधर कुफ़्फ़ारे कुरैश के जासूस भी अपना काम बहुत मुस्तइदी से कर रहे थे। जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीने से रवाना हुए तो अबू सुफ़्यान को इस की ख़बर मिल गई। इस ने फ़ौरन ही "ज़मज़म बिन अम्र गिफ़ारी" को मक्का भेजा कि वोह कुरैश को इस की ख़बर दे ताकि वोह अपने क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त का इनतिज़ाम करें और खुद रास्ता बदल कर क़ाफ़िले को समुन्दर की जानिब ले कर रवाना हो गया। अबू सुफ़्यान का क़ासिद ज़मज़म बिन अम्र गिफ़ारी जब मक्का पहुंचा तो उस वक़्त के दस्तूर के मुताबिक़ कि जब कोई ख़ौफ़नाक ख़बर सुनानी होती तो ख़बर सुनाने वाला अपने कपड़े फाड़ कर और ऊंट की पीठ पर खड़ा हो कर चिल्ला चिल्ला कर ख़बर सुनाया करता था। ज़मज़म बिन अम्र गिफ़ारी ने अपना कुरता फाड़ डाला और ऊंट की पीठ पर खड़ा हो कर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा कि ऐ अहले मक्का ! तुम्हारा सारा माले तिजारत अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले में है और मुसलमानों ने इस क़ाफ़िले का रास्ता रोक कर क़ाफ़िले को लूट लेने का अ़ज़्म कर लिया है लिहाज़ा जल्दी करो और बहुत जल्द अपने इस क़ाफ़िले को बचाने के लिये हथयार ले कर दौड़ पड़ो।[2] (زُرقانی ج۱ص۴۱۱)

कुफ़्फ़ारे कुरैश का जोश

जब मक्का में येह ख़ौफ़नाक ख़बर पहुंची तो इस क़दर हलचल मच गई कि मक्का का सारा अम्नो सुकून ग़ारत हो गया, तमाम क़बाइले कुरैश अपने घरों से निकल पड़े, सरदाराने मक्का में से

1 ......كتـاب المغازی للواقدی،باب بدرالقتال،ج۱،ص۲۱وشرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃبدر الکبریٰ،ج۲،ص۲۶۳

2 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، باب غزوۃ بدرالکبریٰ، ج۲،ص۲۶۳ومدارج النبوت، قسم سوم، باب دوم ، ج۲،ص۸۲

सिर्फ़ अबू लहब अपनी बीमारी की वजह से नहीं निकला, इस के सिवा तमाम रूअसाए कुरैश पूरी त़रह़ मुसल्लह़ हो कर निकल पड़े और चूंकि मक़ामे नख़्ला का वाक़िआ़ बिल्कुल ही ताज़ा था जिस में अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी मुसलमानों के हाथ से मारा गया था और उस के क़ाफ़िले को मुसलमानों ने लूट लिया था इस लिये कुफ़्फ़ारे कुरैश जोशे इनतिक़ाम में आपे से बाहर हो रहे थे। एक हज़ार का लश्करे जर्रार जिस का हर सिपाही पूरी त़रह़ मुसल्लह़, दौहरे हथयार, फ़ौज की ख़ूराक का येह इनतिज़ाम था कि कुरैश के मालदार लोग या'नी अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब, उ़त्बा बिन रबीआ़, ह़ारिस बिन आ़मिर, नज़्र बिन अल ह़ारिस, अबू जह्ल, उमय्या वग़ैरा बारी बारी से रोज़ाना दस दस ऊंट ज़ब्ह़ करते थे और पूरे लश्कर को खिलाते थे उ़त्बा बिन रबीआ़ जो कुरैश का सब से बड़ा रईसे आ'ज़म था इस पूरे लश्कर का सिपह सालार था।

अबू सुफ़्यान बच कर निकल गया

अबू सुफ़्यान जब आ़म रास्ते से मुड़ कर साह़िले समुन्दर के रास्ते पर चल पड़ा और ख़त़रे के मक़ामात से बहुत दूर पहुंच गया और इस को अपनी ह़िफ़ाज़त का पूरा पूरा इत़मीनान हो गया तो इस ने कुरैश को एक तेज़ रफ़्तार क़ासिद के ज़रीए ख़त़ भेज दिया कि तुम लोग अपने माल और आदमियों को बचाने के लिये अपने घरों से हथयार ले कर निकल पड़े थे अब तुम लोग अपने अपने घरों को वापस लौट जाओ क्यूं कि हम लोग मुसलमानों की यलग़ार और लूटमार से बच गए हैं और जान व माल की सलामती के साथ हम मक्का पहुंच रहे हैं।[1]

कुफ़्फ़ार में इख़्तिलाफ़

अबू सुफ़्यान का येह ख़त़ कुफ़्फ़ारे मक्का को उस वक़्त मिला जब वोह मक़ामे "जुह़फ़ा" में थे। ख़त़ पढ़ कर क़बीलए बनू ज़हरा और क़बीलए बनू अ़दी के सरदारों ने कहा कि अब मुसलमानों से लड़ने की

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرىٰ،ص ٢٥٥

कोई ज़रूरत नहीं है लिहाज़ा हम लोगों को वापस लौट जाना चाहिये। येह सुन कर अबू जहल बिगड़ गया और कहने लगा कि हम ख़ुदा की क़सम ! इसी शान के साथ बद्र तक जाएंगे, वहां ऊंट ज़ब्ह करेंगे और ख़ूब खाएंगे, खिलाएंगे, शराब पियेंगे, नाचरंग की महफ़िलें जमाएंगे ताकि तमाम क़बाइले अ़रब पर हमारी अ़ज़्मत और शौकत का सिक्का बैठ जाए और वोह हमेशा हम से डरते रहें। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने अबू जह्ल की राय पर अ़मल किया लेकिन बनू ज़ुहरा और बनू अ़दी के दोनों क़बाइल वापस लौट गए। इन दोनों क़बीलों के सिवा बाक़ी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के तमाम क़बाइल जंगे बद्र में शामिल हुए।[1]

(سیرتِ ابن ہشام ج۲ ص۶۱۸ تا۶۱۹)

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बद्र में

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश चूंकि मुसलमानों से पहले बद्र में पहुंच गए थे इस लिये मुनासिब जगहों पर उन लोगों ने अपना क़ब्ज़ा जमा लिया था। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब बद्र के क़रीब पहुंचे तो शाम के वक़्त ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते ज़ुबैर, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को बद्र की त़रफ़ भेजा ताकि येह लोग कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के बारे में ख़बर लाएं। इन ह़ज़रात ने क़ुरैश के दो ग़ुलामों को पकड़ लिया जो लश्करे कुफ़्फ़ार के लिये पानी भरने पर मुक़र्रर थे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन दोनों ग़ुलामों से दरयाफ़्त फ़रमाया कि बताओ उस क़ुरैशी फ़ौज में क़ुरैश के सरदारों में से कौन कौन है ? तो दोनों ग़ुलामों ने बताया कि उ़त्बा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़, अबुल बुख़्तरी, ह़कीम बिन ह़िज़ाम, नौफ़िल बिन ख़ुवैलद, ह़ारिस बिन आ़मिर, नज़्र बिन अल ह़ारिस, ज़मआ़ बिन अल अस्वद, अबू जह्ल बिन हिशाम, उमय्या बिन ख़लफ़, सुहैल बिन अ़म्र, अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद, अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब वग़ैरा सब

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرى،ص٢٠٥، ٢٥٦

इस लश्कर में मौजूद हैं। येह फ़ेहरिस्त सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने अस्हाब की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया कि मुसलमानो ! सुन लो ! मक्का ने अपने जिगर के टुकड़ों को तुम्हारी त़रफ़ डाल दिया है।(1)

(مسلم ج۲ص۱۰۲غزوۂ بدروزُرقانی وغیرہ)

ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم बद्र के मैदान में

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब बद्र में नुज़ूल फ़रमाया तो ऐसी जगह पड़ाव डाला कि जहां न कोई कूंआं था न कोई चश्मा और वहां की ज़मीन इतनी रैतीली थी कि घोड़ों के पाउं ज़मीन में धंसते थे। येह देख कर ह़ज़रते हुबाब बिन मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! आप ने पड़ाव के लिये जिस जगह को मुन्तख़ब फ़रमाया है येह वह्य की रू से है या फ़ौजी तदबीर है ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस के बारे में कोई वह्य नहीं उतरी है। ह़ज़रते हुबाब बिन मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि फिर मेरी राय में जंगी तदाबीर की रू से बेहतर येह है कि हम कुछ आगे बढ़ कर पानी के चश्मों पर क़ब्ज़ा कर लें ताकि कुफ़्फ़ार जिन कूंओं पर क़ाबिज़ हैं वोह बेकार हो जाएं क्यूं कि इन्ही चश्मों से उन के कूंओं में पानी जाता है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की राय को पसन्द फ़रमाया और इसी पर अ़मल किया गया। ख़ुदा की शान कि बारिश भी हो गई जिस से मैदान की गर्द और रैत जम गई जिस पर मुसलमानों के लिये चलना फिरना आसान हो गया और कुफ़्फ़ार की ज़मीन पर कीचड़ हो गई जिस से उन को चलने फिरने में दुश्वारी हो गई और मुसलमानों ने बारिश का पानी रोक कर जा बजा हौज़ बना लिये ताकि येह पानी ग़ुस्ल और वुज़ू के काम आए। इसी एह़सान को ख़ुदा वन्दे आ़लम ने क़ुरआन में इस त़रह़ बयान फ़रमाया कि

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرى، ص ٢٥٤ ملتقطاً

وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ (2) (انفال)

और ख़ुदा ने आस्मान से पानी बरसा दिया ताकि वोह तुम लोगों को पाक करे ।

सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शब बेदारी

17 रमज़ान सि. 2 हि. जुमुआ़ की रात थी तमाम फ़ौज तो आराम व चैन की नींद सो रही थी मगर एक सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ात थी जो सारी रात ख़ुदा वन्दे आ़लम से लौ लगाए दुआ़ में मसरूफ़ थी । सुब्ह़ नुमूदार हुई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने लोगों को नमाज़ के लिये बेदार फ़रमाया फिर नमाज़ के बा'द कुरआन की आयाते जिहाद सुना कर ऐसा लरज़ा ख़ेज़ और वल्वला अंगेज़ वा'ज़ फ़रमाया कि मुजाहिदीने इस्लाम की रगों के ख़ून का क़त़रा क़त़रा जोशो ख़रोश का समुन्दर बन कर तूफ़ानी मौजें मारने लगा और लोग मैदाने जंग के लिये तय्यार होने लगे ।

कौन कब ? और कहां मरेगा ?

रात ही में चन्द जां निसारों के साथ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मैदाने जंग का मुआ़यना फ़रमाया, उस वक़्त दस्ते मुबारक में एक छड़ी थी । आप उसी छड़ी से ज़मीन पर लकीर बनाते थे और येह फ़रमाते जाते थे कि येह फ़ुलां काफ़िर के क़त्ल होने की जगह है और कल यहां फ़ुलां काफ़िर की लाश पड़ी हुई मिलेगी । चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जिस जगह जिस काफ़िर की क़त्ल गाह बताई थी उस काफ़िर की लाश ठीक उसी जगह पाई गई उन में से किसी एक ने लकीर से बाल बराबर भी तजावुज़ नहीं किया ।[2]

(ابوداؤد ج۲ ص۳۶۴ مطبع نامی و مسلم ج۲ ص۱۰۲ غزوۂ بدر)

---

1 ......پ۹،الانفال:۱۱ والسيرة النبوية لابن هشام،غزوة بدرالكبرىٰ،ص۲۵۶ وشرح الزرقانى على المواهب،غزوة بدر الكبرىٰ،ج ۲، ص ۲۷۱

2 ......صحيح مسلم،كتاب الجهادوالسير،باب غزوة بدر،الحديث:۱۷۷۸،ص۹۸۱ وشرح الزرقانى على المواهب،باب غزوة بدرالكبرىٰ، ج۲،ص۲۶۹

इस ह़दीस से साफ़ और सरीह़ त़ौर पर येह मस्अला साबित हो जाता है कि कौन कब ? और कहां मरेगा ? इन दोनों ग़ैब की बातों का इल्म **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अ़त़ा फ़रमाया था ।

लड़ाई टलते टलते फिर ठन गई

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश लड़ने के लिये बेताब थे मगर उन लोगों में कुछ सुलझे दिलो दिमाग़ के लोग भी थे जो ख़ूनरेज़ी को पसन्द नहीं करते थे । चुनान्चे ह़कीम बिन ह़िज़ाम जो बा'द में मुसलमान हो गए बहुत ही सन्जीदा और नर्म ख़ू थे । उन्हों ने अपने लश्कर के सिपह सालार उ़त्बा बिन रबीआ़ से कहा कि आख़िर इस ख़ूनरेज़ी से क्या फ़ाएदा ? मैं आप को एक निहायत ही मुख़्लिसाना मश्वरा देता हूं वोह येह है कि क़ुरैश का जो कुछ मुत़ालबा है वोह अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी का ख़ून है और वोह आप का ह़लीफ़ है आप उस का ख़ूनबहा अदा कर दीजिये, इस त़रह़ येह लड़ाई टल जाएगी और आज का दिन आप की तारीख़ी ज़िन्दगी में आप की नेक नामी की यादगार बन जाएगा कि आप के तदब्बुर से एक बहुत ही ख़ौफ़नाक और ख़ूनरेज़ लड़ाई टल गई । उ़त्बा बज़ाते ख़ुद बहुत ही मुदब्बिर और नेक नफ़्स आदमी था । इस ने बख़ुशी इस मुख़्लिसाना मश्वरे को क़बूल कर लिया मगर इस मुआ़मले में अबू जह्ल की मन्ज़ूरी भी ज़रूरी थी । चुनान्चे ह़कीम बिन ह़िज़ाम जब उ़त्बा बिन रबीआ़ का येह पैग़ाम ले कर अबू जह्ल के पास गए तो अबू जह्ल की रगे जहालत भड़क उठी और उस ने एक ख़ून खौला देने वाला त़ा'ना मारा और कहा कि हां हां ! मैं ख़ूब समझता हूं कि उ़त्बा की हिम्मत ने जवाब दे दिया चूंकि इस का बेटा ह़ुज़ैफ़ा मुसलमान हो कर इस्लामी लश्कर के साथ आया है इस लिये वोह जंग से जी चुराता है ताकि इस के बेटे पर आंच न आए ।

फिर अबू जहल ने इसी पर बस नहीं किया बल्कि अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी मक्तूल के भाई आ़मिर बिन अल ह़ज़्रमी को बुला कर कहा कि देखो तुम्हारे मक्तूल भाई अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी के ख़ून का बदला लेने की सारी स्कीम तहस नहस हुई जा रही है क्यूं कि हमारे लश्कर का सिपह सालार उ़त्बा बुज़दिली ज़ाहिर कर रहा है। येह सुनते ही आ़मिर बिन अल ह़ज़्रमी ने अ़रब के दस्तूर के मुताबिक़ अपने कपड़े फाड़ डाले और अपने सर पर धूल डालते हुए "वा उ़मराह वा उ़मराह" का ना'रा मारना शुरूअ़ कर दिया। इस कार रवाई ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तमाम फ़ौज में आग लगा दी और सारा लश्कर "ख़ून का बदला ख़ून" के ना'रों से गूंजने लगा और हर सिपाही जोश में आपे से बाहर हो कर जंग के लिये बेताब व बे क़रार हो गया। उ़त्बा ने जब अबू जहल का ता'ना सुना तो वोह भी ग़ुस्से में भर गया और कहा कि अबू जहल से कह दो कि मैदाने जंग बताएगा कि बुज़दिल कौन है? येह कह कर लोहे की टोपी त़लब की मगर उस का सर इतना बड़ा था कि कोई टोपी उस के सर पर ठीक नहीं बैठी तो मजबूरन उस ने अपने सर पर कपड़ा लपेटा और हथयार पहन कर जंग के लिये तय्यार हो गया।[1]

मुजाहिदीन की सफ़ आराई

17 रमज़ान सि. 2 हि. जुमुआ़ के दिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुजाहिदीने इस्लाम को सफ़ बन्दी का हुक्म दिया। दस्ते मुबारक में एक छड़ी थी उस के इशारे से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم सफ़ें दुरुस्त फ़रमा रहे थे कि कोई शख़्स आगे पीछे न रहने पाए और येह भी हुक्म फ़रमा दिया कि बजुज़ ज़िक्रे इलाही के कोई शख़्स किसी क़िस्म का कोई शोरो गुल न मचाए। ऐन ऐसे वक़्त में कि जंग का नक़्क़ारा बजने वाला ही है दो ऐसे वाक़िआ़त दरपेश हो गए जो निहायत ही इब्रत ख़ेज़ और बहुत ज़ियादा नसीह़त आमोज़ हैं।

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرى، ص ٢٥٧

शिकमे मुबारक का बोसा

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अपनी छड़ी के इशारे से सफ़ें सीधी फ़रमा रहे थे कि आप ने देखा कि हज़रते सवाद अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का पेट सफ़ से कुछ आगे निकला हुवा था। आप ने अपनी छड़ी से उन के पेट पर एक कोंचा दे कर फ़रमाया कि اِسْتَوِ یَا سَوَادُ (ऐ सवाद सीधे खड़े हो जाओ) हज़रते सवाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि या रसूलल्लाह ! आप ने मेरे शिकम पर छड़ी मारी है मुझे आप से इस का क़िसास (बदला) लेना है। येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपना पैराहन शरीफ़ उठा कर फ़रमाया कि सवाद ! लो मेरा शिकम हाज़िर है तुम इस पर छड़ी मार कर मुझ से अपना क़िसास ले लो। हज़रते सवाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दौड़ कर आप के शिकम मुबारक को चूम लिया और फिर निहायत ही वालिहाना अन्दाज़ में इनतिहाई गर्म जोशी के साथ आप के जिस्मे अक़्दस से लिपट गए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ सवाद ! तुम ने ऐसा क्यूं किया ? अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मैं इस वक़्त जंग की सफ़ में अपना सर हथेली पर रख कर खड़ा हूं शायद मौत का वक़्त आ गया हो, इस वक़्त मेरे दिल में इस तमन्ना ने जोश मारा कि काश ! मरते वक़्त मेरा बदन आप के जिस्मे अत़्हर से छू जाए। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हज़रते सवाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस जज़्बए महब्बत की क़द्र फ़रमाते हुए उन के लिये ख़ैरो बरकत की दुआ़ फ़रमाई और हज़रते सवाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दरबारे रिसालत में मा'ज़िरत करते हुए अपना क़िसास मुआ़फ़ कर दिया और तमाम सहाबए किराम हज़रते सवाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इस आ़शिक़ाना अदा को हैरत से देखते हुए उन का मुंह तकते रह गए।[1]

(سیرت ابن ہشام غزوہ بدر ج۲ ص۶۲۶)

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرىٰ،ص۲۰۸، ۲۰۹

अ़ह्द की पाबन्दी

इत्तिफ़ाक़ से ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन अल यमान और ह़ज़रते ह़सील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا येह दोनों सह़ाबी कहीं से आ रहे थे। रास्ते में कुफ़्फ़ार ने इन दोनों को रोका कि तुम दोनों बद्र के मैदान में ह़ज़रते मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) की मदद करने के लिये जा रहे हो। उन दोनों ने इन्कार किया और जंग में शरीक न होने का अ़ह्द किया चुनान्चे कुफ़्फ़ार ने इन दोनों को छोड़ दिया। जब येह दोनों बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अपना वाक़िआ़ बयान किया तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इन दोनों को लड़ाई की सफ़ों से अलग कर दिया और इरशाद फ़रमाया कि हम हर ह़ाल में अ़ह्द की पाबन्दी करेंगे हम को सिर्फ़ ख़ुदा की मदद दरकार है।[1] (مسلم باب الوفا بالعہد ج۲ص۱۰۶)

नाज़िरीने किराम ! ग़ौर कीजिये। दुन्या जानती है कि जंग के मौक़अ़ पर ख़ुसूसन ऐसी सूरत में जब कि दुश्मनों के अ़ज़ीमुश्शान लश्कर का मुक़ाबला हो एक एक सिपाही कितना क़ीमती होता है मगर ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपनी कमज़ोर फ़ौज को दो बहादुर और जांबाज़ मुजाहिदों से मह़रूम रखना पसन्द फ़रमाया मगर कोई मुसलमान किसी काफ़िर से भी बद अ़ह्दी और वा'दा ख़िलाफ़ी करे इस को गवारा नहीं फ़रमाया।

اَللّٰہُ اَکْبَر ! ऐ अक़्वामे आ़लम के बादशाहो ! लिल्लाह मुझे येह बताओ कि क्या तुम्हारी तारीख़े ज़िन्दगी के बड़े बड़े दफ़्तरों में कोई ऐसा चमकता हुवा वरक़ भी है ? ऐ चांद व सूरज की दूरबीन निगाहो ! तुम ख़ुदा के लिये बताओ ! क्या तुम्हारी आंखों ने भी कभी सफ़्ह़ए हस्ती पर पाबन्दिये अ़ह्द की कोई ऐसी मिसाल देखी है ? ख़ुदा की क़सम ! मुझे यक़ीन है कि तुम इस के जवाब में "नहीं" के सिवा कुछ भी नहीं कह सकते।

---

1 ......صحیح مسلم ، کتاب الجهاد والسیر ، باب الوفاء بالعهد،الحدیث:۱۷۸۷، ص۹۸۸

दोनों लश्कर आमने सामने

अब वोह वक़्त है कि मैदाने बद्र में ह़क़्क़ो बात़िल की दोनों सफ़ें एक दूसरे के सामने खड़ी हैं। क़ुरआन ए'लान कर रहा है कि

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ (1) (آل عمران)

जो लोग बाहम लड़े उन में तुम्हारे लिये इ़ब्रत का निशान है एक ख़ुदा की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुन्किरे ख़ुदा था।

हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुजाहिदीने इस्लाम की सफ़ बन्दी से फ़ारिग़ हो कर मुजाहिदीन की क़रार दाद के मुत़ाबिक़ अपने उस छप्पर में तशरीफ़ ले गए जिस को सह़ाबए किराम ने आप की निशस्त के लिये बना रखा था। अब इस छप्पर की ह़िफ़ाज़त का सुवाल बेह़द अहम था क्यूं कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़म्लों का अस्ल निशाना हु़ज़ूर ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ही की ज़ात थी किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि इस छप्पर का पहरा दे लेकिन इस मौक़अ़ पर भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के यारे ग़ार ह़ज़रते सिद्दीक़े बा वक़ार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की क़िस्मत में येह सआ़दत लिखी थी कि वोह नंगी तलवार ले कर उस झोंपड़ी के पास डटे रहे और ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी चन्द अन्सारियों के साथ उस छप्पर के गिर्द पहरा देते रहे। (زُرقانی ج۱ص۴۱۸)

दुआ़ए नबवी

हु़ज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इस नाज़ुक घड़ी में जनाबे बारी से लौ लगाए गिर्या व ज़ारी के साथ खड़े हो कर हाथ फैलाए येह दुआ़ मांग रहे थे कि "ख़ुदा वन्दा ! तूने मुझ से जो वा'दा फ़रमाया है आज उसे पूरा फ़रमा दे।" आप पर इस

1 ......پ۳،اٰل عمرٰن: ۱۳

क़दर रिक़्क़त और महविय्यत त़ारी थी कि जोशे गिर्या में चादरे मुबारक दोशे अन्वर से गिर गिर पड़ती थी मगर आप को ख़बर नहीं होती थी, कभी आप सज्दे में सर रख कर इस त़रह़ दुआ़ मांगते कि "इलाही ! अगर येह चन्द नुफ़ूस हलाक हो गए तो फिर क़ियामत तक रूए ज़मीन पर तेरी इबादत करने वाले न रहेंगे।"[1]

(سیرت ابن ہشام ج۲ ص۶۲۷)

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ आप के यारे ग़ार थे। आप को इस त़रह़ बे क़रार देख कर उन के दिल का सुकून व क़रार जाता रहा और उन पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और उन्हों ने चादरे मुबारक को उठा कर आप के मुक़द्दस कन्धे पर डाल दी और आप का दस्ते मुबारक थाम कर भर्राई हुई आवाज़ में बड़े अदब के साथ अ़र्ज़ किया कि ह़ुज़ूर ! अब बस कीजिये ख़ुदा ज़रूर अपना वा'दा पूरा फ़रमाएगा।

अपने यारे ग़ार सिद्दीक़े जां निसार की बात मान कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने दुआ़ ख़त्म फरमा दी और आप की ज़बाने मुबारक पर इस आयत का विर्द जारी हो गया कि

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ۝[2]

अ़न क़रीब (कुफ़्फ़ार की) फ़ौज को शिकस्त दे दी जाएगी और वोह पीठ फैर कर भाग जाएंगे

आप इस आयत को बार बार पढ़ते रहे जिस में फ़त्ह़े मुबीन की बिशारत की त़रफ़ इशारा था।

लड़ाई किस त़रह़ शुरूअ़ हुई

जंग की इब्तिदा इस त़रह़ हुई कि सब से पहले आ़मिर बिन अल ह़ज़्रमी जो अपने मक़्तूल भाई अ़म्र बिन अल ह़ज़्रमी के

---

1 ......السيرة النبوية،غزوة بدرالكبرى،ص٢٥٩ والمواهب اللدنية و الزرقاني،غزوة بدرالكبرى، ج٢، ص٢٧٨،٢٧٩

2 ...... پ٢٧، القمر:٤٥

ख़ून का बदला लेने के लिये बे क़रार था जंग के लिये आगे बढ़ा उस के मुक़ाबले के लिये ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ग़ुलाम ह़ज़रते महजअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मैदान में निकले और लड़ते हुए शहादत से सरफ़राज़ हो गए। फिर ह़ज़रते ह़ारिसा बिन सुराक़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हौज़ से पानी पी रहे थे कि ना गहां इन को कुफ़्फ़ार का एक तीर लगा और वोह शहीद हो गए।[1]

(سیرت ابن ہشام ج۲ص ۶۲۷)

ह़ज़रते उ़मैर का शौक़े शहादत

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जब जोशे जिहाद का वा'ज़ फ़रमाते हुए येह इरशाद फ़रमाया कि मुसलमानो ! उस जन्नत की त़रफ़ बढ़े चलो जिस की चौड़ाई आस्मान व ज़मीन के बराबर है तो ह़ज़रते उ़मैर बिन अल ह़माम अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बोल उठे कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! क्या जन्नत की चौड़ाई ज़मीन व आस्मान के बराबर है ? इरशाद फ़रमाया : "हां" येह सुन कर ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : "वाह वा" आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्यूं ऐ उ़मैर ! तुम ने "वाह वा" किस लिये कहा ? अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! फ़क़त़ इस उम्मीद पर कि मैं भी जन्नत में दाख़िल हो जाऊं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुश ख़बरी सुनाते हुए इरशाद फ़रमाया कि ऐ उ़मैर ! तू बेशक जन्नती है। ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस वक़्त खजूरें खा रहे थे। येह बिशारत सुनी तो मारे ख़ुशी के खजूरें फेंक कर खड़े हो गए और एक दम कुफ़्फ़ार के लश्कर पर तलवार ले कर टूट पड़े और जांबाज़ी के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए।[2]

(مسلم کتاب الجہاد باب سقوط فرض الجہاد عن المعذورین ج۲ص ۱۳۹)

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرى، ص ٢٥٩

2 ......صحيح مسلم، كتاب الامارة، باب ثبوت الجنة للشهيد، الحديث: ١٩٠١، ص ١٠٥٣ تفصيلاً

कुफ़्फ़ार का सिपह सालार मारा गया

कुफ़्फ़ार का सिपह सालार उ़त्बा बिन रबीआ़ अपने सीने पर शुतर मुर्ग़ का पर लगाए हुए अपने भाई शैबा बिन रबीआ़ और अपने बेटे वलीद बिन उ़त्बा को साथ ले कर ग़ुस्से में भरा हुवा अपनी सफ़ से निकल कर मुक़ाबले की दा'वत देने लगा। इस्लामी सफ़ों में से ह़ज़रते औ़फ़ व ह़ज़रते मुआ़ज़ व अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم मुक़ाबले को निकले। उ़त्बा ने इन लोगों का नाम व नसब पूछा, जब मा'लूम हुवा कि येह लोग अन्सारी हैं तो उ़त्बा ने कहा कि हम को तुम लोगों से कोई ग़रज़ नहीं। फिर उ़त्बा ने चिल्ला कर कहा ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) येह लोग हमारे जोड़ के नहीं हैं अशराफ़े क़ुरैश को हम से लड़ने के लिये मैदान में भेजिये। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़म्ज़ा व ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को हुक्म दिया कि आप लोग इन तीनों के मुक़ाबले के लिये निकलें। चुनान्चे येह तीनों बहादुराने इस्लाम मैदान में निकले। चूंकि येह तीनों ह़ज़रात सर पर ख़ौद पहने हुए थे जिस से इन के चेहरे छुप गए थे इस लिये उ़त्बा ने इन ह़ज़रात को नहीं पहचाना और पूछा कि तुम कौन लोग हो ? जब उन तीनों ने अपने अपने नाम व नसब बताए तो उ़त्बा ने कहा कि "हां अब हमारा जोड़ है" जब इन लोगों में जंग शुरूअ़ हुई तो ह़ज़रते ह़म्ज़ा व ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अपनी ईमानी शुजाअ़त का ऐसा मुज़ाहरा किया कि बद्र की ज़मीन दहल गई और कुफ़्फ़ार के दिल थर्रा गए और उन की जंग का अन्जाम येह हुवा कि ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उ़त्बा का मुक़ाबला किया, दोनों इनतिहाई बहादुरी के साथ लड़ते रहे मगर आख़िर कार ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी तलवार के वार से मार मार कर उ़त्बा को ज़मीन पर ढेर कर दिया। वलीद ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जंग की, दोनों ने एक दूसरे पर बढ़ बढ़ कर क़ातिलाना ह़म्ला किया और ख़ूब लड़े लेकिन असदुल्लाहिल ग़ालिब

की ज़ुल फ़िक़ार ने वलीद को मार गिराया और वोह ज़िल्लत के साथ क़त्ल हो गया। मगर उत्बा के भाई शैबा ने ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस त़रह़ ज़ख़्मी कर दिया कि वोह ज़ख़्मों की ताब न ला कर ज़मीन पर बैठ गए। येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ झपटे और आगे बढ़ कर शैबा को क़त्ल कर दिया और ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने कांधे पर उठा कर बारगाहे रिसालत में लाए, उन की पिंडली टूट कर चूर चूर हो गई थी और नली का गूदा बह रहा था, इस ह़ालत में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! क्या मैं शहादत से मह़रूम रहा ? इरशाद फ़रमाया कि नहीं, हरगिज़ नहीं ! बल्कि तुम शहादत से सरफ़राज़ हो गए। ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! अगर आज मेरे और आप के चचा अबू त़ालिब ज़िन्दा होते तो वोह मान लेते कि उन के इस शे'र का मिस्दाक़ मैं हूं कि

وَنُسْلِمُهٗ حَتّٰى نُصَرَّعَ حَوْلَهٗ   وَنَذْهَلُ عَنْ اَبْنَائِنَا وَالْحَلَائِلِ

या'नी हम मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को उस वक़्त दुश्मनों के ह़वाले करेंगे जब हम इन के गिर्द लड़ लड़ कर पछाड़ दिये जाएंगे और हम अपने बेटों और बीवियों को भूल जाएंगे।[1]

(ابوداؤد ج۲ص ۳۶۱مطبع نامی وزرقانی علی المواہب ج۱ص ۴۱۸)

ह़ज़रते ज़ुबैर की तारीख़ी बरछी

इस के बा'द सईद बिन अल आ़स का बेटा "उ़बैदा" सर से पाउं तक लोहे के लिबास और हथयारों से छुपा हुवा सफ़ से बाहर निकला और येह कह कर इस्लामी लश्कर को ललकारने लगा कि "मैं अबू करश हूं" उस की येह मग़रूराना ललकार सुन कर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के फूफीज़ाद भाई ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जोश में भरे हुए अपनी बरछी ले

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني ، غزوة بدرالكبرىٰ، ج۲،ص۲۷۳،۲۷٦

कर मुक़ाबले के लिये निकले मगर येह देखा कि उस की दोनों आंखों के सिवा उस के बदन का कोई हिस्सा भी ऐसा नहीं है जो लोहे से छुपा हुवा न हो। हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ताक कर उस की आंख में इस ज़ोर से बरछी मारी कि वोह ज़मीन पर गिरा और मर गया। बरछी उस की आंख को छेदती हुई खोपड़ी की हड्डी में चुभ गई थी। हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जब उस की लाश पर पाउं रख कर पूरी ताक़त से खींचा तो बड़ी मुश्किल से बरछी निकली लेकिन उस का सर मुड़ कर ख़म हो गया। येह बरछी एक तारीख़ी यादगार बन कर बरसों तबर्रुक बनी रही। **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से येह बरछी तलब फ़रमा ली और उस को हमेशा अपने पास रखा फिर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के बा'द चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के पास मुन्तक़िल होती रही। फिर हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के फ़रज़न्द हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के पास आई यहां तक कि सि. 73 हि. में जब बनू उमय्या के ज़ालिम गवर्नर हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ने इन को शहीद कर दिया तो येह बरछी बनू उमय्या के क़ब्ज़े में चली गई फिर इस के बा'द ला पता हो गई।[1] (بخاری غزوۂ بدر ج۲ ص۵۷۰)

अबू जह्ल ज़िल्लत के साथ मारा गया

हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि मैं सफ़ में खड़ा था और मेरे दाएं बाएं दो नौ उम्र लड़के खड़े थे। एक ने चुपके से पूछा कि चचाजान ! क्या आप अबू जह्ल को पहचानते हैं ? मैं ने उस से कहा कि क्यूं भतीजे ! तुम को अबू जह्ल से क्या काम है ? उस ने कहा कि चचाजान ! मैं ने ख़ुदा से येह अ़ह्द किया है कि मैं अबू जह्ल को जहां देख लूंगा या तो उस को क़त्ल कर दूंगा या ख़ुद लड़ता हुवा मारा जाऊंगा क्यूं कि वोह **अल्लाह** के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

1 ......صحیح البخاری ، کتاب المغازی، باب ۱۲، الحدیث:۳۹۹۸،ج۳،ص۱۸

का बहुत ही बड़ा दुश्मन है। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ह़ैरत से उस नौ जवान का मुंह ताक रहा था कि दूसरे नौ जवान ने भी मुझ से येही कहा। इतने में अबू जह्ल तलवार घुमाता हुवा सामने आ गया और मैं ने इशारे से बता दिया कि अबू जह्ल येही है, बस फिर क्या था येह दोनों लड़के तलवारें ले कर उस पर इस त़रह़ झपटे जिस त़रह़ बाज़ अपने शिकार पर झपटता है। दोनों ने अपनी तलवारों से मार मार कर अबू जह्ल को ज़मीन पर ढेर कर दिया। येह दोनों लड़के ह़ज़रते मुअ़व्वज़ और ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا थे जो "अ़फ़रा" के बेटे थे। अबू जह्ल के बेटे इकरिमा ने अपने बाप के क़ातिल ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ह़म्ला कर दिया और पीछे से उन के बाएं शाने पर तलवार मारी जिस से उन का बाज़ू कट गया लेकिन थोड़ा सा चमड़ा बाक़ी रह गया और हाथ लटकने लगा। ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इकरिमा का पीछा किया और दूर तक दौड़ाया मगर इकरिमा भाग कर बच निकला। ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस ह़ालत में भी लड़ते रहे लेकिन कटे हुए हाथ के लटकने से ज़ह़मत हो रही थी तो उन्हों ने अपने कटे हुए हाथ को पाउं से दबा कर इस ज़ोर से खींचा कि तस्मा अलग हो गया और फिर वोह आज़ाद हो कर एक हाथ से लड़ते रहे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अबू जह्ल के पास से गुज़रे, उस वक़्त अबू जह्ल में कुछ कुछ ज़िन्दगी की रमक़ बाक़ी थी। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस की गरदन को अपने पाउं से रौंद कर फ़रमाया कि "तू ही अबू जह्ल है ! बता आज तुझे **अल्लाह** ने कैसा रुस्वा किया।" अबू जह्ल ने इस ह़ालत में भी घमन्ड के साथ येह कहा कि तुम्हारे लिये येह कोई बड़ा कारनामा नहीं है मेरा क़त्ल हो जाना इस से ज़ियादा नहीं है कि एक आदमी को उस की क़ौम ने क़त्ल कर दिया। हां ! मुझे इस का अफ़्सोस है कि काश ! मुझे किसानों के सिवा कोई दूसरा शख़्स क़त्ल करता। ह़ज़रते मुअ़व्वज़ और ह़ज़रते

मुआज़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُما चूंकि येह दोनों अन्सारी थे और अन्सार खेतीबाड़ी का काम करते थे और क़बीलए कुरैश के लोग किसानों को बड़ी हक़ारत की नज़र से देखा करते थे इस लिये अबू जह्ल ने किसानों के हाथ से क़त्ल होने को अपने लिये क़ाबिले अफ़्सोस बताया ।

जंग ख़त्म हो जाने के बा'द **हुज़ूरे** अकरम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُ को साथ ले कर जब अबू जह्ल की लाश के पास से गुज़रे तो लाश की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि अबू जह्ल इस ज़माने का "**फ़िरऔ़न**" है । फिर अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُ ने अबू जह्ल का सर काट कर ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के क़दमों पर डाल दिया ।(1)

(بخاری غزوہ بدر و دلائل النبوۃ ج۲ص۱۷۳)

अबुल बुख़्तरी का क़त्ल

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने जंग शुरूअ़ होने से पहले ही येह फ़रमा दिया था कि कुछ लोग कुफ़्फ़ार के लश्कर में ऐसे भी हैं जिन को कुफ़्फ़ारे मक्का दबाव डाल कर लाए हैं ऐसे लोगों को क़त्ल नहीं करना चाहिये । उन लोगों के नाम भी **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने बता दिये थे । इन्ही लोगों में से अबुल बुख़्तरी भी था जो अपनी ख़ुशी से मुसलमानों से लड़ने के लिये नहीं आया था बल्कि कुफ़्फ़ारे कुरैश उस पर दबाव डाल कर ज़बर दस्ती कर के लाए थे । ऐन जंग की ह़ालत में ह़ज़रते मजज़र बिन ज़ियाद رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُ की नज़र अबुल बुख़्तरी पर पड़ी जो अपने एक गहरे दोस्त जुनादा बिन मलीह़ा के साथ घोड़े पर सुवार था । ह़ज़रते मजज़र رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि ऐ अबुल बुख़्तरी ! चूंकि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने हम लोगों को तेरे क़त्ल से मन्अ़ फ़रमाया है इस

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب ١٠، الحدیث:٣٩٨٨، ج٣، ص١٤ و کتاب فرض الخمس،باب من لم یخمس الاسلاب...الخ،الحدیث:٣١٤١،ج٢،ص٣٥٦

लिये मैं तुझ को छोड़ देता हूं। अबुल बुख़्तरी ने कहा कि मेरे साथी जुनादा के बारे में तुम क्या कहते हो ? तो ह़ज़रते मजज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने साफ़ साफ़ कह दिया कि इस को हम ज़िन्दा नहीं छोड़ सकते। येह सुन कर अबुल बुख़्तरी तैश में आ गया और कहा कि मैं अ़रब की औ़रतों का येह त़ा'ना सुनना पसन्द नहीं कर सकता कि अबुल बुख़्तरी ने अपनी जान बचाने के लिये अपने साथी को तन्हा छोड़ दिया। येह कह कर अबुल बुख़्तरी ने रज्ज़ का येह शे'र पढ़ा कि

لَنْ يُّسْلِمَ ابْنُ حُرَّةٍ زَمِيلَهٗ   حَتّٰى يَمُوْتَ اَوْيَرٰى سَبِيْلَهٗ

एक शरीफ़ ज़ादा अपने साथी को कभी हरगिज़ नहीं छोड़ सकता जब तक कि मर न जाए या अपना रास्ता न देख ले।(1)

उमय्या की हलाकत

उमय्या बिन ख़लफ़ बहुत ही बड़ा दुश्मने रसूल था। जंगे बद्र में जब कुफ़्र व इस्लाम के दोनों लश्कर गुथ्थम गुथ्था हो गए तो उमय्या अपने पुराने तअ़ल्लुक़ात की बिना पर ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से चिमट गया कि मेरी जान बचाइये। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को रह़म आ गया और आप ने चाहा कि उमय्या बच कर निकल भागे मगर ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उमय्या को देख लिया। ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब उमय्या के ग़ुलाम थे तो उमय्या ने इन को बहुत ज़ियादा सताया था इस लिये जोशे इनतिक़ाम में ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अन्सार को पुकारा, अन्सारी लोग दफ़अ़तन टूट पड़े। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उमय्या से कहा कि तुम ज़मीन पर लेट जाओ वोह लेट गया तो ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस को बचाने के लिये उस के ऊपर लेट कर उस को छुपाने लगे लेकिन ह़ज़रते बिलाल और अन्सार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने उन की टांगों के अन्दर

(1)......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرىٰ، ص ٢٦٠

हाथ डाल कर और बग़ल से तलवार घोंप घोंप कर उस को क़त्ल कर दिया ।[1] (بخاری ج ا ص ۳۰۸ باب اذا وکل المسلم حربیًا)

फ़िरिश्तों की फ़ौज

जंगे बद्र में अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों की मदद के लिये आस्मान से फ़िरिश्तों का लश्कर उतार दिया था । पहले एक हज़ार फ़िरिश्ते आए फिर तीन हज़ार हो गए इस के बा'द पांच हज़ार हो गए ।[2]

(क़ुरआन, सूरए आले इमरान व अन्फ़ाल)

जब ख़ूब घुमसान का रन पड़ा तो फ़िरिश्ते किसी को नज़र नहीं आते थे मगर उन की ह़र्बो ज़र्ब के असरात साफ़ नज़र आते थे । बा'ज़ काफ़िरों की नाक और मुंह पर कोड़ों की मार का निशान पाया जाता था, कहीं बिग़ैर तलवार मारे सर कट कर गिरता नज़र आता था, येह आस्मान से आने वाले फ़िरिश्तों की फ़ौज के कारनामे थे ।

कुफ़्फ़ार ने हथयार डाल दिये

उ़त्बा, शैबा, अबू जहल वग़ैरा कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सरदारों की हलाकत से कुफ़्फ़ारे मक्का की कमर टूट गई और उन के पाउं उखड़ गए और हथयार डाल कर भाग खड़े हुए और मुसलमानों ने उन लोगों को गरिफ़्तार करना शुरूअ़ कर दिया ।

इस जंग में कुफ़्फ़ार के सत्तर आदमी क़त्ल और सत्तर आदमी गरिफ़्तार हुए । बाक़ी अपना सामान छोड़ कर फ़िरार हो गए इस जंग में कुफ़्फ़ारे मक्का को ऐसी ज़बर दस्त शिकस्त हुई कि उन की अ़स्करी ताक़त ही फ़ना हो गई । कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के बड़े बड़े नामवर सरदार जो बहादुरी और फ़न्ने सिपह गरी में

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الوکالۃ،باب اذا وکل المسلم حربیاً...الخ،الحدیث:۲۳۰۱،ج۲،ص۷۸

2 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی ، غزوۃ بدرالکبری، ج۲،ص۲۸۶

यक्ताए रोज़गार थे एक एक कर के सब मौत के घाट उतार दिये गए। इन नामवरों में उ़त्बा, शैबा, अबू जह्ल, अबुल बुख़्तरी, ज़म्आ़, आ़स बिन हिशाम, उमय्या बिन ख़लफ़, मुनब्बेह बिन अल ह़ज्जाज, उ़क़्बा बिन अबी मुईत़, नज़्र बिन अल ह़ारिस वग़ैरा क़ुरैश के सरताज थे येह सब मारे गए।(1)

शुहदाए बद्र

जंगे बद्र में कुल चौदह मुसलमान शहादत से सरफ़राज़ हुए जिन में से छे मुहाजिर और आठ अन्सार थे। शुहदाए मुहाजिरीन के नाम येह हैं : ﴾1﴿ ह़ज़रते उ़बैदा बिन अल ह़ारिस ﴾2﴿ ह़ज़रते उ़मैर बिन अबी वक़्क़ास ﴾3﴿ ह़ज़रते ज़ुश्शिमालैन उ़मैर बिन अ़ब्दे अ़म्र ﴾4﴿ ह़ज़रते आ़क़िल बिन अबू बुकैर ﴾5﴿ ह़ज़रते महजअ़ ﴾6﴿ ह़ज़रते सफ़्वान बिन बैज़ा और अन्सार के नामों की फ़ेहरिस्त येह है : ﴾7﴿ ह़ज़रते सा'द बिन ख़ैसमा ﴾8﴿ ह़ज़रते मुबश्शिर बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर ﴾9﴿ ह़ज़रते ह़ारिसा बिन सुराक़ा ﴾10﴿ ह़ज़रते मुअ़व्वज़ बिन अ़फ़रा ﴾11﴿ ह़ज़रते उ़मैर बिन ह़ुमाम ﴾12﴿ ह़ज़रते राफ़ेअ़ बिन मुअ़ल्ला ﴾13﴿ ह़ज़रते औ़फ़ बिन अ़फ़रा ﴾14﴿ ह़ज़रते यज़ीद बिन ह़ारिस।(2) (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمۡ اَجۡمَعِیۡن) (زُرقانی ج۱ص۴۴۴و ص۴۴۵)

इन शुहदाए बद्र में से तेरह ह़ज़रात तो मैदाने बद्र ही में मदफ़ून हुए मगर ह़ज़रते उ़बैदा बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने चूंकि बद्र से वापसी पर मन्ज़िले "सफ़रा" में वफ़ात पाई इस लिये इन की क़ब्र शरीफ़ मन्ज़िले "सफ़रा" में है।(3) (زُرقانی ج۱ص۴۴۵)

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، غزوة بدرالكبرىٰ، ج٢، ص٣٢٨ ملخصاًو السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرىٰ، ص٢٦٧

2 ......المواهب اللدنية و الزرقاني ، غزوة بدرالكبرىٰ، ج٢، ص٣٢٥،٣٢٦،٣٢٧ ملتقطاً

3 ......شرح الزرقاني على المواهب، غزوة بدرالكبرىٰ، ج٢، ص٣٢٥

बद्र का गढ़ा

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का हमेशा येह त़र्ज़े अ़मल रहा कि जहां कभी कोई लाश नज़र आती थी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस को दफ़्न करवा देते थे लेकिन जंगे बद्र में क़त्ल होने वाले कुफ़्फ़ार चूंकि ता'दाद में बहुत ज़ियादा थे, सब को अलग अलग दफ़्न करना एक दुश्वार काम था इस लिये तमाम लाशों को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बद्र के एक गढ़े में डाल देने का हुक्म फ़रमाया। चुनान्चे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने तमाम लाशों को घसीट घसीट कर गढ़े में डाल दिया। उमय्या बिन ख़लफ़ की लाश फूल गई थी, सह़ाबए किराम ने उस को घसीटना चाहा तो उस के आ'ज़ा अलग अलग होने लगे इस लिये उस की लाश वहीं मिट्टी में दबा दी गई।[1]

(بخاری کتاب المغازی باب قتل ابی جہل ج۲ص ۵۶۶)

कुफ़्फ़ार की लाशों से ख़िताब

जब कुफ़्फ़ार की लाशें बद्र के गढ़े में डाल दी गईं तो हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस गढ़े के कनारे खड़े हो कर मक़्तूलीन का नाम ले कर इस त़रह़ पुकारा कि ऐ उ़त्बा बिन रबीआ़ ! ऐ शैबा बिन रबीआ़ ! ऐ फ़ुलां ! ऐ फ़ुलां ! क्या तुम लोगों ने अपने रब के वा'दे को सच्चा पाया ? हम ने तो अपने रब के वा'दे को बिल्कुल ठीक ठीक सच पाया। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जब देखा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم कुफ़्फ़ार की लाशों से ख़िताब फ़रमा रहे हैं तो उन को बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। चुनान्चे उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! क्या आप इन बे रूह़ के जिस्मों से कलाम फ़रमा रहे हैं ? येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! क़सम ख़ुदा की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि तुम

1 ......المواهب اللدنية و الزرقاني ، غزوة بدرالكبرىٰ، ج٢،ص٣٠٣

(ज़िन्दा लोग) मेरी बात को इन से ज़ियादा नहीं सुन सकते लेकिन इतनी बात है कि येह मुर्दे जवाब नहीं दे सकते ।[1]

(بخاری ج۱ص۱۸۳،باب ماجاء فی عذاب القبر و بخاری ج۲ص۵۶۶)

ज़रूरी तम्बीह

बुख़ारी वग़ैरा की इस ह़दीस से येह मस्अला साबित होता है कि जब कुफ़्फ़ार के मुर्दे ज़िन्दों की बात सुनते हैं तो फिर मोमिनीन ख़ुसूसन औलिया, शुहदा, अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلام वफ़ात के बा'द यक़ीनन हम ज़िन्दों का सलाम व कलाम और हमारी फ़रयादें सुनते हैं और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब कुफ़्फ़ार की मुर्दा लाशों को पुकारा तो फिर ख़ुदा के बरगुज़ीदा बन्दों या'नी वलियों, शहीदों और नबियों को उन की वफ़ात के बा'द पुकारना भला क्यूं न, जाइज़ व दुरुस्त होगा ? इसी लिये तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم जब मदीने के क़ब्रिस्तान में तशरीफ़ ले जाते तो क़ब्रों की त़रफ़ अपना रुख़े अन्वर कर के यूं फ़रमाते कि

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ[2]

(مشکوٰۃ باب زیارۃ القبور ص۱۵۴)

या'नी "ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलामती हो ख़ुदा हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए, तुम लोग हम से पहले चले गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं ।" और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को भी येही हुक्म दिया है और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को इस की ता'लीम देते थे कि जब तुम लोग क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जाओ तो

---

1 ......صحیح البخاری،کتاب المغازی،باب قتل ابی جھل،الحدیث:۳۹۷۶،ج۳،ص۱۱ والمواھب اللدنیة و الزرقانی ، باب غزوۃ بدرالکبریٰ، ج۲،ص۳۰۵-۳۰۷

2 ......مشکاۃ المصابیح،کتاب الجنائز،باب زیارۃ القبور،الفصل الثانی،الحدیث:۱۷۶۵،ج۱،ص۳۳٤

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَلَاحِقُوْنَ نَسْأَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ (1) (مشکوٰۃ باب زیارۃ القبور ص۱۵۴)

इन ह़दीसों से ज़ाहिर है कि मुर्दे ज़िन्दों का सलाम व कलाम सुनते हैं वरना ज़ाहिर है कि जो लोग सुनते ही नहीं उन को सलाम करने से क्या ह़ासिल ?

मदीने को वापसी

फ़त्ह़ के बा'द तीन दिन तक हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने "बद्र" में क़ियाम फ़रमाया फिर तमाम अम्वाले ग़नीमत और कुफ़्फ़ार क़ैदियों को साथ ले कर रवाना हुए। जब "वादिये सफ़रा" में पहुंचे तो अम्वाले ग़नीमत को मुजाहिदीन के दरमियान तक़्सीम फ़रमाया।

ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रत बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की साहि़ब ज़ादी थीं जंगे बद्र के मौक़अ़ पर बीमार थीं इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को साहि़ब ज़ादी की तीमार दारी के लिये मदीने में रहने का हुक्म दे दिया था इस लिये वोह जंगे बद्र में शामिल न हो सके मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने माले ग़नीमत में से उन को मुजाहिदीने बद्र के बराबर ही हि़स्सा दिया और उन के बराबर ही अज्रो सवाब की बिशारत भी दी इसी लिये ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को भी अस्ह़ाबे बद्र की फ़ेहरिस्त में शुमार किया जाता है।[2]

मुजाहिदीने बद्र का इस्तिक़्बाल

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़त्ह़ के बा'द ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को फ़त्हे़ मुबीन की ख़ुश ख़बरी

---

1 ......مشكاة المصابيح، كتاب الجنائز، باب زيارة القبور، الفصل الاول، الحديث:١٧٦٤، ج١، ص٣٣٣

2 ......السيرة النبوية لابن هشام، من حضر بدراً...الخ، ص ٢٨٢

सुनाने के लिये मदीना भेज दिया था। चुनान्चे ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह खुश ख़बरी ले कर जब मदीना पहुंचे तो तमाम अहले मदीना जोशे मसर्रत के साथ **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की आमद आमद के इनतिज़ार में बे क़रार रहने लगे और जब तशरीफ़ आवरी की ख़बर पहुंची तो अहले मदीना ने आगे बढ़ कर मक़ामे "रौह़ा" में आप का पुरजोश इस्तिक़्बाल किया।[1] (ابن ہشام ج۲ص۶۴۳)

क़ैदियों के साथ सुलूक

कुफ़्फ़ारे मक्का जब असीराने जंग बन कर मदीने में आए तो उन को देखने के लिये बहुत बड़ा मज्मअ़ इकठ्ठा हो गया और लोग उन को देख कर कुछ न कुछ बोलते रहे। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते बीबी सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन क़ैदियों को देखने के लिये तशरीफ़ लाईं और येह देखा कि उन क़ैदियों में इन के एक क़रीबी रिश्तेदार "सुहैल" भी हैं तो वोह बे साख़्ता बोल उठीं कि "ऐ सुहैल ! तुम ने भी औ़रतों की त़रह़ बेड़ियां पहन लीं तुम से येह न हो सका कि बहादुर मर्दों की त़रह़ लड़ते हुए क़त्ल हो जाते।"[2]

(سیرت ابن ہشام ج۲ص۶۴۵)

इन क़ैदियों को **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सह़ाबा में तक़्सीम फ़रमा दिया और येह हुक्म दिया कि इन क़ैदियों को आराम के साथ रखा जाए। चुनान्चे दो दो, चार चार क़ैदी सह़ाबा के घरों में रहने लगे और सह़ाबा ने इन लोगों के साथ येह हुस्ने सुलूक किया कि इन लोगों को गोश्त रोटी वग़ैरा ह़स्बे मक़्दूर बेहतरीन खाना खिलाते थे और खुद खजूरें खा कर रह जाते थे।[3] (ابن ہشام ج۲ص۶۴۶)

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرىٰ، ص ٢٦٥، ٢٦٦ ملتقطاً

2 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة بدرالكبرىٰ، ص ٢٦٧

3 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة بدرالكبرىٰ، ص ٢٦٧ ملتقطاً وملخصاً

क़ैदियों में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास के बदन पर कुरता नहीं था लेकिन वोह इतने लम्बे क़द के आदमी थे कि किसी का कुरता उन के बदन पर ठीक नहीं उतरता था अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य (मुनाफ़िक़ीन का सरदार) चूंकि क़द में इन के बराबर था इस लिये इस ने अपना कुरता इन को पहना दिया। बुख़ारी में येह रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य के कफ़न के लिये जो अपना पैराहन शरीफ़ अ़ता फ़रमाया था वोह इसी एह़सान का बदला था।[1] (بخاری باب الکسوۃ للاساری ج۱ص۴۲۲)

असीराने जंग का अन्जाम

इन क़ैदियों के बारे में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़राते सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से मश्वरा फ़रमाया कि इन के साथ क्या मुआ़मला किया जाए ? ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह राय दी कि इन सब दुश्मनाने इस्लाम को क़त्ल कर देना चाहिये और हम में से हर शख़्स अपने अपने क़रीबी रिश्तेदार को अपनी तलवार से क़त्ल करे। मगर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह मश्वरा दिया कि आख़िर येह सब लोग अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब ही हैं लिहाज़ा इन्हें क़त्ल न किया जाए बल्कि इन लोगों से बत़ौरे फ़िदया कुछ रक़म ले कर इन सब को रिहा कर दिया जाए। इस वक़्त मुसलमानों की माली ह़ालत बहुत कमज़ोर है फ़िदये की रक़म से मुसलमानों की माली इमदाद का सामान भी हो जाएगा और शायद आयन्दा अल्लाह तआ़ला इन लोगों को इस्लाम की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सन्जीदा राय को पसन्द फ़रमाया और उन क़ैदियों से चार चार हज़ार दिरहम फ़िदया ले कर उन लोगों को छोड़ दिया। जो लोग मुफ़्लिसी की वजह से फ़िदया नहीं दे सकते थे वोह यूं ही बिला फ़िदया छोड़ दिये गए।

1 ......صحیح البخاری، کتاب الجھاد و السیر، باب الکسوۃ للاساری، الحدیث:۳۰۰۸، ج۲، ص۳۱۳

इन क़ैदियों में जो लोग लिखना जानते थे उन में से हर एक का फ़िदया येह था कि वोह अन्सार के दस लड़कों को लिखना सिखा दें।(1)

(ابن ہشام ج۲ص۶۴۶)

हज़रते अ़ब्बास का फ़िदया

अन्सार ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से येह दर ख़्वास्त अ़र्ज़ की, कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! हज़रते अ़ब्बास हमारे भान्जे हैं लिहाज़ा हम इन का फ़िदया मुआ़फ़ करते हैं। लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने येह दर ख़्वास्त मन्ज़ूर नहीं फ़रमाई। हज़रते अ़ब्बास क़ुरैश के उन दस दौलत मन्द रईसों में से थे जिन्हों ने लश्करे कुफ़्फ़ार के राशन की ज़िम्मादारी अपने सर ली थी, इस ग़रज़ के लिये हज़रते अ़ब्बास के पास बीस ऊक़िया सोना था। चूंकि फ़ौज को खाना खिलाने में अभी हज़रते अ़ब्बास की बारी नहीं आई थी इस लिये वोह सोना अभी तक इन के पास महफ़ूज़ था। उस सोने को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने माले ग़नीमत में शामिल फ़रमा लिया और हज़रते अ़ब्बास से मुत़ालबा फ़रमाया कि वोह अपना और अपने दोनों भतीजों अ़क़ील बिन अबी त़ालिब और नौफ़िल बिन ह़ारिस और अपने ह़लीफ़ उ़त्बा बिन अ़म्र बिन जह़दम चार शख़्सों का फ़िदया अदा करें। हज़रते अ़ब्बास ने कहा कि मेरे पास कोई माल ही नहीं है, मैं कहां से फ़िदया अदा करूं ? येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि चचाजान ! आप का वोह माल कहां है ? जो आप ने जंगे बद्र के लिये रवाना होते वक़्त अपनी बीवी "उम्मुल फ़ज़्ल" को दिया था और येह कहा था कि अगर मैं इस लड़ाई में मारा जाऊं तो इस में से इतना इतना माल मेरे लड़कों को दे देना। येह सुन कर हज़रते अ़ब्बास ने कहा कि क़सम है उस ख़ुदा की जिस ने आप को ह़क़ के साथ भेजा है कि

---

1 ......المواهب اللدنية و الزرقانی ، غزوة بدرالكبرىٰ، ج۲، ص۳۲۰، ۳۲۲

وشرح الزرقانی على المواهب، غزوة بدرالكبرىٰ ، ج۲،ص۳۲٤

यक़ीनन आप अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल हैं क्यूं कि उस माल का इल्म मेरे और मेरी बीवी उम्मुल फ़ज़्ल के सिवा किसी को नहीं था। चुनान्चे हज़रते अ़ब्बास ने अपना और अपने दोनों भतीजों और अपने ह़लीफ़ का फ़िद्या अदा कर के रिहाई ह़ासिल की फिर इस के बा'द हज़रते अ़ब्बास और हज़रते अ़क़ील और हज़रते नौफ़िल तीनों मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए।[1] (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) (مدارج النبوۃ ج۲ص۹۷وزُرقانی ج۱ص۴۴۷)

हज़रते ज़ैनब का हार

जंगे बद्र के क़ैदियों में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के दामाद अबुल आ़स बिन अर्रबीअ़ भी थे। येह हाला बिन्ते ख़ुवैलद के लड़के थे और हाला हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ह़क़ीक़ी बहन थीं इस लिये हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से मश्वरा ले कर अपनी लड़की हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का अबुल आ़स बिन अर्रबीअ़ से निकाह़ कर दिया था। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने जब अपनी नुबुव्वत का ए'लान फ़रमाया तो आप की साहि़ब ज़ादी हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने तो इस्लाम क़बूल कर लिया मगर इन के शोहर अबुल आ़स मुसलमान नहीं हुए और न हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को अपने से जुदा किया। अबुल आ़स बिन अर्रबीअ़ ने हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास क़ासिद भेजा कि फ़िद्ये की रक़म भेज दें। हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को उन की वालिदा हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जहेज़ में एक क़ीमती हार भी दिया था। हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़िद्ये की रक़म के साथ वोह हार भी अपने गले से उतार कर मदीना भेज दिया। जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की नज़र उस हार पर पड़ी तो हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا और उन की मह़ब्बत की याद ने क़ल्बे

---

[1] ......مدارج النبوت،باب چہارم ، قسم دوم، ج۲،ص۹۷وشرح الزرقانی علی المواھب، غزوۃ بدرالکبری ، ج۲،ص ۳۲۰،۳۲۳

मुबारक पर ऐसा रिक्क़त अंगेज़ असर डाला कि आप रो पड़े और सहाबा से फ़रमाया कि "अगर तुम लोगों की मरज़ी हो तो बेटी को उस की मां की यादगार वापस कर दो" येह सुन कर तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने सरे तस्लीम ख़म कर दिया और येह हार ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास मक्का भेज दिया गया।[1] (تاریخ طبری ص١٣٤٨)

अबुल आ़स रिहा हो कर मदीने से मक्का आए और ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को मदीने भेज दिया। अबुल आ़स बहुत बड़े ताजिर थे येह मक्का से अपना सामाने तिजारत ले कर शाम गए और वहां से ख़ूब नफ़्अ़ कमा कर मक्का आ रहे थे कि मुसलमान मुजाहिदीन ने इन के क़ाफ़िले पर ह़म्ला कर के इन का सारा माल व अस्बाब लूट लिया और येह माले ग़नीमत तमाम सिपाहियों पर तक़्सीम भी हो गया। अबुल आ़स छुप कर मदीना पहुंचे और ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इन को पनाह दे कर अपने घर में उतारा। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से फ़रमाया कि अगर तुम लोगों की ख़ुशी हो तो अबुल आ़स का माल व सामान वापस कर दो। फ़रमाने रिसालत का इशारा पाते ही तमाम मुजाहिदीन ने सारा माल व सामान अबुल आ़स के सामने रख दिया। अबुल आ़स अपना सारा माल व अस्बाब ले कर मक्का आए और अपने तमाम तिजारत के शरीकों को पाई पाई का ह़िसाब समझा कर और सब को उस के ह़िस्से की रक़म अदा कर के अपने मुसलमान होने का ए'लान कर दिया और अहले मक्का से कह दिया कि मैं यहां आ कर और सब का पूरा पूरा ह़िसाब अदा कर के मदीने जाता हूं ताकि कोई येह न कह सके कि अबुल आ़स हमारा रुपिया ले कर तक़ाज़े के डर से मुसलमान हो कर मदीना भाग गया। इस के बा'द ह़ज़रते अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मदीना आ कर ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के साथ रहने लगे।[2] (تاریخ طبری)

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، ذكر رؤيا عاتكة...الخ،ص ٢٧٠

2 ......السيرة النبوية لابن هشام، اسلام ابى العاص بن الربيع،ص٢٧٢

मक्तूलीने बद्र का मातम

बद्र में कुफ़्फ़ारे कुरैश की शिकस्ते फ़ाश की ख़बर जब मक्का में पहुंची तो ऐसा कोहराम मच गया कि घर घर मातम कदा बन गया मगर इस ख़याल से कि मुसलमान हम पर हंसेंगे अबू सुफ़्यान ने तमाम शहर में ए'लान करा दिया कि ख़बरदार कोई शख़्स रोने न पाए। इस लड़ाई में अस्वद बिन अल मुत्त़लिब के दो लड़के "अ़क़ील" और "ज़मआ़" और एक पोता "ह़ारिस बिन ज़मआ़" क़त्ल हुए थे। इस सदमए जांकाह से अस्वद का दिल फट गया था वोह चाहता था कि अपने इन मक्तूलों पर ख़ूब फूट फूट कर रोए ताकि दिल की भड़ास निकल जाए लेकिन क़ौमी ग़ैरत के ख़याल से रो नहीं सकता था मगर दिल ही दिल में घुटता और कुढ़ता रहता था और आंसू बहाते बहाते अन्धा हो गया था, एक दिन शहर में किसी औ़रत के रोने की आवाज़ आई तो इस ने अपने ग़ुलाम को भेजा कि देखो कौन रो रहा है? क्या बद्र के मक्तूलों पर रोने की इजाज़त हो गई है? मेरे सीने में रन्जो ग़म की आग सुलग रही है, मैं भी रोने के लिये बे क़रार हूं। ग़ुलाम ने बताया कि एक औ़रत का ऊंट गुम हो गया है वोह इसी ग़म में रो रही है। अस्वद शाइर था, येह सुन कर बे इख़्तियार उस की ज़बान से येह दर्दनाक अश्आ़र निकल पड़े जिस के लफ़्ज़ लफ़्ज़ से ख़ून टपक रहा है

اَتَبۡـکِـیۡ اَنۡ یَّـضِـلَّ لَهَا بَعِیۡرٌ   وَیَـمۡنَعُهَا مِنَ النَّوۡمِ السُّهُوۡدُ

क्या वोह औ़रत एक ऊंट के गुम हो जाने पर रो रही है? और बे ख़्वाबी ने उस की नींद को रोक दिया है।

فَلَا تَبۡـکِـیۡ عَلٰی بَکۡرٍ وَّلٰکِنۡ   عَلٰی بَدۡرٍ تَقَاصَرَتِ الۡجُدُوۡدُ

तो वोह एक ऊंट पर न रोए लेकिन "बद्र" पर रोए जहां क़िस्मतों ने कोताही की है।

وَبَكِّىْ اِنْ بَكَيْتِ عَلٰى عَقِيْلٍ وَبَكِّىْ حَارِثًا اَسَدَ الْاُسُوْدِ

अगर तुझ को रोना है तो "अक़ील" पर रोया कर और "ह़ारिस" पर रोया कर जो शेरों का शेर था।

وَبَكِّيْهِمْ وَلَاتَسَمِّىْ جَمِيْعًا وَمَا لِاَبِىْ حَكِيْمَةَ مِنْ نَدِيْدٍ

और उन सब पर रोया कर मगर उन सभों का नाम मत ले और "अबू ह़कीमा" "ज़मआ़" का तो कोई हमसर ही नहीं है।[1]

(ابن ہشام ج۲ص ۲۵۷)

उ़मैर और सफ़्वान की ख़ौफ़नाक साज़िश

एक दिन उ़मैर और सफ़्वान दोनों ह़त़ीमे का'बा में बैठे हुए मक़्तूलीने बद्र पर आंसू बहा रहे थे। एक दम सफ़्वान बोल उठा कि ऐ उ़मैर ! मेरा बाप और दूसरे रूअसाए मक्का जिस त़रह़ बद्र में क़त्ल हुए उन को याद कर के सीने में दिल पाश पाश हो रहा है और अब ज़िन्दगी में कोई मज़ा बाक़ी नहीं रह गया है। उ़मैर ने कहा कि ऐ सफ़्वान ! तुम सच कहते हो मेरे सीने में भी इनतिक़ाम की आग भड़क रही है, मेरे अइ़ज़्ज़ा व अक़रिबा भी बद्र में बे दर्दी के साथ क़त्ल किये गए हैं और मेरा बेटा मुसलमानों की क़ैद में है। खु़दा की क़सम ! अगर मैं क़र्ज़दार न होता और बाल बच्चों की फ़िक्र से दो चार न होता तो अभी अभी मैं तेज़ रफ़्तार घोड़े पर सुवार हो कर मदीने जाता और दम ज़दन में धोके से मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को क़त्ल कर के फ़िरार हो जाता। येह सुन कर सफ़्वान ने कहा कि ऐ उ़मैर ! तुम अपने क़र्ज़ और बच्चों की ज़रा भी फ़िक्र न करो। मैं खु़दा के घर में अ़ह्द करता हूं कि तुम्हारा सारा क़र्ज़ अदा कर दूंगा और मैं तुम्हारे बच्चों की परवरिश का भी ज़िम्मादार हूं। इस मुआ़हदे के बा'द उ़मैर सीधा घर आया और ज़ह्र में बुझाई हुई तलवार ले कर घोड़े पर सुवार हो गया। जब मदीने में मस्जिदे नबवी के क़रीब

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرىٰ، ص٢٦٨

पहुंचा तो हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को पकड़ लिया और उस का गला दबाए और गरदन पकड़े हुए दरबारे रिसालत में ले गए। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने पूछा कि क्यूं उ़मैर ! किस इरादे से आए हो ? जवाब दिया कि अपने बेटे को छुड़ाने के लिये। आप ने फ़रमाया कि क्या तुम ने और सफ़्वान ने ह़त़ीमे का'बा में बैठ कर मेरे क़त्ल की साज़िश नहीं की है ? उ़मैर येह राज़ की बात सुन कर सन्नाटे में आ गया और कहा कि मैं गवाही देता हूं कि बेशक आप **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल हैं क्यूं कि ख़ुदा की क़सम ! मेरे और सफ़्वान के सिवा इस राज़ की किसी को भी ख़बर न थी। इधर मक्का में सफ़्वान **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के क़त्ल की ख़बर सुनने के लिये इनतिहाई बे क़रार था और दिन गिन गिन कर उ़मैर के आने का इनतिज़ार कर रहा था मगर जब इस ने ना गहां येह सुना कि उ़मैर मुसलमान हो गया तो फ़र्ते़ है़रत से उस के पाउं के नीचे से ज़मीन निकल गई और वोह बोखला गया।

हज़रते उ़मैर मुसलमान हो कर मक्का आए और जिस त़रह़ वोह पहले मुसलमानों के ख़ून के प्यासे थे अब वोह काफ़िरों की जान के दुश्मन बन गए और इनतिहाई बे ख़ौफ़ी और बहादुरी के साथ मक्का में इस्लाम की तब्लीग़ करने लगे यहां तक कि इन की दा'वते इस्लाम से बड़े बड़े काफ़िरों के अंधेरे दिलों में नूरे ईमान की रौशनी से उजाला हो गया और येही उ़मैर अब सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहलाने लगे।[1] (تاریخ طبری ص۱۳۵۴)

मुजाहिदीने बद्र के फ़ज़ाइल

जो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم जंगे बद्र के जिहाद में शरीक हो गए वोह तमाम सह़ाबा में एक ख़ुसूसी शरफ़ के साथ मुमताज़ हैं और इन ख़ुश नसीबों के फ़ज़ाइल में एक बहुत ही

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدرالكبرىٰ، ص٢٧٤، ٢٧٥

अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत येह है कि इन सआ़दत मन्दों के बारे में **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया कि

"बेशक **अल्लाह** तआ़ला अहले बद्र से वाक़िफ़ है और उस ने येह फ़रमा दिया है कि तुम अब जो अ़मल चाहो करो बिला शुबा तुम्हारे लिये जन्नत वाजिब हो चुकी है या (येह फ़रमाया) कि मैं ने तुम्हें बख़्श दिया है।"[1] (بخاری باب فضل من شہد بدراً ج۲ص ۵۶۷)

अबू लहब की इ़ब्रतनाक मौत

अबू लहब जंगे बद्र में शरीक नहीं हो सका। जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश शिकस्त खा कर मक्का वापस आए तो लोगों की ज़बानी जंगे बद्र के ह़ालात सुन कर अबू लहब को इनतिहाई रन्जो मलाल हुवा। इस के बा'द ही वोह चेचक की बड़ी बीमारी में मुब्तला हो गया जिस से उस का तमाम बदन सड़ गया और आठवें दिन मर गया। अ़रब के लोग चेचक से बहुत डरते थे और इस बीमारी में मरने वाले को बहुत ही मन्ह़ूस समझते थे इस लिये इस के बेटों ने भी तीन दिन तक इस की लाश को हाथ नहीं लगाया मगर इस ख़याल से कि लोग ता'ना मारेंगे एक गढ़ा खोद कर लकड़ियों से धकेलते हुए ले गए और उस गढ़े में लाश को गिरा कर ऊपर से मिट्टी डाल दी और बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने तह़रीर फ़रमाया कि दूर से लोगों ने उस गढ़े में इस क़दर पथ्थर फेंके कि उन पथ्थरों से उस की लाश छुप गई।[2] (زُرقانی ج۱ص ۴۵۲)

ग़ज़्वए बनी क़ैनुक़ाअ़

रमज़ान सि. 2 हि. में **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم जंगे बद्र के मा'रिके से वापस हो कर मदीना वापस लौटे। इस के बा'द ही

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب فضل من شهد بدراً، الحدیث:۳۹۸۳، ج۳، ص۱۲

2 ......المواهب اللدنیة و الزرقانی، باب غزوة بدرالکبریٰ، ج۲، ص۳۴۰۔۳۴۱

15 शव्वाल सि. 2 हि. में ''ग़ज़्वए बनी क़ैनुक़ाअ़'' का वाक़िआ़ दरपेश हो गया। हम पहले लिख चुके हैं कि मदीने के अत्राफ़ में यहूदियों के तीन बड़े बड़े क़बाइल आबाद थे। बनू क़ैनुक़ाअ़, बनू नज़ीर, बनू क़ुरैज़ा। इन तीनों से मुसलमानों का मुआ़हदा था मगर जंगे बद्र के बा'द जिस क़बीले ने सब से पहले मुआ़हदा तोड़ा वोह क़बीलए बनू क़ैनुक़ाअ़ के यहूदी थे जो सब से ज़ियादा बहादुर और दौलत मन्द थे। वाक़िआ़ येह हुवा कि एक बुरक़अ़ पोश अ़रब औ़रत यहूदियों के बाज़ार में आई, दुकान दारों ने शरारत की और उस औ़रत को नंगा कर दिया इस पर तमाम यहूदी क़ह्क़हा लगा कर हंसने लगे, औ़रत चिल्लाई तो एक अ़रब आया और दुकान दार को क़त्ल कर दिया इस पर यहूदियों और अ़रबों में लड़ाई शुरूअ़ हो गई। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़बर हुई तो तशरीफ़ लाए और यहूदियों की इस ग़ैर शरीफ़ाना ह़रकत पर मलामत फ़रमाने लगे। इस पर बनू क़ैनुक़ाअ़ के ख़बीस यहूदी बिगड़ गए और बोले कि जंगे बद्र की फ़त्ह़ से आप मग़रूर न हो जाएं मक्का वाले जंग के मुआ़मले में बे ढंगे थे इस लिये आप ने उन को मार लिया अगर हम से आप का साबिक़ा पड़ा तो आप को मा'लूम हो जाएगा कि जंग किस चीज़ का नाम है ? और लड़ने वाले कैसे होते हैं ? जब यहूदियों ने मुआ़हदा तोड़ दिया तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने निस्फ़ शव्वाल सि. 2 हि. सनीचर के दिन इन यहूदियों पर ह़म्ला कर दिया। यहूदी जंग की ताब न ला सके और अपने क़लओं का फाटक बन्द कर के क़लआ़ बन्द हो गए मगर पन्दरह दिन के मुह़ासरे के बा'द बिल आख़िर यहूदी मग़लूब हो गए और हथयार डाल देने पर मजबूर हो गए। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के मश्वरे से इन यहूदियों को शहर बदर कर दिया और येह अ़ह्द शिकन, बदज़ात यहूदी मुल्के शाम के मक़ाम ''अज़्रआ़त'' में जा कर आबाद हो गए।[1] (زُرقانی ج۱ص۴۵۸)

1 ......المواھب اللدنیة و الزرقانی ،غزوة بنی قینقاع، ج۲،ص۳۴۸۔۳۵۲

ग़ज़्वए सवीक़

येह हम तह़रीर कर चुके हैं कि जंगे बद्र के बा'द मक्का के हर घर में सरदाराने क़ुरैश के क़त्ल हो जाने का मातम बरपा था और अपने मक़्तूलों का बदला लेने के लिये मक्का का बच्चा बच्चा मुज़्तरिब और बे क़रार था। चुनान्चे ग़ज़्वए सवीक़ और जंगे उहुद वग़ैरा की लड़ाइयां मक्का वालों के इसी जोशे इनतिक़ाम का नतीजा हैं।

उ़त्बा और अबू जहल के क़त्ल हो जाने के बा'द अब क़ुरैश का सरदारे आ'ज़म अबू सुफ़्यान था और इस मन्सब का सब से बड़ा काम ग़ज़्वए बद्र का इनतिक़ाम था। चुनान्चे अबू सुफ़्यान ने क़सम खा ली कि जब तक बद्र के मक़्तूलों का मुसलमानों से बदला न लूंगा न ग़ुस्ले जनाबत करूंगा न सर में तेल डालूंगा। चुनान्चे जंगे बद्र के दो माह बा'द ज़ुल हि़ज्जा सि. 2 हि. में अबू सुफ़्यान दो सो शुतर सुवारों का लश्कर ले कर मदीने की त़रफ़ बढ़ा। इस को यहूदियों पर बड़ा भरोसा बल्कि नाज़ था कि मुसलमानों के मुक़ाबले में वोह इस की इमदाद करेंगे। इसी उम्मीद पर अबू सुफ़्यान पहले "हुयय बिन अख़्त़ब" यहूदी के पास गया मगर उस ने दरवाज़ा भी नहीं खोला। वहां से मायूस हो कर सलाम बिन मुश्कम से मिला जो क़बीलए बनू नज़ीर के यहूदियों का सरदार था और यहूद के तिजारती ख़ज़ाने का मेनेजर भी था उस ने अबू सुफ़्यान का पुरजोश इस्तिक़्बाल किया और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के तमाम जंगी राज़ों से अबू सुफ़्यान को आगाह कर दिया। सुब्ह़ को अबू सुफ़्यान ने मक़ामे "अ़रीज़" पर ह़म्ला किया येह बस्ती मदीने से तीन मील की दूरी पर थी, इस ह़म्ले में अबू सुफ़्यान ने एक अन्सारी सह़ाबी को जिन का नाम सा'द बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ था शहीद कर दिया और कुछ दरख़्तों को काट डाला और मुसलमानों के चन्द घरों और बाग़ात को आग लगा कर फूंक दिया, इन ह़रकतों से उस के गुमान में उस की क़सम पूरी हो गई। जब **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

को इस की ख़बर हुई तो आप ने उस का तआ़क़ुब किया लेकिन अबू सुफ़्यान बद ह़वास हो कर इस क़दर तेज़ी से भागा कि भागते हुए अपना बोझ हलका करने के लिये सत्तू की बोरियां जो वोह अपनी फ़ौज के राशन के लिये लाया था फेंकता चला गया जो मुसलमानों के हाथ आए। अ़रबी ज़बान में सत्तू को सवीक़ कहते हैं इस लिये इस ग़ज़्वे का नाम ग़ज़्वए सवीक़ पड़ गया।[1]

(مدارج جلد۲ص۱۰۴)

ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھا की शादी

इसी साल सि. 2 हि. में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की सब से प्यारी बेटी ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھا की शादी ख़ाना आबादी ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہ وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم के साथ हुई। येह शादी इनतिहाई वक़ार और सादगी के साथ हुई। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ को हुक्म दिया कि वोह ह़ज़राते अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर व उ़समान व अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और दूसरे चन्द मुहाजिरीन व अन्सार رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُم اَجۡمَعِیۡن को मदऊ़ करें। चुनान्चे जब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُم जम्अ़ हो गए तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बा पढ़ा और निकाह़ पढ़ा दिया। शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने शहज़ादिये इस्लाम ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھا को जहेज़ में जो सामान दिया उस की फ़ेहरिस्त येह है। एक कमली, बान की एक चारपाई, चमड़े का गद्दा जिस में रूई की जगह खजूर की छाल भरी हुई थी, एक छागल, एक मशक, दो चक्कियां, दो मिट्टी के घड़े। ह़ज़रते ह़ारिसा बिन नो'मान अन्सारी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ ने अपना एक मकान हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को इस लिये नज़्र कर दिया कि इस में ह़ज़रते अ़ली और ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُما सुकूनत फ़रमाएं। जब ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھا रुख़्सत

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب دوم، ج۲،ص۱۰٤

हो कर नए घर में गई तो इशा की नमाज़ के बा'द **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और एक बरतन में पानी त़लब फ़रमाया और उस में कुल्ली फ़रमा कर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के सीने और बाज़ूओं पर पानी छिड़का फिर ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बुलाया और उन के सर और सीने पर भी पानी छिड़का और फिर यूं दुआ़ फ़रमाई कि या **अल्लाह** मैं अ़ली और फ़ाति़मा और इन की औलाद को तेरी पनाह में देता हूं कि येह सब शैत़ान के शर से मह़फ़ूज़ रहें।[1] (زُرقانی ج۲ص۴)

सि. 2 हि. के मुतफ़र्रिक़ वाक़िआ़त

﴾1﴿ इसी साल रोज़ा और ज़कात की फ़र्ज़िय्यत के अह़काम नाज़िल हुए और नमाज़ की त़रह़ रोज़ा और ज़कात भी मुसलमानों पर फ़र्ज़ हो गए।[2]

﴾2﴿ इसी साल **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ईदुल फ़ित्र की नमाज़ जमाअ़त के साथ ईदगाह में अदा फ़रमाई, इस से क़ब्ल ईदुल फ़ित्र की नमाज़ नहीं हुई थी।

﴾3﴿ सदक़ए फ़ित्र अदा करने का हुक्म इसी साल जारी हुवा।[3]

﴾4﴿ इसी साल 10 ज़ुल ह़िज्जा को **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बक़र ईद की नमाज़ अदा फ़रमाई और नमाज़ के बा'द दो मेंढों की क़ुरबानी फ़रमाई।

﴾5﴿ इसी साल "ग़ज़्वए क़र क़र अल कदर" व "ग़ज़्वए बह़रान" वग़ैरा चन्द छोटे छोटे ग़ज़वात भी पेश आए जिन में **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने शिर्कत फ़रमाई मगर इन ग़ज़वात में कोई जंग नहीं हुई।[4]

---

1 ......المواهب اللدنية و الزرقاني ،ذكر تزويج على بفاطمة ، ج٢، ص٣٥٧-٣٦١ ملخصاً

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى، تحويل القبلة...الخ، ج٢،ص٢٥٣،٢٥٤

3 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى، تحويل القبلة...الخ، ج٢،ص٢٥٤

4 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى،تحويل القبلة...الخ، ج٢،ص٢٥٤

आठवां बाब
हिजरत का तीसरा साल
सि. 3 हि.

जंगे उहुद

इस साल का सब से बड़ा वाक़िआ "जंगे उहुद" है । "उहुद" एक पहाड़ का नाम है जो मदीनए मुनव्वरह से तक़रीबन तीन मील दूर है । चूंकि ह़क़ व बातिल का येह अ़ज़ीम मा'रिका इसी पहाड़ के दामन में दरपेश हुवा इसी लिये येह लड़ाई "ग़ज़्वए उहुद" के नाम से मश्हूर है और क़ुरआने मजीद की मुख़्तलिफ़ आयतों में इस लड़ाई के वाक़िआत का ख़ुदा वन्दे आ़लम ने तज़्किरा फ़रमाया है ।

जंगे उहुद का सबब

येह आप पढ़ चुके हैं कि जंगे बद्र में सत्तर कुफ़्फ़ार क़त्ल और सत्तर गरिफ़्तार हुए थे । और जो क़त्ल हुए उन में से अकसर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सरदार बल्कि ताजदार थे । इस बिना पर मक्का का एक एक घर मातम कदा बना हुवा था । और क़ुरैश का बच्चा बच्चा जोशे इनतिक़ाम में आतशे ग़ैज़ो ग़ज़ब का तन्नूर बन कर मुसलमानों से लड़ने के लिये बे क़रार था । अ़रब ख़ुसूसन क़ुरैश का येह तुर्रए इम्तियाज़ था कि वोह अपने एक एक मक़्तूल के ख़ून का बदला लेने को इतना बड़ा फ़र्ज़ समझते थे जिस को अदा किये बिग़ैर गोया इन की हस्ती क़ाइम नहीं रह सकती थी । चुनान्चे जंगे बद्र के मक़्तूलों के मातम से जब क़ुरैशियों को फ़ुरसत मिली तो उन्हों ने येह अ़ज़्म कर लिया कि जिस क़दर मुमकिन हो जल्द से जल्द मुसलमानों से अपने मक़्तूलों के ख़ून का बदला लेना चाहिये । चुनान्चे अबू जहल का बेटा इकरिमा और उमय्या का लड़का सफ़्वान और दूसरे कुफ़्फ़ारे क़ुरैश जिन के बाप, भाई, बेटे जंगे बद्र में क़त्ल हो चुके थे सब के सब अबू सुफ़्यान के पास गए और कहा कि मुसलमानों ने

हमारी क़ौम के तमाम सरदारों को क़त्ल कर डाला है। इस का बदला लेना हमारा क़ौमी फ़रीज़ा है लिहाज़ा हमारी ख़्वाहिश है कि क़ुरैश की मुश्तरिका तिजारत में इमसाल जितना नफ़्अ़ हुवा है वोह सब क़ौम के जंगी फ़ंड में जम्अ़ हो जाना चाहिये और इस रक़म से बेहतरीन हथयार ख़रीद कर अपनी लश्करी त़ाक़त बहुत जल्द मज़बूत़ कर लेनी चाहिये और फिर एक अ़ज़ीम फ़ौज ले कर मदीने पर चढ़ाई कर के बानिये इस्लाम और मुसलमानों को दुन्या से नेस्तो नाबूद कर देना चाहिये। अबू सुफ़्यान ने ख़ुशी ख़ुशी क़ुरैश की इस दरख़्वास्त को मन्ज़ूर कर लिया। लेकिन क़ुरैश को जंगे बद्र से येह तजरिबा हो चुका था कि मुसलमानों से लड़ना कोई आसान काम नहीं है। आंधियों और तूफ़ानों का मुक़ाबला, समुन्दर की मौजों से टकराना, पहाड़ों से टक्कर लेना बहुत आसान है मगर मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आ़शिक़ों से जंग करना बड़ा ही मुश्किल काम है। इस लिये इन्हों ने अपनी जंगी त़ाक़त में बहुत ज़ियादा इज़ाफ़ा करना निहायत ज़रूरी ख़याल किया। चुनान्चे इन लोगों ने हथयारों की तय्यारी और सामाने जंग की ख़रीदारी में पानी की त़रह़ रुपिया बहाने के साथ साथ पूरे अ़रब में जंग का जोश और लड़ाई का बुख़ार फैलाने के लिये बड़े बड़े शाइ़रों को मुन्तख़ब किया जो अपनी आतश बयानी से तमाम क़बाइले अ़रब में जोशे इनतिक़ाम की आग लगा दें "अ़म्र जमह़ी" और "मसाफ़ेअ़" येह दोनों अपनी शाइ़री में त़ाक़ और आतश बयानी में शोह्रए आफ़ाक़ थे, इन दोनों ने बा क़ाइ़दा दौरा कर के तमाम क़बाइले अ़रब में ऐसा जोश और इश्तिआ़ल पैदा कर दिया कि बच्चा बच्चा "ख़ून का बदला ख़ून" का ना'रा लगाते हुए मरने और मारने पर तय्यार हो गया जिस का नतीजा येह हुवा कि एक बहुत बड़ी फ़ौज तय्यार हो गई। मर्दों के साथ साथ बड़े बड़े मुअ़ज़्ज़ज़ और मालदार घरानों की औ़रतें भी जोशे इनतिक़ाम से लबरेज़ हो कर फ़ौज में शामिल हो गईं। जिन के बाप, भाई, बेटे, शोहर

जंगे बद्र में क़त्ल हुए थे। उन औरतों ने क़सम खा ली थी कि हम अपने रिश्तेदारों के क़ातिलों का ख़ून पी कर ही दम लेंगी। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हिन्द के बाप उ़त्बा और जुबैर बिन मुत़इम के चचा को जंगे बद्र में क़त्ल किया था। इस बिना पर "हिन्द" ने "वह़शी" को जो जुबैर बिन मुत़इम का ग़ुलाम था ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़त्ल पर आमादा किया और येह वा'दा किया कि अगर इस ने ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को क़त्ल कर दिया तो वोह इस कार गुज़ारी के सिले में आज़ाद कर दिया जाएगा।[1]

मदीने पर चढ़ाई

अल ग़रज़ बे पनाह जोशो ख़रोश और इनतिहाई तय्यारी के साथ लश्करे कुफ़्फ़ार मक्का से रवाना हुवा और अबू सुफ़्यान इस लश्करे जर्रार का सिपह सालार बना। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो ख़ुफ़्या त़ौर पर मुसलमान हो चुके थे और मक्का में रहते थे इन्हों ने एक ख़त़ लिख कर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की लश्कर कशी से मुत्त़लअ़ कर दिया।[2] जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को येह ख़ौफ़नाक ख़बर मिली तो आप ने 5 शव्वाल सि. 3 हि. को ह़ज़रते अ़दी बिन फ़ुज़ाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दोनों लड़कों ह़ज़रते अनस और ह़ज़रते मूनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को जासूस बना कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के लश्कर की ख़बर लाने के लिये रवाना फ़रमाया। चुनान्चे इन दोनों ने आ कर येह परेशान कुन ख़बर सुनाई कि अबू सुफ़्यान का लश्कर मदीने के बिल्कुल क़रीब आ गया है और उन के घोड़े मदीने की चरागाह (अ़रीज़) की तमाम घास चर गए।

मुसलमानों की तय्यारी और जोश

येह ख़बर सुन कर 14 शव्वाल सि. 3 हि. जुमुआ़ की रात में ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ व ह़ज़रते उसैद बिन हुज़ैर व ह़ज़रते

---

1 ......المواھب اللدنیة و الزرقانی،باب غزوۃ احد، ج۲،ص۳۸۶۔۳۹۱ ملتقطاً و ملخصاً

2 ......کتاب المغازی للواقدی ، غزوۃ احد،ج۱،ص۲۰۳،۲۰۴

सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم हथयार ले कर चन्द अन्सारियों के साथ रात भर काशानए नुबुव्वत का पहरा देते रहे और शहरे मदीना के अहम नाकों पर भी अन्सार का पहरा बिठा दिया गया। सुब्ह़ हो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अन्सार व मुहाजिरीन को जम्अ़ फ़रमा कर मश्वरा त़लब फ़रमाया कि शहर के अन्दर रह कर दुश्मनों की फ़ौज का मुक़ाबला किया जाए या शहर से बाहर निकल कर मैदान में येह जंग लड़ी जाए? मुहाजिरीन ने आ़म त़ौर पर और अन्सार में से बड़े बूढ़ों ने येह राय दी कि औ़रतों और बच्चों को क़लओ़ं में मह़फ़ूज़ कर दिया जाए और शहर के अन्दर रह कर दुश्मनों का मुक़ाबला किया जाए। मुनाफ़िक़ों का सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य भी इस मजलिस में मौजूद था। उस ने भी येही कहा कि शहर में पनाह गीर हो कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़म्लों की मुदाफ़अ़त की जाए, मगर चन्द कमसिन नौ जवान जो जंगे बद्र में शरीक नहीं हुए थे और जोशे जिहाद में आपे से बाहर हो रहे थे वोह इस राय पर अड़ गए कि मैदान में निकल कर इन दुश्मनाने इस्लाम से फ़ैसला कुन जंग लड़ी जाए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सब की राय सुन ली। फिर मकान में जा कर हथयार ज़ैबे तन फ़रमाया और बाहर तशरीफ़ लाए। अब तमाम लोग इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो गए कि शहर के अन्दर ही रह कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़म्लों को रोका जाए मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि पैग़म्बर के लिये येह ज़ैबा नहीं है कि हथयार पहन कर उतार दे यहां तक कि अल्लाह तआ़ला उस के और उस के दुश्मनों के दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे। अब तुम लोग ख़ुदा का नाम ले कर मैदान में निकल पड़ो। अगर तुम लोग सब्र के साथ मैदाने जंग में डटे रहोगे तो ज़रूर तुम्हारी फ़त्ह़ होगी।[1] (مدارج ج۲ص۱۱۴)

फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अन्सार के क़बीलए औस का झन्डा ह़ज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को और क़बीलए

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب سوم، ج۲، ص۱۱٤

ख़ज़रज का झन्डा हज़रते ख़ब्बाब बिन मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को और मुहाजिरीन का झन्डा हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को दिया और एक हज़ार की फ़ौज ले कर मदीने से बाहर निकले।[1]

(مدارج ج ۲ص ۱۱۴)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहूद की इमदाद को ठुकरा दिया

शहर से निकलते ही आप ने देखा कि एक फ़ौज चली आ रही है। आप ने पूछा कि येह कौन लोग हैं? लोगों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह रईसुल मुनाफ़िक़ीन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य के ह़लीफ़ यहूदियों का लश्कर है जो आप की इमदाद के लिये आ रहा है। आप ने इरशाद फ़रमाया कि :

"इन लोगों से कह दो कि वापस लौट जाएं। हम मुशरिकों के मुक़ाबले में मुशरिकों की मदद नहीं लेंगे।"[2] (مدارج جلد ۲ص ۱۱۴)

चुनान्चे यहूदियों का येह लश्कर वापस चला गया। फिर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य (मुनाफ़िक़ों का सरदार) भी जो तीन सो आदमियों को ले कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ आया था येह कह कर वापस चला गया कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने मेरा मश्वरा क़बूल नहीं किया और मेरी राय के ख़िलाफ़ मैदान में निकल पड़े, लिहाज़ा मैं इन का साथ नहीं दूंगा।[3] (مدارج جلد ۲ص ۱۱۵)

अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य की बात सुन कर क़बीलए ख़ज़रज में से "बनू सलमह" के और क़बीलए औस में से "बनू ह़ारिसा" के लोगों ने भी वापस लौट जाने का इरादा कर लिया मगर अल्लाह तआ़ला ने इन लोगों के दिलों में अचानक मह़ब्बते इस्लाम का ऐसा जज़्बा पैदा फ़रमा दिया कि इन लोगों के क़दम जम गए।

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب سوم، ج۲،ص ۱۱٤

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب سوم، ج۲،ص ۱۱٤

3 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی، غزوۃ احد، ج۲،ص ٤۰۱

चुनान्चे अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में इन लोगों का तज़्किरा फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि

اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ (1)
(آلِ عمران)

जब तुम में के दो गुरौहों का इरादा हुवा कि ना मर्दी कर जाएं और अल्लाह इन का संभालने वाला है और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा होना चाहिये

अब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के लश्कर में कुल सात सो सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم रह गए जिन में कुल एक सो ज़िरह पोश थे और कुफ़्फ़ार की फ़ौज में तीन हज़ार अशरार का लश्कर था जिन में सात सो ज़िरह पोश जवान, दो सो घोड़े, तीन हज़ार ऊंट और पन्दरह औ़रतें थीं।[2]

शहर से बाहर निकल कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी फ़ौज का मुआ़यना फ़रमाया और जो लोग कम उ़म्र थे, उन को वापस लौटा दिया कि जंग के होलनाक मौक़अ़ पर बच्चों का क्या काम ?[3]

बच्चों का जोशे जिहाद

मगर जब ह़ज़रते राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से कहा गया कि तुम बहुत छोटे हो, तुम भी वापस चले जाओ तो वोह फ़ौरन अंगूठों के बल तन कर खड़े हो गए ताकि इन का क़द ऊंचा नज़र आए। चुनान्चे उन की येह तरकीब चल गई और वोह फ़ौज में शामिल कर लिये गए।

ह़ज़रते समुरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो एक कम उ़म्र नौ जवान थे जब इन को वापस किया जाने लगा तो इन्हों ने अ़र्ज़ किया कि मैं राफ़ेअ़

---

1 ......پ٤،آل عمران:١٢٢

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ احد، ج٢،ص٤٠١،٤٠٢

3 ......المواھب اللدنية مع شرح الزرقانی، غزوۃ احد، ج٢،ص٣٩٩-٤٠١ملتقطاً
ومدارج النبوت، قسم سوم، باب چھارم، ج٢،ص١١٤

बिन ख़दीज को कुश्ती में पछाड़ लेता हूं। इस लिये अगर वोह फ़ौज में ले लिये गए हैं तो फिर मुझ को भी ज़रूर जंग में शरीक होने की इजाज़त मिलनी चाहिये चुनान्चे दोनों का मुक़ाबला कराया गया और वाक़ेई हज़रते समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ज़मीन पर दे मारा। इस त़रह़ इन दोनों पुरजोश नौ जवानों को जंगे उहुद में शिर्कत की सआ़दत नसीब हो गई।[1]

(مدارج جلد۲ص۱۱۴)

ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मैदाने जंग में

मुशरिकीन तो 12 शव्वाल सि. 3 हि. बुध के दिन ही मदीना के क़रीब पहुंच कर कोहे उहुद पर अपना पड़ाव डाल चुके थे मगर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 14 शव्वाल सि. 3 हि. बा'द नमाज़े जुमुआ़ मदीने से रवाना हुए। रात को बनी नज्जार में रहे और 15 शव्वाल सनीचर के दिन नमाज़े फ़ज्र के वक़्त उहुद में पहुंचे। हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अज़ान दी और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने नमाज़े फ़ज्र पढ़ा कर मैदाने जंग में मोरचा बन्दी शुरूअ़ फ़रमाई। हज़रते अ़क्काशा बिन मोह़सिन असदी को लश्कर के मैमना (दाएं बाज़ू) पर और हज़रते अबू सलमह बिन अ़ब्दुल असद मख़्ज़ूमी को मैसरा (बाएं बाज़ू) पर और हज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ व हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास को मुक़द्दमा (अगले हिस्से) पर और हज़रते मिक़्दाद बिन अ़म्र को साक़ा (पिछले हिस्से) पर अफ़्सर मुक़र्रर फ़रमाया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) और सफ़ बन्दी के वक़्त उहुद पहाड़ को पुश्त पर रखा और कोहे ईनैन को जो वादिये क़नाह में है अपने बाईं त़रफ़ रखा। लश्कर के पीछे पहाड़ में एक दर्रा (तंग रास्ता) था जिस में से गुज़र कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुसलमानों की सफ़ों के पीछे से ह़म्ला आवर हो सकते थे इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस दर्रे की हि़फ़ाज़त के लिये पचास तीर अन्दाज़ों का एक दस्ता

[1]...... كتاب المغازى للواقدى،غزوة احد، ج ۱،ص۲۱٦

मुक़र्रर फ़रमा दिया और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस दस्ते का अफ़्सर बना दिया और येह हुक्म दिया कि देखो हम चाहे मग़लूब हों या ग़ालिब मगर तुम लोग अपनी इस जगह से उस वक़्त तक न हटना जब तक मैं तुम्हारे पास किसी को न भेजूं ।[1]

(مدارج جلد۲ص۱۱۵و بخاری باب ما یکرہ من التنازع)

मुशरिकीन ने भी निहायत बा क़ाइदगी के साथ अपनी सफ़ों को दुरुस्त किया । चुनान्चे उन्हों ने अपने लश्कर के मैमना पर ख़ालिद बिन वलीद को और मैसरह पर इकरिमा बिन अबू जह्ल को अफ़्सर बना दिया, सुवारों का दस्ता सफ़्वान बिन उमय्या की कमान में था । तीर अन्दाज़ों का एक दस्ता अलग था जिन का सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन रबीआ़ था और पूरे लश्कर का अ़लम बरदार त़ल्ह़ा बिन अबू त़ल्ह़ा था जो क़बीलए बनी अ़ब्दुद्दार का एक आदमी था ।[2]

(مدارج جلد۲ص۱۱۵)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जब देखा कि पूरे लश्करे कुफ़्फ़ार का अ़लम बरदार क़बीलए बनी अ़ब्दुद्दार का एक शख़्स है तो आप ने भी इस्लामी लश्कर का झन्डा ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अ़ता फ़रमाया जो क़बीलए बनू अ़ब्दुद्दार से तअ़ल्लुक़ रखते थे ।

जंग की इब्तिदा

सब से पहले कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की औ़रतें दफ़ बजा बजा कर ऐसे अश्आ़र गाती हुई आगे बढ़ीं जिन में जंगे बद्र के मक़्तूलीन का मातम और इनतिक़ामे ख़ून का जोश भरा हुवा था । लश्करे कुफ़्फ़ार के सिपह सालार अबू सुफ़्यान की बीवी ''हिन्द'' आगे आगे और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के मुअ़ज़्ज़ज़ घरानों की चौदह औ़रतें उस के साथ साथ थीं और येह सब आवाज़ मिला

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب چهارم، ج۲،ص۱۱۴،۱۱۵ ملتقطاً

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب چهارم، ج۲،ص۱۱۵

कर येह अश्आ़र गा रही थीं कि

نَحْنُ بَنَاتُ طَارِق   نَمْشِیْ عَلَی النَّمَارِق

हम आस्मान के तारों की बेटियां हैं हम क़ालीनों पर चलने वालियां हैं

اِنْ تُقْبِلُوْا نُعَانِق   اَوْ تُدْبِرُوْا نُفَارِق

अगर तुम बढ़ कर लड़ोगे तो हम तुम से गले मिलेंगे और पीछे क़दम हटाया तो हम तुम से अलग हो जाएंगे।(1)

मुशरिकीन की सफ़ों में से सब से पहले जो शख़्स जंग के लिये निकला वोह "अबू आ़मिर औसी" था। जिस की इ़बादत और पारसाई की बिना पर मदीना वाले उस को "राहिब" कहा करते थे मगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का नाम "फ़ासिक़" रखा था। ज़मानए जाहिलिय्यत में येह शख़्स अपने क़बीले औस का सरदार था और मदीने का मक़्बूले आ़म आदमी था। मगर जब रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم मदीने में तशरीफ़ लाए तो येह शख़्स जज़्बए ह़सद में जल भुन कर ख़ुदा के मह़बूब صَلَّی اللّٰهُ تعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त करने लगा और मदीने से निकल कर मक्का चला गया और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को आप से जंग करने पर आमादा किया। इस को बड़ा भरोसा था कि मेरी क़ौम जब मुझे देखेगी तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का साथ छोड़ देगी। चुनान्चे उस ने मैदान में निकल कर पुकारा कि ऐ अन्सार ! क्या तुम लोग मुझे पहचानते हो ? मैं अबू आ़मिर राहिब हूं। अन्सार ने चिल्ला कर कहा : हां, हां ! ऐ फ़ासिक़ ! हम तुझ को ख़ूब पहचानते हैं। ख़ुदा तुझे ज़लील फ़रमाए। अबू आ़मिर अपने लिये फ़ासिक़ का लफ़्ज़ सुन कर तिलमिला गया। कहने लगा कि हाए अफ़्सोस ! मेरे बा'द मेरी क़ौम बिल्कुल ही बदल गई। फिर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की एक टोली जो उस के साथ थी

मुसलमानों पर तीर बरसाने लगी। इस के जवाब में अन्सार ने भी इस ज़ोर की संगबारी की, कि अबू आ़मिर और उस के साथी मैदाने जंग से भाग खड़े हुए।[1] (مدارج جلد۲ص۱۱۶)

लश्करे कुफ़्फ़ार का अ़लम बरदार त़ल्ह़ा बिन अबू त़ल्ह़ा सफ़ से निकल कर मैदान में आया और कहने लगा कि क्यूं मुसलमानों ! तुम में कोई ऐसा है कि या वोह मुझ को दोज़ख़ में पहुंचा दे या ख़ुद मेरे हाथ से वोह जन्नत में पहुंच जाए। उस का येह घमन्ड से भरा हुवा कलाम सुन कर ह़ज़रते अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि हां "मैं हूं" येह कह कर फ़ातेहे ख़ैबर ने ज़ुल फ़िक़ार के एक ही वार से उस का सर फाड़ दिया और वोह ज़मीन पर तड़पने लगा और शेरे ख़ुदा मुंह फैर कर वहां से हट गए। लोगों ने पूछा कि आप ने उस का सर क्यूं नहीं काट लिया ? शेरे ख़ुदा ने फ़रमाया कि जब वोह ज़मीन पर गिरा तो उस की शर्मगाह खुल गई और वोह मुझे क़सम देने लगा कि मुझे मुआ़फ़ कर दीजिये उस बे ह़या को बे सित्र देख कर मुझे शर्म दामन गीर हो गई इस लिये मैं ने मुंह फैर लिया।[2]

(مدارج ج۲ص۱۱۶)

त़ल्ह़ा के बा'द उस का भाई उ़समान बिन अबू त़ल्ह़ा रज्ज़ का येह शे'र पढ़ता हुवा ह़म्ला आवर हुवा कि

اِنَّ عَـلٰی اَهْلِ اللِّوَاءِ حَقًّا! اَنْ یَّخْضِبَ اللِّوَاءَ اَوْ تَنْدَقَّا

अ़लम बरदार का फ़र्ज़ है कि नेज़े को ख़ून में रंग दे या वोह टकरा कर टूट जाए।

ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस के मुक़ाबले के लिये तलवार ले कर निकले और उस के शाने पर ऐसा भरपूर हाथ मारा कि तलवार रीढ़ की हड्डी को काटती हुई कमर तक पहुंच गई और

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب سوم، ج۲،ص۱۱۶

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب سوم، ج۲،ص۱۱۶

आप के मुंह से येह ना'रा निकला कि

أَنَا ابْنُ سَاقِي الْحَجِيْج

मैं हाजियों के सैराब करने वाले अ़ब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूं।[1] (مدارج جلد۲ص۱۱۶)

इस के बा'द आ़म जंग शुरूअ़ हो गई और मैदाने जंग में कुश्तो ख़ून का बाज़ार गर्म हो गया।

अबू दजाना की ख़ुश नसीबी

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में एक तलवार थी जिस पर येह शे'र कन्दा था कि

فِي الْجُبْنِ عَارٌ وَفِي الْإِقْبَالِ مَكْرُمَةٌ

وَالْمَرْءُ بِالْجُبْنِ لَا يَنْجُوْ مِنَ الْقَدَرِ

बुज़दिली में शर्म है और आगे बढ़ कर लड़ने में इ़ज़्ज़त है और आदमी बुज़दिली कर के तक़्दीर से नहीं बच सकता।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "कौन है जो इस तलवार को ले कर इस का ह़क़ अदा करे" येह सुन कर बहुत से लोग इस सआ़दत के लिये लपके मगर येह फ़ख़्रो शरफ़ ह़ज़रते अबू दजाना رَضِيَ اللّٰه تعَالٰى عَنْهُ के नसीब में था कि ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी येह तलवार अपने हाथ से ह़ज़रते अबू दजाना رَضِيَ اللّٰه تعَالٰى عَنْهُ के हाथ में दे दी। वोह येह ए'ज़ाज़ पा कर जोशे मसर्रत में मस्तो बेख़ुद हो गए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस तलवार का ह़क़ क्या है ? इरशाद फ़रमाया कि "तू इस से काफ़िरों को क़त्ल करे यहां तक कि येह टेढ़ी हो जाए।"

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب سوم، ج۲،ص۱۱۶

हज़रते अबू दजाना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं इस तलवार को इस के ह़क़ के साथ लेता हूं। फिर वोह अपने सर पर एक सुर्ख़ रंग का रुमाल बांध कर अकड़ते और इतराते हुए मैदाने जंग में निकल पड़े और दुश्मनों की सफ़ों को चीरते हुए और तलवार चलाते हुए आगे बढ़ते चले जा रहे थे कि एक दम उन के सामने अबू सुफ़्यान की बीवी "हिन्द" आ गई। हज़रते अबू दजाना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इरादा किया कि इस पर तलवार चला दें मगर फिर इस ख़याल से तलवार हटा ली कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस तलवार के लिये येह ज़ैब नहीं देता कि वोह किसी औ़रत का सर काटे।[1] (زُرقانی ج۲ص۲۹ومدارج جلد۲ص۱۱۶)

हज़रते अबू दजाना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की त़रह़ हज़रते ह़म्ज़ा और हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا भी दुश्मनों की सफ़ों में घुस गए और कुफ़्फ़ार का क़त्ले आ़म शुरूअ़ कर दिया।

हज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इनतिहाई जोशे जिहाद में दो दस्ती तलवार मारते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। इसी ह़ालत में "सबाअ़ ग़बशानी" सामने आ गया आप ने तड़प कर फ़रमाया कि ऐ औ़रतों का ख़तना करने वाली औ़रत के बच्चे ! ठहर, कहां जाता है ? तू **अल्लाह** व रसूल से जंग करने चला आया है। येह कह कर उस पर तलवार चला दी, और वोह दो टुकड़े हो कर ज़मीन पर ढेर हो गया।[2]

हज़रते ह़म्ज़ा की शहादत

"वह़शी" जो एक ह़बशी ग़ुलाम था और उस का आक़ा जुबैर बिन मुत़अ़म उस से वा'दा कर चुका था कि तू अगर हज़रते

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب سوم، ج۲،ص۱۱۵

2 ......صحیح البخاری،کتاب المغازی، باب قتل حمزۃ رضی اللّٰہ عنہ...الخ،الحدیث: ۴۰۷۲،ج۳،ص۴۱

हृम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को क़त्ल कर दे तो मैं तुझ को आज़ाद कर दूंगा। वहृशी एक चट्टान के पीछे छुपा हुवा था और हृज़रते हृम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ताक में था जूं ही आप उस के क़रीब पहुंचे उस ने दूर से अपना नेज़ा फेंक कर मारा जो आप की नाफ़ में लगा। और पुश्त के पार हो गया। इस हाल में भी हृज़रते हृम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तलवार ले कर उस की त़रफ़ बढ़े मगर ज़ख़्म की ताब न ला कर गिर पड़े और शहादत से सरफ़राज़ हो गए।[1]

(بخاری باب قتل حمزہ ج۲ص۵۸۲)

कुफ़्फ़ार के अ़लम बरदार ख़ुद कट कट कर गिरते चले जा रहे थे मगर उन का झन्डा गिरने नहीं पाता था एक के क़त्ल होने के बा'द दूसरा उस झन्डे को उठा लेता था। उन काफ़िरों के जोशो ख़रोश का येह आ़लम था कि जब एक काफ़िर ने जिस का नाम "सवाब" था मुशरिकीन का झन्डा उठाया तो एक मुसलमान ने उस को इस ज़ोर से तलवार मारी कि उस के दोनों हाथ कट कर ज़मीन पर गिर पड़े मगर उस ने अपने क़ौमी झन्डे को ज़मीन पर गिरने नहीं दिया बल्कि झन्डे को अपने सीने से दबाए हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। इसी हालत में मुसलमानों ने उस को क़त्ल कर दिया। मगर वोह क़त्ल होते होते येही कहता रहा कि "मैं ने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया।" उस के मरते ही एक बहादुर औ़रत जिस का नाम "अ़मरह" था उस ने झपट कर क़ौमी झन्डे को अपने हाथ में ले कर बुलन्द कर दिया, येह मन्ज़र देख कर क़ुरैश को ग़ैरत आई और उन की बिखरी हुई फ़ौज सिमट आई और उन के उखड़े हुए क़दम फिर जम गए। (مدارج جلد۲ص۱۱۶وغیرہ)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب قتل حمزۃ رضی اللّٰہ عنہ...الخ،الحدیث: ۴۰۷۲، ج۳،ص ۴۱

ह़ज़रते ह़न्ज़ला की शहादत

अबू आ़मिर राहिब कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से लड़ रहा था मगर उस के बेटे ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ परचमे इस्लाम के नीचे जिहाद कर रहे थे। ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दीजिये मैं अपनी तलवार से अपने बाप अबू आ़मिर राहिब का सर काट कर लाऊं मगर **हु़ज़ूर** रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की रह़मत ने येह गवारा नहीं किया कि बेटे की तलवार बाप का सर काटे। ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ इस क़दर जोश में भरे हुए थे कि सर हथेली पर रख कर इनतिहाई जां बाज़ी के साथ लड़ते हुए क़ल्बे लश्कर तक पहुंच गए और कुफ़्फ़ार के सिपह सालार अबू सुफ़्यान पर ह़म्ला कर दिया और क़रीब था कि ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ की तलवार अबू सुफ़्यान का फ़ैसला कर दे कि अचानक पीछे से शद्दाद बिन अल अस्वद ने झपट कर वार को रोका और ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ को शहीद कर दिया।

ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के बारे में **हु़ज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "फ़िरिश्ते ह़न्ज़ला को ग़ुस्ल दे रहे हैं!" जब उन की बीवी से उन का ह़ाल दरयाफ़्त किया गया तो उस ने कहा कि जंगे उह़ुद की रात में वोह अपनी बीवी के साथ सोए थे, ग़ुस्ल की ह़ाजत थी मगर दा'वते जंग की आवाज़ उन के कान में पड़ी तो वोह इसी ह़ालत में शरीके जंग हो गए। येह सुन कर **हु़ज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येही वजह है जो फ़िरिश्तों ने उस को ग़ुस्ल दिया। इसी वाक़िए की बिना पर ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ को "**ग़सीलुल मलाएका**" के लक़ब से याद किया जाता है।[1] (مدارج ج٢ ص١٢٣)

---

[1]......المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی ، باب غزوة احد، ج٢،ص٤٠٨،٤٠٩

इस जंग में मुजाहिदीने अन्सार व मुहाजिरीन बड़ी दिलेरी और जांबाज़ी से लड़ते रहे यहां तक कि मुशरिकीन के पाउं उखड़ गए। ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते अबू दजाना व ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم वग़ैरा के मुजाहिदाना ह़म्लों ने मुशरिकीन की कमर तोड़ दी। कुफ़्फ़ार के तमाम अ़लम बरदार उ़समान, अबू सा'द, मसाफ़ेअ़, त़ल्ह़ा बिन अबू त़ल्ह़ा वग़ैरा एक एक कर के कट कट कर ज़मीन पर ढेर हो गए। कुफ़्फ़ार को शिकस्त हो गई और वोह भागने लगे और उन की औ़रतें जो अश्आ़र पढ़ पढ़ कर लश्करे कुफ़्फ़ार को जोश दिला रही थीं वोह भी बद ह़वासी के आ़लम में अपने इज़ार उठाए हुए बरह्ना साक़ भागती हुई पहाड़ों पर दौड़ती हुई चली जा रही थीं और मुसलमान क़त्लो ग़ारत में मश्ग़ूल थे।[1]

ना गहां जंग का पांसा पलट गया

कुफ़्फ़ार की भगदड़ और मुसलमानों के फ़ातिह़ाना क़त्लो ग़ारत का येह मन्ज़र देख कर वोह पचास तीर अन्दाज़ मुसलमान जो दर्रे की ह़िफ़ाज़त पर मुक़र्रर किये गए थे वोह भी आपस में एक दूसरे से येह कहने लगे कि ग़नीमत लूटो, ग़नीमत लूटो, तुम्हारी फ़त्ह़ हो गई। उन लोगों के अफ़्सर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने हर चन्द रोका और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم का फ़रमान याद दिलाया और फ़रमाने मुस्त़फ़वी की मुख़ालफ़त से डराया मगर उन तीर अन्दाज़ मुसलमानों ने एक न सुनी और अपनी जगह छोड़ कर माले ग़नीमत लूटने में मसरूफ़ हो गए। लश्करे कुफ़्फ़ार का एक अफ़्सर ख़ालिद बिन वलीद पहाड़ की बुलन्दी से येह मन्ज़र देख रहा था। जब उस ने देखा कि दर्रा पहरेदारों से ख़ाली हो गया है फ़ौरन ही उस ने दर्रे के रास्ते से फ़ौज ला कर मुसलमानों के पीछे से ह़म्ला कर दिया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने चन्द जांबाज़ों के साथ इनतिहाई दिलेराना मुक़ाबला किया मगर येह

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى، باب غزوة احد، ج٢، ص٤٠٥، ٤٠٩، ٤١٠ ملتقطاً

सब के सब शहीद हो गए। अब क्या था काफ़िरों की फ़ौज के लिये रास्ता साफ़ हो गया ख़ालिद बिन वलीद ने ज़बर दस्त ह़म्ला कर दिया। येह देख कर भागती हुई कुफ़्फ़ारे कुरैश की फ़ौज भी पलट पड़ी। मुसलमान माले ग़नीमत लूटने में मसरूफ़ थे पीछे फिर कर देखा तो तलवारें बरस रही थीं और कुफ़्फ़ार आगे पीछे दोनों त़रफ़ से मुसलमानों पर ह़म्ला कर रहे थे और मुसलमानों का लश्कर चक्की के दो पाटों में दाने की त़रह़ पिसने लगा और मुसलमानों में ऐसी बद ह़वासी और अब्तरी फैल गई कि अपने और बेगाने की तमीज़ नहीं रही। ख़ुद मुसलमान मुसलमानों की तलवारों से क़त्ल हुए। चुनान्चे ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिद ह़ज़रते यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ुद मुसलमानों की तलवार से शहीद हुए। ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ चिल्लाते ही रहे कि "ऐ मुसलमानो! येह मेरे बाप हैं, येह मेरे बाप हैं।" मगर कुछ अ़जीब बद ह़वासी फैली हुई थी कि किसी को किसी का ध्यान ही नहीं था और मुसलमानों ने ह़ज़रते यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शहीद कर दिया।[1]

ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर भी शहीद

फिर बड़ा ग़ज़ब येह हुवा कि लश्करे इस्लाम के अ़लम बरदार ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर इब्ने क़मीआ काफ़िर झपटा और उन के दाएं हाथ पर इस ज़ोर से तलवार चला दी कि उन का दायां हाथ कट कर गिर पड़ा। इस जांबाज़ मुहाजिर ने झपट कर इस्लामी झन्डे को बाएं हाथ से संभाल लिया मगर इब्ने क़मीआ ने तलवार मार कर उन के बाएं हाथ को भी शहीद कर दिया दोनों हाथ कट चुके थे मगर ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने दोनों कटे हुए बाज़ूओं से परचमे इस्लाम को अपने सीने से लगाए हुए खड़े रहे और बुलन्द आवाज़ से येह आयत पढ़ते रहे कि

1 ......المواهب اللدنية والزرقاني ، باب غزوة احد، ج٢،ص ٤١١،٤١٣ومدارج النبوت، قسم سوم، باب سوم، ج٢،ص ١١٧

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ[1]

फिर इब्ने क़मीआ ने इन को तीर मार कर शहीद कर दिया। हज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो सूरत में **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कुछ मुशाबेह थे उन को ज़मीन पर गिरते हुए देख कर कुफ़्फ़ार ने ग़ुल मचा दिया कि (مَعَاذَاللّٰہ) **हुज़ूर** ताजदारे आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم क़त्ल हो गए।[2]

اَللّٰہُ اَکْبَر ! इस आवाज़ ने ग़ज़ब ही ढा दिया मुसलमान येह सुन कर बिल्कुल ही सरासीमा और परागन्दा दिमाग़ हो गए और मैदाने जंग छोड़ कर भागने लगे। बड़े बड़े बहादुरों के पाउं उखड़ गए और मुसलमानों में तीन गुरौह हो गए। कुछ लोग तो भाग कर मदीने के क़रीब पहुंच गए, कुछ लोग सहम कर मुर्दा दिल हो गए जहां थे वहीं रह गए अपनी जान बचाते रहे या जंग करते रहे, कुछ लोग जिन की ता'दाद तक़रीबन बारह थी वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साबित क़दम रहे। इस हलचल और भगदड़ में बहुत से लोगों ने तो बिल्कुल ही हिम्मत हार दी और जो जांबाज़ी के साथ लड़ना चाहते थे वोह भी दुश्मनों के दो तरफ़ा हम्लों के नरग़े में फंस कर मजबूर व लाचार हो चुके थे। ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم कहां हैं ? और किस हाल में हैं ? किसी को इस की ख़बर नहीं थी।[3]

हज़रते अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तलवार चलाते और दुश्मनों की सफ़ों को दरहम बरहम करते चले जाते थे मगर वोह

1..... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और मुहम्मद (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) तो एक रसूल हैं इन से पहले और रसूल हो चुके।* مدارج النبوت، قسم سوم، باب سوم، ج۲،ص۱۲۴

2.....المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب غزوة احد، ج۲،ص۴۱۴ومدارج النبوت، قسم سوم، باب چهارم، ج۲،ص۱۲۴

3.....شرح الزرقاني على المواهب، باب غزوة احد،ج۲،ص۴۱۵

हर त़रफ़ मुड़ मुड़ कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देखते थे मगर जमाले नुबुव्वत नज़र न आने से वोह इनतिहाई इज़्तिराब व बे क़रारी के आलम में थे।[1] ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चचा ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लड़ते लड़ते मैदाने जंग से भी कुछ आगे निकल पड़े वहां जा कर देखा कि कुछ मुसलमानों ने मायूस हो कर हथयार फेंक दिये हैं। ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा कि तुम लोग यहां बैठे क्या कर रहे हो ? लोगों ने जवाब दिया कि अब हम लड़ कर क्या करेंगे ? जिन के लिये लड़ते थे वोह तो शहीद हो गए। ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि अगर वाक़ेई रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो चुके तो फिर हम उन के बा'द ज़िन्दा रह कर क्या करेंगे ? चलो हम भी इसी मैदान में शहीद हो कर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास पहुंच जाएं। येह कह कर आप दुश्मनों के लश्कर में लड़ते हुए घुस गए और आख़िरी दम तक इनतिहाई जोशे जिहाद और जांबाज़ी के साथ जंग करते रहे यहां तक कि शहीद हो गए। लड़ाई ख़त्म होने के बा'द जब इन की लाश देखी गई तो अस्सी से ज़ियादा तीर व तलवार और नेज़ों के ज़ख़्म इन के बदन पर थे काफ़िरों ने इन के बदन को छलनी बना दिया था और नाक, कान वग़ैरा काट कर इन की सूरत बिगाड़ दी थी, कोई शख़्स इन की लाश को पहचान न सका सिर्फ़ इन की बहन ने इन की उंगलियों को देख कर इन को पहचाना।[2] (بخاری غزوۂ اُحد ج۲ ص ۵۷۹ ومسلم جلد۲ ص ۳۸)

इसी त़रह़ ह़ज़रते साबित दह़दाह़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने मायूस हो जाने वाले अन्सारियों से कहा कि ऐ जमाअ़ते अन्सार ! अगर बिलफ़र्ज़ रसूले अकरम

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب چہارم، ج۲،ص ۱۲۱

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ احد،ج۲،ص۴۱۷ ملخصاً

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم शहीद भी हो गए तो तुम हिम्मत क्यूं हार गए ? तुम्हारा अल्लाह तो ज़िन्दा है लिहाज़ा तुम लोग उठो और अल्लाह के दीन के लिये जिहाद करो, येह कह कर आप ने चन्द अन्सारियों को अपने साथ लिया और लश्करे कुफ़्फ़ार पर भूके शेरों की त़रह़ ह़म्ला आवर हो गए और आख़िर ख़ालिद बिन वलीद के नेज़े से जामे शहादत नोश कर लिया।[1] (اصابہ،ترجمہ ثابت بن دحداح)

जंग जारी थी और जां निसाराने इस्लाम जो जहां थे वहीं लड़ाई में मसरूफ़ थे मगर सब की निगाहें इनतिहाई बे क़रारी के साथ जमाले नुबुव्वत को तलाश करती थीं, ऐन मायूसी के आ़लम में सब से पहले जिस ने ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का जमाल देखा वोह ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ख़ुश नसीब आंखें हैं, उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को पहचान कर मुसलमानों को पुकारा कि ऐ मुसलमानो ! इधर आओ, रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह हैं, इस आवाज़ को सुन कर तमाम जां निसारों में जान पड़ गई और हर त़रफ़ से दौड़ दौड़ कर मुसलमान आने लगे, कुफ़्फ़ार ने भी हर त़रफ़ से ह़म्ला रोक कर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर क़ातिलाना ह़म्ला करने के लिये सारा ज़ोर लगा दिया। लश्करे कुफ़्फ़ार का दल बादल हुजूम के साथ उमंड पड़ा और बार बार मदनी ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर यलग़ार करने लगा मगर ज़ुल फ़िक़ार की बिजली से येह बादल फट फट कर रह जाता था।[2]

ज़ियाद बिन सकन की शुजाअ़त और शहादत

एक मरतबा कुफ़्फ़ार का हुजूम ह़म्ला आवर हुवा तो सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "कौन है जो मेरे ऊपर अपनी

---

1 ......الاصابة فی تمییز الصحابة ، ثابت بن الدحداح ، ج ۱،ص ۵۰۳

2 ......الاکتفا، باب ذکر مغازی الرسول صلی اللّٰه علیه وسلم، ج ۱،ص ۳۸۰

जान कुरबान करता है ?" येह सुनते ही ह़ज़रते ज़ियाद बिन सकन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पांच अन्सारियों को साथ ले कर आगे बढ़े और हर एक ने लड़ते हुए अपनी जानें फ़िदा कर दीं। ह़ज़रते ज़ियाद बिन सकन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ज़ख़्मों से लाचार हो कर ज़मीन पर गिर पड़े थे मगर कुछ कुछ जान बाक़ी थी, **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि उन की लाश को मेरे पास उठा लाओ, जब लोगों ने उन की लाश को बारगाहे रिसालत में पेश किया तो ह़ज़रते ज़ियाद बिन सकन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने खिसक कर महबूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के क़दमों पर अपना मुंह रख दिया और इसी ह़ालत में उन की रूह़ परवाज़ कर गई।[1]

اَللّٰہُ اَکْبَر ! ह़ज़रते ज़ियाद बिन सकन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इस मौत पर लाखों ज़िन्दगियां कुरबान ! سُبْحٰنَ اللّٰہ

بچہ ناز رفتہ باشد ز جہاں نیاز مندے

کہ بوقت جاں سپردن بسرش رسیدہ باشی

खजूर खाते खाते जन्नत में

इस घुमसान की लड़ाई और मारधाड़ के हंगामों में एक बहादुर मुसलमान खड़ा हुवा, निहायत बे परवाई के साथ खजूरें खा रहा था। एक दम आगे बढ़ा और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर मैं इस वक़्त शहीद हो जाऊं तो मेरा ठिकाना कहां होगा ? आप ने इरशाद फ़रमाया कि तू जन्नत में जाएगा। वोह बहादुर इस फ़रमाने बिशारत को सुन कर मस्तो बेख़ुद हो गया। एक दम कुफ़्फ़ार के हुजूम में कूद पड़ा और ऐसी शुजाअ़त के साथ लड़ने लगा कि काफ़िरों के दिल दहल गए। इसी त़रह जंग करते करते शहीद हो गया।[2] (بخاری غزوۂ اُحد ج۲ ص۵۷۹)

---

1 ......دلائل النبوۃ للبیھقی ، باب تحریض النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ،ج۳،ص۲۳۲

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ احد، الحدیث:۴۰۴۶،ج۳،ص۳۵

लंगड़ाते हुए बिहिश्त में

हज़रते अ़म्र बिन जमूह़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ लंगड़े थे, येह घर से निकलते वक़्त येह दुआ़ मांग कर चले थे कि या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! मुझ को मैदाने जंग से अहलो इयाल में आना नसीब मत कर, इन के चार फ़रज़न्द भी जिहाद में मसरूफ़ थे। लोगों ने इन को लंगड़ा होने की बिना पर जंग करने से रोक दिया तो येह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बारगाह में गिड़गिड़ा कर अ़र्ज़ करने लगे कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझ को जंग में लड़ने की इजाज़त अ़ता फ़रमाइये, मेरी तमन्ना है कि मैं भी लंगड़ाता हुवा बाग़े बिहिश्त में ख़िरामां ख़िरामां चला जाऊं। उन की बे क़रारी और गिर्या व ज़ारी से रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का क़ल्बे मुबारक मुतअस्सिर हो गया और आप ने उन को जंग की इजाज़त दे दी। येह ख़ुशी से उछल पड़े और अपने एक फ़रज़न्द को साथ ले कर काफ़िरों के हुजूम में घुस गए। हज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि मैं ने ह़ज़रते अ़म्र बिन जमूह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को देखा कि वोह मैदाने जंग में येह कहते हुए चल रहे थे कि "**ख़ुदा की क़सम** ! मैं जन्नत का मुश्ताक़ हूं।" उन के साथ साथ उन को सहारा देते हुए उन का लड़का भी इनतिहाई शुजाअ़त के साथ लड़ रहा था यहां तक कि येह दोनों शहादत से सरफ़राज़ हो कर बाग़े बिहिश्त में पहुंच गए। लड़ाई ख़त्म हो जाने के बा'द इन की बीवी हिन्द ज़ौजए अ़म्र बिन जमूह़ मैदाने जंग में पहुंची और उस ने एक ऊंट पर इन की और अपने भाई और बेटे की लाश को लाद कर दफ़्न के लिये मदीना लाना चाहा तो हज़ारों कोशिशों के बा वुजूद किसी त़रह़ भी वोह ऊंट एक क़दम भी मदीने की त़रफ़ नहीं चला बल्कि वोह मैदाने जंग ही की त़रफ़ भाग भाग कर जाता रहा। हिन्द ने जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से येह माजरा अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ने फ़रमाया कि येह बता : क्या अम्र बिन जमूह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने घर से निकलते वक़्त कुछ कहा था ? हिन्द ने कहा कि जी हां ! वोह येह दुआ़ कर के घर से निकले थे कि "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझ को मैदाने जंग से अहलो इ़याल में आना नसीब मत कर ।" आप ने इरशाद फ़रमाया कि येही वजह है कि ऊंट मदीने की त़रफ़ नहीं चल रहा है ।[1] (مدارج جلد۲ص۱۲۴)

ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ज़ख़्मी

इसी सरासीमगी और परेशानी के आ़लम में जब कि बिखरे हुए मुसलमान अभी रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास जम्अ़ भी नहीं हुए थे कि अ़ब्दुल्लाह बिन क़मीआ जो कु़रैश के बहादुरों में बहुत ही नामवर था । उस ने ना गहां **हु़जू़र** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को देख लिया । एक दम बिजली की त़रह़ सफ़ों को चीरता हुवा आया और ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर क़ातिलाना ह़म्ला कर दिया । ज़ालिम ने पूरी त़ाक़त से आप के चेहरए अन्वर पर तलवार मारी जिस से ख़ौ़द की दो कड़ियां रुख़े अन्वर में चुभ गईं । एक दूसरे काफ़िर ने आप के चेहरए अक़्दस पर ऐसा पथ्थर मारा कि आप के दो दन्दाने मुबारक शहीद, और नीचे का मुक़द्दस होंट ज़ख़्मी हो गया । इसी ह़ालत में उबय्य बिन ख़लफ़ मलऊ़न अपने घोड़े पर सुवार हो कर आप को शहीद कर देने की निय्यत से आगे बढ़ा । **हु़जू़रे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने एक जां निसार सह़ाबी ह़ज़रते ह़ारिस बिन समा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से एक छोटा सा नेज़ा ले कर उबय्य बिन ख़लफ़ की गरदन पर मारा जिस से वोह तिलमिला गया । गरदन पर बहुत मा'मूली ज़ख़्म आया और वोह भाग निकला मगर अपने लश्कर में जा कर अपनी गरदन के ज़ख़्म के बारे में लोगों से अपनी तक्लीफ़ और परेशानी ज़ाहिर करने लगा और बे पनाह ना क़ाबिले बरदाश्त दर्द की शिकायत करने लगा । इस पर उस के साथियों ने

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب چهارم، ج۲،ص۱۲٤

कहा कि "येह तो मा'मूली ख़राश है, तुम इस क़दर परेशान क्यूं हो ?" उस ने कहा कि तुम लोग नहीं जानते कि एक मरतबा मुझ से मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने कहा था कि मैं तुम को क़त्ल करूंगा इस लिये। येह तो बहर हाल ज़ख़्म है मेरा तो ए'तिक़ाद है कि अगर वोह मेरे ऊपर थूक देते तो भी मैं समझ लेता कि मेरी मौत यक़ीनी है।[1]

इस का वाक़िआ येह है कि उबय्य बिन ख़लफ़ ने मक्का में एक घोड़ा पाला था जिस का नाम इस ने "औ़द" रखा था। वोह रोज़ाना उस को चराता था और लोगों से कहता था कि मैं इसी घोड़े पर सुवार हो कर मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को क़त्ल करूंगा। जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस की ख़बर हुई तो आप ने फ़रमाया कि اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰى मैं उबय्य बिन ख़लफ़ को क़त्ल करूंगा। चुनान्चे उबय्य बिन ख़लफ़ अपने उसी घोड़े पर चढ़ कर जंगे उहुद में आया था जो येह वाक़िआ पेश आया।[2]

उबय्य बिन ख़लफ़ नेज़े के ज़ख़्म से बे क़रार हो कर रास्ते भर तड़पता और बिलबिलाता रहा। यहां तक कि जंगे उहुद से वापस आते हुए मक़ामे "सरफ़" में मर गया।[3] (زُرقانی علی المواہب ج۲ص۴۵)

इस तरह इब्ने क़मीआ मलऊ़न जिस ने **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर पर तलवार चला दी थी एक पहाड़ी बकरे को ख़ुदा वन्दे क़हहार व जब्बार ने उस पर मुसल्लत़ फ़रमा दिया और उस ने इस को सींग मार मार कर छलनी बना डाला और पहाड़ की बुलन्दी से नीचे गिरा दिया जिस से इस की लाश के टुकड़े टुकड़े हो कर ज़मीन पर बिखर गई।[4] (زُرقانی ج۲ص۳۹)

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب چهارم، ج۲،ص۱۲۷۔۱۲۹ ملتقطاً

2 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد ، باب من قتل من المسلمین یوم احد،ج۲،ص۳۵

3 ......المواهب اللدنيةو شرح الزرقانی ،باب غزوة احد، ج۲،ص۴۳۷

4 ......المواهب اللدنيةو شرح الزرقانی ،باب غزوة احد، ج۲،ص۴۲۶

सहा़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم का जोशे जां निसारी

जब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ज़ख़्मी हो गए तो चारों त़रफ़ से कुफ़्फ़ार ने आप पर तीर व तलवार का वार शुरूअ़ कर दिया और कुफ़्फ़ार का बे पनाह हुजूम आप के हर चहार त़रफ़ से ह़म्ला करने लगा जिस से आप कुफ़्फ़ार के नरगे़ में मह़सूर होने लगे। येह मन्ज़र देख कर जां निसार सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم का जोशे जां निसारी से ख़ून खौलने लगा और वोह अपना सर हथेली पर रख कर आप को बचाने के लिये इस जंग की आग में कूद पड़े और आप के गिर्द एक ह़ल्क़ा बना लिया। ह़ज़रते अबू दजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ झुक कर आप के लिये ढाल बन गए और चारों त़रफ़ से जो तलवारें बरस रही थीं उन को वोह अपनी पुश्त पर लेते रहे और आप तक किसी तलवार या नेजे़ की मार को पहुंचने ही नहीं देते थे। ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ की जां निसारी का येह आ़लम था कि वोह कुफ़्फ़ार की तलवारों के वार को अपने हाथ पर रोकते थे यहां तक कि इन का एक हाथ कट कर शल हो गया और इन के बदन पर पेंतीस या उन्तालीस ज़ख़्म लगे। ग़रज़ जां निसार सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त में अपनी जानों की परवा नहीं की और ऐसी बहादुरी और जांबाज़ी से जंग करते रहे कि तारीखे़ आ़लम में इस की मिसाल नहीं मिल सकती। ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ निशाना बाज़ी में मशहूर थे। उन्हों ने इस मौक़अ़ पर इस क़दर तीर बरसाए कि कई कमानें टूट गईं। उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपनी पीठ के पीछे बिठा लिया था ताकि दुश्मनों के तीर या तलवार का कोई वार आप पर न आ सके। कभी कभी आप दुश्मनों की फ़ौज को देखने के लिये गरदन उठाते तो ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ अ़र्ज़ करते कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! आप गरदन न उठाएं, कहीं ऐसा न हो कि दुश्मनों का कोई तीर आप को लग जाए।

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप मेरी पीठ के पीछे ही रहें मेरा सीना आप के लिये ढाल बना हुवा है ।[1]

(بخاری غزوۂ احد ص ۵۸۱)

हज़रते क़तादा बिन नो'मान अन्सारी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर को बचाने के लिये अपना चेहरा दुश्मनों के सामने किये हुए थे । ना गहां काफ़िरों का एक तीर इन की आंख में लगा और आंख बह कर इन के रुख़्सार पर आ गई । हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से उन की आंख को उठा कर आंख के हल्क़े में रख दिया और यूं दुआ फ़रमाई कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! क़तादा की आंख बचा ले जिस ने तेरे रसूल के चेहरे को बचाया है । मश्हूर है कि उन की वोह आंख दूसरी आंख से ज़ियादा रौशन और ख़ूब सूरत हो गई ।[2] (زُرقانی ج۲ص۴۲)

हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ भी तीर अन्दाज़ी में इनतिहाई बा कमाल थे । येह भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मुदाफ़अ़त में जल्दी जल्दी तीर चला रहे थे और हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ुद अपने दस्ते मुबारक से तीर उठा उठा कर इन को देते थे और फ़रमाते थे कि ऐ सा'द ! तीर बरसाते जाओ तुम पर मेरे मां बाप क़ुरबान ।[3]

(بخاری غزوۂ احد ص ۵۸۰)

ज़ालिम कुफ़्फ़ार इनतिहाई बे दर्दी के साथ हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर तीर बरसा रहे थे मगर उस वक़्त भी ज़बाने मुबारक पर येह दुआ थी رَبِّ اغْفِرْ قَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب اذهمت طائفتان...الخ، الحدیث:٤٠٦٤، ج٣، ص٣٨ وشرح الزرقانی علی المواهب، باب غزوة احد، ج٢، ص٤٢٤

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی، باب غزوة احد، ج٢، ص٤٣٢

3 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب اذهمت...الخ، الحدیث:٤٠٥٥، ج٣، ص٣٧

या'नी ऐ अल्लाह ! मेरी क़ौम को बख़्श दे वोह मुझे जानते नहीं हैं ।[1]

(مسلم غزوۂ احد ج۲ص ۹۰)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दन्दाने मुबारक के सदमे और चेहरए अन्वर के ज़ख़्मों से निढाल हो रहे थे । इस हालत में आप उन गढ़ों में से एक गढ़े में गिर पड़े जो अबू आमिर फ़ासिक़ ने जा बजा खोद कर उन को छुपा दिया था ताकि मुसलमान ला इल्मी में इन गढ़ों के अन्दर गिर पड़ें । हज़रते अली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आप का दस्ते मुबारक पकड़ा और हज़रते त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आप को उठाया । हज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ख़ौद (लोहे की टोपी) की कड़ी का एक ह़ल्क़ा जो चेहरए अन्वर में चुभ गया था अपने दांतों से पकड़ कर इस ज़ोर के साथ खींच कर निकाला कि इन का एक दांत टूट कर ज़मीन पर गिर पड़ा । फिर दूसरा ह़ल्क़ा जो दांतों से पकड़ कर खींचा तो दूसरा भी टूट गया । चेहरए अन्वर से जो ख़ून बहा उस को हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के वालिद हज़रते मालिक बिन सिनान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जोशे अ़क़ीदत से चूस चूस कर पी लिया और एक क़त़रा भी ज़मीन पर गिरने नहीं दिया । हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ मालिक बिन सिनान ! क्या तूने मेरा ख़ून पी डाला ? अ़र्ज़ किया कि जी हां या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! इरशाद फ़रमाया कि जिस ने मेरा ख़ून पी लिया जहन्नम की क्या मजाल जो उस को छू सके ।[2] (زُرقانی ج۲ص ۳۹)

इस ह़ालत में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने जां निसारों के साथ पहाड़ की बुलन्दी पर चढ़ गए जहां कुफ़्फ़ार के लिये पहुंचना दुश्वार था । अबू सुफ़्यान ने देख लिया और फ़ौज ले

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الجهاد و السیر ، باب غزوة احد ،الحدیث: ۱۷۹۲،ص ۹۹۰

2 ......المواهب اللدنیة و شرح الزرقانی ، باب غزوة احد، ج۲،ص ٤٢٤، ٤٢٦

कर वोह भी पहाड़ पर चढ़ने लगा लेकिन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और दूसरे जांनिसार सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने काफ़िरों पर इस ज़ोर से पथ्थर बरसाए कि अबू सुफ़्यान इस की ताब न ला सका और पहाड़ से उतर गया।[1]

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने चन्द सह़ाबा के साथ पहाड़ की एक घाटी में तशरीफ़ फ़रमा थे और चेहरए अन्वर से ख़ून बह रहा था। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपनी ढाल में पानी भर भर कर ला रहे थे और ह़ज़रते फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا अपने हाथों से ख़ून धो रही थीं मगर ख़ून बन्द नहीं होता था बिल आख़िर खजूर की चटाई का एक टुकड़ा जलाया और उस की राख ज़ख़्म पर रख दी तो ख़ून फ़ौरन ही थम गया।[2]

(بخاری غزوۂ احد ج۲ ص۵۸۴)

अबू सुफ़्यान का ना'रा और उस का जवाब

अबू सुफ़्यान जंग के मैदान से वापस जाने लगा तो एक पहाड़ी पर चढ़ गया और ज़ोर ज़ोर से पुकारा कि क्या यहां मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) हैं ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग इस का जवाब न दो, फिर उस ने पुकारा कि क्या तुम में अबू बक्र हैं ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कोई कुछ जवाब न दे, फिर उस ने पुकारा कि क्या तुम में उ़मर हैं ? जब इस का भी कोई जवाब नहीं मिला तो अबू सुफ़्यान घमन्ड से कहने लगा कि येह सब मारे गए क्यूं कि अगर ज़िन्दा होते तो ज़रूर मेरा जवाब देते। येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से ज़ब्त़ न हो सका और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने चिल्ला कर कहा कि ऐ दुश्मने ख़ुदा ! तू झूटा है। हम सब ज़िन्दा हैं।

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، شان عاصم بن ثابت، ص ٣٣٣

2 ......صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب ٢٦، الحديث: ٤٠٧٥، ج٣، ص ٤٣

अबू सुफ़्यान ने अपनी फ़त्ह के घमन्ड में येह ना'रा मारा कि "اُعْلُ هُبَل" "اُعْلُ هُبَل" या'नी ऐ हुबल ! तू सर बुलन्द हो जा। ऐ हुबल ! तू सर बुलन्द हो जा। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सहाबा से फ़रमाया कि तुम लोग भी इस के जवाब में ना'रा लगाओ। लोगों ने पूछा कि हम क्या कहें ? इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग येह ना'रा मारो कि اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلّ या'नी **अल्लाह** सब से बढ़ कर बुलन्द मर्तबा और बड़ा है। अबू सुफ़्यान ने कहा कि لَنَا الْعُزّٰى وَلَا عُزّٰى لَكُم या'नी हमारे लिये उ़ज़्ज़ा (बुत) है और तुम्हारे लिये कोई "उ़ज़्ज़ा" नहीं है। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग इस के जवाब में येह कहो कि اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰى لَكُم या'नी **अल्लाह** हमारा मददगार है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं।

अबू सुफ़्यान ने ब आवाज़े बुलन्द बड़े फ़ख़्र के साथ येह ए'लान किया कि आज का दिन बद्र के दिन का बदला और जवाब है। लड़ाई में कभी फ़त्ह कभी शिकस्त होती है। ऐ मुसलमानो ! हमारी फ़ौज ने तुम्हारे मक़्तूलों के कान, नाक काट कर उन की सूरतें बिगाड़ दी हैं मगर मैं ने न तो इस का हुक्म दिया था, न मुझे इस पर कोई रन्ज व अफ़्सोस हुवा है येह कह कर अबू सुफ़्यान मैदान से हट गया और चल दिया।[1] (زرقانی ج۲ ص۴۸ و بخاری غزوۂ احد ج۲ ص۵۷۹)

हिन्द जिगर ख़्वार

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की औ़रतों ने जंगे बद्र का बदला लेने के लिये जोश में शुहदाए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की लाशों पर जा कर उन के कान, नाक वग़ैरा काट कर सूरतें बिगाड़ दीं और अबू सुफ़्यान की बीवी हिन्द ने तो इस बे दर्दी का मुज़ाहरा किया कि इन आ'ज़ा का हार बना कर अपने गले में डाला। हिन्द ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मुक़द्दस लाश को तलाश करती फिर रही थी क्यूं कि ह़ज़रते ह़म्ज़ा ही ने जंगे बद्र के दिन हिन्द के बाप उ़त्बा

1 ......صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة احد، الحديث: ٤٠٤٣، ج٣، ص٣٤

को क़त्ल किया था। जब इस बे दर्द ने ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की लाश को पा लिया तो खंजर से इन का पेट फाड़ कर कलेजा निकाला और उस को चबा गई लेकिन ह़ल्क़ से न उतर सका इस लिये उगल दिया तारीख़ों में हिन्द का लक़ब जो "जिगर ख़्वार" है वोह इसी वाक़िए की बिना पर है। हिन्द और इस के शोहर अबू सुफ़्यान ने रमज़ान सि. 8 हि. में फ़त्ह़े मक्का के दिन इस्लाम क़बूल किया। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ)[1] (زُرقانی ج۲ص۴۷وغیرہ)

सा'द बिन अर्रबीअ़ की वसिय्यत

ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के हुक्म से ह़ज़रते सा'द बिन अर्रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की लाश की तलाश में निकला तो मैं ने उन को सकरात के आ़लम में पाया। उन्हों ने मुझ से कहा कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरा सलाम अ़र्ज़ कर देना और अपनी क़ौम को बा'दे सलाम मेरा येह पैग़ाम सुना देना कि जब तक तुम में से एक आदमी भी ज़िन्दा है अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तक कुफ़्फ़ार पहुंच गए तो ख़ुदा के दरबार में तुम्हारा कोई उ़ज़्र भी क़ाबिले क़बूल न होगा। येह कहा और उन की रूह़ परवाज़ कर गई।[2]
(زُرقانی ج۲ص۴۸)

ख़्वातीने इस्लाम के कारनामे

जंगे उहुद में मर्दों की त़रह़ औ़रतों ने भी बहुत ही मुजाहिदाना जज़्बात के साथ लड़ाई में ह़िस्सा लिया। ह़ज़रते बीबी आ़इशा और ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के बारे में ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि येह दोनों पाइंचे

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، غزوة احد، ج۲، ص٤٤٠
ومدارج النبوت، قسم سوم، باب چهارم، ج۲، ص۱۲۰

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني ، باب غزوة احد، ج۲، ص٤٤٥

चढ़ाए हुए मशक में पानी भर भर कर लाती थीं और मुजाहिदीन खुसूसन ज़ख़्मियों को पानी पिलाती थीं। इसी त़रह़ ह़ज़रते अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा ह़ज़रते बीबी उम्मे सलीत़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी बराबर पानी की मशक भर कर लाती थीं और मुजाहिदीन को पानी पिलाती थीं।[1] (بخاری ج۲ باب ذکر ام سلیط ص۵۸۲)

ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा की जां निसारी

ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा जिन का नाम "नसीबा" है जंगे उहुद में अपने शोहर ह़ज़रते ज़ैद बिन आ़सिम और दो फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़म्मारा और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को साथ ले कर आई थीं। पहले तो येह मुजाहिदीन को पानी पिलाती रहीं लेकिन जब **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर कुफ़्फ़ार की यलग़ार का होशरुबा मन्ज़र देखा तो मशक को फेंक दिया और एक ख़न्जर ले कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में सीना सिपर हो कर खड़ी हो गईं और कुफ़्फ़ार के तीर व तलवार के हर एक वार को रोकती रहीं। चुनान्चे उन के सर और गरदन पर तेरह ज़ख़्म लगे। इब्ने क़मीआ मलऊ़न ने जब **हुज़ूर** रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर तलवार चला दी तो बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आगे बढ़ कर अपने बदन पर रोका। चुनान्चे उन के कन्धे पर इतना गहरा ज़ख़्म आया कि ग़ार पड़ गया फिर खुद बढ़ कर इब्ने क़मीआ के शाने पर ज़ोरदार तलवार मारी लेकिन वोह मलऊ़न दौहरी ज़िरह पहने हुए था इस लिये बच गया।

ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मुझे एक काफ़िर ने ज़ख़्मी कर दिया और मेरे ज़ख़्म से ख़ून बन्द नहीं होता था। मेरी वालिदा ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा ने फ़ौरन अपना कपड़ा फाड़ कर ज़ख़्म को बांध दिया और कहा कि बेटा उठो, खड़े हो जाओ और फिर जिहाद

[1] ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب اذھمت طائفتان...الخ، الحدیث:٤٠٦٤، ج٣،ص٣٨وباب ذکرام سلیط،الحدیث:٤٠٧١،ج٣،ص٤١

में मश्गूल हो जाओ । इत्तिफ़ाक़ से वोही काफ़िर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने आ गया तो आप ने फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़म्मारा ! رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا देख तेरे बेटे को ज़ख़्मी करने वाला येही है । येह सुनते ही ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा ने झपट कर उस काफ़िर की टांग पर तलवार का ऐसा भरपूर हाथ मारा कि वोह काफ़िर गिर पड़ा और फिर चल न सका बल्कि सुरीन के बल घिसटता हुवा भागा । येह मन्ज़र देख कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم हंस पड़े और फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़म्मारा ! رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا तू ख़ुदा का शुक्र अदा कर कि उस ने तुझ को इतनी त़ाक़त और हिम्मत अ़त़ा फ़रमाई कि तूने ख़ुदा की राह में जिहाद किया, ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुआ़ फ़रमाइये कि हम लोगों को जन्नत में आप की ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ ह़ासिल हो जाए । उस वक़्त आप ने उन के लिये और उन के शोहर और उन के बेटों के लिये इस त़रह़ दुआ़ फ़रमाई कि اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُمْ رُفَقَائِيْ فِي الْجَنَّةِ या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! इन सब को जन्नत में मेरा रफ़ीक़ बना दे ।

ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ज़िन्दगी भर अ़लानिया येह कहती रहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इस दुआ़ के बा'द दुन्या में बड़ी से बड़ी मुसीबत भी मुझ पर आ जाए तो मुझे उस की कोई परवा नहीं है ।[1] (مدارج ج۲ص۱۲۶)

ह़ज़रते सफ़िय्या का ह़ौसला

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم की फूफी ह़ज़रते बीबी सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا अपने भाई ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की लाश पर आईं तो आप ने उन के बेटे ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को हुक्म दिया कि मेरी फूफी अपने भाई की लाश न देखने पाएं । ह़ज़रते बीबी सफ़िय्या

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب چهارم، ج۲،ص۱۲۶،۱۲۷

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने कहा कि मुझे अपने भाई के बारे में सब कुछ मा'लूम हो चुका है लेकिन मैं इस को खुदा की राह में कोई बड़ी कुरबानी नहीं समझती, फिर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की इजाज़त से लाश के पास गईं और येह मन्ज़र देखा कि प्यारे भाई के कान, नाक, आंख सब कटे पिटे शिकम चाक, जिगर चबाया हुवा पड़ा है, येह देख कर इस शेर दिल ख़ातून ने اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ के सिवा कुछ भी न कहा फिर उन की मग़फ़िरत की दुआ़ मांगती हुई चली आईं।[1] (طبری ص ۱۴۲۱)

एक अन्सारी औ़रत का सब्र

एक अन्सारी औ़रत जिस का शोहर, बाप, भाई सभी इस जंग में शहीद हो चुके थे तीनों की शहादत की ख़बर बारी बारी से लोगों ने उसे दी मगर वोह हर बार येही पूछती रही येह बताओ कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कैसे हैं? जब लोगों ने उस को बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ वोह ज़िन्दा और सलामत हैं तो बे इख़्तियार उस की ज़बान से इस शे'र का मज़्मून निकल पड़ा कि

तसल्ली है पनाहे बे कसां ज़िन्दा सलामत है
कोई परवा नहीं सारा जहां ज़िन्दा सलामत है

اَللّٰہُ اَکْبَر ! इस शेर दिल औ़रत का सब्र व ईसार का क्या कहना? शोहर, बाप, भाई, तीनों के क़त्ल से दिल पर सदमात के तीन तीन पहाड़ गिर पड़े हैं मगर फिर भी ज़बाने ह़ाल से उस का येही ना'रा है कि

मैं भी और बाप भी, शोहर भी, बरादर भी फ़िदा
ऐ शहे दीं ! तेरे होते हुए क्या चीज़ हैं हम [2]

(طبری ص ۱۴۲۵)

---

1 ......الاکتفا،باب ذکر مغازی الرسول صلی اللّٰہ علیہ وسلم ، ج۱،ص۳۸۶،۳۸۷

2 ......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، باب غزوۃ احد، ص ۳٤۰

शुहदाए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم

इस जंग में सत्तर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم ने जामे शहादत नोश फ़रमाया जिन में चार मुहाजिर और छियासठ अन्सार थे। तीस की ता'दाद में कुफ़्फ़ार भी निहायत ज़िल्लत के साथ क़त्ल हुए।(1)

(مدارج النبوۃ جلد۲ص۱۳۳)

मगर मुसलमानों की मुफ़्लिसी का येह आ़लम था कि इन शुहदाए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم के कफ़न के लिये कपड़ा भी नहीं था। ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ का येह ह़ाल था कि ब वक़्ते शहादत उन के बदन पर सिर्फ़ एक इतनी बड़ी कमली थी कि उन की लाश को क़ब्र में लिटाने के बा'द अगर उन का सर ढांपा जाता था तो पाउं खुल जाते थे और अगर पाउं को छुपाया जाता था तो सर खुल जाता था बिल आख़िर सर छुपा दिया गया और पाउं पर इज़्ख़र घास डाल दी गई। शुहदाए किराम ख़ून में लिथड़े हुए दो दो शहीद एक एक क़ब्र में दफ़्न किये गए। जिस को क़ुरआन ज़ियादा याद होता उस को आगे रखते।(2)

(بخاری باب اذالم یوجدالاثواب واحد ج۱ص۱۷۰ وبخاری ج۲ص۵۸۴ باب الذین استجابوا)

क़ुबूरे शुहदा की ज़ियारत

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم शुहदाए उहुद की क़ब्रों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और आप के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا का भी येही अ़मल रहा। एक मरतबा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم शुहदाए उहुद की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،باب غزوة احد، ج۲،ص۹ ٤١ ومدارج النبوت،قسم سوم، باب چهارم، ج۲،ص۱۳۳

2 ......صحيح البخاری،كتاب المغازی ،باب غزوة احد، الحديث: ٤٠٤٧، ج۳، ص۳٥ وباب من قتل من المسلمين...الخ،الحديث:٤٠٧٩،ج۳،ص٤٤ ماخوذاً

गए तो इरशाद फ़रमाया कि या **अल्लाह** ! तेरा रसूल गवाह है कि इस जमाअ़त ने तेरी रिज़ा की तृलब में जान दी है, फिर येह भी इरशाद फ़रमाया कि क़ियामत तक जो मुसलमान भी इन शहीदों की क़ब्रों पर ज़ियारत के लिये आएगा और इन को सलाम करेगा तो येह शुहदाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ उस के सलाम का जवाब देंगे ।

चुनान्चे ह़ज़रते फ़ातिमा खुज़ाइया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का बयान है कि मैं एक दिन उहुद के मैदान से गुज़र रही थी । ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़ब्र के पास पहुंच कर मैं ने अ़र्ज़ किया कि اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَاعَمَّ رَسُوْلِ اللّٰہ (ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ! आप पर सलाम हो) तो मेरे कान में येह आवाज़ आई कि[1] وَعَلَیْكِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ

(مدارج النبوۃ ج۲ص۱۳۵)

ह़याते शुहदा

छियालीस बरस के बा'द शुहदाए उहुद की बा'ज़ क़ब्रें खुल गईं तो उन के कफ़न सलामत और बदन तरो ताज़ा थे और तमाम अहले मदीना और दूसरे लोगों ने देखा कि शुहदाए किराम अपने ज़ख़्मों पर हाथ रखे हुए हैं और जब ज़ख़्म से हाथ उठाया तो ताज़ा ख़ून निकल कर बहने लगा ।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۱۳۵)

का'ब बिन अशरफ़ का क़त्ल

यहूदियों में का'ब बिन अशरफ़ बहुत ही दौलत मन्द था । यहूदी उ़लमा और यहूद के मज़्हबी पेशवाओं को अपने ख़ज़ाने से तनख़्वाह देता था । दौलत के साथ शाइरी में भी बहुत बा कमाल था जिस की वजह से न सिर्फ़ यहूदियों बल्कि तमाम क़बाइले अ़रब पर इस का एक ख़ास असर था । इस को **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से सख़्त अ़दावत थी । जंगे

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چهارم ، ج۲، ص۱۳۵

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چهارم ، ج۲، ص۱۳۵

बद्र में मुसलमानों की फ़त्ह़ और सरदाराने कुरैश के क़त्ल हो जाने से इस को इनतिहाई रन्ज व सदमा हुवा। चुनान्चे येह कुरैश की ता'ज़िय्यत के लिये मक्का गया और कुफ़्फ़ारे कुरैश का जो बद्र में मक़्तूल हुए थे ऐसा पुरदर्द मरसिया लिखा कि जिस को सुन कर सामिईन के मज्मअ़ में मातम बरपा हो जाता था। इस मरसिया को येह शख़्स कुरैश को सुना सुना कर खुद भी ज़ारो ज़ार रोता था और सामेईन को भी रुलाता था। मक्का में अबू सुफ़्यान से मिला और उस को मुसलमानों से जंगे बद्र का बदला लेने पर उभारा बल्कि अबू सुफ़्यान को ले कर ह़रम में आया और कुफ़्फ़ारे मक्का के साथ खुद भी का'बे का गि़लाफ़ पकड़ कर अ़ह्द किया कि मुसलमानों से बद्र का ज़रूर इनतिक़ाम लेंगे फिर मक्का से मदीना लौट कर आया तो **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की हिज्व लिख कर शाने अक़्दस में त़रह़ त़रह़ की गुस्ताख़ियां और बे अदबियां करने लगा, इसी पर बस नहीं किया बल्कि आप को चुपके से क़त्ल करा देने का क़स्द किया।

का'ब बिन अशरफ़ यहूदी की येह ह़रकतें सरासर उस मुआ़हदे की ख़िलाफ़ वरज़ी थी जो यहूद और अन्सार के दरमियान हो चुका था कि मुसलमानों और कुफ़्फ़ारे कुरैश की लड़ाई में यहूदी ग़ैर जानिब दार रहेंगे। बहुत दिनों तक मुसलमान बरदाश्त करते रहे मगर जब बानिये इस्लाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मुक़द्दस जान को ख़त़रा लाह़िक़ हो गया तो ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुस्लिमा ने ह़ज़रते अबू नाइला व ह़ज़रते अ़ब्बाद बिन बिशर व ह़ज़रते ह़ारिस बिन औस व ह़ज़रते अबू अ़बस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को साथ लिया और रात में का'ब बिन अशरफ़ के मकान पर गए और रबीउ़ल अव्वल सि. 3 हि. को उस के क़लए़ के फाटक पर उस को क़त्ल कर दिया और सुब्ह़ को बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर उस का सर ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़दमों में डाल दिया। इस क़त्ल के सिल्सिले में ह़ज़रते ह़ारिस बिन औस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ तलवार की नोक से ज़ख़्मी हो गए थे। मुह़म्मद बिन मुस्लिमा वग़ैरा इन को

कन्धों पर उठा कर बारगाहे रिसालत में लाए और आप ने अपना लुआबे दहन उन के ज़ख़्म पर लगा दिया तो उसी वक़्त शिफ़ाए कामिल हासिल हो गई।[1] (زرقانی جلد۲ص۱۰ و بخاری ج۲ص۵۷۶ و مسلم ص۱۱۰)

ग़ज़्वए ग़त़फ़ान

रबीउ़ल अव्वल सि. 3 हि. में **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को येह इत्तिलाअ़ मिली कि नज्द के एक मशहूर बहादुर "दा'सूर बिन अल हा़रिस मुहा़रिबी" ने एक लश्कर तय्यार कर लिया है ताकि मदीने पर ह़म्ला करे। इस ख़बर के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم चार सो सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की फ़ौज ले कर मुक़ाबले के लिये रवाना हो गए। जब दा'सूर को ख़बर मिली कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे दियार में आ गए तो वोह भाग निकला और अपने लश्कर को ले कर पहाड़ों पर चढ़ गया मगर उस की फ़ौज का एक आदमी जिस का नाम "ह़ब्बान" था गरिफ़्तार हो गया और फ़ौरन ही कलिमा पढ़ कर उस ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

इत्तिफ़ाक़ से उस रोज़ ज़ोरदार बारिश हो गई। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم एक दरख़्त के नीचे लेट कर अपने कपड़े सुखाने लगे। पहाड़ की बुलन्दी से काफ़िरों ने देख लिया कि आप बिल्कुल अकेले और अपने अस्ह़ाब से दूर भी हैं, एक दम दा'सूर बिजली की त़रह़ पहाड़ से उतर कर नंगी शमशीर हाथ में लिये हुए आया और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के सरे मुबारक पर तलवार बुलन्द कर के बोला कि बताइये अब कौन है जो आप को मुझ से बचा ले? आप ने जवाब दिया कि "मेरा **अल्लाह** मुझ को बचा लेगा।" चुनान्चे जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام दम ज़दन में ज़मीन पर उतर पड़े और दा'सूर के सीने में एक ऐसा घूंसा मारा कि तलवार उस के हाथ से गिर पड़ी

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،قتل كعب بن الاشرف...الخ،ج۲،ص۳۶۸ملخصاً

और दा'सूर ऐन ग़ैन हो कर रह गया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन तलवार उठा ली और फ़रमाया कि बोल अब तुझ को मेरी तलवार से कौन बचाएगा ? दा'सूर ने कांपते हुए भर्राई हुई आवाज़ में कहा कि "कोई नहीं।" रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को उस की बे कसी पर रह़म आ गया और आप ने उस का क़ुसूर मुआ़फ़ फ़रमा दिया। दा'सूर इस अख़्लाक़े नुबुव्वत से बेह़द मुतअस्सिर हुवा और कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया और अपनी क़ौम में आ कर इस्लाम की तब्लीग़ करने लगा।

इस ग़ज़्वे में कोई लड़ाई नहीं हुई और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ग्यारह या पन्दरह दिन मदीने से बाहर रह कर फिर मदीने आ गए।[1]

(زرقانی ج۲ص۱۵و بخاری ج۲ص۵۱۳)

बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने इस तलवार खींचने वाले वाक़िए को "**ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़**" के मौक़अ़ पर बताया है मगर ह़क़ येह है कि तारीख़े नबवी में इस क़िस्म के दो वाक़िआ़त हुए हैं। "**ग़ज़्वए ग़त़फ़ान**" के मौक़अ़ पर सरे अन्वर के ऊपर तलवार उठाने वाला "दा'सूर बिन ह़ारिस मुह़ारिबी" था जो मुसलमान हो कर अपनी क़ौम के इस्लाम का बाइ़स बना और ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ में जिस शख़्स ने **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم पर तलवार उठाई थी उस का नाम "ग़ौरस" था। उस ने इस्लाम क़बूल नहीं किया बल्कि मरते वक़्त तक अपने कुफ़्र पर अड़ा रहा। हां अलबत्ता उस ने येह मुआ़हदा कर लिया था कि वोह **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم से कभी जंग नहीं करेगा।[2] (زُرقانی ج۲ص۱۶)

सि. 3 हि. के वाक़िआ़ते मुतफ़र्रिक़ा

हिजरत के तीसरे साल में मुन्दरिजए ज़ैल वाक़िआ़त भी ज़ुहूर पज़ीर हुए।

---

1 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،باب غزوۃ غطفان ،ج۲،ص۳۷۸۔۳۸۲ ملخصاً

2 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،باب غزوۃ غطفان ،ج۲،ص۳۸۲ مختصراً

﴾1﴿ 15 रमज़ान सि. 3 हि. को ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत हुई।[1]

﴾2﴿ इसी साल **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बीबी ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमाया। ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साह़िब ज़ादी हैं जो ग़ज़्वए बद्र के ज़माने में बेवा हो गई थीं। इन के मुफ़स्सल ह़ालात अज़्वाजे मुत़ह्हरात के ज़िक्र में आगे तह़रीर किये जाएंगे।

﴾3﴿ इसी साल ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की साह़िब ज़ादी ह़ज़रते उम्मे कुलसूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ किया।[2]

﴾4﴿ मीरास के अह़काम व क़वानीन भी इसी साल नाज़िल हुए। अब तक मीरास में ज़विल अरह़ाम का कोई ह़िस्सा न था। इन के ह़ुक़ूक़ का मुफ़स्सल बयान नाज़िल हो गया।

﴾5﴿ अब तक मुशरिक औ़रतों का निकाह़ मुसलमानों से जाइज़ था मगर सि. 3 हि. में इस की ह़ुरमत नाज़िल हो गई और हमेशा के लिये मुशरिक औ़रतों का निकाह़ मुसलमानों से ह़राम कर दिया गया। (وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم)

नवां बाब

हिजरत का चौथा साल

हिजरत का चौथा साल भी कुफ़्फ़ार के साथ छोटी बड़ी लड़ाइयों ही में गुज़रा। जंगे बद्र की फ़त्हे मुबीन से मुसलमानों का रो'ब तमाम क़बाइले अ़रब पर बैठ गया था इस लिये तमाम क़बीले कुछ दिनों के लिये ख़ामोश बैठ गए थे लेकिन जंगे उहुद में मुसलमानों के जानी नुक़्सान का चरचा हो जाने से दोबारा तमाम क़बाइल दफ़्अ़तन इस्लाम और मुसलमानों को मिटाने के

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب سوم ،ج۲،ص۱۱۰

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب سوم ،ج۲،ص۱۱۰

लिये खड़े हो गए और मजबूरन मुसलमानों को भी अपने दिफ़ाअ़ के लिये लड़ाइयों में हिस्सा लेना पड़ा। सि. 4 हि. की मश्हूर लड़ाइयों में से चन्द येह हैं :

सरिय्यए अबू सलमह

यकुम मुहर्रम सि. 4 हि. को ना गहां एक शख़्स ने मदीने में येह ख़बर पहुंचाई कि तुलैहा बिन ख़ुवैलद और सलमह बिन ख़ुवैलद दोनों भाई कुफ़्फ़ार का लश्कर जम्अ़ कर के मदीने पर चढ़ाई करने के लिये निकल पड़े हैं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस लश्कर के मुक़ाबले में ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को डेढ़ सो मुजाहिदीन के साथ रवाना फ़रमाया जिस में ह़ज़रते अबू सबरह और ह़ज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जैसे मुअ़ज़्ज़ज़ मुहाजिरीन व अन्सार भी थे, लेकिन कुफ़्फ़ार को जब पता चला कि मुसलमानों का लश्कर आ रहा है तो वोह लोग बहुत से ऊंट और बकरियां छोड़ कर भाग गए जिन को मुसलमान मुजाहिदीन ने माले ग़नीमत बना लिया और लड़ाई की नौबत ही नहीं आई।[1] (زرقانی ج۲ص۶۲)

सरिय्यए अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस

मुहर्रम सि. 4 हि. को इत्तिलाअ़ मिली कि "ख़ालिद बिन सुफ़्यान हज़ली" मदीने पर ह़म्ला करने के लिये फ़ौज जम्अ़ कर रहा है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उस के मुक़ाबले के लिये ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को भेज दिया। आप ने मौक़अ़ पा कर ख़ालिद बिन सुफ़्यान हज़ली को क़त्ल कर दिया और उस का सर काट कर मदीना लाए और ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के क़दमों में डाल दिया। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की बहादुरी और जांबाज़ी से ख़ुश हो कर उन को अपना अ़सा (छड़ी) अ़ता फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि तुम इसी अ़सा को हाथ में ले कर

1 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی،باب سریۃ ابی سلمۃ ...الخ ،ج۲،ص۴۷۱ ملخصاً

जन्नत में चहल क़दमी करोगे। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! क़ियामत के दिन येह मुबारक अ़सा मेरे पास निशानी के तौ़र पर रहेगा। चुनान्चे इनतिक़ाल के वक़्त उन्हों ने येह वसिय्यत फ़रमाई कि इस अ़सा को मेरे कफ़न में रख दिया जाए।[1] (زرقانی ج۲ص۱۶۴)

हा़दिसए रजीअ़

अ़स्फ़ान व मक्का के दरमियान एक मक़ाम का नाम "रजीअ़" है। यहां की ज़मीन सात मुक़द्दस सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के ख़ून से रंगीन हुई इस लिये येह वाक़िआ़ "सरिय्यए रजीअ़" के नाम से मश्हूर है। येह दर्दनाक सानिहा़ भी सि. 4 हि. में पेश आया। इस का वाक़िआ़ येह है कि क़बीलए अ़ज़्ल व क़ारह के चन्द आदमी बारगाहे रिसालत में आए और अ़र्ज़ किया कि हमारे क़बीले वालों ने इस्लाम क़बूल कर लिया है। अब आप चन्द सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को वहां भेज दें ताकि वो हमारी क़ौम को अ़क़ाइदो आ'माले इस्लाम सिखा दें। उन लोगों की दर ख़्वास्त पर **हु़ज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दस मुन्तख़ब सहा़बा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को ह़ज़रते आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की मा तह़्ती में भेज दिया। जब येह मुक़द्दस क़ाफ़िला मक़ामे रजीअ़ पर पहुंचा तो ग़द्दार कुफ़्फ़ार ने बद अ़ह्दी की और क़बीलए बनू लह़यान के काफ़िरों ने दो सो की ता'दाद में जम्अ़ हो कर इन दस मुसलमानों पर ह़म्ला कर दिया मुसलमान अपने बचाव के लिये एक ऊंचे टीले पर चढ़ गए। काफ़िरों ने तीर चलाना शुरूअ़ किया और मुसलमानों ने टीले की बुलन्दी से संगबारी की। कुफ़्फ़ार ने समझ लिया कि हम हथयारों से इन मुसलमानों को ख़त्म नहीं कर सकते तो उन लोगों ने धोका दिया और कहा कि ऐ मुसलमानो ! हम तुम लोगों को अमान देते हैं और अपनी पनाह में लेते हैं इस लिये तुम लोग टीले से उतर आओ ह़ज़रते आ़सिम बिन

[1] المواھب اللدنية وشرح الزرقانی ، باب سرية ابی سلمة...الخ،ج۲،ص۴۷۳ ملخصاً
ومدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چهارم ، ج۲،ص۱۴۲،۱۴۳

साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि मैं किसी काफ़िर की पनाह में आना गवारा नहीं कर सकता। येह कह कर खुदा से दुआ़ मांगी कि "या अल्लाह ! तू अपने रसूल को हमारे ह़ाल से मुत्तलअ़ फ़रमा दे।" फिर वोह जोशे जिहाद में भरे हुए टीले से उतरे और कुफ़्फ़ार से दस्त बदस्त लड़ते हुए अपने छे साथियों के साथ शहीद हो गए। चूंकि ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने जंगे बद्र के दिन बड़े बड़े कुफ़्फ़ारे कुरैश को क़त्ल किया था इस लिये जब कुफ़्फ़ारे मक्का को ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत का पता चला तो कुफ़्फ़ारे मक्का ने चन्द आदमियों को मक़ामे रजीअ़ में भेजा ताकि उन के बदन का कोई ऐसा ह़िस्सा काट कर लाएं जिस से शनाख़्त हो जाए कि वाक़ेई ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ क़त्ल हो गए हैं लेकिन जब कुफ़्फ़ार आप की लाश की तलाश में उस मक़ाम पर पहुंचे तो उस शहीद की येह करामत देखी कि लाखों की ता'दाद में शहद की मख्खियों ने उन की लाश के पास इस त़रह़ घेरा डाल रखा है जिस से वहां तक पहुंचना ही ना मुमकिन हो गया है इस लिये कुफ़्फ़ारे मक्का नाकाम वापस चले गए।[1] (زرقانی ج۲ص۷۳و بخاری ج۲ص۵۶۹)

बाक़ी तीन अश्ख़ास ह़ज़रते ख़ुबैब व ह़ज़रते ज़ैद बिन दसिना व ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمۡ कुफ़्फ़ार की पनाह पर ए'तिमाद कर के नीचे उतरे तो कुफ़्फ़ार ने बद अ़ह्दी की और अपनी कमान की तांतों से इन लोगों को बांधना शुरूअ़ कर दिया, येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि येह तुम लोगों की पहली बद अ़ह्दी है और मेरे लिये अपने साथियों की त़रह़ शहीद हो जाना बेहतर है। चुनान्चे वोह उन काफ़िरों से लड़ते हुए शहीद हो गए।[2]

(بخاری ج۲ص۵۶۸وزُرقانی ج۲ص۶۷)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الرجیع...الخ،الحدیث:٤٠٨٦،ج٣،ص٤٦
والمواھب اللدنیة وشرح الزرقانی،باب بعث الرجیع،ج٢،ص٤٧٧_٤٨١ملخصاً وص٤٩٣_٤٩٥
ومدارج النبوت ، قسم سوم،باب چہارم ،ج٢،ص١٣٨ ملتقطاً

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الرجیع...الخ، الحدیث:٤٠٨٦،ج٣،ص٤٦
والمواھب اللدنیة و شرح الزرقانی ، باب بعث الرجیع ،ج٢،ص ٤٨١

लेकिन ह़ज़रते ख़ुबैब और ह़ज़रते ज़ैद बिन दसिना رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُمَا को काफ़िरों ने बांध दिया था इस लिये येह दोनों मजबूर हो गए थे। इन दोनों को कुफ़्फ़ार ने मक्का में ले जा कर बेच डाला। ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने जंगे उहुद में ह़ारिस बिन आ़मिर को क़त्ल किया था इस लिये उस के लड़कों ने इन को ख़रीद लिया ताकि इन को क़त्ल कर के बाप के ख़ून का बदला लिया जाए और ह़ज़रते ज़ैद बिन दसिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ को उमय्या के बेटे सफ़्वान ने क़त्ल करने के इरादे से ख़रीदा। ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ को काफ़िरों ने चन्द दिन क़ैद में रखा फिर हुदूदे ह़रम के बाहर ले जा कर सूली पर चढ़ा कर क़त्ल कर दिया। ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने क़ातिलों से दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ने की इजाज़त त़लब की, क़ातिलों ने इजाज़त दे दी। आप ने बहुत मुख़्तसर त़ौर पर दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई और फ़रमाया कि ऐ गुरौहे कुफ़्फ़ार ! मेरा दिल तो येही चाहता था कि देर तक नमाज़ पढ़ता रहूं क्यूं कि येह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ थी मगर मुझ को येह ख़याल आ गया कि कहीं तुम लोग येह न समझ लो कि मैं मौत से डर रहा हूं। कुफ़्फ़ार ने आप को सूली पर चढ़ा दिया उस वक़्त आप ने येह अश्आ़र पढ़े

فَلَسْتُ اُبَالِیْ حِیْنَ اُقْتَلُ مُسْلِمًا

عَلٰی اَیِّ شِقٍّ کَانَ لِلّٰہِ مَصْرَعِیْ

जब मैं मुसलमान हो कर क़त्ल किया जा रहा हूं तो मुझे कोई परवा नहीं है कि मैं किस पहलू पर क़त्ल किया जाऊंगा।

وَذَالِكَ فِیْ ذَاتِ الْاِلٰـهِ وَاِنْ یَّشَاْ

یُبَارِكْ عَلٰی اَوْصَالِ شِلْوٍ مُّمَزَّعٖ

येह सब कुछ ख़ुदा के लिये है अगर वोह चाहेगा तो मेरे कटे पिटे जिस्म के टुकड़ों पर बरकत नाज़िल फ़रमाएगा।

हा़रिस बिन आ़मिर के लड़के "अबू सरूआ़" ने आप को क़त्ल किया मगर ख़ुदा की शान कि येही अबू सरूआ़ और इन के दोनों भाई "उ़क़्बा" और "हु़जैर" फिर बा'द में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो कर सहा़बिय्यत के शरफ़ व ए'ज़ाज़ से सरफ़राज़ हो गए।[1]

(بخاری ج۲ ص۵۶۹ و زُرقانی ج۲ ص۶۴ تا۷۸)

ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़ब्र

हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला ने वह्य के ज़रीए ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत से मुत्त़लअ़ फ़रमाया। आप ने सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से फ़रमाया कि जो शख़्स ख़ुबैब की लाश को सूली से उतार लाए उस के लिये जन्नत है। येह बिशारत सुन कर ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम व ह़ज़रते मिक़्दाद बिन अल अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रातों को सफ़र करते और दिन को छुपते हुए मक़ामे "तनई़म" में ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सूली के पास पहुंचे। चालीस कुफ़्फ़ार सूली के पहरादार बन कर सो रहे थे इन दोनों ह़ज़रात ने सूली से लाश को उतारा और घोड़े पर रख कर चल दिये। चालीस दिन गुज़र जाने के बा वुजूद लाश तरो ताज़ा थी और ज़ख़्मों से ताज़ा ख़ून टपक रहा था। सुब्ह़ को क़ुरैश के सत्तर सुवार तेज़ रफ़्तार घोड़ों पर तआ़क़ुब में चल पड़े और इन दोनों ह़ज़रात के पास पहुंच गए, इन ह़ज़रात ने जब देखा कि क़ुरैश के सुवार हम को गरिफ़्तार कर लेंगे तो इन्हों ने ह़ज़रते

---

1 ......صحيح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الرجيع...الخ،الحديث:٤٠٨٦،ج٣،ص٤٦
والمواهب اللدنية وشرح الزرقانی، باب بعث الرجيع ،ج٢،ص٤٨٢ـ٤٨٧،٤٨٩ ملخصاً

ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की लाश मुबारक को घोड़े से उतार कर ज़मीन पर रख दिया। ख़ुदा की शान कि एक दम ज़मीन फट गई और लाश मुबारक को निगल गई और फिर ज़मीन इस त़रह़ बराबर हो गई कि फटने का निशान भी बाक़ी नहीं रहा। येही वजह है कि ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का लक़ब "**बलीउ़ल अर्द**" (जिन को ज़मीन निगल गई) है।

इस के बा'द इन ह़ज़रात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने कुफ़्फ़ार से कहा कि हम दो शेर हैं जो अपने जंगल में जा रहे हैं अगर तुम लोगों से हो सके तो हमारा रास्ता रोक कर देखो वरना अपना रास्ता लो। कुफ़्फ़ार ने इन ह़ज़रात के पास लाश नहीं देखी इस लिये मक्का वापस चले गए। जब दोनों सह़ाबए किराम ने बारगाहे रिसालत में सारा माजरा अ़र्ज़ किया तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام भी ह़ाज़िरे दरबार थे। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! आप के इन दोनों यारों के इस कारनामे पर हम फ़िरिश्तों की जमाअ़त को भी फ़ख़्र है।[1]

(مدارج النبوۃ جلد۲ص۱۴۱)

ह़ज़रते ज़ैद की शहादत

ह़ज़रते ज़ैद बिन दसिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़त्ल का तमाशा देखने के लिये कुफ़्फ़ारे क़ुरैश कसीर ता'दाद में जम्अ़ हो गए जिन में अबू सुफ़्यान भी थे। जब इन को सूली पर चढ़ा कर क़ातिल ने तलवार हाथ में ली तो अबू सुफ़्यान ने कहा कि क्यूं ? ऐ ज़ैद ! सच कहना, अगर इस वक़्त तुम्हारी जगह मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) इस त़रह़ क़त्ल किये जाते तो क्या तुम इस को पसन्द करते ? ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अबू सुफ़्यान की इस त़ा'ना ज़नी को सुन कर तड़प गए और जज़्बात से भरी हुई आवाज़ में फ़रमाया कि ऐ अबू सुफ़्यान ! ख़ुदा की क़सम ! मैं अपनी जान को क़ुरबान कर देना

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چہارم ، ج۲، ص۱۴۱

अ़ज़ीज़ समझता हूं मगर मेरे प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मुक़द्दस पाउं के तल्वे में एक कांटा भी चुभ जाए। मुझे कभी भी येह गवारा नहीं हो सकता।

मुझे हो नाज़ क़िस्मत पर अगर नामे मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم *पर*
येह सर कट जाए और तेरा कफ़े पा उस को ठुकराए
येह सब कुछ है गवारा पर येह मुझ से हो नहीं सकता
कि उन के पाउं के तल्वे में इक कांटा भी चुभ जाए

येह सुन कर अबू सुफ़्यान ने कहा कि मैं ने बड़े बड़े मह़ब्बत करने वालों को देखा है। मगर मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के आ़शिक़ों की मिसाल नहीं मिल सकती। सफ़्वान के ग़ुलाम "नसत़ास" ने तलवार से उन की गरदन मारी।(1) (زرقانی ج۲ص۷۳)

वाक़िअ़ए बीरे मुअ़व्वना

माहे सफ़र सि. 4 हि. में "बीरे मुअ़व्वना" का मश्हूर वाक़िआ़ पेश आया। अबू बरा आ़मिर बिन मालिक जो अपनी बहादुरी की वजह से "मलाइबुल असिन्नह" (बरछियों से खेलने वाला) कहलाता था, बारगाहे रिसालत में आया, **हु़ज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उस को इस्लाम की दा'वत दी, उस ने न तो इस्लाम क़बूल किया न इस से कोई नफ़रत ज़ाहिर की बल्कि येह दरख़्वास्त की, कि आप अपने चन्द मुन्तख़ब सह़ाबा को हमारे दियार में भेज दीजिये मुझे उम्मीद है कि वोह लोग इस्लाम की दा'वत क़बूल कर लेंगे। आप ने फ़रमाया कि मुझे नज्द के कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से ख़त़रा है। अबू बरा ने कहा कि मैं आप के अस्ह़ाब की जान व माल की ह़िफ़ाज़त का ज़ामिन हूं।(2)

---

1 ......المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی،باب بعث الرجیع ،ج۲،ص۴۹۲۔۴۹۳

2 ......المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی،باب بئرمعونة،ج۲،ص۴۹۶ومدارج النبوت،قسم سوم، باب چھارم،ج۲،ص۱۴۳والکامل فی التاریخ،السنة الرابعة من الھجرة،ذکربئرمعونة،ج۲،ص۶۳

इस के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सहाबा में से सत्तर मुन्तख़ब सालिहीन को जो "कुर्रा" कहलाते थे भेज दिया। येह हज़रात जब मक़ामे "बीरे मुअ़व्वना" पर पहुंचे तो ठहर गए और सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के क़ाफ़िला सालार हज़रते हिराम बिन मलहान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ख़त़ ले कर आ़मिर बिन तुफ़ैल के पास अकेले तशरीफ़ ले गए जो क़बीले का रईस और अबू बरा का भतीजा था। उस ने ख़त़ को पढ़ा भी नहीं और एक शख़्स को इशारा कर दिया जिस ने पीछे से हज़रते हिराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को नेज़ा मार कर शहीद कर दिया और आसपास के क़बाइल या'नी रअ़ल व ज़क्वान और अ़सिय्या व बनू लह्यान वग़ैरा को जम्अ़ कर के एक लश्कर तय्यार कर लिया और सहाबए किराम पर हम्ले के लिये रवाना हो गया। हज़राते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم बीरे मुअ़व्वना के पास बहुत देर तक हज़रते हिराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की वापसी का इनतिज़ार करते रहे मगर जब बहुत ज़ियादा देर हो गई तो येह लोग आगे बढ़े। रास्ते में आ़मिर बिन तुफ़ैल की फ़ौज का सामना हुवा और जंग शुरूअ़ हो गई कुफ़्फ़ार ने हज़रते अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सिवा तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को शहीद कर दिया, इन्ही शुहदाए किराम में हज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ भी थे। जिन के बारे में आ़मिर बिन तुफ़ैल का बयान है की क़त्ल होने के बा'द इन की लाश बुलन्द हो कर आस्मान तक पहुंची फिर ज़मीन पर आ गई, इस के बा'द इन की लाश तलाश करने पर भी नहीं मिली क्यूं कि फ़िरिश्तों ने इन्हें दफ़्न कर दिया।[1] (بخاری ج۲ص۵۸۷باب غزوۃ الرجیع)

हज़रते अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को आ़मिर बिन तुफ़ैल ने येह कह कर छोड़ दिया कि मेरी मां ने एक ग़ुलाम आज़ाद करने की मन्नत मानी थी इस लिये मैं तुम को आज़ाद करता

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،باب بئرمعونة،ج۲،ص۴۹۸۔۵۰۲ملخصاً
وصحيح البخاری ،كتاب المغازی،باب غزوة الرجيع،الحديث: ۴۰۹۱،ج۳،ص۴۸

हूं येह कहा और इन की चोटी का बाल काट कर इन को छोड़ दिया।[1]

हज़रते अम्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वहां से चल कर जब मक़ामे "क़र क़रह" में आए तो एक दरख़्त के साए में ठहरे वहीं क़बीलए बनू किलाब के दो आदमी भी ठहरे हुए थे। जब वोह दोनों सो गए तो हज़रते आमिर बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन दोनों काफ़िरों को क़त्ल कर दिया और येह सोच कर दिल में ख़ुश हो रहे थे कि मैं ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़ून का बदला ले लिया है मगर उन दोनों शख़्सों को **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अमान दे चुके थे जिस का हज़रते अम्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इल्म न था।[2]

जब मदीना पहुंच कर इन्हों ने सारा हाल दरबारे रिसालत में बयान किया तो अस्हाबे बीरे मुअव्वना की शहादत की ख़बर सुन कर सरकारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को इतना अज़ीम सदमा पहुंचा कि तमाम उम्र शरीफ़ में कभी भी इतना रन्ज व सदमा नहीं पहुंचा था। चुनान्चे **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم महीना भर तक क़बाइले रअ्ल व ज़क्वान और अ़सिय्या व बनू लह्यान पर नमाज़े फ़ज्र में ला'नत भेजते रहे और हज़रते अम्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जिन दो शख़्सों को क़त्ल कर दिया था **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन दोनों के ख़ूनबहा अदा करने का ए'लान फ़रमाया।[3] (بخاری ج۱ص۱۳۶اوزُرقانی ج۲ص۷۴تا۷۸)

ग़ज़्वए बनू नज़ीर

हज़रते अम्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने क़बीलए बनू किलाब के जिन दो शख़्सों को क़त्ल कर दिया था और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन दोनों का ख़ूनबहा अदा करने का ए'लान फ़रमा

---

1 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، باب بئر معونة ،ج۲،ص۵۰۱

2 ......کتاب المغازی للواقدی ، باب غزوۃ بنی النضیر،ج۱،ص۳۶۳
والسیرۃ النبویة لابن ھشام،حدیث بئر معونة ، ص۳۷۶

3 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، باب بئر معونة ، ج۲،ص۵۰۳،۵۰۸

दिया था इसी मुआमले के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्त्गू करने के लिये **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم क़बीलए बनू नज़ीर के यहूदियों के पास तशरीफ़ ले गए क्यूं कि इन यहूदियों से आप का मुआ़हदा था मगर यहूदी दर ह़क़ीक़त बहुत ही बद बाति़न जे़हनिय्यत वाली क़ौम हैं मुआ़हदा कर लेने के बा वुजूद इन ख़बीसों के दिलों में पैग़म्बरे इस्लाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दुश्मनी और इ़नाद की आग भरी हुई थी । हर चन्द **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन बद बाति़नों से अहले किताब होने की बिना पर अच्छा सुलूक फ़रमाते थे मगर येह लोग हमेशा इस्लाम की बेख़्कुनी और बानिये इस्लाम की दुश्मनी में मसरूफ़ रहे । मुसलमानों से बुग़्ज़ो इ़नाद और कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन से साज़बाज़ और इत्तिह़ाद येही हमेशा इन ग़द्दारों का त़र्ज़े अ़मल रहा । चुनान्चे इस मौक़अ़ पर जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन यहूदियों के पास तशरीफ़ ले गए तो उन लोगों ने ब ज़ाहिर तो बड़े अख़्लाक़ का मुज़ाहरा किया मगर अन्दरूनी त़ौर पर बड़ी ही ख़ौफ़नाक साज़िश और इनतिहाई ख़त़रनाक स्कीम का मन्सूबा बना लिया ।[1] **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ ह़ज़रते अबू बक्र व ह़ज़रते उ़मर व ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم भी थे । यहूदियों ने इन सब ह़ज़रात को एक दीवार के नीचे बड़े एह़तिराम के साथ बिठाया और आपस में येह मश्वरा किया कि छत पर से एक बहुत ही बड़ा और वज़्नी पथ्थर इन ह़ज़रात पर गिरा दें ताकि येह सब लोग दब कर हलाक हो जाएं । चुनान्चे अ़म्र बिन जह्हाश इस मक़्सद के लिये छत के ऊपर चढ़ गया, मुह़ाफ़िज़े ह़क़ीक़ी परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को यहूदियों की इस नापाक साज़िश से ब ज़रीअ़ए वह़्य मुत्त़लअ़ फ़रमा दिया इस लिये फ़ौरन ही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم वहां से उठ कर चुपचाप अपने हमराहियों के साथ चले आए और मदीना तशरीफ़ ला कर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم को यहूदियों की इस साज़िश से आगाह फ़रमाया और अन्सार व मुहाजिरीन से मश्वरे के

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، حدیث بنی النضیر، ج۲،ص۵۰۸ ملخصاً

बा'द उन यहूदियों के पास क़ासिद भेज दिया[1] कि चूंकि तुम लोगों ने अपनी इस दसीसा कारी और क़ातिलाना साज़िश से मुआ़हदा तोड़ दिया इस लिये अब तुम लोगों को दस दिन की मोहलत दी जाती है कि तुम इस मुद्दत में मदीने से निकल जाओ, इस के बा'द जो शख़्स भी तुम में का यहां पाया जाएगा क़त्ल कर दिया जाएगा। शहनशाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का येह फ़रमान सुन कर बनू नज़ीर के यहूदी जिला वत़न होने के लिये तय्यार हो गए थे मगर मुनाफ़िक़ों का सरदार अ़ब्दुल्लाह इब्ने उबय्य उन यहूदियों का ह़ामी बन गया और इस ने कहला भेजा कि तुम लोग हरगिज़ हरगिज़ मदीने से न निकलो हम दो हज़ार आदमियों से तुम्हारी मदद करने को तय्यार हैं इस के इ़लावा बनू क़ुरैज़ा और बनू ग़त़फ़ान यहूदियों के दो त़ाक़त वर क़बीले भी तुम्हारी मदद करेंगे। बनू नज़ीर के यहूदियों को जब इतना बड़ा सहारा मिल गया तो वोह शेर हो गए और उन्हों ने **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास कहला भेजा कि हम मदीना छोड़ कर नहीं जा सकते आप के जो दिल में आए कर लीजिये।[2]

(مدارج جلد۲ص۱۴۷)

यहूदियों के इस जवाब के बा'द **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मस्जिदे नबवी की इमामत ह़ज़रते इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सिपुर्द फ़रमा कर ख़ुद बनू नज़ीर का क़स्द फ़रमाया और उन यहूदियों के क़लए़ का मुह़ासरा कर लिया येह मुह़ासरा पन्दरह दिन तक क़ाइम रहा क़लआ़ में बाहर से हर क़िस्म के सामानों का आना जाना बन्द हो गया और यहूदी बिल्कुल ही मह़सूर व मजबूर हो कर रह गए मगर इस मौक़अ़ पर न तो मुनाफ़िक़ों का सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य यहूदियों की मदद के लिये आया न बनू क़ुरैज़ा और बनू ग़त़फ़ान ने कोई मदद की। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने इन दग़ाबाज़ों के बारे में इरशाद फ़रमाया कि

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چهارم ،ج۲،ص۱٤٦،۱٤۷ ملتقطاً

2 ...... شرح الزرقاني على المواهب،حديث بني النضير، ج۲،ص۱٤۷

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّیْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ○[1] (سورۂ حشر)

*इन लोगों की मिसाल शैतान जैसी है जब इस ने आदमी से कहा कि तू कुफ़्र कर फिर जब उस ने कुफ़्र किया तो बोला कि मैं तुझ से अलग हूं मैं **अल्लाह** से डरता हूं जो सारे जहान का पालने वाला है ।*

या'नी जिस त़रह़ शैत़ान आदमी को कुफ़्र पर उभारता है लेकिन जब आदमी शैत़ान के वर ग़लाने से कुफ़्र में मुब्तला हो जाता है तो शैत़ान चुपके से खिसक कर पीछे हट जाता है इसी त़रह़ मुनाफ़िक़ों ने बनू नज़ीर के यहूदियों को शह दे कर दिलेर बना दिया और **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से लड़ा दिया लेकिन जब बनू नज़ीर के यहूदियों को जंग का सामना हुवा तो मुनाफ़िक़ छुप कर अपने घरों में बैठ रहे ।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने क़लए़ के मुह़ासरे के साथ क़लए़ के आसपास खजूरों के कुछ दरख़्तों को भी कटवा दिया क्यूं कि मुमकिन था कि दरख़्तों के झुंड में यहूदी छुप कर इस्लामी लश्कर पर छापा मारते और जंग में मुसलमानों को दुश्वारी हो जाती । इन दरख़्तों को काटने के बारे में मुसलमानों के दो गुरौह हो गए, कुछ लोगों का येह ख़याल था कि येह दरख़्त न काटे जाएं क्यूं कि फ़त्ह़ के बा'द येह सब दरख़्त माले ग़नीमत बन जाएंगे और मुसलमान इन से नफ़्अ़ उठाएंगे और कुछ लोगों का येह कहना था कि दरख़्तों के झुंड को काट कर साफ़ कर देने से यहूदियों की कमीन गाहों को बरबाद करना और इन को नुक़्सान पहुंचा कर ग़ैज़ो ग़ज़ब में डालना मक़्सूद है, लिहाज़ा इन दरख़्तों को काट देना ही बेहतर है इस मौक़अ़ पर सूरए ह़श्र की येह आयत उतरी :

[1]......پ۲۸، الحشر:۱٦

مَاقَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِىَ الْفٰسِقِيْنَ۝ (1)

*जो दरख़्त तुम ने काटे या जिन को उन की जड़ों पर क़ाइम छोड़ दिये येह सब **अल्लाह** के हुक्म से था ताकि ख़ुदा फ़ासिक़ों को रुस्वा करे*

मत़लब येह है कि मुसलमानों में जो दरख़्त काटने वाले हैं उन का अ़मल भी दुरुस्त है और जो काटना नहीं चाहते वोह भी ठीक कहते हैं क्यूं कि कुछ दरख़्तों को काटना और कुछ को छोड़ देना येह दोनों **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म और उस की इजाज़त से हैं।[2]

बहर ह़ाल आख़िरे कार मुह़ासरे से तंग आ कर बनू नज़ीर के यहूदी इस बात पर तय्यार हो गए कि वोह अपना अपना मकान और क़लआ़ छोड़ कर इस शर्त़ पर मदीने से बाहर चले जाएंगे कि जिस क़दर माल व अस्बाब वोह ऊंटों पर ले जा सकें ले जाएं, **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने यहूदियों की इस शर्त़ को मन्ज़ूर फ़रमा लिया और बनू नज़ीर के सब यहूदी छे सो ऊंटों पर अपना माल व सामान लाद कर एक जुलूस की शक्ल में गाते बजाते हुए मदीने से निकले कुछ तो "**ख़ैबर**" चले गए और ज़ियादा ता'दाद में मुल्के शाम जा कर "**अज़्रआ़त**" और "**उरैह़ा**" में आबाद हो गए।

इन लोगों के चले जाने के बा'द इन के घरों की मुसलमानों ने जब तलाशी ली तो पचास लोहे की टोपियां, पचास ज़िरहें, तीन सो चालीस तलवारें निकलीं, जो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ब्ज़े में आईं।[3] (زرقانی ج۲ص۷۹تا۸۵)

अल्लाह तआ़ला ने बनू नज़ीर के यहूदियों की इस जिला वत़नी का ज़िक्र क़ुरआने मजीद की सूरए ह़श्र में इस त़रह़ फ़रमाया कि

---

1 ......پ۲۸، الحشر:۵

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی،حديث بنی النضير، ج۲،ص۵۱۶،۵۱۷

3 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی،حديث بنی النضير، ج۲،ص۵۱۷،۵۱۸

هُوَالَّذِیْۤ اَخْرَجَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِیَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ یَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَیْثُ لَمْ یَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ یُخْرِبُوْنَ بُیُوْتَهُمْ بِاَیْدِیْهِمْ وَاَیْدِی الْمُؤْمِنِیْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا یٰۤاُولِی الْاَبْصَارِ۝[1] (حشر)

अल्लाह वोही है जिस ने काफ़िर किताबियों को उन के घरों से निकाला उन के पहले हश्र के लिये (ऐ मुसलमानो !) तुम्हें येह गुमान न था कि वोह निकलेंगे और वोह समझते थे कि उन के क़लए उन्हें ***अल्लाह*** से बचा लेंगे तो ***अल्लाह*** का हुक्म उन के पास आ गया जहां से उन को गुमान भी न था और उस ने उन के दिलों में ख़ौफ़ डाल दिया कि वोह अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से और मुसलमानों के हाथों से वीरान करते हैं तो इब्रत पकड़ो ऐ निगाह वालो !

बद्रे सुग़रा

जंगे उहुद से लौटते वक़्त अबू सुफ़्यान ने कहा था कि आयन्दा साल बद्र में हमारा तुम्हारा मुक़ाबला होगा। चुनान्चे शा'बान या ज़ुल क़ा'दह सि. 4 हि. में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीने के नज़्मो नसक़ का इनतिज़ाम हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सिपुर्द फ़रमा कर लश्कर के साथ बद्र में तशरीफ़ ले गए। आठ रोज़ तक कुफ़्फ़ार का इनतिज़ार किया उधर अबू सुफ़्यान भी फ़ौज के साथ चला, एक मंज़िल चला था कि उस ने अपने लश्कर से येह कहा कि येह साल जंग के लिये मुनासिब नहीं है। क्यूं कि इतना ज़बर दस्त क़हत़ पड़ा हुवा है कि न आदमियों के लिये दाना पानी है न जानवरों के लिये घास चारा, येह कह

1 ......پ۲۸، الحشر:۲

कर अबू सुफ़्यान मक्का वापस चला गया, मुसलमानों के पास कुछ माले तिजारत भी साथ था जब जंग नहीं हुई तो मुसलमानों ने तिजारत कर के ख़ूब नफ़्अ़ कमाया और मदीना वापस चले आए।[1]

(مدارج جلد۲ص۱۵۱وغیرہ)

सि. 4 हि. के मुतफ़र्रिक़ वाक़िआ़त

﴾1﴿ इसी साल ग़ज़्वए बनू नज़ीर के बा'द जब अन्सार ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! बनू नज़ीर के जो अम्वाल ग़नीमत में मिले हैं वोह सब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم हमारे मुहाजिर भाइयों को दे दीजिये हम इस में से किसी चीज़ के त़लबगार नहीं हैं तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुश हो कर येह दुआ़ फ़रमाई कि اَللّٰھُمَّ ارْحَمِ الْاَنْصَارَ وَاَبْنَآءَ الْاَنْصَارِ وَاَبْنَآءَ اَبْنَآءِ الْاَنْصَارِ ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अन्सार पर, और अन्सार के बेटों पर और अन्सार के बेटों के बेटों पर रह़्म फ़रमा।[2] (مدارج جلد۲ص۱۴۸)

﴾2﴿ इसी साल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के नवासे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़समान ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا की आंख में एक मुर्ग़ ने चोंच मार दी जिस के सदमे से वोह दो रात तड़प कर वफ़ात पा गए।[3]

(مدارج جلد۲ص۱۵۰)

﴾3﴿ इसी साल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़ौजए मुत़ह्हरा ह़ज़रते बीबी ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की वफ़ात हुई।[4]

(مدارج جلد۲ص۱۵۰)

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب چھارم،ج۲،ص۱۵۱ملتقطاً وملخصاً
والمواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، باب غزوة بدرالاخیرة...الخ،ج۲،ص۵۳۵

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چھارم ،ج۲،ص۱۴۹

3 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چھارم ،ج۲،ص۱۴۹،۱۵۰

4 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چھارم ،ج۲،ص۱۴۹،۱۵۰

﴾4﴿ इसी साल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हज़रते उम्मुल मोमिनीन बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से निकाह फ़रमाया ।[1]

(مدارج جلد۲ص۱۵۰)

﴾5﴿ इसी साल हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की वालिदए माजिदा हज़रते बीबी फ़ातिमा बिन्ते असद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने वफ़ात पाई, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपना मुक़द्दस पैराहन उन के कफ़न के लिये अ़ता फ़रमाया और उन की क़ब्र में उतर कर उन की मय्यित को अपने दस्ते मुबारक से क़ब्र में उतारा और फ़रमाया कि फ़ातिमा बिन्ते असद के सिवा कोई शख़्स भी क़ब्र के दबोचने से नहीं बचा है । हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सिर्फ़ पांच ही मय्यित ऐसी ख़ुश नसीब हुई हैं जिन की क़ब्र में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ुद उतरे : **अव्वल** : हज़रते बीबी ख़दीजा, **दुवुम** : हज़रते बीबी ख़दीजा का एक लड़का, **सिवुम** : अ़ब्दुल्लाह मुज़्नी जिन का लक़ब ज़ुल बिजादैन है, **चहारुम** : हज़रते बीबी आ़इशा की मां हज़रते उम्मे रूमान, **पन्जुम** : हज़रते फ़ातिमा बिन्ते असद हज़रते अ़ली की वालिदा । (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمۡ اَجۡمَعِیۡن) [2]

(مدارج جلد۲ص۱۵۰)

﴾6﴿ इसी साल 4 शा'बान सि. 4 हि. को हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की पैदाइश हुई ।[3] (مدارج جلد۲ص۱۵۱)

﴾7﴿ इसी साल एक यहूदी ने एक यहूदी की औ़रत के साथ ज़िना किया और यहूदियों ने येह मुक़द्दमा बारगाहे नुबुव्वत में पेश किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तौरात व क़ुरआन दोनों किताबों के फ़रमान से उस को संगसार करने का फ़ैसला फ़रमाया ।[4] (مدارج جلد۲ص۱۵۲)

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چھارم ، ج۲، ص۱۴۹، ۱۵۰

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چھارم ، ج۲، ص۱۵۰، ۱۵۱

3 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چھارم ، ج۲، ص۱۵۱

4 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چھارم ، ج۲، ص۱۵۲

﴾8﴿ इसी साल त़अ्मा बिन उबैरक़ ने जो मुसलमान था चोरी की तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने कुरआन के हुक्म से उस का हाथ काटने का हुक्म फ़रमाया, इस पर वोह भाग निकला और मक्का चला गया। वहां भी उस ने चोरी की अहले मक्का ने उस को क़त्ल कर डाला या उस पर दीवार गिर पड़ी और मर गया या दरिया में फेंक दिया गया। एक क़ौल येह भी है कि वोह मुरतद हो गया था।[1] (مدارج جلد۲ص۱۵۳)

﴾9﴿ बा'ज़ मुअर्रिख़ीन के नज़दीक शराब की हुरमत का हुक्म भी इसी साल नाज़िल हुवा और बा'ज़ के नज़दीक सि. 6 हि. में और बा'ज़ ने कहा कि सि. 8 हि. में शराब ह़राम की गई।[2] (مدارج جلد۲ص۱۵۳)

दसवां बाब

हिजरत का पांचवां साल

सि. 5 हि.

जंगे उहुद में मुसलमानों के जानी नुक़्सान का चरचा हो जाने और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश और यहूदियों की मुश्तरिका साज़िशों से तमाम क़बाइले कुफ़्फ़ार का हौसला इतना बुलन्द हो गया कि सब को मदीने पर ह़म्ला करने का जुनून हो गया। चुनान्चे सि. 5 हि. भी कुफ़्र व इस्लाम के बहुत से मा'रिकों को अपने दामन में लिये हुए है। हम यहां चन्द मश्हूर ग़ज़्वात व सराया का ज़िक्र करते हैं।

ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़

सब से पहले क़बाइले **"अनमार व सा'लबा"** ने मदीने पर चढ़ाई करने का इरादा किया जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को इस की इत्तिलाअ़ मिली तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने चार सो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का लश्कर अपने साथ लिया और 10 मुह़र्रम सि. 5 हि. को मदीने से रवाना हो कर मक़ामे "ज़ातुर्रिक़ाअ़" तक तशरीफ़ ले गए

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چهارم ، ج۲،ص۱۵۲،۱۵۳

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب چهارم ، ج۲،ص۱۵۳

लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की आमद का ह़ाल सुन कर येह कुफ़्फ़ार पहाड़ों में भाग कर छुप गए इस लिये कोई जंग नहीं हुई। मुशरिकीन की चन्द औ़रतें मिलीं जिन को सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने गरिफ़्तार कर लिया। उस वक़्त मुसलमान बहुत ही मुफ़्लिस और तंग दस्ती की ह़ालत में थे। चुनान्चे ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि सुवारियों की इतनी कमी थी कि छे छे आदमियों की सुवारी के लिये एक एक ऊंट था जिस पर हम लोग बारी बारी सुवार हो कर सफ़र करते थे पहाड़ी ज़मीन में पैदल चलने से हमारे क़दम ज़ख़्मी और पाउं के नाख़ुन झड़ गए थे इस लिये हम लोगों ने अपने पाउं पर कपड़ों के चीथड़े लपेट लिये थे येही वजह है कि इस ग़ज़्वे का नाम "ग़ज़्वए ज़ातुर्रक़ाअ़" (पैवन्दों वाला ग़ज़्वा) हो गया।[1]

(بخاری غزوہ ذات الرقاع ج۲ ص۵۹۲)

बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने कहा कि चूं कि वहां की ज़मीन के पथ्थर सफ़ेद व सियाह रंग के थे और ज़मीन ऐसी नज़र आती थी गोया सफ़ेद और काले पैवन्द एक दूसरे से जोड़े हुए हैं, लिहाज़ा इस ग़ज़्वे को "ग़ज़्वए ज़ातुर्रक़ाअ़" कहा जाने लगा और बा'ज़ का क़ौल है कि यहां पर एक दरख़्त का नाम "ज़ातुर्रक़ाअ़" था इस लिये लोग इस को ग़ज़्वए ज़ातुर्रक़ाअ़ कहने लगे, हो सकता है कि येह सारी बातें हों।[2]

(زرقانی جلد۲ ص۸۸)

मश्हूर इमामे सीरत इब्ने सा'द का क़ौल है कि सब से पहले इस ग़ज़्वे में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने "सलातुल ख़ौफ़" पढ़ी।[3]

(زُرقانی ج۲ ص۹۰ و بخاری باب غزوہ ذات الرقاع ج۲ ص۵۹۲)

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب غزوة ذات الرقاع، ج٢، ص٥٢٦، ٥٢٨
وصحيح البخاري، كتاب المغازي، باب غزوة ذات الرقاع، الحديث٤١٢٨، ج٣، ص٥٨

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب غزوة ذات الرقاع، ج٢، ص٥٢٥

3 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب غزوة ذات الرقاع، ج٢، ص٥٢٨، ٥٢٩

ग़ज़्वए दूमतुल जन्दल

रबीउ़ल अव्वल सि. 5 हि. में पता चला कि मक़ाम "**दूमतुल जन्दल**" में जो मदीना और शहरे दिमश्क़ के दरमियान एक क़ल्अ़ का नाम है मदीने पर ह़म्ला करने के लिये एक बहुत बड़ी फ़ौज जम्अ़ हो रही है **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم एक हज़ार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का लश्कर ले कर मुक़ाबले के लिये मदीने से निकले, जब मुशरिकीन को येह मा'लूम हुवा तो वोह लोग अपने मवेशियों और चरवाहों को छोड़ कर भाग निकले, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने उन तमाम जानवरों को माले ग़नीमत बना लिया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तीन दिन वहां क़ियाम फ़रमा कर मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के लश्करों को रवाना फ़रमाया। इस ग़ज़्वे में भी कोई जंग नहीं हुई इस सफ़र में एक महीने से ज़ाइद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीने से बाहर रहे।(1)

(زرقانی ج۲ص۹۴تا۹۵)

ग़ज़्वए मुरैसीअ़

इस का दूसरा नाम "**ग़ज़्वए बनी अल मुस्तलिक़**" भी है "**मुरैसीअ़**" एक मक़ाम का नाम है जो मदीने से आठ मन्ज़िल दूर है। क़बीलए ख़ुज़ाआ़ का एक ख़ानदान "बनू अल मुस्त़लिक़" यहां आबाद था और इस क़बीले का सरदार ह़ारिस बिन ज़रार था इस ने भी मदीने पर फ़ौज कशी के लिये लश्कर जम्अ़ किया था, जब येह ख़बर मदीने पहुंची तो 2 शा'बान सि. 5 हि. को **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीने पर ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपना ख़लीफ़ा बना कर लश्कर के साथ रवाना हुए। इस ग़ज़्वे में ह़ज़रते बीबी आ़इशा और ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ थीं, जब ह़ारिस बिन ज़रार को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तशरीफ़

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ، ج۲، ص۱۸٤ ملخصاً

आवरी की ख़बर हो गई तो उस पर ऐसी दह्शत सुवार हो गई कि वोह और उस की फ़ौज भाग कर मुन्तशिर हो गई मगर ख़ुद मुरैसीअ़ के बाशिन्दों ने लश्करे इस्लाम का सामना किया और जम कर मुसलमानों पर तीर बरसाने लगे लेकिन जब मुसलमानों ने एक साथ मिल कर ह़म्ला कर दिया तो दस कुफ़्फ़ार मारे गए और एक मुसलमान भी शहादत से सरफ़राज़ हुए, बाक़ी सब कुफ़्फ़ार गरिफ़्तार हो गए जिन की ता'दाद सात सो से ज़ाइद थी, दो हज़ार ऊंट और पांच हज़ार बकरियां माले ग़नीमत में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم के हाथ आईं।[1] (زُرقانی ج۲ ص۹۷تا۹۸)

ग़ज़्वए मुरैसीअ़ जंग के ए'तिबार से तो कोई ख़ास अहम्मिय्यत नहीं रखता मगर इस जंग में बा'ज़ ऐसे अहम वाक़िआत दरपेश हो गए कि येह ग़ज़्वा तारीख़े नबवी का एक बहुत ही अहम और शानदार उ़न्वान बन गया है, इन मश्हूर वाक़िआत में से चन्द येह हैं :

मुनाफ़िक़ीन की शरारत

इस जंग में माले ग़नीमत के लालच में बहुत से मुनाफ़िक़ीन भी शरीक हो गए थे। एक दिन पानी लेने पर एक मुहाजिर और एक अन्सारी में कुछ तकरार हो गई मुहाजिर ने बुलन्द आवाज़ से یاللمھاجرین (ऐ मुहाजिरो ! फ़रयाद है) और अन्सारी ने یاللانصار (ऐ अन्सारियो ! फ़रयाद है) का ना'रा मारा, येह ना'रा सुनते ही अन्सार व मुहाजिरीन दौड़ पड़े और इस क़दर बात बढ़ गई कि आपस में जंग की नौबत आ गई रईसुल मुनाफ़िक़ीन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य को शरारत का एक मौक़अ़ मिल गया उस ने इश्तिआ़ल दिलाने के लिये अन्सारियों से कहा कि "लो ! येह तो वोही मिस्ल हुई कि سَمِّنْ کَلْبَکَ یَاْکُلْکَ (तुम अपने कुत्ते को फ़रबा करो ताकि वोह तुम्हीं को खा डाले) तुम अन्सारियों ही ने इन मुहाजिरीन का ह़ौसला बढ़ा दिया है लिहाज़ा अब इन मुहाजिरीन की माली इमदाद व मदद बिल्कुल बन्द कर दो येह लोग ज़लीलो ख़्वार हैं और हम अन्सार इ़ज़्ज़त दार हैं

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب غزوة المريسيع، ج۳، ص۳۔۸ ملتقطاً

अगर हम मदीना पहुंचे तो यक़ीनन हम इन ज़लील लोगों को मदीने से निकाल बाहर कर देंगे।"[1] (क़ुरआन सूरए मुनाफ़िक़ून)

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जब इस हंगामे का शोरो ग़ोग़ा सुना तो अन्सार व मुहाजिरीन से फ़रमाया कि क्या तुम लोग ज़मानए जाहिलिय्यत की ना'राबाज़ी कर रहे हो ? जमाले नुबुव्वत देखते ही अन्सार व मुहाजिरीन बर्फ़ की त़रह़ ठन्डे पड़ गए और रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के चन्द फ़िक़्रों ने मह़ब्बत का ऐसा दरिया बहा दिया कि फिर अन्सार व मुहाजिरीन शीरो शकर की त़रह़ घुल मिल गए।

जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य की बेहूदा बात ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के कान में पड़ी तो वोह इस क़दर तैश में आ गए कि नंगी तलवार ले कर आए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं इस मुनाफ़िक़ की गरदन उड़ा दूं। **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने निहायत नर्मी के साथ इरशाद फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़बरदार ऐसा न करो, वरना कुफ़्फ़ार में येह ख़बर फैल जाएगी कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) अपने साथियों को भी क़त्ल करने लगे हैं। येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बिल्कुल ही ख़ामोश हो गए मगर इस ख़बर का पूरे लश्कर में चरचा हो गया, येह अ़जीब बात है कि अ़ब्दुल्लाह इब्ने उबय्य जितना बड़ा इस्लाम और बानिये इस्लाम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का दुश्मन था इस से कहीं ज़ियादा बढ़ कर उस के बेटे इस्लाम के सच्चे शैदाई और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के जांनिसार सह़ाबी थे उन का नाम भी अ़ब्दुल्लाह था जब अपने बाप की बक्वास का पता चला तो वोह ग़ैज़ो ग़ज़ब में भरे हुए बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! अगर आप मेरे बाप के क़त्ल को पसन्द फ़रमाते हों तो मेरी तमन्ना है कि किसी दूसरे के बजाए मैं ख़ुद अपनी तलवार से अपने बाप का

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ، ج۲،ص۱۵٦ ملخصاً

सर काट कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के क़दमों में डाल दूं। आप ने इरशाद फ़रमाया कि नहीं हरगिज़ नहीं मैं तुम्हारे बाप के साथ कभी भी कोई बुरा सुलूक नहीं करूंगा।[1] (ابن سعد وطبری وغیرہ)

और एक रिवायत में येह भी आया है कि मदीने के क़रीब वादिये अ़क़ीक़ में वोह अपने बाप अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य का रास्ता रोक कर खड़े हो गए और कहा कि तुम ने मुहाजिरीन और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ज़लील कहा है ख़ुदा की क़सम ! मैं उस वक़्त तक तुम को मदीने में दाख़िल नहीं होने दूंगा जब तक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم इजाज़त अ़त़ा न फ़रमाएं और जब तक तुम अपनी ज़बान से येह न कहो कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तमाम औलादे आदम में सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाले हैं और तुम सारे जहान वालों में सब से ज़ियादा ज़लील हो, तमाम लोग इनतिहाई हैरत और तअ़ज्जुब के साथ येह मन्ज़र देख रहे थे जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم वहां पहुंचे और येह देखा कि बेटा बाप का रास्ता रोके हुए खड़ा है और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य ज़ोर ज़ोर से कह रहा है कि "मैं सब से ज़ियादा ज़लील हूं और हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त दार हैं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने येह देखते ही हुक्म दिया कि इस का रास्ता छोड़ दो ताकि येह मदीने में दाख़िल हो जाए।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۱۵۷)

ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़

ग़ज़्वए मुरैसीअ़ की जंग में जो कुफ़्फ़ार मुसलमानों के हाथ में गरिफ़्तार हुए उन में सरदारे क़ौम ह़ारिस बिन ज़रार की बेटी ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी थीं जब तमाम

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ، ج۲، ص۱۵۶ ملخصاً والسیرۃ النبویۃ لابن ہشام،طلب ابن عبداللّٰہ بن ابی...الخ،ص۴۲۰

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ، ج۲،ص۱۵۷

क़ैदी लौंडी गुलाम बना कर मुजाहिदीने इस्लाम में तक़्सीम कर दिये गए तो ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़िस्से में आईं उन्हों ने ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से येह कह दिया कि तुम मुझे इतनी इतनी रक़म दे दो तो मैं तुम्हें आज़ाद कर दूंगा, ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास कोई रक़म नहीं थी वोह **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के दरबार में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मैं अपने क़बीले के सरदार ह़ारिस बिन ज़रार की बेटी हूं और मैं मुसलमान हो चुकी हूं ह़ज़रते साबित बिन क़ैस ने इतनी इतनी रक़म ले कर मुझे आज़ाद कर देने का वा'दा कर लिया है आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मेरी मदद फ़रमाएं ताकि मैं येह रक़म अदा कर के आज़ाद हो जाऊं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अगर मैं इस से बेहतर सुलूक तुम्हारे साथ करूं तो क्या तुम मन्ज़ूर कर लोगी ? उन्हों ने पूछा कि वोह क्या है ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं चाहता हूं कि मैं खुद तन्हा तुम्हारी त़रफ़ से सारी रक़म अदा कर दूं और तुम को आज़ाद कर के मैं तुम से निकाह़ कर लूं ताकि तुम्हारा ख़ानदानी ए'ज़ाज़ व वक़ार बर क़रार रह जाए, ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने खुशी खुशी इस को मन्ज़ूर कर लिया, चुनान्चे **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सारी रक़म अपने पास से अदा फ़रमा कर ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमा लिया जब येह ख़बर लश्कर में फैल गई कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमा लिया तो मुजाहिदीने इस्लाम के लश्कर में इस ख़ानदान के जितने लौंडी गुलाम थे मुजाहिदीन ने सब को फ़ौरन ही आज़ाद कर के रिहा कर दिया और लश्करे इस्लाम का हर सिपाही येह कहने लगा कि जिस ख़ानदान में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने शादी कर ली उस ख़ानदान का कोई आदमी लौंडी गुलाम नहीं रह सकता और ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कहने लगीं कि हम ने किसी औ़रत का निकाह़ ह़ज़रते

जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا के निकाह़ से बढ़ कर ख़ैरो बरकत वाला नहीं देखा कि इस की वजह से तमाम ख़ानदान बनी अल मुस्त़लिक़ को ग़ुलामी से आज़ादी नसीब हो गई ।[1] (ابوداود کتاب العتق ج۲ ص۵۴۸)

हज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا का अस्ली नाम "बर्रह" था । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस नाम को बदल कर "जुवैरिया" नाम रखा ।[2] (مدارج جلد۲ ص۱۵۵)

वाक़िअ़ए इफ़्क

इसी ग़ज़्वे से जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीना वापस आने लगे तो एक मन्ज़िल पर रात में पड़ाव किया, हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا एक बन्द हौदज में सुवार हो कर सफ़र करती थीं और चन्द मख़्सूस आदमी उस हौदज को ऊंट पर लादने और उतारने के लिये मुक़र्रर थे, ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا लश्कर की रवानगी से कुछ पहले लश्कर से बाहर रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले गईं जब वापस हुईं तो देखा कि उन के गले का हार कहीं टूट कर गिर पड़ा है वोह दोबारा उस हार की तलाश में लश्कर से बाहर चली गईं इस मरतबा वापसी में कुछ देर लग गई और लश्कर रवाना हो गया आप का हौदज लादने वालों ने येह ख़याल कर के कि उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا हौदज के अन्दर तशरीफ़ फ़रमा हैं हौदज को ऊंट पर लाद दिया और पूरा क़ाफ़िला मन्ज़िल से रवाना हो गया जब ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا मन्ज़िल पर वापस आईं तो यहां कोई आदमी मौजूद नहीं था । तन्हाई से सख़्त घबराईं अंधेरी रात में अकेले चलना भी ख़त़रनाक था इस लिये वोह येह सोच कर वहीं लेट गईं कि जब अगली मन्ज़िल पर लोग मुझे न पाएंगे तो ज़रूर ही मेरी तलाश में यहां आएंगे, वोह लेटी लेटी सो गईं

1 ......كتاب المغازى للواقدى ،غزوة المريسيع، ج ١ ،ص ٤١٠، ٤١١
2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ، ج ٢،ص ١٥٥

एक सहाबी जिन का नाम हज़रते सफ़्वान बिन मुअत्तल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ था वोह हमेशा लश्कर के पीछे पीछे इस ख़याल से चला करते थे ताकि लश्कर का गिरा पड़ा सामान उठाते चलें वोह जब इस मन्ज़िल पर पहुंचे तो हज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को देखा और चूंकि पर्दे की आयत नाज़िल होने से पहले वोह बारहा उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को देख चुके थे इस लिये देखते ही पहचान लिया और उन्हें मुर्दा समझ कर "اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن" पढ़ा। इस आवाज़ से वोह जाग उठीं हज़रते सफ़्वान बिन मुअत्तल सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़ौरन ही उन को अपने ऊंट पर सुवार कर लिया और खुद ऊंट की मुहार थाम कर पैदल चलते हुए अगली मन्ज़िल पर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास पहुंच गए।[1]

मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबय्य ने इस वाक़िए को हज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर तोहमत लगाने का ज़रीआ बना लिया और ख़ूब ख़ूब इस तोहमत का चरचा किया यहां तक कि मदीने में उस मुनाफ़िक़ ने इस शर्मनाक तोहमत को इस क़दर उछाला और इतना शोरो गुल मचाया कि मदीने में हर तरफ़ इस इफ़्तिरा और तोहमत का चरचा होने लगा और बा'ज़ मुसलमान मसलन हज़रते हस्सान बिन साबित और हज़रते मिस्तह बिन असासा और हज़रते हमना बिन्ते जहश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने भी इस तोहमत को फैलाने में कुछ हिस्सा लिया, **हुज़ूरे** अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को इस शर अंगेज़ तोहमत से बेहद रन्ज व सदमा पहुंचा और मुख़्लिस मुसलमानों को भी इनतिहाई रन्जो ग़म हुवा। हज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मदीना पहुंचते ही सख़्त बीमार हो गईं, पर्दा नशीन तो थीं ही साहिबे फ़राश हो गईं और उन्हें इस तोहमत तराशी की बिल्कुल ख़बर ही नहीं हुई गो कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को हज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पाक दामनी का पूरा पूरा इल्म व यक़ीन था मगर

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث الافک، الحدیث ۴۱۴۱، ج۳، ص۶۱ ملتقطاً
ومدارج النبوت، قسم سوم، باب پنجم، ج۲، ص۱۵۹ ملتقطاً وملخصاً

चूंकि अपनी बीवी का मुआ़मला था इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी त़रफ़ से अपनी बीवी की बराअत और पाक दामनी का ए'लान करना मुनासिब नहीं समझा और वह़्ये इलाही का इनतिज़ार फ़रमाने लगे इस दरमियान में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने मुख़्लिस अस्ह़ाब से इस मुआ़मले में मश्वरा फ़रमाते रहे ताकि इन लोगों के ख़यालात का पता चल सके।[1] (بخاری ج۲ص۵۹۴)

चुनान्चे ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस तोहमत के बारे में गुफ़्त्गू फ़रमाई तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! येह मुनाफ़िक़ यक़ीनन झूटे हैं इस लिये कि जब **अल्लाह** तआ़ला को येह गवारा नहीं है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के जिस्मे अत़्हर पर एक मख्खी भी बैठ जाए क्यूं कि मख्खी नजासतों पर बैठती है तो भला जो औ़रत ऐसी बुराई की मुर्तकिब हो ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस कब और कैसे बरदाश्त फ़रमाएगा कि वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में रह सके।[2]

ह़ज़रते उ़समान ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! जब **अल्लाह** तआ़ला ने आप के साए को ज़मीन पर नहीं पड़ने दिया ताकि उस पर किसी का पाउं न पड़ सके तो भला उस मा'बूदे बरह़क़ की ग़ैरत कब येह गवारा करेगी कि कोई इन्सान आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ौजए मोह़तरमा के साथ ऐसी क़बाह़त का मुर्तकिब हो सके ?[3] ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह गुज़ारिश की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! एक मरतबा आप की ना'लैने अक़्दस में नजासत लग गई थी तो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को भेज कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़बर दी कि आप अपनी ना'लैने अक़्दस को उतार दें इस लिये ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ،ج۲،ص۱۵۹۔۱۶۱ ملتقطاً

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ،ج۲،ص۱۶۱

3 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ،ج۲،ص۱۶۱

مَعَاذَاللّٰہ अगर ऐसी होतीं तो ज़रूर **अल्लाह** तआला आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर वह्य नाज़िल फ़रमा देता कि "आप इन को अपनी ज़ौजिय्यत से निकाल दें।"(1)

हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जब इस तोहमत की ख़बर सुनी तो उन्हों ने अपनी बीवी से कहा कि ऐ बीवी ! तू सच बता ! अगर हज़रते सफ़्वान बिन मुअत्तल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जगह मैं होता तो क्या तू येह गुमान कर सकती है कि मैं **हुज़ूरे** अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की हरमे पाक के साथ ऐसा कर सकता था ? तो उन की बीवी ने जवाब दिया कि अगर हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की जगह मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की बीवी होती तो ख़ुदा की क़सम ! मैं कभी ऐसी ख़ियानत नहीं कर सकती थी तो फिर हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जो मुझ से लाखों दरजे बेहतर है और हज़रते सफ़्वान बिन मुअत्तल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो बदरजहा तुम से बेहतर हैं भला क्यूंकर मुमकिन है कि येह दोनों ऐसी ख़ियानत कर सकते हैं ?(2) (مدارک التنزیل مصری ج۲ ص۱۳۴ تا ۱۳۵)

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस मुआमले में हज़रते अली और उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से जब मश्वरा तलब फ़रमाया तो हज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बरजस्ता कहा कि اَھْلُكَ وَلَا نَعْلَمُ اِلَّا خَيْرًا कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! वोह आप की बीवी हैं और हम उन्हें अच्छी ही जानते हैं, और हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह जवाब दिया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! **अल्लाह** तआला ने आप पर कोई तंगी नहीं डाली है औरतें इन के सिवा

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ،ج۲،ص۱۵۷ ومدارك التنزيل المعروف بتفسير النسفى ،الجزء الثامن عشر ، سورة النور،تحت الاية ۱۲،۱۳،ص۷۷۲

2 ......مدارك التنزيل المعروف بتفسير النسفى ،الجزء الثامن عشر ، سورة النور،تحت الاية ۱۲،۱۳،ص۷۷۲

बहुत हैं और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन के बारे में उन की लौंडी (ह़ज़रते बरीरा) से पूछ लें वोह आप से सचमुच कह देगी ।[1]

ह़ज़रते बरीरा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهَا से जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सुवाल फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! उस ज़ाते पाक की क़सम जिस ने आप को रसूले बरह़क़ बना कर भेजा है कि मैं ने ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهَا में कोई ऐ़ब नहीं देखा, हां इतनी बात ज़रूर है कि वोह अभी कमसिन लड़की हैं वोह गूंधा हुवा आटा छोड़ कर सो जाती हैं और बकरी आ कर खा डालती है ।[2]

फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهَا से दरयाफ़्त फ़रमाया जो हुस्नो जमाल में ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهَا के मिस्ल थीं तो उन्हों ने क़सम खा कर येह अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! اَحْمِىْ سَمْعِىْ وَبَصَرِىْ وَاللّٰهِ مَا عَلِمْتُ اِلَّا خَيْرًا मैं अपने कान और आंख की ह़िफ़ाज़त करती हूं ख़ुदा की क़सम ! मैं तो ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهَا को अच्छी ही जानती हूं ।[3] (بخاری باب حدیث الافک ج۲ص۵۹۶)

इस के बा'द हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक दिन मिम्बर पर खड़े हो कर मुसलमानों से फ़रमाया कि उस शख़्स की त़रफ़ से मुझे कौन मा'ज़ूर समझेगा, या मेरी मदद करेगा जिस ने मेरी बीवी पर बोहतान तराशी कर के मेरी दिल आज़ारी की है, وَاللّٰهِ مَا عَلِمْتُ عَلٰى اَهْلِىْ اِلَّا خَيْرًا ख़ुदा की क़सम ! मैं अपनी बीवी को हर त़रह़ की अच्छी ही जानता हूं ।

---

1 ......صحيح البخارى، كتاب المغازى،باب حديث الافك،الحديث ٤١٤١،ج٣،ص٦٣ ملتقطاً

2 ......السيـرة الحلبية ، غزوة بنى المصطلق ، ج ٢ ، ص ٤٠٢ ودلائل النبوة للبيهقى ، باب حديث الافك،ج٤، ص ٦٨

3 ......صحيح البخارى، كتاب المغازى،باب حديث الافك،الحديث ٤١٤١،ج٣،ص٦٦

وَلَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلًا مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلَّا خَيْرًا और उन लोगों (मुनाफ़िक़ों) ने (इस बोहतान में) एक ऐसे मर्द (सफ़्वान बिन मुअत्तल) का ज़िक्र किया है जिस को मैं बिल्कुल अच्छा ही जानता हूं।[1] (بخاری ج۲ص۵۹۵باب حدیث الافک)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की बर सरे मिम्बर इस तक़रीर से मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को हज़रते आइशा और हज़रते सफ़्वान बिन मुअत्तल رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُمَا दोनों की बराअत व तहारत और इफ़्फ़त व पाक दामनी का पूरा पूरा इल्म और यक़ीन था और वह्य नाज़िल होने से पहले ही आप صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को यक़ीनी तौर पर मा'लूम था कि मुनाफ़िक़ झूटे और उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهَا पाक दामन हैं वरना आप बर सरे मिम्बर क़सम खा कर इन दोनों की अच्छाई का मज्मए आम में हरगिज़ ए'लान न फ़रमाते मगर पहले ही ए'लाने आम न फ़रमाने की वजह येही थी कि अपनी बीवी की पाक दामनी का अपनी ज़बान से ए'लान करना हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم मुनासिब नहीं समझते थे, जब हद से ज़ियादा मुनाफ़िक़ीन ने शोरो ग़ोग़ा शुरूअ कर दिया तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने मिम्बर पर अपने ख़याले अक़्दस का इज़्हार फ़रमा दिया मगर अब भी ए'लाने आम के लिये आप को वह्ये इलाही का इनतिज़ार ही रहा।

येह पहले तहरीर किया जा चुका है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهَا सफ़र से आते ही बीमार हो कर साहिबे फ़राश हो गई थीं इस लिये वोह इस बोहतान के तूफ़ान से बिल्कुल ही बे ख़बर थीं जब उन्हें मरज़ से कुछ सिह्हत हासिल हुई और वोह एक रात हज़रते उम्मे मिस्तह सहाबिया رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهَا के साथ रफ़ए हाजत के लिये सहरा में तशरीफ़ ले गईं तो उन की ज़बानी इन्हों ने इस दिल ख़राश और रूह फ़रसा ख़बर को सुना। जिस से इन्हें बड़ा धचका लगा और वोह शिद्दते रन्जो ग़म से निढाल हो गईं चुनान्चे इन की बीमारी में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया

1 ......صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب حديث الافك، الحديث ٤١٤١، ج٣، ص٦٤

और वोह दिन रात बिलक बिलक कर रोती रहीं आख़िर जब इन से येह सदमए जांकाह बरदाश्त न हो सका तो वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم से इजाज़त ले कर अपनी वालिदा के घर चली गईं और इस मन्हूस ख़बर का तज़्किरा अपनी वालिदा से किया, मां ने काफ़ी तसल्ली व तशफ़्फ़ी दी मगर येह बराबर लगातार रोती ही रहीं[1] इसी हालत में ना गहां हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ऐ आइशा ! رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا तुम्हारे बारे में ऐसी ऐसी ख़बर उड़ाई गई है अगर तुम पाक दामन हो और येह ख़बर झूटी है तो अ़न क़रीब ख़ुदा वन्दे तआ़ला तुम्हारी बराअत का ब ज़रीअ़ए वह्य ए'लान फ़रमा देगा। वरना तुम तौबा व इस्तिग़्फ़ार कर लो क्यूं कि जब कोई बन्दा ख़ुदा से तौबा करता है और बख़्शिश मांगता है तो अल्लाह तआ़ला उस के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم की येह गुफ़्तगू सुन कर ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا के आंसू बिल्कुल थम गए और उन्हों ने अपने वालिद ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से कहा कि आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم का जवाब दीजिये। तो उन्हों ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम ! मैं नहीं जानता कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم को क्या जवाब दूं ? फिर उन्हों ने मां से जवाब देने की दरख़्वास्त की तो उन की मां ने भी येही कहा फिर ख़ुद ह़ज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم को येह जवाब दिया कि लोगों ने जो एक बे बुन्याद बात उड़ाई है और येह लोगों के दिलों में बैठ चुकी है और कुछ लोग इस को सच समझ चुके हैं इस सूरत में अगर मैं येह कहूं कि मैं पाक दामन हूं तो लोग इस की तस्दीक़ नहीं करेंगे और अगर मैं इस बुराई का इक़्रार कर लूं तो सब मान लेंगे ह़ालां कि अल्लाह तआ़ला जानता है कि मैं इस इल्ज़ाम से बरी और पाक दामन हूं इस वक़्त मेरी मिसाल ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ السَّلَام के बाप (ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيۡهِ السَّلَام) जैसी है लिहाज़ा मैं भी वोही कहती हूं

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث الافک،الحدیث:۴۱۴۱،ج۳،ص۶۳

जो उन्हों ने कहा था या'नी فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ط وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَاتَصِفُوْنَ O (1)

येह कहती हुई उन्हों ने करवट बदल कर मुंह फैर लिया और कहा कि **अल्लाह** तआ़ला जानता है कि मैं इस तोहमत से बरी और पाक दामन हूं और मुझे यक़ीन है कि **अल्लाह** तआ़ला ज़रूर मेरी बराअत को ज़ाहिर फ़रमा देगा।(2) ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا का जवाब सुन कर अभी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अपनी जगह से उठे भी न थे और हर शख़्स अपनी अपनी जगह पर बैठा ही हुवा था कि ना गहां **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर वह्य नाज़िल होने लगी और आप पर नुज़ूले वह्य के वक़्त की बेचैनी शुरूअ़ हो गई और बा वुजूदे कि शदीद सर्दी का वक़्त था मगर पसीने के क़त्रात मोतियों की त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के बदन से टपकने लगे जब वह्य उतर चुकी तो हंसते हुए **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا ! तुम ख़ुदा का शुक्र अदा करते हुए उस की ह़म्द करो कि उस ने तुम्हारी बराअत और पाक दामनी का ए'लान फ़रमा दिया और फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कुरआन की सूरए नूर में से दस आयतों की तिलावत फ़रमाई जो اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ से शुरूअ़ हो कर وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ O पर ख़त्म होती हैं।

इन आयात के नाज़िल हो जाने के बा'द मुनाफ़िक़ों का मुंह काला हो गया और ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا की पाक दामनी का आफ़्ताब अपनी पूरी आबो ताब के साथ इस त़रह़ चमक उठा कि क़ियामत तक आने वाले मुसलमानों के दिलों की दुन्या में नूरे ईमान से उजाला हो गया।(3)

1\..... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तो सब्र अच्छा और **अल्लाह** ही से मदद चाहता हूं उन बातों पर जो तुम बता रहे हो।* (پ۱۱،یوسف:۱۸)

2\......صحيح البخارى،كتاب المغازى،باب حديث الافك،الحديث ٤١٤١،ج٣،ص٦٤

3\......صحيح البخارى،كتاب المغازى،باب حديث الافك،الحديث ٤١٤١،ج٣،ص٦٥

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हज़रते मिस्तह़ बिन असासा पर बड़ा गुस्सा आया येह आप के ख़ालाज़ाद भाई थे और बचपन ही में इन के वालिद वफ़ात पा गए थे तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन की परवरिश भी की थी और इन की मुफ़्लिसी की वजह से हमेशा आप इन की माली इमदाद फ़रमाते रहते थे मगर इस के बा वुजूद हज़रते मिस्तह़ बिन असासा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने भी इस तोहमत तराशी और इस का चर्चा करने में कुछ हिस्सा लिया था इस वजह से हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने गुस्से में भर कर येह क़सम खा ली कि अब मैं मिस्तह़ बिन असासा की कभी भी कोई माली मदद नहीं करूंगा, इस मौक़अ़ पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई कि :

وَلَا یَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ یُّؤْتُوْۤا اُولِی الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِیْنَ وَالْمُهٰجِرِیْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ۪ۖ وَلْیَعْفُوْا وَلْیَصْفَحُوْاؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ یَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝ [1] (نور)

*और क़सम न खाएं वोह जो तुम में फ़ज़ीलत वाले और गुन्जाइश वाले हैं क़राबत वालों और मिस्कीनों और **अल्लाह** की राह में हिजरत करने वालों को देने की और चाहिये कि मुआ़फ़ करें और दर गुज़र करें क्या तुम इसे पसन्द नहीं करते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे और **अल्लाह** बहुत बख़्शने वाला और बड़ा मेहरबान है।*

इस आयत को सुन कर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी क़सम तोड़ डाली और फिर हज़रते मिस्तह़ बिन असासा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़र्च ब दस्तूरे साबिक़ अ़ता फ़रमाने लगे।[2]

(بخاری حدیث الافک ج۲ص۵۹۵تا۵۹۶ملخصاً)

---

1 ......پ۱۸،النور:۲۲

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ، ج۲،ص۱٦٤

फिर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मस्जिदे नबवी में एक ख़ुत्बा पढ़ा और सूरए नूर की आयतें तिलावत फ़रमा कर मज्मए आ़म में सुना दीं और तोहमत लगाने वालों में से ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित व ह़ज़रते मिस्त़ह़ बिन असासा व ह़ज़रते ह़मना बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और रईसुल मुनाफ़िक़ीन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य इन चारों को ह़द्दे क़ज़्फ़ की सज़ा में अस्सी अस्सी दुर्रे मारे गए।[1]

(مدارج جلد۲ص۱۶۳وغیرہ)

शारेह़े बुख़ारी अ़ल्लामा किरमानी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने फ़रमाया कि ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की बराअत और पाक दामनी क़त़ई व यक़ीनी है जो क़ुरआन से साबित है अगर कोई इस में ज़रा भी शक करे तो वोह काफ़िर है।[2] (بخاری جلد۲ص۵۹۵)

दूसरे तमाम फ़ुक़हाए उम्मत का भी येही मस्लक है।

आयते तयम्मुम का नुज़ूल

इब्ने अ़ब्दुल बर व इब्ने सा'द व इब्ने ह़ब्बान वग़ैरा मुह़द्दिसीन व उ़लमाए सीरत का क़ौल है कि तयम्मुम की आयत इसी ग़ज़्वए मुरैसीअ़ में नाज़िल हुई मगर रौज़तुल अह़बाब में लिखा है कि आयते तयम्मुम किसी दूसरे ग़ज़्वे में उतरी है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم[3] (مدارج النبوۃ ج۲ص۱۵۷)

बुख़ारी शरीफ़ में आयते तयम्मुम की शाने नुज़ूल जो मज़कूर है वोह येह है कि ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का बयान है कि हम लोग **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ एक सफ़र में थे जब हम लोग मक़ामे "**बैदा**" या मक़ामे "**ज़ातुल जैश**" में पहुंचे तो मेरा हार टूट कर कहीं गिर गया **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और कुछ लोग उस हार की तलाश में वहां ठहर गए

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ، ج۲، ص۱۶۳

2 ......حاشیۃ صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث الافک، حاشیۃ:۹، ج۲، ص۵۹۶

3 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ، ج۲، ص۱۵۷، ۱۵۸

और वहां पानी नहीं था तो कुछ लोगों ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आ कर शिकायत की, कि क्या आप देखते नहीं कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने क्या किया ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को यहां ठहरा लिया है ह़ालां कि यहां पानी मौजूद नहीं है, येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मेरे पास आए और जो कुछ ख़ुदा ने चाहा उन्हों ने मुझ को (सख़्त व सुस्त) कहा और फिर (ग़ुस्से में) अपने हाथ से मेरी कोख में कोंचा मारने लगे उस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मेरी रान पर अपना सरे मुबारक रख कर आराम फ़रमा रहे थे इस वजह से (मार खाने के बा वुजूद) मैं हिल नहीं सकती थी सुब्ह़ को जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बेदार हुए तो वहां कहीं पानी मौजूद ही नहीं था । ना गहां हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर तयम्मुम की आयत नाज़िल हो गई चुनान्चे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और तमाम अस्ह़ाब ने तयम्मुम किया और नमाज़े फ़ज्र अदा की इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते उसैद बिन हु़ज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने (ख़ुश हो कर) कहा कि ऐ अबू बक्र की आल ! येह तुम्हारी पहली ही बरकत नहीं है । फिर हम लोगों ने ऊंट को उठाया तो उस के नीचे हम ने हार को पा लिया ।[1]

(بخاری ج۱ص۴۸ کتاب التیمم)

इस ह़दीस में किसी ग़ज़्वे का नाम नहीं है मगर शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने फ़रमाया कि येह वाक़िआ़ ग़ज़्वए बनी अल मुस्त़लिक़ का है जिस का दूसरा नाम ग़ज़्वए मुरैसीअ़ भी है जिस में क़िस्सए इफ़्क वाक़ेअ़ हुवा ।[2] (فتح الباری ج۱ص۳۶۵ کتاب التیمم)

इस ग़ज़्वे में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अठ्ठाईस दिन मदीने से बाहर रहे ।[3] (زُرقانی ج۲ص۱۰۲)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التیمم، باب التیمم، الحدیث:۳۳۴، ج۱، ص۱۳۳

2 ......فتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب التیمم، باب۱، تحت الحدیث۳۳۴، ج۱، ص۳۸۶

3 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، باب غزوة المریسیع، ج۳، ص۱۷

जंगे ख़न्दक़

सि. 5 हि. की तमाम लड़ाइयों में येह जंग सब से ज़ियादा मश्हूर और फ़ैसला कुन जंग है चूंकि दुश्मनों से हिफ़ाज़त के लिये शहरे मदीना के गिर्द ख़न्दक़ खोदी गई थी इस लिये येह लड़ाई "**जंगे ख़न्दक़**" कहलाती है और चूंकि तमाम कुफ़्फ़ारे अ़रब ने मुत्तहिद हो कर इस्लाम के ख़िलाफ़ येह जंग की थी इस लिये इस लड़ाई का दूसरा नाम "**जंगे अह़ज़ाब**" (तमाम जमाअ़तों की मुत्तहिदा जंग) है, क़ुरआने मजीद में इस लड़ाई का तज़्किरा इसी नाम के साथ आया है।[1]

जंगे ख़न्दक़ का सबब

गुज़श्ता अवराक़ में हम येह लिख चुके हैं कि "**क़बीलए बनू नज़ीर**" के यहूदी जब मदीने से निकाल दिये गए तो उन में से यहूदियों के चन्द रूअसा "**ख़ैबर**" में जा कर आबाद हो गए और ख़ैबर के यहूदियों ने उन लोगों का इतना ए'ज़ाज़ो इक्राम किया कि सलाम बिन मशकम व इब्ने अबिल हुक़ैक़ व हुयय बिन अख़्त़ब व किनाना बिन अर्रबीअ़ को अपना सरदार मान लिया येह लोग चूंकि मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़ैज़ो ग़ज़ब में भरे हुए थे और इनतिक़ाम की आग इन के सीनों में दहक रही थी इस लिये इन लोगों ने मदीने पर एक ज़बर दस्त ह़म्ले की स्कीम बनाई, चुनान्चे येह तीनों इस मक़्सद के पेशे नज़र मक्का गए और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से मिल कर येह कहा कि अगर तुम लोग हमारा साथ दो तो हम लोग मुसलमानों को सफ़्ह़ए हस्ती से नेस्तो नाबूद कर सकते हैं कुफ़्फ़ारे क़ुरैश तो इस के भूके ही थे फ़ौरन ही उन लोगों ने यहूदियों की हां में हां मिला दी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से साज़ बाज़ कर लेने के बा'द इन तीनों यहूदियों ने "**क़बीलए बनू ग़त़फ़ान**" का रुख़ किया और ख़ैबर की आधी आमदनी देने का लालच दे कर उन लोगों को भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग करने के लिये आमादा कर

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى،باب غزوة المريسيع،ج٣،ص١٧ ملتقطاً

लिया फिर बनू ग़त्फ़ान ने अपने ह़लीफ़ "**बनू असद**" को भी जंग के लिये तय्यार कर लिया इधर यहूदियों ने अपने ह़लीफ़ "**क़बीलए बनू अस‌अ़द**" को भी अपना हम नवा बना लिया और कुफ़्फ़ारे कुरैश ने अपनी रिश्ते दारियों की बिना पर "**क़बीलए बनू सुलैम**" को भी अपने साथ मिला लिया ग़रज़ इस त़रह़ तमाम क़बाइले अ़रब के कुफ़्फ़ार ने मिलजुल कर एक लश्करे जर्रार तय्यार कर लिया जिस की ता'दाद दस हज़ार थी और अबू सुफ़्यान इस पूरे लश्कर का सिपह सालार बन गया।[1]

(زُرقانی ج۲ص۱۰۴تا۱۰۵)

मुसलमानों की तय्यारी

जब क़बाइले अ़रब के तमाम काफ़िरों के इस गठजोड़ और ख़ौफ़नाक ह़म्ले की ख़बरें मदीना पहुंचीं तो **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब को जम्अ़ फ़रमा कर मश्वरा फ़रमाया कि इस ह़म्ले का मुक़ाबला किस त़रह़ किया जाए ? ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह राय दी कि जंगे उहुद की त़रह़ शहर से बाहर निकल कर इतनी बड़ी फ़ौज के ह़म्ले को मैदानी लड़ाई में रोकना मस्लहृत के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा मुनासिब येह है कि शहर के अन्दर रह कर इस ह़म्ले का दिफ़ाअ़ किया जाए और शहर के गिर्द जिस त़रफ़ से कुफ़्फ़ार की चढ़ाई का ख़त़रा है एक ख़न्दक़ खोद ली जाए ताकि कुफ़्फ़ार की पूरी फ़ौज ब यक वक़्त ह़म्ला आवर न हो सके, मदीने के तीन त़रफ़ चूंकि मकानात की तंग गलियां और खजूरों के झुंड थे इस लिये इन तीनों जानिब से ह़म्ले का इम्कान नहीं था मदीने का सिर्फ़ एक रुख़ खुला हुवा था इस लिये येह तै किया गया कि इसी त़रफ़ पांच गज़ गहरी ख़न्दक़ खोदी जाए, चुनान्चे 8 ज़ू क़ा'दह सि. 5 हि. को **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तीन हज़ार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُم को साथ ले कर ख़न्दक़ खोदने में मसरूफ़ हो गए, **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने खुद

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،باب غزوة المريسيع، ج۳،ص ۲۰،۲۱

अपने दस्ते मुबारक से ख़न्दक़ की ह़द बन्दी फ़रमाई और दस दस आदमियों पर दस दस गज़ ज़मीन तक़्सीम फ़रमा दी और तक़रीबन बीस दिन में येह ख़न्दक़ तय्यार हो गई।(1)

(مدارج النبوۃ ج۲ ص۱۶۸تا۱۷۰)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़न्दक़ के पास तशरीफ़ लाए और जब येह देखा कि अन्सार व मुहाजिरीन कड़ कड़ाते हुए जाड़े के मौसिम में सुब्ह़ के वक़्त कई कई फ़ाक़ों के बा वुजूद जोशो ख़रोश के साथ ख़न्दक़ खोदने में मश्ग़ूल हैं तो इनतिहाई मुतअस्सिर हो कर आप ने येह रज्ज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दिया कि

اَللّٰھُمَّ اِنَّ الْعَیْشَ عَیْشُ الْاٰخِرَۃ فَاغْفِرِ الْاَنْصَارَ وَالْمُھَاجِرَۃ

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! बिला शुबा ज़िन्दगी तो बस आख़िरत की ज़िन्दगी है लिहाज़ा तू अन्सार व मुहाजिरीन को बख़्श दे।

इस के जवाब में अन्सार व मुहाजिरीन ने आवाज़ मिला कर येह पढ़ना शुरूअ़ कर दिया कि

نَحْنُ الَّذِیْنَ بَایَعُوْا مُحَمَّدًا عَلَی الْجِھَادِ مَا بَقِیْنَا اَبَدًا

हम वोह लोग हैं जिन्हों ने जिहाद पर ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की बैअ़त कर ली है जब तक हम ज़िन्दा रहें हमेशा हमेशा के लिये।(2)

(بخاری غزوۂ خندق ج۲ ص۵۸۸)

ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ुद भी ख़न्दक़ खोदते और मिट्टी उठा उठा कर

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،باب غزوة الخندق...الخ، ج۳،ص۱۹،۳۳ ومدارج النبوت ، قسم اول ، باب پنجم،ذکر فضائل...الخ،ج۲،ص۱٦۸ ملخصاً

2 ......صحیح البخاری،کتاب المغازی،باب غزوة الخندق...الخ،الحدیث۴۰۹۹،ج۳،ص۵۰

फेंकते थे। यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के शिकमे मुबारक पर गुबार की तह जम गई और मिट्टी उठाते हुए सहाबा को जोश दिलाने के लिये रज्ज़ के येह अश्आर पढ़ते थे कि

وَاللّٰهِ لَوْلَا اللّٰهُ مَا اهْتَدَيْنَا   وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا

खुदा की क़सम ! अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तो हम हिदायत न पाते और न सदक़ा देते न नमाज़ पढ़ते।

فَاَنْزِلَنْ سَكِيْنَةً عَلَيْنَا   وَثَبِّتِ الْاَقْدَامَ اِنْ لَاقَيْنَا

लिहाज़ा ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! तू हम पर क़ल्बी इत़मीनान उतार दे और जंग के वक़्त हम को साबित क़दम रख।

اِنَّ الْاُلٰى قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا   اِذَا اَرَادُوْا فِتْنَةً اَبَيْنَا

यक़ीनन इन (काफ़िरों) ने हम पर ज़ुल्म किया है और जब भी इन लोगों ने फ़ितने का इरादा किया तो हम लोगों ने इन्कार कर दिया। लफ़्ज़ "اَبَيْنَا" हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم बार बार ब तकरार बुलन्द आवाज़ से दोहराते थे।[1]

एक अ़जीब चट्टान

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बयान फ़रमाया कि ख़न्दक़ खोदते वक़्त ना गहां एक ऐसी चट्टान नुमूदार हो गई जो किसी से भी नहीं टूटी जब हम ने बारगाहे रिसालत में येह माजरा अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم उठे। तीन दिन का फ़ाक़ा था और शिकमे मुबारक पर पथ्थर बंधा हुवा था आप ने अपने दस्ते मुबारक

[1]......صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة الخندق...الخ، الحديث ٤١٠٦، ج٣، ص٥٣
والمواهب اللدنية مع شرح الزرقانى، باب غزوة الخندق...الخ، ج٣، ص٢٧، ٢٨

से फावड़ा मारा तो वोह चट्टान रैत के भुरभुरे टीले की त़रह़ बिखर गई ।[1] (بخاری جلد۲ص۵۸۸خندق)

और एक रिवायत येह है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने उस चट्टान पर तीन मरतबा फावड़ा मारा । हर ज़र्ब पर उस में से एक रौशनी निकलती थी और उस रौशनी में आप ने शाम व ईरान और यमन के शहरों को देख लिया और इन तीनों मुल्कों के फ़त्ह़ होने की सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم को बिशारत दी ।[2] (زُرقانی جلد۲ص۱۰۹ومدارج ج۲ص۱۶۹)

और नसाई की रिवायत में है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने मदाइने किसरा व मदाइने क़ैसर व मदाइने ह़बशा की फ़ुतूह़ात का ए'लान फ़रमाया ।[3] (نسائی ج۲ص۶۳)

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ की दा'वत

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ कहते हैं कि फ़ाक़ों से शिकमे अक़्दस पर पथ्थर बंधा हुवा देख कर मेरा दिल भर आया चुनान्चे मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से इजाज़त ले कर अपने घर आया और बीवी से कहा कि मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को इस क़दर शदीद भूक की ह़ालत में देखा है कि मुझ को सब्र की ताब नहीं रही क्या घर में कुछ खाना है ? बीवी ने कहा कि घर में एक साअ़ जव के सिवा कुछ भी नहीं है, मैं ने कहा कि तुम जल्दी से उस जव को पीस कर गूंध लो और अपने घर का पला हुवा एक बकरी का बच्चा मैं ने ज़ब्ह़ कर के उस की बोटियां बना दीं और बीवी से कहा कि जल्दी से तुम गोश्त रोटी तय्यार कर लो मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को बुला कर

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب غزوۃ الخندق...الخ،الحدیث:٤١٠١،ج٣، ص٥١ملتقطاً والمواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی،باب غزوۃ الخندق...الخ،ج٣،ص٢٧

2 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی،باب غزوۃ الخندق...الخ، ج٣،ص٣١

3 ......سنن النسائی، کتاب الجھاد،باب غزوۃ الترک والحبشۃ،الحدیث:٣١٧٣،ص٥١٧ملخصاً

लाता हूं, चलते वक़्त बीवी ने कहा कि देखना सिर्फ़ **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और चन्द ही अस्ह़ाब को साथ में लाना। खाना कम ही है कहीं मुझे रुस्वा मत कर देना। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ख़न्दक़ पर आ कर चुपके से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! एक साअ़ आटे की रोटियां और एक बकरी के बच्चे का गोश्त मैं ने घर में तय्यार कराया है लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم सिर्फ़ चन्द अश्ख़ास के साथ चल कर तनावुल फ़रमा लें, येह सुन कर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ ख़न्दक़ वालो ! जाबिर ने दा'वते त़आ़म दी है लिहाज़ा सब लोग इन के घर पर चल कर खाना खा लें फिर मुझ से फ़रमाया कि जब तक मैं न आ जाऊं रोटी मत पकवाना, चुनान्चे जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो गुंधे हुए आटे में अपना लुआ़बे दहन डाल कर बरकत की दुआ़ फ़रमाई और गोश्त की हांडी में भी अपना लुआ़बे दहन डाल दिया। फिर रोटी पकाने का हुक्म दिया और येह फ़रमाया कि हांडी चूल्हे से न उतारी जाए फिर रोटी पकनी शुरूअ़ हुई और हांडी में से ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बीवी ने गोश्त निकाल निकाल कर देना शुरूअ़ किया एक हज़ार आदमियों ने आसूदा हो कर खाना खा लिया मगर गूंधा हुवा आटा जितना पहले था उतना ही रह गया और हांडी चूल्हे पर ब दस्तूर जोश मारती रही।[1] (بخاری ج۲ ص۵۸۹ غزوہ خندق)

बा बरकत खजूरें

इसी त़रह़ एक लड़की अपने हाथ में कुछ खजूरें ले कर आई, **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने पूछा कि क्या है ? लड़की ने जवाब दिया कि कुछ खजूरें हैं जो मेरी मां ने मेरे बाप के नाश्ते के लिये भेजी हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन खजूरों को

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغا زی، باب غزوۃ الخندق...الخ، الحدیث:٤١٠١، ٤١٠٢، ج٣، ص٥١ ملخصاً

अपने दस्ते मुबारक में ले कर एक कपड़े पर बिखेर दिया और तमाम अहले ख़न्दक़ को बुला कर फ़रमाया कि ख़ूब सैर हो कर खाओ चुनान्चे तमाम ख़न्दक़ वालों ने शिकम सैर हो कर उन खजूरों को खाया।[1]

(مدارج جلد۲ص۱۶۹)

येह दोनों वाक़िआत **हुज़ूर** सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में से हैं।

इस्लामी अफ़्वाज की मोरचा बन्दी

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़न्दक़ तय्यार हो जाने के बा'द औरतों और बच्चों को मदीने के महफ़ूज़ क़लए़ में जम्अ़ फ़रमा दिया और मदीने पर ह़ज़रते इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को अपना ख़लीफ़ा बना कर तीन हज़ार अन्सार व मुहाजिरीन की फ़ौज के साथ मदीने से निकल कर सलअ़ पहाड़ के दामन में ठहरे। सलअ़ आप की पुश्त पर था और आप के सामने ख़न्दक़ थी। मुहाजिरीन का झन्डा ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के हाथ में दिया और अन्सार का अ़लम बरदार ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बनाया।[2]

(زرقانی جلد۲ص۱۱۱)

कुफ़्फ़ार का ह़म्ला

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश और उन के इत्तिह़ादियों ने दस हज़ार के लश्कर के साथ मुसलमानों पर हल्ला बोल दिया और तीन त़रफ़ से काफ़िरों का लश्कर इस ज़ोरो शोर के साथ मदीने पर उमंड पड़ा कि शहर की फ़ज़ाओं में गर्दो ग़ुबार का तूफ़ान उठ गया इस ख़ौफ़नाक चढ़ाई और लश्करे कुफ़्फ़ार के दल बादल की मा'रिका आराई का नक़्शा क़ुरआन की ज़बान से सुनिये :

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب پنجم ،ج۲،ص۱۶۹، ۱۷۰ ملخصاً

2 ......السيرة الحلبية، باب ذكرمغازيه، غزوة الخندق، ج۲، ص ۴۲۱، ۴۲۲ ملتقطاً
والمواهب اللدنية وشرح الزرقاني،باب غزوة الخندق...الخ، ج۳،ص ۳۵

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۝ (1) (احزاب)

जब काफ़िर तुम पर आ गए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से और जब कि ठिठक कर रह गईं निगाहें और दिल गलों के पास (ख़ौफ़ से) आ गए और तुम **अल्लाह** *पर (उम्मीद व यास से) त़रह़ त़रह़ के गुमान करने लगे उस जगह मुसलमान आज़्माइश और इमतिह़ान में डाल दिये गए और वोह बड़े ज़ोर के ज़ल्ज़ले में झंझोड़ कर रख दिये गए।*

मुनाफ़िक़ीन जो मुसलमानों के दोश बदोश खड़े थे वोह कुफ़्फ़ार के इस लश्कर को देखते ही बुज़दिल हो कर फिसल गए और उस वक़्त उन के निफ़ाक़ का पर्दा चाक हो गया। चुनान्चे उन लोगों ने अपने घर जाने की इजाज़त मांगनी शुरूअ़ कर दी।[2] जैसा कि क़ुरआन में **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान है कि

وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ؕ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ۝ (3) (احزاب)

और एक गुरौह (मुनाफ़िक़ीन) उन में से नबी की इजाज़त त़लब करता था मुनाफ़िक़ कहते हैं कि हमारे घर खुले पड़े हैं ह़ालां कि वोह खुले हुए नहीं थे उन का मक़्सद भागने के सिवा कुछ भी न था।

लेकिन इस्लाम के सच्चे जां निसार मुहाजिरीन व अन्सार ने जब लश्करे कुफ़्फ़ार की तूफ़ानी यलग़ार को देखा तो इस त़रह़ सीना सिपर हो कर डट गए कि "सलअ़" और "उहुद" की पहाड़ियां सर

---

1 ......پ ۲۱،الاحزاب:۱۰،۱۱

2 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی،باب غزوۃ الخندق...الخ،ج۳،ص ۴۰ ملخصاً

3 ......پ ۲۱،الاحزاب:۱۳

उठा उठा कर इन मुजाहिदीन की ऊलुल अ़ज़्मी को हैरत से देखने लगीं इन जां निसारों की ईमानी शुजाअ़त की तस्वीर सफ़हाते कुरआन पर ब सूरते तह़रीर देखिये इरशादे रब्बानी है कि

وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّ تَسْلِيْمًا ۝ (1) (احزاب)

और जब मुसलमानों ने क़बाइले कुफ़्फ़ार के लश्करों को देखा तो बोल उठे कि येह तो वोही मन्ज़र है जिस का अल्लाह और उस के रसूल ने हम से वा'दा किया था और ख़ुदा और उस का रसूल दोनों सच्चे हैं और उस ने उन के ईमान व इत़ाअ़त को और ज़ियादा बढ़ा दिया।

बनू क़ुरैज़ा की ग़द्दारी

क़बीलए बनू **क़ुरैज़ा** के यहूदी अब तक ग़ैर जानिब दार थे लेकिन बनू नज़ीर के यहूदियों ने उन को भी अपने साथ मिला कर लश्करे कुफ़्फ़ार में शामिल कर लेने की कोशिश शुरूअ़ कर दी चुनान्चे हुयय बिन अख़्त़ब अबू सुफ़्यान के मश्वरे से बनू **क़ुरैज़ा** के सरदार का'ब बिन असद के पास गया। पहले तो उस ने अपना दरवाज़ा नहीं खोला और कहा कि हम मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم) के ह़लीफ़ हैं और हम ने उन को हमेशा अपने अ़हद का पाबन्द पाया है इस लिये हम उन से अ़हद शिकनी करना ख़िलाफ़े मुरुव्वत समझते हैं मगर बनू नज़ीर के यहूदियों ने इस क़दर शदीद इसरार किया और त़रह़ त़रह़ से वर ग़लाया कि बिल आख़िर का'ब बिन असद मुआ़हदा तोड़ने के लिये राज़ी हो गया, **बनू क़ुरैज़ा** ने जब मुआ़हदा तोड़ दिया और कुफ़्फ़ार से मिल गए तो कुफ़्फ़ारे मक्का और अबू सुफ़्यान ख़ुशी से बाग़ बाग़ हो गए।[2]

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم को जब इस की ख़बर मिली तो आप ने ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ और ह़ज़रते सा'द

---

1 ......پ ۲۱، الاحزاب:۲۲

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب غزوة الخندق...الخ، ج۳، ص۳۵ ملخصاً

बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا को तह़क़ीक़े ह़ाल के लिये बनू **क़ुरैज़ा** के पास भेजा वहां जा कर मा'लूम हुवा कि वाक़ेई बनू **क़ुरैज़ा** ने मुआ़हदा तोड़ दिया है जब इन दोनों मुअ़ज़्ज़ज़ सह़ाबियों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने बनू **क़ुरैज़ा** को उन का मुआ़हदा याद दिलाया तो उन बद ज़ात यहूदियों ने इनतिहाई बे ह़याई के साथ यहां तक कह दिया कि हम कुछ नहीं जानते कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) कौन हैं ? और मुआ़हदा किस को कहते हैं ? हमारा कोई मुआ़हदा हुवा ही नहीं था येह सुन कर दोनों ह़ज़रात वापस आ गए और सूरते ह़ाल से **ह़ुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को मुत्त़लअ़ किया तो आप ने बुलन्द आवाज़ से "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहा और फ़रमाया कि मुसलमानो ! तुम इस से न घबराओ न इस का ग़म करो इस में तुम्हारे लिये बिशारत है।(1) (زرقانی جلد۲ص۱۱۳)

कुफ़्फ़ार का लश्कर जब आगे बढ़ा तो सामने ख़न्दक़ देख कर ठहर गया और शहरे मदीना का मुह़ासरा कर लिया और तक़रीबन एक महीने तक कुफ़्फ़ार शहरे मदीना के गिर्द घेरा डाले हुए पड़े रहे और येह मुह़ासरा इस सख़्ती के साथ क़ाइम रहा कि **ह़ुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم पर कई कई फ़ाक़े गुज़र गए।

कुफ़्फ़ार ने एक त़रफ़ तो ख़न्दक़ का मुह़ासरा कर रखा था और दूसरी त़रफ़ इस लिये ह़म्ला करना चाहते थे कि मुसलमानों की औ़रतें और बच्चे क़लओं में पनाह गुज़ीं थे मगर **ह़ुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जहां ख़न्दक़ के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم को मुक़र्रर फ़रमा दिया था कि वोह कुफ़्फ़ार के ह़म्लों का मुक़ाबला करते रहें इसी त़रह़ औ़रतों और बच्चों की ह़िफ़ाज़त के लिये भी कुछ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم को मुतअ़य्यन कर दिया था।

अन्सार की ईमानी शुजाअ़त

मुह़ासरे की वजह से मुसलमानों की परेशानी देख कर

---

(1)......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی،باب غزوة الخندق...الخ،ج٣،ص٣٨ملخصاً

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह ख़याल किया कि कहीं मुहाजिरीन व अन्सार हिम्मत न हार जाएं इस लिये आप ने इरादा फ़रमाया कि क़बीलए ग़त्फ़ान के सरदार उयैना बिन ह़सन से इस शर्त़ पर मुआ़हदा कर लें कि वोह मदीने की एक तिहाई पैदावार ले लिया करे और कुफ़्फ़ारे मक्का का साथ छोड़ दे मगर जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ और ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से अपना येह ख़याल ज़ाहिर फ़रमाया तो इन दोनों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! अगर इस बारे में अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से वह्य उतर चुकी है जब तो हमें इस से इन्कार की मजाल ही नहीं हो सकती और अगर येह एक राय है तो या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! जब हम कुफ़्र की ह़ालत में थे उस वक़्त तो क़बीलए ग़त्फ़ान के सरकश कभी हमारी एक खजूर न ले सके और अब जब कि अल्लाह तआ़ला ने हम लोगों को इस्लाम और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की गुलामी की इ़ज़्ज़त से सरफ़राज़ फ़रमा दिया है तो भला क्यूंकर मुमकिन है कि हम अपना माल इन काफ़िरों को दे देंगे ? हम इन कुफ़्फ़ार को खजूरों का अम्बार नहीं बल्कि नेज़ों और तलवारों की मार का तोह़फ़ा देते रहेंगे यहां तक कि अल्लाह तआ़ला हमारे और इन के दरमियान फ़ैसला फ़रमा देगा, येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ख़ुश हो गए और आप को पूरा पूरा इत़्मीनान हो गया।(1) (زرقانی ج۲ص۱۱۳)

ख़न्दक़ की वजह से दस्त ब दस्त लड़ाई नहीं हो सकती थी और कुफ़्फ़ार हैरान थे कि इस ख़न्दक़ को क्यूंकर पार करें मगर दोनों त़रफ़ से रोज़ाना बराबर तीर और पथ्थर चला करते थे आख़िर एक रोज़ अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद व इ़करिमा बिन अबू जह्ल व हबीरा बिन अबी वहब व ज़रार बिन अल ख़त्ताब वग़ैरा कुफ़्फ़ार के चन्द बहादुरों ने बनू किनाना से कहा कि उठो आज मुसलमानों से जंग

(1) السيرة النبوية لابن هشام، غزوة الخندق، ص ٣٩١

कर के बता दो कि शह सुवार कौन है ? चुनान्चे येह सब ख़न्दक़ के पास आ गए और एक ऐसी जगह से जहां ख़न्दक़ की चौड़ाई कुछ कम थी घोड़ा कुदा कर ख़न्दक़ को पार कर लिया ।[1]

अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद मारा गया

सब से आगे अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद था येह अगर्चे नव्वे बरस का खुर्राट बुड्ढा था मगर एक हज़ार सुवारों के बराबर बहादुर माना जाता था जंगे बद्र में ज़ख़्मी हो कर भाग निकला था और इस ने येह क़सम खा रखी थी कि जब तक मुसलमानों से बदला न ले लूंगा बालों में तेल न डालूंगा, येह आगे बढ़ा और चिल्ला चिल्ला कर मुक़ाबले की दा'वत देने लगा तीन मरतबा इस ने कहा कि कौन है जो मेरे मुक़ाबले को आता है ? तीनों मरतबा हज़रते अ़ली शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने उठ कर जवाब दिया कि "मैं"। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रोका कि ऐ अ़ली ! كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم येह अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद है । हज़रते अ़ली शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ किया कि जी हां मैं जानता हूं कि येह अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद है लेकिन मैं इस से लड़ूंगा, येह सुन कर ताजदारे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी ख़ास तलवार ज़ुलफ़िक़ार अपने दस्ते मुबारक से हैदरे कर्रार كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के मुक़द्दस हाथ में दे दी और अपने मुबारक हाथों से उन के सरे अन्वर पर इमामा बांधा और येह दुआ़ फ़रमाई कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू अ़ली (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) की मदद फ़रमा । हज़रते असदुल्लाहिल ग़ालिब अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मुजाहिदाना शान से उस के सामने खड़े हो गए और दोनों में इस त़रह़ मुकालमा शुरूअ़ हुवा :

हज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ : ऐ अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद ! तू मुसलमान हो जा !

अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद : येह मुझ से कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं हो सकता !

---

[1] ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانى، باب غزوة الخندق...الخ، ج٣،ص٤٢ ملخصاً

हज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ : लड़ाई से वापस चला जा !
अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद : येह मुझे मन्ज़ूर नहीं !
हज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ : तो फिर मुझ से जंग कर !
अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद : हंस कर कहा कि मैं कभी येह सोच भी नहीं सकता था कि दुन्या में कोई मुझ को जंग की दा'वत देगा।
हज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ : लेकिन मैं तुझ से लड़ना चाहता हूं।
अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद : आख़िर तुम्हारा नाम क्या है ?
हज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ : अ़ली बिन अबी ता़लिब।
अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद : ऐ भतीजे ! तुम अभी बहुत ही कम उ़म्र हो मैं तुम्हारा ख़ून बहाना पसन्द नहीं करता।
हज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ : लेकिन मैं तुम्हारा ख़ून बहाने को बेहद पसन्द करता हूं।

अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद ख़ून खौला देने वाले येह गर्मा गर्म जुम्ले सुन कर मारे ग़ुस्से के आपे से बाहर हो गया हज़रते शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم पैदल थे और येह सुवार था इस पर जो ग़ैरत सुवार हुई तो घोड़े से उतर पड़ा और अपनी तलवार से घोड़े के पाउं काट डाले और नंगी तलवार ले कर आगे बढ़ा और हज़रते शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم पर तलवार का भरपूर वार किया हज़रते शेरे ख़ुदा ने तलवार के इस वार को अपनी ढाल पर रोका, येह वार इतना सख़्त था कि तलवार ढाल और इमामे को काटती हुई पेशानी पर लगी गो बहुत गहरा ज़ख़्म नहीं लगा मगर फिर भी ज़िन्दगी भर येह तुग़रा आप की पेशानी पर यादगार बन कर रह गया। हज़रते अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने तड़प कर ललकारा कि ऐ अ़म्र ! संभल जा अब मेरी बारी है येह कह कर असदुल्लाहिल ग़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم

ने जुल फ़िक़ार का ऐसा जचा तुला हाथ मारा कि तलवार दुश्मन के शाने को काटती हुई कमर से पार हो गई और वोह तिलमिला कर ज़मीन पर गिरा और दम ज़दन में मर कर फ़िन्नार हो गया और मैदाने कारज़ार ज़बाने ह़ाल से पुकार उठा

शाहे मर्दां, शेरे यज़्दां क़ुव्वते परवर्द गार

لَا فَتٰی اِلَّا عَلِی لَا سَیْفَ اِلَّا ذُوالْفِقَار

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को क़त्ल किया और मुंह फैर कर चल दिये ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि ऐ अ़ली ! كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم आप ने अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद की ज़िरह क्यूं नहीं उतार ली ? सारे अ़रब में इस से अच्छी कोई ज़िरह नहीं है आप ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जुल फ़िक़ार की मार से वोह इस त़रह़ बे क़रार हो कर ज़मीन पर गिरा कि उस की शर्मगाह खुल गई इस लिये ह़या की वजह से मैं ने मुंह फैर लिया ।[1]

(زُرقانی ج۲ص۱۱۴و۱۱۵)

नौफ़िल की लाश

इस के बा'द नौफ़िल ग़ुस्से में बिफरा हुवा मैदान में निकला और पुकारने लगा कि मेरे मुक़ाबले के लिये कौन आता है ? ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस पर बिजली की त़रह़ झपटे और ऐसी तलवार मारी कि वोह दो टुकड़े हो गया और तलवार ज़ीन को काटती हुई घोड़े की कमर तक पहुंच गई लोगों ने कहा कि ऐ ज़ुबैर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तुम्हारी तलवार की तो मिसाल नहीं मिल सकती । आप ने फ़रमाया कि तलवार क्या चीज़ है ? कलाई में दम ख़म और ज़र्ब में कमाल चाहिये । हबीरा और ज़रार भी बड़े तन तने से आगे बढ़े मगर जब ज़ुलफ़िक़ार का वार देखा तो लरज़ा बर अन्दाम

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی،باب غزوة الخندق...الخ، ج۳،ص۴۲ ملخصاً

हो कर फ़िरार हो गए कुफ़्फ़ार के बाक़ी शह सुवार भी जो ख़न्दक़ को पार कर के आ गए थे वोह सब भी भाग खड़े हुए और अबू जहल का बेटा इकरिमा तो इस क़दर बद ह़वास हो गया कि अपना नेज़ा फेंक कर भागा और ख़न्दक़ के पार जा कर उस को क़रार आया।[1] (زرقانی جلد۲)

बा'ज़ मुअर्रिख़ीन का क़ौल है कि नौफ़िल को ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने क़त्ल किया और बा'ज़ ने येह कहा कि नौफ़िल **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ह़म्ला करने की ग़रज़ से अपने घोड़े को कुदा कर ख़न्दक़ को पार करना चाहता था कि ख़ुद ही ख़न्दक़ में गिर पड़ा और उस की गरदन टूट गई और वोह मर गया बहर ह़ाल कुफ़्फ़ारे मक्का ने दस हज़ार दिरहम में उस की लाश को लेना चाहा ताकि वोह उस को ए'ज़ाज़ के साथ दफ़्न करें **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रक़म लेने से इन्कार फ़रमा दिया और इरशाद फ़रमाया कि हम को इस लाश से कोई ग़रज़ नहीं मुशरिकीन इस को ले जाएं और दफ़्न करें हमें इस पर कोई ए'तिराज़ नहीं है। [2] (زرقانی جلد۲ص۱۱۴)

उस दिन का ह़म्ला बहुत ही सख़्त था दिन भर लड़ाई जारी रही और दोनों त़रफ़ से तीर अन्दाज़ी और पथ्थर बाज़ी का सिल्सिला बराबर जारी रहा और किसी मुजाहिद का अपनी जगह से हटना ना मुमकिन था, ख़ालिद बिन वलीद ने अपनी फ़ौज के साथ एक जगह से ख़न्दक़ को पार कर लिया और बिल्कुल ही ना गहां **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के ख़ैमए अक़्दस पर ह़म्ला आवर हो गया मगर ह़ज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस को देख लिया और दो सो मुजाहिदीन को साथ ले कर दौड़ पड़े और ख़ालिद बिन अल वलीद के दस्ते के साथ दस्त ब दस्त की लड़ाई में टकरा गए और ख़ूब जम कर लड़े इस लिये कुफ़्फ़ार ख़ैमए अत़्हर तक न पहुंच सके।[3] (زرقانی جلد۲ص۱۱۷)

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب غزوة الخندق...الخ، ج۳، ص۴۳ ملخصاً

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب غزوة الخندق...الخ، ج۳، ص۴۱، ۴۳ ملتقطاً

3 ......شرح الزرقاني على المواهب، باب غزوة الخندق...الخ، ج۳، ص۴۷ ملخصاً

इस घुमसान की लड़ाई में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की नमाज़े अ़स्र क़ज़ा हो गई। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जंगे ख़न्दक़ के दिन सूरज ग़ुरूब होने के बा'द कुफ़्फ़ार को बुरा भला कहते हुए बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मैं नमाज़े अ़स्र नहीं पढ़ सका। तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं ने भी अभी तक नमाज़े अ़स्र नहीं पढ़ी है फिर आप ने वादिये बत़्हान में सूरज ग़ुरूब हो जाने के बा'द नमाज़े अ़स्र क़ज़ा पढ़ी फिर इस के बा'द नमाज़े मग़्रिब अदा फ़रमाई। और कुफ़्फ़ार के ह़क़ में येह दुआ़ मांगी कि

مَلَاَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ بُيُوۡتَهُمۡ وَقُبُوۡرَهُمۡ نَارًا كَمَا شَغَلُوۡنَا عَنِ الصَّلٰوةِ الۡوُسۡطٰى حَتّٰى غَابَتِ الشَّمۡسُ [1] (بخاری ج۲ ص۵۹۰)

अल्लाह इन मुशरिकों के घरों और इन की क़ब्रों को आग से भर दे इन लोगों ने हम को नमाज़े वुस्त़ा से रोक दिया यहां तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया।

जंगे ख़न्दक़ के दिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने येह दुआ़ भी फ़रमाई कि :

اَللّٰهُمَّ مُنۡزِلَ الۡكِتَابِ سَرِيۡعَ الۡحِسَابِ اهۡزِمِ الۡاَحۡزَابَ اَللّٰهُمَّ اهۡزِمۡهُمۡ وَزَلۡزِلۡهُمۡ [2] (بخاری ج۲ ص۵۹۰)

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ऐ किताब नाज़िल फ़रमाने वाले ! जल्द ह़िसाब लेने वाले ! तू इन कुफ़्फ़ार के लश्करों को शिकस्त दे दे, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन को शिकस्त दे और इन्हें झंझोड़ दे।

---

1 ......صحيح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الخندق، الحديث: ٤١١١، ٤١١٢، ج٣، ص٥٤

2 ......صحيح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الخندق، الحديث: ٤١١٥، ج٣، ص٥٥

हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़िताब मिला

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जंगे ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर जब कि कुफ़्फ़ार मदीने का मुहासरा किये हुए थे और किसी के लिये शहर से बाहर निकलना दुश्वार था तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया कि कौन है जो क़ौमे कुफ़्फ़ार की ख़बर लाए ? तीनों मरतबा हज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की फूफी हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़रज़न्द हैं येह कहा कि "मैं या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! ख़बर लाऊंगा।" हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इस जां निसारी से ख़ुश हो कर ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि

لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيٌّ وَّاِنَّ حَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ (بخاری ج۲ص۵۹۰)

हर नबी के लिये ह़वारी (मददगारे ख़ास) होते हैं और मेरा "**ह़वारी**" ज़ुबैर है।

इसी त़रह़ हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बारगाहे रिसालत से "**ह़वारी**" का ख़िताब मिला जो किसी दूसरे सहाबी को नहीं मिला।[1]

हज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहीद

इस जंग में मुसलमानों का जानी नुक़्सान बहुत ही कम हुवा या'नी कुल छे मुसलमान शहादत से सरफ़राज़ हुए मगर अन्सार का सब से बड़ा बाज़ू टूट गया या'नी हज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो क़बीलए औस के सरदारे आ'ज़म थे, इस जंग में एक तीर से ज़ख़्मी हो गए और फिर शिफ़ायाब न हो सके।[2]

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الخندق، الحدیث:٤١١٣، ج٣، ص٥٤

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب غزوة الخندق...الخ وباب غزوة بنی قريظة، ج٣، ص٤٣، ٨٩ ملتقطاً وملخصاً

आप की शहादत का वाक़िआ़ येह है कि आप एक छोटी सी ज़िरह पहने हुए जोश में भरे हुए नेज़ा ले कर लड़ने के लिये जा रहे थे कि इब्नुल अ़रक़ा नामी काफ़िर ने ऐसा निशाना बांध कर तीर मारा कि जिस से आप की एक रग जिस का नाम अकह़ल है वोह कट गई जंग ख़त्म होने के बा'द इन के लिये **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मस्जिदे नबवी में एक ख़ैमा गाड़ा और इन का इ़लाज करना शुरूअ़ किया। ख़ुद अपने दस्ते मुबारक से इन के ज़ख़्म को दो मरतबा दाग़ा, इसी ह़ालत में आप एक मरतबा बनी **क़ुरैज़ा** तशरीफ़ ले गए और वहां यहूदियों के बारे में अपना वोह फ़ैसला सुनाया जिस का ज़िक्र "**ग़ज़्वए क़ुरैज़ा**" के उ़न्वान के तह़्त आएगा इस के बा'द वोह अपने ख़ैमे में वापस तशरीफ़ लाए और अब उन का ज़ख़्म भरने लग गया था लेकिन उन्हों ने शौक़े शहादत में ख़ुदा वन्दे तआ़ला से येह दुआ़ मांगी कि

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि किसी क़ौम से जंग करने की मुझे इतनी ज़ियादा तमन्ना नहीं है जितनी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से लड़ने की तमन्ना है जिन्हों ने तेरे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को झुटलाया और इन को इन के वत़न से निकाला, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरा तो येही ख़याल है कि अब तूने हमारे और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के दरमियान जंग का ख़ातिमा कर दिया है लेकिन अगर अभी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से कोई जंग बाक़ी रह गई हो जब तो मुझे तू ज़िन्दा रख ताकि मैं तेरी राह में उन काफ़िरों से जिहाद करूं और अगर अब उन लोगों से कोई जंग बाक़ी न रह गई हो तो मेरे इस ज़ख़्म को तू फाड़ दे और इसी ज़ख़्म में तू मुझे मौत अ़त़ा फ़रमा दे।

आप की येह दुआ़ ख़त्म होते ही बिल्कुल अचानक आप का ज़ख़्म फट गया और ख़ून बह कर मस्जिदे नबवी के अन्दर बनी ग़िफ़ार के ख़ैमे में पहुंच गया उन लोगों ने चौंक कर कहा कि ऐ ख़ैमे वालो ! येह कैसा ख़ून है जो तुम्हारे ख़ैमे से बह कर हमारी त़रफ़ आ रहा है ? जब

लोगों ने देखा तो हज़रते सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़ख़्म से ख़ून बह रहा था इसी ज़ख़्म में उन की वफ़ात हो गई।[1]

(بخاری ج۲ص۵۹۱باب مرجع النبی من الاحزاب)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मौत से अ़र्शे इलाही हिल गया और इन के जनाज़े में सत्तर हज़ार मलाएका हाज़िर हुए और जब इन की क़ब्र खोदी गई तो उस में मुश्क की ख़ुश्बू आने लगी।[2] (زرقانی ج۲ص۱۴۳)

ऐन वफ़ात के वक़्त **हुज़ूरे** अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन के सिरहाने तशरीफ़ फ़रमा थे, इन्हों ने आंख खोल कर आख़िरी बार जमाले नुबुव्वत का नज़ारा किया और कहा कि اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ फिर ब आवाज़े बुलन्द येह कहा कि मैं गवाही देता हूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **अल्लाह** के रसूल हैं और आप ने तब्लीग़े रिसालत का हक़ अदा कर दिया।[3]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۱۸۱)

हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहादुरी

जंगे ख़न्दक़ में एक ऐसा मौक़अ़ भी आया कि जब यहूदियों ने येह देखा कि सारी मुसलमान फ़ौज ख़न्दक़ की त़रफ़ मसरूफ़े जंग है तो जिस क़लए में मुसलमानों की औ़रतें और बच्चे पनाह गुज़ीं थे यहूदियों ने अचानक उस पर ह़म्ला कर दिया और एक यहूदी दरवाज़े तक पहुंच गया, **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फूफी हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस को देख लिया और हज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा कि तुम इस यहूदी को क़त्ल कर दो,

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب مرجع النبی صلى الله تعالىٰ عليه وسلم من الاحزاب...الخ، الحديث:٤١٢٢، ج٣، ص٥٦ ومدارج النبوت، قسم سوم، باب پنجم، ج٢، ص١٧١، ١٧٢ ملخصاً

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب غزوة بنی قريظة، ج٣، ص٩٢، ١٠٠ ملتقطاً

3 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب پنجم، ج٢، ص١٨١

वरना येह जा कर दुश्मनों को यहां का ह़ाल व माह़ोल बता देगा ह़ज़रते ह़स्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की उस वक़्त हिम्मत नहीं पड़ी कि उस यहूदी पर ह़म्ला करें येह देख कर ख़ुद ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़ैमे की एक चौब उखाड़ कर उस यहूदी के सर पर इस ज़ोर से मारा कि उस का सर फट गया फिर ख़ुद ही उस का सर काट कर क़लए़ के बाहर फेंक दिया येह देख कर ह़म्ला आवर यहूदियों को यक़ीन हो गया कि क़लए़ के अन्दर भी कुछ फ़ौज मौजूद है इस डर से उन्हों ने फिर इस त़रफ़ ह़म्ला करने की जुरअत ही नहीं की।[1]

(زرقانی ج۲ص۱۱۱)

कुफ़्फ़ार कैसे भागे?

ह़ज़रते नुऐ़म बिन मसऊ़द अश्जई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़बीलए ग़त़फ़ान के बहुत ही मुअ़ज़्ज़ सरदार थे और क़ुरैश व यहूद दोनों को इन की ज़ात पर पूरा पूरा ए'तिमाद था येह मुसलमान हो चुके थे लेकिन कुफ़्फ़ार को इन के इस्लाम का इ़ल्म न था इन्हों ने बारगाहे रिसालत में येह दरख़्वास्त की, कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! अगर आप मुझे इजाज़त दें तो मैं यहूद और क़ुरैश दोनों से ऐसी गुफ़्तगू करूं कि दोनों में फूट पड़ जाए, आप ने इस की इजाज़त दे दी चुनान्चे उन्हों ने यहूद और क़ुरैश से अलग अलग कुछ इस क़िस्म की बातें कीं जिस से वाक़ेई दोनों में फूट पड़ गई।

अबू सुफ़्यान शदीद सर्दी के मौसिम, त़वील मुह़ासरा, फ़ौज का राशन ख़त्म हो जाने से ह़ैरान व परेशान था जब इस को येह पता चला कि यहूदियों ने हमारा साथ छोड़ दिया है तो इस का ह़ौसला पस्त हो गया और वोह बिल्कुल ही बद दिल हो गया। फिर ना गहां कुफ़्फ़ार के लश्कर पर क़हरे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार की ऐसी मार पड़ी कि अचानक मशरिक़ की जानिब से ऐसी तूफ़ान ख़ैज़ आंधी आई कि देगें

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ الخندق...الخ، ج۳، ص۳۷

चूल्हों पर से उलट पलट हो गई, ख़ैमे उखड़ उखड़ कर उड़ गए और काफ़िरों पर ऐसी वहूशत और दह्शत सुवार हो गई कि उन्हें राहे फ़िरार इख़्तियार करने के सिवा कोई चारए कार ही नहीं रहा, येही वोह आंधी है जिस का ज़िक्र ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने क़ुरआन में इस त़रह़ बयान फ़रमाया कि

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۟ [1] (احزاب)

*ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा की उस ने'मत को याद करो जब तुम पर फ़ौजें आ पड़ीं तो हम ने उन पर आंधी भेज दी । और ऐसी फ़ौजें भेजीं जो तुम्हें नज़र नहीं आती थीं और **अल्लाह** तुम्हारे कामों को देखने वाला है ।*

अबू सुफ़्यान ने अपनी फ़ौज में ए'लान करा दिया कि राशन ख़त्म हो चुका, मौसिम इनतिहाई ख़राब है, यहूदियों ने हमारा साथ छोड़ दिया लिहाज़ा अब मुहासरा बेकार है, येह कह कर कूच का नक़्क़ारा बजा देने का हुक्म दे दिया और भाग निकला । क़बीलए ग़तफ़ान का लश्कर भी चल दिया बनू क़ुरैज़ा भी मुहासरा छोड़ कर अपने क़लओं में चले आए और इन लोगों के भाग जाने से मदीने का मत़्लअ़् कुफ़्फ़ार के गर्दो ग़ुबार से साफ़ हो गया ।[2] (مدارج ج۲ص۱۷۲ وزرقانی ج۲ص۱۱۶ تا ۱۱۸)

ग़ज़्वए बनी क़ुरैज़ा

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जंगे ख़न्दक़ से फ़ारिग़ हो कर अपने मकान में तशरीफ़ लाए और हथयार उतार कर ग़ुस्ल फ़रमाया, अभी इत़्मीनान के साथ बैठे भी न थे कि ना गहां ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام

---

1 ......پ ۲۱، الاحزاب: ۹

2 ......السيرة الحلبية، باب ذكر مغازيه ، غزوة بنى قريظة، ج ۲، ص ۴۴۱ـ۴۴۸ ملتقطاً
والمواهب اللدنية مع شرح الزرقانى، باب غزوة الخندق... الخ، ج ۳، ص ۵۴ـ۵۶

तशरीफ़ लाए और कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! आप ने हथयार उतार दिया लेकिन हम फ़िरिश्तों की जमाअ़त ने अभी तक हथयार नहीं उतारा है **अल्लाह** तआ़ला का येह हुक्म है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बनी क़ुरैज़ा की त़रफ़ चलें क्यूं कि इन लोगों ने मुआ़हदा तोड़ कर अ़लानिया जंगे ख़न्दक़ में कुफ़्फ़ार के साथ मिल कर मदीने पर ह़म्ला किया है।[1] (مسلم باب جواز قتال من نقض العہد ج۲ص ۹۵)

चुनान्चे **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ए'लान कर दिया कि लोग अभी हथयार न उतारें और बनी क़ुरैज़ा की त़रफ़ रवाना हो जाएं, **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुद भी हथयार ज़ैबे तन फ़रमाया, अपने घोड़े पर जिस का नाम "लह़ीफ़" था सुवार हो कर लश्कर के साथ चल पड़े और बनी क़ुरैज़ा के एक कूंएं के पास पहुंच कर नुज़ूल फ़रमाया।[2]

(زرقانی ج۲ص ۱۲۸)

बनी क़ुरैज़ा भी जंग के लिये बिल्कुल तय्यार थे चुनान्चे जब ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ उन के क़ल्ओं के पास पहुंचे तो उन ज़ालिम और अ़ह्द शिकन यहूदियों ने **हुज़ूरे** अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को (مَعَاذَاللّٰہ) गालियां दीं **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन के क़ल्ओं का मुह़ासरा फ़रमा लिया और तक़रीबन एक महीने तक येह मुह़ासरा जारी रहा यहूदियों ने तंग आ कर येह दरख़्वास्त पेश की, कि "ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ हमारे बारे में जो फ़ैसला कर दें वोह हमें मन्ज़ूर है।"

ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ जंगे ख़न्दक़ में एक तीर खा कर शदीद त़ौर पर ज़ख़्मी थे मगर इसी ह़ालत में वोह एक गधे पर सुवार हो कर बनी क़ुरैज़ा गए और उन्हों ने यहूदियों के बारे में येह फ़ैसला फ़रमाया कि

1 ......صحیح مسلم، کتاب الجھاد والسیر، باب جواز قتال من...الخ، الحدیث:۱۷۶۹، ص ۹۷۳

2 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی، باب غزوۃ بنی قریظۃ، ج۳، ص ۶۸، ۶۹ ملتقطاً

"लड़ने वाली फ़ौजों को क़त्ल कर दिया जाए, औ़रतें और बच्चे क़ैदी बना लिये जाएं और यहूदियों का माल व अस्बाब माले ग़नीमत बना कर मुजाहिदों में तक़्सीम कर दिया जाए।"

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की ज़बान से येह फ़ैसला सुन कर इरशाद फ़रमाया कि यक़ीनन बिला शुबा तुम ने इन यहूदियों के बारे में वोही फ़ैसला सुनाया है जो अल्लाह का फ़ैसला है।[1]

(مسلم جلد۲ص ۹۵)

इस फ़ैसले के मुताबिक़ बनी क़ुरैज़ा की लड़ाका फ़ौजें क़त्ल की गईं और औ़रतों बच्चों को क़ैदी बना लिया गया और उन के माल व सामान को मुजाहिदीने इस्लाम ने माले ग़नीमत बना लिया और इस शरीर व बद अ़हद क़बीले के शर व फ़साद से हमेशा के लिये मुसलमान पुर अम्न व मह़फ़ूज़ हो गए।

यहूदियों का सरदार हुयय बिन अख़्त़ब जब क़त्ल के लिय मक़्तल में लाया गया तो उस ने क़त्ल होने से पहले येह अल्फ़ाज़ कहे कि

ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم) ख़ुदा की क़सम ! मुझे इस का ज़रा भी अफ़्सोस नहीं है कि मैं ने क्यूं तुम से अ़दावत की लेकिन ह़क़ीक़त येह है कि जो ख़ुदा को छोड़ देता है, ख़ुदा भी उस को छोड़ देता है, लोगो ! ख़ुदा के हुक्म की ता'मील में कोई मुज़ायक़ा नहीं बनी क़ुरैज़ा का क़त्ल होना येह एक हुक्मे इलाही था येह (तौरात) में लिखा हुवा था येह एक सज़ा थी जो ख़ुदा ने बनी इस्राईल पर लिखी थी।[2] (سیرت ابن ہشا غزوۂ بنو قریظہ ج ۳ ص ۲۴۱)

---

1 ......السيرة الحلبية، باب ذكر مغازيه، غزوة بنى قريظة، ج٢، ص٤٤٢_٤٤٨ ملتقطاً
والكامل فى التاريخ، ذكرغزوة بنى قريظة ، ج٢، ص٧٥، ٧٦

2 ......الكامل فى التاريخ ،ذكرغزوة بنى قريظة ،ج٢، ص٧٦

येह हुयय बिन अख़्त़ब वोही बद नसीब है कि जब वोह मदीने से जिला वत़न हो कर ख़ैबर जा रहा था तो उस ने येह मुआ़हदा किया था कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त पर मैं किसी को मदद न दूंगा और इस अ़ह्द पर उस ने ख़ुदा को ज़ामिन बनाया था लेकिन जंगे ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर उस ने इस मुआ़हदे को किस त़रह़ तोड़ डाला येह आप गुज़श्ता अवराक़ में पढ़ चुके कि इस ज़ालिम ने तमाम कुफ़्फ़ारे अ़रब के पास दौरा कर के सब को मदीने पर ह़म्ला करने के लिये उभारा फिर बनू क़ुरैज़ा को भी मुआ़हदा तोड़ने पर उक्साया फिर ख़ुद जंगे ख़न्दक़ में कुफ़्फ़ार के साथ मिल कर लड़ाई में शामिल हुवा।

सि. 5 हि. के मुतफ़र्रिक़ वाक़िआ़त

《1》 इस साल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बीबी ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमाया।[1]

《2》 इसी साल मुसलमान औ़रतों पर पर्दा फ़र्ज़ कर दिया गया।

《3》 इसी साल ह़द्दे क़ज़्फ़ (किसी पर ज़िना की तोहमत लगाने की सज़ा) और लिआ़न व ज़िहार के अह़काम नाज़िल हुए।

《4》 इसी साल तयम्मुम की आयत नाज़िल हुई।[2]

《5》 इसी साल नमाज़े ख़ौफ़ का हुक्म नाज़िल हुवा।

---

1 ......الکامل فی التاریخ ، ذکرالاحداث فی السنة الخامسة ،ج۲،ص۶۹

2 ......المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی، باب غزوة المریسیع، ج۳،ص۹

ग्यारहवां बाब

हिजरत का छटा साल

बैअ़तुर्रिज़वान व सुल्हे हुदैबिया

इस साल के तमाम वाक़िआत में सब से ज़ियादा अहम और शानदार वाक़िआ "**बैअ़तुर्रिज़वान**" और "**सुलहे हुदैबिया**" है। तारीखे़ इस्लाम में इस वाक़िए की बड़ी अहम्मिय्यत है। क्यूं कि इस्लाम की तमाम आयन्दा तरक़्क़ियों का राज़ इसी के दामन से वाबस्ता है। येही वजह है कि गो ब ज़ाहिर येह एक मग़लूबाना सुल्ह थी मगर कुरआने मजीद में खुदा वन्दे आ़लम ने इस को "**फ़तहे मुबीन**" का लक़ब अ़ता फ़रमाया है।

ज़ुल क़ा'दह सि. 6 हि. में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم चौदह सो सहाबए किराम के साथ उ़मरह का एह़राम बांध कर मक्का के लिये रवाना हुए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को अन्देशा था कि शायद कुफ़्फ़ार हमें उ़मरह अदा करने से रोकेंगे इस लिये आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने पहले ही से क़बीलए खुज़ाआ़ के एक शख़्स को मक्का भेज दिया था ताकि वोह कुफ़्फ़ारे मक्का के इरादों की ख़बर लाए। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का क़ाफ़िला मक़ामे "**अ़स्फ़ान**" के क़रीब पहुंचा तो वोह शख़्स येह ख़बर ले कर आया कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने तमाम क़बाइले अ़रब के काफ़िरों को जम्अ़ कर के येह कह दिया है कि मुसलमानों को हरगिज़ हरगिज़ मक्का में दाख़िल न होने दिया जाए। चुनान्चे कुफ़्फ़ारे कुरैश ने अपने तमाम हम नवा क़बाइल को जम्अ़ कर के एक फ़ौज तय्यार कर ली और मुसलमानों का रास्ता रोकने के लिये मक्का से बाहर निकल कर मक़ामे "**बलदह़**" में पड़ाव डाल दिया। और ख़ालिद बिन अल वलीद और अबू जह्ल का बेटा इकरिमा येह दोनों दो सो चुने हुए सुवारों का दस्ता ले कर मक़ामे "**ग़मीम**" तक पहुंच गए। जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को रास्ते में ख़ालिद बिन अल वलीद के सुवारों की गर्द नज़र आई तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने

शाहराह से हट कर सफ़र शुरूअ़ कर दिया और आ़म रास्ते से कट कर आगे बढ़े और मक़ामे "**हुदैबिया**" में पहुंच कर पड़ाव डाला। यहां पानी की बेह़द कमी थी। एक ही कूंआं था। वोह चन्द घन्टों ही में ख़ुश्क हो गया। जब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمۡ प्यास से बेताब होने लगे तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक बड़े प्याले में अपना दस्ते मुबारक डाल दिया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मुक़द्दस उंगलियों से पानी का चश्मा जारी हो गया। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुश्क कूंएं में अपने वुज़ू का ग़साला और अपना एक तीर डाल दिया कूंएं में इस क़दर पानी उबल पड़ा कि पूरा लश्कर और तमाम जानवर इस कूंएं से कई दिनों तक सैराब होते रहे।[1] (بخاری غزوۂ حدیبیہ ج۲ ص۵۹۸ و بخاری ج۱ ص۳۷۸)

बैअ़तुर्रिज़वान

मक़ामे हुदैबिया में पहुंच कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह देखा कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का एक अ़ज़ीम लश्कर जंग के लिये आमादा है और इधर येह ह़ाल येह है कि सब लोग एह़राम बांधे हुए हैं इस ह़ालत में जूंएं भी नहीं मार सकते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुनासिब समझा कि कुफ़्फ़ारे मक्का से मसालह़त की गुफ़्तगू करने के लिये किसी को मक्का भेज दिया जाए। चुनान्चे इस काम के लिये आप ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को मुन्तख़ब फ़रमाया। लेकिन उन्हों ने येह कह कर मा'ज़िरत कर दी कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मेरे बहुत ही सख़्त दुश्मन हैं और मक्का में मेरे क़बीले का कोई एक शख़्स भी ऐसा नहीं है जो मुझ को उन काफ़िरों से बचा सके। येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को मक्का भेजा। उन्हों ने मक्का पहुंच कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ से सुल्ह़ का पैग़ाम पहुंचाया। ह़ज़रते

1 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب غزوة الحديبية، الحديث: ٤١٥٠، ٤١٥٢، ج٣، ص٦٨، ٦٩ ملخصاً والكامل فی التاريخ، ذكر عمرة الحديبية، ج٢، ص٨٦، ٨٧ ملخصاً

उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ अपनी मालदारी और अपने क़बीले वालों की हि़मायत व पासदारी की वजह से कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की निगाहों में बहुत ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ थे। इस लिये कुफ़्फ़ारे क़ुरैश उन पर कोई दराज़ दस्ती नहीं कर सके। बल्कि उन से येह कहा कि हम आप को इजाज़त देते हैं कि आप का'बे का त़वाफ़ और सफ़ा व मर्वह की सअ़्य कर के अपना उ़मरह अदा कर लें मगर हम मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم) को कभी हरगिज़ हरगिज़ का'बे के क़रीब न आने देंगे। ह़ज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने इन्कार कर दिया और कहा कि मैं बिग़ैर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को साथ लिये कभी हरगिज़ हरगिज़ अकेले अपना उ़मरह नहीं अदा कर सकता। इस पर बात बढ़ गई और कुफ़्फ़ार ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मक्का में रोक लिया। मगर हुदैबिया के मैदान में येह ख़बर मश्हूर हो गई कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने उन को शहीद कर दिया। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को जब येह ख़बर पहुंची तो आप صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़ून का बदला लेना फ़र्ज़ है। येह फ़रमा कर आप صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم एक बबूल के दरख़्त के नीचे बैठ गए और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से फ़रमाया कि तुम सब लोग मेरे हाथ पर इस बात की बैअ़त करो कि आख़िरी दम तक तुम लोग मेरे वफ़ादार और जां निसार रहोगे। तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने निहायत ही वल्वला अंगेज़ जोशो ख़रोश के साथ जां निसारी का अ़ह्द करते हुए **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त कर ली। येही वोह बैअ़त है जिस का नाम तारीख़े इस्लाम में **"बैअ़तुर्रिज़वान"** है। ह़ज़रते ह़क़ جَلَّ مَجْدُہٗ ने इस बैअ़त और इस दरख़्त का तज़्किरा क़ुरआने मजीद की सूरए फ़त्ह़ में इस त़रह़ फ़रमाया है कि

اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَکَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰہَ ؕ یَدُ اللّٰہِ فَوْقَ اَیْدِیْھِمْ ۚ (1)

*यक़ीनन जो लोग (ऐ रसूल) तुम्हारी बैअ़त करते हैं वोह तो **अल्लाह** ही से बैअ़त करते हैं उन के हाथों पर **अल्लाह** का हाथ है।*

(1)......پ۲۶، الفتح:۱۰

इसी सूरए फ़त्ह़ में दूसरी जगह इन बैअ़त करने वालों की फ़ज़ीलत और इन के अज्रो सवाब का कुरआने मजीद में इस त़रह़ खुत़्बा पढ़ा कि

لَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ یُبَایِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَافِیْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِیْنَةَ عَلَیْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِیْبًا ۝ (1)

*बेशक **अल्लाह** राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वोह दरख़्त के नीचे तुम्हारी बैअ़त करते थे तो **अल्लाह** ने जाना जो उन के दिलों में है फिर उन पर इत़्मीनान उतार दिया और उन्हें जल्द आने वाली फ़त्ह़ का इन्आ़म दिया।*

लेकिन "बैअ़तुर्रिज़्वान" हो जाने के बा'द पता चला कि ह़ज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शहादत की ख़बर ग़लत़ थी। वोह बा इ़ज़्ज़त तौर पर मक्का में ज़िन्दा व सलामत थे और फिर वोह बख़ैरो आ़फ़िय्यत हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर भी हो गए।(2)

सुल्ह़े हुदैबिया क्यूंकर हुई

हुदैबिया में सब से पहला शख़्स जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा वोह बदील बिन वरक़ा खुज़ाई था। उन का क़बीला अगर्चे अभी तक मुसलमान नहीं हुवा था मगर येह लोग हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के ह़लीफ़ और इनतिहाई मुख़्लिस व ख़ैर ख़्वाह थे। बदील बिन वरक़ा ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को ख़बर दी कि कुफ़्फ़ारे कुरैश ने कसीर ता'दाद में फ़ौज जम्अ़ कर ली है और फ़ौज के साथ राशन के लिये दूध वाली ऊंटनियां भी हैं। येह लोग आप से जंग करेंगे और आप को ख़ानए का'बा तक नहीं पहुंचने देंगे।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम कुरैश को मेरा येह पैग़ाम पहुंचा दो कि हम जंग के इरादे से नहीं आए हैं

---

1 ......پ٢٦، الفتح:١٨

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب امر الحديبية، ج٣، ص٢٢٢-٢٢٦

और न हम जंग चाहते हैं। हम यहां सिर्फ़ उ़मरह अदा करने की ग़रज़ से आए हैं। मुसल्सल लड़ाइयों से क़ुरैश को बहुत काफ़ी जानी व माली नुक़्सान पहुंच चुका है। लिहाज़ा उन के ह़क़ में भी येही बेहतर है कि वोह जंग न करें बल्कि मुझ से एक मुद्दते मुअ़य्यना तक के लिये सुल्ह़ का मुआ़हदा कर लें और मुझ को अहले अ़रब के हाथ में छोड़ दें। अगर क़ुरैश मेरी बात मान लें तो बेहतर होगा और अगर उन्हों ने मुझ से जंग की तो मुझे उस ज़ात की क़सम है जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि मैं उन से उस वक़्त तक लड़ूंगा कि मेरी गरदन मेरे बदन से अलग हो जाए।

बदील बिन वरक़ा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का येह पैग़ाम ले कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के पास गया और कहा कि मैं मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) का एक पैग़ाम ले कर आया हूं। अगर तुम लोगों की मरज़ी हो तो मैं उन का पैग़ाम तुम लोगों को सुनाऊं। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के शरारत पसन्द लौंडे जिन का जोश उन के होश पर ग़ालिब था शोर मचाने लगे कि नहीं ! हरगिज़ नहीं ! हमें उन का पैग़ाम सुनने की कोई ज़रूरत नहीं। लेकिन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सन्जीदा और समझदार लोगों ने पैग़ाम सुनाने की इजाज़त दे दी और बदील बिन वरक़ा ने **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दा'वते सुल्ह़ को उन लोगों के सामने पेश कर दिया। येह सुन कर क़बीलए क़ुरैश का एक बहुत ही मुअ़म्मर और मुअ़ज़्ज़ज़ सरदार उ़र्वह बिन मसऊ़द सक़फ़ी खड़ा हो गया और उस ने कहा कि ऐ क़ुरैश ! क्या मैं तुम्हारा बाप नहीं ? सब ने कहा कि क्यूं नहीं। फिर उस ने कहा कि क्या तुम लोग मेरे बच्चे नहीं ? सब ने कहा कि क्यूं नहीं। फिर उस ने कहा कि मेरे बारे में तुम लोगों को कोई बद गुमानी तो नहीं ? सब ने कहा कि नहीं ! हरगिज़ नहीं। इस के बा'द उ़र्वह बिन मसऊ़द ने कहा कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने बहुत ही समझदारी और भलाई की बात पेश कर दी। लिहाज़ा तुम लोग मुझे इजाज़त दो कि मैं उन से मिल

कर मुआमलात तै करूं। सब ने इजाज़त दे दी कि बहुत अच्छा ! आप जाइये। उर्वह बिन मसऊद वहां से चल कर हुदैबिया के मैदान में पहुंचा और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को मुख़ातब कर के येह कहा कि बदील बिन वरक़ा की ज़बानी आप का पैग़ाम हमें मिला। ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) मुझे आप से येह कहना है कि अगर आप ने लड़ कर कुरैश को बरबाद कर के दुन्या से नेस्तो नाबूद कर दिया तो मुझे बताइये कि क्या आप से पहले कभी किसी अरब ने अपनी ही क़ौम को बरबाद किया है ? और अगर लड़ाई में कुरैश का पल्ला भारी पड़ा तो आप के साथ जो येह लश्कर है मैं इन में ऐसे चेहरों को देख रहा हूं कि येह सब आप को तन्हा छोड़ कर भाग जाएंगे। उर्वह बिन मसऊद का येह जुम्ला सुन कर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सब्रो ज़ब्त की ताब न रही। उन्हों ने तड़प कर कहा कि ऐ उर्वह ! चुप हो जा ! अपनी देवी "लात" की शर्मगाह चूस, क्या हम भला **अल्लाह** के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को छोड़ कर भाग जाएंगे।

उर्वह बिन मसऊद ने तअज्जुब से पूछा कि येह कौन शख़्स है ? लोगों ने कहा कि "येह अबू बक्र हैं।" उर्वह बिन मसऊद ने कहा कि मुझे उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, ऐ अबू बक्र ! अगर तेरा एक एहसान मुझ पर न होता जिस का बदला मैं अब तक तुझ को नहीं दे सका हूं तो मैं तेरी इस तल्ख़ गुफ़्तगू का जवाब देता।[1] उर्वह बिन मसऊद अपने को सब से बड़ा आदमी समझता था। इस लिये जब भी वोह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कोई बात कहता तो हाथ बढ़ा कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की रीश मुबारक पकड़ लेता था और बार बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मुक़द्दस दाढ़ी पर हाथ डालता था। हज़रते मुग़ीरा बिन शअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो नंगी तलवार ले कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पीछे खड़े थे। वोह उर्वह बिन मसऊद

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب ششم، ج۲، ص۲۰۴،۲۰۶ ملخصاً

की इस जुरअत और ह़रकत को बरदाश्त न कर सके। उ़र्वह बिन मसऊ़द जब रीश मुबारक की त़रफ़ हाथ बढ़ाता तो वोह तलवार का क़ब्ज़ा उस के हाथ पर मार कर उस से कहते कि रीश मुबारक से अपना हाथ हटा ले। उ़र्वह बिन मसऊ़द ने अपना सर उठाया और पूछा कि येह कौन आदमी है ? लोगों ने बताया कि येह मुग़ीरा बिन शअ़बा हैं। तो उ़र्वह बिन मसऊ़द ने डांट कर कहा कि ऐ दग़ाबाज़ ! क्या मैं तेरी अ़ह्द शिकनी को संभालने की कोशिश नहीं कर रहा हूं ? (ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चन्द आदमियों को क़त्ल कर दिया था जिस का ख़ूनबहा उ़र्वह बिन मसऊ़द ने अपने पास से अदा किया था येह उसी त़रफ़ इशारा था) [1]

इस के बा'द उ़र्वह बिन मसऊ़द सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को देखने लगा और पूरी लश्कर गाह को देख भाल कर वहां से रवाना हो गया। उ़र्वह बिन मसऊ़द ने हुदैबिया के मैदान में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की ह़ैरत अंगेज़ और तअ़ज्जुब ख़ैज़ अ़क़ीदत व मह़ब्बत का जो मन्ज़र देखा था उस ने इस के दिल पर बड़ा अ़जीब असर डाला था। चुनान्चे उस ने क़ुरैश के लश्कर में पहुंच कर अपना तअस्सुर इन लफ़्ज़ों में बयान किया :

"ऐ मेरी क़ौम ! ख़ुदा की क़सम ! जब मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) अपना खंखार थूकते हैं तो वोह किसी न किसी सह़ाबी की हथेली में पड़ता है और वोह फ़र्ते अ़क़ीदत से उस को अपने चेहरे और अपनी खाल पर मल लेता है। और अगर वोह किसी बात का उन लोगों को हुक्म देते हैं तो सब के सब उस की ता'मील के लिये झपट पड़ते हैं। और वोह जब वुज़ू करते हैं तो उन के अस्ह़ाब उन के वुज़ू के धोवन को इस त़रह़ लूटते हैं कि गोया उन में तलवार चल पड़ेगी और वोह जब कोई गुफ़्तगू करते हैं तो तमाम अस्ह़ाब ख़ामोश हो जाते हैं। और उन के

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب ششم ، ج۲، ص۲۰۶، ۲۰۷ملخصاً

साथियों के दिलों में उन की इतनी ज़बर दस्त अ़ज़्मत है कि कोई शख़्स उन की त़रफ़ नज़र भर देख नहीं सकता। ऐ मेरी क़ौम ! ख़ुदा की क़सम ! मैं ने बहुत से बादशाहों का दरबार देखा है। मैं क़ैसरो किस्रा और नज्जाशी के दरबारों में भी बारयाब हो चुका हूं। मगर ख़ुदा की क़सम ! मैं ने किसी बादशाह के दरबारियों को अपने बादशाह की इतनी ता'ज़ीम करते हुए नहीं देखा है जितनी ता'ज़ीम मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के साथी मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की करते हैं।''[1]

उ़र्वह बिन मसऊ़द की येह गुफ़्त्गू सुन कर क़बीलए बनी किनाना के एक शख़्स ने जिस का नाम **''ह़लीस''** था, कहा कि तुम लोग मुझ को इजाज़त दो कि मैं उन के पास जाऊं। क़ुरैश ने कहा कि ''ज़रूर जाइये।'' चुनान्चे येह शख़्स जब बारगाहे रिसालत के क़रीब पहुंचा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से फ़रमाया कि येह फ़ुलां शख़्स है और येह उस क़ौम से तअ़ल्लुक़ रखता है जो क़ुरबानी के जानवरों की ता'ज़ीम करते हैं। लिहाज़ा तुम लोग क़ुरबानी के जानवरों को इस के सामने खड़ा कर दो और सब लोग **''लब्बैक''** पढ़ना शुरूअ़ कर दो। उस शख़्स ने जब क़ुरबानी के जानवरों को देखा और एह़राम की ह़ालत में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को **''लब्बैक''** पढ़ते हुए सुना तो कहा कि سُبْحٰنَ اللّٰه ! भला इन लोगों को किस त़रह़ मुनासिब है कि बैतुल्लाह से रोक दिया जाए? वोह फ़ौरन ही पलट कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के पास पहुंचा और कहा कि मैं अपनी आंखों से देख कर आ रहा हूं कि क़ुरबानी के जानवर उन लोगों के साथ हैं और सब एह़राम की ह़ालत में हैं। लिहाज़ा मैं कभी भी येह राय नहीं दे सकता कि उन लोगों को ख़ानए का'बा से रोक दिया जाए। इस के बा'द एक शख़्स कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के लश्कर में से खड़ा हो गया जिस का नाम

1 ......الكامل فی التاريخ، ذكر عمرة الحديبية، ج٢، ص٨٨

मकरज़् बिन हफ़्स था उस ने कहा कि मुझ को तुम लोग वहां जाने दो। कुरैश ने कहा : "तुम भी जाओ" चुनान्चे येह चला। जब येह नज़्दीक पहुंचा तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह मकरज़् है। येह बहुत ही लुच्चा आदमी है। उस ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से गुफ़्तगू शुरूअ़ की। अभी उस की बात पूरी भी न हुई थी कि ना गहां "सुहैल बिन अ़म्र" आ गया उस को देख कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने नेक फ़ाली के तौ़र पर येह फ़रमाया कि सुहैल आ गया, लो ! अब तुम्हारा मुआ़मला सह्ल हो गया।[1] चुनान्चे सुहैल ने आते ही कहा कि आइये हम और आप अपने और आप के दरमियान मुआ़हदा की एक दस्तावेज़् लिख लें। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस को मन्ज़ूर फ़रमा लिया और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को दस्तावेज़् लिखने के लिये त़लब फ़रमाया। सुहैल बिन अ़म्र और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दरमियान देर तक सुल्ह़ के शराइत़ पर गुफ़्तगू होती रही। बिल आख़िर चन्द शर्तों पर दोनों का इत्तिफ़ाक़ हो गया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया कि लिखो بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم सुहैल ने कहा कि हम "रह़मान" को नहीं जानते कि येह क्या है ? आप "باسمك اللهم" लिखवाइये जो हमारा और आप का पुराना दस्तूर रहा है। मुसलमानों ने कहा कि हम بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم के सिवा कोई दूसरा लफ़्ज़् नहीं लिखेंगे। मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सुहैल की बात मान ली और फ़रमाया कि अच्छा। ऐ अ़ली ! باسمك اللهم ही लिख दो। फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह इबारत लिखवाई। هذا ما قاضٰى عليه محمد رسول اللّٰه या'नी येह वोह शराइत़ हैं जिन पर कुरैश के साथ मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सुल्ह़ का फ़ैसला किया। सुहैल फिर भड़क गया और कहने लगा कि खु़दा की क़सम ! अगर हम जान लेते कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो न हम आप को बैतुल्लाह से रोकते न आप के साथ जंग करते लेकिन आप "मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह" लिखिये। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया

---

1 ......الكامل فى التاريخ ، ذكرعمرة الحديبية ، ج٢، ص٨٨، ٨٩

कि ख़ुदा की क़सम ! मैं मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह भी हूं और मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह भी हूं। येह और बात है कि तुम लोग मेरी रिसालत को झुटलाते हो। येह कह कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से फ़रमाया कि मुह़म्मदर्रसूलुल्लाह को मिटा दो और इस जगह मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह लिख दो। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से ज़ियादा कौन मुसलमान आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم का फ़रमां बरदार हो सकता है ? लेकिन मह़ब्बत के आ़लम में कभी कभी ऐसा मक़ाम भी आ जाता है कि सच्चे मुह़िब को भी अपने मह़बूब की फ़रमां बरदारी से मह़ब्बत ही के जज़्बे में इन्कार करना पड़ता है। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ! मैं आप के नाम को तो कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं मिटाऊंगा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अच्छा मुझे दिखाओ मेरा नाम कहां है। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस जगह पर उंगली रख दी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने वहां से "रसूलुल्लाह" का लफ़्ज़ मिटा दिया। बहर ह़ाल सुल्ह़ की तह़रीर मुकम्मल हो गई। इस दस्तावेज़ में येह तै कर दिया कि फ़रीक़ैन के दरमियान दस साल तक लड़ाई बिल्कुल मौक़ूफ़ रहेगी। सुल्ह़ नामा की बाक़ी दफ़्आ़त और शर्तें येह थीं कि

﴾1﴿ मुसलमान इस साल बिग़ैर उ़मरह अदा किये वापस चले जाएं।

﴾2﴿ आयन्दा साल उ़मरह के लिये आएं और सिर्फ़ तीन दिन मक्का में ठहर कर वापस चले जाएं।

﴾3﴿ तलवार के सिवा कोई दूसरा हथयार ले कर न आएं। तलवार भी नियाम के अन्दर रख कर थेले वग़ैरा में बन्द हो।

﴾4﴿ मक्का में जो मुसलमान पहले से मुक़ीम हैं उन में से किसी को अपने साथ न ले जाएं और मुसलमानों में से अगर कोई मक्का में रहना चाहे तो उस को न रोकें।

﴾5﴿ काफ़िरों या मुसलमानों में से कोई शख़्स अगर मदीना चला जाए तो वापस कर दिया जाए लेकिन अगर कोई मुसलमान मदीने से मक्का में चला जाए तो वोह वापस नहीं किया जाएगा।

﴾6﴿ क़बाइले अ़रब को इख़्तियार होगा कि वोह फ़रीक़ैन में से जिस के साथ चाहें दोस्ती का मुआ़हदा कर लें ।

येह शर्तें ज़ाहिर है कि मुसलमानों के सख़्त ख़िलाफ़ थीं और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को इस पर बड़ी ज़बर दस्त ना गवारी हो रही थी मगर वोह फ़रमाने रिसालत के ख़िलाफ़ दम मारने से मजबूर थे ।[1] (ابن ہشام ج۳ص۳۱۷وغیرہ)

ह़ज़रते अबू जन्दल का मुआ़मला

येह अ़जीब इत्तिफ़ाक़ है कि मुआ़हदा लिखा जा चुका था लेकिन अभी इस पर फ़रीक़ैन के दस्तख़त़ नहीं हुए थे कि अचानक इसी सुहैल बिन अ़म्र के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते अबू जन्दल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी बेड़ियां घसीटते हुए गिरते पड़ते हुदैबिया में मुसलमानों के दरमियान आन पहुंचे । सुहैल बिन अ़म्र अपने बेटे को देख कर कहने लगा कि ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) इस मुआ़हदे की दस्तावेज़ पर दस्तख़त़ करने के लिये मेरी पहली शर्त़ येह है कि आप अबू जन्दल को मेरी त़रफ़ वापस लौटाइये । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अभी तो इस मुआ़हदे पर फ़रीक़ैन के दस्तख़त़ ही नहीं हुए हैं । हमारे और तुम्हारे दस्तख़त़ हो जाने के बा'द येह मुआ़हदा नाफ़िज़ होगा । येह सुन कर सुहैल बिन अ़म्र कहने लगा कि फिर जाइये । मैं आप से कोई सुल्ह़ नहीं करूंगा । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अच्छा ऐ सुहैल ! तुम अपनी त़रफ़ से इजाज़त दे दो कि मैं अबू जन्दल को अपने पास रख लूं । उस ने कहा कि मैं हरगिज़ कभी

---

1 ......الکامل فی التاریخ،ذکرعمرۃ الحدیبیۃ،ج۲،ص۸۹،۹۰والسیرۃ النبویۃ لابن ھشام، امرالحدیبیۃ فی اٰخر سنۃ...الخ،ص۴۳۱والسیرۃ الحلبیۃ،باب ذکر مغازیہ،غزوۃ الحدیبیۃ، ج۳،ص۲۹وشرح الزرقانی علی المواھب،باب امرالحدیبیۃ،ج۳،ص۱۹۸۔۲۰۰،۲۰۸۔۲۱۰

इस की इजाज़त नहीं दे सकता। ह़ज़रते अबू जन्दल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जब देखा कि मैं फिर मक्का लौटा दिया जाऊंगा तो उन्हों ने मुसलमानों से फ़रयाद की और कहा कि ऐ जमाअ़ते मुस्लिमीन ! देखो मैं मुशरिकीन की त़रफ़ लौटाया जा रहा हूं ह़ालां कि मैं मुसलमान हूं और तुम मुसलमानों के पास आ गया हूं कुफ़्फ़ार की मार से उन के बदन पर चोटों के जो निशानात थे उन्हों ने उन निशानात को दिखा दिखा कर मुसलमानों को जोश दिलाया।[1]

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ह़ज़रते अबू जन्दल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तक़रीर सुन कर ईमानी जज़्बा सुवार हो गया और वोह दन्दनाते हुए बारगाहे रिसालत में पहुंचे और अ़र्ज़ किया कि क्या आप सचमुच **अल्लाह** के रसूल नहीं हैं ? इरशाद फ़रमाया कि क्यूं नहीं ? उन्हों ने कहा कि क्या हम ह़क़ पर और हमारे दुश्मन बात़िल पर नहीं हैं ? इरशाद फ़रमाया कि क्यूं नहीं ? फिर उन्हों ने कहा कि तो फिर हमारे दीन में हम को येह ज़िल्लत क्यूं दी जा रही है ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! मैं **अल्लाह** का रसूल हूं। मैं उस की ना फ़रमानी नहीं करता हूं। वोह मेरा मददगार है। फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! क्या आप हम से येह वा'दा न फ़रमाते थे कि हम अ़न क़रीब बैतुल्लाह में आ कर त़वाफ़ करेंगे ? इरशाद फ़रमाया कि क्या मैं ने तुम को येह ख़बर दी थी कि हम इसी साल बैतुल्लाह में दाख़िल होंगे ? उन्हों ने कहा कि "नहीं" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं फिर कहता हूं कि तुम यक़ीनन का'बे में पहुंचोगे और उस का त़वाफ़ करोगे।

दरबारे रिसालत से उठ कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आए और वोही गुफ़्तगू की जो बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ कर चुके थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، باب امر الحدیبیة، ج۳، ص ۲۱۱۔۲۱۳
و کتاب المغازی للواقدی، غزوة الحدیبیة، ج۲، ص۲۰۸

फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! वोह खुदा के रसूल हैं। वोह जो कुछ करते हैं अल्लाह तआ़ला ही के हुक्म से करते हैं वोह कभी खुदा की ना फ़रमानी नहीं करते और खुदा उन का मददगार है और खुदा की क़सम ! यक़ीनन वोह ह़क़ पर हैं लिहाज़ा तुम उन की रिकाब थामे रहो।[1](ابن ہشام ج۳ص ۳۱۷)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को तमाम उ़म्र इन बातों का सदमा और सख़्त रन्ज व अफ़्सोस रहा जो उन्हों ने जज़्बए बे इख़्तियारी में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم से कह दी थीं। ज़िन्दगी भर वोह इस से तौबा व इस्तिग़्फ़ार करते रहे और इस के कफ़्फ़ारे के लिये उन्हों ने नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, ख़ैरात की, ग़ुलाम आज़ाद किये। बुख़ारी शरीफ़ में अगर्चे इन आ'माल का मुफ़स्सल तज़किरा नहीं है, इज्मालन ही ज़िक्र है लेकिन दूसरी किताबों में निहायत तफ़्सील के साथ येह तमाम बातें बयान की गई हैं।[2]

बहर ह़ाल येह बड़े सख़्त इम्तिह़ान और आज़्माइश का वक़्त था। एक त़रफ़ ह़ज़रते अबू जन्दल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ गिड़गिड़ा कर मुसलमानों से फ़रयाद कर रहे हैं और हर मुसलमान इस क़दर जोश में भरा हुवा है कि अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم का अदब मानेअ़ न होता तो मुसलमानों की तलवारें नियाम से बाहर निकल पड़तीं। दूसरी त़रफ़ मुआ़हदे पर दस्तख़त़ हो चुके हैं और अपने अ़ह्द को पूरा करने की ज़िम्मादारी सर पर आन पड़ी है। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मौक़अ़ की नज़ाकत का ख़याल फ़रमाते हुए ह़ज़रते अबू जन्दल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से फ़रमाया कि तुम सब्र करो। अ़न क़रीब अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये और दूसरे मज़लूमों के लिये ज़रूर ही कोई रास्ता

---

1 ......كتاب المغازى للواقدى، غزوة الحديبية، ج۲، ص۶۰۸
وشرح الزرقانى على المواهب، باب امر الحديبية، ج۳، ص۲۱۷-۲۱۹

2 ......شرح الزرقانى على المواهب، باب امر الحديبية، ج۳، ص۲۱۳

निकालेगा। हम सुल्ह़ का मुआ़हदा कर चुके अब हम इन लोगों से बद अ़हदी नहीं कर सकते। ग़रज़ ह़ज़रते अबू जन्दल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इसी त़रह़ पा ब ज़न्जीर फिर मक्का वापस जाना पड़ा।(1)

जब सुल्ह़ नामा मुकम्मल हो गया तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम को हुक्म दिया कि उठो और क़ुरबानी करो और सर मुंडा कर एह़राम खोल दो। मुसलमानों की ना गवारी और उन के ग़ैज़ो ग़ज़ब का येह आ़लम था कि फ़रमाने नबवी सुन कर एक शख़्स भी नहीं उठा। मगर अदब के ख़याल से कोई एक लफ़्ज़ बोल भी न सका। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस का तज़्किरा फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि मेरी राय येह है कि आप किसी से कुछ भी न कहें और ख़ुद आप अपनी क़ुरबानी कर लें और बाल तरश्वा लें। चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ऐसा ही किया। जब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को क़ुरबानी कर के एह़राम उतारते देख लिया तो फिर वोह लोग मायूस हो गए कि अब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अपना फ़ैसला नहीं बदल सकते तो सब लोग क़ुरबानी करने लगे और एक दूसरे के बाल तराश्ने लगे मगर इस क़दर रन्जो ग़म में भरे हुए थे कि ऐसा मा'लूम होता था कि एक दूसरे को क़त्ल कर डालेगा। इस के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ मदीनए मुनव्वरह के लिये रवाना हो गए।(2)

(بخاری ج۲ص۶۱۰ باب عمرۃ القضاء مسلم جلد۲ص۱۰۴ صلح حدیبیہ بخاری ج۱ص۳۸۰ باب شروط فی الجہاد الخ)

फ़त्हे़ मुबीन

इस सुल्ह़ को तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने एक मग़्लूबाना सुल्ह़ और ज़िल्लत आमेज़ मुआ़हदा समझा और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

---

1 ......كتاب المغازى للواقدى، غزوة الحديبية، ج٢، ص ٦٢٠

2 ......صحيح البخارى، كتاب الشروط، باب الشروط فى الجهاد...الخ، الحديث:٢٧٣١، ٢٧٣٢، ج٢، ص٢٢٧ مفصلاً

को इस से जो रन्ज व सदमा गुज़रा वोह आप पढ़ चुके। मगर इस के बा'द येह आयत नाज़िल हुई कि

اِنَّا فَتَحْنَا لَکَ فَتْحًا مُّبِیْنًاO[1] *ऐ हबीब ! हम ने आप को फ़त्हे मुबीन अ़ता की।*

ख़ुदा वन्दे कुद्दूस ने इस सुल्ह़ को "**फ़त्हे मुबीन**" बताया। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! क्या येह "**फ़त्ह़**" है ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "हां ! येह फ़त्ह़ है।"

गो उस वक़्त इस सुल्ह़ नामे के बारे में सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के ख़यालात अच्छे नहीं थे। मगर इस के बा'द के वाक़िआ़त ने बता दिया कि दर ह़क़ीक़त येही सुल्ह़ तमाम फ़ुतूह़ात की कुन्जी साबित हुई और सब ने मान लिया कि वाक़ेई सुल्हे ह़ुदैबिया एक ऐसी फ़त्हे मुबीन थी जो मक्का में इशाअ़ते इस्लाम बल्कि फ़त्हे मक्का का ज़रीआ़ बन गई। अब तक मुसलमान और कुफ़्फ़ार एक दूसरे से अलग थलग रहते थे एक दूसरे से मिलने जुलने का मौक़अ़ ही नहीं मिलता था मगर इस सुल्ह़ की वजह से एक दूसरे के यहां आमदो रफ़्त आज़ादी के साथ गुफ़्तो शुनीद और तबादिलए ख़यालात का रास्ता खुल गया। कुफ़्फ़ार मदीना आते और महीनों ठहर कर मुसलमानों के किरदार व आ'माल का गहरा मुत़ालआ़ करते। इस्लामी मसाइल और इस्लाम की ख़ूबियों का तज़किरा सुनते जो मुसलमान मक्का जाते वोह अपने चाल चलन, इफ़्फ़त शिआ़री और इ़बादत गुज़ारी से कुफ़्फ़ार के दिलों पर इस्लाम की ख़ूबियों का ऐसा नक़्श बिठा देते कि ख़ुद बख़ुद कुफ़्फ़ार इस्लाम की त़रफ़ माइल होते जाते थे। चुनान्चे तारीख़ गवाह है कि सुल्हे ह़ुदैबिया से फ़त्हे मक्का तक इस क़दर कसीर ता'दाद में लोग मुसलमान हुए कि इतने कभी नहीं हुए थे।

---

1 ......پ٢٦، الفتح:١

चुनान्चे हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद (फ़ातेहे शाम) और हज़रते अम्र बिन अल आस (फ़ातेहे मिस्र) भी इसी ज़माने में ख़ुद बख़ुद मक्का से मदीना जा कर मुसलमान हुए। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا)
(سیرت ابن ہشام ج۳ص ۲۷۷و ص ۲۷۸)

मज़्लूमीने मक्का

हिजरत के बा'द जो लोग मक्का में मुसलमान हुए उन्हों ने कुफ़्फ़ार के हाथों बड़ी बड़ी मुसीबतें बरदाश्त कीं। उन को ज़न्जीरों में बांध बांध कर कुफ़्फ़ार कोड़े मारते थे लेकिन जब भी उन में से कोई शख़्स मौक़अ़ पाता तो छुप कर मदीने आ जाता था। सुल्हे हुदैबिया ने इस का दरवाज़ा बन्द कर दिया क्यूं कि इस सुल्ह नामे में येह शर्त तहरीर थी कि मक्का से जो शख़्स भी हिजरत कर के मदीने जाएगा वोह फिर मक्का वापस भेज दिया जाएगा।

हज़रते अबू बसीर का कारनामा

सुल्हे हुदैबिया से फ़ारिग़ हो कर जब **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो सब से पहले जो बुज़ुर्ग मक्का से हिजरत कर के मदीना आए वोह हज़रते अबू बसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे। कुफ़्फ़ारे मक्का ने फ़ौरन ही दो आदमियों को मदीना भेजा कि हमारा आदमी वापस कर दीजिये। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हज़रते अबू बसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि "तुम मक्के चले जाओ, तुम जानते हो कि हम ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से मुआ़हदा कर लिया है और हमारे दीन में अ़हद शिकनी और ग़द्दारी जाइज़ नहीं है।" हज़रते अबू बसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! क्या आप मुझ को काफ़िरों के ह़वाले फ़रमाएंगे ताकि वोह मुझ को कुफ़्र पर मजबूर करें ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम जाओ ! ख़ुदा वन्दे करीम तुम्हारी रिहाई का कोई सबब बना देगा। आख़िर मजबूर हो कर हज़रते अबू बसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दोनों

काफ़िरों की हिरासत में मक्का वापस हो गए। लेकिन जब मक़ामे "**ज़ुल हुलीफ़ा**" में पहुंचे तो सब खाने के लिये बैठे और बातें करने लगे। हज़रते अबू बसीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक काफ़िर से कहा कि अजी ! तुम्हारी तलवार बहुत अच्छी मा'लूम होती है। उस ने खुश हो कर नियाम से तलवार निकाल कर दिखाई और कहा कि बहुत ही उम्दा तलवार है और मैं ने बारहा लड़ाइयों में इस का तजरिबा किया है। हज़रते अबू बसीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि ज़रा मेरे हाथ में तो दो। मैं भी देखूं कि कैसी तलवार है ? उस ने उन के हाथ में तलवार दे दी। उन्हों ने तलवार हाथ में ले कर इस ज़ोर से तलवार मारी कि काफ़िर की गरदन कट गई और उस का सर दूर जा गिरा। उस के साथी ने जो येह मन्ज़र देखा तो वोह सर पर पैर रख कर भागा और सरपट दौड़ता हुवा मदीना पहुंचा और मस्जिदे नबवी में घुस गया। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने उस को देखते ही फ़रमाया कि येह शख़्स ख़ौफ़ज़दा मा'लूम होता है। उस ने हांपते कांपते हुए बारगाहे नुबुव्वत में अ़र्ज़ किया कि मेरे साथी को अबू बसीर ने क़त्ल कर दिया और मैं भी ज़रूर मारा जाऊंगा। इतने में हज़रते अबू बसीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ भी नंगी तलवार हाथ में लिये हुए आन पहुंचे और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم) ! **अल्लाह** तआ़ला ने आप की ज़िम्मादारी पूरी कर दी क्यूं कि सुल्ह़ नामा की शर्त़ के ब मूजिब आप ने तो मुझ को वापस कर दिया। अब येह **अल्लाह** तआ़ला की मेहरबानी है कि उस ने मुझ को उन काफ़िरों से नजात दे दी। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को इस वाक़िए़ से बड़ा रन्ज पहुंचा और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने ख़फ़ा हो कर फ़रमाया कि

وَيۡلُ اُمِّهٖ مِسۡعَرُ حَرۡبٍ لَوۡ كَانَ لَهٗ اَحَدٌ

इस की मां मरे ! येह तो लड़ाई भड़का देगा। काश ! इस के साथ कोई आदमी होता जो इस को रोकता।

हज़रते अबू बसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस जुम्ले से समझ गए कि मैं फिर काफ़िरों की त़रफ़ लौटा दिया जाऊंगा, इस लिये वोह वहां से चुपके से खिसक गए और साहि़ले समुन्दर के क़रीब मक़ामे "**ऐ़स**" में जा कर ठहरे। उधर मक्का से ह़ज़रते अबू जन्दल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी ज़न्जीर काट कर भागे और वोह भी वहीं पहुंच गए। फिर मक्का के दूसरे मज़्लूम मुसलमानों ने भी मौक़अ़ पा कर कुफ़्फ़ार की क़ैद से निकल निकल कर यहां पनाह लेनी शुरूअ़ कर दी। यहां तक कि इस जंगल में सत्तर आदमियों की जमाअ़त जम्अ़ हो गई। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िलों का येही रास्ता था। जो क़ाफ़िला भी आमदो रफ़्त में यहां से गुज़रता, येह लोग उस को लूट लेते। यहां तक कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की नाक में दम कर दिया। बिल आख़िर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने ख़ुदा और रिश्तेदारी का वासित़ा दे कर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़त़ लिखा कि हम सुल्ह़ नामा में अपनी शर्त़ से बाज़ आए। आप लोगों को साहि़ले समुन्दर से मदीना बुला लीजिये और अब हमारी त़रफ़ से इजाज़त है कि जो मुसलमान भी मक्के से भाग कर मदीना जाए आप उस को मदीने में ठहरा लीजिये। हमें इस पर कोई ए'तिराज़ न होगा।[1] (بخاری باب الشروط فی الجہاد ج۱ص۳۸۰)

येह भी रिवायत है कि क़ुरैश ने ख़ुद अबू सुफ़्यान को मदीने भेजा कि हम सुल्ह़ नामए हुदैबिया में अपनी शर्त़ से दस्त बरदार हो गए। लिहाज़ा आप ह़ज़रते अबू बसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मदीने में बुला लें ताकि हमारे तिजारती क़ाफ़िले उन लोगों के क़त्लो ग़ारत से मह़फ़ूज़ हो जाएं। चुनान्चे **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास ख़त़ भेजा कि तुम अपने साथियों समेत मक़ामे "**ऐ़स**" से मदीना चले आओ। मगर अफ़्सोस ! कि फ़रमाने रिसालत

---

1 ...... صحیح البخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجهاد...الخ، الحدیث:۲۷۳۱، ۲۷۳۲، ج۲، ص۲۲۷ مفصلاً والسيرة النبوية لابن هشام، باب ماجری علیه امر قوم من...الخ، ص۴۳۴، ۴۳۵

उन के पास ऐसे वक़्त पहुंचा जब वोह नज़्अ़ की ह़ालत में थे । मुक़द्दस ख़त़ को उन्हों ने अपने हाथ में ले कर सर और आंखों पर रखा और उन की रूह़ परवाज़ कर गई। ह़ज़रते अबू जन्दल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने साथियों के साथ मिलजुल कर उन की तज्हीज़ व तक्फ़ीन का इनतिज़ाम किया और दफ़्न के बा'द उन की क़ब्र शरीफ़ के पास यादगार के लिये एक मस्जिद बना दी । फिर फ़रमाने रसूल के ब मूजिब येह सब लोग वहां से आ कर मदीने में आबाद हो गए ।[1]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۲۱۸)

सलात़ीन के नाम दा'वते इस्लाम

सि. 6 में सुल्ह़े हुदैबिया के बा'द जब जंग व जिदाल के ख़त़रात टल गए और हर त़रफ़ अम्नो सुकून की फ़ज़ा पैदा हो गई तो चूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की नुबुव्वत व रिसालत का दाएरा सिर्फ़ ख़ित़्त़ए अ़रब ही तक मह़दूद नहीं था बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तमाम आ़लम के लिये नबी बना कर भेजे गए इस लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरादा फ़रमाया कि इस्लाम का पैग़ाम तमाम दुन्या में पहुंचा दिया जाए । चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने रूम के बादशाह "**क़ैसर**" फ़ारस के बादशाह "**किस्रा**" ह़बशा के बादशाह "**नज्जाशी**" मिस्र के बादशाह "**अ़ज़ीज़**" और दूसरे सलात़ीने अ़रब व अ़जम के नाम दा'वते इस्लाम के ख़ुत़ूत़ रवाना फ़रमाए ।

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से कौन कौन ह़ज़रात इन ख़ुत़ूत़ को ले कर किन किन बादशाहों के दरबार में गए ? इन की फ़ेहरिस्त काफ़ी त़वील है मगर एक ही दिन छे ख़ुत़ूत़ लिखवा कर और अपनी मोहर लगा कर जिन छे क़ासिदों को जहां जहां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने रवाना फ़रमाया वोह येह हैं ।

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب ششم ، ج۲، ص۲۱۸

﴾1﴿ हज़रते दिह्या कलबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	हरक़िल क़ैसरे रूम	के दरबार में
﴾2﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	ख़ुसरू परवेज़ शाहे ईरान	//
﴾3﴿ हज़रते हातिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	मक़ूक़स अ़ज़ीज़े मिस्र	//
﴾4﴿ हज़रते अ़म्र बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	नज्जाशी बादशाहे ह़बशा	//
﴾5﴿ हज़रते सलीत़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	हौज़ह, बादशाहे यमामा	//
﴾6﴿ हज़रते शुजाअ़ बिन वहब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	ह़ारिस ग़स्सानी वालिये ग़स्सान	// (1)

नामए मुबारक और क़ैसर

हज़रते दिह्या कलबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم का मुक़द्दस ख़त़ ले कर "**बसरा**" तशरीफ़ ले गए और वहां क़ैसरे रूम के गवर्नरे शाम ह़ारिस ग़स्सानी को दिया। उस ने नामए मुबारक को "**बैतुल मुक़द्दस**" भेज दिया। क्यूं कि क़ैसरे रूम "**हरक़िल**" उन दिनों बैतुल मुक़द्दस के दौरे पर आया हुवा था। क़ैसर को जब येह मुबारक ख़त़ मिला तो उस ने हुक्म दिया कि क़ुरैश का कोई आदमी मिले तो उस को हमारे दरबार में ह़ाज़िर करो। क़ैसर के हुक्काम ने तलाश किया तो इत्तिफ़ाक़ से अबू सुफ़्यान और अ़रब के कुछ दूसरे ताजिर मिल गए। येह सब लोग क़ैसर के दरबार में लाए गए। क़ैसर ने बड़े तुमतुराक़ के साथ दरबार मुन्अ़क़िद किया और ताजे शाही पहन कर तख़्त पर बैठा। और तख़्त के गिर्द अराकीने सल्त़नत, बत़ारिक़ा और अह़बार व रहबान वग़ैरा सफ़ बांध कर खड़े हो गए। इसी ह़ालत में अ़रब के ताजिरों का गुरौह दरबार में ह़ाज़िर किया गया और शाही मह़ल के तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये गए। फिर क़ैसर ने तरजुमान को बुलाया और उस के ज़रीए़ गुफ़्तगू शुरूअ़ की। सब से पहले क़ैसर ने येह सुवाल किया कि अ़रब

(1) ......الکامل فی التاریخ ، ذکر مکاتبة رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم الملوک،ج۲،ص۹۵

में जिस शख़्स ने नुबुव्वत का दा'वा किया है तुम में से उन का सब से क़रीबी रिश्तेदार कौन है? अबू सुफ़्यान ने कहा कि "मैं" क़ैसर ने उन को सब से आगे किया और दूसरे अ़रबों को उन के पीछे खड़ा किया और कहा कि देखो! अगर अबू सुफ़्यान कोई ग़लत़ बात कहे तो तुम लोग इस का झूट ज़ाहिर कर देना। फिर क़ैसर और अबू सुफ़्यान में जो मुकालमा हुवा वोह येह है :

क़ैसर : मुद्दइये नुबुव्वत का ख़ानदान कैसा है?

अबू सुफ़्यान : उन का ख़ानदान शरीफ़ है।

क़ैसर : क्या इस ख़ानदान में इन से पहले भी किसी ने नुबुव्वत का दा'वा किया था?

अबू सुफ़्यान : "नहीं।"

क़ैसर : क्या इन के बाप दादाओं में कोई बादशाह था?

अबू सुफ़्यान : नहीं।

क़ैसर : जिन लोगों ने इन का दीन क़बूल किया है वोह कमज़ोर लोग हैं या साहिबे असर?

अबू सुफ़्यान : कमज़ोर लोग हैं।

क़ैसर : इन के मुत्तबिईन बढ़ रहे हैं या घटते जा रहे हैं?

अबू सुफ़्यान : बढ़ते जा रहे हैं।

क़ैसर : क्या कोई इन के दीन में दाख़िल हो कर फिर इस को ना पसन्द कर के पलट भी जाता है?

अबू सुफ़्यान : "नहीं।"

क़ैसर : क्या नुबुव्वत का दा'वा करने से पहले तुम लोग उन्हें झूटा समझते थे?

अबू सुफ़्यान : "नहीं।"

कै़सर : क्या वोह कभी अ़ह्द शिकनी और वा'दा ख़िलाफ़ी भी करते हैं ?

अबू सुफ़्यान : अभी तक तो नहीं की है लेकिन अब हमारे और उन के दरमियान (हुदैबिया) में जो एक नया मुआ़हदा हुवा है मा'लूम नहीं इस में वोह क्या करेंगे ?

कै़सर : क्या कभी तुम लोगों ने उन से जंग भी की ?

अबू सुफ़्यान : "हां।"

कै़सर : नतीजए जंग क्या रहा ?

अबू सुफ़्यान : कभी हम जीते, कभी वोह।

कै़सर : वोह तुम्हें किन बातों का हुक्म देते हैं ?

अबू सुफ़्यान : वोह कहते हैं कि सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत करो किसी और को ख़ुदा का शरीक न ठहराओ, बुतों को छोड़ो, नमाज़ पढ़ो, सच बोलो, पाक दामनी इख़्तियार करो, रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक करो।[1]

इस सुवाल व जवाब के बा'द कै़सर ने कहा कि तुम ने उन को ख़ानदानी शरीफ़ बताया और तमाम पैग़म्बरों का येही ह़ाल है कि हमेशा पैग़म्बर अच्छे ख़ानदानों ही में पैदा होते हैं। तुम ने कहा कि उन के ख़ानदान में कभी किसी और ने नुबुव्वत का दा'वा नहीं किया। अगर ऐसा होता तो मैं कह देता कि येह शख़्स औरों की नक़्ल उतार रहा है। तुम ने इक़रार किया है कि उन के ख़ानदान में कभी कोई बादशाह नहीं हुवा है। अगर येह बात होती तो मैं समझ लेता कि येह शख़्स अपने आबाओ अजदाद की बादशाही का त़लबगार है। तुम मानते हो कि नुबुव्वत का दा'वा करने से पहले वोह कभी कोई झूट नहीं बोले तो जो शख़्स इन्सानों से झूट नहीं बोलता भला वोह ख़ुदा

1 ......صحیح البخاری، کتاب بدء الوحی، باب٦،الحدیث٧،ج١،ص١٠۔١٢

पर क्यूंकर झूट बांध सकता है ? तुम कहते हो कि कमज़ोर लोगों ने उन के दीन को क़बूल किया है । तो सुन लो हमेशा इब्तिदा में पैग़म्बरों के मुत्तबिईन मुफ़्लिस और कमज़ोर ही लोग होते रहे हैं । तुम ने येह तस्लीम किया है कि उन की पैरवी करने वाले बढ़ते ही जा रहे हैं तो ईमान का मुआ़मला हमेशा ऐसा ही रहा है कि इस के मानने वालों की ता'दाद हमेशा बढ़ती ही जाती है । तुम को येह तस्लीम है कि कोई उन के दीन से फिर कर मुरतद नहीं हो रहा है । तो तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि ईमान की शान ऐसी ही हुवा करती है कि जब इस की लज़्ज़त किसी के दिल में घर कर लेती है तो फिर वोह कभी निकल नहीं सकती । तुम्हें इस का ए'तिराफ़ है कि उन्हों ने कभी कोई ग़द्दारी और बद अ़ह्दी नहीं की है । तो रसूलों का येही ह़ाल होता है कि वोह कभी कोई दग़ा फ़रेब का काम करते ही नहीं । तुम ने हमें बताया कि वोह ख़ुदाए वाहि़द की इ़बादत, शिर्क से परहेज़, बुत परस्ती से मुमानअ़त, पाक दामनी, सिलए रेह़मी का हुक्म देते हैं । तो सुन लो कि तुम ने जो कुछ कहा है अगर येह सही़ह़ है तो वोह अ़न क़रीब इस जगह के मालिक हो जाएंगे जहां इस वक़्त मेरे क़दम हैं और मैं जानता हूं कि एक रसूल का ज़ुहूर होने वाला है मगर मेरा येह गुमान नहीं था कि वोह रसूल तुम अ़रबों में से होगा । अगर मैं येह जान लेता कि मैं उन के बारगाह में पहुंच सकूंगा तो मैं तक्लीफ़ उठा कर वहां तक पहुंचता और अगर मैं उन के पास होता तो मैं उन का पाउं धोता । क़ैसर ने अपनी इस तक़रीर के बा'द हुक्म दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ख़त़ पढ़ कर सुनाया जाए । नामए मुबारक की इ़बारत येह थी :

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم من محمد عبد اللّٰه ورسوله الى هرقل عظيم

الروم سلام على من اتبع الهدى اما بعد فانى ادعوك بدعاية الاسلام اسلم

تسلم يوتك اللّٰه اجرك مرتين فان توليت فان عليك اثم الاريسين ياهل الكتاب

تعالوا الى كلمة سواء بيننا و بينكم ان لا نعبد الا الله ولا نشرك به شيئا ولا يتخذ بعضنا بعضا اربابا من دون الله فان تولوا فقولوا اشهدوا بانا مسلمون(1)

*शुरूअ़ करता हूं मैं ख़ुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रह़म फ़रमाने वाला है। **अल्लाह** के बन्दे और रसूल मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की त़रफ़ से येह ख़त़ "**हरक़िल**" के नाम है जो रूम का बादशाह है। उस शख़्स पर सलामती हो जो हिदायत का पैरू है। इस के बा'द मैं तुझ को इस्लाम की दा'वत देता हूं तू मुसलमान हो जा तो सलामत रहेगा। ख़ुदा तुझ को दो गुना सवाब देगा। और अगर तूने रू गर्दानी की तो तेरी तमाम रिआ़या का गुनाह तुझ पर होगा। ऐ अहले किताब ! एक ऐसी बात की त़रफ़ आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान यक्सां है और वोह येह है कि हम ख़ुदा के सिवा किसी की इ़बादत न करें और हम में से बा'ज़ लोग दूसरे बा'ज़ लोगों को ख़ुदा न बनाएं और अगर तुम नहीं मानते तो गवाह हो जाओ कि हम मुसलमान हैं !*

क़ैसर ने अबू सुफ़्यान से जो गुफ़्तगू की उस से इस के दरबारी पहले ही इनतिहाई बरहम और बेज़ार हो चुके थे। अब येह ख़त़ सुना। फिर जब क़ैसर ने उन लोगों से येह कहा कि ऐ जमाअ़ते रूम ! अगर तुम अपनी फ़लाह़ और अपनी बादशाही की बक़ा चाहते हो तो इस नबी की बैअ़त कर लो। तो दरबारियों में इस क़दर नाराज़ी और बेज़ारी फैल गई कि वोह लोग जंगली गधों की त़रह़ बिदक बिदक कर दरबार से दरवाज़ों की त़रफ़ भागने लगे। मगर चूंकि तमाम दरवाज़े बन्द थे इस लिये वोह लोग बाहर न निकल सके। जब क़ैसर ने अपने दरबारियों की नफ़रत का येह मन्ज़र देखा तो वोह उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हो गया और उस ने कहा कि इन दरबारियों को बुलाओ। जब सब आ गए तो क़ैसर ने कहा कि अभी अभी मैं ने तुम्हारे सामने जो कुछ

1 ......صحيح البخارى، كتاب بدء الوحى،باب ٦،الحديث:٧، ج١، ص١١-١٢ ملخصاً

कहा, इस से मेरा मक़्सद तुम्हारे दीन की पुख़्तगी का इम्तिहान लेना था तो मैं ने देख लिया कि तुम लोग अपने दीन में बहुत पक्के हो। येह सुन कर तमाम दरबारी क़ैसर के सामने सज्दे में गिर पड़े और अबू सुफ़्यान वग़ैरा दरबार से निकाल दिये गए और दरबार बरख़ास्त हो गया। चलते वक़्त अबू सुफ़्यान ने अपने साथियों से कहा कि अब यक़ीनन अबू कबशा के बेटे (मुहम्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) का मुआमला बहुत बढ़ गया। देख लो ! रूमियों का बादशाह इन से डर रहा है।[1]

(بخاری باب کیف کان بدء الوحی ج ۱ ص ۴ تا ۵ و مسلم ج ۲ ص ۹۷ تا ۹۹، مدارج ج ۲ ص ۲۲۱ وغیرہ)

क़ैसर चूंकि तौरात व इन्जील का माहिर और इल्मे नुजूम से वाक़िफ़ था इस लिये वोह नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां के ज़ुहूर से बा ख़बर था और अबू सुफ़्यान की ज़बान से हालात सुन कर उस के दिल में हिदायत का चराग़ रौशन हो गया था। मगर सल्तनत की हिर्स व हवस की आंधियों ने इस चराग़े हिदायत को बुझा दिया और वोह इस्लाम की दौलत से महरूम रह गया।

ख़ुसरू परवेज़ की बद दिमाग़ी

तक़रीबन इसी मज़्मून के ख़ुतूत दूसरे बादशाहों के पास भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रवाना फ़रमाए। शहनशाहे ईरान ख़ुसरू परवेज़ के दरबार में जब नामए मुबारक पहुंचा तो सिर्फ़ इतनी सी बात पर उस के ग़ुरूर और घमन्ड का पारा इतना चढ़ गया कि उस ने कहा कि इस ख़त में मुहम्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने मेरे नाम से पहले अपना नाम क्यूं लिखा ? येह कह कर उस ने फ़रमाने रिसालत को फाड़ डाला और पुर्ज़े पुर्ज़े कर के ख़त को ज़मीन पर फेंक दिया। जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को येह ख़बर मिली तो आप ने फ़रमाया कि

مَزَّقَ كِتَابِىْ مَزَّقَ اللّٰهُ مُلْكَهٗ

1 ......صحیح البخاری، کتاب بدء الوحی، باب ٦، الحدیث: ٧، ج ١، ص ١١ـ١٢ ملخصاً

उस ने मेरे ख़त़ को टुकड़े टुकड़े कर डाला ख़ुदा उस की सल्त़नत को टुकड़े टुकड़े कर दे। चुनान्चे इस के बा'द ही ख़ुसरू परवेज़ को उस के बेटे "शैरूया" ने रात में सोते हुए उस का शिकम फाड़ कर उस को क़त्ल कर दिया। और उस की बादशाही टुकड़े टुकड़े हो गई। यहां तक कि ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में येह हुकूमत सफ़्ह़ए हस्ती से मिट गई।[1]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۲۲۵وغیرہ وبخاری ج۱ص۱۱)

नज्जाशी का किरदार

नज्जाशी बादशाहे ह़बशा के पास जब फ़रमाने रिसालत पहुंचा तो उस ने कोई बे अदबी नहीं की। इस मुआ़मले में मुअर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है कि उस नज्जाशी ने इस्लाम क़बूल किया या नहीं? मगर मवाहिबे लदुन्निय्यह में लिखा हुवा है कि येह नज्जाशी जिस के पास ए'लाने नुबुव्वत के पांचवें साल मुसलमान मक्का से हिजरत कर के गए थे और सि. 6 हि. में जिस के पास **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़त़ भेजा और सि. 9 हि. में जिस का इनतिक़ाल हुवा और मदीने में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जिस की ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई उस का नाम "असमह़ा" था और येह बिला शुबा मुसलमान हो गया था। लेकिन इस के बा'द जो नज्जाशी तख़्त पर बैठा उस के पास भी **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस्लाम का दा'वत नामा भेजा था। मगर उस के बारे में कुछ मा'लूम नहीं होता कि उस नज्जाशी का नाम क्या था? और उस ने इस्लाम क़बूल किया या नहीं? मश्हूर है कि येह दोनों मुक़द्दस ख़ुत़ूत़ अब तक सलात़ीने ह़बशा के पास मौजूद हैं और वोह लोग इस का बेह़द अदबो एह़तिराम करते हैं। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم [2]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۲۲۰)

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب ششم، ج۲، ص۲۲٤

2 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب ششم، ج۲، ص۲۲۰ ملتقطاً

शाहे मिस्र का बरताव

हज़रते हातिब बिन अबी बलतआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने "मक़ूक़स" मिस्र व इस्कन्दरिया के बादशाह के पास क़ासिद बना कर भेजा। येह निहायत ही अख़्लाक़ के साथ क़ासिद से मिला और फ़रमाने नबवी को बहुत ही ता'ज़ीम व तक्रीम के साथ पढ़ा। मगर मुसलमान नहीं हुवा। हां हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में चन्द चीज़ों का तोह्फ़ा भेजा। दो लौंडियां एक हज़रते "मारिया क़िब्तिया" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا थीं जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हरम में दाख़िल हुईं और इन्हीं के शिकमे मुबारक से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रज़न्द हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पैदा हुए। दूसरी हज़रते "सीरीन" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا थीं जिन को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हज़रते हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अता फ़रमा दिया। इन के बत्न से हज़रते हस्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साहिब ज़ादे हज़रते अब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पैदा हुए इन दोनों लौंडियों के इलावा एक सफ़ेद गधा जिस का नाम "या'फ़ूर" था और एक सफ़ेद ख़च्चर जो दुलदुल कहलाता था, एक हज़ार मिस्क़ाल सोना, एक गुलाम, कुछ शहद, कुछ कपड़े भी थे।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۲۲۹)

बादशाहे यमामा का जवाब

हज़रते सलीत़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब "हौज़ह" बादशाहे यमामा के पास ख़त ले कर पहुंचे तो उस ने भी क़ासिद का एह्तिराम किया। लेकिन इस्लाम क़बूल नहीं किया और जवाब में येह लिखा कि आप जो बातें कहते हैं वोह निहायत अच्छी हैं। अगर आप अपनी हुकूमत में से कुछ मुझे भी हिस्सा दें तो मैं आप की पैरवी करूंगा। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب ششم، ج۲، ص۲۲٦

का ख़त पढ़ कर फ़रमाया कि इस्लाम मुल्क गीरी की हवस के लिये नहीं आया है अगर ज़मीन का एक टुकड़ा भी हो तो मैं न दूंगा ।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۲۲۹)

हारिस ग़स्सानी का घमन्ड

हज़रते शुजाअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जब हारिस ग़स्सानी वालिये ग़स्सान के सामने नामए अक़्दस को पेश किया तो वोह मग़रूर ख़त को पढ़ कर बरहम हो गया और अपनी फ़ौज को तय्यारी का हुक्म दे दिया। चुनान्चे मदीने के मुसलमान हर वक़्त उस के ह़म्ले के मुन्तज़िर रहने लगे । और बिल आख़िर **"ग़ज़्वए मौता"** और **"ग़ज़्वए तबूक"** के वाक़िआ़त दरपेश हुए जिन का मुफ़स्सल तज़्किरा हम आगे तह़रीर करेंगे ।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इन बादशाहों के इ़लावा और भी बहुत से सलातीन व उमरा को दा'वते इस्लाम के ख़ुतूत तह़रीर फ़रमाए जिन में से कुछ ने इस्लाम क़बूल करने से इन्कार कर दिया और कुछ ख़ुश नसीबों ने इस्लाम क़बूल कर के **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में नियाज़ मन्दियों से भरे हुए ख़ुतूत भी भेजे । मसलन यमन के शाहाने हि़मयर में से जिन जिन बादशाहों ने मुसलमान हो कर बारगाहे नुबुव्वत में अ़र्ज़ियां भेजीं जो ग़ज़्वए तबूक से वापसी पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचीं उन बादशाहों के नाम येह हैं :

﴾1﴿ हारिस बिन अ़ब्दे कलाल

﴾2﴿ नईम बिन अ़ब्दे कलाल

﴾3﴿ नो'मान हाकिमे ज़ूरऐन व मुआफ़िर व हमदान

﴾4﴿ ज़ुरआ़ येह सब यमन के बादशाह हैं ।

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب ششم، ج۲، ص۲۲۸

इन के इलावा "फ़रवह बिन अ़म्र" जो कि सल्त़नते रूम की जानिब से गवर्नर था। अपने इस्लाम लाने की ख़बर क़ासिद के ज़रीए बारगाहे रिसालत में भेजी। इस त़रह़ "बाज़ान" जो बादशाहे ईरान किस्रा की त़रफ़ से सूबए यमन का सूबेदार था अपने दो बेटों के साथ मुसलमान हो गया और एक अ़र्ज़ी तह़रीर कर के **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को अपने इस्लाम की ख़बर दी।[1] इन सब का मुफ़स्सल तज़्किरा "**सीरते इब्ने हिशाम व ज़ुरक़ानी व मदारिजुन्नुबुव्वह**" वग़ैरा में मौजूद है। हम अपनी इस मुख़्तसर किताब में इन का मुफ़स्सल बयान तह़रीर करने से मा'ज़िरत ख़्वाह हैं।

सरिय्यए नज्द

सि. 6 हि. में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुस्लिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मा तह़्ती में एक लश्कर नज्द की जानिब रवाना फ़रमाया। उन लोगों ने बनी ह़नीफ़ा के सरदार समामा बिन उसाल को गरिफ़्तार कर लिया और मदीना लाए। जब लोगों ने इन को बारगाहे रिसालत में पेश किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि इस को मस्जिदे नबवी के एक सुतून में बांध दिया जाए। चुनान्चे येह सुतून में बांध दिये गए। फिर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उस के पास तशरीफ़ ले गए और दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ समामा ! तुम्हारा क्या ह़ाल है ? और तुम अपने बारे में क्या गुमान करते हो ? समामा ने जवाब दिया कि ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! मेरा ह़ाल और ख़याल तो अच्छा ही है। अगर आप मुझे क़त्ल करेंगे तो एक ख़ूनी आदमी को क़त्ल करेंगे और अगर मुझे अपने इन्आ़म से नवाज़ कर छोड़ देंगे तो एक शुक्र गुज़ार को छोड़ेंगे और अगर आप मुझ से कुछ माल के त़लब गार हों तो बता दीजिये। आप को माल दिया

---

1 ......الكامل في التاريخ،ذكر مكاتبة رسول الله صلى الله عليه وسلم الملوك،ج٢،ص٩٦

जाएगा। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم येह गुफ़्त्गू कर के चले आए। फिर दूसरे रोज़ भी येही सुवाल व जवाब हुवा। फिर तीसरे रोज़ भी येही हुवा। इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से फ़रमाया कि समामा को छोड़ दो। चुनान्चे लोगों ने उन को छोड़ दिया। समामा मस्जिद से निकल कर एक खजूर के बाग़ में चले गए जो मस्जिदे नबवी के क़रीब ही में था। वहां उन्हों ने ग़ुस्ल किया। फिर मस्जिदे नबवी में वापस आए और कलिमए शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गए और कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम ! मुझे जिस क़दर आप के चेहरे से नफ़रत थी इतनी रूए ज़मीन पर किसी के चेहरे से न थी। मगर आज आप के चेहरे से मुझे इस क़दर महब्बत हो गई है कि इतनी महब्बत किसी के चेहरे से नहीं है। कोई दीन मेरी नज़र में इतना ना पसन्द न था जितना आप का दीन लेकिन आज कोई दीन मेरी नज़र में इतना महबूब नहीं है जितना आप का दीन। कोई शहर मेरी निगाह में इतना बुरा न था जितना आप का शहर और अब मेरा येह हाल हो गया है कि आप के शहर से ज़ियादा मुझे कोई शहर महबूब नहीं है। या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ! मैं उ़मरह अदा करने के इरादे से मक्का जा रहा था कि आप के लश्कर ने मुझे गरिफ़्तार कर लिया। अब आप मेरे बारे में क्या हुक्म देते हैं ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने उन को दुन्या व आख़िरत की भलाइयों का मुज़्दा सुनाया और फिर हुक्म दिया कि तुम मक्का जा कर उ़मरह अदा कर लो !

जब येह मक्का पहुंचे और त़वाफ़ करने लगे तो क़ुरैश के किसी काफ़िर ने इन को देख कर कहा कि ऐ समामा ! तुम साबी (बे दीन) हो गए हो ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने निहायत जुरअत के साथ जवाब दिया कि मैं बे दीन नहीं हुवा हूं बल्कि मैं मुसलमान हो गया हूं और ऐ अहले मक्का ! सुन लो ! अब जब तक रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم इजाज़त न देंगे तुम लोगों को हमारे वत़न से गेहूं

का एक दाना भी नहीं मिल सकेगा। मक्का वालों के लिये इन के वत़न "यमामा" ही से ग़ल्ला आया करता था।(1)

(بخاری ج ۲ ص ۶۲۷ باب وفد بنی حنیفہ و حدیث ثمامہ و مسلم ج ۲ ص ۹۳ باب ربط الاسیر و مدارج، ج ۲ ص ۱۸۹)

अबू राफ़ेअ़ क़त्ल कर दिया गया

सि. 6 हि. के वाक़िआत में से अबू राफ़ेअ़ यहूदी का क़त्ल भी है। अबू राफ़ेअ़ यहूदी का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन अबिल हुक़ैक़ या सलाम बिन अल हुक़ैक़ था। येह बहुत ही दौलत मन्द ताजिर था लेकिन इस्लाम का ज़बर दस्त दुश्मन और बारगाहे नुबुव्वत की शान में निहायत ही बद तरीन गुस्ताख़ और बे अदब था। येह वोही शख़्स है जो हुयय बिन अख़्त़ब यहूदी के साथ मक्का गया और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश और दूसरे क़बाइल को जोश दिला कर ग़ज़्वए ख़न्दक़ में मदीने पर ह़म्ला करने के लिये दस हज़ार की फ़ौज ले कर आया था और अबू सुफ़्यान को उभार कर इसी ने उस फ़ौज का सिपह सालार बनाया था। हुयय बिन अख़्त़ब तो जंगे ख़न्दक़ के बा'द ग़ज़्वए बनी क़ुरैज़ा में मारा गया था मगर येह बच निकला था और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी और इस्लाम की बेख़ कुनी में तन, मन, धन से लगा हुवा था। अन्सार के दोनों क़बीलों औस और ख़ज़रज में हमेशा मुक़ाबला रहता था और येह दोनों अकसर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के सामने नेकियों में एक दूसरे से बढ़ जाने की कोशिश करते रहते थे। चूंकि क़बीलए औस के लोगों ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुस्लिमा वग़ैरा ने सि. 3 हि. में बड़े ख़त़रे में पड़ कर एक दुश्मने रसूल "का'ब बिन अशरफ़ यहूदी" को क़त्ल किया था। इस लिये क़बीलए ख़ज़रज के लोगों ने मश्वरा किया कि अब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का सब से बड़ा दुश्मन "अबू राफ़ेअ़" रह गया है। लिहाज़ा हम लोगों को

(1)......صحیح مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب ربط الاسیر...الخ، الحدیث: ۱۷۶٤، ص ۹۷۰

ومدارج النبوت، قسم سوم، باب ششم، ج ۲، ص ۱۸۹

चाहिये कि उस को क़त्ल कर डालें ताकि हम लोग भी क़बीलए औस की त़रह़ एक दुश्मने रसूल को क़त्ल करने का अज्रो सवाब ह़ासिल कर लें। चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक व अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस व अबू क़तादा व ह़ारिस बिन रिबई व मसऊ़द बिन सिनान व ख़ुज़ाई बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم इस के लिये मुस्तइद और तय्यार हुए। इन लोगों की दरख़्वास्त पर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इजाज़त दे दी और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस जमाअ़त का अमीर मुक़र्रर फ़रमा दिया और इन लोगों को मन्अ़ कर दिया कि बच्चों और औ़रतों को क़त्ल न किया जाए।(1)

(زرقانی علی المواہب ج۲ص۱۶۳)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अबू राफ़ेअ़ के मह़ल के पास पहुंचे और अपने साथियों को हुक्म दिया कि तुम लोग यहां बैठ कर मेरी आमद का इनतिज़ार करते रहो और ख़ुद बहुत ही ख़ुफ़्या तदबीरों से रात में उस के मह़ल के अन्दर दाख़िल हो गए और उस के बिस्तर पर पहुंच कर अंधेरे में उस को क़त्ल कर दिया। जब मह़ल से निकलने लगे तो सीढ़ी से गिर पड़े जिस से इन के पाउं की हड्डी टूट गई। मगर इन्हों ने फ़ौरन ही अपनी पगड़ी से अपने टूटे हुए पाउं को बांध दिया और किसी त़रह़ मह़ल से बाहर आ गए। फिर अपने साथियों की मदद से मदीना पहुंचे। जब दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अबू राफ़ेअ़ के क़त्ल का सारा माजरा बयान किया तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "पाउं फैलाओ" इन्हों ने पाउं फैलाया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक इन के पाउं पर फिरा दिया। फ़ौरन ही टूटी हुई हड्डी जुड़ गई और इन का पाउं बिल्कुल सह़ीह़ व सालिम हो गया।(2) (بخاری ج۲ص۵۷۷ باب قتل النائم المشرک)

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب قتل ابي رافع، ج٣، ص ١٤١-١٤٣ ملخصاً

2 ......صحيح البخاري، كتاب المغازي، باب قتل ابي رافع...الخ، الحديث ٤٠٣٩، ج٣، ص ٣١

सि. 6 हि. की बा'ज़ लड़ाइयां

सि. 6 हि. में सुल्हे हुदैबिया से क़ब्ल चन्द छोटे छोटे लश्करों को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुख़्तलिफ़ अतराफ़ में रवाना फ़रमाया ताकि वोह कुफ़्फ़ार के ह़म्लों की मुदाफ़अ़त करते रहें। इन लड़ाइयों का मुफ़स्सल तज़्किरा ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब और मदारिजुन्नुबुव्वह वग़ैरा किताबों में लिखा हुवा है। मगर इन लड़ाइयों की तरतीब और इन की तारीख़ों में मुअर्रिख़ीन का बड़ा इख़्तिलाफ़ है। इस लिये ठीक तौर पर इन की तारीख़ों की ता'यीन बहुत मुश्किल है। इन वाक़िआ़त का चीदा चीदा बयान ह़दीसों में मौजूद है मगर ह़दीसों में भी इन की तारीख़ें मज़्कूर नहीं है। अलबत्ता बा'ज़ क़राइन व शवाहिद से इतना पता चलता है कि येह सब सुल्हे हुदैबिया से क़ब्ल के वाक़िआ़त हैं। इन लड़ाइयों में से चन्द के नाम येह हैं :

﴾1﴿ सरिय्यए क़रता ﴾2﴿ ग़ज़्वए बनी लिह़यान ﴾3﴿ सरिय्यतुल ग़मर ﴾4﴿ सरिय्यए ज़ैद ब जानिब जमूम ﴾5﴿ सरिय्यए ज़ैद ब जानिब ऐस ﴾6﴿ सरिय्यए ज़ैद ब जानिब वादिये अल क़ुरा ﴾7﴿ सरिय्यए अ़ली ब जानिब बनी सा'द ﴾8﴿ सरिय्यए ज़ैद ब जानिब उम्मे क़रफ़ा ﴾9﴿ सरिय्यए इब्ने रवाह़ा ﴾10﴿ सरिय्यए इब्ने मुस्लिमा ﴾11﴿ सरिय्यए ज़ैद ब जानिब त़रफ़ ﴾12﴿ सरिय्यए अ़कल व उ़रैना ﴾13﴿ बअ़्स ज़मरी। इन लड़ाइयों के नामों में भी इख़्तिलाफ़ है। हम ने यहां इन लड़ाइयों के मज़्कूरा बाला नाम ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब की फ़ेहरिस्त से नक़्ल किये हैं।[1]

(فہرست زرقانی علی المواہب ج۲ص۳۵۰)

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب، الفهرس، ج۳، ص۵۳۹

बारहवां बाब

हिजरत का सातवां साल

ग़ज़्वए ज़ातुल क़रद

मदीने के क़रीब **"ज़ातुल क़रद"** एक चरागाह का नाम है जहां हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ऊंटनियां चरती थीं। अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़यैना फ़ज़ारी ने जो क़बीलए ग़त़फ़ान से तअ़ल्लुक़ रखता था अपने चन्द आदमियों के साथ ना गहां इस चरागाह पर छापा मारा और येह लोग बीस ऊंटनियों को पकड़ कर ले भागे। मश्हूर तीर अन्दाज़ सह़ाबी ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को सब से पहले इस की ख़बर मा'लूम हुई। इन्हों ने इस ख़त़रे का ए'लान करने के लिये बुलन्द आवाज़ से येह ना'रा मारा कि **"या सबाह़ा"** फिर अकेले ही उन डाकूओं के तआ़क़ुब में दौड़ पड़े और उन डाकूओं को तीर मार मार कर तमाम ऊंटनियों को भी छीन लिया और डाकू भागते हुए जो तीस चादरें फेंकते गए थे उन चादरों पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم लश्कर ले कर पहुंचे। ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! मैं ने उन छापा मारों को अभी तक पानी नहीं पीने दिया है। येह सब प्यासे हैं। इन लोगों के तआ़क़ुब में लश्कर भेज दीजिये तो येह सब गरिफ़्तार हो जाएंगे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपनी ऊंटनियों के मालिक हो चुके हो। अब उन लोगों के साथ नर्मी का बरताव करो। फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को अपने ऊंट के पीछे बिठा लिया और मदीने वापस तशरीफ़ लाए।

हज़रते इमाम बुख़ारी का बयान है कि येह ग़ज़्वा जंगे ख़ैबर के लिये रवाना होने से तीन दिन क़ब्ल हुवा।(1)

(بخاری غزوۂ ذات القرد، ج۲ص۶۰۳و مسلم ج۲ص۱۱۳)

जंगे ख़ैबर

"ख़ैबर" मदीने से आठ मन्ज़िल की दूरी पर एक शहर है। एक अंग्रेज़ सय्याह ने लिखा है कि ख़ैबर मदीने से तीन सो बीस किलो मीटर दूर है। येह बड़ा ज़रख़ेज़ अ़लाक़ा था और यहां उ़म्दा खजूरें ब कसरत पैदा होती थीं। अ़रब में यहूदियों का सब से बड़ा मर्कज़ येही ख़ैबर था। यहां के यहूदी अ़रब में सब से ज़ियादा मालदार और जंगजू थे और इन को अपनी माली और जंगी ताक़तों पर बड़ा नाज़ और घमन्ड भी था। येह लोग इस्लाम और बानिये इस्लाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के बद तरीन दुश्मन थे। यहां यहूदियों ने बहुत से मज़्बूत क़लए़ बना रखे थे जिन में से बा'ज़ के आसार अब तक मौजूद हैं। इन में से आठ क़लए़ बहुत मश्हूर हैं। जिन के नाम येह हैं :

(1) क़ुतैबा (2) नाअ़म (3) शक़ (4) क़मूस
(5) नत़ारह (6) सअ़ब (7) सत़ीख़ (8) सलालम

दर ह़क़ीक़त येह आठों क़लए़ आठ मह़ल्लों के मिस्ल थे और इन्ही आठों क़लओं का मजमूआ़ "ख़ैबर" कहलाता था।(2)

(مدارج النبوۃ ج۲ص۲۳۴)

ग़ज़्वए ख़ैबर कब हुवा ?

तमाम मुअर्रिख़ीन का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि जंगे ख़ैबर मुहर्रम के महीने में हुई। लेकिन इस में इख़्तिलाफ़ है कि सि. 6 हि. था

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ ذات القرد، الحدیث ۴۱۹۴، ج۳، ص۷۹
والمواهب اللدنیة و شرح الزرقانی، باب غزوۃ ذی قرد، ج۳، ص۱۱۰ ملتقطاً

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب ششم ، ج۲، ص۲۳۴

या सि. 7। ग़ालिबन इस इख़्तिलाफ़ की वजह येह है कि बा'ज़ लोग सिने हिजरी की इब्तिदा मुहर्रम से करते हैं। इस लिये उन के नज़्दीक मुहर्रम में सि. 7 हि. शुरूअ़ हो गया और बा'ज़ लोग सिने हिजरी की इब्तिदा रबीउ़ल अव्वल से करते हैं। क्यूं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم की हिजरत रबीउ़ल अव्वल में हुई। लिहाज़ा उन लोगों के नज़्दीक येह मुहर्रम व सफ़र सि. 6 हि. के थे।[1] وَاللّٰهُ اَعْلَم

जंगे ख़ैबर का सबब

येह हम पहले लिख चुके हैं कि जंगे ख़न्दक़ में जिन जिन कुफ़्फ़ारे अ़रब ने मदीने पर ह़म्ला किया था उन में ख़ैबर के यहूदी भी थे। बल्कि दर ह़क़ीक़त वोही इस ह़म्ले के बानी और सब से बड़े मुह़र्रिक थे। चुनान्चे "बनू नज़ीर" के यहूदी जब मदीने से जिला वत़न किये गए तो यहूदियों के जो रूअसा ख़ैबर चले गए थे उन में से हुयय बिन अख़्त़ब और अबू राफ़ेअ़ सलाम बिन अबिल हुक़ैक़ ने तो मक्का जा कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को मदीने पर ह़म्ला करने के लिये उभारा और तमाम क़बाइल का दौरा कर के कुफ़्फ़ारे अ़रब को जोश दिला कर बर अंगेख़्ता किया और ह़म्ला आवरों की माली इमदाद के लिये पानी की त़रह़ रूपिया बहाया। और ख़ैबर के तमाम यहूदियों को साथ ले कर यहूदियों के येह दोनों सरदार ह़म्ला करने वालों में शामिल रहे। हुयय बिन अख़्त़ब तो जंगे क़ुरैज़ा में क़त्ल हो गया और अबू राफ़ेअ़ सलाम बिन अबिल हुक़ैक़ को सि. 6 हि. में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस के मह़ल में दाख़िल हो कर क़त्ल कर दिया। लेकिन इन सब वाक़िआ़त के बा'द भी ख़ैबर के यहूदी बैठ नहीं रहे बल्कि और ज़ियादा इनतिक़ाम की आग उन के सीनों में भड़कने लगी। चुनान्चे येह लोग मदीने पर फिर एक दूसरा ह़म्ला करने की तय्यारियां करने लगे और इस मक़्सद के लिये

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب غزوة خيبر، ج٣، ص٢٤٤ ملتقطاً

क़बीलए ग़त्फ़ान को भी आमादा कर लिया। क़बीलए ग़त्फ़ान अ़रब का एक बहुत ही त़ाक़त वर और जंगजू क़बीला था और इस की आबादी ख़ैबर से बिल्कुल ही मुत्तसिल थी और ख़ैबर के यहूदी खुद भी अ़रब के सब से बड़े सरमाया दार होने के साथ बहुत ही जंगबाज़ और तलवार के धनी थे। इन दोनों के गठजोड़ से एक बड़ी त़ाक़तवर फ़ौज तय्यार हो गई और इन लोगों ने मदीने पर ह़म्ला कर के मुसलमानों को तहस नहस कर देने का प्लान बना लिया।

मुसलमान ख़ैबर चले

जब रसूले खुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़बर मिली कि ख़ैबर के यहूदी क़बीलए ग़त्फ़ान को साथ ले कर मदीने पर ह़म्ला करने वाले हैं तो उन की इस चढ़ाई को रोकने के लिये सोलह सो सह़ाबए किराम का लश्कर साथ ले कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ैबर रवाना हुए। मदीने पर ह़ज़रते सबाअ़ बिन उ़रफ़ुत़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अफ़्सर मुक़र्रर फ़रमाया और तीन झन्डे तय्यार कराए। एक झन्डा ह़ज़रते हुबाब बिन मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को दिया और एक झन्डे का अ़लम बरदार ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बनाया और ख़ास अ़लमे नबवी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दस्ते मुबारक में इनायत फ़रमाया और अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को साथ लिया।[1]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم रात के वक़्त हुदूदे ख़ैबर में अपनी फ़ौजे ज़फ़र मौज के साथ पहुंच गए और नमाज़े फ़ज्र के बा'द शहर में दाख़िल हुए तो ख़ैबर के यहूदी अपने अपने हंसिया और टोकरी ले कर खेतों और बाग़ों में कामकाज के लिये क़लए से निकले। जब उन्हों ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को देखा तो शोर मचाने लगे और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे कि "खुदा की क़सम ! लश्कर के साथ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) हैं।" उस वक़्त **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया

1......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب غزوة خيبر، ج٣، ص٢٤٥،٢٥٠ ملتقطاً

कि ख़ैबर बरबाद हो गया। बिला शुबा हम जब किसी क़ौम के मैदान में उतर पड़ते हैं तो कुफ़्फ़ार की सुब्ह बुरी हो जाती है।[1] (بخاری ج۲ص ۶۰۳)

हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ैबर की तरफ़ मुतवज्जेह हुए तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم बहुत ही बुलन्द आवाज़ों से ना'रए तक्बीर लगाने लगे। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अपने ऊपर नर्मी बरतो। तुम लोग किसी बहरे और ग़ाइब को नहीं पुकार रहे हो बल्कि उस (अल्लाह) को पुकार रहे हो जो सुनने वाला और क़रीब है। मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की सुवारी के पीछे لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ का वज़ीफ़ा पढ़ रहा था। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सुना तो मुझ को पुकारा और फ़रमाया कि क्या मैं तुम को एक ऐसा कलिमा न बता दूं जो जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है। मैं ने अ़र्ज़ किया कि "क्यूं नहीं या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! आप पर मेरे मां बाप क़ुरबान!" तो फ़रमाया कि वोह कलिमा "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ" है।[2] (بخاری ج۲ص ۶۰۵)

यहूदियों की तय्यारी

यहूदियों ने अपनी औ़रतों और बच्चों को एक महफ़ूज़ क़लए में पहुंचा दिया और राशन का ज़ख़ीरा क़लआ़ "नाअ़म" में जम्अ़ कर दिया और फ़ौजों को "नताह" और "क़मूस" के क़लओं में इकठ्ठा किया। इन में सब से ज़ियादा मज़्बूत और महफ़ूज़ क़लआ़ "क़मूस" था और "मरहब यहूदी" जो अ़रब के पहलवानों में एक हज़ार सुवारों के बराबर माना जाता था इसी क़लए का रईस था। सलाम बिन मशकम यहूदी गो बीमार था मगर वोह भी क़लआ़ "नताह" में फ़ौजें ले कर डटा हुवा था। यहूदियों के पास तक़रीबन बीस हज़ार फ़ौज थी जो मुख़्तलिफ़ क़ल्ओं की हिफ़ाज़त के लिये मोरचा बन्दी किये हुए थी।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر،الحدیث: ٤١٩٧،ج٣، ص ٨١

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر،الحدیث: ٤٢٠٥،ج٣، ص ٨٣

महमूद बिन मुस्लिमा शहीद हो गए

सब से पहले क़लआ़ "नाअ़म" पर मा'रिका आराई और जम कर लड़ाई हुई। ह़ज़रते मह़मूद बिन मुस्लिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बड़ी बहादुरी और जां निसारी के साथ जंग की मगर सख़्त गर्मी और लू के थपेड़ों की वजह से इन पर प्यास का ग़लबा हो गया। वोह क़लआ़ नाअ़म की दीवार के नीचे सो गए। किनाना बिन अबिल हुक़ैक़ यहूदी ने इन को देख लिया और छत से एक बहुत बड़ा पथ्थर इन के ऊपर गिरा दिया जिस से इन का सर कुचल गया और येह शहीद हो गए। इस क़लए़ को फ़त्ह़ करने में पचास मुसलमान ज़ख़्मी हो गए, लेकिन क़लआ़ फ़त्ह़ हो गया।[1]

अस्वद राई की शहादत

ह़ज़रते अस्वद राई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इसी क़लए़ की जंग में शहादत से सरफ़राज़ हुए। इन का वाक़िआ़ येह है कि येह एक ह़बशी थे जो ख़ैबर के किसी यहूदी की बकरियां चराया करते थे। जब यहूदी जंग की तय्यारियां करने लगे तो इन्हों ने पूछा कि आख़िर तुम लोग किस से जंग के लिये तय्यारियां कर रहे हो ? यहूदियों ने कहा कि आज हम उस शख़्स से जंग करेंगे जो नुबुव्वत का दा'वा करता है। येह सुन कर इन के दिल में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मुलाक़ात का जज़्बा पैदा हुवा। चुनान्चे येह बकरियां लिये हुए बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि आप किस चीज़ की दा'वत देते हैं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इन के सामने इस्लाम पेश फ़रमाया। इन्हों ने अ़र्ज़ किया कि अगर मैं मुसलमान हो जाऊं तो मुझे ख़ुदा वन्दे तआ़ला की त़रफ़ से क्या अज्रो सवाब मिलेगा ? आप

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب ششم، ج۲، ص۲۳۹
والسيرة النبوية لابن هشام،افتتاح رسول الله صلى الله عليه وسلم للحصون،ص۴۳۸

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम को जन्नत और उस की ने'मतें मिलेंगी। इन्हों ने फ़ौरन ही कलिमा पढ़ कर इस्लाम क़बूल कर लिया। फिर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! येह बकरियां मेरे पास अमानत हैं। अब मैं इन को क्या करूं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम इन बकरियों को क़लए़ की त़रफ़ हांक दो और इन को कंकरियों से मारो। येह सब ख़ुद बख़ुद अपने मालिक के घर पहुंच जाएंगी। चुनान्चे येह **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का मो'जिज़ा था कि उन्हों ने बकरियों को कंकरियां मार कर हांक दिया और वोह सब अपने मालिक के घर पहुंच गईं।

इस के बा'द येह ख़ुश नसीब ह़बशी हथयार पहन कर मुजाहिदीने इस्लाम की सफ़ में खड़ा हो गया और इनतिहाई जोशो ख़रोश के साथ जिहाद करते हुए शहीद हो गया। जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस की ख़बर हुई तो फ़रमाया कि عَمِلَ قَلِيْلًا وَ اُجِرَ كَثِيْرًا या'नी इस शख़्स ने बहुत ही कम अ़मल किया और बहुत ज़ियादा अज्र दिया गया। फिर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की लाश को ख़ैमे में लाने का हुक्म दिया और उन की लाश के सिरहाने खड़े हो कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह बिशारत सुनाई कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस के काले चेहरे को ह़सीन बना दिया, इस के बदन को ख़ुश्बूदार बना दिया और दो हूरें इस को जन्नत में मिलीं। इस शख़्स ने ईमान और जिहाद के सिवा कोई दूसरा अ़मले ख़ैर नहीं किया, न एक वक़्त की नमाज़ पढ़ी, न एक रोज़ा रखा, न ह़ज व ज़कात का मौक़अ़ मिला मगर ईमान और जिहाद के सबब से **अल्लाह** तआ़ला ने इस को इतना बुलन्द मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया।[1]

(مدارج النبوۃ ج۲ ص۲۴۰)

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب ششم، ج۲، ص۲۳۹، ۲۴۰
والسيرة النبوية لابن هشام، افتتاح رسول الله صلى الله عليه وسلم للحصون، ص۴۳۸

इस्लामी लश्कर का हेड क्वार्टर

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को पहले ही से येह इल्म था कि क़बीलए ग़त़फ़ान वाले ज़रूर ही ख़ैबर वालों की मदद को आएंगे। इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ैबर और ग़त़फ़ान के दरमियान मक़ामे "रजीअ़" में अपनी फ़ौजों का हेड क्वार्टर बनाया और ख़ैमों, बार बरदारी के सामानों और औ़रतों को भी यहीं रखा था और यहीं से निकल निकल कर यहूदियों के क़लओं पर ह़म्ला करते थे।[1]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۲۳۹)

क़लआ़ नाइ़म के बा'द दूसरे क़लए़ भी ब आसानी और बहुत जल्द फ़त्ह़ हो गए लेकिन क़लआ़ "क़मूस" चूंकि बहुत ही मज़्बूत़ और मह़फ़ूज़ क़लआ़ था और यहां यहूदियों की फ़ौजें भी बहुत ज़ियादा थीं और यहूदियों का सब से बड़ा बहादुर "मरह़ब" ख़ुद इस क़लए़ की ह़िफ़ाज़त करता था इस लिये इस क़लए़ को फ़त्ह़ करने में बड़ी दुश्वारी हुई। कई रोज़ तक येह मुहिम सर न हो सकी। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस क़लए़ पर पहले दिन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की कमान में इस्लामी फ़ौजों को चढ़ाई के लिये भेजा और उन्हों ने बहुत ही शुजाअ़त और जांबाज़ी के साथ ह़म्ला फ़रमाया मगर यहूदियों ने क़लए़ की फ़सील पर से इस ज़ोर की तीर अन्दाज़ी और संगबारी की, कि मुसलमान क़लए़ के फाटक तक न पहुंच सके और रात हो गई। दूसरे दिन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ज़बर दस्त ह़म्ला किया और मुसलमान बड़ी गर्मजोशी के साथ बढ़ बढ़ कर दिन भर क़लए़ पर ह़म्ला करते रहे मगर क़लआ़ फ़त्ह़ न हो सका। और क्यूंकर फ़त्ह़ होता? फ़ातेह़े ख़ैबर होना तो अ़ली ह़ैदर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मुक़द्दर में लिखा था। चुनान्चे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب،باب غزوۃ خیبر، ج۳،ص۲۵۲ مختصراً

لَأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ غَدًا رَجُلًا يَفْتَحُ اللّٰهُ عَلٰى يَدَيْهِ يُحِبُّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيُحِبُّهُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ قَالَ فَبَاتَ النَّاسُ يَدُوْكُوْنَ لَيْلَتَهُمْ أَيُّهُمْ يُعْطَاهَا ـ (1)

(بخاری ج۲ص ۶۰۵ غزوہ خیبر)

कल मैं उस आदमी को झन्डा दूंगा जिस के हाथ पर **अल्लाह** तआला फ़त्ह देगा वोह **अल्लाह** व रसूल का मुहिब भी है और महबूब भी । रावी ने कहा कि लोगों ने येह रात बड़े इज़्तिराब में गुज़ारी कि देखिये कल किस को झन्डा दिया जाता है ?

सुब्ह हुई तो सहाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنھم ख़िदमते अक्दस में बड़े इश्तियाक़ के साथ येह तमन्ना ले कर हाज़िर हुए कि येह ए'ज़ाज़ व शरफ़ हमें मिल जाए । इस लिये कि जिस को झन्डा मिलेगा उस के लिये तीन बिशारतें हैं ।

﴾1﴿ वोह **अल्लाह** व रसूल का मुहिब है ।

﴾2﴿ वोह **अल्लाह** व रसूल का महबूब है ।

﴾3﴿ ख़ैबर उस के हाथ से फ़त्ह होगा ।

हज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ का बयान है कि उस रोज़ मुझे बड़ी तमन्ना थी कि काश ! आज मुझे झन्डा इनायत होता । वोह येह भी फ़रमाते हैं कि इस मौक़अ के सिवा मुझे कभी भी फ़ौज की सरदारी और अफ़्सरी की तमन्ना न थी । हज़रते सा'द رضی اللہ تعالٰی عنہ के बयान से मा'लूम होता है कि दूसरे सहाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنھم भी इस ने'मते उज़्मा के लिये तरस रहे थे ।(2)

(مسلم ج۲ص ۲۷۸،۲۷۹باب من فضائل علی)

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب غزوة خيبر، الحديث: ٤٢١٠، ج٣، ص٨٥ ودلائل النبوة للبيهقی، ماجاء فی بعث سرايا الی حصون ...الخ، ج٤، ص٢١١ ملخصاً

2 ......صحيح مسلم، كتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل علی...الخ، الحديث: ٢٤٠٥، ٢٤٠٦، ص١٣١١

लेकिन सुब्ह़ को अचानक येह सदा लोगों के कान में आई कि अ़ली कहां हैं ? लोगों ने अ़र्ज़ किया कि उन की आंखों में आशोब है। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने क़ासिद भेज कर उन को बुलाया और उन की दुखती हुई आंखों में अपना लुआ़बे दहन लगा दिया और दुआ़ फ़रमाई तो फ़ौरन ही उन्हें ऐसी शिफ़ा ह़ासिल हो गई कि गोया उन्हें कोई तक्लीफ़ थी ही नहीं । फिर ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से अपना अ़लमे नबवी जो ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सियाह चादर से तय्यार किया गया था। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ में अ़ता फ़रमाया ।[1]

(زرقانی ج۲ص۲۲۲)

और इरशाद फ़रमाया कि तुम बड़े सुकून के साथ जाओ और उन यहूदियों को इस्लाम की दा'वत दो और बताओ कि मुसलमान हो जाने के बा'द तुम पर फुलां फुलां **अल्लाह** के हुक़ूक़ वाजिब हैं । ख़ुदा की क़सम ! अगर एक आदमी ने भी तुम्हारी बदौलत इस्लाम क़बूल कर लिया तो येह दौलत तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से भी ज़ियादा बेहतर है ।[2]

(بخاری ج۲ص۶۰۵غزوۂ خیبر)

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और मरह़ब की जंग

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने "क़लअ़ए क़मूस" के पास पहुंच कर यहूदियों को इस्लाम की दा'वत दी, लेकिन उन्हों ने इस दा'वत का जवाब ईंट और पथ्थर और तीर व तलवार से दिया। और क़लए़ का रईसे आ'ज़म "मरह़ब" ख़ुद बड़े त़न तने के साथ निकला। सर पर यमनी ज़र्द रंग का ढाटा बांधे हुए और उस के ऊपर पथ्थर का ख़ौद पहने हुए रज्ज़ का येह शे'र पढ़ते हुए ह़म्ले के लिये आगे बढ़ा कि

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة،باب من فضائل علی...الخ،الحدیث ۲٤۰٥،۲٤۰٦،ص۱۳۱۱
والمواهب اللدنية وشرح الزرقانی، باب غزوة خيبر،ج۳، ص ۲٥٥

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی ، باب غزوة خيبر،الحدیث: ٤۲۱۰،ج۳، ص ۸٥

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ اَنِّیْ مُرَحَّبٌ   شَاكِیُ السَّلَاحِ بَطَلٌ مُّجَرَّبٌ

खै़बर ख़ूब जानता है कि मैं "मरह़ब" हूं, अस्लिह़ा पोश हूं, बहुत ही बहादुर और तजरिबा कार हूं।

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस के जवाब में रज्ज़ का येह शे'र पढ़ा

اَنَا الَّذِیْ سَمَّتْنِیْ اُمِّیْ حَيْدَرَهْ   كَلَيْثِ غَابَاتٍ كَرِيْهِ الْمَنْظَرَهْ

मैं वोह हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम ह़ैदर (शेर) रखा है। मैं कछार के शेर की त़रह़ हैबत नाक हूं। मरह़ब ने बड़े त़ुमत़ुराक़ के साथ आगे बढ़ कर ह़ज़रते शेरे ख़ुदा पर अपनी तलवार से वार किया मगर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने ऐसा पेंतरा बदला कि मरह़ब का वार ख़ाली गया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने बढ़ कर उस के सर पर इस ज़ोर की तलवार मारी कि एक ही ज़र्ब से ख़ौद कटा, मग़फ़र कटा और ज़ुलफ़िक़ारे ह़ैदरी सर को काटती हुई दांतों तक उतर आई और तलवार की मार का तड़ाका फ़ौज तक पहुंचा और मरह़ब ज़मीन पर गिर कर ढेर हो गया।[1] (مسلم ج۲ص ۱۱۵وص ۲۷۸)

मरह़ब की लाश को ज़मीन पर तड़पते हुए देख कर उस की तमाम फ़ौज ह़ज़रते शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ पर टूट पड़ी। लेकिन ज़ुलफ़िक़ारे ह़ैदरी बिजली की त़रह़ चमक चमक कर गिरती थी जिस से सफ़ों की सफ़ें उलट गईं। और यहूदियों के मायानाज़ बहादुर मरह़ब, ह़ारिस, असीर, आ़मिर वग़ैरा कट गए। इसी घुमसान की जंग में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ की ढाल कट कर गिर पड़ी तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने आगे बढ़ कर क़लअ़ए क़मूस का फाटक उखाड़

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب الجهاد والسير، باب غزوة ذی قرد وغيرها، الحديث:١٨٠٧، ص١٠٠٤، ١٠٠٥ مختصراً

दिया और किवाड़ को ढाल बना कर उस पर दुश्मनों की तलवारें रोकते रहे। येह किवाड़ इतना बड़ा और वज़्नी था कि बा'द को चालीस आदमी उस को न उठा सके।[1] (زرقانی ج۲ص۲۳۰)

जंग जारी थी कि ह़ज़रते अ़ली शेरे खुदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कमाले शुजाअ़त के साथ लड़ते हुए ख़ैबर को फ़त्ह़ कर लिया और ह़ज़रते सादिकुल वा'द صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का फ़रमान सदाक़त का निशान बन कर फ़ज़ाओं में लहराने लगा कि "कल मैं उस आदमी को झन्डा दूंगा जिस के हाथ पर **अल्लाह** तआ़ला फ़त्ह़ देगा वोह **अल्लाह** व रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुह़िब भी है और **अल्लाह** व रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मह़बूब भी।"

बेशक ह़ज़रते मौलाए काएनात رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के मुह़िब भी हैं और मह़बूब भी हैं। और बिला शुबा **अल्लाह** तआ़ला ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ से ख़ैबर की फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाई और क़ियामत तक के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फ़ातेहे़ ख़ैबर के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से सरफ़राज़ फ़रमा दिया और येह वोह फ़त्हे़ अ़ज़ीम है जिस ने पूरे "जज़ीरतुल अ़रब" में यहूदियों की जंगी त़ाक़त का जनाज़ा निकाल दिया। फ़त्हे़ ख़ैबर से क़ब्ल इस्लाम यहूदियों और मुशरिकीन के गठजोड़ से नज़्अ़ की ह़ालत में था लेकिन ख़ैबर फ़त्ह़ हो जाने के बा'द इस्लाम इस ख़ौफ़नाक नज़्अ़ से निकल गया और आगे इस्लामी फ़ुतूह़ात के दरवाज़े खुल गए। चुनान्चे इस के बा'द ही मक्का भी फ़त्ह़ हो गया। इस लिये येह एक मुसल्लमा ह़क़ीक़त है कि फ़ातेहे़ ख़ैबर की ज़ात से तमाम इस्लामी फ़ुतूह़ात का सिल्सिला वाबस्ता है। बहर ह़ाल ख़ैबर का क़लआ़ क़मूस बीस दिन के मुह़ासरे और ज़बर दस्त मा'रिका आराई के बा'द फ़त्ह़ हो गया। इन मा'रिकों में 93 यहूदी क़त्ल हुए और 15 मुसलमान जामे शहादत से सैराब हुए।[2] (زرقانی ج۲ص۲۲۸)

---

1 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی، باب غزوۃ خیبر، ج۳، ص۲۶۷ مختصراً

2 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی، باب غزوۃ خیبر، ج۳، ص۲۵۶، ۲۶۴۔۲۶۵ ملتقطاً

ख़ैबर का इनतिज़ाम

फ़त्ह़ के बा'द ख़ैबर की ज़मीन पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरादा फ़रमाया कि बनू नज़ीर की त़रह़ अहले ख़ैबर को भी जिला वत़न कर दें। लेकिन यहूदियों ने येह दरख़्वास्त की, कि हम को ख़ैबर से न निकाला जाए और ज़मीन हमारे ही क़ब्ज़े में रहने दी जाए। हम यहां की पैदावार का आधा ह़िस्सा आप को देते रहेंगे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की येह दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली। चुनान्चे जब खजूरें पक जातीं और ग़ल्ला तय्यार हो जाता तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़ैबर भेज देते वोह खजूरों और अनाजों को दो बराबर ह़िस्सों में तक़्सीम कर देते और यहूदियों से फ़रमाते कि इस में से जो ह़िस्सा तुम को पसन्द हो वोह ले लो। यहूदी इस अ़द्ल पर ह़ैरान हो कर कहते थे कि ज़मीन व आस्मान ऐसे ही अ़द्ल से क़ाइम हैं।[1] (فتوح البلدان بلاذری ص۲۷ فتح خیبر)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का बयान है कि ख़ैबर फ़त्ह़ हो जाने के बा'द यहूदियों से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस त़ौर पर सुल्ह़ फ़रमाई कि यहूदी अपना सोना चांदी हथयार सब मुसलमानों के सिपुर्द कर दें और जानवरों पर जो कुछ लदा हुवा है वोह यहूदी अपने पास ही रखें मगर शर्त़ येह है कि यहूदी कोई चीज़ मुसलमानों से न छुपाएं मगर इस शर्त़ को क़बूल कर लेने के बा वुजूद हुयय बिन अख़्त़ब का वोह चरमी थेला यहूदियों ने ग़ाइब कर दिया जिस में बनू नज़ीर से जिला वत़नी के वक़्त वोह सोना चांदी भर कर लाया था। जब यहूदियों से पूछगछ की गई तो वोह झूट बोले और कहा कि वोह सारी रक़म लड़ाइयों में ख़र्च हो गई। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने ब ज़रीअ़ए वह़्य अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बता दिया कि वोह थेला कहां है।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج...الخ، باب ماجاء فی حکم ارض خیبر،الحدیث:۳۰۰۶، ج۳، ص۲۱٤ و السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، تسمیۃ النفر الداریین...الخ، ص٤٤٩

चुनान्चे मुसलमानों ने उस थेले को बर आमद कर लिया। इस के बा'द (चूंकि किनाना बिन अबिल हुक़ैक़ ने ह़ज़रते मह़मूद बिन मुस्लिमा को छत से पथ्थर गिरा कर क़त्ल कर दिया था इस लिये) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उस को क़िसास में क़त्ल करा दिया और उस की औरतों को क़ैदी बना लिया।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۲۴۵وابوداؤدج۲ص۴۲۴باب ماجاء فی ارض خیبر)

ह़ज़रते सफ़िय्या का निकाह़

क़ैदियों में ह़ज़रते बीबी सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी थीं। येह बनू नज़ीर के रईसे आ'ज़म हुयय बिन अख़्त़ब की बेटी थीं और इन का शोहर किनाना बिन अबिल हुक़ैक़ भी बनू नज़ीर का रईसे आ'ज़म था। जब सब क़ैदी जम्अ़ किये गए तो ह़ज़रते दह़या कलबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم इन में से एक लौंडी मुझ को इनायत फ़रमाइये। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन को इख़्तियार दे दिया कि खुद जा कर कोई लौंडी ले लो। उन्हों ने ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ले लिया। बा'ज़ सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने इस पर गुज़ारिश की, कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم!

اَعْطَیْتَ دِحْیَۃَ صَفِیَّۃَ بِنْتَ حُیَیٍّ سَیِّدَۃَ قُرَیْظَۃَ وَالنَّضِیْرِ لَاتَصْلُحُ اِلَّا لَکَ[2] (ابوداؤدج۲ص۴۲۰باب ماجاء فی سہم الصفی)

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم! आप ने सफ़िय्या को दह़या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़वाले कर दिया। वोह क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर की रईसा है वोह आप के सिवा किसी और के लाइक़ नहीं है।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج والفیء والامارۃ، باب ماجاء فی حکم ارض خیبر، الحدیث:۳۰۰۶، ج۳، ص۲۱۴

2 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج والفیء والامارۃ، باب ماجاء فی سہم الصفی،الحدیث:۲۹۹۸، ج۳ ص۲۰۹

येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हज़रते दह़्या कलबी और हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को बुलाया और हज़रते दह़्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि तुम इस के सिवा कोई दूसरी लौंडी ले लो । इस के बा'द हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को आज़ाद कर के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन से निकाह़ फ़रमा लिया और तीन दिन तक मन्ज़िले सहबा में इन को अपने ख़ैमे में सरफ़राज़ फ़रमाया और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को दा'वते वलीमा में खजूर, घी, पनीर का मालीदा खिलाया ।[1]

(بخاری جلد۱ص۲۹۸باب حمل یسافر بالجاریہ و بخاری جلد۲ص۶۱۷باب اتخاذ السراری و مسلم جلد۱ص۴۵۸باب فضل اعتاق امتہ)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ज़ह्र दिया गया

फ़त्ह़ के बा'द चन्द रोज़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ैबर में ठहरे । यहूदियों को मुकम्मल अम्नो अमान अ़ता फ़रमाया और क़िस्म क़िस्म की नवाज़िशों से नवाज़ा मगर इस बद बातिन क़ौम की फ़ित़रत में इस क़दर ख़बासत भरी हुई थी कि सलाम बिन मशकम यहूदी की बीवी "ज़ैनब" ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की दा'वत की और गोश्त में ज़ह्र मिला दिया । ख़ुदा के हुक्म से गोश्त की बोटी ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ज़ह्र की ख़बर दी और आप ने एक ही लुक़्मा खा कर हाथ खींच लिया । लेकिन एक सह़ाबी हज़रते बिश्र बिन बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने शिकम सैर खा लिया और ज़ह्र के असर से उन की शहादत हो गई और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को भी इस ज़हरीले लुक़्मे से उ़म्र भर तालू में तक्लीफ़ रही । आप ने जब यहूदियों से इस के बारे में पूछा तो उन ज़ालिमों ने अपने जुर्म का इक़्रार कर लिया और कहा कि हम ने इस निय्यत से आप को ज़ह्र खिलाया कि अगर आप सच्चे नबी होंगे तो आप पर इस ज़ह्र का

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الصلوۃ، باب مایذکر فی الفخذ، الحدیث: ۳۷۱، ج۱، ص۱۴۸
والمواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی، باب غزوۃ خیبر، ج۳، ص۲۶۸۔۲۷۳ ملتقطاً

कोई असर नहीं होगा। वरना हम को आप से नजात मिल जाएगी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने अपनी ज़ात के लिये तो कभी किसी से इनतिक़ाम लिया ही नहीं इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने ज़ैनब से कुछ भी नहीं फ़रमाया मगर जब हज़रते बिश्र बिन बरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की उसी ज़हर से वफ़ात हो गई तो उन के क़िसास में ज़ैनब क़त्ल की गई।[1]

(بخاری ج۲ص۳۴۲ومدارج جلد۲ص۲۵۱)

हज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हबशा से आ गए

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم फ़त्हे ख़ैबर से फ़ारिग़ हुए ही थे कि मुहाजिरीने हबशा में से हज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के भाई थे और मक्का से हिजरत कर के हबशा चले गए थे वोह अपने साथियों के साथ हबशा से आ गए। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़र्ते महब्बत से उन की पेशानी चूम ली और इरशाद फ़रमाया कि मैं कुछ कह नहीं सकता कि मुझे ख़ैबर की फ़त्ह से ज़ियादा ख़ुशी हुई है या जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के आने से।[2]

(زرقانی ج۲ص۲۴۶)

उन लोगों को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने "साहिबुल हिजरतैन" (दो हिजरतों वाले) का लक़ब अ़ता फ़रमाया क्यूं कि येह लोग मक्का से हबशा हिजरत कर के गए। फिर हबशा से हिजरत कर के मदीना आए और बा वुजूदे कि येह लोग जंगे ख़ैबर में शामिल न हो सके मगर इन लोगों को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने माले ग़नीमत में से मुजाहिदीन के बराबर हिस्सा दिया।[3]

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني،باب غزوة خيبر، ج٣،ص٢٨٧، ٢٩١، ٢٩٢ملخصاً

2 ......شرح الزرقاني على المواهب، باب غزوة خيبر،ج٣، ص٢٩٩

3 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب ششم، ج٢، ص٢٤٨

ख़ैबर में ए'लाने मसाइल

जंगे ख़ैबर के मौक़अ़ पर मुन्दरिजए ज़ैल फ़िक़ही मसाइल की हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तब्लीग़ फ़रमाई।

﴾1﴿ पन्जादार परन्दों को ह़राम फ़रमाया।

﴾2﴿ तमाम दरिन्दा जानवरों की हुरमत का ए'लान फ़रमा दिया।

﴾3﴿ गधा और ख़च्चर ह़राम कर दिया गया।

﴾4﴿ चांदी सोने की ख़रीदो फ़रोख़्त में कमी बेशी के साथ ख़रीदने और बेचने को ह़राम फ़रमाया और हुक्म दिया कि चांदी को चांदी के बदले और सोने को सोने के बदले बराबर बराबर बेचना ज़रूरी है। अगर कमी बेशी होगी तो वोह सूद होगा जो ह़राम है।

﴾5﴿ अब तक येह हुक्म था कि लौंडियों से हाथ आते ही सोह़बत करना जाइज़ था लेकिन अब "इस्तिब्रा" ज़रूरी क़रार दे दिया गया या'नी अगर वोह ह़ामिला हों तो बच्चा पैदा होने तक वरना एक महीना उन से सोह़बत जाइज़ नहीं। "औ़रतों से मुतआ़ करना भी इसी ग़ज़्वे में ह़राम कर दिया गया।"[1] (زرقانی ج۲ص۲۳۳تا ص۲۳۸)

वादिये अल क़ुरा की जंग

ख़ैबर की लड़ाई से फ़ारिग़ हो कर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم **"वादिये अल क़ुरा"** तशरीफ़ ले गए जो मक़ामे **"तीमा"** और **"फ़िदक"** के दरमियान एक वादी का नाम है। यहां यहूदियों की चन्द बस्तियां आबाद थीं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم जंग के इरादे से यहां नहीं आए थे मगर यहां के यहूदी चूंकि जंग के लिये तय्यार थे इस लिये उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

---

1 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی،باب غزوۃخیبر، ج۳، ص۲۸٦، ۲۸۷ ملتقطاً
ومدارج النبوت،قسم سوم، باب ششم، ج۲، ص ۲٦۰

पर तीर बरसाना शुरूअ़ कर दिया। चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के एक गुलाम जिन का नाम ह़ज़रते मदअ़म رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ था येह ऊंट से कजावा उतार रहे थे कि उन को एक तीर लगा और येह शहीद हो गए। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन यहूदियों को इस्लाम की दा'वत दी जिस का जवाब उन बद बख़्तों ने तीर व तलवार से दिया और बा क़ाइ़दा सफ़ बन्दी कर के मुसलमानों से जंग के लिये तय्यार हो गए। मजबूरन मुसलमानों ने भी जंग शुरूअ़ कर दी, चार दिन तक नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन यहूदियों का मुह़ासरा किये हुए उन को इस्लाम की दा'वत देते रहे मगर येह लोग बराबर लड़ते ही रहे। आख़िर दस यहूदी क़त्ल हो गए और मुसलमानों को फ़त्ह़े मुबीन ह़ासिल हो गई। इस के बा'द अहले ख़ैबर की शर्तों पर इन लोगों ने भी सुल्ह़ कर ली कि मक़ामी पैदावार का आधा ह़िस्सा मदीना भेजते रहेंगे।

जब ख़ैबर और वादिये अल क़ुरा के यहूदियों का ह़ाल मा'लूम हो गया तो "तीमा" के यहूदियों ने भी जिज़्या दे कर **हु़ज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से सुल्ह़ कर ली। वादिये अल क़ुरा में **हु़ज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم चार दिन मुक़ीम रहे।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۲۶۲وزرقانی ج۲ص۲۴۸)

फ़िदक की सुल्ह़

जब "**फ़िदक**" के यहूदियों को ख़ैबर और वादिये अल क़ुरा के मुआ़मले की इत्तिलाअ़ मिली तो उन लोगों ने कोई जंग नहीं की। बल्कि दरबारे नुबुव्वत में क़ासिद भेज कर येह दरख़्वास्त की, कि ख़ैबर और वादिये अल क़ुरा वालों से जिन शर्तों पर आप ने सुल्ह़ की है उसी त़रह़ के मुआ़मले पर हम से भी सुल्ह़ कर ली जाए। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की येह दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली और उन से सुल्ह़ हो गई। लेकिन यहां चूंकि कोई फ़ौज नहीं भेजी गई

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب فتح وادى القرى، ج۳، ص۳۰۱، ۳۰۳

इस लिये इस बस्ती में मुजाहिदीन को कोई ह़िस्सा नहीं मिला बल्कि येह ख़ास़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मिल्किय्यत क़रार पाई और ख़ैबर व वादिये अल क़ुरा की ज़मीनें तमाम मुजाहिदीन की मिल्किय्यत ठहरीं।[1] (زرقانی ج۲ص۲۴۸)

उ़म्रतिल क़ज़ा

चूंकि हुदैबिया के सुल्ह़ नामे में एक दफ़्आ़ येह भी थी कि आयन्दा साल हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्का आ कर उ़म्रह अदा करेंगे और तीन दिन मक्का में ठहरेंगे। इस दफ़्आ़ के मुत़ाबिक़ माहे ज़ुल क़ा'दह सि. 7 हि. में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उ़म्रह अदा करने के लिये मक्का रवाना होने का अ़ज़्म फ़रमाया और ए'लान करा दिया कि जो लोग गुज़श्ता साल हुदैबिया में शरीक थे वोह सब मेरे साथ चलें। चुनान्चे ब जुज़ उन लोगों के जो जंगे ख़ैबर में शहीद या वफ़ात पा चुके थे सब ने येह सआ़दत ह़ासिल की।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को चूंकि कुफ़्फ़ारे मक्का पर भरोसा नहीं था कि वोह अपने अ़ह्द को पूरा करेंगे इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जंग की पूरी तय्यारी के साथ रवाना हुए। ब वक़्ते रवानगी ह़ज़रते अबू रहम ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मदीना पर ह़ाकिम बना दिया और दो हज़ार मुसलमानों के साथ जिन में एक सो घोड़ों पर सुवार थे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्का के लिये रवाना हुए। साठ ऊंट क़ुरबानी के लिये साथ थे। जब कुफ़्फ़ारे मक्का को ख़बर लगी कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हथयारों और सामाने जंग के साथ मक्का आ रहे हैं तो वोह बहुत घबराए और उन्हों ने चन्द आदमियों को सूरते ह़ाल की तह़क़ीक़ात के लिये "मर्रुज़्ज़हरान" तक भेजा। ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुस्लिमा

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب فتح وادى القرى، ج۳، ص۳۰۳

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ जो अस्प सुवारों के अफ़्सर थे कुरैश के क़ासिदों ने उन से मुलाक़ात की । उन्हों ने इत्मीनान दिलाया कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم सुल्ह़ नामा की शर्त़ के मुत़ाबिक़ बिग़ैर हथयार के मक्का में दाख़िल होंगे येह सुन कर कुफ़्फ़ारे कुरैश मुत़्मइन हो गए ।

चुनान्चे **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब मक़ामे "याजज" में पहुंचे जो मक्का से आठ मील दूर है, तो तमाम हथयारों को उस जगह रख दिया और ह़ज़रते बशीर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की मा तह़ती में चन्द सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم को उन हथयारों की ह़िफ़ाज़त के लिये मुतअ़य्यन फ़रमा दिया । और अपने साथ एक तलवार के सिवा कोई हथयार नहीं रखा और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم के मज्मअ़ के साथ "लब्बैक" पढ़ते हुए ह़रम की त़रफ़ बढ़े जब मक्का में दाख़िल होने लगे तो दरबारे नुबुव्वत के शाइर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ऊंट की मुहार थामे हुए आगे आगे रज्ज़ के येह अश्आ़र जोशो ख़रोश के साथ बुलन्द आवाज़ से पढ़ते जाते थे कि

خَلُّوْا بَنِی الْكُفَّارِ عَنْ سَبِيْلِهٖ　　اَلْيَوْمَ نَضْرِبُكُمْ عَلٰى تَنْزِيْلِهٖ

ऐ काफ़िरों के बेटो ! सामने से हट जाओ । आज जो तुम ने उतरने से रोका तो हम तलवार चलाएंगे ।

ضَرْبًا يُّزِيْلُ الْهَامَ عَنْ مَقِيْلِهٖ　　وَيُذْهِلُ الْخَلِيْلَ عَنْ خَلِيْلِهٖ

हम तलवार का ऐसा वार करेंगे जो सर को उस की ख़्वाब गाह से अलग कर दे और दोस्त की याद उस के दोस्त के दिल से भुला दे ।

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने टोका और कहा कि ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के आगे आगे और **अल्लाह** तआ़ला के ह़रम में तुम अश्आ़र

पढ़ते हो ? तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इन को छोड़ दो। येह अश्आ़र कुफ़्फ़ार के ह़क़ में तीरों से बढ़ कर हैं।[1] (شمائل ترمذی ص ۱۷ اور زرقانی ج ۲ ص ۲۵۵ تا ص ۲۵۷)

जब रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ास ह़रमे का'बा में दाख़िल हुए तो कुछ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मारे जलन के इस मन्ज़र की ताब न ला सके और पहाड़ों पर चले गए। मगर कुछ कुफ़्फ़ार अपने दारुन्दवा (कमेटी घर) के पास खड़े आंखें फाड़ फाड़ कर बादए तौह़ीद व रिसालत से मस्त होने वाले मुसलमानों के त़वाफ़ का नज़ारा करने लगे और आपस में कहने लगे कि येह मुसलमान भला क्या त़वाफ़ करेंगे ? इन को तो भूक और मदीने के बुख़ार ने कुचल कर रख दिया है। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मस्जिदे ह़राम में पहुंच कर "इज़्तिबाअ़" कर लिया। या'नी चादर को इस त़रह़ ओढ़ लिया कि आप का दाहिना शाना और बाज़ू खुल गया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ख़ुदा उस पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमाए जो इन कुफ़्फ़ार के सामने अपनी क़ुव्वत का इज़्हार करे। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के साथ शुरूअ़ के तीन फेरों में शानों को हिला हिला कर और ख़ूब अकड़ते हुए चल कर त़वाफ़ किया। इस को अ़रबी ज़बान में "रमल" कहते हैं। चुनान्चे येह सुन्नत आज तक बाक़ी है और क़ियामत तक बाक़ी रहेगी कि हर त़वाफ़े का'बा करने वाला शुरूए त़वाफ़ के तीन फेरों में "रमल" करता है।[2]

(بخاری ج ۱ ص ۲۱۸ باب کیف کان بدء الرمل)

ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साह़िब ज़ादी

तीन दिन के बा'द कुफ़्फ़ारे मक्का के चन्द सरदार ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आए और कहा कि शर्त़ पूरी हो चुकी। अब आप लोग मक्का से निकल जाएं। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب عمرة القضاء، ج ٣، ص ٣١٤ـ٣١٨

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب عمرة القضاء، ج ٣، ص ٣١٦ـ٣٢٣ ملتقطاً

ने बारगाहे नुबुव्वत में कुफ़्फ़ार का पैग़ाम सुनाया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उसी वक़्त मक्का से रवाना हो गए। चलते वक़्त ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की एक छोटी साहिब ज़ादी जिन का नाम "अमामा" था। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को चचा चचा कहती हुई दौड़ी आईं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ जंगे उहुद में शहीद हो चुके थे। उन की येह यतीम छोटी बच्ची मक्का में रह गई थीं। जिस वक़्त येह बच्ची आप को पुकारती हुई दौड़ी आईं तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपने शहीद चचाजान की इस यादगार को देख कर प्यार आ गया। उस बच्ची ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को भाईजान कहने की बजाए चचाजान इस रिश्ते से कहा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के रज़ाई भाई हैं, क्यूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने और ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ह़ज़रते सुवैबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का दूध पिया था। जब येह साहिब ज़ादी क़रीब आईं तो ह़ज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने आगे बढ़ कर उन को अपनी गोद में उठा लिया लेकिन अब उन की परवरिश के लिये तीन दा'वेदार खड़े हो गए। ह़ज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने येह कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! येह मेरी चचाज़ाद बहन है और मैं ने इस को सब से पहले अपनी गोद में उठा लिया है इस लिये मुझ को इस की परवरिश का ह़क़ मिलना चाहिये। ह़ज़रते जा'फ़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने येह गुज़ारिश की, कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! येह मेरी चचाज़ाद बहन भी है और इस की ख़ाला मेरी बीवी है इस लिये इस की परवरिश का मैं ह़क़दार हूं। ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! येह मेरे दीनी भाई ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की लड़की है इस लिये मैं इस की परवरिश करूंगा। तीनों साहिबों का बयान सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह फ़ैसला फ़रमाया कि "ख़ाला मां के बराबर होती है" लिहाज़ा

जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की परवरिश में रहेगी। फिर तीनों साहि़बों की दिलदारी व दिलजूई करते हुए रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद फ़रमाया कि "ऐ अ़ली ! तुम मुझ से हो और मैं तुम से हूं।" और ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि "ऐ जा'फ़र ! तुम सीरत व सूरत में मुझ से मुशाबहत रखते हो।" और ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से येह फ़रमाया कि "ऐ ज़ैद ! तुम मेरे भाई और मेरे मौला (आज़ाद कर्दा ग़ुलाम) हो।"[1]

(بخاری ج۲ص۶۱۰ عمرۃ القضاء)

ह़ज़रते मैमूना का निकाह़

इसी उ़म्रतिल क़ज़ा के सफ़र में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमाया। येह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चची उम्मे फ़ज़्ल ज़ौजए ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की बहन थीं। उ़म्रतिल क़ज़ा से वापसी में जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मक़ामे "सरफ़" में पहुंचे तो इन को अपने ख़ैमे में रख कर अपनी सोह़बत से सरफ़राज़ फ़रमाया और अ़जीब इत्तिफ़ाक़ कि इस वाक़िए से चव्वालीस बरस के बा'द इसी मक़ामे सरफ़ में ह़ज़रते बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का विसाल हुवा और उन की क़ब्र शरीफ़ भी इसी मक़ाम में है। सह़ीह़ क़ौल येह है कि इन की वफ़ात का साल सि. 51 हि. है। मुफ़स्सल बयान اِنْ شَاءَ اللّٰہ تعالٰی अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن के बयान में आएगा।[2]

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب عمرۃ القضاء...الخ، الحدیث ۴۲۵۱، ج۳، ص ۹۴
والمواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی، باب عمرۃ القضاء، ج۳، ص ۳۲۵،۳۲۶ ملخصاً

2 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی، باب عمرۃ القضاء، ج۳، ص۳۲۸،۳۲۹ ملخصاً

तेरहवां बाब

हिजरत का आठवां साल

सि. 8 हि.

हिजरत का आठवां साल भी हुज़ूर सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ह़यात के बड़े बड़े वाक़िआ़त पर मुश्तमिल है। हम इन में से यहां चन्द अहम्मिय्यत व शोहरत वाले वाक़िआ़त का तज़्किरा करते हैं।

जंगे मौता

"मौता" मुल्के शाम में एक मक़ाम का नाम है। यहां सि. 8 हि. में कुफ़्र व इस्लाम का वोह अ़ज़ीमुश्शान मा'रिका हुवा जिस में एक लाख लश्करे कुफ़्फ़ार से सिर्फ़ तीन हज़ार जां निसार मुसलमानों ने अपनी जान पर खेल कर ऐसी मा'रिका आराई की, कि येह लड़ाई तारीख़े इस्लाम में एक तारीख़ी यादगार बन कर क़ियामत तक बाक़ी रहेगी और इस जंग में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم की बड़ी बड़ी ऊलुल अ़ज़्म हस्तियां शरफ़े शहादत से सरफ़राज़ हुईं।[1]

इस जंग का सबब

इस जंग का सबब येह हुवा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने "बसरा" के बादशाह या क़ैसरे रूम के नाम एक ख़त़ लिख कर ह़ज़रते ह़ारिस बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए रवाना फ़रमाया। रास्ते में "बलक़ा" के बादशाह शुरह़बील बिन अ़म्र ग़स्सानी ने जो क़ैसरे रूम का बाज गुज़ार था हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस क़ासिद को निहायत बे दर्दी के साथ रस्सी में बांध कर क़त्ल कर दिया। जब बारगाहे रिसालत में इस ह़ादिसे की इत्तिलाअ़ पहुंची तो क़ल्बे मुबारक पर इनतिहाई रन्ज व

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب غزوة موتة، ج٣، ص٣٣٩ـ٣٤١، ٣٤٤

सदमा पहुंचा । उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन हज़ार मुसलमानों का लश्कर तय्यार फ़रमाया और अपने दस्ते मुबारक से सफ़ेद रंग का झन्डा बांध कर ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ में दिया और इन को इस फ़ौज का सिपह सालार बनाया और इरशाद फ़रमाया कि अगर ज़ैद बिन ह़ारिसा शहीद हो जाएं तो ह़ज़रते जा'फ़र सिपह सालार होंगे और जब वोह भी शहादत से सरफ़राज़ हो जाएं तो इस झन्डे के अ़लम बरदार ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा होंगे (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) इन के बा'द लश्करे इस्लाम जिस को मुन्तख़ब करे वोह सिपह सालार होगा ।[1]

इस लश्कर को रुख़्सत करने के लिये ख़ुद **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मक़ामे "सनिय्यतुल वदाअ़" तक तशरीफ़ ले गए और लश्कर के सिपह सालार को हुक्म फ़रमाया कि तुम हमारे क़ासिद ह़ज़रते ह़ारिस बिन उ़मैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की शहादत गाह में जाओ जहां उस जां निसार ने अदाए फ़र्ज़ में अपनी जान दी है। पहले वहां के कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दा'वत दो। अगर वोह लोग इस्लाम क़बूल कर लें तो फिर वोह तुम्हारे इस्लामी भाई हैं वरना तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद त़लब करते हुए उन से जिहाद करो। जब लश्कर चल पड़ा तो मुसलमानों ने बुलन्द आवाज़ से येह दुआ़ दी कि ख़ुदा सलामत और काम्याब वापस लाए।

जब येह फ़ौज मदीने से कुछ दूर आगे निकल गई तो ख़बर मिली कि ख़ुद क़ैसरे रूम मुशरिकीन की एक लाख फ़ौज ले कर बलक़ा की सर ज़मीन में ख़ैमा ज़न हो गया है। येह ख़बर पा कर अमीरे लश्कर ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने लश्कर को पड़ाव का हुक्म दे दिया और इरादा किया कि बारगाहे रिसालत में इस की इत्तिलाअ़ दी जाए और हुक्म का इनतिज़ार किया जाए। मगर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني،باب غزوة موتة، ج٣، ص ٣٤٠،٣٤٢

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि हमारा मक़्सद फ़त्ह़ या माले ग़नीमत नहीं है बल्कि हमारा मत़्लूब तो शहादत है। क्यूं कि शहादत है मक़्सूदो मत़्लूबे मोमिन न माले ग़नीमत, न किश्वर कुशाई और येह मक़्सदे बुलन्द हर वक़्त और हर ह़ालत में ह़ासिल हो सकता है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह तक़्रीर सुन कर हर मुजाहिद जोशे जिहाद में बेख़ुद हो गया। और सब की ज़बान पर येही तराना था कि

बढ़ते चलो मुजाहिदो बढ़ते चलो मुजाहिदो

ग़रज़ येह मुजाहिदीने इस्लाम मौता की सर ज़मीन में दाख़िल हो गए और वहां पहुंच कर देखा कि वाक़ेई एक बहुत बड़ा लश्कर रेशमी ज़र्क़ बर्क़ वर्दियां पहने हुए बे पनाह तय्यारियों के साथ जंग के लिये खड़ा है। एक लाख से ज़ाइद का लश्कर का भला तीन हज़ार से मुक़ाबला ही क्या ? मगर मुसलमान ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के भरोसा पर मुक़ाबले के लिये डट गए।[1]

मा'रिका आराई का मन्ज़र

सब से पहले मुसलमानों के अमीरे लश्कर ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आगे बढ़ कर कुफ़्फ़ार के लश्कर को इस्लाम की दा'वत दी। जिस का जवाब कुफ़्फ़ार ने तीरों की मार और तलवारों के वार से दिया। येह मन्ज़र देख कर मुसलमान भी जंग के लिये तय्यार हो गए और लश्करे इस्लाम के सिपह सालार ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घोड़े से उतर कर पा पियादा मैदाने जंग में कूद पड़े और मुसलमानों ने भी निहायत जोशो ख़रोश के साथ लड़ना शुरूअ़ कर दिया लेकिन इस घुमसान की लड़ाई में काफ़िरों ने ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नेज़ों और बरछियों से छेद डाला और वोह जवां मर्दी के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए। फ़ौरन ही झपट कर ह़ज़रते जा'फ़र बिन

---

1 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی، باب غزوۃ موتۃ، ج۳، ص۳۴۲۔۳۴۴

अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने परचमे इस्लाम को उठा लिया मगर उन को एक रूमी मुशरिक ने ऐसी तलवार मारी कि येह कट कर दो टुकड़े हो गए। लोगों का बयान है कि हम ने उन की लाश देखी थी। उन के बदन पर नेज़ों और तलवारों के नव्वे से कुछ ज़ाइद ज़ख़्म थे। लेकिन कोई ज़ख़्म उन की पीठ के पीछे नहीं लगा था बल्कि सब के सब ज़ख़्म सामने ही की जानिब लगे थे। ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़लमे इस्लाम हाथ में लिया। फ़ौरन ही उन के चचाज़ाद भाई ने गोश्त से भरी हुई एक हड्डी पेश की और अ़र्ज़ किया कि भाईजान ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुछ खाया पिया नहीं है। लिहाज़ा इस को खा लीजिये। आप ने एक ही मरतबा दांत से नोच कर खाया था कि कुफ़्फ़ार का बे पनाह हुजूम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर टूट पड़ा। आप ने हड्डी फेंक दी और तलवार निकाल कर दुश्मनों के नरग़े में घुस कर रज्ज़ के अश्आ़र पढ़ते हुए इनतिहाई दिलेरी और जांबाज़ी के साथ लड़ने लगे मगर ज़ख़्मों से निढाल हो कर ज़मीन पर गिर पड़े और शरबते शहादत से सैराब हो गए।[1] (بخاری ج۲ص ۶۱۱غزوہ موتہ وزرقانی ج۲ص۲۷۱ص۲۷۴)

अब लोगों के मश्वरे से ह़ज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ झन्डे के अ़लम बरदार बने और इस क़दर शुजाअ़त और बहादुरी के साथ लड़े कि नव तलवारें टूट टूट कर उन के हाथ से गिर पड़ीं। और अपनी जंगी महारत और कमाले हुनर मन्दी से इस्लामी फ़ौज को दुश्मनों के नरग़े से निकाल लाए। (بخاری ج۲ص ۶۱۱غزوۂ موتہ)

इस जंग में जो बारह मुअ़ज़्ज़ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم शहीद हुए उन के मुक़द्दस नाम येह हैं :

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب غزوة موتة، ج۳،ص ۳٤٥-۳٤٧ ملتقطاً

﴾1﴿ हज़रते ज़ैद बिन हारिसा ﴾2﴿ हज़रते जा'फ़र बिन अबी तालिब
﴾3﴿ हज़रते अब्दुल्लाह बिन रवाहा ﴾4﴿ हज़रते मसऊद बिन औस
﴾5﴿ हज़रते वह्ब बिन सा'द ﴾6﴿ हज़रते उबादा बिन कैस
﴾7﴿ हज़रते हारिस बिन नो'मान ﴾8﴿ हज़रते सुराका बिन उमर
﴾9﴿ हज़रते अबू कलीब बिन उमर ﴾10﴿ हज़रते जाबिर बिन उमर
﴾11﴿ हज़रते उमर बिन सा'द ﴾12﴿ हज़रते हौबजा ज़िब्बी[1]

(زُرقانی ج۲ص۲۷۳)(رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُم اَجۡمَعِیۡن)

इस्लामी लश्कर ने बहुत से कुफ़्फ़ार को क़त्ल किया और कुछ माले ग़नीमत भी हासिल किया और सलामती के साथ मदीना वापस आ गए।

निगाहे नुबुव्वत का मो'जिज़ा

जंगे मौता की मा'रिका आराई में जब घुमसान का रन पड़ा तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीने से मैदाने जंग को देख लिया। और आप की निगाहों से तमाम हिजाबात इस तरह उठ गए कि मैदाने जंग की एक एक सरगुज़श्त को आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे नुबुव्वत ने देखा। चुनान्चे बुख़ारी की रिवायत है कि हज़रते ज़ैद व हज़रते जा'फ़र व हज़रते अब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُم की शहादतों की ख़बर आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मैदाने जंग से ख़बर आने के क़ब्ल ही अपने अस्हाब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُم को सुना दी।[2]

चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इनतिहाई रन्जो ग़म की हालत में सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُم के भरे मज्मअ़ में येह इरशाद

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة موتة من ارض الشام، الحدیث:٤٢٦٥، ج٣، ص٩٧ والمواھب اللدنیة و شرح الزرقانی، باب غزوة موتة، ج٣، ص٣٤٨

2 ......المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی، باب غزوة موتة، ج٣، ص٣٥٠ وصحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة موتة من ارض الشام، الحدیث:٤٢٦٢، ج٣، ص٩٦

फ़रमाया कि जै़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने झन्डा लिया वोह भी शहीद हो गए। फिर जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने झन्डा लिया वोह भी शहीद हो गए, फिर अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़लम बरदार बने और वोह भी शहीद हो गए। यहां तक कि झन्डे को ख़ुदा की तलवारों में से एक तलवार (ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अपने हाथों में लिया। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को येह ख़बरें सुनाते रहे और आप की आंखों से आंसू जारी थे।[1] (بخاری ج۲ ص۶۱۱ غزوۂ موتہ)

मूसा बिन अ़क़्बा ने अपने मग़ाज़ी में लिखा है कि जब ह़ज़रते या'ला बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जंगे मौता की ख़बर ले कर दरबारे नुबुव्वत में पहुंचे तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया कि तुम मुझे वहां की ख़बर सुनाओगे? या मैं तुम्हें वहां की ख़बर सुनाऊं। ह़ज़रते या'ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)! आप ही सुनाइये जब आप ने वहां का पूरा पूरा ह़ाल व माह़ोल सुनाया तो ह़ज़रते या'ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को ह़क़ के साथ भेजा है कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बात भी नहीं छोड़ी कि जिस को मैं बयान करूं।[2] (زرقانی ج۲ ص۲۷۶)

ह़ज़रते जा'फ़र शहीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का बयान है कि मैं ने अपने बच्चों को नहला धुला कर तेल काजल से आरास्ता कर के आटा गूंध लिया था कि बच्चों के लिये रोटियां पकाऊं कि इतने में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे घर में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बच्चों को मेरे सामने लाओ जब मैं ने बच्चों को पेश किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب غزوۃ موتۃ من ارض الشام، الحدیث:۴۲۶۲، ج۳،ص۹۶

2 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی،باب غزوۃ موتۃ، ج۳،ص۳۵۵،۳۵۶

बच्चों को सूंघने और चूमने लगे और आप की आंखों से आंसूओं की धार रुख़्सारे पुर अन्वार पर बहने लगी तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि क्या हज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उन के साथियों के बारे में कोई ख़बर आई है ? तो इरशाद फ़रमाया कि हां ! वोह लोग आज ही शहीद हो गए हैं। येह सुन कर मेरी चीख़ निकल गई और मेरा घर औ़रतों से भर गया। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने काशानए नुबुव्वत में तशरीफ़ ले गए और अज़्वाजे मुत़हहरात رضی اللہ تعالٰی عنھن से फ़रमाया कि जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर वालों के लिय खाना तय्यार कराओ ।[1] (زرقانی ج۲ص۲۷۷)

जब हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने लश्कर के साथ मदीने के क़रीब पहुंचे तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم घोड़े पर सुवार हो कर उन लोगों के इस्तिक़्बाल के लिये तशरीफ़ ले गए और मदीने के मुसलमान और छोटे छोटे बच्चे भी दौड़ते हुए मुजाहिदीने इस्लाम की मुलाक़ात के लिये गए और हज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जंगे मौता के शुहदाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का ऐसा पुरदर्द मरसिया सुनाया कि तमाम सामिईन रोने लगे ।[2] (زرقانی ج۲ص۲۷۷)

हज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दोनों हाथ शहादत के वक़्त कट कर गिर पड़े थे तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के बारे में इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को उन के दोनों हाथों के बदले दो बाज़ू अ़त़ा फ़रमाए हैं जिन से उड़ उड़ कर वोह जन्नत में जहां चाहते हैं चले जाते हैं ।[3] (زرقانی ج۲ص۲۷۴)

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب،باب غزوۃ موتۃ،ج۳،ص۳۵۶

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب،باب غزوۃ موتۃ،ج۳،ص۳۵۶

3 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی،باب غزوۃ موتۃ، ج۳،ص۳۵۳

येही वजह है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जब ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साहि़ब ज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सलाम करते थे तो येह कहते थे कि "السلام علیك یا ابن ذی الجناحین" या'नी ऐ दो बाज़ूओं वाले के फ़रज़न्द ! तुम पर सलाम हो ।[1]

(بخاری ج۲ص۶۱۱غزوۂ موتہ)

जंगे मौता और फ़त्ह़े मक्का के दरमियान चन्द छोटी छोटी जमाअ़तों को हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार की मुदाफ़अ़त के लिये मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर भेजा । उन में से बा'ज़ लश्करों के साथ कुफ़्फ़ार का टकराव भी हुवा जिन का मुफ़स्सल तज़्किरा ज़ुरक़ानी व मदारिजुन्नुबुव्वह वग़ैरा में लिखा हुवा है । उन सरिय्यों के नाम येह हैं :

ज़ातुस्सलासिल । सरिय्यतुल ख़बत़ । सरिय्यए अबू क़तादा (नज्द) । सरिय्यए अबू क़तादा (सनम) मगर इन सरिय्यों में "सरिय्यतुल ख़बत़" ज़ियादा मश्हूर है जिस का मुख़्तसर बयान येह है :

सरिय्यतुल ख़बत़

इस सरिय्ये को ह़ज़रते इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने "ग़ज़्वए सैफ़ुल बह़्र" के नाम से ज़िक्र किया है । रजब सि. 8 हि. में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तीन सो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के लश्कर पर अमीर बना कर साहि़ले समुन्दर की जानिब रवाना फ़रमाया ताकि येह लोग क़बीलए जुहैना के कुफ़्फ़ार की शरारतों पर नज़र रखें इस लश्कर में ख़ूराक की इस क़दर कमी पड़ गई कि अमीरे लश्कर मुजाहिदीन को रोज़ाना एक एक खजूर राशन में देते थे । यहां तक कि एक वक़्त ऐसा भी आ गया कि येह खजूरें भी ख़त्म हो गईं और लोग भूक से बेचैन हो कर दरख़्तों के पत्ते खाने लगे येही वजह है कि आ़म तौ़र पर मुअर्रिख़ीन ने इस सरिय्ये का

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب غزوة موتة من ارض الشام، الحدیث:٤٢٦٤، ج٣،ص٩٧

नाम "सरिय्यतुल ख़बत्" या "जैशुल ख़बत्" रखा है। "ख़बत्" अ़रबी ज़बान में दरख़्त के पत्तों को कहते हैं। चूंकि मुजाहिदीने इस्लाम ने इस सरिय्ये में दरख़्तों के पत्ते खा कर जान बचाई इस लिये येह सरिय्यतुल ख़बत् के नाम से मश्हूर हो गया।

एक अ़जीबुल ख़िल्क़त मछली

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि हम लोगों को इस सफ़र में तक़रीबन एक महीना रहना पड़ा और जब भूक की शिद्दत से हम लोग दरख़्तों के पत्ते खाने लगे तो **अल्लाह** तआ़ला ने ग़ैब से हमारे रिज़्क़ का येह सामान पैदा फ़रमा दिया कि समुन्दर की मौजों ने एक इतनी बड़ी मछली साहिल पर फेंक दी, जो एक पहाड़ी के मानिन्द थी चुनान्चे तीन सो सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم अठ्ठारह दिनों तक उस मछली का गोश्त खाते रहे और उस की चरबी अपने बदन पर मलते रहे और जब वहां से रवाना होने लगे तो उस का गोश्त काट काट कर मदीने तक लाए और जब येह लोग बारगाहे नुबुव्वत में पहुंचे और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इस का तज़्किरा किया तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से तुम्हारे लिये रिज़्क़ का सामान हुवा था फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस मछली का गोश्त त़लब फ़रमाया और उस में से कुछ तनावुल भी फ़रमाया, येह इतनी बड़ी मछली थी कि अमीरे लश्कर हज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस की दो पस्लियां ज़मीन में गाड़ कर खड़ी कर दीं तो कजावा बंधा हुवा ऊंट उस मेह़राब के अन्दर से गुज़र गया।[1]

(بخاری ج۲ص ۶۲۵ غزوہ سیف البحر و زرقانی ج۲ص ۲۸۰)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ سیف البحر...الخ، الحدیث: ٤٣٦١، ٤٣٦٢، ج٣، ص ١٢٧، ١٢٨ ملخصاً والمواھب اللدنیة و شرح الزرقانی، باب سریة الخبط، ج٣، ص ٣٦١_٣٦٥ ملتقطاً

फ़त्हे मक्का

(रमज़ान सि. 8 हि. मुताबिक़ जनवरी सि. 630 ई.)

रमज़ान सि. 8 हि. तारीख़े नुबुव्वत का निहायत ही अ़ज़ीमुश्शान उ़न्वान है और सीरते मुक़द्दसा का येह वोह सुनहरा बाब है कि जिस की आबो ताब से हर मोमिन का क़ल्ब क़ियामत तक मसर्रतों का आफ़्ताब बना रहेगा क्यूं कि ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस तारीख़ से आठ साल क़ब्ल इनतिहाई रन्जीदगी के आ़लम में अपने यारे ग़ार को साथ ले कर रात की तारीकी में मक्का से हिजरत फ़रमा कर अपने वत़ने अ़ज़ीज़ को ख़ैरबाद कह दिया था और मक्का से निकलते वक़्त ख़ुदा के मुक़द्दस घर ख़ानए का'बा पर एक ह़सरत भरी निगाह डाल कर येह फ़रमाते हुए मदीना रवाना हुए थे कि "ऐ मक्का ! ख़ुदा की क़सम ! तू मेरी निगाहे मह़ब्बत में तमाम दुन्या के शहरों से ज़ियादा प्यारा है अगर मेरी क़ौम मुझे न निकालती तो मैं हरगिज़ तुझे न छोड़ता।" लेकिन आठ बरस के बा'द येही वोह मसर्रत ख़ैज़ तारीख़ है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक फ़ातेह़े आ'ज़म की शानो शौकत के साथ इसी शहरे मक्का में नुज़ूले इज्लाल फ़रमाया और का'बतुल्लाह में दाख़िल हो कर अपने सज्दों के जमाल व जलाल से ख़ुदा के मुक़द्दस घर की अ़ज़्मत को सरफ़राज़ फ़रमाया।

लेकिन नाज़िरीन के ज़ेहनों में येह सुवाल सर उठाता होगा कि जब कि हुदैबिया के सुल्ह़ नामा में येह तह़रीर किया जा चुका था कि दस बरस तक फ़रीक़ैन के माबैन कोई जंग न होगी तो फिर आख़िर वोह कौन सा ऐसा सबब नुमूदार हो गया कि सुल्ह़ नामा के फ़क़त़ दो साल ही बा'द ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अहले मक्का के सामने हथयार उठाने की ज़रूरत पेश आ गई और आप एक अ़ज़ीम लश्कर के साथ फ़ातेह़ाना हैसिय्यत से मक्का में दाख़िल हुए। तो इस सुवाल का जवाब येह है कि इस का सबब कुफ़्फ़ारे मक्का की "अ़ह्द शिकनी" और हुदैबिया के सुल्ह़ नामा से ग़द्दारी है।[1]

1 ......السيرة الحلبية،باب ذكر مغازيه،غزوة خيبر،ج٣،ص٧٤، ماخوذاً

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की अ़ह्द शिकनी

सुल्हे हुदैबिया के बयान में आप पढ़ चुके कि हुदैबिया के सुल्ह नामे में एक येह शर्त़ भी दर्ज थी कि क़बाइले अ़रब में से जो क़बीला क़ुरैश के साथ मुआ़हदा करना चाहे वोह क़ुरैश के साथ मुआ़हदा करे और जो ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मुआ़हदा करना चाहे वोह ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मुआ़हदा करे।

चुनान्चे इसी बिना पर क़बीलए बनी बक्र ने क़ुरैश से बाहमी इमदाद का मुआ़हदा कर लिया और क़बीलए बनी खुज़ाआ़ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इमदादे बाहमी का मुआ़हदा कर लिया। येह दोनों क़बीले मक्का के क़रीब ही में आबाद थे लेकिन इन दोनों में अ़र्सए दराज़ से सख़्त अ़दावत और मुख़ालफ़त चली आ रही थी।

एक मुद्दत से तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश और दूसरे क़बाइले अ़रब के कुफ़्फ़ार मुसलमानों से जंग करने में अपना सारा ज़ोर सर्फ़ कर रहे थे लेकिन सुल्हे हुदैबिया की ब दौलत जब मुसलमानों की जंग से कुफ़्फ़ारे क़ुरैश और दूसरे क़बाइले कुफ़्फ़ार को इत्मीनान मिला तो क़बीलए बनी बक्र ने क़बीलए खुज़ाआ़ से अपनी पुरानी अ़दावत का इनतिक़ाम लेना चाहा और अपने ह़लीफ़ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से मिल कर बिल्कुल अचानक त़ौर पर क़बीलए बनी खुज़ाआ़ पर ह़म्ला कर दिया और इस ह़म्ले में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के तमाम रूअसा या'नी इकरिमा बिन अबी जह्ल, सफ़्वान बिन उमय्या व सुहैल बिन अ़म्र वग़ैरा बड़े बड़े सरदारों ने अ़लानिया बनी खुज़ाआ़ को क़त्ल किया। बेचारे बनी खुज़ाआ़ इस ख़ौफ़नाक ज़ालिमाना ह़म्ले की ताब न ला सके और अपनी जान बचाने के लिये ह़रमे का'बा में पनाह लेने के लिये भागे। बनी बक्र के अ़वाम ने तो ह़रम में तलवार चलाने से हाथ रोक लिया और ह़रमे इलाही का एह़तिराम किया। लेकिन बनी बक्र का सरदार "नौफ़िल" इस क़दर जोशे इनतिक़ाम में आपे से

बाहर हो चुका था कि वोह ह़रम में भी बनी ख़ुज़ाआ़ को निहायत बे दर्दी के साथ क़त्ल करता रहा और चिल्ला चिल्ला कर अपनी क़ौम को ललकारता रहा कि फिर येह मौक़अ़ कभी हाथ नहीं आ सकता। चुनान्चे उन दरिन्दा सिफ़त ख़ूंख़ार इन्सानों ने ह़रमे इलाही के एह़तिराम को भी ख़ाक में मिला दिया और ह़रमे का'बा की ह़ुदूद में निहायत ही ज़ालिमाना त़ौर पर बनी ख़ुज़ाआ़ का ख़ून बहाया और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने भी इस क़त्लो ग़ारत और कुश्तो ख़ून में ख़ूब ख़ूब ह़िस्सा लिया।[1] (زرقانی ج۲ص۲۸۹)

ज़ाहिर है कि क़ुरैश ने अपनी इस ह़रकत से ह़ुदैबिया के मुआ़हदे को अ़मली त़ौर पर तोड़ डाला। क्यूं कि बनी ख़ुज़ाआ़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुआ़हदा कर के आप के ह़लीफ़ बन चुके थे, इस लिये बनी ख़ुज़ाआ़ पर ह़म्ला करना, येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला करने के बराबर था। इस ह़म्ले में बनी ख़ुज़ाआ़ के तेईस (23) आदमी क़त्ल हो गए।

इस ह़ादिसे के बा'द क़बीलए बनी ख़ुज़ाआ़ के सरदार अ़म्र बिन सालिम ख़ुज़ाई चालीस आदमियों का वफ़्द ले कर फ़रयाद करने और इमदाद त़लब करने के लिये मदीना बारगाहे रिसालत में पहुंचे और येही फ़त्ह़े मक्का की तम्हीद हुई।

ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इस्तिआ़नत

ह़ज़रते बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बयान है कि एक रात ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم काशानए नुबुव्वत में वुज़ू फ़रमा रहे थे कि एक दम बिल्कुल ना गहां आप ने बुलन्द आवाज़ से तीन मरतबा येह फ़रमाया कि लब्बैक। लब्बैक। लब्बैक। (मैं तुम्हारे लिये बार बार ह़ाज़िर हूं।) फिर तीन मरतबा बुलन्द आवाज़ से आप ने येह इरशाद फ़रमाया कि نصرت۔نصرت۔نصرت (तुम्हें मदद मिल गई) जब आप वुज़ूख़ाने से बाहर निकले तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) !

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب ھفتم ،ج۲،ص ۲۸۱،۲۸۲ ملخصاً

आप तन्हाई में किस से गुफ़्त्गू फ़रमा रहे थे ? तो इरशाद फ़रमाया कि ऐ मैमूना ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ग़ज़ब हो गया। मेरे ह़लीफ़ बनी ख़ुज़ाआ़ पर बनी बक्र और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने ह़म्ला कर दिया है और इस मुसीबत व बे कसी के वक़्त में बनी ख़ुज़ाआ़ ने वहां से चिल्ला चिल्ला कर मुझे मदद के लिये पुकारा है और मुझ से मदद त़लब की है और मैं ने उन की पुकार सुन कर उन की ढारस बंधाने के लिये उन को जवाब दिया है। ह़ज़रते बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا कहती हैं कि इस वाक़िए के तीसरे दिन जब **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े फ़ज्र के लिये मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो दफ़्अ़तन बनी ख़ुज़ाआ़ के मज़्लूमीन ने रज्ज़ के इन अश्आ़र को बुलन्द आवाज़ से पढ़ना शुरूअ़ कर दिया और **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और अस्ह़ाबे किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم ने उन की इस पुरदर्द और रिक़्क़त अंगेज़ फ़रयाद को बग़ौर सुना। आप भी इस रज्ज़ के चन्द अश्आ़र को मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

يَا رَبِّ اِنِّیْ نَاشِدٌ مُحَمَّدًا　　　　حِلْفَ اَبِيْنَا وَاَبِيْهِ الْاَتْلَدَا

ऐ ख़ुदा ! मैं मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को वोह मुआ़हदा याद दिलाता हूं जो हमारे और इन के बाप दादाओं के दरमियान क़दीम ज़माने से हो चुका है।

فَانْصُرْ هَدَاكَ اللّٰهُ نَصْرًا اَبَدَا　　　　وَادْعُ عِبَادَ اللّٰهِ يَاْتُوْا مَدَدَا

तो ख़ुदा आप को सीधी राह पर चलाए। आप हमारी भरपूर मदद कीजिये और ख़ुदा के बन्दों को बुलाइये। वोह सब इमदाद के लिये आएंगे।

فِيْهِمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ قَدْ تَجَرَّدَا　　　　اِنْ سِيْمَ خَسْفًا وَجْهُهٗ تَرَبَّدَا

उन मदद करने वालों में रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) भी

ग़ज़ब की ह़ालत में हों कि अगर उन्हें ज़िल्लत का दाग़ लगे तो उन का तेवर बदल जाएं।

هُمْ بَيَّتُوْنَا بِالْوَتِيْرِ هُجَّدًا وَ قَتَلُوْنَا رُكَّعًا وَّ سُجَّدًا

उन लोगों (बनी बक्र व कुरैश) ने "मक़ामे वतीर" में हम सोते हुओं पर शबख़ून मारा और रुकूअ़ व सज्दे की ह़ालत में भी हम लोगों को बे दर्दी के साथ क़त्ल कर डाला।

اِنَّ قُرَيْشًا اَخْلَفُوْكَ الْمَوْعِدَا وَنَقَّضُوْا مِيْثَاقَكَ الْمُؤَكَّدَا

यक़ीनन कुरैश ने आप से वा'दा ख़िलाफ़ी की है और आप से मज़्बूत़ मुआ़हदा कर के तोड़ डाला है।

इन अश्आ़र को सुन कर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों को तसल्ली दी और फ़रमाया कि मत घबराओ मैं तुम्हारी इमदाद के लिये तय्यार हूं।[1] (زرقانی ج۲ص۲۹۰)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अम्न पसन्दी

इस के बा'द **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुरैश के पास क़ासिद भेजा और तीन शर्तें पेश फ़रमाईं कि इन में से कोई एक शर्त़ कुरैश मंज़ूर कर लें :

(1) बनी ख़ुज़ाआ़ के मक़्तूलों का ख़ूनबहा, दिया जाए।

(2) कुरैश क़बीलए बनी बक्र की ह़िमायत से अलग हो जाएं।

(3) ए'लान कर दिया जाए कि हुदैबिया का मुआ़हदा टूट गया।

जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ासिद ने इन शर्तों को कुरैश के सामने रखा तो क़रत़ा बिन अ़ब्दे उ़मर ने कुरैश का नुमाइन्दा बन कर जवाब दिया कि "न हम मक़्तूलों के ख़ून का मुआ़वज़ा देंगे न अपने ह़लीफ़ क़बीलए बनी बक्र की ह़िमायत छोड़ेंगे। हां तीसरी शर्त़ हमें मंज़ूर है और हम ए'लान करते हैं कि हुदैबिया का मुआ़हदा टूट गया।"

---

1 ......المواهب اللدنيةمع شرح الزرقانی،باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳،ص ۳۸۰،۳۸۲

लेकिन क़ासिद के चले जाने के बा'द कुरैश को अपने इस जवाब पर नदामत हुई । चुनान्चे चन्द रूअसाए कुरैश अबू सुफ़्यान के पास गए और येह कहा कि अगर येह मुआ़मला न सुलझा तो फिर समझ लो कि यक़ीनन मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) हम पर ह़म्ला कर देंगे । अबू सुफ़्यान ने कहा कि मेरी बीवी हिन्द बिन्ते उ़त्बा ने एक ख़्वाब देखा है कि मक़ामे "ह़जून" से मक़ामे "ख़न्दमा" तक एक ख़ून की नहर बहती हुई आई है, फिर ना गहां वोह ख़ून ग़ाइब हो गया । कुरैश ने इस ख़्वाब को बहुत ही मन्हूस समझा और ख़ौफ़ व दहशत से सहम गए और अबू सुफ़्यान पर बहुत ज़ियादा दबाव डाला कि वोह फ़ौरन मदीने जा कर मुआ़हदए हुदैबिया की तजदीद करे ।[1] (زرقانی ج۲ص۲۹۲)

अबू सुफ़्यान की कोशिश

इस के बा'द बहुत तेज़ी के साथ अबू सुफ़्यान मदीने गया और पहले अपनी लड़की ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन बीबी उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا के मकान पर पहुंचा और बिस्तर पर बैठना ही चाहता था कि ह़ज़रते बीबी उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا ने जल्दी से बिस्तर उठा लिया । अबू सुफ़्यान ने हैरान हो कर पूछा कि बेटी तुम ने बिस्तर क्यूं उठा लिया ? क्या बिस्तर को मेरे क़ाबिल नहीं समझा या मुझ को बिस्तर के क़ाबिल नहीं समझा ? उम्मुल मोमिनीन ने जवाब दिया कि येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का बिस्तर है और तुम मुशरिक और नजिस हो । इस लिये मैं ने येह गवारा नहीं किया कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बिस्तर पर बैठो । येह सुन कर अबू सुफ़्यान के दिल पर चोट लगी और वोह रन्जीदा हो कर वहां से चला आया और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपना मक़्सद बयान किया । आप ने कोई जवाब नहीं दिया । फिर अबू सुफ़्यान

---

1 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی، باب غزوۃ الفتح الاعظم، ج۳،ص۳۸٤

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते उमर व हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के पास गया। इन सब हज़रात ने जवाब दिया कि हम कुछ नहीं कर सकते। हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास जब अबू सुफ़्यान पहुंचा तो वहां हज़रते बीबी फ़ातिमा और हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا भी थे। अबू सुफ़्यान ने बड़ी लजाजत से कहा कि ऐ अ़ली ! तुम क़ौम में बहुत ही रह़्म दिल हो हम एक मक़्सद ले कर यहां आए हैं क्या हम यूं ही नाकाम चले जाएं। हम सिर्फ़ येही चाहते हैं कि तुम मुह़म्मद (صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) से हमारी सिफ़ारिश कर दो। हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि ऐ अबू सुफ़्यान ! हम लोगों की येह मजाल नहीं है कि हम **हुज़ूर** صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इरादे और उन की मरज़ी में कोई मुदाख़लत कर सकें। हर त़रफ़ से मायूस हो कर अबू सुफ़्यान ने हज़रते फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से कहा कि ऐ फ़ातिमा ! येह तुम्हारा पांच बरस का बच्चा (इमामे ह़सन) एक मरतबा अपनी ज़बान से इतना कह दे कि मैं ने दोनों फ़रीक़ में सुल्ह़ करा दी तो आज से येह बच्चा अ़रब का सरदार कह कर पुकारा जाएगा। हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने जवाब दिया कि बच्चों को इन मुआ़मलात में क्या दख़्ल ? बिल आख़िर अबू सुफ़्यान ने कहा कि ऐ अ़ली ! मुआ़मला बहुत कठिन नज़र आता है कोई तदबीर बताओ ? हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि मैं इस सिल्सिले में तुम को कोई मुफ़ीद राय तो नहीं दे सकता, लेकिन तुम बनी किनाना के सरदार हो तुम ख़ुद ही लोगों के सामने ए'लान कर दो कि मैं ने हुदैबिया के मुआ़हदे की तजदीद कर दी अबू सुफ़्यान ने कहा कि क्या मेरा येह ए'लान कुछ मुफ़ीद हो सकता है ? हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि यक त़रफ़ा ए'लान ज़ाहिर है कि कुछ मुफ़ीद नहीं हो सकता। मगर अब तुम्हारे पास इस के सिवा और चारए कार ही क्या है ? अबू सुफ़्यान वहां से मस्जिदे नबवी में आया और बुलन्द आवाज़ से मस्जिद में ए'लान कर दिया कि मैं ने मुआ़हदए हुदैबिया की तजदीद कर दी मगर मुसलमानों में से किसी ने भी कोई जवाब नहीं दिया।

अबू सुफ़्यान येह ए'लान कर के मक्का रवाना हो गया जब मक्का पहुंचा तो कुरैश ने पूछा कि मदीने में क्या हुवा ? अबू सुफ़्यान ने सारी दास्तान बयान कर दी। तो कुरैश ने सुवाल किया कि जब तुम ने अपनी त़रफ़ से मुआ़हदए हुदैबिया की तजदीद का ए'लान किया तो क्या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इस को क़बूल कर लिया ? अबू सुफ़्यान ने कहा कि "नहीं" येह सुन कर कुरैश ने कहा कि येह तो कुछ भी न हुवा। येह न तो सुल्ह़ है कि हम इत्मीनान से बैठें न येह जंग है कि लड़ाई का सामान किया जाए।[1] (زرقانی ج۲ص۲۹۲تا ص۲۹۳)

इस के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों को जंग की तय्यारी का हुक्म दे दिया और ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से भी फ़रमा दिया कि जंग के हथयार दुरुस्त करें और अपने ह़लीफ़ क़बाइल को भी जंगी तय्यारियों के लिये हुक्म नामा भेज दिया। मगर किसी को हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह नहीं बताया कि किस से जंग का इरादा है ? यहां तक कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से भी आप ने कुछ नहीं फ़रमाया। चुनान्चे ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास आए और देखा कि वोह जंगी हथयारों को निकाल रही हैं तो आप ने दरयाफ़्त किया कि क्या हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया है ? अ़र्ज़ किया : "जी हां" फिर आप ने पूछा कि क्या तुम्हें कुछ मा'लूम है कि कहां का इरादा है ? ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने कहा कि "वल्लाह ! मुझे येह मा'लूम नहीं।"[2] (زرقانی ج۲ص۲۹۱)

---

1 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی،باب غزوۃ الفتح الاعظم، ج۳،ص۳۸۵۔۳۸۶

2 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی،باب غزوۃ الفتح الاعظم، ج۳،ص۳۸۱،۳۸۲

ग़रज़ इनतिहाई ख़ामोशी और राज़दारी के साथ **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जंग की तय्यारी फ़रमाई और मक़्सद येह था कि अहले मक्का को ख़बर न होने पाए और अचानक उन पर ह़म्ला कर दिया जाए।

ह़ज़रते ह़ातिब बिन अबी बल्तआ رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهُ का ख़त

ह़ज़रते ह़ातिब बिन अबी बल्तआ رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهُ जो एक मुअ़ज़्ज़ज़ सह़ाबी थे उन्हों ने कुरैश को एक ख़त इस मज़मून का लिख दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जंग की तय्यारियां कर रहे हैं, लिहाज़ा तुम लोग होशियार हो जाओ। इस ख़त को उन्हों ने एक औ़रत के ज़रीए मक्का भेजा। **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया था। आप ने अपने इस इल्मे ग़ैब की बदौलत येह जान लिया कि ह़ज़रते ह़ातिब बिन अबी बल्तआ رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهُ ने क्या कारवाई की है। चुनान्चे आप ने ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते ज़ुबैर व ह़ज़रते मिक़्दाद رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهُم को फ़ौरन ही रवाना फ़रमाया कि तुम लोग **"रौज़ए ख़ाख़"** में चले जाओ। वहां एक औ़रत है और उस के पास एक ख़त है। उस से वोह ख़त छीन कर मेरे पास लाओ। चुनान्चे येह तीनो अस्ह़ाबे किबार رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهُم तेज़ रफ़्तार घोड़ों पर सुवार हो कर "रौज़ए ख़ाख़" में पहुंचे और औ़रत को पा लिया। जब उस से ख़त त़लब किया तो उस ने कहा कि मेरे पास कोई ख़त नहीं है। ह़ज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कभी कोई झूटी बात नहीं कह सकते, न हम लोग झूटे हैं लिहाज़ा तू ख़त निकाल कर हमें दे दे वरना हम तुझ को नंगी कर के तलाशी लेंगे। जब औ़रत मजबूर हो गई तो उस ने अपने बालों के जूड़े में से वोह ख़त निकाल कर दे दिया। जब येह लोग ख़त ले कर बारगाहे रिसालत में पहुंचे तो आप ने ह़ज़रते ह़ातिब बिन अबी बल्तआ

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुलाया और फ़रमाया कि ऐ हातिब ! येह तुम ने क्या किया ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! आप मेरे बारे में जल्दी न फ़रमाएं न मैं ने अपना दीन बदला है न मुर्तद हुवा हूं मेरे इस ख़त के लिखने की वजह सिर्फ़ येह है कि मक्का में मेरे बीवी बच्चे हैं। मगर मक्का में मेरा कोई रिश्तेदार नहीं है जो मेरे बीवी बच्चों की ख़बर गीरी व निगह दाश्त करे। मेरे सिवा दूसरे तमाम मुहाजिरीन के अ़ज़ीज़ो अक़ारिब मक्का में मौजूद हैं जो इन के अहलो इ़याल की देखभाल करते रहते हैं। इस लिये मैं ने येह ख़त लिख कर कुरैश पर एक अपना एह़सान रख दिया है ताकि मैं उन की हमदर्दी ह़ासिल कर लूं और वोह मेरे अहलो इ़याल के साथ कोई बुरा सुलूक न करें। या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मेरा ईमान है कि **अल्लाह** तआ़ला ज़रूर उन काफ़िरों को शिकस्त देगा और मेरे इस ख़त से कुफ़्फ़ार को हरगिज़ हरगिज़ कोई फ़ाएदा नहीं हो सकता।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़ातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस बयान को सुन कर उन के उ़ज़्र को क़बूल फ़रमा लिया मगर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस ख़त को देख कर इस क़दर तैश में आ गए कि आपे से बाहर हो गए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं इस मुनाफ़िक़ की गरदन उड़ा दूं। दूसरे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم भी ग़ैज़ो ग़ज़ब में भर गए। लेकिन रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जबीने रह़मत पर इक ज़रा शिकन भी नहीं आई और आप ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि ह़ातिब अहले बद्र में से है और **अल्लाह** तआ़ला ने अहले बद्र को मुख़ात़ब कर के फ़रमा दिया है कि "तुम जो चाहो करो। तुम से कोई मुवाख़ज़ा नहीं" येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आंखें नम हो गईं और वोह येह कह कर बिल्कुल ख़ामोश हो गए कि "**अल्लाह** और उस के रसूल को हम सब से ज़ियादा इ़ल्म है" इसी मौक़अ़ पर कुरआन की येह आयत नाज़िल हुई कि

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّیْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ[1] (ممتحنہ)	ऐ ईमान वालो ! मेरे और अपने दुश्मन काफ़िरों को दोस्त न बनाओ ।

बहर हाल **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़ातिब बिन अबी बल्तआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुआ़फ़ फ़रमा दिया ।[2]

(بخاری ج۲ص۶۱۲ غزوۂ الفتح)

मक्के पर ह़म्ला

ग़रज़ 10 रमज़ान सि. 8 हि. को रसूले अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने से दस हज़ार का लश्करे पुर अन्वार साथ ले कर मक्का की त़रफ़ रवाना हुए । बा'ज़ रिवायतों में है कि फ़त्हे मक्का में आप के साथ बारह हज़ार का लश्कर था इन दोनों रिवायतों में कोई तआ़रुज़ नहीं । हो सकता है कि मदीने से रवानगी के वक़्त दस हज़ार का लश्कर रहा हो । फिर रास्ते में बा'ज़ क़बाइल इस लश्कर में शामिल हो गए हों तो मक्का पहुंच कर इस लश्कर की ता'दाद बारह हज़ार हो गई हो । बहर ह़ाल मदीने से चलते वक़्त **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और तमाम सह़ाबए किबार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم रोज़ादार थे जब आप "मक़ामे कदीद" में पहुंचे तो पानी मांगा और अपनी सुवारी पर बैठे हुए पूरे लश्कर को दिखा कर आप ने दिन में पानी नोश फ़रमाया और सब को रोज़ा छोड़ देने का हुक्म दिया । चुनान्चे आप और आप के अस्ह़ाब ने सफ़र और जिहाद में होने की वजह से रोज़ा रखना मौक़ूफ़ कर दिया ।[3] (بخاری ج۲ص۶۱۳ و زرقانی ج۲ص۳۰۰ و سیرت ابن ہشام ج۲ص۴۰۰)

---

1 ......پ۲۸، الممتحنة:۱

2 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب غزوة الفتح، الحديث:۴۲۷۴، ج۳، ص۹۹
والمواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳، ص۳۷۸-۳۹۱

3 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳، ص۳۹۵،۳۹۷

हज़रते अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ वग़ैरा से मुलाक़ात

जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मक़ामे "जुह्फ़ा" में पहुंचे तो वहां हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपने अहलो इयाल के साथ ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए। येह मुसलमान हो कर आए थे बल्कि इस से बहुत पहले मुसलमान हो चुके थे और हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मरज़ी से मक्के में मुक़ीम थे और हुज्जाज को ज़मज़म पिलाने के मुअ़ज़्ज़ज़ ओ़हदे पर फ़ाइज़ थे और आप के साथ में हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब के फ़रज़न्द जिन का नाम भी अबू सुफ़्यान था और हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फूफीज़ाद भाई अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या जो उम्मुल मोमिनीन हज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के सोतेले भाई भी थे बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुए इन दोनों साहिबों की हाज़िरी का हाल जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मा'लूम हुवा तो आप ने उन दोनों साहिबों की मुलाक़ात से इन्कार फ़रमा दिया। क्यूं कि इन दोनों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत ज़ियादा ईज़ाएं पहुंचाई थीं। ख़ुसूसन अबू सुफ़्यान बिन अल हारिस आप के चचाज़ाद भाई जो ए'लाने नुबुव्वत से पहले आप के इनतिहाई जां निसारों में से थे मगर ए'लाने नुबुव्वत के बा'द इन्हों ने अपने क़सीदों में इतनी शर्मनाक और बेहूदा हिजू हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की कर डाली थी कि आप का दिल ज़ख़्मी हो गया था। इस लिये आप इन दोनों से इनतिहाई नाराज़ व बेज़ार थे मगर हज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इन दोनों का क़ुसूर मुआ़फ़ करने के लिये बहुत ही पुरज़ोर सिफ़ारिश की और अबू सुफ़्यान बिन अल हारिस ने येह कह दिया कि अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा क़ुसूर मुआ़फ़ न फ़रमाया तो मैं अपने छोटे छोटे बच्चों को ले कर अ़रब के रेगिस्तान में चला जाऊंगा ताकि वहां बिग़ैर दाना पानी के भूक प्यास से

तड़प तड़प कर मैं और मेरे सब बच्चे मर कर फ़ना हो जाएं। हज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने बारगाहे रिसालत में आबदीदा हो कर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! क्या आप के चचा का बेटा और आप की फूफी का बेटा तमाम इन्सानों से ज़ियादा बद नसीब रहेगा ? क्या इन दोनों को आप की रह़मत से कोई ह़िस्सा नहीं मिलेगा ? जान छिड़कने वाली बीवी के इन दर्द अंगेज़ कलिमात से रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रह़मत भरे दिल में रह़मो करम और अ़फ़्वो दर गुज़र के समुन्दर मोजें मारने लगे। फिर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इन दोनों को येह मश्वरा दिया कि तुम दोनों अचानक बारगाहे रिसालत में सामने जा कर खड़े हो जाओ और जिस त़रह़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیۡہِ السَّلَام के भाइयों ने कहा था वोही तुम दोनों भी कहो कि

لَقَدۡ اٰثَرَکَ اللّٰہُ عَلَیۡنَا وَاِنۡ کُنَّا لَخٰطِئِیۡنَ ○(1)

कि यक़ीनन आप को ***अल्लाह*** *तआ़ला ने हम पर फ़ज़ीलत दी है और हम बिला शुबा ख़त़ावार हैं।*

चुनान्चे उन दोनों साह़िबों ने दरबारे रिसालत में ना गहां ह़ाज़िर हो कर येही कहा। एक दम रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जबीने रह़मत पर रह़मो करम के हज़ारों सितारे चमकने लगे और आप ने उन के जवाब में बि ऐ़निही वोही जुम्ला अपनी ज़बाने रह़मत निशान से इरशाद फ़रमाया जो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیۡہِ السَّلَام ने अपने भाइयों के जवाब में फ़रमाया था कि

لَا تَثۡرِیۡبَ عَلَیۡکُمُ الۡیَوۡمَ ؕ یَغۡفِرُ اللّٰہُ لَکُمۡ ۫ وَھُوَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِیۡنَ ○(2)

आज तुम से कोई मुवाख़ज़ा नहीं है ***अल्लाह*** *तुम्हें बख़्श दे। वोह अरह़मुर्राह़िमीन है।*

---

(1) پ۱۳،یوسف:۹۱

(2) پ۱۳،یوسف:۹۲

जब कुसूर मुआ़फ़ हो गया तो अबू सुफ़्यान बिन अल ह़ारिस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मदह़ में अश्आ़र लिखे और ज़मानए जाहिलिय्यत के दौर में जो कुछ आप की हिजू में लिखा था उस की मा'ज़िरत की और इस के बा'द उ़म्र भर निहायत सच्चे और साबित क़दम मुसलमान रहे मगर ह़या की वजह से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने कभी सर नहीं उठाते थे और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी इन के साथ बहुत ज़ियादा मह़ब्बत रखते थे और फ़रमाया करते थे कि मुझे उम्मीद है कि अबू सुफ़्यान बिन अल ह़ारिस मेरे चचा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के क़ाइम मक़ाम साबित होंगे ।[1] (زرقانی ج۲ص۳۰۱تا ص۳۰۲وسیرت ابن ہشام ج۲ص۴۰۰)

मीलों तक आग ही आग

मक्के से एक मन्ज़िल के फ़ासिले पर "मुर्रुज़्ज़हरान" में पहुंच कर इस्लामी लश्कर ने पड़ाव डाला और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौज को हुक्म दिया कि हर मुजाहिद अपना अलग अलग चूल्हा जलाए। दस हज़ार मुजाहिदीन ने जो अलग अलग चूल्हे जलाए तो "**मुर्रुज़्ज़हरान**" के पूरे मैदान में मीलों तक आग ही आग नज़र आने लगी ।[2]

क़ुरैश के जासूस

गो क़ुरैश को मा'लूम ही हो चुका था कि मदीने से फ़ौजें आ रही हैं। मगर सूरते ह़ाल की तह़क़ीक़ के लिये क़ुरैश ने अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब, ह़कीम बिन ह़िज़ाम व बदील बिन वरक़ा को अपना जासूस बना कर भेजा। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बेह़द फ़िक्र मन्द हो कर क़ुरैश के अन्जाम पर अफ़्सोस कर रहे थे। वोह येह सोचते थे कि अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इतने अ़ज़ीम लश्कर के साथ मक्का में फ़ातेह़ाना दाख़िल हुए तो आज क़ुरैश का ख़ातिमा हो जाएगा। चुनान्चे वोह रात के

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب غزوة الفتح الاعظم، ج٣، ص٣٩٩-٤٠٢

2 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب غزوة الفتح الاعظم، ج٣، ص٤٠٣

वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़ेद ख़च्चर पर सुवार हो कर इस इरादे से मक्का चले कि क़ुरैश को इस ख़त़्रे से आगाह कर के उन्हें आमादा करें कि चल कर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुआ़फ़ी मांग कर सुल्ह़ कर लो वरना तुम्हारी ख़ैर नहीं ।[1] (زرقانی ج۲ص۳۰۴)

मगर बुख़ारी की रिवायत में है कि क़ुरैश को येह ख़बर तो मिल गई थी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने से रवाना हो गए हैं मगर उन्हें येह पता न था कि आप का लश्कर "**मुर्रुज़्ज़हरान**" तक आ गया है इस लिये अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब और ह़कीम बिन ह़िज़ाम व बदील बिन वरक़ा इस तलाश व जुस्तजू में निकले थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का लश्कर कहां है ? जब येह तीनों "**मुर्रुज़्ज़हरान**" के क़रीब पहुंचे तो देखा कि मीलों तक आग ही आग जल रही है येह मन्ज़र देख कर येह तीनों ह़ैरान रह गए और अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब ने कहा कि मैं ने तो ज़िन्दगी में कभी इतनी दूर तक फैली हुई आग इस मैदान में जलते हुए नहीं देखी । आख़िर येह कौन सा क़बीला है ? बदील बिन वरक़ा ने कहा कि बनी अ़म्र मा'लूम होते हैं । अबू सुफ़्यान ने कहा कि नहीं, बनी अ़म्र इतनी कसीर ता'दाद में कहां हैं जो उन की आग से "**मुर्रुज़्ज़हरान**" का पूरा मैदान भर जाएगा ।[2] (بخاری ج۲ص۶۱۳)

बहर हाल ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की इन तीनों से मुलाक़ात हो गई और अबू सुफ़्यान ने पूछा कि ऐ अ़ब्बास ! तुम कहां से आ रहे हो ? और येह आग कैसी है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، اسلام ابی سفيان بن الحارث...الخ، ص٤٦٨، ٤٦٩ ملخصاً
والمواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج٣، ص٤٠٣

2 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی ، باب اين ركز النبی صلی اللّٰه عليه وسلم...الخ، الحديث:٤٢٨٠، ج٣، ص١٠١

येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लश्कर की आग है। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब से कहा कि तुम मेरे ख़च्चर पर पीछे सुवार हो जाओ वरना अगर मुसलमानों ने तुम्हें देख लिया तो अभी तुम को क़त्ल कर डालेंगे। जब येह लोग लश्कर गाह में पहुंचे तो ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ और दूसरे चन्द मुसलमानों ने जो लश्कर गाह का पहरा दे रहे थे। अबू सुफ़्यान को देख लिया। ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ अपने जज़्बए इनतिक़ाम को ज़ब्त़ न कर सके और अबू सुफ़्यान को देखते ही उन की ज़बान से निकला कि "अरे येह तो खुदा का दुश्मन अबू सुफ़्यान है।" दौड़ते हुए बारगाहे रिसालत में पहुंचे और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! अबू सुफ़्यान हाथ आ गया है। अगर इजाज़त हो तो अभी उस का सर उड़ा दूं। इतने में ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी उन तीनों मुशरिकों को साथ लिये हुए दरबारे रसूल में ह़ाज़िर हो गए और उन लोगों की जान बख़्शी की सिफ़ारिश पेश कर दी और येह कहा कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं ने इन सभों को अमान दे दी है।(1)

अबू सुफ़्यान का इस्लाम

अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब की इस्लाम दुश्मनी कोई ढकी छुपी चीज़ नहीं थी। मक्के में रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सख़्त से सख़्त ईज़ाएं देनी, मदीने पर बार बार ह़म्ला करना, क़बाइले अ़रब को इश्तिआ़ल दिला कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़त्ल की बारहा साज़िशें, यहूदियों और तमाम कुफ़्फ़ारे अ़रब से साज़बाज़ कर के इस्लाम और बानिये इस्लाम के ख़ातिमे की कोशिशें येह वोह ना क़ाबिले मुआ़फ़ी जराइम थे जो पुकार पुकार कर कह रहे थे कि अबू सुफ़्यान का क़त्ल बिल्कुल दुरुस्त

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب هفتم، فتح مكه،ج۲، ص ۲۸۱،۲۸۲

وشرح الزرقانی علی المواهب، باب غزوة الفتح الاعظم،ج۳، ص۴۱۸ مختصراً

व जाइज़ और बर महल है। लेकिन रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जिन को कुरआन ने "रऊफ़ व रहीम" के लक़ब से याद किया है। उन की रहमत चुम्कार चुम्कार कर अबू सुफ़्यान के कान में कह रही थी कि ऐ मुजरिम ! मत डर। येह दुन्या के सलातीन का दरबार नहीं है बल्कि येह रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे रहमत है। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत तो येही है कि अबू सुफ़्यान बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुए तो फ़ौरन ही इस्लाम क़बूल कर लिया। इस लिये जान बच गई।(1)

(بخاری ج ۲ ص ۶۱۳ باب این رکز النبی رایۃ)

मगर एक रिवायत येह भी है कि हकीम बिन हिज़ाम और बदील बिन वरक़ा ने तो फ़ौरन रात ही में इस्लाम क़बूल कर लिया मगर अबू सुफ़्यान ने सुब्ह को कलिमा पढ़ा।(2) (زرقانی ج ۲ ص ۳۰۴)

और बा'ज़ रिवायात में येह भी आया है कि अबू सुफ़्यान और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियान एक मुकालमा हुवा इस के बा'द अबू सुफ़्यान ने अपने इस्लाम का ए'लान किया। वोह मुकालमा येह है :

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : क्यूं ऐ अबू सुफ़्यान ! क्या अब भी तुम्हें यक़ीन न आया कि ख़ुदा एक है ?

अबू सुफ़्यान : क्यूं नहीं कोई और ख़ुदा होता तो आज हमारे काम आता।

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : क्या इस में तुम्हें कोई शक है कि मैं **अल्लाह** का रसूल हूं ?

अबू सुफ़्यान : हां ! इस में तो अभी मुझे कुछ शुबा है।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب این رکز النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم...الخ، الحدیث: ۴۲۸۰، ج۳، ص ۱۰۱

2 ......شرح الزرقانی علی المواهب، باب غزوۃ الفتح الاعظم، ج۳، ص ۴۰۵

मगर फिर इस के बा'द उन्हों ने कलिमा पढ़ लिया और उस वक़्त गो उन का ईमान मुतज़ल्ज़िल था लेकिन बा'द में बिल आख़िर वोह सच्चे मुसलमान बन गए। चुनान्चे ग़ज़्वए ताइफ़ में मुसलमानों की फ़ौज में शामिल हो कर इन्हों ने कुफ़्फ़ार से जंग की और इसी में इन की एक आंख ज़ख़्मी हो गई। फिर येह जंगे यरमूक में भी जिहाद के लिये गए।[1] (سیرت ابن ہشام ج۲ص۴۰۳وزرقانی ج۲ص۳۱۳)

लश्करे इस्लाम का जाहो जलाल

मुजाहिदीने इस्लाम का लश्कर जब मक्का की तरफ़ बढ़ा तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया कि आप अबू सुफ़्यान को किसी ऐसे मक़ाम पर खड़ा कर दें कि येह अफ़्वाजे इलाही का जलाल अपनी आंखों से देख ले। चुनान्चे जहां रास्ता कुछ तंग था एक बुलन्द जगह पर हज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अबू सुफ़्यान को खड़ा कर दिया। थोड़ी देर के बा'द इस्लामी लश्कर समुन्दर की मौजों की तरह़ उमंडता हुवा रवाना हुवा और क़बाइले अ़रब की फ़ौजें हथयार सज सज कर यके बा'द दीगरे अबू सुफ़्यान के सामने से गुज़रने लगीं। सब से पहले क़बीलए ग़िफ़ार का बा वक़ार परचम नज़र आया। अबू सुफ़्यान ने सहम कर पूछा कि येह कौन लोग हैं? हज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने कहा कि येह क़बीलए ग़िफ़ार के शह सुवार हैं। अबू सुफ़्यान ने कहा कि मुझे क़बीलए ग़िफ़ार से क्या मत़लब है? फिर जुहैना फिर सा'द बिन हुज़ैम, फिर सुलैम के क़बाइल की फ़ौजें ज़र्क़ बर्क़ हथयारों में डूबे हुए परचम लहराते और तक्बीर के ना'रे मारते हुए सामने से निकल गए। अबू सुफ़्यान हर फ़ौज का जलाल देख कर मरऊ़ब हो हो जाते थे और हज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से हर फ़ौज के बारे में पूछते जाते थे कि येह कौन हैं? येह किन लोगों का लश्कर है? इस के बा'द

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، اسلام ابى سفيان بن الحارث...الخ،ص٤٦٩ ملخصاً

अन्सार का लश्करे पुर अन्वार इतनी अ़जीब शान और ऐसी निराली आन बान से चला कि देखने वालों के दिल दहल गए। अबू सुफ़्यान ने इस फ़ौज की शानो शौकत से हैरान हो कर कहा कि ऐ अ़ब्बास ! येह कौन लोग हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि येह "अन्सार" हैं ना गहां अन्सार के अ़लम बरदार ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ झन्डा लिये हुए अबू सुफ़्यान के क़रीब से गुज़रे और जब अबू सुफ़्यान को देखा तो बुलन्द आवाज़ से कहा कि ऐ अबू सुफ़्यान ! اَلْیَوْمَ یَوْمُ الْمَلْحَمَۃِ اَلْیَوْمَ تُسْتَحَلُّ الْکَعْبَۃُ आज घुमसान की जंग का दिन है। आज का'बे में ख़ूंरेज़ी ह़लाल कर दी जाएगी।

अबू सुफ़्यान येह सुन कर घबरा गए और ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा कि ऐ अ़ब्बास ! सुन लो ! आज क़ुरैश की हलाकत तुम्हें मुबारक हो। फिर अबू सुफ़्यान को चैन नहीं आया तो पूछा कि बहुत देर हो गई। अभी तक मैं ने मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को नहीं देखा कि वोह कौन से लश्कर में हैं ! इतने में **हुज़ूर** ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم परचमे नुबुव्वत के साए में अपने नूरानी लश्कर के हमराह पैग़म्बराना जाहो जलाल के साथ नुमूदार हुए। अबू सुफ़्यान ने जब शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा तो चिल्ला कर कहा कि ऐ **हुज़ूर** ! क्या आप ने सुना कि सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क्या कहते हुए गए हैं ? इरशाद फ़रमाया कि उन्हों ने क्या कहा है ? अबू सुफ़्यान बोले कि उन्हों ने येह कहा है कि आज का'बा ह़लाल कर दिया जाएगा। आप ने इरशाद फ़रमाया कि सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ग़लत़ कहा, आज तो का'बे की अ़ज़्मत का दिन है। आज तो का'बे को लिबास पहनाने का दिन है और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सा'द बिन उ़बादा ने इतनी ग़लत़ बात क्यूं कह दी। आप ने उन के हाथ से झन्डा ले कर उन के बेटे क़ैस बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ में दे दिया।

और एक रिवायत में येह है कि जब अबू सुफ़्यान ने बारगाहे रसूल में येह शिकायत की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! अभी अभी सा'द बिन उ़बादा येह कहते हुए गए हैं कि اَلْیَوْمَ یَوْمُ الْمَلْحَمَة आज घुमसान की **लड़ाई** का दिन है।

तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़फ़गी का इज़्हार फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि सा'द बिन उ़बादा ने ग़लत़ कहा, बल्कि ऐ अबू सुफ़्यान ! اَلْیَوْمَ یَوْمُ الْمَرْحَمَة आज का दिन तो **रह़मत** का दिन है।[1]

(زرقانی ج۲ص۳۰۶)

फिर फ़ातेह़ाना शानो शौकत के साथ बानिये का'बा के जा नशीन **हुज़ूर** रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्का की सर ज़मीन में नुज़ूले इज्लाल फ़रमाया और हुक्म दिया कि मेरा झन्डा मक़ामे "ह़ुजून" के पास गाड़ा जाए और ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के नाम फ़रमान जारी फ़रमाया कि वोह फ़ौजों के साथ मक्का के बालाई ह़िस्से या'नी "कदा" की त़रफ़ से मक्का में दाख़िल हों।[2]

(بخاری ج۲ص۶۱۳باب این رکز النبی رایة وزرقانی ج۲ص۳۰۴تاص۳۰۶)

फ़ातेह़े मक्का का पहला फ़रमान

ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्का की सर ज़मीन में क़दम रखते ही जो पहला फ़रमान जारी फ़रमाया वोह येह ए'लान था कि जिस के लफ़्ज़ लफ़्ज़ में रह़मतों के दरिया मौजें मार रहे हैं :

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳، ص۴۰۵۔۴۰۹، ۴۱۲

2 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب اين ركز النبی صلى الله عليه و سلم...الخ، الحديث:۴۲۸۰، ج۳، ص۱۰۱، ۱۰۲ ملخصاً

"जो शख़्स हथयार डाल देगा उस के लिये अमान है।

जो शख़्स अपना दरवाज़ा बन्द कर लेगा उस के लिये अमान है।

जो का'बे में दाख़िल हो जाएगा उस के लिये अमान है।"

इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अबू सुफ़्यान एक फ़ख़्र पसन्द आदमी है इस के लिये कोई ऐसी इम्तियाज़ी बात फ़रमा दीजिये कि इस का सर फ़ख़्र से ऊंचा हो जाए। तो आप ने फ़रमा दिया कि

"जो अबू सुफ़्यान के घर में दाख़िल हो जाए उस के लिये अमान है।"

इस के बा'द अबू सुफ़्यान मक्का में बुलन्द आवाज़ से पुकार पुकार कर ए'लान करने लगा कि ऐ क़ुरैश ! मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) इतना बड़ा लश्कर ले कर आ गए हैं कि इस का मुक़ाबला करने की किसी में भी त़ाक़त नहीं है जो अबू सुफ़्यान के घर में दाख़िल हो जाए उस के लिये अमान है। अबू सुफ़्यान की ज़बान से येह कम हिम्मती की बात सुन कर उस की बीवी हिन्द बिन्ते उ़त्बा जल भुन कर कबाब हो गई और त़ैश में आ कर अबू सुफ़्यान की मूंछ पकड़ ली और चिल्ला कर कहने लगी कि ऐ बनी किनाना ! इस कम बख़्त को क़त्ल कर दो येह कैसी बुज़दिली और कम हिम्मती की बात बक रहा है। हिन्द की इस चीख़ो पुकार की आवाज़ सुन कर तमाम बनू किनाना का ख़ानदान अबू सुफ़्यान के मकान में जम्अ़ हो गया और अबू सुफ़्यान ने साफ़ साफ़ कह दिया कि इस वक़्त ग़ुस्सा और त़ैश की बातों से कुछ काम नहीं चल सकता। मैं पूरे इस्लामी लश्कर को अपनी आंख से देख कर आया हूं और मैं तुम लोगों को यक़ीन दिलाता हूं कि अब हम लोगों से मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मुक़ाबला नहीं हो सकता। येह ख़ैरिय्यत है कि उन्हों ने ए'लान कर दिया है कि जो अबू सुफ़्यान के मकान में चला जाए उस के लिये अमान है। लिहाज़ा ज़ियादा से ज़ियादा लोग मेरे मकान में आ कर पनाह ले लें। अबू सुफ़्यान के

ख़ानदान वालों ने कहा कि तेरे मकान में भला कितने इन्सान आ सकेंगे ? अबू सुफ़्यान ने बताया कि मुहम्मद (صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने उन लोगों को भी अमान दे दी है जो अपने दरवाज़े बन्द कर लें या मस्जिदे हराम में दाख़िल हो जाएं या हथयार डाल दें। अबू सुफ़्यान का येह बयान सुन कर कोई अबू सुफ़्यान के मकान में चला गया। कोई मस्जिदे हराम की तरफ़ भागा। कोई अपना हथयार ज़मीन पर रख कर खड़ा हो गया।[1] (زرقانی ج۲ص۳۱۳)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस ए'लाने रहमत निशान या'नी मुकम्मल अम्नो अमान का फ़रमान जारी कर देने के बा'द एक क़त्रा खून बहने का कोई इमकान ही नहीं था। लेकिन इकरिमा बिन अबू जहल व सफ़्वान बिन उमय्या व सुहैल बिन अम्र और जमाश बिन क़ैस ने मक़ामे "ख़न्दमा" में मुख़्तलिफ़ क़बाइल के औबाश को जम्अ़ किया था। इन लोगों ने हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ की फ़ौज में से दो आदमियों हज़रते करज़ बिन जाबिर फ़हरी और हुबैश बिन अश्अ़र رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا को शहीद कर दिया और इस्लामी लश्कर पर तीर बरसाना शुरूअ़ कर दिया। बुख़ारी की रिवायत में इन्ही दो हज़रात की शहादत का ज़िक्र है मगर ज़ुरक़ानी वग़ैरा किताबों से पता चलता है कि तीन सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُم को कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने क़त्ल कर दिया। दो वोह जो ऊपर ज़िक्र किये गए और एक हज़रते मुस्लिमा बिन अल मीला رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ और बारह या तेरह कुफ़्फ़ार भी मारे गए और बाक़ी मैदान छोड़ कर भाग निकले।[2] (بخاری ج۲ص۶۱۳وزرقانی ج۲ص۳۱۰)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब देखा कि तलवारें चमक रही हैं तो आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि मैं ने तो ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ को जंग करने से मन्अ़ कर दिया था। फिर

---

1 ……المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،باب غزوة الفتح الاعظم،ج۳،ص٤١٧۔٤٢٢ ملتقطاً

2 ……صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب اين ركز النبی صلى اللّٰه عليه وسلم...الخ، الحديث: ٤٢٨٠، ج۳، ص١٠١،١٠٢ وشرح الزرقانی على المواهب، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳، ص٤١٥،٤١٦ ملتقطاً

येह तलवारें कैसी चल रही हैं? लोगों ने अ़र्ज़ किया कि पहल कुफ़्फ़ार की तरफ़ से हुई है। इस लिये लड़ने के सिवा ह़ज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ की फ़ौज के लिये कोई चारए कार ही नहीं रह गया था। येह सुन कर इरशाद फ़रमाया कि क़ज़ाए इलाही येही थी और ख़ुदा ने जो चाहा वोही बेहतर है।[1] (زرقانی ج۲ص۳۱۰)

ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मक्का में दाख़िला

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब फ़ातेह़ाना ह़ैसिय्यत से मक्का में दाख़िल होने लगे तो आप अपनी ऊंटनी "क़स्वा" पर सुवार थे। एक सियाह रंग का इमामा बांधे हुए थे और बुख़ारी में है कि आप के सर पर "मिग़्फ़र" था। आप के एक जानिब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और दूसरी जानिब उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُمَا थे और आप के चारों त़रफ़ जोश में भरा हुवा और हथयारों में डूबा हुवा लश्कर था जिस के दरमियान को कुब्बए नबवी था। इस शानो शौकत को देख कर अबू सुफ़्यान ने ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ से कहा कि ऐ अ़ब्बास! तुम्हारा भतीजा तो बादशाह हो गया। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ ने जवाब दिया कि तेरा बुरा हो ऐ अबू सुफ़्यान! येह बादशाहत नहीं है बल्कि येह "नुबुव्वत" है। इस शाहाना जुलूस के जाहो जलाल के बा वुजूद शहनशाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने तवाज़ोअ़ का येह आ़लम था कि आप सूरए फ़त्ह़ की तिलावत फ़रमाते हुए इस त़रह़ सर झुकाए हुए ऊंटनी पर बैठे हुए थे कि आप का सर ऊंटनी के पालान से लग लग जाता था। आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की येह कैफ़िय्यते तवाज़ोअ़ ख़ुदा वन्दे कुद्दूस का शुक्र अदा करने और उस की बारगाहे अ़ज़मत में अपने इज्ज़ व नियाज़ मन्दी का इज़्हार करने के लिये थी।[2] (زرقانی ج۲ص۳۲۰و۳۲۱)

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳،ص۴۱۷

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳،ص۴۳۲،۴۳۴

मक्का में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ियाम गाह

बुख़ारी की रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़त्हे मक्का के दिन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बहन ह़ज़रते उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब के मकान पर तशरीफ़ ले गए और वहां ग़ुस्ल फ़रमाया फिर आठ रक्अ़त नमाज़े चाश्त पढ़ी। येह नमाज़ बहुत ही मुख़्तसर त़ौर पर अदा फ़रमाई लेकिन रुकूअ़ सज्दा मुकम्मल त़ौर पर अदा फ़रमाते रहे।[1] (بخاری ج۲ ص۶۱۵ باب منزل النبی یوم الفتح)

एक रिवायत में येह भी आया है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बीबी उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से फ़रमाया कि क्या घर में कुछ खाना भी है? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ख़ुश्क रोटी के चन्द टुकड़े हैं। मुझे बड़ी शर्म दामन गीर होती है कि इस को आप के सामने पेश कर दूं। इरशाद फ़रमाया कि "लाओ" फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से उन ख़ुश्क रोटियों को तोड़ा और पानी में भिगो कर नर्म किया और ह़ज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने उन रोटियों के सालन के लिये नमक पेश किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क्या कोई सालन घर में नहीं है? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि मेरे घर में "सिर्का" के सिवा कुछ भी नहीं है। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "सिर्का" लाओ। आप ने सिर्का को रोटी पर डाला और तनावुल फ़रमा कर ख़ुदा का शुक्र बजा लाए। फिर फ़रमाया कि "सिर्का बेहतरीन सालन है और जिस घर में सिर्का होगा उस घर वाले मोह़ताज न होंगे।" फिर ह़ज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने ह़ारिस बिन हिशाम (अबू जहल के भाई) और ज़ुहैर बिन उमय्या को अमान दे दी है। लेकिन मेरे

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب منزل النبی صلی اللّٰہ علیہ و سلم یوم الفتح، الحدیث:۴۲۹۲، ج۳، ص۱۰۴

भाई ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہُ उन दोनों को इस जुर्म में क़त्ल करना चाहते हैं कि इन दोनों ने ह़ज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہُ की फ़ौज से जंग की है तो **हुज़ूर** صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ उम्मे हानी ! رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہا जिस को तुम ने अमान दे दी उस के लिये हमारी त़रफ़ से भी अमान है ।[1] (زرقانی ج۲ص۳۲۶)

बैतुल्लाह में दाख़िला

हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का झन्डा "ह़जून" में जिस को आज कल जन्नतुल मअ़ला कहते हैं "मस्जिदुल फ़त्ह़" के क़रीब में गाड़ा गया फिर आप अपनी ऊंटनी पर सुवार हो कर और ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہُ को ऊंटनी पर अपने पीछे बिठा कर मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ रवाना हुए और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہُ और का'बा के कलीद बरदार उ़समान बिन त़ल्ह़ा भी आप के साथ थे । आप ने मस्जिदे ह़राम में अपनी ऊंटनी को बिठाया और का'बे का त़वाफ़ किया और ह़जरे अस्वद को बोसा दिया ।[2] (بخاری ج۲ص۶۱۴وغیرہ)

येह इन्क़िलाबे ज़माना की एक ह़ैरत अंगेज़ मिसाल है कि ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जिन का लक़ब "बुत शिकन" है उन की यादगार ख़ानए का'बा के अन्दरूने ह़िसार तीन सो साठ बुतों की क़ित़ार थी । फ़ातेह़े मक्का صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ज़रते ख़लील عَلَيْهِ السَّلَام का जा नशीने जलील होने की ह़ैसिय्यत से फ़र्ज़े अव्वलीन था कि यादगारे ख़लील को बुतों की नजिस और गन्दी आलाइशों से पाक करें । चुनान्चे आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद ब नफ़्से नफ़ीस एक छड़ी ले कर खड़े हुए और इन बुतों को छड़ी की नोक से ठोंके मार मार कर गिराते जाते थे

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳،ص٤٦٤

2 ......صحيح البخاری، کتاب المغازی،باب دخول النبی صلی اللّٰه عليه و سلم من اعلی مكة،الحديث:٤٢٨٩، ج۳،ص١٠٤

और جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝[1] की आयत तिलावत फ़रमाते जाते थे, या'नी हक़ आ गया और बातिल मिट गया और बातिल मिटने ही की चीज़ थी।[2] (بخاری ج۲ ص۶۱۴ فتح مکہ وغیرہ)

फिर उन बुतों को जो ऐन का'बे के अन्दर थे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि वोह सब निकाले जाएं। चुनान्चे वोह सब बुत निकाल बाहर किये गए। उन्ही बुतों में हज़रते इब्राहीम व हज़रते इस्माईल علیہما السلام के मुजस्समे भी थे जिन के हाथों में फ़ाल खोलने के तीर थे। आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को देख कर फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला इन काफ़िरों को मार डाले। इन काफ़िरों को ख़ूब मा'लूम है कि इन दोनों पैग़म्बरों ने कभी भी फ़ाल नहीं खोला। जब तक एक एक बुत का'बे के अन्दर से न निकल गया, आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने का'बे के अन्दर क़दम नहीं रखा जब तमाम बुतों से का'बा पाक हो गया तो आप अपने साथ हज़रते उसामा बिन ज़ैद और हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और उ़समान बिन त़ल्हा **ह़जबी** को ले कर ख़ानए का'बा के अन्दर तशरीफ़ ले गए और बैतुल्लाह शरीफ़ के तमाम गोशों में तक्बीर पढ़ी और दो रक्अ़त नमाज़ भी अदा फ़रमाई इस के बा'द बाहर तशरीफ़ लाए।[3]

(بخاری ج۱ ص۲۱۸ باب من کبر فی نواحی الکعبۃ و بخاری ج۲ ص۶۱۴ فتح مکہ وغیرہ)

---

1 ......پ ۱۵، بنی اسراء یل: ۸۱

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب این رکز النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم الرایۃ...الخ، الحدیث: ۴۲۸۷، ج۳، ص ۱۰۳

3 ......صحیح البخاری، کتاب الصلوۃ، باب قول اللّٰہ تعالٰی واتخذوا...الخ، الحدیث: ۳۹۷، ج۱، ص۱۵۶ وصحیح البخاری، کتاب المغازی، باب این رکز النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، الحدیث: ۴۲۸۸، ج۳، ص۱۰۳

का'बए मुक़द्दसा के अन्दर से जब आप बाहर निकले तो ड़समान बिन त़ल्ह़ा को बुला कर का'बे की कुन्जी उन के हाथ में अ़त़ा फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि

خُذُوْهَا خَالِدَةً تَالِدَةً لَايَنْزِعُهَا مِنْكُمْ اِلَّا ظَالِمٌ

लो येह कुन्जी हमेशा हमेशा के लिये तुम लोगों में रहेगी येह कुन्जी तुम से वोही छीनेगा जो ज़ालिम होगा।[1] (زرقانی ج۲ص۲۳۹)

शहनशाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दरबारे आ़म

इस के बा'द ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने शहनशाहे इस्लाम की हैसिय्यत से ह़रमे इलाही में सब से पहला दरबारे आ़म मुन्अ़क़िद फ़रमाया जिस में अफ़्वाजे इस्लाम के इ़लावा हज़ारों कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के ख़वास व अ़वाम का एक ज़बर दस्त इज़्दिह़ाम था। इस शहनशाही ख़ुत़्बे में आप ने सिर्फ़ अहले मक्का ही से नहीं बल्कि तमाम अक़्वामे आ़लम से ख़ित़ाबे आ़म फ़रमाते हुए येह इरशाद फ़रमाया कि

"एक ख़ुदा के सिवा कोई मा'बूद नहीं। उस का कोई शरीक नहीं। उस ने अपना वा'दा सच कर दिखाया। उस ने अपने बन्दे (हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की मदद की और कुफ़्फ़ार के तमाम लश्करों को तन्हा शिकस्त दे दी, तमाम फ़ख़्र की बातें, तमाम पुराने ख़ूनों का बदला, तमाम पुराने ख़ूनबहा, और जाहिलिय्यत की रस्में सब मेरे पैरों के नीचे हैं। सिर्फ़ का'बा की तौलियत और हुज्जाज को पानी पिलाना, येह दो ए'ज़ाज़ इस से मुस्तसना हैं। ऐ क़ौमे क़ुरैश ! अब जाहिलिय्यत का ग़ुरूर और ख़ानदानों का इफ़्तिख़ार ख़ुदा ने मिटा दिया। तमाम लोग ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की नस्ल से हैं और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام मिट्टी से बनाए गए हैं।"

[1] ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳،ص۴٦۹۔۴۷۰

इस के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुरआने मजीद की येह आयत तिलावत फ़रमाई जिस का तर्जमा येह है :

ऐ लोगो ! हम ने तुम को एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया और तुम्हारे लिये क़बीले और ख़ानदान बना दिये ताकि तुम आपस में एक दूसरे की पहचान रखो लेकिन ख़ुदा के नज़्दीक सब से ज़ियादा शरीफ़ वोह है जो सब से ज़ियादा परहेज़ गार है । यक़ीनन अल्लाह तआ़ला बड़ा जानने वाला और ख़बर रखने वाला है ।[1]

बेशक अल्लाह ने शराब की ख़रीद व फ़रोख़्त को ह़राम फ़रमा दिया है ।[2] (سیرت ابن ہشام ج۲ص۴۱۲مختصراً و بخاری وغیرہ)

कुफ़्फ़ारे मक्का से ख़िताब

इस के बा'द शहनशाहे कौनैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस हज़ारों के मज्मअ़ में एक गहरी निगाह डाली तो देखा कि सर झुकाए, निगाहें नीची किये हुए लरज़ां व तरसां अशराफ़े कुरैश खड़े हुए हैं । उन ज़ालिमों और जफ़ाकारों में वोह लोग भी थे जिन्हों ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रास्तों में कांटे बिछाए थे । वोह लोग भी थे जो बारहा आप पर पथ्थरों की बारिश कर चुके थे । वोह ख़ूंख़ार भी थे जिन्हों ने बार बार आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ातिलाना ह़म्ले किये थे । वोह बे रह़म व बे दर्द भी थे जिन्हों ने आप के दन्दाने मुबारक को शहीद और आप के चेहरए अन्वर को लहू लुहान कर डाला था । वोह औबाश भी थे जो बरसहा बरस तक अपनी बोहतान तराशियों और शर्मनाक गालियों से आप

---

1 ......پ۲٦،الحجرٰت:۱۳

2 ......السيرة النبوية لابن هشام، باب دخول الرسول الحرم،ص٤٧٣ و صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب ٥٥، الحديث:٤٢٩٦، ج٣،ص١٠٦

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक को ज़ख़्मी कर चुके थे। वोह सफ़्फ़ाक व दरिन्दा सिफ़त भी थे जो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के गले में चादर का फन्दा डाल कर आप का गला घोंट चुके थे। वोह ज़ुल्मो सितम के मुजस्समे और पाप के पुतले भी थे जिन्हों ने आप की साहिब ज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا को नेज़ा मार कर ऊंट से गिरा दिया था और उन का ह़म्ल साक़ित़ हो गया था। वोह आप के ख़ून के प्यासे भी थे जिन की तिश्ना लबी और प्यास ख़ूने नुबुव्वत के सिवा किसी चीज़ से नहीं बुझ सकती थी। वोह जफ़ाकार व ख़ूंख़ार भी थे जिन के जारिह़ाना ह़म्लों और ज़ालिमाना यलग़ार से बार बार मदीनए मुनव्वरा के दरो दीवार दहल चुके थे। **ह़ुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे चचा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के क़ातिल और उन की नाक, कान काटने वाले, उन की आंखें फोड़ने वाले, उन का जिगर चबाने वाले भी उस मज्मअ़ में मौजूद थे वोह सितम गार जिन्हों ने शमए़ नुबुव्वत के जां निसार परवानों ह़ज़रते बिलाल, ह़ज़रते सुहैब, ह़ज़रते अ़म्मार, ह़ज़रते ख़ब्बाब, ह़ज़रते ख़ुबैब, ह़ज़रते ज़ैद बिन दसिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم वग़ैरा को रस्सियों से बांध बांध कर कोड़े मार मार कर जलती हुई रैतों पर लिटाया था, किसी को आग के दहकते हुए कोइलों पर सुलाया था, किसी को चटाइयों में लपेट लपेट कर नाकों में धूएं दिये थे, सेंकड़ों बार गला घोंटा था येह तमाम जोरो जफ़ा और ज़ुल्म व सितम गारी के पैकर, जिन के जिस्म के रोंगटे रोंगटे और बदन के बाल बाल ज़ुल्म व उ़दवान और सरकशी व त़ुग़यान के वबाल से ख़ौफ़नाक जुर्मों और शर्मनाक मज़ालिम के पहाड़ बन चुके थे। आज येह सब के सब दस बारह हज़ार मुहाजिरीन व अन्सार के लश्कर की ह़िरासत में मुजरिम बने हुए खड़े कांप रहे थे और अपने दिलों में येह सोच रहे थे कि शायद आज हमारी लाशों को कुत्तों से नुचवा कर हमारी बोटियां चीलों और कव्वों को खिला दी जाएंगी और अन्सार व मुहाजिरीन की ग़ज़ब नाक फ़ौजें हमारे बच्चे बच्चे को ख़ाक व ख़ून में मिला कर हमारी नस्लों

को नेस्तो नाबूद कर डालेंगी और हमारी बस्तियों को ताख़्त व ताराज कर के तहस नहस कर डालेंगी उन मुजरिमों के सीनों में ख़ौफ़ व हिरास का तूफ़ान उठ रहा था। दहशत और डर से उन के बदनों की बोटी बोटी फड़क रही थी, दिल धड़क रहे थे, कलेजे मुंह में आ गए थे और आ़लमे यास में उन्हें ज़मीन से आस्मान तक धूएं ही धूएं के ख़ौफ़नाक बादल नज़र आ रहे थे। इसी मायूसी और ना उम्मीदी की ख़त़रनाक फ़ज़ा में एक दम शहनशाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे रह़मत उन पापियों की त़रफ़ मुतवज्जेह हुई। और उन मुजरिमों से आप ने पूछा कि

"बोलो ! तुम को कुछ मा'लूम है ? कि आज मैं तुम से क्या मुआ़मला करने वाला हूं।"

इस दहशत अंगेज़ और ख़ौफ़नाक सुवाल से मुजरिमीन ह़वास बाख़्ता हो कर कांप उठे लेकिन जबीने रह़मत के पैग़म्बराना तेवर को देख कर उम्मीदो बीम के मह़शर में लरज़ते हुए सब यक ज़बान हो कर बोले कि اَخٌ كَرِيْمٌ وَابْنُ اَخٍ كَرِيْمٍ आप करम वाले भाई और करम वाले बाप के बेटे हैं।

सब की ललचाई हुई नज़रें जमाले नुबुव्वत का मुंह तक रही थीं। और सब के कान शहनशाहे नुबुव्वत का फ़ैसला कुन जवाब सुनने के मुन्तज़िर थे कि इक दम दफ़अ़तन फ़ातेह़े मक्का ने अपने करीमाना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि

لَاتَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ فَاذْهَبُوْا اَنْتُمُ الطُّلَقَآءُ(1) (زرقانی ج۲ص ۳۲۸)

आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।

बिल्कुल ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ त़ौर पर एक दम अचानक येह फ़रमाने रिसालत सुन कर सब मुजरिमों की आंखें फ़र्ते नदामत से अश्कबार हो

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳، ص۴۴۹

गई और उन के दिलों की गहराइयों से जज़्बाते शुक्रिया के आसार आंसूओं की धार बन कर उन के रुख़्सारों पर मचलने लगे और कुफ़्फ़ार की ज़बानों पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के ना'रों से ह़रमे का'बा के दरो दीवार पर हर त़रफ़ अन्वार की बारिश होने लगी। ना गहां बिल्कुल ही अचानक और दफ़्अ़तन एक अ़जीब इन्क़िलाब बरपा हो गया कि समां ही बदल गया, फ़ज़ा ही पलट गई और एक दम ऐसा मह़सूस होने लगा कि

जहां तारीक था, बे नूर था और सख़्त काला था
कोई पर्दे से क्या निकला की घर घर में उजाला था

कुफ़्फ़ार ने मुहाजिरीन की जाएदादों, मकानों, दुकानों पर ग़ासिबाना क़ब्ज़ा जमा लिया था। अब वक़्त था कि मुहाजिरीन को उन के हुक़ूक़ दिलाए जाते और उन सब जाएदादों, मकानों, दुकानों और सामानों को मक्का के ग़ासिबों के क़ब्ज़ों से वा गुज़ार कर के मुहाजिरीन के सिपुर्द किये जाते। लेकिन शहनशाहे रिसालत ने मुहाजिरीन को हुक्म दे दिया कि वोह अपनी कुल जाएदादें ख़ुशी ख़ुशी मक्का वालों को हिबा कर दें।

اَللّٰهُ اَكْبَر ! ऐ अक़्वामे आ़लम की तारीख़ी दास्तानो ! बताओ क्या दुन्या के किसी फ़ातेह़ की किताबे ज़िन्दगी में कोई ऐसा ह़सीन व ज़र्रीं वरक़ है ? ऐ धरती ! ख़ुदा के लिये बता ? ऐ आस्मान ! लिल्लाह बोल। क्या तुम्हारे दरमियान कोई ऐसा फ़ातेह़ गुज़रा है ? जिस ने अपने दुश्मनों के साथ ऐसा हुस्ने सुलूक किया हो ? ऐ चांद और सूरज की चमकती और दूरबीन निगाहो ! क्या तुम ने लाखों बरस की गर्दिशे लैलो नहार में कोई ऐसा ताजदार देखा है ? तुम इस के सिवा और क्या कहोगे ? कि येह नबी जमाल व जलाल का वोह बे मिसाल शाहकार है कि शाहाने आ़लम के लिये इस का तसव्वुर भी मुह़ाल है। इस लिये हम तमाम दुन्या को चेंलेन्ज के साथ दा'वते नज़ारा देते हैं कि

चश्मे अक़्वामे येह नज़ारा अबद तक देखे
रिफ़्अ़ते शाने رَفَعْنَا لَکَ ذِکْرَکَ देखे

दूसरा ख़ुत़्बा

फ़त्हे मक्का के दूसरे दिन भी आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ख़ुत़्बा दिया जिस में ह़रमे का'बा के अह़्काम व आदाब की ता'लीम दी कि ह़रम में किसी का ख़ून बहाना, जानवरों का मारना, शिकार करना, दरख़्त काटना, इज़्ख़िर के सिवा कोई घास काटना ह़राम है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने घड़ी भर के लिये अपने रसूल عَلَیْہِ السَّلَام को ह़रम में जंग करने की इजाज़त दी फिर क़ियामत तक के लिये किसी को ह़रम में जंग की इजाज़त नहीं है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस को ह़रम बना दिया है। न मुझ से पहले किसी के लिये इस शहर में ख़ूंरेज़ी ह़लाल की गई न मेरे बा'द क़ियामत तक किसी के लिये ह़लाल की जाएगी।[1] (بخاری ج۲ص۶۱۷فتح مکہ)

अन्सार को फ़िराक़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का डर

अन्सार ने क़ुरैश के साथ जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस करीमाना ह़ुस्ने सुलूक को देखा और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ दिनों तक मक्का में ठहर गए तो अन्सार को येह ख़त़रा लाह़िक़ हो गया कि शायद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर अपनी क़ौम और वत़न की मह़ब्बत ग़ालिब आ गई है कहीं ऐसा न हो कि आप मक्का में इक़ामत फ़रमा लें और हम लोग आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दूर हो जाएं जब **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अन्सार के इस ख़याल की इत्तिलाअ़ हुई तो आप ने फ़रमाया कि مَعَاذَاللّٰہ ! ऐ अन्सार !

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ٥٥، الحدیث:٤٣١٣، ص١١٠ والسیرۃ النبویۃ لابن ھشام، باب دخول الرسول صلی اللّٰہ علیہ وسلم الحرم، ص٤٧٤ والمواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی، باب غزوۃ الفتح الاعظم، ج٣، ص٤٤٧

اَلْمَحْيَا مَحْيَاكُمْ وَالْمَمَاتُ مَمَاتُكُمْ [1] (سیرت ابن ہشام ج۲ ص۴۱۶)

अब तो हमारी ज़िन्दगी और वफ़ात तुम्हारे ही साथ है।

येह सुन कर फ़र्ते मसर्रत से अन्सार की आंखों से आंसू जारी हो गए और सब ने कहा कि या रसूलल्लाह (صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! हम लोगों ने जो कुछ दिल में ख़याल किया या ज़बान से कहा इस का सबब आप की ज़ाते मुक़द्दसा के साथ हमारा जज़्बए इश्क़ है। क्यूं कि आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की जुदाई का तसव्वुर हमारे लिये ना क़ाबिले बरदाश्त हो रहा था।[2] (زرقانی ج۲ ص۳۳۳ وسیرت ابن ہشام ج۲ ص۴۱۶)

का'बे की छत पर अज़ान

जब नमाज़ का वक़्त आया तो हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया कि का'बे की छत पर चढ़ कर अज़ान दें। जिस वक़्त اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ की ईमान अफ़रोज़ सदा बुलन्द हुई तो ह़रम के ह़िसार और का'बे के दरो दीवार पर ईमानी ज़िन्दगी के आसार नुमूदार हो गए मगर मक्का के वोह नौ मुस्लिम जो अभी कुछ ठन्डे पड़ गए थे अज़ान की आवाज़ सुन कर उन के दिलों में ग़ैरत की आग फिर भड़क उठी। चुनान्चे रिवायत है कि ह़ज़रते इताब बिन उसैद ने कहा कि खुदा ने मेरे बाप की लाज रख ली कि इस आवाज़ को सुनने से पहले ही उस को दुन्या से उठा लिया और एक दूसरे सरदारे कुरैश के मुंह से निकला कि "अब जीना बेकार है।"[3] (اصابہ تذکرہ عتاب بن اسید ج۲ ص۴۵۱ وزرقانی ج۲ ص۳۴۶)

मगर इस के बा'द हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैज़े सोह़बत से ह़ज़रते इताब बिन उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दिल में नूरे ईमान का सूरज

---

1 ...... السيرة النبوية لابن هشام،باب تعظيم الاصنام،ص ٤٧٥

2 ...... شرح الزرقاني على المواهب،باب غزوة الفتح الاعظم،ج٣،ص ٤٥٩

3 ...... شرح الزرقاني على المواهب، باب غزوة الفتح الاعظم، ج٣،ص ٤٨٤

चमक उठा और वोह सादिक़ुल ईमान मुसलमान बन गए। चुनान्चे मक्का से रवाना होते वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्ही को मक्के का हाकिम बना दिया।[1] (سیرت ابن ہشام ج۲ص۴۱۳و ص۴۴۰)

बैअ़ते इस्लाम

इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कोहे सफ़ा की पहाड़ी के नीचे एक बुलन्द मक़ाम पर बैठे और लोग जूक़ दर जूक़ आ कर आप के दस्ते ह़क़ परस्त पर इस्लाम की बैअ़त करने लगे। मर्दों की बैअ़त ख़त्म हो चुकी तो औ़रतों की बारी आई। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर बैअ़त करने वाली औ़रत से जब वोह तमाम शराइत़ का इक़रार कर लेती तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस से फ़रमा देते थे कि "قَدْ بَایَعْتُكِ" मैं ने तुझ से बैअ़त ले ली। ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا का बयान है कि ख़ुदा की क़सम ! आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ ने बैअ़त के वक़्त किसी औ़रत के हाथ को नहीं छुवा। सिर्फ़ कलाम ही से बैअ़त फ़रमा लेते थे।[2] (بخاری ج۱ص۳۷۵کتاب الشروط)

इन्ही औ़रतों में निक़ाब ओढ़ कर हिन्द बिन्ते उ़त्बा बिन रबीआ़ भी बैअ़त के लिये आईं जो ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की बीवी और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा हैं। येह वोही हिन्द हैं जिन्हों ने जंगे उहुद में ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का शिकम चाक कर के उन के जिगर को निकाल कर चबा डाला था और उन के कान, नाक को काट कर और आंख को निकाल कर एक धागे में पिरो कर गले का हार

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،باب دخول الرسول صلى الله عليه وسلم الحرم،ص٤٧٤ ملخصاً
والمواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب غزوة حنين، ج٣،ص٤٩٨ ملخصاً

2 ......صحيح البخاري، كتاب الشروط، باب مايجوز من الشروط...الخ، الحديث: ٢٧١٣، ج٢، ص٢١٧ ملخصاً

बनाया था। जब येह बैअ़त के लिये आईं तो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से निहायत दिलेरी के साथ गुफ़्त्गू की। उन का मुकालमा ह़स्बे ज़ैल है।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम ख़ुदा के साथ किसी को शरीक मत करना।

हिन्द बिन्ते उ़त्बा : येह इक़रार आप ने मर्दों से तो नहीं लिया लेकिन बहर ह़ाल हम को मंज़ूर है।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : चोरी मत करना।

हिन्द बिन्ते उ़त्बा : मैं अपने शोहर (अबू सुफ़्यान) के माल में से कुछ ले लिया करती हूं। मा'लूम नहीं येह भी जाइज़ है या नहीं ?

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : अपनी औलाद को क़त्ल न करना।

हिन्द बिन्ते उ़त्बा : हम ने तो बच्चों को पाला था और जब वोह बड़े हो गए तो आप ने जंगे बद्र में उन को मार डाला। अब आप जानें और वोह जानें।[1]

(طبری ج۳ص۱۶۴۳مختصراً)

बहर ह़ाल ह़ज़रते अबू सुफ़्यान और उन की बीवी हिन्द बिन्ते उ़त्बा दोनों मुसलमान हो गए (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُمَا) लिहाज़ा इन दोनों के बारे में बद गुमानी या इन दोनों की शान में बद ज़बानी रवाफ़िज़ का मज़हब है। अहले सुन्नत के नज़दीक इन दोनों का शुमार सह़ाबा और सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُم اَجْمَعِيْن की फ़ेहरिस्त में है।

1 ......تاریخ الطبری،الجزء۲،ص۳۷۔۳۸،مختصراً۔المکتبۃ الشاملۃ

इब्तिदा में गो इन दोनों के ईमान में कुछ तज़ब्ज़ुब रहा हो मगर बा'द में येह दोनों सादिक़ुल ईमान मुसलमान हो गए और ईमान ही पर इन दोनों का ख़ातिमा हुवा। (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُمَا)

हज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا का बयान है कि हिन्द बिन्ते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا बारगाहे नुबुव्वत में आई और येह अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! रूए ज़मीन पर आप के घर वालों से ज़ियादा किसी घर वाले का ज़लील होना मुझे मह़बूब न था। मगर अब मेरा येह ह़ाल है कि रूए ज़मीन पर आप के घर वालों से ज़ियादा किसी घर वाले का इ़ज़्ज़त दार होना मुझे पसन्द नहीं।[1] (بخاری ج۱ص۵۳۹باب ذکر ہند بنت عتبہ)

इसी त़रह़ हज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के बारे में मुह़द्दिस इब्ने अ़साकिर की एक रिवायत है कि येह मस्जिदे ह़राम में बैठे हुए थे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सामने से निकले तो इन्हों ने अपने दिल में येह कहा कि कौन सी त़ाक़त इन के पास ऐसी है कि येह हम पर ग़ालिब रहते हैं तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के दिल में छुपे हुए ख़याल को जान लिया और क़रीब आ कर आप ने उन के सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया कि हम ख़ुदा की त़ाक़त से ग़ालिब आ जाते हैं। येह सुन कर इन्हों ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि ''मैं शहादत देता हूं कि बेशक आप **अल्लाह** के रसूल हैं।'' और मुह़द्दिस ह़ाकिम और इन के शागिर्द इमाम बैहक़ी ने हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُمَا से येह रिवायत की है कि हज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देख कर अपने दिल में कहा कि ''काश! मैं एक फ़ौज जम्अ़ कर के दोबारा इन से जंग करता'' इधर इन के दिल में येह ख़याल आया ही था कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आगे बढ़ कर इन के सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया कि ''अगर तू ऐसा करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला तुझे ज़लीलो ख़्वार कर देगा।'' येह सुन कर

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ذکر ھند بنت عتبۃ بن ربیعۃ رضی اللّٰہ تعالٰی عنھا، الحدیث:۳۸۲۵، ج۲، ص۵۶۷

हज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तौबा व इस्तिग़फ़ार करने लगे और अ़र्ज़ किया कि मुझे इस वक़्त आप की नुबुव्वत का यक़ीन हो गया क्यूं कि आप ने मेरे दिल में छुपे हुए ख़याल को जान लिया।[1] (زرقانی ج۲ص۳۴۶)

येह भी रिवायत है कि जब सब से पहले हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन पर इस्लाम पेश फ़रमाया था तो इन्हों ने कहा था कि मैं अपने मा'बूद उ़ज़्ज़ा को क्या करूंगा ? तो हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बर जस्ता फ़रमाया था कि "तुम उ़ज़्ज़ा पर पाख़ाना फिर देना" चुनान्चे हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब उ़ज़्ज़ा को तोड़ने के लिये हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को रवाना फ़रमाया तो साथ में हज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को भी भेजा और इन्हों ने अपने हाथ से अपने मा'बूद उ़ज़्ज़ा को तोड़ डाला। येह मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ की रिवायत है और इब्ने हिशाम की रिवायत येह है कि उ़ज़्ज़ा को हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने तोड़ा था।[2] واللّٰہ اعلم (زرقانی ج۲ص۳۴۹)

बुत परस्ती का ख़ातिमा

गुज़श्ता अवराक़ में हम तह़रीर कर चुके कि ख़ानए का'बा के तमाम बुतों और दीवारों की तसावीर को तोड़ फोड़ कर और मिटा कर मक्का को तो हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बुत परस्ती की ला'नत से पाक कर ही दिया था लेकिन मक्का के अत़राफ़ में भी बुत परस्ती के चन्द मराकिज़ थे या'नी लात, मनात, सवाअ़, उ़ज़्ज़ा येह चन्द बड़े बड़े बुत थे जो मुख़्तलिफ़ क़बाइल के मा'बूद थे। हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के लश्करों को भेज कर इन सब बुतों को तोड़ फोड़ कर बुत परस्ती के सारे त़िलिस्म को तहस नहस कर दिया और मक्का नीज़ इस के अत़राफ़ व जवानिब के तमाम बुतों को नेस्तो नाबूद कर दिया।[3] (زرقانی ج۲ص۳۴۹)

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ الفتح الاعظم، ج۳،ص۴۸۵

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب، باب ھدم مناۃ، ج۳،ص۴۸۷۔۴۹۱

3 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی، ھدم العزیٰ وسواع ومناۃ، ج۳،ص۴۸۷۔۴۹۰

इसी त़रह़ बानिये का'बा ह़ज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जा नशीन **हुज़ूर** रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मूरिसे आ'ला के मिशन को मुकम्मल फ़रमा दिया और दर ह़क़ीक़त फ़त्ह़े मक्का का सब से बड़ा येही मक़्सद था कि शिर्क व बुत परस्ती का ख़ातिमा और तौह़ीदे ख़ुदा वन्दी का बोलबाला हो जाए। चुनान्चे येह अ़ज़ीम मक़्सद बि ह़म्दिही तआ़ला ब दरजए अतम ह़ासिल हो गया कि

آنجا کہ بود نعرہ کفار و مشرکاں　　　اکنوں خروش نعرہ اللہ اکبر است

चन्द ना क़ाबिले मुआ़फ़ी मुजरिमीन

जब मक्का फ़त्ह़ हो गया तो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने आ़म मुआ़फ़ी का ए'लान फ़रमा दिया। मगर चन्द ऐसे मुजरिमीन थे जिन के बारे में ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमान जारी फ़रमा दिया कि येह लोग अगर इस्लाम न क़बूल करें तो येह लोग जहां भी मिलें क़त्ल कर दिये जाएं ख़्वाह वोह ग़िलाफ़े का'बा ही में क्यूं न छुपे हों। इन मुजरिमों में से बा'ज़ ने तो इस्लाम क़बूल कर लिया और बा'ज़ क़त्ल हो गए उन में से चन्द का मुख़्तसर तज़्किरा तह़रीर किया जाता है :

﴾1﴿ "अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन ख़त़ल" येह मुसलमान हो गया था इस को **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़कात के जानवर वुसूल करने के लिये भेजा और साथ में एक दूसरे मुसलमान को भी भेज दिया। किसी बात पर दोनों में तकरार हो गई तो इस ने मुसलमान को क़त्ल कर दिया और क़िसास के डर से तमाम जानवरों को ले कर मक्का भाग निकला और मुर्तद हो गया। फ़त्ह़े मक्का के दिन येह भी एक नेज़ा ले कर मुसलमानों से लड़ने के लिये घर से निकला था। लेकिन मुस्लिम अफ़्वाज का जलाल देख कर कांप उठा और नेज़ा फेंक कर भागा और का'बे के पर्दों में छुप गया। ह़ज़रते सईद बिन ह़रीस मख़्ज़ूमी और अबू बरज़ा अस्लमी رَضِىَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने मिल कर इस को क़त्ल कर दिया।[1] (زرقانی ج۲ص۳۲۲)

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب هفتم ، ج۲،ص۲۹۶

﴾2﴿ "हुवैरस बिन नक़ीद" येह शाइ़र था और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हिजू लिखा करता था और ख़ूनी मुजरिम भी था। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इस को क़त्ल किया।

﴾3﴿ "मुक़ीस बिन सबाबा" इस को नमीला बिन अ़ब्दुल्लाह ने क़त्ल किया। येह भी ख़ूनी था।

﴾4﴿ "ह़ारिस बिन त़लात़ला" येह भी बड़ा ही मूज़ी था। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इस को क़त्ल किया।

﴾5﴿ "क़ुरैबा" येह इब्ने ख़त़ल की लौंडी थी। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हिजू गाया करती थी। येह भी क़त्ल की गई।[1]

मक्का से फ़िरार हो जाने वाले

चार अश्ख़ास मक्का से भाग निकले थे उन लोगों का मुख़्तसर तज़्किरा येह है :

﴾1﴿ "इ़करिमा बिन अबी जहल" येह अबू जहल के बेटे हैं। इस लिये इन की इस्लाम दुश्मनी का क्या कहना? येह भाग कर यमन चले गए लेकिन इन की बीवी "उम्मे ह़कीम" जो अबू जहल की भतीजी थीं इन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया और अपने शोहर इ़करिमा के लिये बारगाहे रिसालत में मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त पेश की। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुआ़फ़ फ़रमा दिया। उम्मे ह़कीम ख़ुद यमन गईं और मुआ़फ़ी का ह़ाल बयान किया। इ़करिमा ह़ैरान रह गए और इनतिहाई तअ़ज्जुब के साथ कहा कि क्या मुझ को मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने मुआ़फ़ कर दिया! बहर ह़ाल अपनी बीवी के साथ बारगाहे रिसालत में मुसलमान हो कर ह़ाज़िर हुए हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब इन को देखा तो बेह़द ख़ुश हुए और इस तेज़ी से इन की त़रफ़ बढ़े कि जिस्मे अत़हर से चादर गिर पड़ी। फिर ह़ज़रते इ़करिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ख़ुशी ख़ुशी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़ते इस्लाम की।[1] (موطا امام مالک کتاب النکاح وغیرہ)

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب هفتم، ج۲،ص۳۰۰،۳۰۴ ملخصاً

﴾2﴿ "सफ़्वान बिन उमय्या" येह उमय्या बिन ख़लफ़ के फ़रज़न्द हैं। अपने बाप उमय्या ही की त़रह़ येह भी इस्लाम के बहुत बड़े दुश्मन थे। फ़त्ह़े मक्का के दिन भाग कर जद्दा चले गए। ह़ज़रते उ़मैर बिन वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने दरबारे रिसालत में इन की सिफ़ारिश पेश की और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! कुरैश का एक रईस सफ़्वान मक्का से जिला वत़न हुवा चाहता है। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को भी मुआ़फ़ी अ़त़ा फ़रमा दी और अमान के निशान के त़ौर पर ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को अपना इमामा इनायत फ़रमाया। चुनान्चे वोह मुक़द्दस इमामा ले कर "जद्दा" गए और सफ़्वान को मक्का ले कर आए सफ़्वान जंगे हुनैन तक मुसलमान नहीं हुए। लेकिन इस के बा'द इस्लाम क़बूल कर लिया।[2] (طبری ج۳ص۱۴۵)

﴾3﴿ "का'ब बिन ज़ुहैर" येह सि. 9 हि. में अपने भाई के साथ मदीना आ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मद्ह़ में अपना मशहूर क़सीदा "बि अन्त सआ़द" पढ़ा। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुश हो कर इन को अपनी चादरे मुबारक इनायत फ़रमाई। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की येह चादरे मुबारक ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के पास थी। ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अपने दौरे सल्त़नत में इन को दस हज़ार दिरहम पेश किया कि येह मुक़द्दस चादर हमें दे दो। मगर इन्हों ने साफ़ इन्कार कर दिया और फ़रमाया कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की येह चादरे मुबारक हरगिज़ हरगिज़ किसी को नहीं दे सकता। लेकिन आख़िर ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुहैर

---

1 ......الموطاء للامام مالك، كتاب النكاح، باب نكاح المشرك اذا اسلمت زوجته قبله، الحديث:١١٨٠، ج٢، ص٩٤ وشرح الزرقاني على المواهب، باب غزوة الفتح الاعظم، ج٣، ص٤٢٤، ٤٢٥ ملخصاً

2 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب هفتم، ج٢، ص٢٩٩ ملخصاً

رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की वफ़ात के बा'द इन के वारिसों को बीस हज़ार दिरहम दे कर वोह चादर ले ली और अ़र्सए दराज़ तक वोह चादर सलातीने इस्लाम के पास एक मुक़द्दस तबर्रुक बन कर बाक़ी रही।[1] (مدارج ج۲ص۳۳۸)

《4》 "वह़्शी" येही वोह वह़्शी हैं जिन्हों ने जंगे उहुद में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को शहीद कर दिया था। येह भी फ़त्ह़े मक्का के दिन भाग कर त़ाइफ़ चले गए थे मगर फिर त़ाइफ़ के एक वफ़्द के हमराह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर मुसलमान हो गए। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की ज़बान से अपने चचा के क़त्ल की ख़ूनी दास्तान सुनी और रन्जो ग़म में डूब गए मगर इन को भी आप ने मुआ़फ़ फ़रमा दिया। लेकिन येह फ़रमाया कि वह़्शी ! तुम मेरे सामने न आया करो। ह़ज़रते वह़्शी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इस का बेह़द मलाल रहता था। फिर जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िलाफ़त के ज़माने में मुसैलमतुल कज़्ज़ाब ने नुबुव्वत का दा'वा किया और लश्करे इस्लाम ने इस मलऊ़न से जिहाद किया तो ह़ज़रते वह़्शी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ भी अपना नेज़ा ले कर जिहाद में शामिल हुए और मुसैलमतुल कज़्ज़ाब को क़त्ल कर दिया। ह़ज़रते वह़्शी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपनी ज़िन्दगी में कहा करते थे कि قَتَلْتُ خَیْرَ النَّاسِ فِی الْجَاهِلِیَّةِ وَقَتَلْتُ شَرَّ النَّاسِ فِی الْاِسْلَامِ या'नी मैं ने दौरे जाहिलिय्यत में बेहतरीन इन्सान (ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) को क़त्ल किया और अपने दौरे इस्लाम में बद तरीन आदमी (मुसैलमतुल कज़्ज़ाब) को क़त्ल किया। इन्हों ने दरबारे अक़्दस में अपने जराइम का ए'तिराफ़ कर के अ़र्ज़ किया कि क्या ख़ुदा मुझ जैसे मुजरिम को भी बख़्श देगा ? तो येह आयत नाज़िल हुई कि

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب نهم ، ج۲، ص ۳۰۱، ۳۳۸

قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝ (1)

(زمر)

या'नी ऐ ह़बीब आप फ़रमा दीजिये कि ऐ मेरे बन्दो ! जिन्हों ने अपनी जानों पर ह़द से ज़ियादा गुनाह कर लिया है **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद मत हो जाओ । **अल्लाह** तमाम गुनाहों को बख़्श देगा । वोह यक़ीनन बड़ा बख़्शने वाला और बहुत मेहरबान है । (2)

(مدارج النبوۃ ج۲ص۳۰۲)

मक्का का इनतिज़ाम

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्का का नज़्मो नस्क़ और इनतिज़ाम चलाने के लिये ह़ज़रते इताब बिन उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्का का ह़ाकिम मुक़र्रर फ़रमा दिया और ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस ख़िदमत पर मामूर फ़रमाया कि वोह नौ मुस्लिमों को मसाइल व अह़कामे इस्लाम की ता'लीम देते रहें ।(3) (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۲۴)

इस में इख़्तिलाफ़ है कि फ़त्ह़ के बा'द कितने दिनों तक **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्का में क़ियाम फ़रमाया । अबू दावूद की रिवायत है कि सतरह दिन तक आप मक्का में मुक़ीम रहे । और तिरमिज़ी की रिवायत से पता चलता है कि अठ्ठारह दिन आप का क़ियाम रहा । लेकिन इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की है कि उन्नीस दिन आप मक्का में ठहरे ।

(بخاری ج۲ص۶۱۵)

---

1 ......پ ۲٤، الزمر: ۵۳

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب هفتم ، ج۲، ص ۳۰۱، ۳۰۲ ملخصاً

3 ......مدارج النبوت،قسم سوم، باب هشتم، ج ۲، ص ۳۲٤، ۳۲۵

والمواهب اللدنية و شرح الزرقاني ، باب غزوة حنين، ج۳، ص ٤۹۸۔٤۹۹

इन तीनों रिवायतों में इस त़रह़ तत़्बीक़ दी जा सकती है कि अबू दावूद की रिवायत में मक्का में दाख़िल होने और मक्का से रवानगी के दोनों दिनों को शुमार नहीं किया है इस लिये सतरह दिन मुद्दते इक़ामत बताई है और तिरमिज़ी की रिवायत में मक्का में आने के दिन को तो शुमार कर लिया। क्यूं कि आप सुब्ह़ को मक्का में दाख़िल हुए थे और मक्का से रवानगी के दिन को शुमार नहीं किया। क्यूं कि आप सुब्ह़ सवेरे ही मक्का से हुनैन के लिये रवाना हो गए थे और इमाम बुख़ारी की रिवायत में आने और जाने के दोनों दिनों को भी शुमार कर लिया गया है। इस लिये उन्नीस दिन आप मक्का में मुक़ीम रहे।[1] وَاللّٰه تَعَالٰى اَعلم

इसी त़रह़ इस में बड़ा इख़्तिलाफ़ है कि मक्का कौन सी तारीख़ में फ़त्ह़ हुवा ? और आप किस तारीख़ को मक्का में फ़ातेह़ाना दाख़िल हुए ? इमाम बैहक़ी ने 13 रमज़ान, इमाम मुस्लिम ने 16 रमज़ान, इमाम अह़मद ने 18 रमज़ान बताया और बा'ज़ रिवायात में 17 रमज़ान और 18 रमज़ान भी मरवी है। मगर मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने अपने मशाइख़ की एक जमाअ़त से रिवायत करते हुए फ़रमाया कि 20 रमज़ान सि. 8 हि. को मक्का फ़त्ह़ हुवा। وَاللّٰه تَعَالٰى اَعلم [2]

(زرقانی ج۲ص۲۹۹)

जंगे हुनैन

"हुनैन" मक्का और त़ाइफ़ के दरमियान एक मक़ाम का नाम है। तारीख़े इस्लाम में इस जंग का दूसरा नाम "ग़ज़्वए हवाज़ुन" भी है। इस लिये कि इस लड़ाई में "बनी हवाज़ुन" से मुक़ाबला था।

फ़त्ह़े मक्का के बा'द आ़म तौ़र से तमाम अ़रब के लोग इस्लाम के ह़ल्क़ा बगोश हो गए क्यूं कि इन में अकसर वोह लोग थे जो इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का पूरा पूरा यक़ीन रखने के बा वुजूद क़ुरैश के डर से

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳،ص۴۸۵۔۴۸۶

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳،ص۳۹۶۔۳۹۷

मुसलमान होने में तवक़्क़ुफ़ कर रहे थे और फ़त्हे मक्का का इनतिज़ार कर रहे थे। फिर चूंकि अ़रब के दिलों में का'बे का बेह़द एह़तिराम था और इन का ए'तिक़ाद था कि का'बे पर किसी बातिल परस्त का क़ब्ज़ा नहीं हो सकता। इस लिये **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मक्का को फ़त्ह़ कर लिया तो अ़रब के बच्चे बच्चे को इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का पूरा पूरा यक़ीन हो गया और वोह सब के सब जूक़ दर जूक़ बल्कि फ़ौज दर फ़ौज इस्लाम में दाख़िल होने लगे। बाक़ी मांदा अ़रब की भी हिम्मत न रही कि अब इस्लाम के मुक़ाबले में हथयार उठा सकें।

लेकिन मक़ामे हुनैन में "हवाज़ुन" और "सक़ीफ़" नाम के दो क़बीले आबाद थे जो बहुत ही जंगजू और फ़ुनूने जंग से वाक़िफ़ थे। उन लोगों पर फ़त्हे मक्का का उलटा असर पड़ा। उन लोगों पर ग़ैरत सुवार हो गई और उन लोगों ने येह ख़याल क़ाइम कर लिया कि फ़त्हे मक्का के बा'द हमारी बारी है इस लिये उन लोगों ने येह तै कर लिया कि मुसलमानों पर जो इस वक़्त मक्का में जम्अ़ हैं एक ज़बर दस्त ह़म्ला कर दिया जाए। चुनान्चे **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी ह़दरद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तह़क़ीक़ात के लिये भेजा। जब उन्हों ने वहां से वापस आ कर उन क़बाइल की जंगी तय्यारियों का ह़ाल बयान किया और बताया कि क़बीलए हवाज़ुन और सक़ीफ़ ने अपने तमाम क़बाइल को जम्अ़ कर लिया है और क़बीलए हवाज़ुन का रईसे आ'ज़म मालिक बिन औ़फ़ इन तमाम अफ़्वाज का सिपह सालार है और सो बरस से ज़ाइद उ़म्र का बूढ़ा। "दुरैद बिन अल सुम्मह" जो अ़रब का मश्हूर शाइर और माना हुवा बहादुर था बत़ौरे मुशीर के मैदाने जंग में लाया गया है और येह लोग अपनी औ़रतों बच्चों बल्कि जानवरों तक को मैदाने जंग में लाए हैं ताकि कोई सिपाही मैदान से भागने का ख़याल भी न कर सके।

हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी शव्वाल सि. 8 हि. में बारह हज़ार का लश्कर जम्अ फ़रमाया। दस हज़ार तो मुहाजिरीन व अन्सार वग़ैरा का वोह लश्कर था जो मदीने से आप के साथ आया था और दो हज़ार नौ मुस्लिम थे जो फ़त्हे मक्का में मुसलमान हुए थे। आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस लश्कर को साथ ले कर इस शानो शौकत के साथ हुनैन का रुख़ किया कि इस्लामी अफ़्वाज की कसरत और इस के जाहो जलाल को देख कर बे इख़्तियार बा'ज़ सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की ज़बान से येह लफ़्ज़ निकल गया कि "आज भला हम पर कौन ग़ालिब आ सकता है।"

लेकिन ख़ुदा वन्दे आलम عَزَّ وَجَلَّ को सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का अपनी फ़ौजों की कसरत पर नाज़ करना पसन्द नहीं आया। चुनान्चे इस फ़ख़्रो नाज़िश का येह अन्जाम हुवा कि पहले ही हम्ले में क़बीलए हवाज़ुन व सक़ीफ़ के तीर अन्दाज़ों ने जो तीरों की बारिश की और हज़ारों की ता'दाद में तलवारें ले कर मुसलमानों पर टूट पड़े तो वोह दो हज़ार नौ मुस्लिम और कुफ़्फ़ारे मक्का जो लश्करे इस्लाम में शामिल हो कर मक्का से आए थे एक दम सर पर पैर रख कर भाग निकले। उन लोगों की भगदड़ देख कर अन्सार व मुहाजिरीन के भी पाउं उखड़ गए। हुज़ूर ताजदारे दो आलम صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो नज़र उठा कर देखा तो गिनती के चन्द जां निसारों के सिवा सब फ़िरार हो चुके थे। तीरों की बारिश हो रही थी। बारह हज़ार का लश्कर फ़िरार हो चुका था मगर ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पाए इस्तिक़ामत में बाल बराबर भी लग़्ज़िश नहीं हुई। बल्कि आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अकेले एक लश्कर बल्कि एक आलमे काएनात का मज्मूआ बने हुए न सिर्फ़ पहाड़ की तरह डटे रहे बल्कि अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सुवार बराबर आगे ही बढ़ते रहे और आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक पर येह अल्फ़ाज़ जारी थे कि

اَنَا النَّبِیُّ لَا کَذِبْ　　اَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ

मैं नबी हूं येह झूट नहीं है मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूं।

इसी हालत में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दाहिनी त़रफ़ देख कर बुलन्द आवाज़ से पुकारा कि "یَا مَعْشَرَ الْاَنْصَارِ" फ़ौरन आवाज़ आई कि "हम ह़ाज़िर हैं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !" फिर बाईं जानिब रुख़ कर के फ़रमाया कि "یَا لَلْمُھَاجِرِیْنَ" फ़ौरन आवाज़ आई कि "हम ह़ाज़िर हैं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !", ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ चूंकि बहुत ही बुलन्द आवाज़ थे। आप ने उन को हुक्म दिया कि अन्सार व मुहाजिरीन को पुकारो। उन्हों ने "یَا مَعْشَرَ الْاَنْصَارِ" और "یَا لَلْمُھَاجِرِیْنَ" का ना'रा मारा तो एक दम तमाम फ़ौजें पलट पड़ीं और लोग इस क़दर तेज़ी के साथ दौड़ पड़े कि जिन लोगों के घोड़े इज़्दिहाम की वजह से न मुड़ सके उन्हों ने हलका होने के लिये अपनी ज़िरहें फेंक दीं और घोड़ों से कूद कूद कर दौड़े और कुफ़्फ़ार के लश्कर पर झपट पड़े और इस त़रह़ जां बाज़ी के साथ लड़ने लगे कि दम ज़दन में जंग का पांसा पलट गया। कुफ़्फ़ार भाग निकले कुछ क़त्ल हो गए जो रह गए गरिफ़्तार हो गए। क़बीलए सक़ीफ़ की फ़ौजें बड़ी बहादुरी के साथ जम कर मुसलमानों से लड़ती रहीं। यहां तक कि उन के सत्तर बहादुर कट गए। लेकिन जब उन के अ़लम बरदार उ़समान बिन अ़ब्दुल्लाह क़त्ल हो गया तो उन के पाउं भी उखड़ गए। और फ़त्हे मुबीन ने **हुज़ूर** रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों का बोसा लिया और कसीर ता'दाद व मिक़्दार में माले ग़नीमत हाथ आया।[1] (بخاری ج۲ص۶۲۱غزوۂ طائف)

---

1 ……المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی، باب غزوة حنین، ج۳، ص۴۹۶۔۵۳۰ ملخصاً
ومدارج النبوت،قسم سوم،باب ھشتم،ج۲،ص۳۰۸

येही वोह मज़्मून है जिस को कुरआने हकीम ने निहायत मुअस्सिर अन्दाज़ में बयान फ़रमाया कि

وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝[1] (توبہ)

और हुनैन का दिन याद करो जब तुम अपनी कसरत पर नाज़ां थे तो वोह तुम्हारे कुछ काम न आई और ज़मीन इतनी वसीअ़ होने के बा वुजूद तुम पर तंग हो गई। फिर तुम पीठ फैर कर भाग निकले फिर अल्लाह ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल और मुसलमानों पर और ऐसे लश्करों को उतार दिया जो तुम्हें नज़र नहीं आए और काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया और काफ़िरों की येही सज़ा है।

हुनैन में शिकस्त खा कर कुफ़्फ़ार की फ़ौजें भाग कर कुछ तो "औत़ास" में जम्अ़ हो गईं और कुछ "त़ाइफ़" के क़लए़ में जा कर पनाह गुज़ीं हो गईं। इस लिये कुफ़्फ़ार की फ़ौजों को मुकम्मल त़ौर पर शिकस्त देने के लिये "औत़ास" और "त़ाइफ़" पर भी ह़म्ला करना ज़रूरी हो गया।

जंगे औत़ास

चुनान्चे हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू आ़मिर अश्अ़री رَضِىَ اللّٰه تعالٰى عَنْهُ की मा तह़ती में थोड़ी सी फ़ौज "औत़ास" की त़रफ़ भेज दी। दुरैद बिन अस्सुम्मह कई हज़ार की फ़ौज ले कर निकला। दुरैद बिन अस्सुम्मह के बेटे ने ह़ज़रते अबू आ़मिर अश्अ़री رَضِىَ اللّٰه تعالٰى عَنْهُ के ज़ानू पर एक तीर मारा ह़ज़रते अबू आ़मिर अश्अ़री ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللّٰه تعالٰى عَنْهُ के चचा थे। अपने चचा को ज़ख़्मी देख कर ह़ज़रते अबू मूसा رَضِىَ اللّٰه تعالٰى عَنْهُ दौड़ कर अपने चचा के पास आए और पूछा कि चचाजान ! आप को

---

[1] ……پ ۱۰، التوبة:۲٦

किस ने तीर मारा है ? तो ह़ज़रते अबू आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इशारे से बताया कि वोह शख़्स मेरा क़ातिल है। ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जोश में भरे हुए उस काफ़िर को क़त्ल करने के लिये दौड़े तो वोह भाग निकला। मगर ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस का पीछा किया और येह कह कर कि ऐ ओ भागने वाले ! क्या तुझ को शर्म और ग़ैरत नहीं आती ? जब उस काफ़िर ने येह गर्मा गर्म त़ा'ना सुना तो ठहर गया फिर दोनों में तलवार के दो दो हाथ हुए और ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आख़िर उस को क़त्ल कर के दम लिया। फिर अपने चचा के पास आए और ख़ुश ख़बरी सुनाई कि चचाजान ! ख़ुदा ने आप के क़ातिल का काम तमाम कर दिया। फिर ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने चचा के ज़ानू से वोह तीर खींच कर निकाला तो चूंकि ज़ह्र में बुझाया हुवा था इस लिये ज़ख़्म से बजाए ख़ून के पानी बहने लगा। ह़ज़रते अबू आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी जगह ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फ़ौज का सिपह सालार बनाया और येह वसिय्यत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मेरा सलाम अ़र्ज़ कर देना और मेरे लिये दुआ़ की दरख़्वास्त करना। येह वसिय्यत की और उन की रूह़ परवाज़ कर गई। ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि जब इस जंग से फ़ारिग़ हो कर मैं बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और अपने चचा का सलाम और पैग़ाम पहुंचाया तो उस वक़्त ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक बान की चारपाई पर तशरीफ़ फ़रमा थे और आप की पुश्ते मुबारक और पहलूए अक़्दस में बान के निशान पड़े हुए थे। आप ने पानी मंगा कर वुज़ू फ़रमाया। फिर अपने दोनों हाथों को इतना ऊंचा उठाया कि मैं ने आप की दोनों बग़लों की सफ़ेदी देख ली और इस त़रह़ आप ने दुआ़ मांगी कि "या **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ तू अबू आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को क़ियामत के दिन बहुत से इन्सानों से ज़ियादा बुलन्द मर्तबा बना दे।" येह करम देख कर ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने

अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मेरे लिये भी दुआ़ फ़रमा दीजिये । तो येह दुआ़ फ़रमाई कि "या **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ तू अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस के गुनाहों को बख़्श दे और इस को क़ियामत के दिन इ़ज़्ज़त वाली जगह में दाख़िल फ़रमा ।" अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम है ।[1] (بخاری ج۲ص۶۱۹غزوۂ اوطاس)

बहर कैफ़ ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दुरैद बिन अस्सुम्मह के बेटे को क़त्ल कर दिया और इस्लामी अ़लम को अपने हाथ में ले लिया । दुरैद बिन अस्सुम्मह बुढ़ापे की वजह से एक हौदज पर सुवार था । इस को ह़ज़रते रबीआ़ बिन रफ़ीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने खुद उसी की तलवार से क़त्ल कर दिया । इस के बा'द कुफ़्फ़ार की फ़ौजों ने हथयार डाल दिया और सब गरिफ़्तार हो गए । इन क़ैदियों में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रज़ाई बहन ह़ज़रते "शीमा" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी थीं । येह ह़ज़रते बीबी ह़लीमा सा'दिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की साहि़ब ज़ादी थीं । जब लोगों ने इन को गरिफ़्तार किया तो इन्हों ने कहा कि मैं तुम्हारे नबी की बहन हूं । मुसलमान इन को शनाख़्त के लिये बारगाहे नुबुव्वत में लाए तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को पहचान लिया और जोशे मह़ब्बत में आप की आंखें नम हो गई और आप ने अपनी चादरे मुबारक ज़मीन पर बिछा कर उन को बिठाया और कुछ ऊंट कुछ बकरियां इन को दे कर फ़रमाया कि तुम आज़ाद हो । अगर तुम्हारा जी चाहे तो मेरे घर पर चल कर रहो और अगर अपने घर जाना चाहो तो मैं तुम को वहां पहुंचा दूं । उन्हों ने अपने घर जाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो निहायत ही इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ वोह उन के क़बीले में पहुंचा दी गईं ।[2] (طبری ج۳ص۲۶۸)

---

1 ……المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی، باب غزوة اوطاس، ج۳، ص ۵۳۲۔۵۳۶ ملخصاً
و صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة اوطاس، الحدیث ۴۳۲۳، ج۳، ص۱۱۳

2 ……المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، باب غزوة اوطاس ، ج۳، ص ۵۳۳

ताइफ़ का मुहासरा

येह तहरीर किया जा चुका है कि हुनैन से भागने वाली कुफ़्फ़ार की फ़ौजें कुछ तो औतास में जा कर ठहरी थीं और कुछ ताइफ़ के क़ल्ए़ में जा कर पनाह गुज़ीं हो गई थीं। औतास की फ़ौजें तो आप पढ़ चुके कि वोह शिकस्त खा कर हथयार डाल देने पर मजबूर हो गईं और सब गरिफ़्तार हो गईं। लेकिन ताइफ़ में पनाह लेने वालों से भी जंग ज़रूरी थी। इस लिये **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुनैन और औतास के अम्वाले ग़नीमत और क़ैदियों को "मक़ामे जिइ़र्राना" में जम्अ़ कर के ताइफ़ का रुख़ फ़रमाया।

ताइफ़ खुद एक बहुत ही मह़फ़ूज़ शहर था जिस के चारों त़रफ़ शहर पनाह की दीवार बनी हुई थी और यहां एक बहुत ही मज़बूत़ क़ल्आ़ भी था। यहां का रईसे आ'ज़म उर्वह बिन मसऊ़द सक़फ़ी था जो अबू सुफ़्यान का दामाद था। यहां सक़ीफ़ का जो खानदान आबाद था वोह इ़ज़्ज़त व शराफ़त में कुरैश का हम पल्ला शुमार किया जाता था। कुफ़्फ़ार की तमाम फ़ौजें साल भर का राशन ले कर ताइफ़ के क़ल्ए़ में पनाह गुज़ीं हो गई थीं। इस्लामी अफ़्वाज ने ताइफ़ पहुंच कर शहर का मुहासरा कर लिया मगर क़ल्ए़ के अन्दर से कुफ़्फ़ार ने इस ज़ोरो शोर के साथ तीरों की बारिश शुरूअ़ कर दी कि लश्करे इस्लाम इस की ताब न ला सका और मजबूरन इस को पसे पा होना पड़ा। अठ्ठारह दिनों तक शहर का मुहासरा जारी रहा मगर ताइफ़ फ़त्ह़ नहीं हो सका। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब जंग के माहिरों से मश्वरा फ़रमाया तो ह़ज़रते नौफ़िल बिन मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم लौमड़ी अपने भट में घुस गई है। अगर कोशिश जारी रही तो पकड़ ली जाएगी लेकिन अगर छोड़ दी जाए तो भी इस से कोई अन्देशा नहीं।" येह सुन कर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुहासरा उठा लेने का हुक्म दे दिया।[1] (زرقانی ج۳ص۳۳)

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی، باب غزوة الطائف، ج٤، ص٦، ٧، ١٣ ملتقطاً

ताइफ़ के मुहासरे में बहुत से मुसलमान ज़ख़्मी हुए और कुल बारह अस्हाब शहीद हुए सात कुरैश, चार अन्सार और एक शख़्स बनी लैस के। ज़ख़्मियों में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के साहिब ज़ादे अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا भी थे येह एक तीर से ज़ख़्मी हो गए थे। फिर अच्छे भी हो गए, लेकिन एक मुद्दत के बा'द फिर इन का ज़ख़्म फट गया और अपने वालिदे माजिद हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में इसी ज़ख़्म से उन की वफ़ात हो गई।[1] (زرقانی ج۳ص۳۰)

ताइफ़ की मस्जिद

येह मस्जिद जिस को हज़रते अम्र बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ता'मीर किया था एक तारीख़ी मस्जिद है। इस जंगे ताइफ़ में अज़्वाजे मुतह्हरात में से दो अज़्वाज साथ थीं हज़रते उम्मे सलमह और हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا इन दोनों के लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो ख़ैमे गाड़े थे और जब तक ताइफ़ का मुहासरा रहा आप इन दोनों ख़ैमों के दरमियान में नमाज़ें पढ़ते रहे। जब बा'द में क़बीलए सक़ीफ़ के लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो इन लोगों ने इसी जगह पर मस्जिद बना ली।[2]

(زرقانی ج۳ص۳۱)

जंगे ताइफ़ में बुत शिकनी

जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ताइफ़ का इरादा फ़रमाया तो हज़रते तुफ़ैल बिन अम्र दौसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को एक लश्कर के साथ भेजा कि वोह "ज़ुल कफ़ैन" के बुत ख़ाने को बरबाद कर दें। यहां उमर बिन हममा दौसी का बुत था जो लकड़ी का बना हुवा था। चुनान्चे हज़रते

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب غزوة الطائف، ج٤، ص٩
و السيرة النبوية لابن هشام، باب شهداء المسلمين في الطائف، ص٥٠٤

2 ......السيرة النبوية لابن هشام، باب الطريق الى الطائف، ص٥٠٢

तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने वहां जा कर बुत ख़ाने को मुन्हदिम कर दिया और बुत को जला दिया। बुत को जलाते वक़्त वोह इन अश्आ़र को पढ़ते जाते थे :

يَاذَا الْكَفَيْنِ لَسْتُ مِنْ عِبَادِكَا
ऐ ज़ुल कफ़ैन ! मैं तेरा बन्दा नहीं हूं

مِيْلَادُنَا اَقْدَمُ مِنْ مِيْلَادِكَا
मेरी पैदाइश तेरी पैदाइश से बड़ी है

اِنِّيْ حَشَوْتُ النَّارَ فِيْ فُؤَادِكَا
मैं ने तेरे दिल में आग लगा दी है

हज़रते तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ चार दिन में इस मुहिम से फ़ारिग़ हो कर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास त़ाइफ़ में पहुंच गए। येह "ज़ुल कफ़ैन" से क़लआ़ तोड़ने के आलात मिन्जनीक़ वग़ैरा भी लाए थे। चुनान्चे इस्लाम में सब से पहली येही मिन्जनीक़ है जो त़ाइफ़ का क़लआ़ तोड़ने के लिये लगाई गई। मगर कुफ़्फ़ार की फ़ौजों ने तीर अन्दाज़ी के साथ साथ गर्म गर्म लोहे की सलाख़ें फेंकनी शुरूअ़ कर दीं इस वजह से क़लआ़ तोड़ने में काम्याबी न हो सकी।[1] (زرقانی ج۳ص۳۱)

इसी त़रह़ **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को भेजा कि त़ाइफ़ के अत़राफ़ में जो जा बजा सक़ीफ़ के बुत ख़ाने हैं उन सब को मुन्हदिम कर दें। चुनान्चे आप ने उन सब बुतों और बुत ख़ानों को तोड़ फोड़ कर मिस्मार व बरबाद कर दिया। और जब लौट कर

---

1 ……المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب حرق ذى الكفين،ج٤، ص٤٠٣
والمواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب غزوة الطائف،ص١٠

ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए तो हुज़ूर صَلَّى الله تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इन को देख कर बेहद खुश हुए और बहुत देर तक इन से तन्हाई में गुफ़्तगू फ़रमाते रहे, जिस से लोगों को बहुत तअज्जुब हुवा।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۱۸)

ताइफ़ से रवानगी के वक़्त सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى الله تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप क़बीलए सक़ीफ़ के कुफ़्फ़ार के लिये हलाकत की दुआ़ फ़रमा दीजिये। तो आप ने दुआ़ मांगी कि "اَللّٰهُمَّ اهْدِ ثَقِيفًا وَأْتِ بِهِمْ" या अल्लाह ! (عَزَّوَجَلَّ) सक़ीफ़ को हिदायत दे और इन को मेरे पास पहुंचा दे। (مسلم ج۲ص۳۰۷)

चुनान्चे आप صَلَّى الله تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की येह दुआ़ मक़्बूल हुई की क़बीलए सक़ीफ़ का वफ़्द मदीने पहुंचा और पूरा क़बीला मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया।[2]

माले ग़नीमत की तक़्सीम

ताइफ़ से मुहासरा उठा कर हुज़ूर صَلَّى الله تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم "जिइर्राना" तशरीफ़ लाए। यहां अम्वाले ग़नीमत का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा जम्अ़ था। चौबीस हज़ार ऊंट, चालीस हज़ार से ज़ाइद बकरियां, कई मन चांदी, और छे हज़ार क़ैदी।[3] (سیرت ابن ہشام ج۲ص۴۸۸وزرقانی)

असीराने जंग के बारे में आप صَلَّى الله تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के रिश्तेदारों के आने का इनतिज़ार फ़रमाया। लेकिन कई दिन गुज़रने के बा वुजूद जब कोई न आया तो आप ने माले ग़नीमत को तक़्सीम फ़रमा देने का हुक्म दे दिया। मक्का और इस के अत़राफ़ के नौ मुस्लिम रईसों को

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب هشتم، ج۲، ص۳۱۸

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب نبذة من قسم الغنائم...الخ، ج٤، ص١٨

3 ......السيرة النبوية لابن هشام، باب امراموال هوازن و سباياها...الخ، ص٥٠٤
والمواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب نبذة من قسم الغنائم...الخ، ج٤، ص١٩

आप ने बड़े बड़े इन्आ़मों से नवाज़ा । यहां तक कि किसी को तीन सो ऊंट, किसी को दो सो ऊंट, किसी को सो ऊंट इन्आ़म के त़ौर पर अ़त़ा फ़रमा दिया । इसी त़रह़ बकरियों को भी निहायत फ़य्याज़ी के साथ तक़्सीम फ़रमा दिया ।[1] (سیرت ابن ہشام ج۲ص۴۸۹)

अन्सारियों से ख़िता़ब

जिन लोगों को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बड़े बड़े इन्आ़मात से नवाज़ा वोह उ़मूमन मक्का वाले नौ मुस्लिम थे । इस पर बा'ज़ नौ जवान अन्सारियों ने कहा कि

"रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कु़रैश को इस क़दर अ़त़ा फ़रमा रहे हैं और हम लोगों का कुछ भी ख़याल नहीं फ़रमा रहे हैं । ह़ालां कि हमारी तलवारों से ख़ून टपक रहा है ।" (بخاری ج۲ص۶۲۰غزوۂ طائف)

और अन्सार के कुछ नौ जवानों ने आपस में येह भी कहा और अपनी दिल शिकनी का इज़्हार किया कि जब शदीद जंग का मौक़अ़ होता है तो हम अन्सारियों को पुकारा जाता है और ग़नीमत दूसरे लोगों को दी जा रही है ।[2] (بخاری ج۲ص۶۲۱غزوۂ طائف)

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब येह चर्चा सुना तो तमाम अन्सारियों को एक ख़ैमे में जम्अ़ फ़रमाया और उन से इरशाद फ़रमाया कि ऐ अन्सार ! क्या तुम लोगों ने ऐसा ऐसा कहा है ? लोगों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! हमारे सरदारों में से किसी ने भी कुछ नहीं कहा है । हां चन्द नई उ़म्र के लड़कों ने ज़रूर कुछ कह दिया है ।

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، باب امراموال هوازن و سباياها...الخ، ص٥٠٦
والمواهب اللدنية و شرح الزرقانى، باب نبذة من قسم الغنائم...الخ، ج٤، ص١٩

2 ......صحيح البخارى ،كتاب المغازى، باب غزوة الطائف، الحديث: ٤٣٣١، ٤٣٣٧، ج٣، ص١١٧ والمواهب اللدنية و شرح الزرقانى، باب نبذة من ...الخ، ج٤، ص٢٢-٢٤

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अन्सार को मुख़ातब फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया कि

क्या येह सच नहीं है कि तुम पहले गुमराह थे मेरे ज़रीए से ख़ुदा ने तुम को हिदायत दी, तुम मुतफ़र्रिक़ और परा गन्दा थे, ख़ुदा ने मेरे ज़रीए से तुम में इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद पैदा फ़रमाया, तुम मुफ़्लिस थे, ख़ुदा ने मेरे ज़रीए से तुम को ग़नी बना दिया। (بخاری ج۲ص۶۲۰غزوۂ طائف)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह फ़रमाते जाते थे और अन्सार आप के हर जुम्ले को सुन कर येह कहते जाते थे कि "अल्लाह और रसूल का हम पर बहुत बड़ा एह़सान है।"

आप صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अन्सार ! तुम लोग यूं मत कहो, बल्कि मुझ को येह जवाब दो कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब लोगों ने आप को झुटलाया तो हम लोगों ने आप की तस्दीक़ की। जब लोगों ने आप को छोड़ दिया तो हम लोगों ने आप को ठिकाना दिया। जब आप बे सरो सामानी की ह़ालत में आए तो हम ने हर त़रह़ से आप की ख़िदमत की। लेकिन ऐ अन्सारियो ! मैं तुम से एक सुवाल करता हूं तुम मुझे इस का जवाब दो। सुवाल येह है कि

क्या तुम लोगों को येह पसन्द नहीं कि सब लोग यहां से माल व दौलत ले कर अपने घर जाएं और तुम लोग अल्लाह के नबी को ले कर अपने घर जाओ। ख़ुदा की क़सम ! तुम लोग जिस चीज़ को ले कर अपने घर जाओगे वोह उस माल व दौलत से बहुत बढ़ कर है जिस को वोह लोग ले कर अपने घर जाएंगे।

येह सुन कर अन्सार बे इख़्तियार चीख़ पड़े कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम इस पर राज़ी हैं। हम को सिर्फ़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का रसूल चाहिये और अकसर अन्सार का तो येह ह़ाल हो गया कि वोह रोते रोते बे क़रार हो गए और आंसूओं से उन की दाढ़ियां तर हो गईं।

फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अन्सार को समझाया कि मक्का के लोग बिल्कुल ही नौ मुस्लिम हैं। मैं ने इन लोगों को जो कुछ दिया है येह उन के इस्तिह़्क़ाक़ की बिना पर नहीं है बल्कि सिर्फ़ उन के दिलों में इस्लाम की उल्फ़त पैदा करने की ग़रज़ से दिया है, फिर इरशाद फ़रमाया कि अगर हिजरत न होती तो मैं अन्सार में से होता और अगर तमाम लोग किसी वादी और घाटी में चलें और अन्सार किसी दूसरी वादी और घाटी में चलें तो मैं अन्सार की वादी और घाटी में चलूंगा।[1]

(بخاری ج۲ص۶۲۰وص۶۲۱غزوۂ طائف)

क़ैदियों की रिहाई

आप जब अम्वाले ग़नीमत की तक़्सीम से फ़ारिग़ हो चुके तो क़बीलए बनी सा'द के रईस ज़ुहीर अबू सर्द चन्द मुअ़ज़्ज़ज़ीन के साथ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और असीराने जंग की रिहाई के बारे में दरख़्वास्त पेश की। इस मौक़अ़ पर ज़ुहीर अबू सर्द ने एक बहुत मुअस्सिर तक़रीर की, जिस का ख़ुलासा येह है कि

ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) आप ने हमारे ख़ानदान की एक औ़रत ह़लीमा का दूध पिया है। आप ने जिन औ़रतों को इन छपरों में क़ैद कर रखा है उन में से बहुत सी आप की (रज़ाई) फूफियां और बहुत सी आप की ख़ालाएं हैं। ख़ुदा की क़सम ! अगर अ़रब के बादशाहों में से किसी बादशाह ने हमारे ख़ानदान की किसी औ़रत का दूध पिया होता तो हम को उस से बहुत ज़ियादा उम्मीदें होतीं और आप से तो और भी ज़ियादा हमारी तवक़्क़ुआ़त वाबस्ता हैं। लिहाज़ा आप इन सब क़ैदियों को रिहा कर दीजिये।

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب غزوة الطائف، الحديث: ٤٣٣٠، ج٣، ص١١٦
والمواهب اللدنية و شرح الزرقانی، باب نبذة من قسم الغنائم...الخ، ج٤، ص٢٣

ज़हीर की तक़रीर सुन कर **हुज़ूर** صَلَّى الله تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत ज़ियादा मुतअस्सिर हुए और आप ने फ़रमाया कि मैं ने आप लोगों का बहुत ज़ियादा इनतिज़ार किया मगर आप लोगों ने आने में बहुत ज़ियादा देर लगा दी। बहर कैफ़ मेरे ख़ानदान वालों के हिस्से में जिस क़दर लौंडी ग़ुलाम आए हैं। मैं ने उन सब को आज़ाद कर दिया। लेकिन अब आम रिहाई की तदबीर येह है कि नमाज़ के वक़्त जब मज्मअ़ हो तो आप लोग अपनी दरख़्वास्त सब के सामने पेश करें। चुनान्चे नमाज़े ज़ोहर के वक़्त उन लोगों ने येह दरख़्वास्त मज्मअ़ के सामने पेश की और **हुज़ूर** صَلَّى الله تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज्मअ़ के सामने येह इरशाद फ़रमाया कि मुझ को सिर्फ़ अपने ख़ानदान वालों पर इख़्तियार है लेकिन मैं तमाम मुसलमानों से सिफ़ारिश करता हूं कि क़ैदियों को रिहा कर दिया जाए येह सुन कर तमाम अन्सार व मुहाजिरीन और दूसरे तमाम मुजाहिदीन ने भी अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى الله تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! हमारा हिस्सा भी हाज़िर है। आप इन लोगों को भी आज़ाद फ़रमा दें। इस त़रह़ दफ़्अ़तन छे हज़ार असीराने जंग की रिहाई हो गई।[1] (سیرتِ ابن ہشام ج۴ ص۴۸۸ و ص۴۸۹)

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत येह है कि **हुज़ूर** صَلَّى الله تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दस दिनों तक ''हवाज़ुन'' के वफ़्द का इनतिज़ार फ़रमाते रहे। जब वोह लोग न आए तो आप ने माले ग़नीमत और क़ैदियों को मुजाहिदीन के दरमियान तक़्सीम फ़रमा दिया। इस के बा'द जब ''हवाज़ुन'' का वफ़्द आया और उन्हों ने अपने इस्लाम का ए'लान कर के येह दरख़्वास्त पेश की, कि हमारे माल और क़ैदियों को वापस कर दिया जाए तो **हुज़ूर** صَلَّى الله تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुझे सच्ची बात ही पसन्द है। लिहाज़ा सुन लो ! कि माल और क़ैदी दोनों को तो मैं वापस नहीं कर

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، باب امر اموال هوازن ...الخ، ص٥٠٤ ملخصاً

सकता। हां इन दोनों में से एक को तुम इख़्तियार कर लो या माल ले लो या क़ैदी। येह सुन कर वफ़्द ने क़ैदियों को वापस लेना मंज़ूर किया। इस के बा'द आप ने फ़ौज के सामने एक ख़ुत्बा पढ़ा और ह़म्दो सना के बा'द इरशाद फ़रमाया कि

ऐ मुसलमानो ! येह तुम्हारे भाई ताइब हो कर आ गए हैं और मेरी येह राय है कि मैं इन क़ैदियों को वापस कर दूं तो तुम में से जो ख़ुशी ख़ुशी इस को मंज़ूर करे वोह अपने ह़िस्से के क़ैदियों को वापस कर दे और जो येह चाहे कि इन क़ैदियों के बदले में दूसरे क़ैदियों को ले कर इन को वापस करे तो मैं येह वा'दा करता हूं कि सब से पहले **अल्लाह** तआ़ला मुझे जो ग़नीमत अ़ता फ़रमाएगा मैं इस में उस का ह़िस्सा दूंगा। येह सुन कर सारी फ़ौज ने कह दिया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! हम सब ने ख़ुशी ख़ुशी सब क़ैदियों को वापस कर दिया। आप ने इरशाद फ़रमाया कि इस तरह़ पता नहीं चलता कि किस ने इजाज़त दी और किस ने नहीं दी ? लिहाज़ा तुम लोग अपने अपने चौधरियों के ज़रीए़ मुझे ख़बर दो। चुनान्चे हर क़बीले के चौधरियों ने दरबारे रिसालत में आ कर अ़र्ज़ कर दिया कि हमारे क़बीले वालों ने ख़ुश दिली के साथ अपने ह़िस्से के क़ैदियों को वापस कर दिया है।[1]

(بخاری ج ۱ ص ۳۴۵ باب من ملک من العرب و بخاری ج ۲ ص ۳۰۹ باب الوکالۃ فی قضاء الدیون و بخاری ج ۲ ص ۶۱۸)

ग़ैब दां रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हवाज़ुन के वफ़्द से दरयाफ़्त फ़रमाया कि मालिक बिन औ़फ़ कहां है ? उन्हों ने बताया कि वोह "सक़ीफ़" के साथ त़ाइफ़ में है। आप ने फ़रमाया कि तुम लोग मालिक

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الوکالۃ، باب الوکالۃ...الخ، الحدیث:۲۳۰۷، ۲۳۰۸، ج۲، ص ۸۰

बिन औ़फ़ को ख़बर कर दो कि अगर वोह मुसलमान हो कर मेरे पास आ जाए तो मैं उस का सारा माल उस को वापस दे दूंगा। इस के इ़लावा उस को एक सो ऊंट और भी दूंगा। मालिक बिन औ़फ़ को जब येह ख़बर मिली तो वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मुसलमान हो कर हाज़िर हो गए और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन का कुल माल उन के सिपुर्द फ़रमा दिया और वा'दे के मुत़ाबिक़ एक सो ऊंट इस के इ़लावा भी इ़नायत फ़रमाए। मालिक बिन औ़फ़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस ख़ुल्क़े अ़ज़ीम से बेहद मुतअस्सिर हुए और आप की मद्ह़ में एक क़सीदा पढ़ा जिस के दो शे'र येह हैं :

مَا اِنْ رَاَيْتُ وَلَا سَمِعْتُ بِمِثْلِهٖ فِی النَّاسِ كُلِّهِمْ بِمِثْلِ مُحَمَّدٖ

اَوْفٰی وَاَعْطٰی لِلْجَزِيْلِ اِذَا اجْتُدِی وَمَتٰی تَشَأْ يُخْبِرُكَ عَمَّا فِیْ غَدٖ

या'नी तमाम इन्सानों में ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मिस्ल न मैं ने देखा न सुना जो सब से ज़ियादा वा'दे को पूरा करने वाले और सब से ज़ियादा माले कसीर अ़त़ा फ़रमाने वाले हैं। और जब तुम चाहो उन से पूछ लो वोह कल आयन्दा की ख़बर तुम को बता देंगे।[1]

रिवायत है कि ना'त के येह अश्आ़र सुन कर **हुज़ूर** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इन से ख़ुश हो गए और इन के लिये कलिमाते ख़ैर फ़रमाते हुए इन्हें बत़ौरे इन्आ़म एक हुल्ला भी इ़नायत फ़रमाया।

(سیرت ابن ہشام ج۴ ص۴۹۱ ومدارج ج۲ ص۳۲۴)

उ़मरए जिइ़र्राना

इस के बा'द नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **जिइ़र्राना** ही से उ़मरे का इरादा फ़रमाया और एह़राम बांध कर मक्का तशरीफ़ ले गए और उ़मरह अदा करने के बा'द फिर मदीने वापस तशरीफ ले गए

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،باب امر اموال هوازن و سبايا ها......الخ،ص٥٠٥

और जुल क़ा'दह सि. 8 हि. को मदीने में दाख़िल हुए।[1]

सि. 8 हि. के मुतफ़र्रिक़ वाक़िआत

﴾1﴿ इसी साल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हज़रते मारिया क़िब्तिया رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا के शिकम से पैदा हुए। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इन से बे पनाह महब्बत थी। तक़रीबन डेढ़ साल की उम्र में इन की वफ़ात हो गई।

इत्तिफ़ाक़ से जिस दिन इन की वफ़ात हुई सूरज ग्रहन हुवा चूंकि अ़रबों का अ़क़ीदा था कि किसी अ़ज़ीमुश्शान इन्सान की मौत पर सूरज ग्रहन लगता है। इस लिये लोगों ने येह ख़याल कर लिया कि येह सूरज ग्रहन हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात का नतीजा है। जाहिलिय्यत के इस अ़क़ीदे को दूर फ़रमाने के लिये **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ख़ुत़्बा दिया जिस में आप ने इरशाद फ़रमाया कि चांद और सूरज में किसी की मौत व ह़यात की वजह से ग्रहन नहीं लगता बल्कि **अल्लाह** तआ़ला इस के ज़रीए़ अपने बन्दों को ख़ौफ़ दिलाता है। इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े कुसूफ़ जमाअ़त के साथ पढ़ी।[2]

(بخاری ج۱ص۱۴۲ ابواب الکسوف)

﴾2﴿ इसी साल **हुज़ूर** नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की साहिब ज़ादी हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا ने वफ़ात पाई। येह साहिब ज़ादी साहिबा हज़रते अबुल आ़स बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मन्कूहा थीं। इन्हों ने एक फ़रज़न्द जिस का नाम "अ़ली" था और एक लड़की जिन

---

1 ......الکامل فی التاریخ،ذکر قسمة غنائم حنین،ج۲،ص۱٤٤،ملخصاً

2 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب ھشتم، ج۲، ص۳۲۵ مختصراً وصحیح البخاری، کتاب الکسوف، باب الصلوۃ فی الکسوف، الحدیث:۱۰٤۳،۱۰٤۸، ج۱، ص۳۵۷، وفتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب الکسوف، باب الصلوۃ فی الکسوف الشمس، تحت الحدیث:۱۰٤۳، ج۲، ص٤۵۷

का नाम "इमामा" था, अपने बा'द छोड़ा। हज़रते बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने हज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को वसिय्यत की थी कि मेरी वफ़ात के बा'द आप हज़रते इमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से निकाह़ कर लें। चुनान्चे हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की वसिय्यत पर अ़मल किया।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۲۵)

﴾3﴿ इसी साल मदीने में ग़ल्ले की गिरानी बहुत ज़ियादा बढ़ गई तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने दरख़्वास्त की, कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ग़ल्ले का भाव मुक़र्रर फ़रमा दें तो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ल्ले की क़ीमत पर कन्ट्रोल फ़रमाने से इन्कार फ़रमा दिया और इरशाद फ़रमाया कि اِنَّ اللّٰہَ ھُوَ الْمُسَعِّرُ الْقَابِضُ الْبَاسِطُ الرَّزَّاقُ **अल्लाह** ही भाव मुक़र्रर फ़रमाने वाला है वोही रोज़ी को तंग करने वाला, कुशादा करने वाला, रोज़ी रसां है।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۲۵)

﴾4﴿ बा'ज़ मुअर्रिख़ीन के बक़ौल इसी साल मस्जिदे नबवी में मिम्बर शरीफ़ रखा गया। इस से क़ब्ल **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक सुतून से टेक लगा कर ख़ुत्बा पढ़ा करते थे और बा'ज़ मुअर्रिख़ीन का क़ौल है कि मिम्बर सि. 7 हि. में रखा गया। येह मिम्बर लकड़ी का बना हुवा था जो एक अन्सारी औ़रत ने बनवा कर मस्जिद में रखवाया था। हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चाहा कि मैं इस मिम्बर को तबर्रुकन मुल्के शाम ले जाऊं मगर उन्हों ने जब इस को इस की जगह से हटाया तो अचानक सारे शहर में ऐसा अंधेरा छा गया कि दिन में तारे नज़र आने लगे। येह मन्ज़र देख कर हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत शरमिन्दा हुए और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से मा'ज़िरत ख़्वाह हुए और उन्हों ने इस मिम्बर के नीचे तीन सीढ़ियों का इज़ाफ़ा कर दिया। जिस से

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب هشتم،ج ۲،ص ۳۲۵

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب هشتم،ج ۲،ص ۳۲۵

मिम्बर की तीनों पुरानी सीढ़ियां ऊपर हो गईं ताकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم जिन सीढ़ियों पर खड़े हो कर ख़ुत्बा पढ़ते थे अब दूसरा कोई ख़तीब इन पर क़दम न रखे। जब येह मिम्बर बहुत ज़ियादा पुराना हो कर इनतिहाई कमज़ोर हो गया तो ख़ुलफ़ाए अ़ब्बासिया ने भी इस की मरम्मत कराई।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۲۷)

﴾5﴿ इसी साल क़बीलए अ़ब्दिल क़ैस का वफ़्द हाज़िरे ख़िदमत हुवा। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों को ख़ुश आमदीद कहा और उन लोगों के ह़क़ में यूं दुआ़ फ़रमाई कि "ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ तू अ़ब्दिल क़ैस को बख़्श दे" जब येह लोग बारगाहे रिसालत में पहुंचे तो अपनी सुवारियों से कूद कर दौड़ पड़े और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस क़दम को चूमने लगे और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों को मन्अ़ नहीं फ़रमाया।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۳۰)

तौबा की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं।

(سنن ابن ماجه حديث ٤٢٥٠ ص ٢٧٣٥)

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب هشتم، ج ٢، ص٣٢٦، ٣٢٧ ملتقطاً

2 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب هشتم، ج ٢، ص٣٢٨-٣٣٠ملخصاً

चौदहवां बाब

हिजरत का नवां साल

सि. 9 हि.

सि. 9 हि. बहुत से वाक़िआ़ते अ़जीबा से लबरेज़ है। लेकिन चन्द वाक़िआ़त बहुत ही अहम हैं जिन को मुअर्रिख़ीन ने बहुत ही बस्तो तफ़्सील के साथ ज़िक्र किया है हम इन वाक़िआ़त को अपनी मुख़्तसर किताब में निहायत ही इख़्तिसार के साथ अलग अलग उ़न्वानों के साथ क़लम बन्द करते हैं।

आयते तख़्यीर व ईलाअ

"तख़्यीर" और "ईला" येह शरीअ़त के दो इस्तिलाही अल्फ़ाज़ हैं। शोहर अपनी बीवी को अपनी त़रफ़ से येह इख़्तियार दे दे कि वोह चाहे तो त़लाक़ ले ले और चाहे तो अपने शोहर ही के निकाह़ में रह जाए इस को "तख़्यीर" कहते हैं। और "ईला" येह है कि शोहर येह क़सम खा ले कि मैं अपनी बीवी से सोह़बत नहीं करूंगा। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن से नाराज़ हो कर एक महीने का "ईला" फ़रमाया या'नी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह क़सम खा ली कि मैं एक माह तक अपनी अज़्वाजे मुक़द्दसा से सोह़बत नहीं करूंगा। फिर इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी तमाम मुक़द्दस बीवियों को त़लाक़ ह़ासिल करने का इख़्तियार भी सोंप दिया मगर किसी ने भी त़लाक़ लेना पसन्द नहीं किया।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी और इताब का सबब क्या था और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने "तख़्यीर व ईला" क्यूं फ़रमाया? इस का वाक़िआ़ येह है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस बीवियां तक़्रीबन सब मालदार और बड़े घरानों की लड़कियां थीं। "ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रईसे मक्का ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साहि़ब ज़ादी थीं। "ह़ज़रते जुवैरिया" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

क़बीलए बनी अल मुस्त़लक़ के सरदारे आ'ज़म ह़ारिस बिन ज़रार की बेटी थीं। "ह़ज़रते सफ़िय्या" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बनू नज़ीर और ख़ैबर के रईसे आ'ज़म ह़ुयैय बिन अख़्त़ब की नूरे नज़र थीं। "ह़ज़रते आ़इशा" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की प्यारी बेटी थीं। "ह़ज़रते ह़फ़्सा" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की चहीती साह़िब ज़ादी थीं। "ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श" और "ह़ज़रते उम्मे सलमह" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी ख़ानदाने क़ुरैश के ऊंचे ऊंचे घरों की नाज़ो ने'मत में पली हुई लड़कियां थीं। ज़ाहिर है कि येह अमीर ज़ादियां बचपन से अमीराना ज़िन्दगी और रईसाना माह़ोल की आ़दी थीं और इन का रहन सहन, खुर्दो नोश, लिबास व पोशाक सब कुछ अमीर ज़ादियों की रईसाना ज़िन्दगी का आईना दार था और ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़िन्दगी बिल्कुल ही ज़ाहिदाना और दुन्यवी तकल्लुफ़ात से यक्सर बेगाना थी। दो दो महीने काशानए नुबुव्वत में चूल्हा नहीं जलता था। सिर्फ़ खजूर और पानी पर पुरे घराने की ज़िन्दगी बसर होती थी। लिबास व पोशाक में भी पैग़म्बराना ज़िन्दगी की झलक थी मकान और घर के साज़ो सामान में भी नुबुव्वत की सादगी नुमायां थी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सरमाए का अकसरो बेशतर ह़िस्सा अपनी उम्मत के ग़ुरबा व फ़ुक़रा पर सर्फ़ फ़रमा देते थे और अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात को ब क़दरे ज़रूरत ही ख़र्च अ़त़ा फ़रमाते थे जो इन रईस ज़ादियों के ह़स्बे ख़्वाह ज़ैबो ज़ीनत और आराइश व ज़ैबाइश के लिये काफ़ी नहीं होता था। इस लिये कभी कभी इन उम्मत की माओं का पैमानए सब्रो क़नाअ़त लबरेज़ हो कर छलक जाता था और वोह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मज़ीद रक़मों का मुत़ालबा और तक़ाज़ा करने लगती थीं। चुनान्चे एक मरतबा अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنہن ने मुत्तफ़िक़ा त़ौर पर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुत़ालबा किया कि आप हमारे अख़राजात में इज़ाफ़ा फ़रमाएं। अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنہن की येह अदाएं महरे नुबुव्वत के क़ल्बे नाज़ पर बार गुज़रीं और आप

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सुकूने ख़ातिर में इस क़दर ख़लल अन्दाज़ हुई कि आप ने बरहम हो कर येह क़सम खा ली कि एक महीने तक अज़्वाजे मुतहहरात رضى الله تعالىٰ عنهن से न मिलेंगे। इस तरह एक माह का आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने "ईला" फ़रमा लिया।

अजीब इत्तिफ़ाक़ कि इन्ही अय्याम में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم घोड़े से गिर पड़े जिस से आप की मुबारक पिंडली में मोच आ गई। इस तक्लीफ़ की वजह से आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बालाख़ाने पर गोशा नशीनी इख़्तियार फ़रमा ली और सब से मिलना जुलना छोड़ दिया।

सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने वाक़िआत के क़रीनों से येह क़ियास आराई कर ली कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी तमाम मुक़द्दस बीवियों को तलाक़ दे दी और येह ख़बर जो बिल्कुल ही ग़लत थी बिजली की तरह फैल गई। और तमाम सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم रन्जो ग़म से परेशान हाल और इस सद्मए जांकाह से निढाल होने लगे।

इस के बा'द जो वाक़िआत पेश आए वोह बुख़ारी शरीफ़ की मुतअद्दद रिवायात में मुफ़स्सल तौर पर मज़कूर हैं। इन वाक़िआत का बयान हज़रते उमर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ज़बान से सुनिये।

हज़रते उमर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बयान है कि मैं और मेरा एक पड़ोसी जो अन्सारी था हम दोनों ने आपस में येह तै कर लिया था कि हम दोनों एक एक दिन बारी बारी से बारगाहे रिसालत में हाज़िरी दिया करेंगे और दिन भर के वाक़िआत से एक दूसरे को मुत्तलअ करते रहेंगे। एक दिन कुछ रात गुज़रने के बा'द मेरा पड़ोसी अन्सारी आया और ज़ोर ज़ोर से मेरा दरवाज़ा पीटने और चिल्ला चिल्ला कर मुझे पुकारने लगा। मैं ने घबरा कर दरवाज़ा खोला तो उस ने कहा कि आज ग़ज़ब हो गया। मैं ने उस से पूछा कि क्या ग़स्सानियों ने मदीने पर हम्ला कर दिया? (उन दिनों शाम के ग़स्सानी मदीने पर हम्ले की तय्यारियां कर रहे थे।)

अन्सारी ने जवाब दिया कि अजी इस से भी बढ़ कर हादिसा रूनुमा हो गया। वोह येह कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी तमाम बीवियों को तलाक़ दे दी। हज़रते उमर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं कि मैं इस ख़बर से बेहद मुतवह्हिश हो गया और अलस्सबाह मैं ने मदीने पहुंच कर मस्जिदे नबवी में नमाज़े फ़ज्र अदा की। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ होते ही बालाख़ाने पर जा कर तन्हा तशरीफ़ फ़रमा हो गए और किसी से कोई गुफ़्तगू नहीं फ़रमाई। मैं मस्जिद से निकल कर अपनी बेटी हफ़्सा के घर गया तो देखा कि वोह बैठी रो रही है। मैं ने उस से कहा कि मैं ने पहले ही तुम को समझा दिया था कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तंग मत किया करो और तुम्हारे अख़राजात में जो कमी हुवा करे वोह मुझ से मांग लिया करो मगर तुम ने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। फिर मैं ने पूछा कि क्या रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सभों को तलाक़ दे दी है? हफ़्सा ने कहा मैं कुछ नहीं जानती। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बालाख़ाने पर हैं आप उन से दरयाफ़्त करें। मैं वहां से उठ कर मस्जिद में आया तो सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को भी देखा कि वोह मिम्बर के पास बैठे रो रहे हैं। मैं उन के पास थोड़ी देर बैठा लेकिन मेरी तबीअत में सुकून व क़रार नहीं था। इस लिये मैं उठ कर बालाख़ाने के पास आया और पहरेदार ग़ुलाम "रबाह" से कहा कि तुम मेरे लिये अन्दर आने की इजाज़त तलब करो। रबाह ने लौट कर जवाब दिया कि मैं ने अर्ज़ कर दिया लेकिन आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कोई जवाब नहीं दिया। मेरी उलझन और बेताबी और ज़ियादा बढ़ गई और मैं ने दरबान से दोबारा इजाज़त तलब करने की दरख़्वास्त की फिर भी कोई जवाब नहीं मिला। तो मैं ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि ऐ रबाह! तुम मेरा नाम ले कर इजाज़त तलब करो। शायद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह ख़याल हो कि मैं अपनी बेटी हफ़्सा के लिये कोई सिफ़ारिश ले कर आया हूं। तुम अर्ज़ कर दो कि ख़ुदा की क़सम!

अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे हुक्म फ़रमाएं तो मैं अभी अभी अपनी तलवार से अपनी बेटी ह़फ़्सा की गरदन उड़ा दूं। इस के बा'द मुझ को इजाज़त मिल गई जब मैं बारगाहे रिसालत में बारयाब हुवा तो मेरी आंखों ने येह मन्ज़र देखा कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक खरीबान की चारपाई पर लेटे हुए हैं और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे नाज़ुक पर बान के निशान पड़े हुए हैं फिर मैं ने नज़र उठा कर इधर उधर देखा तो एक त़रफ़ थोड़े से ''जव'' रखे हुए थे और एक त़रफ़ एक खाल खूंटी पर लटक रही थी। ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ज़ाने की येह काएनात देख कर मेरा दिल भर आया और मेरी आंखों में आंसू आ गए। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे रोने का सबब पूछा तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस से बढ़ कर रोने का और कौन सा मौक़अ़ होगा ? कि क़ैसर व किस्रा ख़ुदा के दुश्मन तो ने'मतों में डूबे हुए ऐ़शो इ़शरत की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा के रसूले मुअ़ज़्ज़म होते हुए भी इस ह़ालत में हैं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि क़ैसर व किस्रा दुन्या लें और हम आख़िरत !

इस के बा'द मैं ने **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मानूस करने के लिये कुछ और भी गुफ़्तगू की यहां तक कि मेरी बात सुन कर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लबे अन्वर पर तबस्सुम के आसार नुमायां हो गए। उस वक़्त मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! क्या आप ने अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن को त़लाक़ दे दी है ? आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''नहीं''। मुझे इस क़दर ख़ुशी हुई कि फ़र्त़े मसर्रत से मैं ने तक्बीर का ना'रा मारा। फिर मैं ने येह गुज़ारिश की या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم मस्जिद में ग़म के मारे बैठे रो रहे हैं अगर इजाज़त हो तो मैं

जा कर उन लोगों को मुत्तलअ़ कर दूं कि त़लाक़ की ख़बर सरासर ग़लत़ है। चुनान्चे मुझे इस की इजाज़त मिल गई और मैं ने जब आ कर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को इस की ख़बर दी तो सब लोग ख़ुश हो कर हश्शाश बश्शाश हो गए और सब को सुकून व इत़्मीनान ह़ासिल हो गया।

जब एक महीना गुज़र गया और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़सम पूरी हो गई तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बालाख़ाने से उतर आए इस के बा'द ही आयते तख़्यीर नाज़िल हुई जो येह है :

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝ وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝[1] (احزاب)

*ऐ नबी ! अपनी बीवियों से फ़रमा दीजिये कि अगर तुम दुन्या की ज़िन्दगी और इस की आराइश चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ माल दूं और अच्छी त़रह़ छोड़ दूं और अगर तुम **अल्लाह** और उस के रसूल और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक **अल्लाह** ने तुम्हारी नेकी वालियों के लिये बहुत बड़ा अज्र तय्यार कर रखा है।*

इन आयाते बय्यिनात का मा ह़सल और ख़ुलासए मत़लब येह है कि रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने येह हुक्म दिया कि आप अपनी मुक़द्दस बीवियों को मुत्तलअ़ फ़रमा दें कि दो चीज़ें तुम्हारे सामने हैं। एक दुन्या की ज़ीनत व आराइश दूसरी आख़िरत की ने'मत। अगर तुम दुन्या की ज़ैबो ज़ीनत चाहती हो तो पैग़म्बर की ज़िन्दगी चूंकि बिल्कुल ही ज़ाहिदाना ज़िन्दगी है इस लिये पैग़म्बर के घर में तुम्हें येह दुन्यवी ज़ीनत व आराइश तुम्हारी मरज़ी के मुत़ाबिक़ नहीं मिल सकती, लिहाज़ा तुम सब मुझ से जुदाई ह़ासिल कर लो। मैं तुम्हें रुख़्सती का जोड़ा

---

[1] ......پ ۲۱، الاحزاب: ۲۸

पहना कर और कुछ माल दे कर रुख़्सत कर दूंगा। और अगर तुम ख़ुदा व रसूल और आख़िरत की ने'मतों की तलब गार हो तो फिर रसूले ख़ुदा के दामने रह़मत से चिमटी रहो। ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ ने तुम नेकूकारों के लिये बहुत ही बड़ा अज्रो सवाब तय्यार कर रखा है जो तुम को आख़िरत में मिलेगा।

(بخاری کتاب الطلاق کتاب العلم۔کتاب اللباس باب موعظۃ الرجل ابنتہ لحال زوجہا)

इस आयत के नुज़ूल के बा'द सब से पहले हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि ऐ आ़इशा ! मैं तुम्हारे सामने एक बात रखता हूं मगर तुम इस के जवाब में जल्दी मत करना और अपने वालिदैन से मश्वरा कर के मुझे जवाब देना। इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़्कूरा बाला तख़्यीर की आयत तिलावत फ़रमा कर उन को सुनाई तो उन्हों ने बर जस्ता अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) !

فَفِیْ اَیِّ هٰذَا اَسْتَامِرُ اَبَوَیَّ فَاِنِّیْ اُرِیْدُ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ

(بخاری ج۲ص۷۹۲باب من خیر نساءہ)

इस मुआ़मले में भला मैं क्या अपने वालिदैन से मश्वरा करूं मैं अल्लाह और उस के रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हूं।

फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने यके बा'द दीगरे तमाम अज़्वाजे मुत़हहरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن को अलग अलग आयते तख़्यीर सुना सुना कर सब को इख़्तियार दिया और सब ने वोही जवाब दिया जो ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जवाब दिया था।

اَللّٰهُ اَکْبَر ! येह वाक़िआ़ इस बात की आफ़्ताब से ज़ियादा रौशन दलील है कि अज़्वाजे मुत़हहरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن को हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात से किस क़दर आ़शिक़ाना शैफ़्तगी और वालिहाना मह़ब्बत थी

1 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب وان کنتن ...الخ، الحدیث:٤٧٨٦، ج٣، ص٣٠٢

कि कई कई सोकनों की मौजूदगी और ख़ानए नुबुव्वत की सादा और ज़ाहिदाना तर्ज़े मुआशरत और तंगी तुर्शी की ज़िन्दगी के बा वुजूद येह रईस ज़ादियां एक लमहे के लिये भी रसूल के दामने रहमत से जुदाई गवारा नहीं कर सकती थीं।

एक ग़लत फ़हमी का इज़ाला

अहादीस की रिवायतों और तफ़्सीरों में "ईला" आयते "तख़्यीर" और हज़रते आइशा व हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُما का "मुज़ाहरा" इन वाक़िआत को आम तौर पर अलग अलग इस तरह बयान किया गया है कि गोया येह मुख़्तलिफ़ ज़मानों के मुख़्तलिफ़ वाक़िआत हैं। इस से एक कम इल्म व कम फ़हम और ज़ाहिर बीन इन्सान को येह धोका हो सकता है कि शायद रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की अज़्वाजे मुतह्हरात के तअल्लुक़ात ख़ुश गवार न थे और कभी "ईला" कभी "तख़्यीर" कभी "मुज़ाहरा" हमेशा एक न एक झगड़ा ही रहता था लेकिन अहले इल्म पर मख़्फ़ी नहीं कि येह तीनों वाक़िआत एक ही सिल्सिले की कड़ियां हैं। चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ की चन्द रिवायात ख़ुसूसन बुख़ारी किताबुन्निकाह बाब मौइज़तुर्रजुल इब्नतुह लि हालि ज़ौजुहा में हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھُمَا की जो मुफ़स्सल रिवायत है, उस में साफ़ तौर पर येह तसरीह है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ईला करना और अज़्वाजे मुतह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن से अलग हो कर बालाख़ाने पर तन्हा नशीनी कर लेना, हज़रते आइशा व हज़रते हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھُمَا का मुज़ाहरा करना, आयते तख़्यीर का नाज़िल होना, येह सब वाक़िआत एक दूसरे से मुन्सलिक और जुड़े हुए हैं और एक ही वक़्त में येह सब वाक़ेअ़ हुए हैं। वरना हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की अज़्वाजे मुतह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن के ख़ुश गवार तअल्लुक़ात जिस क़दर आशिक़ाना उल्फ़त व महब्बत के आईना दार रहे हैं क़ियामत तक इस की मिसाल नहीं मिल

सकती और नुबुव्वत की मुक़द्दस ज़िन्दगी के बे शुमार वाक़िआत इस उल्फ़त व महब्बत के तअ़ल्लुक़ात पर गवाह हैं । जो अहादीस व सीरत की किताबों में आस्मान के सितारों की तरह चमकते और दास्ताने इश्क़ो महब्बत के चमनिस्तानों में मौसिमे बहार के फूलों की तरह महकते हैं ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَزْوَاجِهِ الطَّاهِرَاتِ

اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَبَدَ الْاٰبِدِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

आ़मिलों का तक़र्रुर

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सि. 9 हि. मुहर्रम के महीने में ज़कात व सदक़ात की वुसूली के लिये आ़मिलों और मुहस्सिलों को मुख़्तलिफ़ क़बाइल में रवाना फ़रमाया । इन उमरा व आ़मिलीन की फ़ेहरिस्त में मुन्दरिजए ज़ैल हज़रात ख़ुसूसिय्यत के साथ क़ाबिले ज़िक्र हैं जिन को इब्ने सा'द ने ज़िक्र फ़रमाया है ।

﴾1﴿	हज़रते उ़यैना बिन हसन رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को	बनी तमीम	की तरफ़
﴾2﴿	हज़रते यज़ीद बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को	अस्लम व ग़िफ़ार	//
﴾3﴿	हज़रते उ़बाद बिन बिश्र رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को	सुलैम व मुज़ैना	//
﴾4﴿	हज़रते राफ़ेअ़ बिन मकीस رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को	जुहैना	//
﴾5﴿	हज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को	बनी फ़ज़ारा	//
﴾6﴿	हज़रते ज़हाक बिन सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को	बनी किलाब	//
﴾7﴿	हज़रते बिश्र बिन सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को	बनी का'ब	//
﴾8﴿	हज़रते इब्नुल्लिबतिया رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को	बनी ज़बयान	//
﴾9﴿	हज़रते मुहाजिर बिन अबी उमय्या رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को	सन्आ़अ	//

﴾10﴿	हज़रते ज़ियाद बिन लुबैद अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को	हज़र मोत	//
﴾11﴿	हज़रते अ़दी बिन हातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को	क़बीलए तय व बनी अस्अद	//
﴾12﴿	हज़रते मालिक बिन नुवैरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को	बनी हन्ज़ला	//
﴾13﴿	हज़रते ज़बरक़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को	बनी सा'द के निस्फ़ हिस्से	//
﴾14﴿	हज़रते क़ैस बिन आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को	//	//
﴾15﴿	हज़रते अ़ला बिन अल हज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को	बहरीन	//
﴾16﴿	हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को	नजरान	//

येह **हुज़ूर** शहनशाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के उमरा और आ़मिलीन हैं जिन को आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़कात व सदक़ात व जिज़्या वुसूल करने के लिये मुक़र्रर फ़रमाया था। (اصح السیر ص۳۳۵)

बनी तमीम का वफ़्द

मुहर्रम सि. 9 हि. में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बिश्र बिन सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बनी खुज़ाआ़ के सदक़ात वुसूल करने के लिये भेजा। उन्हों ने सदक़ात वुसूल कर के जम्अ़ किये ना गहां इन पर बनी तमीम ने ह़म्ला कर दिया वोह अपनी जान बचा कर किसी त़रह़ मदीना आ गए और सारा माजरा बयान किया। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनी तमीम की सरकूबी के लिये ह़ज़रते उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पचास सुवारों के साथ भेजा। उन्हों ने बनी तमीम पर उन के सह़रा में ह़म्ला कर के उन के ग्यारह मर्दों, इक्कीस औ़रतों और तीस लड़कों को गरिफ़्तार कर लिया और उन सब क़ैदियों को मदीना लाए।[1] (زرقانی ج۳ص۴۳)

---

1 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی،باب البعث الی بنی تمیم،ج٤، ص ۳۱،۳۰ ملخصاً
ومدارج النبوت،قسم سوم،باب نہم،ج۲،ص ۳۳۱ملخصاً

इस के बा'द बनी तमीम का एक वफ़्द मदीना आया जिस में इस क़बीले के बड़े बड़े सरदार थे और इन का रईसे आ'ज़म अक़्रअ़ बिन ह़ाबिस और इन का ख़त़ीब "अ़त़ारद" और शाइ़र "ज़बरक़ान बिन बद्र" भी इस वफ़्द में साथ आए थे। येह लोग दन दनाते हुए काशानए नुबुव्वत के पास पहुंच गए और चिल्लाने लगे कि आप ने हमारी औ़रतों और बच्चों को किस जुर्म में गरिफ़्तार कर रखा है।

उस वक़्त में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के हुजरए मुबारका में क़ैलूला फ़रमा रहे थे। हर चन्द ह़ज़रते बिलाल और दूसरे सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने उन लोगों को मन्अ़ किया कि तुम लोग काशानए नबवी के पास शोर न मचाओ। नमाज़े ज़ोहर के लिये ख़ुद **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाने वाले हैं। मगर येह लोग एक न माने शोर मचाते ही रहे जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ला कर मस्जिदे नबवी में रौनक़ अफ़्रोज़ हुए तो बनी तमीम का रईसे आ'ज़म अक़्रअ़ बिन ह़ाबिस बोला कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) हमें इजाज़त दीजिये कि हम गुफ़्त्गू करें क्यूं कि हम वोह लोग हैं कि जिस की मद्ह़ कर दें वोह मुज़य्यन हो जाता है और हम लोग जिस की मज़म्मत कर दें वोह ऐ़ब से दाग़दार हो जाता है।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग ग़लत़ कहते हो। येह ख़ुदा वन्दे तआ़ला ही की शान है कि उस की मद्ह़ ज़ीनत और उस की मज़म्मत दाग़ है तुम लोग येह कहो कि तुम्हारा मक़्सद क्या है ? येह सुन कर बनी तमीम कहने लगे कि हम अपने ख़त़ीब और अपने शाइ़र को ले कर यहां आए हैं ताकि हम अपने क़ाबिले फ़ख़्र कारनामों को बयान करें और आप अपने मफ़ाख़िर को पेश करें।

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि न मैं शे'रो शाइरी के लिये भेजा गया हूं न इस त़रह़ की मुफ़ाख़रत का मुझे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हुक्म मिला है। मैं तो ख़ुदा का रसूल हूं इस के बा वुजूद अगर तुम येही करना चाहते हो तो मैं तय्यार हूं।

येह सुनते ही अक़्रअ़ बिन ह़ाबिस ने अपने ख़त़ीब अ़त़ारद की त़रफ़ इशारा किया। इस ने खड़े हो कर अपने मफ़ाख़िर और अपने आबाओ अजदाद के मनाक़िब पर बड़ी फ़साह़त व बलाग़त के साथ एक धूंआधार ख़ुत़्बा पढ़ा। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सार के ख़त़ीब ह़ज़रते साबित बिन क़ैस बिन शमास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जवाब देने का हुक्म फ़रमाया। उन्हों ने उठ कर बर जस्ता ऐसा फ़सीह़ो बलीग़ और मुअस्सिर ख़ुत़्बा दिया कि बनी तमीम उन के ज़ोरे कलाम और मफ़ाख़िर की अ़ज़मत सुन कर दंग रह गए। और उन का ख़त़ीब अ़त़ारद भी हक्का बक्का हो कर शरमिन्दा हो गया फिर बनी तमीम का शाइ़र "ज़बरक़ान बिन बद्र" उठा और उस ने एक क़सीदा पढ़ा। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इशारा फ़रमाया तो उन्हों ने फ़िल बदीह एक ऐसा मुरस्सअ़ और फ़साह़त व बलाग़त से मा'मूर क़सीदा पढ़ दिया कि बनी तमीम का शाइ़र उल्लू बन गया। बिल आख़िर अक़्रअ़ बिन ह़ाबिस कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम ! मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को ग़ैब से ऐसी ताईद व नुस्रत ह़ासिल हो गई है कि हर फ़ज़्लो कमाल इन पर ख़त्म है। बिला शुबा इन का ख़त़ीब हमारे ख़त़ीब से ज़ियादा फ़सीह़ो बलीग़ है और इन का शाइ़र हमारे शाइ़र से बहुत बढ़ चढ़ कर है। इस लिये इन्साफ़ का तक़ाज़ा येह है कि हम इन के सामने सरे तस्लीम ख़म करते हैं। चुनान्चे येह लोग **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार हो गए और कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गए। फिर इन लोगों की दरख़्वास्त पर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के क़ैदियों को रिहा फ़रमा दिया और येह लोग अपने क़बीले में वापस चले गए। इन्ही लोगों के बारे में क़ुरआने मजीद की येह आयत नाज़िल हुई कि

اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَکَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَکْثَرُھُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ۝ وَلَوْ اَنَّھُمْ صَبَرُوْا حَتّٰی تَخْرُجَ اِلَیْھِمْ لَکَانَ خَیْرًا لَّھُمْ ط وَاللّٰہُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ۝[1] (حجرات)

बेशक वोह जो आप को हुजरों के बाहर से पुकारते हैं। उन में अकसर बे अ़क्ल हैं और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि आप उन के पास तशरीफ़ लाते तो येह उन के लिये बेहतर था और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

(مدارج النبوۃ ج۲ص۳۳۲وزرقانی ج۳ص۴۴)[2]

हा़तिम ता़ई की बेटी और बेटा मुसलमान

रबीउ़ल आख़िर सि. 9 हि. में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मा तह़ती में एक सो पचास सुवारों को इस लिये भेजा कि वोह क़बीलए "त़य" के बुतख़ाने को गिरा दें। इन लोगों ने शहर फ़लस में पहुंच कर बुतख़ाने को मुन्हदिम कर डाला और कुछ ऊंटों और बकरियों को पकड़ कर और चन्द औ़रतों को गरिफ़्तार कर के येह लोग मदीना लाए। इन क़ैदियों में मश्हूर सख़ी हा़तिम ता़ई की बेटी भी थी। हा़तिम ता़ई का बेटा अ़दी बिन हा़तिम भाग कर मुल्के शाम चला गया। हा़तिम ता़ई की लड़की जब बारगाहे रिसालत में पेश की गई तो उस ने कहा कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं "हा़तिम ता़ई" की लड़की हूं। मेरे बाप का इनतिक़ाल हो गया और मेरा भाई "अ़दी बिन हा़तिम" मुझे छोड़ कर भाग गया। मैं ज़ईफ़ा हूं आप मुझ पर एह़सान कीजिये ख़ुदा आप पर एह़सान करेगा। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को छोड़ दिया और सफ़र के लिये एक ऊंट भी इनायत फ़रमाया। येह मुसलमान हो कर अपने भाई अ़दी बिन हा़तिम के पास पहुंची और उस

---

1 ......پ۲۶، الحجرات: ۴، ۵

2 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی، باب البعث الی بنی تمیم، ج۴، ص۳۱، ۳۴ ملخصاً
ومدارج النبوت، قسم سوم، باب نہم، ج۲، ص ۳۳۱، ۳۳۲ ملخصاً

को हुज़ूर صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े नुबुव्वत से आगाह किया और रसूलुल्लाह صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ की। अ़दी बिन ह़ातिम अपनी बहन की ज़बानी हुज़ूर (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के ख़ुल्क़े अ़ज़ीम और आ़दाते करीमा के ह़ालात सुन कर बेह़द मुतअस्सिर हुए और बिग़ैर कोई अमान त़लब किये हुए मदीना ह़ाज़िर हो गए। लोगों ने बारगाहे नुबुव्वत में येह ख़बर दी कि अ़दी बिन ह़ातिम आ गया है। हुज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इनतिहाई करीमाना अन्दाज़ से अ़दी बिन ह़ातिम के हाथ को अपने दस्ते रह़्मत में ले लिया और फ़रमाया कि ऐ अ़दी ! तुम किस चीज़ से भागे ? क्या لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ कहने से तुम भागे ? क्या ख़ुदा के सिवा कोई और मा'बूद भी है ? अ़दी बिन ह़ातिम ने कहा कि "नहीं"। फिर कलिमा पढ़ लिया और मुसलमान हो गए इन के इस्लाम क़बूल करने से हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस क़दर ख़ुशी हुई कि फ़र्ते मसर्रत से आप का चेहरए अन्वर चमकने लगा और आप ने इन को ख़ुसूसी इनायात से नवाज़ा।

ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी अपने बाप ह़ातिम की त़रह़ बहुत ही सख़ी थे। ह़ज़रते इमाम अह़मद नाक़िल हैं कि किसी ने इन से एक सो दिरहम का सुवाल किया तो येह ख़फ़ा हो गए और कहा कि तुम ने फ़क़त़ एक सो दिरहम ही मुझ से मांगा तुम नहीं जानते कि मैं ह़ातिम का बेटा हूं ख़ुदा की क़सम ! मैं तुम को इतनी ह़क़ीर रक़म नहीं दूंगा।

येह बहुत ही शानदार सह़ाबी हैं, ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर में जब बहुत से क़बाइल ने अपनी ज़कात रोक दी और बहुत से मुर्तद हो गए येह उस दौर में भी पहाड़ की त़रह़ इस्लाम पर साबित क़दम रहे और अपनी क़ौम की ज़कात ला कर बारगाहे ख़िलाफ़त में पेश की और इराक़ की फ़ुतूह़ात और दूसरे इस्लामी जिहादों में मुजाहिद की ह़ैसिय्यत से शरीक हुए और सि. 68 हि. में एक सो बीस बरस की उ़म्र पा कर विसाल

फ़रमाया और सिहाह़ सित्ता की हर किताब में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत कर्दा ह़दीसें मज़्कूर हैं।[1] (زرقانی ج۳ص۵۳ومدارج ج۲ص۳۴۷)

ग़ज़्वए तबूक

"तबूक" मदीना और शाम के दरमियान एक मक़ाम का नाम है जो मदीने से चौदह मन्ज़िल दूर है। बा'ज़ मुअर्रिख़ीन का क़ौल है कि "तबूक" एक क़ल्ए़ का नाम है और बा'ज़ का क़ौल है कि "तबूक" एक चश्मे का नाम है। मुमकिन है येह सब बातें मौजूद हों !

येह ग़ज़्वा सख़्त क़ह़त़ के दिनों में हुवा। त़वील सफ़र, हवा गर्म, सुवारी कम, खाने पीने की तक्लीफ़, लश्कर की ता'दाद बहुत ज़ियादा, इस लिये इस ग़ज़्वे में मुसलमानों को बड़ी तंगी और तंग दस्ती का सामना करना पड़ा। येही वजह है कि इस ग़ज़्वे को "जैशुल उ़सरह" (तंग दस्ती का लश्कर) भी कहते हैं और चूंकि मुनाफ़िक़ों को इस ग़ज़्वे में बड़ी शरमिन्दगी और शर्मसारी उठानी पड़ी थी। इस वजह से इस का एक नाम "ग़ज़्वए फ़ाज़िह़ा" (रुस्वा करने वाला ग़ज़्वा) भी है। इस पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि इस ग़ज़्वे के लिये **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم माहे रजब सि. 9 हि. जुमा'रात के दिन रवाना हुए।[2] (زرقانی ج۳ص۶۳)

ग़ज़्वए तबूक का सबब

अ़रब का ग़स्सानी ख़ानदान जो क़ैसरे रूम के ज़ेरे असर मुल्के शाम पर हुकूमत करता था चूंकि वोह ईसाई था इस लिये क़ैसरे रूम ने इस को अपना आलए कार बना कर मदीने पर फ़ौज कशी का अ़ज़्म कर लिया। चुनान्चे मुल्के शाम के जो सौदागर रोग़ने ज़ैतून बेचने मदीने आया करते

---

1 ......المواهب اللدنيةمع شرح الزرقاني، هدم صنم طيء،ج٤،ص٤٨-٥٠

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب نهم،ج٢،ص٣٤٣-٣٤٤ و المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،باب ثم غزوة تبوك،ج٤،ص٦٥-٦٧ ملخصاً

थे। उन्हों ने ख़बर दी कि क़ैसरे रूम की हुकूमत ने मुल्के शाम में बहुत बड़ी फ़ौज जम्अ़ कर दी है। और उस फ़ौज में रूमियों के इलावा क़बाइले लख़्म व जुज़ाम व ग़स्सान के तमाम अ़रब भी शामिल हैं। इन ख़बरों का तमाम अ़रब में हर त़रफ़ चर्चा था और रूमियों की इस्लाम दुश्मनी कोई ढकी छुपी चीज़ नहीं थी इस लिये इन ख़बरों को ग़लत़ समझ कर नज़र अन्दाज़ कर देने की भी कोई वजह नहीं थी। इस लिये हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी फ़ौज की तय्यारी का हुक्म दे दिया।

लेकिन जैसा कि हम तह़रीर कर चुके हैं कि उस वक़्त हिजाज़े मुक़द्दस में शदीद क़ह़त़ था और बे पनाह शिद्दत की गर्मी पड़ रही थी इन वुजूहात से लोगों को घर से निकलना शाक़ गुज़र रहा था। मदीने के मुनाफ़िक़ीन जिन के निफ़ाक़ का भांडा फूट चुका था वोह ख़ुद भी फ़ौज में शामिल होने से जी चुराते थे और दूसरों को भी मन्अ़ करते थे। लेकिन इस के बा वुजूद तीस हज़ार का लश्कर जम्अ़ हो गया। मगर इन तमाम मुजाहिदीन के लिये सुवारियों और सामाने जंग का इनतिज़ाम करना एक बड़ा ही कठिन मरह़ला था क्यूं कि लोग क़ह़त़ की वजह से इनतिहाई मफ़्लूकुल ह़ाल और परेशान थे। इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम क़बाइले अ़रब से फ़ौजें और माली इमदाद त़लब फ़रमाई। इस त़रह़ इस्लाम में किसी कारे ख़ैर के लिये चन्दा करने की सुन्नत क़ाइम हुई।[1]

फ़ेहरिस्ते चन्दा दिहन्दगान

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपना सारा माल और घर का तमाम असासा यहां तक कि बदन के कपड़े भी ला कर बारगाहे नुबुव्वत में पेश कर दिये। और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपना आधा माल इस चन्दे में दे दिया। मन्क़ूल है कि ह़ज़रते उ़मर

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی ، باب ثم غزوة تبوك،ج٤،ص٦٨۔٧٢

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब अपना निस्फ़ माल ले कर बारगाहे अक़्दस में चले तो अपने दिल में येह ख़याल कर के चले थे कि आज मैं ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से सब्क़त ले जाऊंगा क्यूं कि उस दिन काशानए फ़ारूक़ में इत्तिफ़ाक़ से बहुत ज़ियादा माल था। **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! कितना माल यहां लाए और किस क़दर घर पर छोड़ा ? अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! आधा माल ह़ाज़िरे ख़िदमत है और आधा माल अहलो इ़याल के लिये घर में छोड़ दिया है और जब येही सुवाल अपने यारे ग़ार ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से किया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि "اِدَّ خَرْتُ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہٗ" मैं ने **अल्लाह** और उस के रसूल को अपने घर का ज़ख़ीरा बना दिया है। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि مَا بَیْنَکُمَا مَا بَیْنَ کَلِمَتَیْکُمَا तुम दोनों में इतना ही फ़र्क़ है जितना तुम दोनों के कलामों में फ़र्क़ है।

ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक हज़ार ऊंट और सत्तर घोड़े मुजाहिदीन की सुवारी के लिये और एक हज़ार अशरफ़ी फ़ौज के अख़्राजात की मद में अपनी आस्तीन में भर कर लाए और **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आग़ोशे मुबारक में बिखैर दिया। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को क़बूल फ़रमा कर येह दुआ़ फ़रमाई कि

اَللّٰھُمَّ ارْضِ عَنْ عُثْمَانَ فَاِنِّیْ عَنْہُ رَاضٍ

*ऐ **अल्लाह** तू उ़समान से राज़ी हो जा, क्यूं कि मैं इस से ख़ुश हो गया हूं।*

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चालीस हज़ार दिरहम दिया और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मेरे घर में इस वक़्त अस्सी हज़ार दिरहम थे। आधा बारगाहे अक़्दस में लाया हूं और आधा घर पर बाल बच्चों के लिये छोड़ आया हूं। इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला इस में भी बरकत दे जो तुम लाए और

उस में भी बरकत अ़ता फ़रमाए जो तुम ने घर पर रखा। इस दुआ़ए नबवी का येह असर हुवा कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ज़ियादा मालदार हो गए।

इसी त़रह़ तमाम अन्सार व मुहाजिरीन ने ह़स्बे तौफ़ीक़ इस चन्दे में ह़िस्सा लिया। औ़रतों ने अपने ज़ेवरात उतार उतार कर बारगाहे नुबुव्वत में पेश करने की सआ़दत ह़ासिल की।

ह़ज़रते आ़सिम बिन अ़दी अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कई मन खजूरें दीं। और ह़ज़रते अबू अ़क़ील अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो बहुत ही मुफ़्लिस थे फ़क़त़ एक साअ़ खजूर ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए और गुज़ारिश की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं ने दिन भर पानी भर भर कर मज़्दूरी की तो दो साअ़ खजूरें मुझे मज़्दूरी में मिली हैं। एक साअ़ अहलो इ़याल को दे दी है और येह एक साअ़ ह़ाज़िरे ख़िदमत है। **हुज़ूर** रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ल्बे नाज़ुक अपने एक मुफ़्लिस जां निसार के इस नज़रानए ख़ुलूस से बेह़द मुतअस्सिर हुवा और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस खजूर को तमाम मालों के ऊपर रख दिया।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ ص۳۴۵ تا ص۳۴۶)

फ़ौज की तय्यारी

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का अब तक येह त़रीक़ा था कि ग़ज़्वात के मुआ़मले में बहुत ज़ियादा राज़्दारी के साथ तय्यारी फ़रमाते थे। यहां तक कि अ़साकिरे इस्लामिया को ऐ़न वक़्त तक येह भी न मा'लूम होता था कि कहां और किस त़रफ़ जाना है? मगर जंगे तबूक के मौक़अ़ पर सब कुछ इनतिज़ाम अ़लानिया त़ौर पर किया और येह भी बता दिया कि तबूक चलना है और क़ैसरे रूम की फ़ौजों से जिहाद करना है ताकि लोग ज़ियादा से ज़ियादा तय्यारी कर लें।

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نهم، ج۲، ص٣٤٤_٣٤٦

والمواهب اللدنية وشرح الزرقانی، باب ثم غزوة تبوك، ج٤، ص٦٩_٧١

हज़राते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने जैसा कि लिखा जा चुका दिल खोल कर चन्दा दिया मगर फिर भी पूरी फ़ौज के लिये सुवारियों का इनतिज़ाम न हो सका। चुनान्चे बहुत से जांबाज़ मुसलमान इसी बिना पर इस जिहाद में शरीक न हो सके कि उन के पास सफ़र का सामान नहीं था येह लोग दरबारे रिसालत में सुवारी त़लब करने के लिये ह़ाज़िर हुए मगर जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरे पास सुवारी नहीं है तो येह लोग अपनी बे सरो सामानी पर इस त़रह़ बिलबिला कर रोए कि **हुज़ूर** रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उन की आहो ज़ारी और बे क़रारी पर रह़्म आ गया। चुनान्चे क़ुरआने मजीद गवाह है कि [1]

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ص تَوَلَّوْا وَّ أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنفِقُونَ ○ [2] (سورۃ التوبہ)

और न उन लोगों पर कुछ ह़रज है कि वोह जब (ऐ रसूल) आप के पास आए कि हम को सुवारी दीजिये और आप ने कहा कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं जिस पर तुम्हें सुवार करूं तो वोह वापस गए और उन की आंखों से आंसू जारी थे कि अफ़्सोस हमारे पास ख़र्च नहीं है।

तबूक को रवानगी

बहर ह़ाल **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तीस हज़ार का लश्कर साथ ले कर तबूक के लिये रवाना हुए और मदीने का नज़्मो नस्क़ चलाने के लिये ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपना ख़लीफ़ा बनाया। जब ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने निहायत ही ह़सरत व अफ़्सोस के साथ

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نہم، ج۲، ص۳٤۷

والمواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب ثم غزوة تبوك، ج٤، ص٧٢ـ٧٥

2 ......پ١٠، التوبة:٩٢

अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! क्या आप मुझे औ़रतों और बच्चों में छोड़ कर खुद जिहाद के लिये तशरीफ़ लिये जा रहे हैं तो इरशाद फ़रमाया कि

اَلَا تَرْضٰى اَنْ تَكُوْنَ مِنِّيْ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُوْسٰى اِلَّا اَنَّهٗ لَيْسَ نَبِيٌّ بَعْدِيْ (1)(بخاری ج۲ص۶۳۳غزوۂ تبوک)

क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि तुम को मुझ से वोह निस्बत है जो ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ थी मगर येह कि मेरे बा'द कोई नबी नहीं है।

या'नी जिस त़रह़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर पर जाते वक़्त ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को अपनी उम्मत बनी इस्राईल की देखभाल के लिये अपना ख़लीफ़ा बना कर गए थे इसी त़रह़ मैं तुम को अपनी उम्मत सोंप कर जिहाद के लिये जा रहा हूं।

मदीने से चल कर मक़ामे "सनिय्यतिल वदाअ़" में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियाम फ़रमाया। फिर फ़ौज का जाएज़ा लिया और फ़ौज का मुक़द्दमा, मैमना, मैसरा वग़ैरा मुरत्तब फ़रमाया। फिर वहां से कूच किया। मुनाफ़िक़ीन क़िस्म क़िस्म के झूटे उ़ज़्र और बहाने बना कर रह गए और मुख़्लिस मुसलमानों में से भी चन्द ह़ज़रात रह गए उन में येह ह़ज़रात थे : का'ब बिन मालिक, हिलाल बिन उमय्या, मुरारह बिन रबीअ़, अबू ख़ैसमा, अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم। इन में से अबू ख़ैसमा और अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ तो बा'द में जा कर शरीके जिहाद हो गए लेकिन तीन अव्वलुज़्ज़िक्र नहीं गए।

ह़ज़रते अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पीछे रह जाने का सबब येह हुवा कि उन का ऊंट बहुत ही कमज़ोर और थका हुवा था। इन्हों ने उस को चन्द दिन चारा खिलाया ताकि वोह चंगा हो जाए।

---

1 ......صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة تبوك...الخ، الحديث: ٤٤١٦، ج٣، ص١٤٤

जब रवाना हुए तो वोह फिर रास्ते में थक गया। मजबूरन वोह अपना सामान अपनी पीठ पर लाद कर चल पड़े और इस्लामी लश्कर में शामिल हो गए।[1] (زرقانی ج۳ص۷۱)

हज़रते अबू ख़ैसमा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ जाने का इरादा नहीं रखते थे मगर वोह एक दिन शदीद गर्मी में कहीं बाहर से आए तो उन की बीवी ने छप्पर में छिड़काव कर रखा था।

थोड़ी देर उस सायादार और ठन्डी जगह में बैठे फिर ना गहां उन के दिल में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़याल आ गया। अपनी बीवी से कहा कि येह कहां का इन्साफ़ है कि मैं तो अपनी छप्पर में ठन्डक और साए में आराम व चैन से बैठा रहूं और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुक़द्दस रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस धूप की तमाज़त और शदीद लू के थपेड़ों में सफ़र करते हुए जिहाद के लिये तशरीफ़ ले जा रहे हों एक दम उन पर ऐसी ईमानी ग़ैरत सुवार हो गई कि तोशे के लिये खजूर ले कर एक ऊंट पर सुवार हो गए और तेज़ी के साथ सफ़र करते हुए रवाना हो गए। लश्कर वालों ने दूर से एक शुतर सुवार को देखा तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अबू ख़ैसमा होंगे इस तरह येह भी लश्करे इस्लाम में पहुंच गए।[2] (زرقانی ج۳ص۷۱)

रास्ते में क़ौमे आद व समूद की वोह बस्तियां मिलीं जो क़हरे इलाही के अज़ाबों से उलट पलट कर दी गई थीं। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि येह वोह जगहें हैं जहां ख़ुदा का अज़ाब नाज़िल हो चुका है इस लिये कोई शख़्स यहां क़ियाम न करे बल्कि निहायत तेज़ी के साथ सब लोग यहां से सफ़र कर के इन अज़ाब की वादियों से जल्द बाहर निकल जाएं और कोई यहां का पानी न पिये और न किसी काम में लाए।

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني ، باب ثم غزوة تبوك، ج٤، ص ٨١ـ ٨٢، ٨٣

2 ......شرح الزرقاني على المواهب، باب ثم غزوة تبوك، ج٤، ص ٨٢

इस ग़ज़्वे में पानी की क़िल्लत, शदीद गर्मी, सुवारियों की कमी से मुजाहिदीन ने बेहद तक्लीफ़ उठाई मगर मन्ज़िले मक़्सूद पर पहुंच कर ही दम लिया।[1]

रास्ते के चन्द मो'जिज़ात

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को देखा कि वोह सब से अलग अलग चल रहे हैं। तो इरशाद फ़रमाया कि येह सब से अलग ही चलेंगे और अलग ही ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और अलग ही वफ़ात पाएंगे। चुनान्चे ठीक ऐसा ही हुवा कि हज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में इन को हुक्म दे दिया कि आप "रबज़ा" में रहें आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ रबज़ा में अपनी बीवी और ग़ुलाम के साथ रहने लगे। जब वफ़ात का वक़्त आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि तुम दोनों मुझ को ग़ुस्ल दे कर और कफ़न पहना कर रास्ते में रख देना। जब शुतर सुवारों का पहला गुरौह मेरे जनाज़े के पास से गुज़रे तो तुम लोग उस से कहना कि येह अबू ज़र गिफ़ारी का जनाज़ा है इन पर नमाज़ पढ़ कर इन को दफ़्न करने में हमारी मदद करो। ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की शान कि सब से पहला जो क़ाफ़िला गुज़रा उस में हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने जब येह सुना कि येह हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का जनाज़ा है। तो उन्हों ने اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رَاجِعُوْن पढ़ा और क़ाफ़िले को रोक कर उतर पड़े और कहा कि बिल्कुल सच फ़रमाया था रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने कि "ऐ अबू ज़र ! तू तन्हा चलेगा, तन्हा मरेगा, तन्हा क़ब्र से उठेगा।" फिर हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ और क़ाफ़िले वालों ने उन को पूरे ए'ज़ाज़ के साथ दफ़्न किया।[2] (سیرت ابن ہشام ج۴ ص ۵۲۴ وزرقانی ج۳ ص ۷۴)

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب ثم غزوة تبوك، ج٤، ص٨٥

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب ثم غزوة تبوك، ج٤، ص٨٣

बा'ज़ रिवायतों में येह भी आया है कि उन की बीवी के पास कफ़न के लिये कपड़ा नहीं था तो आने वाले लोगों में से एक अन्सारी ने कफ़न के लिये कपड़ा दिया और नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर दफ़्न किया। (وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم)

हवा उड़ा ले गई

जब इस्लामी लश्कर मक़ामे "ह़जर" में पहुंचा तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि कोई शख़्स अकेला लश्कर से बाहर कहीं दूर न चला जाए पूरे लश्कर ने इस हुक्मे नबवी की इत़ाअ़त की मगर क़बीलए बनू साइदा के दो आदमियों ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म को नहीं माना। एक शख़्स अकेला ही रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये लश्कर से दूर चला गया वोह बैठा ही था कि दफ़्अ़तन किसी ने उस का गला घोंट दिया और वोह उसी जगह मर गया और दूसरा शख़्स अपना ऊंट पकड़ने के लिये अकेला ही लश्कर से कुछ दूर चला गया तो ना गहां एक हवा का झोंका आया और उस को उड़ा कर क़बीलए "त़य" के दोनों पहाड़ों के दरमियान फेंक दिया और वोह हलाक हो गया आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन दोनों का अन्जाम सुन कर फ़रमाया कि क्या मैं ने तुम लोगों को मन्अ़ नहीं कर दिया था ?[1] (زرقانی ج۳ص۷۳)

गुमशुदा ऊंटनी कहां है ?

एक मन्ज़िल पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ऊंटनी कहीं चली गई और लोग उस की तलाश में सरगर्दां फिरने लगे तो एक मुनाफ़िक़ जिस का नाम "ज़ैद बिन लसीत" था कहने लगा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) कहते हैं कि मैं **अल्लाह** का नबी हूं और मेरे पास आस्मान की ख़बरें आती हैं मगर इन को येह पता ही नहीं है कि इन की ऊंटनी कहां है ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से फ़रमाया कि एक

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني ، باب ثم غزوة تبوك، ج٤، ص٨٥،٨٦

शख़्स ऐसा ऐसा कहता है ह़ालां कि खुदा की क़सम ! अल्लाह तआ़ला के बता देने से मैं ख़ूब जानता हूं कि मेरी ऊंटनी कहां है ? वोह फ़ुलां घाटी में है और एक दरख़्त में उस की मुहार की रस्सी उलझ गई है । तुम लोग जाओ और उस ऊंटनी को मेरे पास ले कर आ जाओ । जब लोग उस जगह गए तो ठीक ऐसा ही देखा कि उसी घाटी में वोह ऊंटनी खड़ी है और उस की मुहार एक दरख़्त की शाख़ में उलझी हुई है ।[1] (زرقانی ج٣ص٧٥)

तबूक का चश्मा

जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तबूक के क़रीब में पहुंचे तो इरशाद फ़रमाया कि اِنْ شَاءَ اللّٰه تعالٰی कल तुम लोग तबूक के चश्मे पर पहुंचोगे और सूरज बुलन्द होने के बा'द पहुंचोगे लेकिन कोई शख़्स वहां पहुंचे तो पानी को हाथ न लगाए । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब वहां पहुंचे तो जूते के तस्मे के बराबर उस में एक पानी की धार बह रही थी । आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस में से थोड़ा सा पानी मंगा कर हाथ मुंह धोया और उस पानी में कुल्ली फ़रमाई । फिर हुक्म दिया कि इस पानी को चश्मे में उंडेल दो । लोगों ने जब उस पानी को चश्मे में डाला तो चश्मे से ज़ोरदार पानी की मोटी धार बहने लगी और तीस हज़ार का लश्कर और तमाम जानवर उस चश्मे के पानी से सैराब हो गए ।[2]

(زرقانی ج٣ص٧٦)

रूमी लश्कर डर गया

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तबूक में पहुंच कर लश्कर को पड़ाव का हुक्म दिया । मगर दूर दूर तक रूमी लश्करों का कोई पता

---

1 ......المواهب اللدنيةمع شرح الزرقانی ، باب ثم غزوة تبوك، ج٤، ص٨٩

2 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانی ، باب ثم غزوة تبوك، ج٤، ص٩٠

नहीं चला। वाक़िआ़ येह हुवा कि जब रूमियों के जासूसों ने क़ैसर को ख़बर दी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तीस हज़ार का लश्कर ले कर तबूक में आ रहे हैं तो रूमियों के दिलों पर इस क़दर हैबत छा गई कि वोह जंग से हिम्मत हार गए और अपने घरों से बाहर न निकल सके।[1]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बीस दिन तबूक में क़ियाम फ़रमाया और अत़राफ़ व जवानिब में अफ़्वाजे इलाही का जलाल दिखा कर और कुफ़्फ़ार के दिलों पर इस्लाम का रो'ब बिठा कर मदीना वापस तशरीफ़ लाए और तबूक में कोई जंग नहीं हुई।

इसी सफ़र में "ऐलह" का सरदार जिस का नाम "यख़्नह" था बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और जिज़्या देना क़बूल कर लिया और एक सफ़ेद ख़च्चर भी दरबारे रिसालत में नज़्र किया जिस के सिले में ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को अपनी चादरे मुबारक इनायत फ़रमाई और उस को एक दस्तावेज़ तह़रीर फ़रमा कर अ़ता फ़रमाई कि वोह अपने गिर्दो पेश के समुन्दर से हर क़िस्म के फ़वाइद ह़ासिल करता रहे।[2] (بخاری ج۱ ص۴۴۸)

इसी त़रह़ "जरबा" और "अज़्रह़" के ईसाइयों ने भी ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर जिज़्या देने पर रिज़ा मन्दी ज़ाहिर की।

इस के बा'द **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक सो बीस सुवारों के साथ "दूमतिल जन्दल" के बादशाह "अकीदर बिन अ़ब्दुल मलिक" की त़रफ़ रवाना फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि वोह रात में नीलगाय का शिकार कर रहा होगा तुम उस के पास पहुंचो तो उस को क़त्ल मत करना बल्कि उस को

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب نہم، ج۲،ص۳۴۹ مختصراً

2 ......صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ،باب خرص التمر،الحدیث:۱۴۸۱،ج۱، ص۴۹۹ ملتقطاً
والمواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی، باب ثم غزوۃ تبوک،ج۴، ص۹۱،۹۶

ज़िन्दा गरिफ़्तार कर के मेरे पास लाना। चुनान्चे ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने चांदनी रात में अकीदर और उस के भाई ह़स्सान को शिकार करते हुए पा लिया। ह़स्सान ने चूंकि ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से जंग शुरूअ़ कर दी। इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस को तो क़त्ल कर दिया मगर अकीदर को गरिफ़्तार कर लिया और इस शर्त़ पर उस को रिहा किया कि वोह मदीना बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर सुल्ह़ करे। चुनान्चे वोह मदीने आया और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को अमान दी।[1] (زرقانی ج۳ص۷۷وص۷۸)

इस ग़ज़्वे में जो लोग ग़ैर ह़ाज़िर रहे उन में अकसर मुनाफ़िक़ीन थे। जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तबूक से मदीने वापस आए और मस्जिदे नबवी में नुज़ूले इज्लाल फ़रमाया तो मुनाफ़िक़ीन क़समें खा खा कर अपना अपना उ़ज़्र बयान करने लगे। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी से कोई मुवाख़ज़ा नहीं फ़रमाया लेकिन तीन मुख़्लिस सह़ाबियों ह़ज़रते का'ब बिन मालिक व हिलाल बिन उमय्या व मुरारह बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم का पचास दिनों तक आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बायकॉट फ़रमा दिया। फिर इन तीनों की तौबा क़बूल हुई और इन लोगों के बारे में कुरआन की आयत नाज़िल हुई।[2] (इस का मुफ़स्सल एक वा'ज़ हम ने अपनी किताब "इरफ़ानी तक़रीरें" में लिख दिया है।) (بخاری ج۲ص۶۳۴تاص۶۳۷حدیث کعب بن مالک)

जब **हुज़ूर** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) मदीने के क़रीब पहुंचे और उहुद पहाड़ को देखा तो फ़रमाया कि هٰذَا اُحُدٌ جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهٗ[3] येह उहुद है। येह ऐसा पहाड़ है कि येह हम से मह़ब्बत करता है और हम इस से मह़ब्बत करते हैं।

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی ، باب ثم غزوة تبوك،ج٤،ص٩١،٩٤

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی ، باب ثم غزوة تبوك،ج٤،ص١٠٧،١٠٩ملخصاً

3 ......صحيح البخاری،كتاب المغازی، باب ٨٣،الحديث: ٤٤٢٢،ج٣،ص١٥٠

जब आप صَلَّى الله تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीने की सर ज़मीन में क़दम रखा तो औ़रतें, बच्चे और लौंडी गुलाम सब इस्तिक़्बाल के लिये निकल पड़े और इस्तिक़्बालिया नज़्में पढ़ते हुए आप के साथ मस्जिदे नबवी तक आए। जब आप صَلَّى الله تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिदे नबवी में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर तशरीफ़ फ़रमा हो गए। तो **हुज़ूर** صَلَّى الله تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आप की मद्ह़ में एक क़सीदा पढ़ा और अहले मदीना ने बख़ैरो आ़फ़िय्यत इस दुश्वार गुज़ार सफ़र से आप صَلَّى الله تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी पर इनतिहाई मसर्रत व शादमानी का इज़्हार किया और उन मुनाफ़िक़ीन के बारे में जो झूटे बहाने बना कर इस जिहाद में शरीक नहीं हुए थे और बारगाहे नुबुव्वत में क़समें खा खा कर उ़ज़्र पेश कर रहे थे, क़हरो ग़ज़ब में भरी हुई कुरआने मजीद की आयतें नाज़िल हुईं और उन मुनाफ़िक़ों के निफ़ाक़ का पर्दा चाक हो गया।[1]

ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की क़ब्र

ग़ज़्वए तबूक में बजुज़ एक ह़ज़रते ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के न किसी सह़ाबी की शहादत हुई न वफ़ात। ह़ज़रते ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कौन थे ? और इन की वफ़ात और दफ़्न का कैसा मंज़र था ? येह एक बहुत ही ज़ौक़ आफ़रीं और लज़ीज़ ह़िकायत है। येह क़बीलए मुज़ैना के एक यतीम थे और अपने चचा की परवरिश में थे। जब येह सिने शुऊ़र को पहुंचे और इस्लाम का चरचा सुना तो इन के दिल में बुत परस्ती से नफ़रत और इस्लाम क़बूल करने का जज़्बा पैदा हुवा। मगर इन का चचा बहुत ही कट्टर काफ़िर था। उस के ख़ौफ़ से येह इस्लाम क़बूल नहीं कर सकते थे। लेकिन फ़त्ह़े मक्का के बा'द जब लोग फ़ौज दर फ़ौज इस्लाम में दाख़िल होने लगे तो इन्हों ने अपने चचा को तरग़ीब

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني ، باب ثم غزوة تبوك،ج٤،ص١٠٠،١٠٤ ملخصاً

दी कि तुम भी दामने इस्लाम में आ जाओ क्यूं कि मैं क़बूले इस्लाम के लिये बहुत ही बे क़रार हूं। येह सुन कर इन के चचा ने इन को बरहना कर के घर से निकाल दिया। इन्हों ने अपनी वालिदा से एक कम्बल मांग कर उस को दो टुकड़े कर के आधे को तहबन्द और आधे को चादर बना लिया और इसी लिबास में हिजरत कर के मदीने पहुंच गए। रात भर मस्जिदे नबवी में ठहरे रहे। नमाज़े फ़ज्र के वक़्त जब जमाले मुहम्मदी के अन्वार से इन की आंखें मुनव्वर हुईं तो कलिमा पढ़ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन का नाम दरयाफ़्त फ़रमाया तो इन्हों ने अपना नाम अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बता दिया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि आज से तुम्हारा नाम अ़ब्दुल्लाह और लक़ब ज़ुल बिजादैन (दो कम्बलों वाला) है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इन पर बहुत करम फ़रमाते थे और येह मस्जिदे नबवी में अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा की जमाअ़त के साथ रहने लगे और निहायत बुलन्द आवाज़ से ज़ौक़ो शौक़ के साथ कुरआने मजीद पढ़ा करते थे। जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जंगे तबूक के लिये रवाना हुए तो येह भी मुजाहिदीन में शामिल हो कर चल पड़े और बड़े ही ज़ौक़ो शौक़ और इनतिहाई इश्तियाक़ के साथ दरख़्वास्त की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! दुआ़ फ़रमाइये कि मुझे ख़ुदा की राह में शहादत नसीब हो जाए। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम किसी दरख़्त की छाल लाओ। वोह थोड़ी सी बबूल की छाल लाए। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के बाज़ू पर वोह छाल बांध दी और दुआ़ की, कि ऐ अल्लाह ! मैं ने इस के ख़ून को कुफ़्फ़ार पर ह़राम कर दिया। इन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मेरा मक़्सद तो शहादत ही है। इरशाद फ़रमाया कि जब तुम जिहाद के लिये निकले हो तो अगर बुख़ार में भी मरोगे जब भी तुम शहीद ही होगे। ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की शान कि जब ह़ज़रते ज़ुल बिजादैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ तबूक में पहुंचे तो बुख़ार में मुब्तला हो गए और उसी बुख़ार में इन की वफ़ात हो गई।

हज़रते बिलाल बिन हारिस मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि इन के दफ़्न का अजीब मंज़र था कि हज़रते बिलाल मुअज़्ज़िन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हाथ में चराग़ लिये इन की क़ब्र के पास खड़े थे और ख़ुद ब नफ़्से नफ़ीस **हुज़ूरे** अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन की क़ब्र में उतरे और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को हुक्म दिया कि तुम दोनों अपने इस्लामी भाई की लाश को उठाओ। फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को अपने दस्ते मुबारक से लहद में सुलाया और ख़ुद ही क़ब्र को कच्ची ईंटों से बन्द फ़रमाया और फिर येह दुआ मांगी कि या **अल्लाह** ! मैं ज़ुल बिजादैन से राज़ी हूं तू भी इस से राज़ी हो जा।

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दफ़्न का मंज़र देखा तो बे इख़्तियार उन के मुंह से निकला कि काश ! ज़ुल बिजादैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जगह येह मेरी मय्यित होती।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۵۰وص۳۵۱)

मस्जिदे ज़िरार

मुनाफ़िक़ों ने इस्लाम की बेख़्कुनी और मुसलमानों में फूट डालने के लिये मस्जिदे क़ुबा के मुक़ाबले में एक मस्जिद ता'मीर की थी जो दर हक़ीक़त मुनाफ़िक़ीन की साज़िशों और इन की दसीसा कारियों का एक ज़बरदस्त अड्डा था। अबू आमिर राहिब जो अन्सार में से ईसाई हो गया था जिस का नाम **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू आमिर फ़ासिक़ रखा था उस ने मुनाफ़िक़ीन से कहा कि तुम लोग ख़ुफ़्या तरीक़े पर जंग की तय्यारियां करते रहो। मैं क़ैसरे रूम के पास जा कर वहां से फ़ौजें लाता हूं ताकि इस मुल्क से इस्लाम का नामो निशान मिटा दूं। चुनान्चे इसी मस्जिद में बैठ बैठ कर इस्लाम के ख़िलाफ़ मुनाफ़िक़ीन कमेटियां करते थे और इस्लाम व बानिये इस्लाम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ातिमा कर देने की तदबीरें सोचा करते थे।

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نہم، ج۲، ص۳۵۰

जब **हुज़ूर** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जंगे तबूक के लिये रवाना होने लगे तो मक्कार मुनाफ़िक़ों का एक गुरौह आया और महूज़ मुसलमानों को धोका देने के लिये बारगाहे अक्दस में येह दरख़्वास्त पेश की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! हम ने बीमारों और मा'ज़ूरों के लिये एक मस्जिद बनाई है। आप चल कर एक मरतबा इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ा दें ताकि हमारी येह मस्जिद ख़ुदा की बारगाह में मक्बूल हो जाए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया कि इस वक़्त तो मैं जिहाद के लिये घर से निकल चुका हूं लिहाज़ा इस वक़्त तो मुझे इतना मौक़अ़ नहीं है। मुनाफ़िक़ीन ने काफ़ी इसरार किया मगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की इस मस्जिद में क़दम नहीं रखा। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जंगे तबूक से वापस तशरीफ़ लाए तो मुनाफ़िक़ीन की चाल बाज़ियों और इन की मक्कारियों, दग़ा बाज़ियों के बारे में "सूरए तौबह" की बहुत सी आयात नाज़िल हो गईं और मुनाफ़िक़ीन के निफ़ाक़ और इन की इस्लाम दुश्मनी के तमाम रुमूज़ व असरार बे निक़ाब हो कर नज़रों के सामने आ गए। और उन की इस मस्जिद के बारे में ख़ुसूसिय्यत के साथ येह आयतें नाज़िल हुईं कि

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا ۢ بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ

और वोह लोग जिन्हों ने एक मस्जिद ज़रर पहुंचाने और कुफ़्र करने और मुसलमानों में फूट डालने की ग़रज़ से बनाई और इस मक़्सद से कि जो लोग पहले ही से ख़ुदा और उस के रसूल से जंग कर रहे हैं उन के लिये एक कमीन गाह हाथ आ जाए और वोह ज़रूर क़समें खाएंगे कि हम ने तो भलाई ही का इरादा किया है

وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ۝ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ۝ (1) (توبہ)

और ख़ुदा गवाही देता है कि बेशक येह लोग झूटे हैं आप कभी भी इस मस्जिद में न खड़े हों वोह मस्जिद (मस्जिदे क़ुबा) जिस की बुन्याद पहले ही दिन से परहेज़गारी पर रखी हुई है वोह इस बात की ज़ियादा ह़क़दार है कि आप इस में खड़े हों इस में ऐसे लोग हैं जो पाकी को पसन्द करते हैं और ख़ुदा पाकी रखने वालों को दोस्त रखता है।

इस आयत के नाज़िल हो जाने के बा'द **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मालिक बिन दख़शम व ह़ज़रते मअ़न बिन अ़दी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को हुक्म दिया कि इस मस्जिद को मुन्हदिम कर के इस में आग लगा दें।(2) (زرقانی ج۳ص۸۰)

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अमीरुल ह़ज

ग़ज़्वए तबूक से वापसी के बा'द **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ज़ुल क़ा'दह सि. 9 हि. में तीन सो मुसलमानों का एक क़ाफ़िला मदीनए मुनव्वरह से ह़ज के लिये मक्कए मुकर्रमा भेजा और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को "अमीरुल ह़ज" और ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को "नक़ीबे इस्लाम" और ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास व ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह व ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم को मुअ़ल्लिम बना दिया और अपनी तरफ़ से क़ुरबानी के लिये बीस ऊंट भी भेजे।

---

1 ......پ ۱۱، التوبة: ۱۰۷۔۱۰۸

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، ثم غزوة تبوك، ج ٤، ص ۹۷۔۹۸ ماخوذاً

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने हरमे का'बा और अरफ़ात व मिना में खुत्बा पढ़ा इस के बा'द हज़रते अली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ खड़े हुए और "सूरए बराअत" की चालीस आयतें पढ़ कर सुनाईं और ए'लान कर दिया कि अब कोई मुशरिक ख़ानए का'बा में दाख़िल न हो सकेगा न कोई बरह्ना बदन और नंगा हो कर तवाफ़ कर सकेगा और चार महीने के बा'द कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के लिये अमान ख़त्म कर दी जाएगी। हज़रते अबू हुरैरा और दूसरे सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने इस ए'लान की इस क़दर ज़ोर ज़ोर से मुनादी की, कि इन लोगों का गला बैठ गया। इस ए'लान के बा'द कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन फ़ौज की फ़ौज आ कर मुसलमान होने लगे।[1] (طبری ج۲ص۱۲۱۷اور زرقانی ج۳ص۹۰تا۹۳)

सि. 9 हि. के वाक़िआते मुतफ़र्रिक़ा

﴾1﴿ इस साल पूरे मुल्क में हर तरफ़ अम्नो अमान की फ़ज़ा पैदा हो गई और ज़कात का हुक्म नाज़िल हुवा और ज़कात की वुसूली के लिये आमिलीन और मुहस्सिलों का तक़र्रुर हुवा।[2] (زرقانی ج۳ص۱۰۰)

﴾2﴿ जो ग़ैर मुस्लिम क़ौमें इस्लामी सल्तनत के ज़ेरे साया रहीं उन के लिये जिज़्या का हुक्म नाज़िल हुवा और क़ुरआन की येह आयत उतरी कि

حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صَاغِرُوْنَ ۝[3] (توبہ)

वोह छोटे बन कर "जिज़्या" अदा करें

---

❶......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، حج الصديق بالناس، ج٤، ص١١٤-١٢٣ ملتقطاً

❷......الكامل فی التاريخ، ذكرحج ابی بكر، ج٢،ص١٦١ و شرح الزرقانی علی المواهب تحويل القبلة...الخ، ج٢،ص٢٥٤

❸......پ١٠،التوبة:٢٩

《3》 सूद की हुरमत नाज़िल हुई और इस के एक साल बा'द सि. 10 हि. में "हिज्जतुल वदाअ़" के मौक़अ़ पर अपने ख़ुत्बों में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का ख़ूब ख़ूब ए'लान फ़रमाया। (بخاری و مسلم باب تحریم الخمر)

《4》 ह़बशा का बादशाह जिन का नाम ह़ज़रते अस्ह़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ था। जिन के ज़ेरे साया मुसलमान मुहाजिरीन ने चन्द साल ह़बशा में पनाह ली थी उन की वफ़ात हो गई। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीने में उन की ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उन के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ मांगी।(1)

《5》 इसी साल मुनाफ़िक़ों का सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य मर गया। इस के बेटे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की दरख़्वास्त पर उन की दिलजूई के वासिते़ हुज़ूर عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस मुनाफ़िक़ के कफ़न के लिये अपना पैरहन अ़ता फ़रमाया और उस की लाश को अपने ज़ानूए अक़्दस पर रख कर उस के कफ़न में अपना लुआ़बे दहन डाला और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बार बार मन्अ़ करने के बा वुजूद चूंकि अभी तक मुमानअ़त नाज़िल नहीं हुई थी इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई लेकिन इस के बा'द ही येह आयत नाज़िल हो गई कि

وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ۝(2) (توبہ)

(ऐ रसूल) इन (मुनाफ़िक़ों) में से जो मरें कभी आप उन पर नमाज़े जनाज़ा न पढ़िये और उन की क़ब्र के पास आप खड़े भी न हों यक़ीनन उन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया है और कुफ़्र की ह़ालत में येह लोग मरे हैं।

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، هلاك رأس المنافقين، ج٤، ص ١٢٤ـ١٢٨
ومدارج النبوت، قسم سوم، باب نهم، ج٢،ص٣٧٧

2 ......پ١٠،التوبة:٨٤

इस आयत के नुज़ूल के बा'द फिर कभी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी मुनाफ़िक़ की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ाई न उस की क़ब्र के पास खड़े हुए।[1] (بخاری ج۱ص۱۲۹وص۱۸۰وزرقانی ج۳ص۹۵وص۹۶)

वुफ़ूदुल अ़रब

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तब्लीग़े इस्लाम के लिये तमाम अत़राफ़ व अक्नाफ़ में मुबल्लिग़ीने इस्लाम और आ़मिलीन व मुजाहिदीन को भेजा करते थे। उन में से बा'ज़ क़बाइल तो मुबल्लिग़ीन के सामने ही दा'वते इस्लाम क़बूल कर के मुसलमान हो जाते थे मगर बा'ज़ क़बाइल इस बात के ख़्वाहिश मन्द होते थे कि बराहे रास्त खुद बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हो कर अपने इस्लाम का ए'लान करें। चुनान्चे कुछ लोग अपने अपने क़बीलों के नुमाइन्दा बन कर मदीनए मुनव्वरह आते थे और खुद बानिये इस्लाम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने फ़ैज़ तर्जुमान से दा'वते इस्लाम का पैग़ाम सुन कर अपने इस्लाम का ए'लान करते थे और फिर अपने अपने क़बीलों में वापस जा कर पूरे क़बीले वालों को मुशर्रफ़ ब इस्लाम करते थे। इन्ही क़बाइल के नुमाइन्दों को हम "वुफ़ूदुल अ़रब" के उ़न्वान से बयान करते हैं।

इस क़िस्म के वुफ़ूद और नुमाइन्दगान क़बाइल मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मदीनए मुनव्वरह आते रहे मगर फ़त्हे मक्का के बा'द ना गहां सारे अ़रब के ख़यालात में एक अ़ज़ीम तग़य्युर वाक़ेअ़ हो गया और सब लोग इस्लाम की त़रफ़ माइल होने लगे क्यूं कि इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत वाज़ेह़ और ज़ाहिर हो जाने के बा वुजूद बहुत से क़बाइल मह़ज़ कुरैश के दबाव और अहले मक्का के डर से इस्लाम क़बूल नहीं कर सकते थे। फ़त्हे मक्का ने इस रुकावट को भी दूर कर दिया और अब दा'वते इस्लाम और कुरआन के मुक़द्दस पैग़ाम ने घर घर पहुंच कर अपनी ह़क़्क़ानिय्यत और

[1] ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نہم، ج۲، ص۳۷۷

ए'जाज़ी तसर्रुफ़ात से सब के कुलूब पर सिक्का बिठा दिया। जिस का नतीजा येह हुवा कि वोही लोग जो एक लम्हे के लिये इस्लाम का नाम सुनना और मुसलमानों की सूरत देखना गवारा नहीं कर सकते थे आज परवानों की त़रह़ शमए नुबुव्वत पर निसार होने लगे और जूक़ दर जूक़ बल्कि फ़ौज दर फ़ौज **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दूर दराज़ के सफ़र तै करते हुए वुफ़ूद की शक्ल में आने लगे और ब रिज़ा व रग़बत इस्लाम के ह़ल्क़ा बगोश बनने लगे चूंकि इस क़िस्म के वुफ़ूद अकसरो बेशतर फ़त्ह़े मक्का के बा'द सि. 9 हि. में मदीनए मुनव्वरह आए इस लिये सि. 9 हि. को लोग "सनतिल वुफ़ूद" (नुमाइन्दा का साल) कहने लगे।

इस क़िस्म के वुफ़ूद की ता'दाद में मुसन्निफ़ीने सीरत का बहुत ज़ियादा इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने इन वुफ़ूद की ता'दाद साठ से ज़ियादा बताई है।[1] (مدارج ج۲ص۳۵۸)

और अ़ल्लामा क़स्त़लानी व ह़ाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम ने इस क़िस्म के चौदह वफ़्दों का तज़किरा किया है हम भी अपनी इस मुख़्तसर किताब में चन्द वुफ़ूद का तज़किरा करते हैं।

इस्तिक़्बाले वुफ़ूद

हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क़बाइल से आने वाले वफ़्दों के इस्तिक़्बाल और उन की मुलाक़ात का ख़ास त़ौर पर एहतिमाम फ़रमाते थे। चुनान्चे हर वफ़्द के आने पर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم निहायत ही उ़म्दा पोशाक ज़ैबे तन फ़रमा कर काशानए अक़्दस से निकलते और अपने ख़ुसूसी अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भी हुक्म देते थे कि बेहतरीन लिबास पहन कर आएं फिर उन मेहमानों को अच्छे से अच्छे मकानों में ठहराते और उन लोगों की मेहमान नवाज़ी और ख़ातिर मदारात का ख़ास त़ौर पर ख़याल फ़रमाते थे और उन मेहमानों से मुलाक़ात के लिये मस्जिदे

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نہم، ج۲، ص۳۵۸ مختصراً

नबवी में एक सुतून से टेक लगा कर निशस्त फ़रमाते फिर हर एक वफ़्द से निहायत ही खुशरूई और ख़न्दा पेशानी के साथ गुफ़्तगू फ़रमाते और उन की ह़ाजतों और ह़ालतों को पूरी तवज्जोह के साथ सुनते और फिर उन को ज़रूरी अ़क़ाइद व अह़कामे इस्लाम की ता'लीम व तल्क़ीन भी फ़रमाते और हर वफ़्द को उन के दरजात व मरातिब के लिह़ाज़ से कुछ न कुछ नक़्द या सामान भी तह़ाइफ़ और इन्आ़मात के तौ़र पर अ़त़ा फ़रमाते।[1]

वफ़्दे सक़ीफ़

जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जंगे ह़ुनैन के बा'द त़ाइफ़ से वापस तशरीफ़ लाए और "जिइर्राना" से उ़मरह अदा करने के बा'द मदीने तशरीफ़ ले जा रहे थे तो रास्ते ही में क़बीलए सक़ीफ़ के सरदारे आ'ज़म "उ़र्वह बिन मसऊ़द सक़फ़ी" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर ब रिज़ा व रग़्बत दामने इस्लाम में आ गए। येह बहुत ही शानदार और बा वफ़ा आदमी थे और इन का कुछ तज़्किरा सुल्ह़े ह़ुदैबिया के मौक़अ़ पर हम तह़रीर कर चुके हैं। इन्हों ने मुसलमान होने के बा'द अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)! आप मुझे इजाज़त अ़त़ा फ़रमाएं कि मैं अब अपनी क़ौम में जा कर इस्लाम की तब्लीग़ करूं। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त दे दी और येह वहीं से लौट कर अपने क़बीले में गए और अपने मकान की छत पर चढ़ कर अपने मुसलमान होने का ए'लान किया और अपने क़बीले वालों को इस्लाम की दा'वत दी। इस अ़लानिया दा'वते इस्लाम को सुन कर क़बीलए सक़ीफ़ के लोग ग़ैज़ो ग़ज़ब में भर कर इस क़दर तै़श में आ गए कि चारों त़रफ़ से उन पर तीरों की बारिश करने लगे यहां तक कि इन को एक तीर लगा और येह शहीद हो गए। क़बीलए सक़ीफ़ के लोगों ने इन को क़त्ल तो कर दिया लेकिन फिर येह सोचा कि तमाम क़बाइले अ़रब इस्लाम क़बूल कर चुके हैं। अब हम भला इस्लाम के ख़िलाफ़ कब तक और कितने लोगों से लड़ते रहेंगे?

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب نہم،ج۲،ص۳۵۹ ملخصاً

फिर मुसलमानों के इनतिक़ाम और एक लम्बी जंग के अन्जाम को सोच कर दिन में तारे नज़र आने लगे। इस लिये इन लोगों ने अपने एक मुअ़ज़्ज़ज़ रईस अ़ब्दे यालील बिन अ़म्र को चन्द मुमताज़ सरदारों के साथ मदीनए मुनव्वरह भेजा। इस वफ़्द ने मदीने पहुंच कर बारगाहे अक़्दस में अ़र्ज़ किया कि हम इस शर्त़ पर इस्लाम क़बूल करते हैं कि तीन साल तक हमारे बुत "लात" को तोड़ा न जाए। आप ने इस शर्त़ को क़बूल फ़रमाने से साफ़ इन्कार फ़रमा दिया और इरशाद फ़रमाया कि इस्लाम किसी ह़ाल में भी बुत परस्ती को एक लम्ह़े के लिये भी बरदाश्त नहीं कर सकता। लिहाज़ा बुत तो ज़रूर तोड़ा जाएगा येह और बात है कि तुम लोग उस को अपने हाथ से न तोड़ो बल्कि मैं ह़ज़रते अबू सुफ़्यान और ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शअ़बा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को भेज दूंगा वोह उस बुत को तोड़ डालेंगे। चुनान्चे येह लोग मुसलमान हो गए और ह़ज़रते उ़समान बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जो उस क़ौम के एक मुअ़ज़्ज़ज़ और मुमताज़ फ़र्द थे उस क़बीले का अमीर मुक़र्रर फ़रमा दिया। और उन लोगों के साथ ह़ज़रते अबू सुफ़्यान और ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को त़ाइफ़ भेजा और इन दोनों ह़ज़रात ने उन के बुत "लात" को तोड़ फोड़ कर रेज़ा रेज़ा कर डाला।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۶۶)

वफ़्दे किन्दा

येह लोग यमन के अत़राफ़ में रहते थे। इस क़बीले के सत्तर या अस्सी सुवार बड़े ठाठ बाट के साथ मदीने आए। ख़ूब बालों में कंघी किये हुए और रेशमी गोंट के जुब्बे पहने हुए, हथयारों से सजे हुए मदीने की आबादी में दाख़िल हुए। जब येह लोग दरबारे रिसालत में बारयाब हुए तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन लोगों से दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या तुम लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया है? सब ने अ़र्ज़ किया कि "जी हां" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि फिर तुम लोगों ने येह रेशमी

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب نہم،ج۲،ص۳۶۵،۳۶۶ملخصاً

लिबास क्यूं पहन रखा है ? येह सुनते ही उन लोगों ने अपने जुब्बों को बदन से उतार दिया और रेशमी गोंटों को फाड़ फाड़ कर जुब्बों से अलग कर दिया ।[1] (مدارج ج۲ ص۳۶۶)

वफ़्दे बनी अश्अ़र

येह लोग यमन के बाशिन्दे और "क़बीलए अश्अ़र" के मुअ़ज़्ज़ज़ और नामवर ह़ज़रात थे । जब येह लोग मदीने में दाखि़ल होने लगे तो जोशे मह़ब्बत और फ़र्ते अ़क़ीदत से रज्ज़ का येह शे'र आवाज़ मिला कर पढ़ते हुए शहर में दाखि़ल हुए कि

غَدًا نَلْقِی الْاَحِبَّۃ مُحَمَّدًا وَّ حِزْبَہ

कल हम लोग अपने मह़बूबों से या'नी ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के सह़ाबा से मुलाक़ात करेंगे ।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं ने रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते हुए सुना कि यमन वाले आ गए। येह लोग बहुत ही नर्म दिल हैं ईमान तो यमनियों का ईमान है और ह़िक्मत भी यमनियों में है। बकरी पालने वालों में सुकून व वक़ार है और ऊंट पालने वालों में फ़ख़्र और घमन्ड है । चुनान्चे इस इरशादे नबवी की बरकत से अहले यमन इ़ल्म व सफ़ाइये क़ल्ब और ह़िक्मत व मा'रिफ़ते इलाही की दौलतों से हमेशा मालामाल रहे । ख़ास कर ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कि येह निहायत ही ख़ुश आवाज़ थे और क़ुरआन शरीफ़ ऐसी ख़ुश इल्ह़ानी के साथ पढ़ते थे कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم में इन का कोई हम मिस्ल न था। इ़ल्मे अ़क़ाइद में अहले सुन्नत के इमाम शैख़ अबुल ह़सन अश्अ़री رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इन्ही ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की औलाद में से हैं ।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ ص۳۶۷)

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نہم، ج۲، ص۳٦٦

2 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نہم، ج۲، ص۳٦٦۔۳٦۷ ملخصاً

والمواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، باب الوفد الثامن...الخ، ج٥، ص۱٦۳۔۱٦٦

वफ़्दे बनी असद

इस क़बीले के चन्द अश्ख़ास बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और निहायत ही ख़ुश दिली के साथ मुसलमान हुए। लेकिन फिर एह़सान जताने के तौ़र पर कहने लगे कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! इतने सख़्त क़ह़त़ के ज़माने में हम लोग बहुत ही दूर दराज़ से मसाफ़त तै़ कर के यहां आए हैं। रास्ते में हम लोगों को कहीं शिकम सैर हो कर खाना भी नसीब नहीं हुवा और बिग़ैर इस के कि आप का लश्कर हम पर ह़म्ला आवर हुवा हो हम लोगों ने ब रिज़ा व रग़बत इस्लाम क़बूल कर लिया है। इन लोगों के इस एह़सान जताने पर ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई कि [1]

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ [2]

(حجرات)

*ऐ मह़बूब ! येह तुम पर एह़सान जताते हैं कि हम मुसलमान हो गए। आप फ़रमा दीजिये कि अपने इस्लाम का एह़सान मुझ पर न रखो बल्कि **अल्लाह** तुम पर एह़सान रखता है कि उस ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की अगर तुम सच्चे हो।*

वफ़्दे बनी फ़ज़ारा

येह लोग उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी की क़ौम के लोग थे। बीस आदमी दरबारे अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और अपने इस्लाम का ए'लान किया और बताया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! हमारे दियार में इतना सख़्त क़ह़त़ और काल पड़ गया है कि अब फ़क़्रो फ़ाक़ा की मुसीबत हमारे लिये ना क़ाबिले बरदाश्त हो चुकी है। लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ……مدارج النبوت، قسم سوم، باب نهم، ج۲، ص۳۵۹

2 ……پ۲۶،الحجرات:۱۷

बारिश के लिये दुआ़ फ़रमाइये। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जुमुआ़ के दिन मिम्बर पर दुआ़ फ़रमा दी और फ़ौरन ही बारिश होने लगी और लगातार एक हफ़्ते तक मूसलाधार बारिश का सिल्सिला जारी रहा फिर दूसरे जुमुआ़ को जब कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर ख़ुत्बा पढ़ रहे थे एक आ'राबी ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! चौपाए हलाक होने लगे और बाल बच्चे भूक से बिलकने लगे और तमाम रास्ते मुन्क़तेअ़ हो गए लिहाज़ा दुआ़ फ़रमा दीजिये कि येह बारिश पहाड़ों पर बरसे और खेतों बस्तियों पर न बरसे। चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमा दी तो बादल शहरे मदीना और इस के अत़राफ़ से कट गया और आठ दिन के बा'द मदीने में सूरज नज़र आया।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۵۹)

वफ़्दे बनी मुर्रह

इस वफ़्द में बनी मुर्रह के तेरह आदमी मदीने आए थे। इन का सरदार ह़ारिस बिन औ़फ़ भी इस वफ़्द में शामिल था। इन सब लोगों ने बारगाहे अक़्दस में इस्लाम क़बूल किया और क़ह़त़ की शिकायत और बाराने रह़मत की दुआ़ के लिये दरख़्वास्त पेश की। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन लफ़्ज़ों के साथ दुआ़ मांगी कि "اَللّٰھُمَّ اسْقِھِمُ الْغَیْثَ" (ऐ अल्लाह ! इन लोगों को बारिश से सैराब फ़रमा दे) फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया कि इन में से हर शख़्स को दस दस ऊक़िया चांदी और चार चार सो दिरहम इन्आ़म और तोह़फ़े के त़ौर पर अ़त़ा करें। और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के सरदार ह़ज़रते ह़ारिस बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बारह ऊक़िया चांदी का शाहाना अ़तिय्या मर्ह़मत फ़रमाया।

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نہم، ج۲، ص۳۵۹

जब येह लोग मदीने से अपने वत़न पहुंचे तो पता चला कि ठीक उसी वक़्त उन के शहरों में बारिश हुई थी जिस वक़्त सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों की दरख़्वास्त पर मदीने में बारिश के लिये दुआ़ मांगी थी ।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۶۰)

बफ़्दे बनी अल बुकाअ़

इस वफ़्द के साथ ह़ज़रते मुआ़विया बिन सौर बिन उ़बाद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ भी आए थे जो एक सो बरस की उ़म्र के बूढ़े थे । इन सब ह़ज़रात ने बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अपने इस्लाम का ए'लान किया फिर ह़ज़रते मुआ़विया बिन सौर बिन उ़बाद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते बशीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को पेश किया और येह गुज़ारिश की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप मेरे इस बच्चे के सर पर अपना दस्ते मुबारक फिरा दें । उन की दरख़्वास्त पर **हुज़ूरे** अकरम صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के फ़रज़न्द के सर पर अपना मुक़द्दस हाथ फिरा दिया । और उन को चन्द बकरियां भी अ़त़ा फ़रमाईं । और वफ़्द वालों के लिये ख़ैरो बरकत की दुआ़ फ़रमा दी इस दुआ़ए नबवी का येह असर हुवा कि उन लोगों के दियार में जब भी क़ह़त़ और फ़क़्रो फ़ाक़ा की बला आई तो उस क़ौम के घर हमेशा क़ह़त़ और भुक मरी की मुसीबतों से मह़फ़ूज़ रहे ।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۶۰)

वफ़्दे बनी किनाना

इस वफ़्द के अमीरे कारवां ह़ज़रते वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ थे । येह सब लोग दरबारे रसूल عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में निहायत ही अ़क़ीदत मन्दी के साथ ह़ाज़िर हो कर मुसलमान हो गए और ह़ज़रते वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बैअ़ते इस्लाम कर के जब अपने वत़न में पहुंचे तो उन के बाप ने इन से नाराज़ व बेज़ार हो कर कह दिया कि मैं

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب نہم،ج۲،ص۳۵۹۔۳۶۰

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب نہم،ج۲،ص۳۶۰

ख़ुदा की क़सम ! तुझ से कभी कोई बात न करूंगा । लेकिन इन की बहन ने सिद्क़े दिल से इस्लाम क़बूल कर लिया । येह अपने बाप की ह़रकत से रन्जीदा और दिल शिकस्ता हो कर फिर मदीनए मुनव्वरह चले आए और जंगे तबूक में शरीक हुए और फिर अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की जमाअ़त में शामिल हो कर ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करने लगे । ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द येह बसरा चले गए । फिर आख़िर उ़म्र में शाम गए और सि. 85 हि. में शहर दिमश्क़ के अन्दर वफ़ात पाई ।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۶۰)

वफ़्दे बनी हिलाल

इस वफ़्द के लोगों ने भी दरबारे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया । इस वफ़्द में ह़ज़रते ज़ियाद बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी थे येह मुसलमान हो कर दन दनाते हुए ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के घर में दाख़िल हो गए क्यूं कि वोह इन की ख़ाला थीं ।

येह इत़मीनान के साथ अपनी ख़ाला के पास बैठे हुए गुफ़्तगू में मसरूफ़ थे जब रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मकान में तशरीफ़ लाए और येह पता चला कि ह़ज़रते ज़ियाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उम्मुल मोमिनीन के भान्जे हैं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अज़ राहे शफ़्क़त उन के सर और चेहरे पर अपना नूरानी हाथ फैर दिया । इस दस्ते मुबारक की नूरानिय्यत से ह़ज़रते ज़ियाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का चेहरा इस क़दर पुरनूर हो गया कि क़बीलए बनी हिलाल के लोगों का बयान है कि इस के बा'द हम लोग ह़ज़रते ज़ियाद बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरे पर हमेशा एक नूर और बरकत का असर देखते रहे ।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۶۰)

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب نہم،ج۲،ص۳۶۰ملخصاً

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب نہم،ج۲،ص۳۶۰

वफ़्दे ज़माम बिन सा'लबा

येह क़बीलए सा'द बिन बक्र के नुमाइन्दा बन कर बारगाहे रिसालत में आए। येह बहुत ही ख़ूब सूरत सुर्ख़ व सफ़ेद रंग के गेसू दराज़ आदमी थे। मस्जिदे नबवी में पहुंच कर अपने ऊंट को बिठा कर बांध दिया फिर लोगों से पूछा कि मुहम्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कौन हैं? लोगों ने दूर से इशारा कर के बताया कि वोह गोरे रंग के ख़ूब सूरत आदमी जो तकिया लगा कर बैठे हुए हैं वोही हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। हज़रते ज़माम बिन सा'लबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ सामने आए और कहा कि ऐ अ़ब्दुल मुत्तलिब के फ़रज़न्द ! मैं आप से चन्द चीज़ों के बारे में सुवाल करूंगा और मैं अपने सुवाल में बहुत ज़ियादा मुबालग़ा और सख़्ती बरतूंगा। आप इस से मुझ पर ख़फ़ा न हों। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम जो चाहो पूछ लो। फिर हस्बे ज़ैल मुकालमा हुवा।

ज़माम बिन सा'लबा : मैं आप को उस ख़ुदा की क़सम दे कर जो आप का और तमाम इन्सानों का परवर दगार है येह पूछता हूं कि क्या **अल्लाह** ने आप को हमारी तरफ़ अपना रसूल बना कर भेजा है?

नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : "हां"

ज़माम बिन सा'लबा : मैं आप को ख़ुदा की क़सम दे कर येह सुवाल करता हूं कि क्या नमाज़ व रोज़ा और हज व ज़कात को **अल्लाह** ने हम लोगों पर फ़र्ज़ किया है?

नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : "हां"

ज़माम बिन सा'लबा : आप ने जो कुछ फ़रमाया मैं उस पर ईमान लाया और मैं ज़माम बिन सा'लबा हूं। मेरी क़ौम ने मुझे इस लिये आप के पास भेजा है कि मैं आप के दीन को अच्छी तरह समझ कर अपनी क़ौम बनी सा'द बिन बक्र तक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा दूं।

हज़रते ज़माम बिन सा'लबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुसलमान हो कर अपने वत़न में पहुंचे और सारी क़ौम को जम्अ़ कर के सब से पहले अपनी क़ौम के तमाम बुतों या'नी "लात व उ़ज़्ज़ा" और "मनात व हबल" को बुरा भला कहने लगे और ख़ूब ख़ूब इन बुतों की तौहीन करने लगे। इन की क़ौम ने जो अपने बुतों की तौहीन सुनी तो एक दम सब चौंक पड़े और कहने लगे कि ऐ सा'लबा के बेटे ! तू क्या कह रहा है ? ख़ामोश हो जा वरना हम को येह डर है कि हमारे येह देवता तुझ को बरस और कोढ़ और जुनून में मुब्तला कर देंगे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह सुन कर तैश में आ गए और तड़प कर फ़रमाया कि ऐ बे अ़क़्ल इन्सानो ! येह पथ्थर के बुत भला हम को क्या नफ़्अ़ व नुक़्सान पहुंचा सकते हैं ? सुनो ! **अल्लाह** तआ़ला जो हर नफ़्अ़ व नुक़्सान का मालिक है उस ने अपना एक रसूल भेजा है और एक किताब नाज़िल फ़रमाई है ताकि तुम इन्सानों को इस गुमराही और जहालत से नजात अ़ता फ़रमाए। मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं है और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के रसूल हैं। मैं **अल्लाह** के रसूल की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम का पैग़ाम तुम लोगों के पास लाया हूं, फिर उन्हों ने आ'माले इस्लाम या'नी नमाज़ व रोज़ा और ह़ज व ज़कात को उन लोगों के सामने पेश किया और इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत पर ऐसी पुरजोश और मुअस्सिर तक़रीर फ़रमाई कि रात भर में क़बीले के तमाम मर्द व औ़रत मुसलमान हो गए और उन लोगों ने अपने बुतों को तोड़ फोड़ कर पाश पाश कर डाला और अपने क़बीले में एक मस्जिद बना ली और नमाज़ व रोज़ा और ह़ज व ज़कात के पाबन्द हो कर सादिक़ुल ईमान मुसलमान बन गए।[1]

(مدارج النبوۃ ج۲ص۳۶۴)

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نهم، ج۲، ص ۳٦۳-۳٦٤ ملخصاً

वफ़्दे बल्ली

येह लोग जब मदीनए मुनव्वरह पहुंचे तो ह़ज़रते अबू रुवैफ़अ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो पहले ही से मुसलमान हो कर ख़िदमते अक़्दस में मौजूद थे। उन्हों ने इस वफ़्द का तआ़रुफ़ कराते हुए अ़र्ज़ किया कि रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! येह लोग मेरी क़ौम के अफ़राद हैं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं तुम को और तुम्हारी क़ौम को "ख़ुश आमदीद" कहता हूं। फिर ह़ज़रते अबू रुवैफ़अ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! येह सब लोग इस्लाम का इक़रार करते हैं और अपनी पूरी क़ौम के मुसलमान होने की ज़िम्मादारी लेते हैं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उस को इस्लाम की हिदायत देता है।

इस वफ़्द में एक बहुत ही बूढ़ा आदमी भी था। जिस का नाम "अबुज़्ज़ैफ़" था उस ने सुवाल किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं एक ऐसा आदमी हूं कि मुझे मेहमानों की मेहमान नवाज़ी का बहुत ज़ियादा शौक़ है तो क्या इस मेहमान नवाज़ी का मुझे कुछ सवाब भी मिलेगा ? आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मुसलमान होने के बा'द जिस मेहमान की भी मेहमान नवाज़ी करोगे ख़्वाह वोह अमीर हो या फ़क़ीर तुम सवाब के ह़क़दार ठहरोगे। फिर अबुज़्ज़ैफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह पूछा कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मेहमान कितने दिनों तक मेहमान नवाज़ी का ह़क़दार है ? आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तीन दिन तक इस के बा'द वोह जो खाएगा वोह सदक़ा होगा।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۶۴)

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نهم، ج۲، ص ۳٦٤

वफ़्दे तुजीब

येह तेरह आदमियों का एक वफ़्द था जो मालों और मवेशियों की ज़कात ले कर बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुवा था। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मरहबा और ख़ुश आमदीद कह कर उन लोगों का इस्तिक़्बाल फ़रमाया। और येह इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग अपने इस माले ज़कात को अपने वत़न में ले जाओ और वहां के फ़ुक़रा व मसाकीन को येह सारा माल दे दो। उन लोगों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! हम अपने वत़न के फ़ुक़रा व मसाकीन को इस क़दर माल दे चुके हैं कि येह माल उन की ह़ाजतों से ज़ियादा हमारे पास बच रहा है। येह सुन कर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों की इस ज़कात को क़बूल फ़रमा लिया और उन लोगों पर बहुत ज़ियादा करम फ़रमाते हुए उन ख़ुश नसीबों की ख़ूब ख़ूब मेहमान नवाज़ी फ़रमाई और ब वक़्ते रुख़्सत उन लोगों को इक्राम व इन्आ़म से भी नवाज़ा। फिर दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या तुम्हारी क़ौम में कोई ऐसा शख़्स बाक़ी रह गया है? जिस ने मेरा दीदार नहीं किया है। उन लोगों ने कहा कि जी हां। एक नौ जवान को हम अपने वत़न में छोड़ आए हैं जो हमारे घरों की ह़िफ़ाज़त कर रहा है। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग उस नौ जवान को मेरे पास भेज दो। चुनान्चे उन लोगों ने अपने वत़न पहुंच कर उस नौ जवान को मदीनए त़य्यिबा रवाना कर दिया। जब वोह नौ जवान बारगाहे आ़ली में बारयाब हुवा तो उस ने येह गुज़ारिश की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप ने मेरी क़ौम की ह़ाजतों को तो पूरी फ़रमा कर उन्हें वत़न में भेज दिया अब मैं भी एक ह़ाजत ले कर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो गया हूं और उम्मीद वार हूं कि आप मेरी ह़ाजत भी पूरी फ़रमा देंगे। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम्हारी क्या ह़ाजत है? उस ने कहा कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं अपने घर से

येह मक़्सद ले कर नहीं ह़ाज़िर हुवा हूं कि आप मुझे कुछ माल अ़ता फ़रमाएं बल्कि मेरी फ़क़त़ इतनी ह़ाजत और दिली तमन्ना है जिस को दिल में ले कर आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा हूं कि अल्लाह तआ़ला मुझे बख़्श दे और मुझ पर अपना रह़्म फ़रमाए और मेरे दिल में बे नियाज़ी और इस्तिग़्ना की दौलत पैदा फ़रमा दे। नौ जवान की इस दिली मुराद और तमन्ना को सुन कर मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत ख़ुश हुए और उस के ह़क़ में इन लफ़्ज़ों के साथ दुआ़ फ़रमाई कि اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلَہٗ وَارْحَمْہُ وَاجْعَلْ غِنَاہُ فِیْ قَلْبِہٖ ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ इस को बख़्श दे और इस पर रह़्म फ़रमा और इस के दिल में बे नियाज़ी डाल दे।

फिर आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस नौ जवान को उस की क़ौम का अमीर मुक़र्रर फ़रमा दिया और येही नौ जवान अपने क़बीले की मस्जिद का इमाम हो गया।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ ص۳۶۴)

वफ़्दे मुज़ैना

इस वफ़्द के सर बराह ह़ज़रते नो'मान बिन मुक़र्रिन رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि हमारे क़बीले के चार सो आदमी हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और जब हम लोग अपने घरों को वापस होने लगे तो आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! तुम इन लोगों को कुछ तोह़फ़ा इनायत करो। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मेरे घर में बहुत ही थोड़ी सी खजूरें हैं। येह लोग इतने क़लील तोह़फ़े से शायद ख़ुश न होंगे। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर येही इरशाद फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! जाओ इन लोगों को ज़रूर कुछ तोह़फ़ा अ़त़ा करो। इरशादे नबवी सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُ उन चार सो आदमियों को हमराह ले

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نہم، ج۲، ص۳۶۴

कर मकान पर पहुंचे तो येह देख कर हैरान रह गए कि मकान में खजूरों का एक बहुत ही बड़ा तौदा पड़ा हुवा है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वफ़्द के लोगों से फ़रमाया कि तुम लोग जितनी और जिस क़दर चाहो इन खजूरों में से ले लो। उन लोगों ने अपनी हाजत और मरज़ी के मुताबिक़ खजूरें ले लीं। हज़रते नो'मान बिन मक़रन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि सब से आख़िर में जब मैं खजूरें लेने के लिये मकान में दाख़िल हुवा तो मुझे ऐसा नज़र आया कि गोया इस ढेर में से एक खजूर भी कम नहीं हुई है।[1]

येह वोही हज़रते नो'मान बिन मक़रन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं, जो फ़त्हे मक्का के दिन क़बीलए मुज़ैना के अ़लम बरदार थे येह अपने सात भाइयों के साथ हिजरत कर के मदीना आए थे। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे कि कुछ घर तो ईमान के हैं और कुछ घर निफ़ाक़ के हैं और आले मक़रन का घर ईमान का घर है।[2]

(مدارج النبوۃ ج۲ص ۳٦٧)

वफ़्दे दौस

इस वफ़्द के क़ाइद हज़रते तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे येह हिजरत से क़ब्ल ही इस्लाम क़बूल कर चुके थे। इन के इस्लाम लाने का वाक़िआ़ भी बड़ा ही अ़जीब है येह एक बड़े होश मन्द और शो'ला बयान शाइर थे। येह किसी ज़रूरत से मक्का आए तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने इन से कह दिया कि ख़बरदार तुम मुहम्मद (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) से न मिलना और हरगिज़ हरगिज़ उन की बात न सुनना। उन के कलाम में ऐसा जादू है कि जो सुन लेता है वोह अपना दीन व मज़्हब छोड़ बैठता है और अ़ज़ीज़ो अक़ारिब से उस का रिश्ता कट जाता है। येह कुफ़्फ़ारे मक्का के फ़रेब में आ गए और अपने कानों में इन्हों ने रूई भर ली कि

1 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی، باب الوفدالثانی عشر، وفدمزنیۃ،ج٥، ص١٧٨۔١٧٩

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب نہم،ج٢،ص٣٦٧

कहीं कुरआन की आवाज़ कानों में न पड़ जाए। लेकिन एक दिन सुब्ह़ को येह ह़रमे का'बा में गए तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ज्र की नमाज़ में क़िराअत फ़रमा रहे थे एक दम कुरआन की आवाज़ जो इन के कान में पड़ी तो येह कुरआन की फ़साह़त व बलाग़त पर ह़ैरान रह गए और किताबे इलाही की अ़ज़मत और इस की तासीरे रब्बानी ने इन के दिल को मोह लिया। जब **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم काशानए नुबुव्वत को चले तो येह बे ताबाना आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे चल पड़े और मकान में आ कर आप के सामने मुअद्दबाना बैठ गए और अपना और कुरैश की बद गोइयों का सारा ह़ाल सुना कर अ़र्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम ! मैं ने कुरआन से बढ़ कर फ़सीह़ो बलीग़ आज तक कोई कलाम नहीं सुना। लिल्लाह ! मुझे बताइये कि इस्लाम क्या है ? **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्लाम के चन्द अह़काम उन के सामने बयान फ़रमा कर उन को इस्लाम की दा'वत दी तो वोह फ़ौरन ही कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गए।

फिर इन्हों ने दरख़्वास्त की या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई ऐसी अ़लामत व करामत अ़ता फ़रमाइये कि जिस को देख कर लोग मेरी बातों की तस्दीक़ करें ताकि मैं अपनी क़ौम में यहां से जा कर इस्लाम की तब्लीग़ करूं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमा दी कि इलाही ! तू इन को एक ख़ास क़िस्म का नूर अ़ता फ़रमा दे। चुनान्चे इस दुआ़ए नबवी की बदौलत इन को येह करामत अ़ता हुई कि इन की दोनों आंखों के दरमियान चराग़ के मानिन्द एक नूर चमकने लगा। मगर इन्हों ने येह ख़्वाहिश ज़ाहिर की, कि येह नूर मेरे सर में मुन्तक़िल हो जाए। चुनान्चे उन का सर क़िन्दील की त़रह़ चमकने लगा। जब येह अपने क़बीले में पहुंचे और इस्लाम की दा'वत देने लगे तो इन के मां बाप और बीवी ने तो इस्लाम क़बूल कर लिया मगर इन की क़ौम मुसलमान नहीं हुई बल्कि इस्लाम की मुख़ालफ़त पर तुल गई। येह अपनी क़ौम के इस्लाम से मायूस होने पर फिर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में चले गए और अपनी क़ौम की सरकशी और सरताबी का सारा ह़ाल बयान किया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

ने इरशाद फ़रमाया कि तुम फिर अपनी क़ौम में चले जाओ और नर्मी के साथ उन को ख़ुदा की त़रफ़ बुलाते रहो। चुनान्चे येह फिर अपनी क़ौम में आ गए और लगातार इस्लाम की दा'वत देते रहे यहां तक कि सत्तर या अस्सी घरानों में इस्लाम की रौशनी फैल गई और येह इन सब लोगों को साथ ले कर ख़ैबर में ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुश हो कर ख़ैबर के माले ग़नीमत में से इन सब लोगों को ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमाया।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۷۰)

वफ़्दे बनी अ़बस

क़बीलए बनी अ़बस के वफ़्द ने दरबारे अक़्दस में जब ह़ाज़िरी दी तो येह अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)! हमारे मुबल्लिग़ीन ने हम को ख़बर दी है कि जो हिजरत न करे उस का इस्लाम मक़्बूल ही नहीं है तो या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)! अगर आप हुक्म दें तो हम अपने सारे माल व मताअ़ और मवेशियों को बेच कर हिजरत कर के मदीना चले आएं। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोगों के लिये हिजरत ज़रूरी नहीं। हां! येह ज़रूरी है कि तुम जहां भी रहो ख़ुदा से डरते रहो और ज़ोह्दो तक़्वा के साथ ज़िन्दगी बसर करते रहो।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۷۰)

वफ़्दे दारम

येह वफ़्द दस आदमियों का एक गुरौह था जिन का तअ़ल्लुक़ क़बीलए "लख़्म" से था और उन के सर बराह और पेश्वा का नाम "हानी बिन ह़बीब" था। येह लोग हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये तोह़फ़े में चन्द घोड़े और एक रेशमी जुब्बा और एक मशक शराब अपने

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب الوفد الثالث عشر، وفدوس، ج٥، ص١٨٠ـ١٨٥

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب الوفد الحادى والثلاثون، وفد بني عبس، ج٥، ص ٢٢٤

वत़न से ले कर आए। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने घोड़ों और जुब्बे के तह़ाइफ़ को तो क़बूल फ़रमा लिया लेकिन शराब को येह कह कर ठुकरा दिया कि अल्लाह तआ़ला ने शराब को ह़राम फ़रमा दिया है। हानी बिन ह़बीब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! अगर इजाज़त हो तो मैं इस शराब को बेच डालूं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ख़ुदा ने शराब के पीने को ह़राम फ़रमाया है उसी ने इस की ख़रीदो फ़रोख़्त को भी ह़राम ठहराया है। लिहाज़ा तुम शराब की इस मशक को ले कर कहीं ज़मीन पर इस शराब को बहा दो।

रेशमी जुब्बा आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को अ़त़ा फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं इस को ले कर क्या करूंगा ? जब कि मर्दों के लिये इस का पहनना ही ह़राम है। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस में जिस क़दर सोना है आप उस को इस में से जुदा कर लीजिये और अपनी बीवियों के लिये ज़ेवरात बनवा लीजिये और रेशमी कपड़े को फ़रोख़्त कर के इस की क़ीमत को अपने इस्ति'माल में लाइये। चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उस जुब्बे को आठ हज़ार दिरहम में बेचा। येह वफ़्द भी बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर निहायत ख़ुश दिली के साथ मुसलमान हो गया।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۶۵)

वफ़्दे ग़ामद

येह दस आदमियों की जमाअ़त थी जो सि. 10 हि. में मदीना आए और अपनी मन्ज़िल में सामानों की ह़िफ़ाज़त के लिये एक जवान लड़के को छोड़ दिया। वोह सो गया इतने में एक चोर आया और एक बेग चुरा कर ले भागा। येह लोग हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर थे कि ना गहां आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोगों का एक

---

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب نهم، ج۲، ص ۳٦٥ ملخصاً

बेग चोर ले गया मगर फिर तुम्हारे जवान ने इस बेग को पा लिया। जब येह लोग बारगाहे अक़्दस से उठ कर अपनी मन्ज़िल पर पहुंचे तो उन के जवान ने बताया कि मैं सो रहा था कि एक चोर बेग ले कर भागा मगर मैं बेदार होने के बा'द जब उस की तलाश में निकला तो एक शख़्स को देखा वोह मुझ को देखते ही फ़िरार हो गया और मैं ने देखा कि वहां की ज़मीन खोदी हुई है जब मैं ने मिट्टी हटा कर देखा तो बेग वहां दफ़्न था मैं उस को निकाल कर ले आया। येह सुन कर सब बोल पड़े कि बिला शुबा येह रसूले बरहक़ हैं और हम को इन्हों ने इसी लिये इस वाक़िए की ख़बर दे दी ताकि हम लोग इन की तस्दीक़ कर लें। उन सब लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया और उस जवान ने भी दरबारे रसूल में हाज़िर हो कर कलिमा पढ़ा और इस्लाम के दामन में आ गया। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को हुक्म दिया कि जितने दिनों इन लोगों का मदीने में क़ियाम रहे तुम इन लोगों को कुरआन पढ़ना सिखा दो।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۳۷۴)

वफ़्दे नजरान

येह नजरान के नसारा का वफ़्द था। इस में साठ सुवार थे। चौबीस इन के शुरफ़ा और मुअ़ज़्ज़ज़ीन थे और तीन अश्ख़ास इस दरजे के थे कि उन्हीं के हाथों में नजरान के नसारा का मज़्हबी और क़ौमी सारा निज़ाम था। एक आ़क़िब जिस का नाम "अ़ब्दुल मसीह़" था दूसरा शख़्स सय्यिद जिस का नाम "ऐहम" था तीसरा शख़्स "अबू ह़ारिसा बिन अ़ल्क़मा" था। इन लोगों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से बहुत से सुवालात किये और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के जवाबात दिये यहां तक कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुआ़मले पर गुफ़्तगू छिड़ गई। इन लोगों ने येह मानने से इन्कार कर दिया कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام कंवारी मरयम के शिकम से बिग़ैर बाप के पैदा हुए इस मौक़अ़ पर येह आयत नाज़िल हुई कि जिस को "आयते मुबाहला" कहते हैं कि

---

1 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی، باب الوفد الثانی والثلاثون،وفدغامد،ج۵،ص۲۲۵

اِنَّ مَثَلَ عِیۡسٰی عِنۡدَ اللّٰہِ کَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَہٗ مِنۡ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَہٗ کُنۡ فَیَکُوۡنُ ○ اَلۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّکَ فَلَا تَکُنۡ مِّنَ الۡمُمۡتَرِیۡنَ ○ فَمَنۡ حَآجَّکَ فِیۡہِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَکَ مِنَ الۡعِلۡمِ فَقُلۡ تَعَالَوۡا نَدۡعُ اَبۡنَآءَنَا وَ اَبۡنَآءَکُمۡ وَ نِسَآءَنَا وَ نِسَآءَکُمۡ وَ اَنۡفُسَنَا وَ اَنۡفُسَکُمۡ ۟ قف ثُمَّ نَبۡتَہِلۡ فَنَجۡعَلۡ لَّعۡنَتَ اللّٰہِ عَلَی الۡکٰذِبِیۡنَ ○[1]

(آل عمران)

बेशक हज़रते ईसा (عَلَیْہِ السَّلَام) की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम (عَلَیْہِ السَّلَام) की तरह है कि उन को मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया "हो जा" वोह फ़ौरन हो जाता है (ऐ सुनने वाले) येह तेरे रब की तरफ़ से हक़ है तुम शक वालों में से न होना फिर (ऐ महबूब) जो तुम से हज़रते ईसा के बारे में हुज्जत करें बा'द इस के कि तुम्हें इल्म आ चुका तो उन से फ़रमा दो आओ हम बुलाएं अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को और अपनी जानों को और तुम्हारी जानों को फिर हम गिड़गिड़ा कर दुआ मांगें और झूटों पर अल्लाह की ला'नत डालें।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब उन लोगों को इस मुबाहले की दा'वत दी तो उन नसरानियों ने रात भर की मोहलत मांगी। सुब्ह़ को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते हसन, हज़रते हुसैन, हज़रते अ़ली, हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ को साथ ले कर मुबाहले के लिये काशानए नुबुव्वत से निकल पड़े मगर नजरान के नसरानियों ने मुबाहले से इन्कार कर दिया और जिज़्या देने का इक़रार कर के हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुल्ह़ कर ली।[2] (تفسیر جلالین وغیرہ)

---

1 ......پ۳،آل عمران:۵۹۔۶۱

2 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،باب الوفدالرابع عشر...الخ،ج۵،ص۱۸۶۔۱۹۰ملتقطاً

पन्द्रहवां बाब

हिजरत का दसवां साल

सि. 10 हि.

हिज्जतुल वदाअ़

इस साल के तमाम वाक़िआत में सब से ज़ियादा शानदार और अहम तरीन वाक़िआ "हिज्जतुल वदाअ़" है । येह आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का आख़िरी हज था और हिजरत के बा'द येही आप का पहला हज था । ज़ू क़ा'दह सि. 10 हि. में आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज के लिये रवानगी का ए'लान फ़रमाया । येह ख़बर बिजली की तरह सारे अ़रब में हर त़रफ़ फैल गई और तमाम अ़रब शरफ़े हमरिकाबी के लिये उमंड पड़ा ।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने आख़िर ज़ू क़ा'दह में जुमा'रात के दिन मदीने में ग़ुस्ल फ़रमा कर तहबन्द और चादर ज़ैबे तन फ़रमाया और नमाज़े ज़ोहर मस्जिदे नबवी में अदा फ़रमा कर मदीनए मुनव्वरह से रवाना हुए और अपनी तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن को भी साथ चलने का हुक्म दिया । मदीनए मुनव्वरह से छे मील दूर अहले मदीना की मीक़ात "ज़ुल हुलीफ़ा" पर पहुंच कर रात भर क़ियाम फ़रमाया फिर एहराम के लिये ग़ुस्ल फ़रमाया और ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने अपने हाथ से जिस्मे अत़्हर पर ख़ुश्बू लगाई फिर आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई और अपनी ऊंटनी "क़स्वा" पर सुवार हो कर एहराम बांधा और बुलन्द आवाज़ से "लब्बैक" पढ़ा और रवाना हो गए । ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का बयान है कि मैं ने नज़र उठा कर देखा तो आगे पीछे दाएं बाएं ह़द्दे निगाह तक आदमियों का जंगल नज़र आता था । बैहक़ी की रिवायत है कि एक लाख चौदह हज़ार और दूसरी रिवायतों में है एक लाख चौबीस हज़ार मुसलमान हिज्जतुल

वदाअ़ में आप के साथ थे ।[1] (زرقانی ج۳ص۱۰۶ومدارج ج۲ص۳۸۷)

चौथी जुल हिज्जा को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा में दाखि़ल हुए । आप के ख़ानदान बनी हाशिम के लड़कों ने तशरीफ़ आवरी की ख़बर सुनी तो ख़ुशी से दौड़ पड़े और आप ने निहायत ही महब्बत व प्यार के साथ किसी को आगे किसी को पीछे अपनी ऊंटनी पर बिठा लिया ।[2] (نسائی باب استقبال الحاج ج۲ص۲۶مطبوعہ رحیمیہ)

फ़ज्र की नमाज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक़ामे "ज़ी तुवा" में अदा फ़रमाई और ग़ुस्ल फ़रमाया फिर आप मक्कए मुकर्रमा में दाखि़ल हुए और चाश्त के वक़्त या'नी जब आफ़्ताब बुलन्द हो चुका था तो आप मस्जिदे ह़राम में दाखि़ल हुए । जब का'बए मुअ़ज़्ज़मा पर निगाहे महरे नुबुव्वत पड़ी तो आप ने येह दुआ़ पढ़ी कि

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ حَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ اَللّٰھُمَّ زِدْ ھٰذَا الْبَيْتَ
تَشْرِيفًا وَّتَعْظِيمًا وَّتَكْرِيمًا وَّمَهَابَةً وَّزِدْ مَنْ حَجَّهٗ وَاعْتَمَرَهٗ تَكْرِيمًا وَّتَشْرِيفًا وَّتَعْظِيمًا

ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ तू सलामती देने वाला है और तेरी त़रफ़ से सलामती है । ऐ रब ! عَزَّوَجَلَّ हमें सलामती के साथ ज़िन्दा रख । ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ इस घर की अ़ज़मत व शरफ़ और इ़ज़्ज़त व हैबत को ज़ियादा कर और जो इस घर का ह़ज और उ़मरह करे तू उस की बुज़ुर्गी और शरफ़ व अ़ज़मत को ज़ियादा कर ।

जब ह़जरे अस्वद के सामने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए तो ह़जरे अस्वद पर हाथ रख कर उस को बोसा दिया फिर ख़ानए

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،النوع السادس في ذكر حجه وعمره،ج١١،ص٣٢٩-٣٣١
وحجة الوداع،ج٤،ص١٤٦

2 ......سنن النسائي،كتاب مناسك الحج،باب استقبال الحج،الحديث:٢٨٩١،ص٤٧١
ومدارج النبوت، قسم سوم،باب دهم،ج٢،ص٣٨٧

का'बा का त़वाफ़ फ़रमाया। शुरूअ़ के तीन फेरों में आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने "रमल" किया और बाक़ी चार चक्करों में मा'मूली चाल से चले हर चक्कर में जब ह़जरे अस्वद के सामने पहुंचते तो अपनी छड़ी से ह़जरे अस्वद की त़रफ़ इशारा कर के छड़ी को चूम लेते थे। ह़जरे अस्वद का इस्तिलाम कभी आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने छड़ी के ज़रीए़ से किया कभी हाथ से छू कर हाथ को चूम लिया कभी लब मुबारक को ह़जरे अस्वद पर रख कर बोसा दिया और येह भी साबित है कि कभी रुक्ने यमानी का भी आप ने इस्तिलाम किया।[1] (نسائی ج۲ص۳۰وص۳۱)

जब त़वाफ़ से फ़ारिग़ हुए तो मक़ामे इब्राहीम के पास तशरीफ़ लाए और वहां दो रक्अ़त नमाज़ अदा की। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फिर ह़जरे अस्वद का इस्तिलाम फ़रमाया और सामने के दरवाज़े से सफ़ा की जानिब रवाना हुए क़रीब पहुंचे तो इस आयत की तिलावत फ़रमाई कि

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ (2)

*बेशक सफ़ा और मर्वह **अल्लाह** के दीन के निशानों में से हैं।*

फिर सफ़ा और मर्वह की सअ़्य फ़रमाई और चूंकि आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ क़ुरबानी के जानवर थे इस लिये उ़मरह अदा करने के बा'द आप ने एह़राम नहीं उतारा।

आठवीं ज़ुल हि़ज्जा जुमा'रात के दिन आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिना तशरीफ़ ले गए और पांच नमाज़ें, ज़ोहर, अ़स्र, मग़रिब, इ़शा, फ़ज्र, मिना में अदा फ़रमा कर नवीं ज़ुल हि़ज्जा के दिन आप अ़रफ़ात में तशरीफ़ ले गए।

---

1 ......المواهب اللدنيةمع شرح الزرقاني،النوع السادس في ذكر حجه وعمره صلى الله عليه وسلم، ج۱۱، ص۳۷۵،۳۷۷۔۳۷۹ملتقطاًومدارج النبوت،قسم سوم،باب دهم،ج۲،ص۳۸۹ملتقطاً

2 ......پ۲،البقرة:۱۵۸

ज़मानए जाहिलिय्यत में चूंकि क़ुरैश अपने को सारे अ़रब में अफ़्ज़लो आ'ला शुमार करते थे इस लिये वोह अ़रफ़ात की बजाए "मुज़्दलिफ़ा" में क़ियाम करते थे और दूसरे तमाम अ़रब "अ़रफ़ात" में ठहरते थे लेकिन इस्लामी मुसावात ने क़ुरैश के लिये इस तख़्सीस को गवारा नहीं किया और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने येह हुक्म दिया कि

ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ (1)

(ऐ क़ुरैश) तुम भी वहीं (अ़रफ़ात) से पलट कर आओ जहां से सब लोग पलट कर आते हैं।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़रफ़ात पहुंच कर एक कम्बल के ख़ैमे में क़ियाम फ़रमाया। जब सूरज ढल गया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ऊंटनी "क़स्वा" पर सुवार हो कर ख़ुत्बा पढ़ा। इस ख़ुत्बे में आप ने बहुत से ज़रूरी अह़कामे इस्लाम का ए'लान फ़रमाया और ज़मानए जाहिलिय्यत की तमाम बुराइयों और बेहूदा रस्मों को आप ने मिटाते हुए ए'लान फ़रमाया कि اَلَا كُلُّ شَيْءٍ مِّنْ اَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ تَحْتَ قَدَمَيَّ مَوْضُوْعٌ सुन लो ! जाहिलिय्यत के तमाम दस्तूर मेरे दोनों क़दमों के नीचे पामाल हैं।(2)

(ابوداؤد ج ا ص ٢٦٣ و مسلم ج ا ص ٣٩٧ باب حجۃ النبی)

इसी त़रह़ ज़मानए जाहिलिय्यत के ख़ानदानी तफ़ाख़ुर और रंग व नस्ल की बर तरी और क़ौमिय्यत में नीच ऊंच वग़ैरा तसव्वुराते जाहिलिय्यत के बुतों को पाश पाश करते हुए और मुसावाते इस्लाम का अ़लम बुलन्द फ़रमाते हुए ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इस तारीख़ी ख़ुत्बे में इरशाद फ़रमाया कि

---

1 ......پ ٢، البقرة: ١٩٩

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، النوع السادس في ذكر حجه وعمره، ج ١١، ص ٣٨٤، ٣٩٣_٣٩٥، ٣٩٧ ملتقطاً و صحيح مسلم، كتاب الحج، باب حجة النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ١٢١٨، ص ٦٣٤

يٰـاَيُّهَا النَّـاسُ اَلَا اِنَّ رَبَّـكُـمْ وَاحِدٌ وَاِنَّ اَبَاكُمْ وَاحِدٌ اَلَا لَا فَضْلَ لِـعَرَبِـيٍّ عَـلٰـى اَعْـجَمِيٍّ وَلَا لِعَجَمِيٍّ عَلٰى عَرَبِيٍّ وَلَا لِاَحْمَرَ عَلٰى اَسْوَدَ وَلَا لِاَسْـوَدَ عَـلٰـى اَحْـمَرَ اِلَّا بِالتَّقْوٰى[1] (مسندامام احمد)

ऐ लोगो ! बेशक तुम्हारा रब एक है और बेशक तुम्हारा बाप (आदम عَلَيْهِ السَّلَام) एक है। सुन लो ! किसी अ़रबी को किसी अ़जमी पर और किसी अ़जमी को किसी अ़रबी पर, किसी सुर्ख़ को किसी काले पर और किसी काले को किसी सुर्ख़ पर कोई फ़ज़ीलत नहीं मगर तक़्वा के सबब से।

इसी त़रह़ तमाम दुन्या में अम्नो अमान क़ाइम फ़रमाने के लिये अम्नो सलामती के शहनशाह ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह खुदाई फ़रमान जारी फ़रमाया कि

فَاِنَّ دِمَائَكُمْ وَاَمْوَالَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا فِيْ شَهْرِكُمْ هٰذَا فِيْ بَلَدِكُمْ هٰذَا اِلٰى يَوْمٍ تَلْقَوْنَ رَبَّكُمْ[2]

तुम्हारा ख़ून और तुम्हारा माल तुम पर ता क़ियामत इसी त़रह़ ह़राम है जिस त़रह़ तुम्हारा येह दिन, तुम्हारा येह महीना, तुम्हारा येह शहर मोह़तरम है।

(بخاری ومسلم وابوداؤد)

अपना खुत़्बा ख़त्म फ़रमाते हुए आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सामिईन से फ़रमाया कि وَاَنْتُمْ مَسْئُوْلُوْنَ عَنِّيْ فَمَا اَنْتُمْ قَائِلُوْنَ तुम से खुदा عَزَّوَجَلَّ के यहां मेरी निस्बत पूछा जाएगा तो तुम लोग क्या जवाब दोगे ?

तमाम सामिईन ने कहा कि हम लोग खुदा से कह देंगे कि आप ने खुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया और रिसालत का ह़क़ अदा कर दिया। येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने आस्मान की त़रफ़ उंगली उठाई

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل،حديث رجل من اصحاب النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، الحديث: ٢٣٥٤٨،ج٩،ص١٢٧

2 ......صحيح البخاری، کتاب الحج،باب الخطبة ايام منى،الحديث:١٧٤١،ج١،ص٥٧٧ملتقطاً

और तीन बार फ़रमाया कि اَللّٰھُمَّ اشْھَدْ ऐ **अल्लाह** ! तू गवाह रहना ।[1]

(ابوداؤدج۱ص۲۶۳باب صفۃ حج النبی)

ऐन इसी हालत में जब कि खुत़्बे में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपना फ़र्ज़े रिसालत अदा फ़रमा रहे थे येह आयत नाज़िल हुई कि

اَلْیَوْمَ اَکْمَلْتُ لَکُمْ دِیْنَکُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْکُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَکُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا ط (2)

आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और अपनी ने'मत तमाम कर दी और तुम्हारे लिये दीने इस्लाम को पसन्द कर लिया ।

शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का तख़्ते शाही

येह हैरत अंगेज़ व इब्रत खे़ज़ वाक़िआ़ भी याद रखने के क़ाबिल है कि जिस वक़्त शहनशाहे कौनैन, खुदा عَزَّوَجَلَّ के नाइबे अकरम और ख़लीफ़ए आ'ज़म होने की हैसिय्यत से फ़रमाने रब्बानी का ए'लान फ़रमा रहे थे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का तख़्ते शहनशाही या'नी ऊंटनी का कजावा और अ़रक़ गीर शायद दस रुपै से ज़ियादा क़ीमत का न था न उस ऊंटनी पर कोई शानदार कजावा था न कोई हौदज न कोई मह़मिल न कोई चित्र न कोई ताज ।

क्या तारीखे़ आ़लम में किसी और बादशाह ने भी ऐसी सादगी का नुमूना पेश किया है ? इस का जवाब येही और फ़क़त़ येही है कि "नहीं ।"

येह वोह ज़ाहिदाना शहनशाही है जो सिर्फ़ शहनशाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शहनशाहिय्यत का तुर्रए इम्तियाज़ है !

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب المناسک، باب صفۃ حجۃ النبی صلی اللّٰہ تعالٰی عیہ وسلم، الحدیث: ۱۹۰۵، ج۲، ص۲۶۹ ملتقطاً

2 ......پ۶، المائدۃ:۳ و مدارج النبوت، قسم سوم، باب دھم، ج۲، ص۳۹۴

खुत्बे के बा'द आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़ोहर व अ़स्र एक अज़ान और दो इक़ामतों से अदा फ़रमाई फिर "मौक़िफ़" में तशरीफ़ ले गए और जबले रह़मत के नीचे ग़ुरूबे आफ़्ताब तक दुआ़ओं में मसरूफ़ रहे। ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द अ़रफ़ात से एक लाख से ज़ाइद हुज्जाज के इज़्दिहाम में "मुज़्दलिफ़ा" पहुंचे। यहां पहले मग़रिब फिर इशा एक अज़ान और दो इक़ामतों से अदा फ़रमाई। मुश्इ़रे ह़राम के पास रात भर उम्मत के लिये दुआ़एं मांगते रहे और सूरज निकलने से पहले मुज़्दलिफ़ा से मिना के लिये रवाना हो गए और वादिये मुह़स्सर के रास्ते से मिना में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم "जमरह" के पास तशरीफ़ लाए और कंकरियां मारीं फिर आप ने ब आवाज़े बुलन्द फ़रमाया कि

لِتَاخُذُوْا مَنَاسِكَكُمْ فَاِنِّیْ لَا اَدْرِیْ لَعَلِّیْ لَا اَحُجُّ بَعْدَ حَجَّتِیْ هٰذِهٖ (1)

ह़ज के मसाइल सीख लो ! मैं नहीं जानता कि शायद इस के बा'द मैं दूसरा ह़ज न करूंगा। (مسلم ج۱ص۴۱۹باب رمی جمرۃ العقبہ)

मिना में भी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक त़वील खुत़्बा दिया जिस में अ़रफ़ात के खुत़्बे की त़रह़ बहुत से मसाइल व अह़काम का ए'लान फ़रमाया। फिर कुरबान गाह में तशरीफ़ ले गए। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कुरबानी के एक सो ऊंट थे। कुछ को तो आप ने अपने दस्ते मुबारक से ज़ब्ह़ फ़रमाया और बाक़ी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को सोंप दिया और गोश्त, पोस्त, झोल, नकील सब को ख़ैरात कर देने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि क़स्साब की मज़दूरी भी इस में से न अदा की जाए बल्कि अलग से दी जाए।(2)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب استحباب رمی الجمرة العقبة...الخ، الحدیث: ۱۲۹۷، ص ٦٧٥ ومدارج النبوت، قسم سوم، باب دهم، ج۲، ص۳۹۳، ۳۹۵_۳۹٦ ملتقطاً

2 ......السیرة الحلبیة، حجة الوداع، ج۳، ص۳۷٦_۳۷۷ ملتقطاً

मूए मुबारक

कु़रबानी के बा'द ह़ज़रते मुअ़म्मर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सर के बाल उतरवाए और कुछ हिस्सा ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अ़त़ा फ़रमाया और बाक़ी मूए मुबारक को मुसलमानों में तक़्सीम कर देने का हुक्म सादिर फ़रमाया।[1] (مسلم ج۱ص۴۲۱ باب بیان ان السنۃ یوم النحر الخ)

इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मक्का तशरीफ़ लाए और त़वाफ़े ज़ियारत फ़रमाया।

साक़िये कौसर चाहे ज़मज़म पर

फिर चाहे ज़मज़म के पास तशरीफ़ लाए। ख़ानदाने अ़ब्दुल मुत्त़लिब के लोग ह़ाजियों को ज़मज़म पिला रहे थे। आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे येह ख़ौफ़ न होता कि मुझ को ऐसा करते देख कर दूसरे लोग भी तुम्हारे हाथ से डोल छीन कर ख़ुद अपने हाथ से पानी भर कर पीने लगेंगे तो मैं ख़ुद अपने हाथ से पानी भर कर पीता। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ज़मज़म शरीफ़ पेश किया और आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़िब्ला रुख़ खड़े खड़े ज़मज़म शरीफ़ नोश फ़रमाया। फिर मिना वापस तशरीफ़ ले गए और बारह ज़ुल ह़िज्जा तक मिना में मुक़ीम रहे और हर रोज़ सूरज ढलने के बा'द जमरों को कंकरी मारते रहे। तेरह ज़ुल ह़िज्जा मंगल के दिन आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सूरज ढलने के बा'द मिना से रवाना हो कर "मुह़स्सब" में रात भर क़ियाम फ़रमाया और सुब्ह़ को नमाज़े फ़ज्र का'बे की मस्जिद में अदा फ़रमाई और त़वाफ़े वदाअ़ कर के अन्सार व मुहाजिरीन के साथ मदीनए मुनव्वरह के लिये रवाना हो गए।[2]

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب بیان ان السنة...الخ، الحدیث:١٣٠٥، ص٦٧٨
والمواهب اللدنیة مع شرح الزرقانی، النوع السادس فی ذکرحجه وعمره صلی اللّٰه تعالٰی علیه وسلم، ج١١، ص٤٣٧، ٤٣٨ ملخصاً

2 ......شرح الزرقانی علی المواهب، النوع السادس فی ذکرحجه وعمره، ج١١، ص٤٦٠_٤٦٦ ملتقطاً

ग़दीरे ख़ुम का ख़ुत्बा

रास्ते में मक़ामे "ग़दीरे ख़ुम" पर जो एक तालाब है यहां तमाम हमराहियों को जम्अ़ फ़रमा कर एक मुख़्तसर ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया जिस का तर्जमा येह है :

हम्दो सना के बा'द : ऐ लोगो ! मैं भी एक आदमी हूं। मुमकिन है कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का फ़िरिश्ता (मलकुल मौत) जल्द आ जाए और मुझे उस का पैग़ाम क़बूल करना पड़े मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी चीज़ें छोड़ता हूं। एक ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की किताब जिस में हिदायत और रौशनी है और दूसरी चीज़ मेरे अहले बैत हैं। मैं अपने अहले बैत के बारे में तुम्हें ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की याद दिलाता हूं।[1] (مسلم ج۲ص۲۷۹باب من فضائل علی)

इस ख़ुत्बे में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी इरशाद फ़रमाया कि

مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ اَللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَّالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ[2] (مشکوٰۃ ص۵۶۵مناقب علی)

जिस का मैं मौला हूं अ़ली भी उस के मौला। ख़ुदा वन्दा ! عَزَّوَجَلَّ जो अ़ली से महब्बत रखे उस से तू भी महब्बत रख और जो अ़ली से अ़दावत रखे उस से तू भी अ़दावत रख।

ग़दीरे ख़ुम के ख़ुत्बे में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के फ़ज़ाइल व मनाक़िब बयान करने की क्या ज़रूरत थी इस की कोई तसरीह़ कहीं ह़दीसों में नहीं मिलती। हां, अलबत्ता बुख़ारी की एक रिवायत से पता चलता है कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपने इख़्तियार से कोई ऐसा काम कर डाला था जिस को उन के यमन से आने वाले हमराहियों ने पसन्द नहीं किया यहां तक कि उन में से एक ने बारगाहे रिसालत में इस

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب من فضائل علی ابن ابی طالب، الحدیث:۲٤۰۸، ص۱۳۱۲ ملتقطاً

2 ......مشکاۃالمصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، الفصل الثالث، الحدیث:٦١٠٣، ج۲، ص٤٣٠

की शिकायत भी कर दी जिस का हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह जवाब दिया कि अ़ली को इस से ज़ियादा ह़क़ है। मुमकिन है इसी क़िस्म के शुबुहात व शुकूक को मुसलमान यमनियों के दिलों से दूर करने के लिये इस मौक़अ़ पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली और अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के फ़ज़ाइल भी बयान कर दिये हों।[1]

(بخاری باب بعث علی الی الیمن ج۲ص ۶۲۳ وترمذی مناقب علی)

रवाफ़िज़ का एक शुबा

बा'ज़ शीआ़ साहिबान ने इस मौक़अ़ पर लिखा है कि "ग़दीरे खुम" का खुत़्बा येह "ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की ख़िलाफ़त बिला फ़स्ल का ए'लान था" मगर अहले फ़ह्म पर रौशन है कि येह मह़ज़ एक "तुक बन्दी" के सिवा कुछ भी नहीं क्यूं कि अगर वाक़ेई ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये ख़िलाफ़त बिला फ़स्ल का ए'लान करना था तो अ़रफ़ात या मिना के खुत़्बों में येह ए'लान ज़ियादा मुनासिब था जहां एक लाख से ज़ाइद मुसलमानों का इजतिमाअ़ था न कि ग़दीरे खुम पर जहां यमन और मदीने वालों के सिवा कोई भी न था।

मदीने के क़रीब पहुंच कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक़ामे ज़ुल ह़लीफ़ा में रात बसर फ़रमाई और सुब्ह़ को मदीनए मुनव्वरह में नुज़ूले इज्लाल फ़रमाया।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب بعث علی...الخ، الحدیث: ۴۳۵۰، ج۳، ص۱۲۳
وفتح الباری شرح صحیح البخاری، تحت الحدیث: ۴۳۵۰، ج۸، ص۵۷

सोलहवां बाब

हिजरत का ग्यारहवां साल

सि. 11 हि.

जैशे उसामा

इस लश्कर का दूसरा नाम "सरिय्यए उसामा" भी है। येह सब से आख़िरी फ़ौज है जिस के रवाना करने का रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया। 26 सफ़र सि. 11 हि. दो शम्बा के दिन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने रूमियों से जंग की तय्यारी का हुक्म दिया और दूसरे दिन ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को बुला कर फ़रमाया कि मैं ने तुम को इस फ़ौज का अमीरे लश्कर मुक़र्रर किया तुम अपने बाप की शहादत गाह मक़ामे "उबना" में जाओ और निहायत तेज़ी के साथ सफ़र कर के उन कुफ़्फ़ार पर अचानक ह़म्ला कर दो ताकि वोह लोग जंग की तय्यारी न कर सकें। बा वुजूदे कि मिज़ाजे अक़्दस नासाज़ था मगर इसी ह़ालत में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद अपने दस्ते मुबारक से झन्डा बांधा और येह निशाने इस्लाम ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के हाथ में दे कर इरशाद फ़रमाया : "اُغْزُ بِسْمِ اللّٰهِ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَقَاتِلْ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ"

अल्लाह के नाम से और अल्लाह की राह में जिहाद करो और काफ़िरों के साथ जंग करो।

ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते बरीदा बिन अल हुसैब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को अ़लम बरदार बनाया और मदीने से निकल कर एक कोस दूर मक़ामे "जरफ़" में पड़ाव किया ताकि वहां पूरा लश्कर जम्अ़ हो जाए। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अन्सार व मुहाजिरीन के तमाम मुअ़ज़्ज़िज़ीन को भी इस लश्कर में शामिल हो जाने का हुक्म दे दिया। बा'ज़ लोगों पर येह शाक़ गुज़रा कि ऐसा लश्कर जिस में अन्सार व मुहाजिरीन के अकाबिर व अ़माइद मौजूद हैं एक नौ उ़म्र लड़का जिस

की उम्र बीस बरस से ज़ाइद नहीं किस त़रह़ अमीरे लश्कर बना दिया गया ? जब हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इस ए'तिराज़ की ख़बर मिली तो आप के क़ल्बे नाज़ुक पर सदमा गुज़रा और आप ने अ़लालत के बा वुजूद सर में पट्टी बांधे हुए एक चादर ओढ़ कर मिम्बर पर एक ख़ुत़्बा दिया जिस में इरशाद फ़रमाया कि अगर तुम लोगों ने उसामा की सिपह सालारी पर त़ा'ना ज़नी की है तो तुम लोगों ने इस से क़ब्ल इस के बाप के सिपह सालार होने पर भी त़ा'ना ज़नी की थी ह़ालां कि ख़ुदा की क़सम ! इस का बाप (ज़ैद बिन ह़ारिसा) सिपह सालार होने के लाइक़ था और उस के बा'द उस का बेटा (उसामा बिन ज़ैद) भी सिपह सालार होने के क़ाबिल है और येह मेरे नज़्दीक मेरे मह़बूब तरीन सह़ाबा में से है जैसा कि इस का बाप मेरे मह़बूब तरीन अस्ह़ाब में से था लिहाज़ा उसामा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के बारे में तुम लोग मेरी नेक वसिय्यत को क़बूल करो कि वोह तुम्हारे बेहतरीन लोगों में से है।

हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह ख़ुत़्बा दे कर मकान में तशरीफ़ ले गए और आप की अ़लालत में कुछ और भी इज़ाफ़ा हो गया।

ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हुक्मे नबवी की तक्मील करते हुए मक़ामे जरफ़ में पहुंच गए थे और वहां लश्करे इस्लाम का इजतिमाअ़ होता रहा यहां तक कि एक अ़ज़ीम लश्कर तय्यार हो गया। 10 रबीउ़ल अव्वल सि. 11 हि. को जिहाद में जाने वाले ख़वास हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रुख़्सत होने के लिये आए और रुख़्सत हो कर मक़ामे जरफ़ में पहुंच गए। इस के दूसरे दिन हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत ने और ज़ियादा शिद्दत इख़्तियार कर ली। ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मिज़ाज पुर्सी और रुख़्सत होने के लिये ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए। आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उसामा

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को देखा मगर ज़ो'फ़ की वजह से कुछ बोल न सके, बार बार दस्ते मुबारक को आस्मान की त़रफ़ उठाते थे और उन के बदन पर अपना मुक़द्दस हाथ फैरते थे। ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि इस से मैं ने येह समझा कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे लिये दुआ फ़रमा रहे हैं। इस के बा'द ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रुख़्सत हो कर अपनी फ़ौज में तशरीफ़ ले गए और 12 रबीउ़ल अव्वल सि. 11 हि. को कूच करने का ए'लान भी फ़रमा दिया। अब सुवार होने के लिये तय्यारी कर रहे थे कि उन की वालिदा ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का फ़रिस्तादा आदमी पहुंचा कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नज़्अ़ की ह़ालत में हैं। येह होशरुबा ख़बर सुन कर ह़ज़रते उसामा व ह़ज़रते उ़मर व ह़ज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم वग़ैरा फ़ौरन ही मदीना आए तो येह देखा कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सकरात के आ़लम में हैं और उसी दिन दोपहर को या सह पहर के वक़्त आप का विसाल हो गया। اِنَّـا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ येह ख़बर सुन कर ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का लश्कर मदीना वापस चला आया मगर जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मस्नदे ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ हो गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बा'ज़ लोगों की मुख़ालफ़त के बा वुजूद रबीउ़ल आख़िर की आख़िरी तारीख़ों में उस लश्कर को रवाना फ़रमाया और ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मक़ामे "उबना" में तशरीफ़ ले गए और वहां बहुत ही ख़ूंरैज़ जंग के बा'द लश्करे इस्लाम फ़त्ह़ याब हुवा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बाप के क़ातिल और दूसरे कुफ़्फ़ार को क़त्ल किया और बे शुमार माले ग़नीमत ले कर चालीस दिन के बा'द मदीने वापस तशरीफ़ लाए।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۴۰۹تاص۴۱۱وزرقانی ج۳ص۱۰۷تا۱۱۲)

---

[1] ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،اخرالبعوث النبویة،ج٤،ص١٤٧۔١٥٢،١٥٥ملخصاً
ومدارج النبوت،قسم سوم،باب یازدھم،ج٢،ص٤٠٩۔٤١٠ملخصاً

वफ़ाते अक़्दस

हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इस आ़लम में तशरीफ़ लाना सिर्फ़ इस लिये था कि आप खुदा के आख़िरी और क़त़ई पैग़ाम या'नी दीने इस्लाम के अह़काम उस के बन्दों तक पहुंचा दें और खुदा की हुज्जत तमाम फ़रमा दें। इस काम को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क्यूंकर अन्जाम दिया ? और इस में आप को कितनी काम्याबी ह़ासिल हुई ? इस का इज्माली जवाब येह है कि जब से येह दुन्या आ़लमे वुजूद में आई हज़ारों अम्बिया व रुसुल عَلَیْہِمُ السَّلَام इस अ़ज़ीमुश्शान काम को अन्जाम देने के लिये इस आ़लम में तशरीफ़ लाए मगर तमाम अम्बिया व मुर्सलीन के तब्लीग़ी कारनामों को अगर जम्अ़ कर लिया जाए तो वोह हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तब्लीग़ी शाहकारों के मुक़ाबले में ऐसे ही नज़र आएंगे जैसे आफ़्ताबे आ़लमे ताब के मुक़ाबले में एक चराग़ या एक सह़रा के मुक़ाबले में एक ज़र्रा या एक समुन्दर के मुक़ाबले में एक क़त़रा। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तब्लीग़ ने आ़लम में ऐसा इन्क़िलाब पैदा कर दिया कि काएनाते हस्ती की हर पस्ती को मे'राजे कमाल की सर बुलन्दी अ़त़ा फ़रमा कर ज़िल्लत की ज़मीन को इ़ज़्ज़त का आस्मान बना दिया और दीने ह़नीफ़ के इस मुक़द्दस और नूरानी मह़ल को जिस की ता'मीर के लिये ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से ले कर ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام तक तमाम अम्बिया व रुसुल मे'मार बना कर भेजे जाते रहे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ातमुन्नबिय्यीन की शान से इस क़स्रे हिदायत को इस त़रह़ मुकम्मल फ़रमा दिया कि ह़ज़रते ह़क़ جَلَّ جَلَالُہٗ ने इस पर اَلْیَوْمَ اَکْمَلْتُ لَکُمْ دِیْنَکُمْ[1] की मोहर लगा दी।

जब दीने इस्लाम मुकम्मल हो चुका और दुन्या में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ लाने का मक़्सद पूरा हो चुका तो अल्लाह तआ़ला के वा'दए मोह़कम اِنَّکَ مَیِّتٌ وَّاِنَّھُمْ مَّیِّتُوْنَ ۝[2] के पूरा होने का वक़्त आ गया।

---

1 ...... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया।* پ٦،المائدۃ:٣

2 ...... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बे शक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और उन को भी मरना है।* پ٢٣،الزمر:٣٠

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी वफ़ात का इल्म

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत पहले से अपनी वफ़ात का इल्म हासिल हो गया था और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर लोगों को इस की ख़बर भी दे दी थी। चुनान्चे हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर आप ने लोगों को येह फ़रमा कर रुख़्सत फ़रमाया था : "शायद इस के बा'द मैं तुम्हारे साथ हज न कर सकूंगा।"(1)

इसी त़रह़ "ग़दीरे ख़ुम" के ख़ुत़्बे में इसी अन्दाज़ से कुछ इसी क़िस्म के अल्फ़ाज़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस से अदा हुए थे अगर्चे इन दोनों ख़ुत़्बात में लफ़्ज़ लअ़ल्ल (शायद) फ़रमा कर ज़रा पर्दा डालते हुए अपनी वफ़ात की ख़बर दी मगर हिज्जतुल वदाअ़ से वापस आ कर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो ख़ुत़्बात इरशाद फ़रमाए उस में लअ़ल्ल (शायद) का लफ़्ज़ आप ने नहीं फ़रमाया बल्कि साफ़ साफ़ और यक़ीन के साथ अपनी वफ़ात की ख़बर से लोगों को आगाह फ़रमा दिया।

चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि एक दिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم घर से बाहर तशरीफ़ ले गए और शुहदाए उहुद की क़ब्रों पर इस त़रह़ नमाज़ पढ़ी जैसे मय्यित पर नमाज़ पढ़ी जाती है फिर पलट कर मिम्बर पर रौनक़ अफ़्रोज़ हुए और इरशाद फ़रमाया कि मैं तुम्हारा पेश रू (तुम से पहले वफ़ात पाने वाला) हूं और तुम्हारा गवाह हूं और मैं ख़ुदा की क़सम ! अपने हौज़ को इस वक़्त देख रहा हूं।(2)

(بخاری کتاب الحوض ج۲ص ۹۷۵)

---

1 ......تاریخ الطبری، حجۃ الوداع، ج۲، ص۳٤٤

2 ......صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب الحوض، الحدیث: ٦٥٩٠، ج٤، ص٢٧٠

इस ह़दीस में اِنِّیْ فَرَطٌ لَّکُمْ फ़रमाया या'नी मैं अब तुम लोगों से पहले ही वफ़ात पा कर जा रहा हूं ताकि वहां जा कर तुम लोगों के लिये ह़ौज़े कौसर का इनतिज़ाम करूं।

येह क़िस्सा मरज़े वफ़ात शुरूअ़ होने से पहले का है लेकिन इस क़िस्से को बयान फ़रमाने के वक़्त आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इस का यक़ीनी इ़ल्म ह़ासिल हो चुका था कि मैं कब और किस वक़्त दुन्या से जाने वाला हूं और मरज़े वफ़ात शुरूअ़ होने के बा'द तो अपनी साह़िब ज़ादी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में बिग़ैर "शायद" का लफ़्ज़ फ़रमाते हुए अपनी वफ़ात की ख़बर दे दी। चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि

अपने मरज़े वफ़ात में आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को बुलाया और चुपके चुपके उन से कुछ फ़रमाया तो वोह रो पड़ीं। फिर बुलाया और चुपके चुपके कुछ फ़रमाया तो वोह हंस पड़ीं जब अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن ने इस के बारे में ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने कहा कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आहिस्ता आहिस्ता मुझ से येह फ़रमाया कि मैं इसी बीमारी में वफ़ात पा जाऊंगा तो मैं रो पड़ी। फिर चुपके चुपके मुझ से फ़रमाया कि मेरे बा'द मेरे घर वालों में से सब से पहले तुम वफ़ात पा कर मेरे पीछे आओगी तो मैं हंस पड़ी।[1] (بخاری باب مرض النبی ج۲ص ۶۳۸)

बहर ह़ाल **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी वफ़ात से पहले अपनी वफ़ात के वक़्त का इ़ल्म ह़ासिल हो चुका था। क्यूं न हो कि जब दूसरे लोगों की वफ़ात के अवक़ात से **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आगाह फ़रमा दिया था तो अगर ख़ुदा वन्दे अ़ल्लामुल ग़ुयूब के बता देने से **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी वफ़ात के वक़्त का क़ब्ल अज़ वक़्त इ़ल्म हो गया तो इस में कौन सा इस्तिबआ़द है?

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی و وفاتہ، الحدیث:۴۴۳۳،۴۴۳۴، ج۳، ص۱۵۳

अल्लाह तआ़ला ने तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इ़ल्मे मा कान व मा यकून अ़त़ा फ़रमाया। या'नी जो कुछ हो चुका और जो कुछ हो रहा है और जो कुछ होने वाला है सब का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमा कर आप को दुन्या से उठाया। चुनान्चे इस मज़्मून को हम ने अपनी किताब "कुरआनी तक़रीरें" में मुफ़स्सल तह़रीर कर दिया है।

अ़लालत की इब्तिदा

मरज़ की इब्तिदा कब हुई और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कितने दिनों तक अ़लील रहे? इस में मुअर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है। बहर ह़ाल 20 या 22 सफ़र सि. 11 हि. को **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जन्नतुल बक़ीअ़ में जो आ़म मुसलमानों का क़ब्रिस्तान है आधी रात में तशरीफ़ ले गए वहां से वापस तशरीफ़ लाए तो मिज़ाजे अक़्दस नासाज़ हो गया येह ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہَا की बारी का दिन था।[1]

(مدارج النبوۃ ج ۲ ص ۴۱۷ و زرقانی ج ۳ ص ۱۱۰)

दो शम्बा के दिन आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत बहुत शदीद हो गई। आप की ख़्वाहिश पर तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن ने इजाज़त दे दी कि आप ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا के यहां क़ियाम फ़रमाएं। चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्बास व ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا ने सहारा दे कर आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا के हुजरए मुबारका में पहुंचा दिया। जब तक त़ाक़त रही आप ख़ुद मस्जिदे नबवी में नमाज़ें पढ़ाते रहे। जब कमज़ोरी बहुत ज़ियादा बढ़ गई तो आप ने हुक्म दिया कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ मेरे मुसल्ले पर इमामत करें। चुनान्चे सत्तरह नमाज़ें ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने पढ़ाईं।

---

1 ......المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی، الفصل الاول فی اتمامه...الخ، ج۱۲، ص۸۳ملخصاً
ومدارج النبوت، قسم چھارم، باب اول، ج۲، ص۴۱۷

एक दिन ज़ोहर की नमाज़ के वक़्त मरज़ में कुछ इफ़ाक़ा महसूस हुवा तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि सात पानी की मश्कें मेरे ऊपर डाली जाएं। जब आप गुस्ल फ़रमा चुके तो ह़ज़रते अ़ब्बास और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا आप का मुक़द्दस बाज़ू थाम कर आप को मस्जिद में लाए। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ नमाज़ पढ़ा रहे थे। आहट पा कर पीछे हटने लगे मगर आप ने इशारे से उन को रोका और उन के पहलू में बैठ कर नमाज़ पढ़ाई। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देख कर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ और दूसरे मुक़्तदी लोग अरकाने नमाज़ अदा करते रहे। नमाज़ के बा'द आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक ख़ुत़्बा भी दिया जिस में बहुत सी वसिय्यतें और अह़कामे इस्लाम बयान फ़रमा कर अन्सार के फ़ज़ाइल और इन के हुक़ूक़ के बारे में कुछ कलिमात इरशाद फ़रमाए और सूरए वल अ़स्र और एक आयत भी तिलावत फ़रमाई।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۴۲۵وبخاری ج۲ص۶۳۹)

घर में सात दीनार रखे हुए थे। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهَا से फ़रमाया कि तुम उन दीनारों को लाओ ताकि मैं उन दीनारों को ख़ुदा की राह में ख़र्च कर दूं। चुनान्चे ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ के ज़रीए़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दीनारों को तक़्सीम कर दिया और अपने घर में एक ज़र्रा भर भी सोना या चांदी नहीं छोड़ा।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۴۲۴)

---

1 ......مدارج النبوت، قسم چهارم، باب دوم، ج۲، ص۴۲۵ ملخصاً وصحيح البخاری، كتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاته، الحديث:۴۴۴۲، ج۳، ص۱۵۵ مختصراً وكتاب الاذان، باب من قام...الخ، الحديث:۶۸۳، ج۱، ص۲۴۳

2 ......مدارج النبوت، قسم چهارم، باب دوم، ج۲، ص۴۲۴ ملخصاً

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मरज़ में कमी बेशी होती रहती थी। ख़ास वफ़ात के दिन या'नी दो शम्बा के रोज़ तृबीअ़त अच्छी थी। हुजरा मस्जिद से मुत्तसिल ही था। आप ने पर्दा उठा कर देखा तो लोग नमाज़े फ़ज्र पढ़ रहे थे। येह देख कर ख़ुशी से आप हंस पड़े। लोगों ने समझा कि आप मस्जिद में आना चाहते हैं मारे ख़ुशी के तमाम लोग बे क़ाबू हो गए मगर आप ने इशारे से रोका और हुजरे में दाख़िल हो कर पर्दा डाल दिया येह सब से आख़िरी मौक़अ़ था कि सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم ने जमाले नुबुव्वत की ज़ियारत की। हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ का बयान है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का रुख़े अन्वर ऐसा मा'लूम होता था कि गोया क़ुरआन का कोई वरक़ है। या'नी सफ़ेद हो गया था।[(1)]

(بخاری ج۲ص۶۴۰ باب مرض النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وغیرہ)

इस के बा'द बार बार ग़शी तारी होने लगी। हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا की ज़बान से शिद्दते ग़म से येह लफ़्ज़ निकल गया : "وَاكَرْبَ اَبَاهُ" हाए रे मेरे बाप की बेचैनी ! हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ बेटी ! तुम्हारा बाप आज के बा'द कभी बेचैन न होगा।[(2)]

(بخاری ج۲ص۶۴۱ باب مرض النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

इस के बा'द बार बार आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह फ़रमाते रहे कि مَعَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ या'नी उन लोगों के साथ जिन पर ख़ुदा का इन्आ़म है और कभी येह फ़रमाते कि "اَللّٰهُمَّ فِی الرَّفِيۡقِ الۡاَعۡلٰی" ख़ुदा वन्दा ! बड़े रफ़ीक़ में और لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ भी पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि बेशक मौत के लिये सख़्तियां हैं। हज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا कहती हैं कि तन्दुरुस्ती की हालत में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अकसर फ़रमाया करते थे कि पैग़म्बरों को इख़्तियार दिया जाता है कि वोह ख़्वाह वफ़ात को क़बूल करें या

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب مرض النبی ووفاته،الحدیث:٤٤٤٨،ج٣،ص١٥٦
و کتاب الاذان،باب اهل العلم و الفضل...الخ،الحدیث:٦٨٠،ج١،ص٢٤٢ ملتقطاً

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب مرض النبی ووفاته،الحدیث:٤٤٦٢،ج٣،ص١٦٠

ह़याते दुन्या को। जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक पर येह कलिमात जारी हुए तो मैं ने समझ लिया कि आप ने आख़िरत को क़बूल फ़रमा लिया।[1] (بخاری ج۲ ص۶۴۰ و ص۶۴۱ باب آخر ما تکلم النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

वफ़ात से थोड़ी देर पहले ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا के भाई अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ताज़ा मिस्वाक हाथ में लिये ह़ाज़िर हुए। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की त़रफ़ नज़र जमा कर देखा। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने समझा कि मिस्वाक की ख़्वाहिश है। उन्हों ने फ़ौरन ही मिस्वाक ले कर अपने दांतों से नर्म की और दस्ते अक़्दस में दे दी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिस्वाक फ़रमाई। सह पहर का वक़्त था कि सीनए अक़्दस में सांस की घरघराहट मह़सूस होने लगी इतने में लब मुबारक हिले तो लोगों ने येह अल्फ़ाज़ सुने कि اَلصَّلٰوةَ وَمَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُكُمۡ नमाज़ और लौंडी गुलामों का ख़याल रखो। पास में पानी की एक लगन थी उस में बार बार हाथ डालते और चेह्‌रए अक़्दस पर मलते और कलिमा पढ़ते। चादरे मुबारक को कभी मुंह पर डालते कभी हटा देते। ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا सरे अक़्दस को अपने सीने से लगाए बैठी हुई थीं। इतने में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हाथ उठा कर उंगली से इशारा फ़रमाया और तीन मरतबा येह फ़रमाया कि بَلِ الرَّفِيۡقُ الۡاَعۡلٰى (अब कोई नहीं) बल्कि वोह बड़ा रफ़ीक़ चाहिये। येह अल्फ़ाज़ ज़बाने अक़्दस पर थे कि ना गहां मुक़द्दस हाथ लटक गए और आंखें छत की त़रफ़ देखते हुए खुली की खुली रहीं और आप की क़ुदसी रूह़ आ़लमे क़ुद्स में पहुंच गई।[2]

(اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيۡهِ رَاجِعُوۡنَ) اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمۡ وَبَارِكۡ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصۡحَابِهٖ اَجۡمَعِيۡنَ

(بخاری ج۲ ص۶۴۰ و ص۶۴۱ باب مرض النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی و وفاته، الحدیث: ٤٤٣٥، ٤٤٣٧، ج٣، ص ١٥٣، ١٥٤ و مدارج النبوت، قسم چهارم، باب دوم، ج ٢، ص ٤٢٩ مختصراً

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی و وفاته، الحدیث: ٤٤٣٨، ج٣، ص ١٥٤ و مدارج النبوت، قسم چهارم، باب دوم، ج ٢، ص ٤٢٩ ملخصاً

तारीख़े वफ़ात में मुअर्रिख़ीन का बड़ा इख़्तिलाफ़ है लेकिन इस पर तमाम उ़लमाए सीरत का इत्तिफ़ाक़ है कि दो शम्बे का दिन और रबीउ़ल अव्वल का महीना था बहर ह़ाल आ़म तौ़र पर येही मश्हूर है कि 12 रबीउ़ल अव्वल सि. 11 हि. दो शम्बे के दिन तीसरे पहर आप ने विसाल फ़रमाया।[1] (وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم)

वफ़ात का असर

हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात से ह़ज़राते सह़ाबए किराम और अहले बैते इज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم को कितना बड़ा सदमा पहुंचा ? और अहले मदीना का क्या ह़ाल हो गया ? इस की तस्वीर कशी के लिये हज़ारों सफ़ह़ात भी मुतह़म्मिल नहीं हो सकते। वोह शमए़ नुबुव्वत के परवाने जो चन्द दिनों तक जमाले नुबुव्वत का दीदार न करते तो उन के दिल बे क़रार और उन की आंखें अश्कबार हो जाती थीं। ज़ाहिर है कि उन आ़शिक़ाने रसूल पर जाने आ़लम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दाइमी फ़िराक़ का कितना रूह़ फ़रसा और किस क़दर जांकाह सदमए अ़ज़ीम हुवा होगा ? जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم बिला मुबालग़ा होशो ह़वास खो बैठे, उन की अ़क़्लें गुम हो गईं, आवाज़ें बन्द हो गईं और वोह इस क़दर मख़्बूतुल ह़वास हो गए कि उन के लिये येह सोचना भी मुश्किल हो गया कि क्या कहें ? और क्या करें ? ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर ऐसा सक्ता त़ारी हो गया कि वोह इधर उधर भागे भागे फिरते थे मगर किसी से न कुछ कहते थे न किसी की कुछ सुनते थे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ रन्जो मलाल में निढाल हो कर इस त़रह़ बैठ रहे कि उन में उठने बैठने और चलने फिरने की सकत ही नहीं रही। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के क़ल्ब पर ऐसा

---

1 ......الوفاء باحوال المصطفیمترجم،باب وقت وصال،ص٨١٤ملخصاً

धचका लगा कि वोह इस सदमे को बरदाश्त न कर सके और उन का हार्ट फ़ेल हो गया।[1]

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस क़दर होशो हवास खो बैठे कि उन्हों ने तलवार खींच ली और नंगी तलवार ले कर मदीने की गलियों में इधर उधर आते जाते थे और येह कहते फिरते थे कि अगर किसी ने येह कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात हो गई तो मैं इस तलवार से उस की गरदन उड़ा दूंगा।[2]

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बयान है कि वफ़ात के बा'द हज़रते उ़मर व हज़रते मुग़ीरा बिन शअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इजाज़त ले कर मकान में दाख़िल हुए हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देख कर कहा कि बहुत ही सख़्त ग़शी तारी हो गई है। जब वोह वहां से चलने लगे तो हज़रते मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि ऐ उ़मर ! तुम्हें कुछ ख़बर भी है? **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो चुका है। येह सुन कर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आपे से बाहर हो गए और तड़प कर बोले कि ऐ मुग़ीरा ! तुम झूटे हो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का उस वक़्त तक इनतिक़ाल नहीं हो सकता जब तक दुन्या से एक एक मुनाफ़िक़ का ख़ातिमा न हो जाए।[3]

मवाहिबे लदुन्निय्यह में त़बरी से मन्क़ूल है कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के वक़्त हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ "सुख़" में थे जो मस्जिदे नबवी से एक मील के फ़ासिले पर है। उन की बीवी हज़रते हबीबा बिन्ते ख़ारिजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا वहीं

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب دوم، ج۲،ص ۴۳۲ ملخصاً

والمواهب اللدنية و شرح الزرقاني،الفصل الاول في اتمامه...الخ،ج۱۲،ص۱۴۲،۱۴۳

2 ......مدارج النبوت،قسم سوم،باب دوم، ج۲،ص ۴۳۲

3 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني،الفصل الاول في اتمامه...الخ،ج۱۲، ص۱۳۹

रहती थीं। चूंकि दो शम्बे की सुब्ह़ को मरज़ में कमी नज़र आई और कुछ सुकून मा'लूम हुवा इस लिये **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुद ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इजाज़त दे दी थी कि तुम "सुख़" चले जाओ और बीवी बच्चों को देखते आओ।(1)

बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरा में है कि ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपने घोड़े पर सुवार हो कर "सुख़" से आए और किसी से कोई बात न कही न सुनी। सीधे ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के हुजरे में चले गए और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर से चादर हटा कर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर झुके और आप की दोनों आंखों के दरमियान निहायत गर्म जोशी के साथ एक बोसा दिया और कहा कि आप अपनी ह़यात और वफ़ात दोनों ह़ालतों में पाकीज़ा रहे। मेरे मां बाप आप पर फ़िदा हों हरगिज़ खुदा वन्दे तआ़ला आप पर दो मौतों को जम्अ़ नहीं फ़रमाएगा। आप की जो मौत लिखी हुई थी आप उस मौत के साथ वफ़ात पा चुके। इस के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ लोगों के सामने तक़रीर कर रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! बैठ जाओ। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बैठने से इन्कार कर दिया तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन्हें छोड़ दिया और खुद लोगों को मुतवज्जेह करने के लिये खुत्बा देना शुरूअ़ कर दिया कि (2)

अम्मा बा'द ! जो शख़्स तुम में से मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इबादत करता था वोह जान ले कि मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया और जो शख़्स तुम में से खुदा عَزَّوَجَلَّ की परस्तिश करता था तो खुदा ज़िन्दा है वोह कभी नहीं मरेगा। फिर इस के बा'द ह़ज़रते

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانى،الفصل الاول فى اتمامه...الخ،ج١٢،ص١٣٣،١٣٤

2 ......صحيح البخارى،كتاب الجنائز،باب الدخول على الميت...الخ،الحديث:١٢٤١، ١٢٤٢، ج١،ص٤٢١ ملخصاً

अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ ने सूरए आले इमरान की येह आयत तिलावत फ़रमाई :

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْئًا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝ (1)

(آل عمران)

*और मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) तो एक रसूल हैं इन से पहले बहुत से रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इनतिक़ाल फ़रमा जाएं या शहीद हो जाएं तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे ? और जो उलटे पाउं फिरेगा **अल्लाह** का कुछ नुक़्सान न करेगा और अन क़रीब **अल्लाह** शुक्र अदा करने वालों को सवाब देगा।*

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُما कहते हैं कि हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ ने येह आयत तिलावत की तो मा'लूम होता था कि गोया कोई इस आयत को जानता ही न था। उन से सुन कर हर शख़्स इसी आयत को पढ़ने लगा।(2) (بخاری ج۱ص۱۶۶ اباب الدخول علی المیت الخ ومدارج النبوۃ ج۲ص۴۳۳)

हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं ने जब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ की ज़बान से सूरए आले इमरान की येह आयत सुनी तो मुझे मा'लूम हो गया कि वाक़ेई नबी صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया। फिर हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ इज़्तिराब की हालत में नंगी शमशीर ले कर जो ए'लान करते फिरते थे कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल नहीं हुवा इस से रुजूअ़ किया और उन के साहिब ज़ादे हज़रते अ़ब्दुलाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُما कहते हैं कि गोया हम पर एक पर्दा पड़ा हुवा था कि इस आयत की त़रफ़ हमारा ध्यान

---

1 ......پ ٤، اٰل عمرٰن: ١٤٤

2 ......صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب الدخول علی المیت...الخ، الحدیث: ١٢٤١، ١٢٤٢، ج١، ص٤٢١

ही नहीं गया। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के ख़ुत़्बे ने इस पर्दे को उठा दिया।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۴۳۴)

तज्हीज़ो तक्फ़ीन

चूंकि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वसिय्यत फ़रमा दी थी कि मेरी तज्हीज़ो तक्फ़ीन मेरे अहले बैत और अहले ख़ानदान करें। इस लिये येह ख़िदमत आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ानदान ही के लोगों ने अन्जाम दी। चुनान्चे ह़ज़रते फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास व ह़ज़रते क़ुसुम बिन अ़ब्बास व ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते अ़ब्बास व ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُم ने मिलजुल कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ुस्ल दिया और नाफ़ मुबारक और पलकों पर जो पानी के क़त़रात और तरी जम्अ़ थी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने जोशे मह़ब्बत और फ़र्ते़ अ़क़ीदत से उस को ज़बान से चाट कर पी लिया।[2] (مدارج النبوۃ ج۲ص۴۳۸وص۴۳۹)

ग़ुस्ल के बा'द तीन सूती कपड़ों का जो "सुहूल" गाऊं के बने हुए थे कफ़न बनाया गया उन में क़मीस व इमामा न था।[3]

(بخاری ج۱ص۱۶۹باب الثیاب البیض للکفن)

नमाज़े जनाज़ा

जनाज़ा तय्यार हुवा तो लोग नमाज़े जनाज़ा के लिये टूट पड़े। पहले मर्दों ने फिर औ़रतों ने फिर बच्चों ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। जनाज़ए मुबारका हुजरए मुक़द्दसा के अन्दर ही था। बारी बारी से थोड़े थोड़े लोग अन्दर जाते थे और नमाज़ पढ़ कर चले आते थे लेकिन कोई इमाम न था।[4] (مدارج النبوۃ ج۲ص۴۴۰وابن ماجہ ص۱۱۸باب ذکر وفاتہ)

---

1 ......مدارج النبوت،قسم چہارم،باب دوم،ج۲،ص٤٣٤

2 ......مدارج النبوت،قسم چہارم،باب سوم،ج۲،ص٤٣٩،٤٣٨،٤٣٧ملخصاً

3 ......صحیح البخاری،کتاب الجنائز،باب الثیاب البیض للکفن،الحدیث:١٢٦٤،ج١،ص٤٢٨

4 ......سنن ابن ماجه،کتاب الجنائز،باب ذکر وفاته و دفنه،الحدیث:١٦٢٨،ج٢،ص٢٨٥،٢٨٤

क़ब्रे अन्वर

हज़रते अबू तल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने क़ब्र शरीफ़ तय्यार की जो बग़ली थी। जिस्मे अतहर को हज़रते अ़ली व हज़रते फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास व हज़रते अ़ब्बास व हज़रते क़ुसुम बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने क़ब्रे मुनव्वर में उतारा।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ص۴۴۲)

लेकिन अबू दावूद की रिवायतों से मा'लूम होता है कि हज़रते उसामा और अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी क़ब्र में उतरे थे।[2]

(ابوداؤد ج۲ص۴۵۸باب کم یدخل القبر)

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में येह इख़्तिलाफ़ रूनुमा हुवा कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को कहां दफ़्न किया जाए। कुछ लोगों ने कहा कि मस्जिदे नबवी में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मदफ़्न होना चाहिये और कुछ ने येह राय दी कि आप को सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना चाहिये। इस मौक़अ़ पर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से येह सुना है कि हर नबी अपनी वफ़ात के बा'द उसी जगह दफ़्न किया जाता है जिस जगह उस की वफ़ात हुई हो। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि इस हदीस को सुन कर लोगों ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बिछोने को उठाया और उसी जगह (हुजरए आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) में आप की क़ब्र तय्यार की और आप उसी में मदफ़ून हुए।[3] (ابن ماجہ ص۱۱۸باب ذکر وفاتہ)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुस्ल शरीफ़ और तज्हीज़ो तक्फ़ीन की सआ़दत में हिस्सा लेने के लिये ज़ाहिर है कि शमए नुबुव्वत के परवाने किस क़दर बे क़रार रहे होंगे ? मगर जैसा कि हम तहरीर कर

---

1 ......مدارج النبوت، قسم چهارم، باب سوم، ج۲، ص ٤٤١، ٤٤٢ ملتقطاً

2 ......سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب کم یدخل القبر، الحدیث: ٣٢٠٩، ٣٢١٠، ج٣، ص٢٨٦ ملتقطاً

3 ......سنن ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاته و دفنه، الحدیث: ١٦٢٨، ج٢، ص٢٨٤، ٢٨٥

चुके कि चूंकि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने खुद ही येह वसिय्यत फ़रमा दी थी कि मेरे गुस्ल और तज्हीज़ो तक्फ़ीन मेरे अहले बैत ही करें। फिर अमीरुल मोमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने भी ब हैसिय्यत अमीरुल मोमिनीन होने के येही हुक्म दिया कि "येह अहले बैत ही का हक़ है" इस लिये हज़रते अब्बास और अहले बैत رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने किवाड़ बन्द कर के गुस्ल दिया और कफ़न पहनाया मगर शुरूअ़ से आख़िर तक खुद हज़रते अमीरुल मोमिनीन और दूसरे तमाम सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم हुजरए मुक़द्दसा के बाहर हाज़िर रहे।[1] (مدارج النبوۃ ج۲ ص۴۳۷)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का तर्का

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़िन्दगी इस क़दर ज़ाहिदाना थी कि कुछ अपने पास रखते ही नहीं थे। इस लिये ज़ाहिर है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वफ़ात के बा'द क्या छोड़ा होगा ?

चुनान्चे हज़रते अ़म्र बिन अल हारिस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बयान है कि

مَا تَرَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ مَوْتِهٖ دِرْهَمًا وَّلَا دِيْنَارًا وَّلَا عَبْدًا وَّلَا اَمَةً وَّلَا شَيْئًا اِلَّا بَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ وَسِلَاحَهٗ وَاَرْضًا جَعَلَهَا صَدَقَةً۔[2]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी वफ़ात के वक़्त न दिरहम व दीनार छोड़ा न लौंडी व गुलाम न और कुछ। सिर्फ़ अपना सफ़ेद ख़च्चर और हथयार और कुछ ज़मीन जो आ़म मुसलमानों पर सदक़ा कर गए छोड़ा था। (بخاری ج۱ ص۳۸۲ کتاب الوصایا)

बहर हाल फिर भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मतरूकात में तीन चीज़ें थीं। ﴿1﴾ बनू नज़ीर, फ़िदक, ख़ैबर की ज़मीनें ﴿2﴾ सुवारी का जानवर ﴿3﴾ हथयार। येह तीनों चीज़ें क़ाबिले ज़िक्र हैं।

---

1 ......مدارج النبوت،قسم چهارم،باب سوم،ج۲،ص۴۳۷، ۴۳۸ ملخصاً

2 ......صحيح البخاری،کتاب الوصايا،باب الوصايا...الخ،الحديث:۲۷۳۹،ج۲،ص۲۳۱

ज़मीन

बनू नज़ीर, फ़िदक, ख़ैबर की ज़मीनों के बाग़ात वग़ैरा की आमदनियां आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने और अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنہن के साल भर के अख़राजात और फ़ुक़रा व मसाकीन और आ़म मुसलमानों की ह़ाजात में सर्फ़ फ़रमाते थे।[1]

(مدارج النبوۃ ج ۲ص ۴۴۵ وابوداؤد ج ۲ص ۴۱۲ باب فی صفایا رسول اللہ)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते अ़ब्बास और ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और बा'ज़ अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن चाहती थीं कि इन जाएदादों को मीरास के त़ौर पर वारिसों के दरमियान तक़्सीम हो जाना चाहिये। चुनान्चे ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के सामने इन लोगों ने इस की दरख़्वास्त पेश की मगर आप और ह़ज़रते उ़मर वग़ैरा अकाबिर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم ने इन लोगों को येह ह़दीस सुना दी कि لَانُوْرَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ[2] (ابوداؤد ج ۲ص ۴۱۳ و بخاری ج اص ۴۳۶ (باب فرض الخمس) हम (अम्बिया) का कोई वारिस नहीं होता हम ने जो कुछ छोड़ा वोह मुसलमानों पर सदक़ा है।

और इस ह़दीस की रौशनी में साफ़ साफ़ कह दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वसिय्यत के ब मूजिब येह जाएदादें वक़्फ़ हो चुकी हैं। लिहाज़ा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी मुक़द्दस ज़िन्दगी में जिन मद्दात व मसारिफ़ में इन की आमदनियां ख़र्च फ़रमाया करते थे उस में कोई तब्दीली नहीं की जा सकती। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में ह़ज़रते अ़ब्बास व ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के इस्रार

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج و الفیء...الخ، باب فی صفایا...الخ، الحدیث:۲۹۶۳، ج۳، ص۱۹۳، ۱۹۴ ملتقطاً ومدارج النبوت، قسم چهارم، باب سوم، ج۲، ص۴٤٥

2 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج ...الخ، باب فی صفایا...الخ، الحدیث:۲۹۶۳، ج۳، ص۱۹۳، ۱۹٤ وصحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب قرابة...الخ، الحدیث:۳۷۱۱-۳۷۱۲، ج۲، ص۵۳۷، ۵۳۸ و کتاب الفرائض، باب قول النبی لانورث...الخ، الحدیث:۶۷۲۵-۶۷۲٦، ج٤، ص۳۱۳ ملتقطاً

से बनू नज़ीर की जाएदाद का इन दोनों को इस शर्त़ पर मुतवल्ली बना दिया था कि इस जाएदाद की आमदनियां उन्हीं मसारिफ़ में ख़र्च करते रहेंगे जिन में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़र्च फ़रमाया करते थे। फिर इन दोनों में कुछ अनबन हो गई और इन दोनों ह़ज़रात ने येह ख़्वाहिश ज़ाहिर की, कि बनू नज़ीर की जाएदाद तक़्सीम कर के आधी ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तौलिय्यत में दे दी जाए और आधी के मुतवल्ली ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रहें मगर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस दरख़्वास्त को ना मंज़ूर फ़रमा दिया।[1] (ابوداؤد ج۲ص۴۱۳،۴۱۳باب فی وصایا رسول اللہ و بخاری ج ا ص ۴۳۶باب فرض الخمس)

लेकिन ख़ैबर और फ़िदक की ज़मीनें ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़माने तक ख़ुलफ़ा ही के हाथों में रहीं। ह़ाकिमे मदीना मरवान बिन अल ह़कम ने इस को अपनी जागीर बना ली थी मगर ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में फिर वोही अ़मल दर आमद जारी कर दिया जो ह़ज़रते अबू बक्र व ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के दौरे ख़िलाफ़त में था।[2]

(ابوداؤد ج۲ص ۴۱۷باب فی وصایا رسول اللہ مطبوعہ نامی پریس)

सुवारी के जानवर

ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब वग़ैरा में लिखा हुवा है कि **हुज़ूर** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मिल्किय्यत में सात घोड़े, पांच ख़च्चर, तीन गधे, दो ऊंटनियां थीं।[3] (زرقانی ج۳ص۳۸۶تاص۳۹۱)

लेकिन इस में येह तशरीह़ नहीं है कि ब वक़्ते वफ़ात इन में से कितने जानवर मौजूद थे क्यूं कि **हुज़ूर** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने जानवर दूसरों को अ़त़ा फ़रमाते रहते थे। कुछ नए ख़रीदते कुछ हदाया और नज़रानों में मिलते भी रहे।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج...الخ،باب فی صفایا...الخ،الحدیث:۲۹۶۳،۲۹۶٤،ج۳، ص۱۹۳،۱۹۵

2 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج...الخ،باب فی صفایا...الخ،الحدیث:۲۹۷۲،ج۳،ص۱۹۸

3 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،باب فی ذکر خیله...الخ،ج۵،ص۹۸۔۱۰۲،۱۰٦۔۱۱۰ملتقطاً

बहर हाल रिवायाते सहीहा से मा'लूम होता है कि वफ़ाते अक़्दस के वक़्त जो सुवारी के जानवर मौजूद थे उन में एक घोड़ा था जिस का नाम "लहीफ़" था एक सफ़ेद ख़च्चर था जिस का नाम "दुलदुल" था येह बहुत ही उम्र दराज़ हुवा। हज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ज़माने तक ज़िन्दा रहा इतना बूढ़ा हो गया था कि इस के तमाम दांत गिर गए थे और आख़िर में अन्धा भी हो गया था। इब्ने असाकिर की तारीख़ में है कि हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ भी जंगे ख़वारिज में इस पर सुवार हुए थे।[1] (زرقانی ج۳ص۳۸۹)

एक अ़रबी गधा था जिस का नाम "अ़फ़ीर" था एक ऊंटनी थी जिस का नाम "अ़ज़बा व क़स्वा" था। येह वोही ऊंटनी थी जिस को ब वक़्ते हिजरत आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से ख़रीदा था इस ऊंटनी पर आप ने हिजरत फ़रमाई और इस की पुश्त पर हिज्जतुल वदाअ़ में आप ने अ़रफ़ात व मिना का ख़ुत्बा पढ़ा था।

(وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلم)

हथयार

चूंकि जिहाद की ज़रूरत हर वक़्त दरपेश रहती थी इस लिये आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्लिहा ख़ाना में नव या दस तलवारें, सात लोहे की ज़िरहें, छे कमानें, एक तीरदान, एक ढाल, पांच बरछियां, दो मिग़्फ़र, तीन जुब्बे, एक सियाह रंग का बड़ा झन्डा बाक़ी सफ़ेद व ज़र्द रंग के छोटे छोटे झन्डे थे और एक ख़ैमा भी था।[2]

हथयारों में तलवारों के बारे में हज़रते शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने तहरीर फ़रमाया कि मुझे इस का इल्म नहीं कि येह सब तलवारें बयक वक़्त जम्अ़ थीं या मुख़्तलिफ़ अवक़ात में आप के पास रहीं।[3] (مدارج النبوۃ ج۳ص۵۹۵)

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،فی ذکرخیله ولقاحه ودوابه،ج٥،ص١٠٠،١٠٦

2 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانی،فی الالات حروبه...الخ،ج٥،ص٨٥،٨٨ـ٨٩،٩١ـ٩٢ ومدارج النبوت،قسم پنجم،باب یازدهم،ج٢،ص٥٩٨،٦٠٧ملخصاًوملتقطاً

3 ......مدارج النبوت،قسم پنجم،باب یازدهم،ج٢،ص٥٩٥

ज़ुरूफ़ व मुख़्तलिफ़ सामान

ज़ुरूफ़ और बरतनों में कई प्याले थे एक शीशे का प्याला भी था। एक प्याला लकड़ी का था जो फट गया था तो ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस के शिगाफ़ को बन्द करने के लिये एक चांदी की ज़न्जीर से उस को जकड़ दिया था।[1] (بخاری ج۱ص۴۳۸باب ماذکرمن درع النبی)

चमड़े का एक डोल, एक पुरानी मशक, एक पथ्थर का तग़ार, एक बड़ा सा प्याला जिस का नाम "अलसआ़" था, एक चमड़े का थेला जिस में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आईना, क़ैंची और मिस्वाक रखते थे, एक कंघी, एक सुरमा दानी, एक बहुत बड़ा प्याला जिस का नाम "अल ग़रा" था, साअ़ और मुद दो नापने के पैमाने।

इन के इ़लावा एक चारपाई जिस के पाए सियाह लकड़ी के थे। येह चारपाई ह़ज़रते अस्अ़द बिन ज़ुरारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हदिय्यतन ख़िदमते अक़्दस में पेश की थी। बिछोना और तकिया चमड़े का था जिस में खजूर की छाल भरी हुई थी, मुक़द्दस जूतियां, येह **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्बाब व सामानों की एक फ़ेहरिस्त है जिन का तज़्किरा अह़ादीस में मुतफ़र्रिक़ तौ़र पर आता है।[2]

तबर्रुकाते नुबुव्वत

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इन मतरूका सामानों के इ़लावा बा'ज़ यादगारी तबर्रुकात भी थे जिन को आ़शिक़ाने रसूल फ़र्ते़ अ़क़ीदत से अपने अपने घरों में मह़फ़ूज़ किये हुए थे और इन को अपनी जानों से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखते थे। चुनान्चे मूए मुबारक, ना'लैने शरीफ़ैन और एक लकड़ी का प्याला जो चांदी के तारों से जोड़ा हुवा था ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन तीनों आसारे मुतबर्रिका को अपने घर में

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس،باب ماذکرمن ذرع النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، الحدیث:۳۱۰۹،ج۲،ص۳٤٤

2 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی،تکمیل،ج٥،ص٩٤۔٩٦ملخصاً

महफ़ूज़ रखा था।[1] (بخاری ج۱ص۴۳۸ باب ماذکر من درع النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الخ)

इसी तरह एक मोटा कम्बल हज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के पास था जिन को वोह बतौरे तबर्रुक अपने पास रखे हुए थीं और लोगों को उस की ज़ियारत कराती थीं। चुनान्चे हज़रते अबू बरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का बयान है कि हम लोगों को हज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की ख़िदमते मुबारका में हाज़िरी का शरफ़ हासिल हुवा तो उन्हों ने एक मोटा कम्बल निकाला और फ़रमाया कि येह वोही कम्बल है जिस में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वफ़ात पाई।[2] (بخاری ج۱ص۴۳۸ باب ماذکر من درع النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की एक तलवार जिस का नाम "ज़ुलफ़िक़ार" था। हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास थी इन के बा'द इन के ख़ानदान में रही यहां तक कि येह तलवार करबला में हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास थी। इस के बा'द इन के फ़रज़न्द व जा नशीन हज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास रही। चुनान्चे हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत के बा'द जब हज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ यज़ीद बिन मुआ़विया के पास से रुख़्सत हो कर मदीने तशरीफ़ लाए तो मश्हूर सहाबी हज़रते मिस्वर बिन मख़्रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हाज़िरे ख़िदमत हुए और अ़र्ज़ किया कि अगर आप को कोई हाजत हो या मेरे लाइक़ कोई कारे ख़िदमत हो तो आप मुझे हुक्म दें मैं आप के हुक्म की ता'मील के लिये हाज़िर हूं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया मुझे कोई हाजत नहीं। फिर हज़रते मिस्वर बिन मख़्रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने येह गुज़ारिश की, कि आप के पास रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जो तलवार (ज़ुलफ़िक़ार) है

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب ماذکر من درع النبی...الخ، الحدیث:۳۱۰۷، ۳۱۰۹، ج۲، ص۳۴۳، ۳۴۴ ملخصاً
وفتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب ماذکر من درع النبی...الخ، تحت الحدیث:۳۱۰۷، ۳۱۰۹، ج۶، ص۱۷۳، ۱۷۴ ملتقطاً

2 ......صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب ماذکر من درع النبی صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، الحدیث:۳۱۰۸، ج۲، ص۳۴۳

क्या आप वोह मुझे इनायत फ़रमा सकते हैं ? क्यूं कि मुझे ख़त़रा है कि कहीं यज़ीद की क़ौम आप पर ग़ालिब आ जाए और येह तबर्रुक आप के हाथ से जाता रहे और अगर आप ने इस मुक़द्दस तलवार को मुझे अ़त़ा फ़रमा दिया तो ख़ुदा की क़सम ! जब तक मेरी एक सांस बाक़ी रहेगी उन लोगों की इस तलवार तक रसाई भी नहीं हो सकती मगर ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस मुक़द्दस तलवार को अपने से जुदा करना गवारा नहीं फ़रमाया।[1] (بخاری ج۱ ص۴۳۸ باب ماذکر من درع النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अंगूठी और अ़साए मुबारक पर जा नशीन होने की बिना पर ख़ुलफ़ाए किराम ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ व ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم अपने अपने दौरे ख़िलाफ़त में क़ाबिज़ रहे मगर अंगूठी ह़ज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ से कूंएं में गिर कर ज़ाएअ़ हो गई। उस कूंएं का नाम ''बीरे उरैस'' है जिस को लोग ''बीरे ख़ातिम'' भी कहते हैं।[2] (بخاری ج۲ ص۸۷۲ باب خاتم الفضہ)

और अ़साए मुबारक इस त़रह़ ज़ाएअ़ हुवा कि ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इसी मुक़द्दस अ़साए नबवी को अपने दस्ते मुबारक में ले कर मस्जिदे नबवी के मिम्बर पर ख़ुत़्बा पढ़ रहे थे कि बिल्कुल ना गहां बद नसीब ''जहजाह ग़िफ़ारी'' उठा और अचानक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ से इस मुबारक तबर्रुक को ले कर तोड़ डाला। इस बे अदबी से उस पर येह क़ह्‌रे इलाही टूट पड़ा कि उस के हाथ में केन्सर हो गया और पूरा हाथ सड़ गल कर टूट पड़ा और इसी अ़ज़ाब में वोह हलाक हो गया।[3] (دلائل النبوۃ ج۳ ص۲۱۱)

---

1 ......صحيح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب ماذکر من درع النبی صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، الحديث: ٣١١٠، ج٢، ص٣٤٤

2 ......صحيح البخاری، کتاب اللباس، باب خاتم الفضة، الحديث: ٥٨٦٦، ج٤، ص٦٨

3 ......حجة اللّٰه على العالمين، المطلب الثالث فی ذکر جملة جميلة من کرامات اصحاب رسول اللّٰه، ص٦١٣

तम्बीह : *हमारी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना जहजाह बिन सई़द ग़िफ़ारी* رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ *सह़ाबिये रसूल हैं और हमें किसी का भी कोई क़ौल*

ऐसा नहीं मिला जिस में उन के सहाबी होने की नफ़ी हो, लिहाज़ा उन के लिये ऐसे अलफ़ाज़ हरगिज़ इस्ति'माल न किये जाएं।

मुसन्निफ़ की तरफ़ से उज़्र : किसी आम मुसलमान से भी येह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता कि वोह किसी सहाबी के बारे में जान बुझ कर कोई ना ज़ैबा कलिमा इस्ति'माल करे। यक़ीनन हज़रते मुसन्निफ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ के इल्म में न होगा कि येह सहाबी हैं क्यूं कि यहां जो मुआमला था वोह सय्यिदुना उसमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के असा के तोड़ने का था जिस की वजह से शायद मुसन्निफ़ से तसामेह हो गया वर्ना वोह हरगिज़ ऐसी बात सहाबिये रसूल के लिये न लिखते क्यूं कि मुसन्निफ़ ने खुद अपनी किताब में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए हैं जो कि इन के रासिख़ सुन्नी सहीहुल अक़ीदा और आशिक़े सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان होने की दलील है।

सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बारे में इस्लामी अक़ीदा : सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुतअ़ल्लिक़ अहले सुन्नत का मौक़िफ़ है कि

(1) सहाबए किराम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) के बाहम जो वाक़ेआत हुए, इन में पड़ना हराम, हराम, सख़्त हराम है। मुसलमानों को तो येह देखना चाहिये कि वोह सब हज़रात आक़ाए दो आलम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जां निसार और सच्चे ग़ुलाम हैं।

(2) सहाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم)अम्बिया न थे, फ़िरिश्ते न थे कि मासूम हों। इन में बा'ज़ के लिये लग़्ज़िशें हुईं मगर इन की किसी बात पर गरिफ़्त अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के ख़िलाफ़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सए अव्वल, स. 254 मत्बूआ मक्तबतुल मदीना)

तफ़्सील : मज़कूरा वाक़ेआ की तफ़्तीश करते हुए हम ने मुतअ़द्दद अ़रबी कुतुबे सियर व तारीख़ वग़ैरा देखीं लेकिन इन में "बद नसीब और ख़बीसुन्नफ़्स" या इस की मिस्ल कलिमात नहीं मिले। चुनान्चे "अल इस्तीआब" में है :

:وروى أنّ جهجاه هذا هو الذى تَناوَلَ العصا مِن يَدِ عثمان وهو يَخطُبُ فكَسَرَها يومئذ , فأَخَذَتْه الأَكِلَةُ فى ركبته وكانت عصا رسولِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم.(الاستيعاب فى معرفة الأصحاب 1/ 334) وفى "الإصابة" بلفظِ :فوضعها على ركبته فكسرها....حتى مات .(الإصابة فى تمييز الصحابة 1 -/622)

तर्जमा : और मरवी है कि येह वोही जहजाह (बिन सईद गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) हैं जिन्हों ने ब हालते खुत्बा उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के दस्ते मुबारक से अ़सा (छड़ी) छीन कर अपने घुटने पर रख कर तोड़ दिया था तो (सय्यिदुना) जहजाह (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) को घुटने में ज़ख़्म हो गया यहां तक कि वोह रिह़लत फ़रमा गए। वोह अ़सा मुबारक रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का था।

इन की सह़ाबिय्यत के दलाइल : कुतुबे तराजिम में इन के मुतअ़ल्लिक़ बयान किया गया है कि "वोह बैअ़ते रिज़्वान में ह़ाज़िर थे"

شَهِدَ بيعةَ الرضوانِ بالحديبية۔(الإصابة فى تمييز الصحابة 1/621)

और मुतअ़द्दद कुतुब में अ़सा तोड़ने वाला वाक़ेआ़ इन्ही का लिखा है, जिस की ताईद "इस्तीआ़ब" से बिल खुसूस होती है कि उन्हों ने पहले इन के ईमान लाने का वाक़िआ़ बयान किया और फिर " هذا هو الذى تَنَاوَلَ العَصَا"के अलफ़ाज़ के ज़रीए येह वाज़ेह़ कर दिया कि अ़सा तोड़ने वाला वाक़िआ़ इन्ही का है।

(الإستيعاب فى معرفة الأصحاب، 1/334)۔

इन के सह़ाबी होने की सराहत इन कुतुब में भी की गई है।

(١) (التمهيد لما فى الموطأ من المعانى والأسانيد) فلما أسلمتُ دعانى رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى منزله فحلب لى عنزاء(7/230). (٢) (الثقات لابن حبان)وكان جهجاه من فقراء المهاجرين وهو الذى أكل عند النبى صلى الله عليه و سلم وهو كافر فأكثر ثم أسلم فأكل فقال له النبى صلى الله عليه وسلم المؤمن يأكل فى معى واحد والكافر يأكل فى سبعة أمعاء (1/280) (٣)(أسد الغابة) ثم أسلم فلم يستتم حلاب شاة واحدة (1/451) (٤)(شرح مشكل الآثار للطحاوى) ثم إنه أصبح فأسلم (1/280)(حصه دوم) (٥) شرح الزرقانى على المؤطا. ثم أصبح فأسلم۔ (4/393)

इसी क़िस्म के दूसरे और भी तबर्रुकाते नबविय्या हैं जो मुख़्तलिफ़ सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُم के पास महफ़ूज़ थे जिन का तज़्किरा अहादीस और सीरत की किताबों में जा बजा मुतफ़र्रिक़ तौर पर मज़्कूर है और इन मुक़द्दस तबर्रुकात से सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُم और ताबिईने इज़ाम رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْهِم को इस क़दर वालिहाना महब्बत थी कि वोह इन को अपनी जानों से भी ज़ियादा अ़ज़ीज़ समझते थे।

सत्तरहवां बाब

शमाइल व ख़साइल

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने जिस तरह कमाले सीरत में तमाम अव्वलीन व आख़िरीन से मुमताज़ और अफ़्ज़लो आ'ला बनाया इसी तरह आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जमाले सूरत में भी बे मिस्ल व बे मिसाल पैदा फ़रमाया। हम और आप **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने बे मिसाल को भला क्या समझ सकते हैं ? हज़राते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُم जो दिन रात सफ़र व हज़र में जमाले नुबुव्वत की तजल्लियां देखते रहे उन्हों ने महबूबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जमाले बे मिसाल के फ़ज़्लो कमाल की जो मुसव्वरी की है उस को सुन कर येही कहना पड़ता है जो किसी मद्दाहे रसूल ने क्या ख़ूब कहा है कि

لَمْ يَخْلُقِ الرَّحْمٰنُ مِثْلَ مُحَمَّدٍ

اَبَدًا وَّ عِلْمِیْ اَنَّهٗ لَا يَخْلُقُ

या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मिस्ल पैदा फ़रमाया ही नहीं और मैं येही जानता हूं कि वोह कभी न पैदा करेगा। [1] (حیاۃ الحیوان دمیری ج۱ص۴۲)

---

1 ......حیاۃ الحیوان الکبری،باب الھمزۃ،ج۱،ص۷۵

सहाबिये रसूल और ताजदारे दो आलम صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारी शाइर हज़रते हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपने क़सीदए हमज़िया में जमाले नुबुव्वत की शाने बे मिसाल को इस शान के साथ बयान फ़रमाया कि

وَاَحۡسَنَ مِنۡكَ لَمۡ تَرَقَطُّ عَيۡنِىۡ!
وَاَجۡمَلَ مِنۡكَ لَمۡ تَلِدِ النِّسَآءُ

या'नी या रसूलल्लाह (صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप से ज़ियादा हुस्नो जमाल वाला मेरी आंख ने कभी किसी को देखा ही नहीं और आप से ज़ियादा कमाल वाला किसी औरत ने जना ही नहीं।

خُلِقۡتَ مُبَرَّءً مِّنۡ كُلِ عَيۡبٍ!
كَاَنَّكَ قَدۡ خُلِقۡتَ كَمَا تَشَآءُ (1)

(या रसूलल्लाह (صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) !) आप हर ऐब व नुक़्सान से पाक पैदा किये गए हैं गोया आप ऐसे ही पैदा किये गए जैसे हसीनो जमील पैदा होना चाहते थे।

हज़रते अल्लामा बूसैरी رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيۡه ने अपने क़सीदए बुर्दा में फ़रमाया कि

مُنَزَّهٌ عَنۡ شَرِيۡكٍ فِىۡ مَحَاسِنِهٖ
فَجَوۡهَرُالۡحُسۡنِ فِيۡهِ غَيۡرُ مُنۡقَسِمٖ (2)

या'नी हज़रते महबूबे ख़ुदा صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी ख़ूबियों में ऐसे यक्ता हैं कि इस मुआमले में इन का कोई शरीक ही नहीं है। क्यूं कि इन में जो हुस्न का जौहर है वोह क़ाबिले तक़्सीम ही नहीं।

आ'ला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहिब क़िब्ला बरेल्वी قدس سره العزيز ने भी इस मज़्मून की अक्कासी फ़रमाते हुए कितने नफ़ीस अन्दाज़ में फ़रमाया है कि

तेरे ख़ुल्क़ को हक़ ने अज़ीम कहा ***तेरी ख़ल्क़ को हक़ ने जमील किया***
कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा ***तेरे ख़ालिक़े हुस्नो अदा की क़सम***

---

1 ......شرح ديوان حسان بن ثابت الانصارى،ص٦٦

2 ......قصيدة البردة مع شرحها،ص ١١١

बहर हाल इस पर तमाम उम्मत का ईमान है कि तनासुबे आ'ज़ा और हुस्नो जमाल में **हुज़ूर** नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बे मिस्ल व बे मिसाल हैं। चुनान्चे हज़रात मुहद्दिसीन व मुसन्निफ़ीने सीरत ने रिवायाते सहीहा के साथ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हर हर उज़्वे शरीफ़ा के तनासुब और हुस्नो जमाल को बयान किया है। हम भी अपनी इस मुख़्तसर किताब में "हुल्यए मुबारका" के ज़िक्रे जमील से हुस्नो जमाल पैदा करने के लिये इस उन्वान पर हज़रते मौलाना मुहम्मद कामिल साहिब चराग़ रब्बानी नो'मानी वलीद पूरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मंज़ूम हुल्यए मुबारका के चन्द अश्आर नक़्ल करते हैं ताकि इस आलिमे कामिल की बरकतों से भी येह किताब सरफ़राज़ हो जाए। हज़रते मौलाना मौसूफ़ ने अपनी किताब "पंजए नूर" में तहरीर फ़रमाया कि

हुल्यए मुक़द्दसा

हुल्यए नूरे ख़ुदा मैं क्या लिखूं — रूहे हक़ का मैं सरापा क्या लिखूं
जल्वागर होगा मकाने क़ब्र में — पर जमाले रह़मतुल्लिल आलमीं
मुख़्तसर लिख दूं जमाले बे मिसाल — इस लिये है आ गया मुझ को ख़याल
और इस की याद भी आसान हो — ताकि यारों को मेरे पहचान हो
पर सपेदो सुर्ख़ था रंगे बदन — था मियाना क़द व औसत पाक तन
थे हसीनो गोल सांचे में ढले — चांद के टुकड़े थे आ'ज़ा आप के
चांद में है दाग़ वोह बे दाग़ थी — थीं जबीं रौशन कुशादा आप की
और दोनों को हुवा था इत्तिसाल — दोनों अब्रू थीं मिसाले दो हिलाल
या कि अदना क़ुर्ब था "क़ौसैन" का — इत्तिसाले दो महे "ईदैन" था
देख कर क़ुरबान थीं सब हूरे ई — थीं बड़ी आंखें हसीनो सुर्मगीं
साथ ख़ूबी के दहन बीनी बुलन्द — कान दोनों ख़ूब सूरत अरजुमन्द

साफ़ आईना था चेहरा आप का	सूरत अपनी उस में हर इक देखता
ता ब सीना रीशे महबूबे इलाह	ख़ूब थी गन्जान मू, रंगे सियाह
था सपेद अकसर लिबासे पाक तन	हो इज़ारो जुब्बा या पैरहन
सब्ज़ रहता था इमामा आप का	पर कभी सौदो सपेदो साफ़ था
मैं कहूं पहचान उ़म्दा आप की	दोनों आ़लम में नहीं ऐसा कोई

जिस्मे अत़हर

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि **हुज़ूरे** अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस का रंग गोरा सपेद था। ऐसा मा'लूम होता था कि गोया आप का मुक़द्दस बदन चांदी से ढाल कर बनाया गया है।(1)

(شمائل ترمذی ص۲)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का जिस्मे मुबारक निहायत नर्मो नाज़ुक था। मैं ने दीबा व ह़रीर (रेशमीं कपड़ों) को भी आप के बदन से ज़ियादा नर्म व नाज़ुक नहीं देखा और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक की ख़ुश्बू से ज़ियादा अच्छी कभी कोई ख़ुश्बू नहीं सूंघी।(2) (بخاری ج۱ص۵۰۲ باب صفۃ النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश होते थे तो आप का चेहरए अन्वर इस त़रह़ चमक उठता था कि गोया चांद का एक टुकड़ा है और हम लोग इसी कैफ़िय्यत से **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शादमानी व मसर्रत को पहचान लेते थे।(3) (بخاری ج۱ص۵۰۳باب صفۃ النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

आप के रुख़े अन्वर पर पसीने के क़त़रात मोतियों की त़रह़ ढलकते थे और उस में मुश्को अ़म्बर से बढ़ कर ख़ुश्बू रहती थी। चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

---

1 ......الشمائل المحمدية،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم،الحدیث:۱۱،ص۲۴،۲۵

2 ......صحیح البخاری،کتاب المناقب،باب صفةالنبی صلی اللّٰه علیه وسلم،الحدیث:۳۵۶۱،ج۲،ص۴۸۹

3 ......صحیح البخاری،کتاب المناقب،باب صفةالنبی صلی اللّٰه علیه وسلم،الحدیث:۳۵۵۶،ج۲،ص۴۸۸

एक चमड़े का बिस्तर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये बिछा देती थीं और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस पर दोपहर को क़ैलूला फ़रमाया करते थे तो आप के जिस्मे अत़्हर के पसीने को वोह एक शीशी में जम्अ़ फ़रमा लेती थीं फिर उस को अपनी ख़ुश्बू में मिला लिया करती थीं। चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ ने वसिय्यत की थी कि मेरी वफ़ात के बा'द मेरे बदन और कफ़न में वोही ख़ुश्बू लगाई जाए जिस में **हुज़ूरे** अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़्हर का पसीना मिला हुवा है।[1]

(بخاری ج۲ص ۹۲۹ باب من زار قوماً فقال عندہم و بخاری ج۱ص ۳۶۵ حدیث الافک)

जिस्मे अन्वर का साया न था

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दे मुबारक का साया न था। ह़कीम तिरमिज़ी (मुतवफ़्फ़ा सि. 255 हि.) ने अपनी किताब "नवादिरुल उसूल" में ह़ज़रते ज़क्वान ताबेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से येह ह़दीस नक़्ल की है कि सूरज की धूप और चांद की चांदनी में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का साया नहीं पड़ता था। इमाम इब्ने सबअ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि येह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़साइस में से है कि आप का साया ज़मीन पर नहीं पड़ता था और आप नूर थे इस लिये जब आप धूप या चांदनी में चलते तो आप का साया नज़र न आता था और बा'ज़ का क़ौल है कि इस की शाहिद वोह ह़दीस है जिस में आप की इस दुआ़ का ज़िक्र है कि आप ने येह दुआ़ मांगी कि ख़ुदा वन्दा ! तू मेरे तमाम आ'ज़ा को नूर बना दे और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी इस दुआ़ को इस क़ौल पर ख़त्म फ़रमाया कि "وَاجْعَلْنِیْ نُوْرًا" या'नी या **अल्लाह** ! तू मुझ को सरापा नूर बना दे। ज़ाहिर है कि जब आप सरापा नूर थे तो फिर आप का साया कहां से पड़ता ?

इसी त़रह़ अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक और इब्नुल जौज़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا ने भी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत की है

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب من زار قوما...الخ، الحدیث: ٦٢٨١، ج٤، ص ١٨٢

कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का साया नहीं था।[1] (زرقانی ج۵ص۲۴۹)

मख्खी, मच्छर, जूओं से मह़फ़ूज़

ह़ज़रते इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस रिवायत को नक़्ल फ़रमाया है और अ़ल्लामा ह़िजाज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वग़ैरा से भी येही मन्क़ूल है कि बदन तो बदन, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कपड़ों पर भी कभी मख्खी नहीं बैठी, न कपड़ों में कभी जूएं पड़ीं, न कभी खटमल या मच्छर ने आप को काटा, इस मज़मून को अबुर्रबीअ़ सुलैमान बिन सबअ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "शिफ़ाउस्सुदूर फ़ी आ'लामु नुबुव्वतिर्रसूल" में बयान फ़रमाते हुए तह़रीर फ़रमाया कि इस की एक वजह तो येह है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नूर थे। फिर मख्खियों की आमद, जूओं का पैदा होना चूंकि गन्दगी बदबू वग़ैरा की वजह से हुवा करता है और आप चूंकि हर क़िस्म की गन्दगियों से पाक और आप का जिस्मे अत़्हर ख़ुश्बूदार था इस लिये आप इन चीज़ों से मह़फ़ूज़ रहे। इमाम सबती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी इस मज़्मून को "आ'ज़मुल मवारिद" में मुफ़स्सल लिखा है।[2] (زرقانی ج۵ص۲۴۹)

मोहरे नुबुव्वत

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों शानों के दरमियान कबूतर के अन्डे के बराबर मोहरे नुबुव्वत थी। येह ब ज़ाहिर सुर्ख़ी माइल उभरा हुवा गोश्त था। चुनान्चे ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों शानों के बीच में मोहरे नुबुव्वत को देखा जो कबूतर के अन्डे की मिक़्दार में सुर्ख़ उभरा हुवा एक ग़ुदूद था।[3] (شمائل ترمذی ص۳وترمذی ج۲ص۲۰۵)

लेकिन एक रिवायत में येह भी है कि मोहरे नुबुव्वत कबूतर के अन्डे के बराबर थी और उस पर येह इ़बारत लिखी हुई थी कि

اَللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ بِوَجْہٍ حَیْثُ کُنْتَ فَاِنَّکَ مَنْصُوْرٌ

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،الفصل الاول في كمال خلقته...الخ،ج٥،ص٥٢٤-٥٢٥

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،الفصل الرابع مااختص به...الخ،ج٧،ص٢٠٠

3 ......الشمائل المحمدية،باب ماجاء في خاتم النبوة،الحديث:١٦،ص٢٨

या'नी एक **अल्लाह** है उस का कोई शरीक नहीं (ऐ रसूल !) आप जहां भी रहेंगे आप की मदद की जाएगी

और एक रिवायत में येह भी है कि "كَانَ نُوْرًا يَّتَلَأْ لَأُ" या'नी मोहरे नुबुव्वत एक चमकता हुवा नूर था। रावियों ने इस की ज़ाहिरी शक्ल व सूरत और मिक्दार को कबूतर के अन्डे से तश्बीह दी है।[1]

(حاشیہ ترمذی ج۲ص۲۰۵باب ماجاء فی خاتم النبوۃ)

क़दे मुबारक

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم न बहुत ज़ियादा लम्बे थे न पस्ता क़द बल्कि आप दरमियानी क़द वाले थे और आप का मुक़द्दस बदन इनतिहाई ख़ूब सूरत था जब चलते थे तो कुछ ख़मीदा हो कर चलते थे।[2] (شمائل ترمذی ص۱)

इसी तरह हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم न तवीलुल क़ामत थे न पस्ता क़द बल्कि आप मियाना क़द थे। ब वक़्ते रफ़्तार ऐसा मा'लूम होता था कि गोया आप किसी बुलन्दी से उतर रहे हैं। मैं ने आप का मिस्ल न आप से पहले देखा न आप के बा'द।[3] (شمائل ترمذی صفحہ۱)

इस पर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم का इत्तिफ़ाक़ है कि आप मियाना क़द थे लेकिन येह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मो'जिज़ाना शान है कि मियाना क़द होने के बा वुजूद अगर आप हज़ारों इन्सानों के मज्मअ़ में खड़े होते थे तो आप का सरे मुबारक सब से ज़ियादा ऊंचा नज़र आता था।

क़दे बे साया के सायए मर्हमत   ज़िल्ले ममदूद राफ़त पे लाखों सलाम
ताइराने क़ुदुस जिस की हैं क़ुमरियां   उस सही सरवे क़ामत पे लाखों सलाम

---

1 ......حاشیۃ جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب ماجاء فی خاتم النبوۃ، حاشیۃ:۲، ج۲، ص۲۰۶

2 ......الشمائل المحمدیۃ، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث:۲، ص۱۶

3 ......الشمائل المحمدیۃ، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث:۵، ص۱۹

सरे अक़्दस

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का हुल्यए मुबारका बयान फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि ''ज़ख़्मुर्रास'' या'नी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का सरे मुबारक ''बड़ा'' था (जो शानदार और वजीह होने का निशान है।) [(1)] (شمائل ترمذی)

जिस के आगे सरे सरवरां ख़म रहें उस सरे ताजे रिफ़्अ़त पे लाखों सलाम

मुक़द्दस बाल

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक न घूंघर दार थे न बिल्कुल सीधे बल्कि इन दोनों कैफ़िय्यतों के दरमियान थे। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस बाल पहले कानों की लौ तक थे फिर शानों तक ख़ूब सूरत गेसू लटकते रहते थे मगर ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर आप ने अपने बालों को उतरवा दिया। आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान क़िब्ला बरेल्वी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने आप के मुक़द्दस बालों की इन तीनों सूरतों को अपने दो शे'रों में बहुत ही नफ़ीस व लतीफ़ अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है कि

गोश तक सुनते थे फ़रयाद अब आए ता दौश कि बनें ख़ाना बदोशों को सहारे गेसू
आख़िरे ह़ज ग़मे उम्मत में परेशां हो कर तीरह बख़्तों की शफ़ाअ़त को सिधारे गेसू

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अकसर बालों में तेल भी डालते थे और कभी कभी कंघी भी करते थे और अख़ीर ज़माने में बीच सर में मांग भी निकालते थे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस बाल आख़िर उ़म्र तक सियाह रहे, सर और दाढ़ी शरीफ़ में बीस बालों से ज़ियादा सफ़ेद नहीं हुए थे।[(2)] (شمائل ترمذی ص۴-۵)

---

1 ......الشمائل المحمدیة،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم،الحدیث:۵،ص۱۹

2 ......الشمائل المحمدیة،باب ماجاء فی شعر رسول اللّٰہ،الحدیث:۲۶،ص۳۵وباب ماجاء فی ترجل رسول اللّٰہ،الحدیث:۳۲،۳۵،ص۳۹،۴۱وباب ماجاء فی شیب رسول اللّٰہ ، الحدیث:۳۹،ص۴۴ملتقطاً

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने हिज्जतुल वदाअ़ में जब अपने मुक़द्दस बाल उतरवाए तो वोह सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم में बत़ौरे तबर्रुक तक़्सीम हुए और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने निहायत ही अ़क़ीदत के साथ इस मूए मुबारक को अपने पास मह़फ़ूज़ रखा और इस को अपनी जानों से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखते थे।

ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने इन मुक़द्दस बालों को एक शीशी में रख लिया था जब किसी इन्सान को नज़र लग जाती या कोई मरज़ होता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا उस शीशी को पानी में डुबो कर देती थीं और उस पानी से शिफ़ा ह़ासिल होती थी।[1] (بخاری ج۲ص۸۷۵باب مایذکر فی الشیب)

वोह करम की घटा गेसूए मुश्क सा
लक्कए अब्रे राफ़त पे लाखों सलाम

रुख़े अन्वर

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم का चेहरए मुनव्वरह जमाले इलाही का आईना और अन्वारे तजल्ली का मज़्हर था। निहायत ही वजीह, पुर गोश्त और किसी क़दर गोलाई लिये हुए था। ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का बयान है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم को एक मरतबा चांदनी रात में देखा। मैं एक मरतबा चांद की त़रफ़ देखता और एक मरतबा आप صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर को देखता तो मुझे आप का चेहरा चांद से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत नज़र आता था।[2]

ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से किसी ने पूछा कि क्या रसूलुल्लाह صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم का चेहरा (चमक दमक में) तलवार की मानिन्द था? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि नहीं बल्कि आप صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم का चेहरा चांद के मिस्ल था। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने आप صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم के हुल्यए मुबारका को बयान करते हुए येह कहा कि

1 ......صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب مایذکر فی الشیب، الحدیث:٥٨٩٦، ج٤، ص٧٦
2 ......الشمائل المحمدیة، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث:٩، ص٢٤

مَنْ رَاٰهُ بَدِيْهَةً هَابَهٗ وَمَنْ خَالَطَهٗ مَعْرِفَةً اَحَبَّهٗ [1] (شمائل ترمذی ص۲)

जो आप को अचानक देखता वोह आप के रो'ब दाब से डर जाता और पहचानने के बा'द आप से मिलता वोह आप से महब्बत करने लगता था।

हज़रते बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम इन्सानों से बढ़ कर ख़ूबरू और सब से ज़ियादा अच्छे अख़्लाक़ वाले थे।[2] (بخاری ج۱ص۵۰۲باب صفۃ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप के चेहरए अन्वर के बारे में येह कहा : فَلَمَّا تَبَيَّنْتُ وَجْهَهٗ عَرَفْتُ اَنَّ وَجْهَهٗ لَيْسَ بِوَجْهِ كَذَّابٍ[3] या'नी मैं ने जब **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर को बग़ौर देखा तो मैं ने पहचान लिया कि आप का चेहरा किसी झूटे आदमी का चेहरा नहीं है।

(مشکوۃ ج۱ص۱۶۸باب فضل الصدقۃ)

आ'ला हज़रत फ़ाज़िले बरेल्वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क्या ख़ूब कहा कि

चांद से मुंह पे ताबां दरख़्शां दुरूद नमक आगीं सबाहत पे लाखों सलाम
जिस से तारीक दिल जग मगाने लगे उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम

अ़रबी ज़बान में भी किसी मद्दाहे रसूल ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर के हुस्नो जमाल का कितना हसीन मंज़र और कितनी बेहतरीन तशरीह पेश की है

نَبِيُّ جَمَالٍ كُلُّ مَا فِيْهِ مُعْجِزٌ مِنَ ... الْحُسْنِ لٰكِنْ وَجْهُهُ الْاٰيَةُ الْكُبْرٰى
يُنَادِيْ بَلَالُ الْخَالِ فِيْ صَحْنِ خَدِّهٖ ... يُطَالِعُ مِنْ لَاْ لَاْءِ غُرَّتِهِ الْفَجْرَا

---

[1] ......الشمائل المحمدية،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم،الحدیث:۶،۰۰۶، ص۱۹،۲۰،۲۴ ملتقطاً

[2] ......صحیح البخاری،کتاب المناقب،باب صفة النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم،الحدیث:۳۵۴۹،ج۲،ص۴۸۷

[3] ......مشکاۃ المصابیح،کتاب الزکاۃ،باب فضل الصدقۃ،الحدیث:۱۹۰۷،ج۱،ص۳۶۲

या'नी **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हुस्नो जमाल के भी नबी है, यूं तो इन की हर हर चीज़ हुस्न का मो'जिज़ा है लेकिन ख़ास कर इन का चेहरा तो आयते कुब्रा (बहुत ही बड़ा मो'जिज़ा) है।

इन के रुख़्सार के सेहन में इन के तिल का बिलाल इन की रौशन पेशानी की चमक से सुब्हे सादिक़ को देख कर अज़ान कहा करता था।

मेहराबे अब्रू

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की भवें दराज़ व बारीक और घने बाल वाली थीं और दोनों भवें इस क़दर मुत्तसिल थीं कि दूर से दोनों मिली हुई मा'लूम होती थीं और इन दोनों भवों के दरमियान एक रग थी जो गुस्से के वक़्त उभर जाती थी।[1] (شمائل ترمذی ص۲)

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अब्रूए मुबारक की मद्ह में फ़रमाते हैं कि

जिन के सज्दे को मेह़राबे का'बा झुकी   उन भवों की लत़ाफ़त पे लाखों सलाम

और ह़ज़रते मोह़सिन काकोरवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने चेहरए अन्वर में मेह़राबे अब्रू के हुस्न की तस्वीर कशी करते हुए येह लिखा कि

महे कामिल में महे नूर की येह तस्वीरें हैं   या खिंची मा'रिकए बद्र में शमशीरें हैं

नूरानी आंख

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्माने मुबारक बड़ी बड़ी और कुदरती तौ़र पर सुर्मगीं थीं। पलकें घनी और दराज़ थीं। पुतली की सियाही खूब सियाह और आंख की सफे़दी खूब सफे़द थी जिन में बारीक बारीक सुर्ख़ डोरे थे।[2] (شمائل ترمذی ص۲ودلائل النبوۃ ص۵۴)

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस आंखों का येह ए'जाज़ है कि आप बयक वक़्त आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे, दिन रात, अंधेरे

---

1 ......الشمائل المحمدية،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم،الحديث:٧،ص١٢ ملتقطاً

2 ......الشمائل المحمدية،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم،الحديث:٦،ص١٩ ملتقطاً

उजाले, में यक्सां देखा करते थे।[1] (زرقانی علی المواہب ج۵ص۲۴۶وخصائص کبریٰ ج۱ص۶۱)

चुनान्चे बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायात में आया है कि

اَقِيمُوا الرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ فَوَاللّٰهِ اِنِّیْ لَا اَرَاكُمْ مِنْ بَعْدِیْ[2] (مشکوٰۃ ص۸۲باب الرکوع)

या'नी ऐ लोगो ! तुम रुकूअ़ व सुजूद को दुरुस्त त़रीक़े से अदा करो क्यूं कि ख़ुदा की क़सम ! मैं तुम लोगों को अपने पीछे से भी देखता रहता हूं।

साहिबे मिरक़ात ने इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाया कि وَهِیَ مِنَ الْخَوَارِقِ الَّتِیْ اُعْطِيَهَا عَلَيْهِ السَّلَام[3] (حاشیہ مشکوٰۃ ص۸۲باب الرکوع) या'नी येह बाब आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के उन मो'जिज़ात में से है जो आप को अ़त़ा किये गए हैं।

फिर आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों का देखना मह़सूसात ही तक मह़दूद नहीं था बल्कि आप ग़ैर मरई व ग़ैर मह़सूस चीज़ों को भी जो आंखों से देखने के लाइक़ ही नहीं हैं देख लिया करते थे। चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत है कि وَاللّٰهِ مَا يَخْفٰى عَلَیَّ رُكُوْعُكُمْ وَلَا خُشُوْعُكُمْ[4] (بخاری ج۱ص۵۹)

या'नी ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारा रुकूअ़ व ख़ुशूअ़ मेरी निगाहों से पोशीदा नहीं रहता। سُبْحٰنَ اللّٰه ! प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी आंखों के ए'जाज़ का क्या कहना ? कि पीठ के पीछे से नमाज़ियों के रुकूअ़ बल्कि उन के ख़ुशूअ़ को भी देख रहे हैं।

"ख़ुशूअ़" क्या चीज़ है ? ख़ुशूअ़ दिल में ख़ौफ़ और आ़जिज़ी की एक कैफ़िय्यत का नाम है जो आंख से देखने की चीज़ ही नहीं है मगर निगाहे नुबुव्वत का येह मो'जिज़ा देखो कि ऐसी चीज़ को भी आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी आंखों से देख लिया जो आंख से देखने के क़ाबिल ही नहीं है। سُبْحٰنَ اللّٰه ! चश्माने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......الخصائص الكبرى للسيوطى، باب المعجزة والخصائص...الخ، ج١، ص١٠٤
والمواهب اللدنية وشرح الزرقانى، الفصل الاول فى كمال خلقته...الخ، ج٥، ص٢٦٣، ٢٦٤

2 ......مشكاة المصابيح، كتاب الصلوة، باب الركوع، الحديث: ٨٦٨، ج١، ص١٨٠

3 ......مرقاة المفاتيح شرح مشكاة المصابيح، تحت الحديث: ٨٦٨، ج٢، ص٥٩١

4 ......صحيح البخارى، كتاب الاذان، باب الخشوع فى الصلوة، الحديث: ٧٤١، ج١، ص٢٦٢

के ए'जाज़ की शान का क्या कोई बयान कर सकता है ? आ'ला ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान साह़िब क़िब्ला बरेल्वी قُدِّسَ سِرُّہٗ ने क्या ख़ूब फ़रमाया

शश जिहत सम्त मुक़ाबिल शबो रोज़ एक ही ह़ाल
धूम "वन्नज्म" में है आप की बीनाई की
फ़र्श ता अ़र्श सब आईना ज़माइर ह़ाज़िर
बस क़सम खाइये उम्मी तेरी दानाई की

बीनी मुबारक

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुतबर्रक नाक ख़ूब सूरत दराज़ और बुलन्द थी जिस पर एक नूर चमकता था । जो शख़्स बग़ौर नहीं देखता था वोह येह समझता था कि आप की मुबारक नाक बहुत ऊंची है ह़ालां कि आप की नाक बहुत ज़ियादा ऊंची न थी बल्कि बुलन्दी उस नूर की वजह से मह़सूस होती थी जो आप की मुक़द्दस नाक के ऊपर जल्वा फ़िगन था ।[1] (شمائل ترمذی ص۲وغیرہ)

नीची आंखों की शर्मो ह़या पर दुरूद
ऊंची बीनी की रिफ़्अ़त पे लाखों सलाम

मुक़द्दस पेशानी

ह़ज़रते हिन्द बिन अबी हाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर का हुल्या बयान करते हैं कि "واسع الجبین" या'नी आप की मुबारक पेशानी कुशादा और चौड़ी थी ।[2] (شمائل ترمذی ص۲)

क़ुदरती त़ौर से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पेशानी पर एक नूरानी चमक थी । चुनान्चे दरबारे रिसालत के शाइ़र मद्दाह़े रसूल ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इसी ह़सीनो जमील नूरानी मंज़र को देख कर येह कहा है कि

---

1 ......الشمائل المحمدية ، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ ، الحديث: ٧،ص ٢١

2 ......الشمائل المحمدية ، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ ، الحديث: ٧،ص ٢١

مَتٰى يَبْدُ فِى الدَّاجِى الْبَهِيْمِ جَبِيْنُهٗ!
يَلُحْ مِثْلَ مِصْبَاحِ الدُّجَى الْمُتَوَقِّدِ (1)

या'नी जब अंधेरी रात में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस पेशानी ज़ाहिर होती है तो इस त़रह़ चमकती है जिस त़रह़ रात की तारीकी में रौशन चराग़ चमकते हैं।

गोशे मुबारक

आप की आंखों की त़रह़ आप के कान में भी मो'जिज़ाना शान थी। चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद अपनी ज़बाने अक़्दस से इरशाद फ़रमाया कि اِنِّىْ اَرٰى مَالَا تَرَوْنَ وَاَسْمَعُ مَالَا تَسْمَعُوْنَ (خصائص کبریٰ ج۱ص ۶۷) या'नी मैं उन चीज़ों को देखता हूं जिन को तुम में से कोई नहीं देखता और मैं उन आवाज़ों को सुनता हूं जिन को तुम में से कोई नहीं सुनता।(2)

इस ह़दीस से साबित होता है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सम्अ़ व बसर की कुव्वत बे मिसाल और मो'जिज़ाना शान रखती थी। क्यूं कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दूर व नज़्दीक की आवाज़ों को यक्सां त़ौर पर सुन लिया करते थे। चुनान्चे आप के ह़लीफ़ बनी ख़ुज़ाआ़ ने, जैसा कि फ़त्ह़े मक्का के बयान में आप पढ़ चुके हैं, तीन दिन की मसाफ़त से आप को अपनी इमदाद व नुस्रत के लिये पुकारा तो आप ने उन की फ़रयाद सुन ली। अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी ने इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाया कि لَا بُعْدَ فِىْ سَمَاعِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَدْ كَانَ يَسْمَعُ اَطِيْطَ السَّمَآءِ या'नी अगर ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन दिन की मसाफ़त से एक फ़रयादी की फ़रयाद सुन ली तो येह आप से कोई बईद नहीं है क्यूं कि आप तो ज़मीन पर बैठे हुए आस्मानों की चरचराहट को सुन लिया करते थे बल्कि अ़र्श के नीचे चांद के सज्दे में गिरने की आवाज़ को भी सुन लिया करते थे।(3)

(خصائص کبریٰ ج۱ص ۵۳ وحاشیہ الدولۃ المکیۃ ص۱۸۰)

---

1 ...... شرح ديوان حسان بن ثابت الانصارى ، ص ۱۵۷

2 ...... الخصائص الكبرى للسيوطى، باب الاية فى سمعه الشريف، ج۱، ص ۱۱۳

3 ...... شرح الزرقانى على المواهب، باب غزوة الفتح الاعظم، ج۳، ص ۳۸۱
والخصائص الكبرى للسيوطى ، باب الاية فى سمعه الشريف ، ج۱ ، ص ۱۱۳

दूरो नज़्दीक के सुनने वाले वोह कान
काने ला'ले करामत पे लाखों सलाम

दहन शरीफ़

हज़रते हिन्द बिन अबी हाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सार नर्म व नाज़ुक और हमवार थे और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुंह फ़राख़, दांत कुशादा और रौशन थे। जब आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم गुफ़्त्गू फ़रमाते तो आप के दोनों अगले दांतों के दरमियान से एक नूर निकलता था और जब कभी अंधेरे में आप मुस्कुरा देते तो दन्दाने मुबारक की चमक से रौशनी हो जाती थी।[1] (شمائل ترمذی ص۲و خصائص کبریٰ ج۱ص۷۴)

आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को कभी जमाई नहीं आई और येह तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام का ख़ास्सा है कि इन को कभी जमाई नहीं आती क्यूं कि जमाई शैत़ान की त़रफ़ से हुवा करती है और ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام शैत़ान के तसल्लुत़ से मह़फ़ूज़ व मा'सूम हैं।[2] (زرقانی ج۵ص۲۴۸)

वोह दहन जिस की हर बात वह़्ये ख़ुदा
चश्मए इल्मो ह़िक्मत पे लाखों सलाम

ज़बाने अक़्दस

आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस वह़्ये इलाही की तर्जुमान और सर चश्मए आयात व मख़्ज़ने मो'जिज़ात है इस की फ़साह़त व बलाग़त इस क़दर ह़द्दे ए'जाज़ को पहुंची हुई है कि बड़े बड़े फ़ुसह़ा व बुलग़ा आप के कलाम को सुन कर दंग रह जाते थे।

तेरे आगे यूं हैं दबे लचे फ़ुसह़ा अ़रब के बड़े बड़े
कोई जाने मुंह में ज़बां नहीं, नहीं बल्कि जिस्म में जां नहीं

आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़बान की हुक्मरानी और शान का येह ए'जाज़ था कि ज़बान से जो फ़रमा दिया वोह एक आन में मो'जिज़ा बन कर आ़लमे वुजूद में आ गया।

---

1 ......الشمائل المحمدیة،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ،الحدیث:۷،۱٤،ص۲۱،۲٦ملخصاً
والخصائص الکبری للسیوطی،باب الایات فی فمه...الخ،ج۱،ص۱۰٦ملخصاً

2 ......المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی،الفصل الرابع ماااختص به...الخ،ج۷،ص۹۸

वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम
उस की प्यारी फ़साहत पे बेहद दुरूद उस की दिलकश बलाग़त पे लाखों सलाम

लुआ़बे दहन

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का लुआ़बे दहन (थूक) ज़ख़्मियों और बीमारों के लिये शिफ़ा और ज़हरों के लिये तिरयाक़े आ'ज़म था। चुनान्चे आप मो'जिज़ात के बयान में पढ़ेंगे कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पाउं में ग़ारे सौर के अन्दर सांप ने काटा। उस का ज़हर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लुआ़बे दहन से उतर गया और ज़ख़्म अच्छा हो गया। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के आशोबे चश्म के लिये येह लुआ़बे दहन "शिफ़ाउ़ल ऐ़न" बन गया। ह़ज़रते रिफ़ाआ़ बिन राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आंख में जंगे बद्र के दिन तीर लगा और फूट गई मगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लुआ़बे दहन से ऐसी शिफ़ा ह़ासिल हुई कि दर्द भी जाता रहा और आंख की रौशनी भी बर क़रार रही। (زادالمعادغزوۂبدر)

ह़ज़रते अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरे पर तीर लगा, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस पर अपना लुआ़बे दहन लगा दिया फ़ौरन ही ख़ून बन्द हो गया और फिर ज़िन्दगी भर उन को कभी तीर व तलवार का ज़ख़्म न लगा।[1] (اصابہ تذکرۂ ابوقتادہ)

शिफ़ा के इ़लावा और भी लुआ़बे दहन से बड़ी बड़ी मो'जिज़ाना बरकात का ज़ुहूर हुवा। चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर में एक कूंआं था। आप ने उस में अपना लुआ़बे दहन डाल दिया तो उस का पानी इतना शीरीं हो गया कि मदीनए मुनव्वरह में इस से बढ़ कर कोई शीरीं कूंआं न था।[2] (زرقانی ج۵ ص۲۴۶)

---

1 ......الاصابة فی تمییز الصحابة ، ابوقتادةبن ربعی الانصاری ، ج۷،ص ۲۷۲

2 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،الفصل الاول فی کمال خلقته...الخ،ج۵،ص۲۸۹

इमाम बैहक़ी ने येह ह़दीस रिवायत की है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आ़शूरा के दिन दूध पीते बच्चों को बुलाते थे और उन के मुंह में अपना लुआ़बे दहन डाल देते थे। और उन की माओं को हुक्म देते थे कि वोह रात तक अपने बच्चों को दूध न पिलाएं। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येही लुआ़बे दहन उन बच्चों को इस क़दर शिकम सैर और सैराब कर देता था कि उन बच्चों को दिन भर न भूक लगती थी न प्यास।[1] (زرقانی ج۵ص۲۴۶)

जिस के पानी से शादाब जानो जिनां   उस दहन की त़रावत पे लाखों सलाम
जिस से खारी कूंएं शीरए जां बने   उस ज़ुलाले ह़लावत पे लाखों सलाम

आवाज़ मुबारक

येह ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के ख़साइस में से है कि वोह ख़ूब सूरत और ख़ुश आवाज़ होते हैं लेकिन **हुज़ूर** सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام से ज़ियादा ख़ूबरू और सब से बढ़ कर ख़ुश गुलू, ख़ुश आवाज़ और ख़ुश कलाम थे, ख़ुश आवाज़ी के साथ साथ आप इस क़दर बुलन्द आवाज़ भी थे कि ख़ुत़्बों में दूर और नज़्दीक वाले सब यक्सां अपनी अपनी जगह पर आप का मुक़द्दस कलाम सुन लिया करते थे।[2] (زرقانی ج۴ص۱۷۸)

जिस में नहरें हैं शीरो शकर की रवां
उस गले की नज़ारत पे लाखों सलाम

पुरनूर गरदन

ह़ज़रते हिन्द बिन अबी हाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की गरदन मुबारक निहायत ही मो'तदिल,

---

1 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،الفصل الاول فی کمال خلقته...الخ،ج٥،ص٢٨٩

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب،الفصل الاول فی کمال خلقته...الخ،ج٥،ص٤٤٤۔٤٤٥

सुराही दार और सुडोल थी। ख़ूब सूरती और सफ़ाई में निहायत ही बे मिस्ल ख़ूब सूरत और चांदी की त़रह़ साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ थी।[1] (شمائل ترمذی ص۲)

दस्ते रह़मत

आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस हथेलियां चौड़ी, पुर गोश्त, कलाइयां लम्बी, बाज़ू दराज़ और गोश्त से भरे हुए थे।[2] (شمائل ترمذی ص۲)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने किसी रेशम और दीबा को आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की हथेलियों से ज़ियादा नर्म व नाज़ुक नहीं पाया और न किसी ख़ुश्बू को आप की ख़ुश्बू से बेहतर और बढ़ कर ख़ुश्बूदार पाया।[3] (بخاری ج۱ص۵۰۲ باب صفۃ النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ج۲ص۲۵۷)

जिस शख़्स से आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुसाफ़ह़ा फ़रमाते वोह दिन भर अपने हाथों को ख़ुश्बूदार पाता। जिस बच्चे के सर पर आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपना दस्ते अक़्दस फिरा देते थे वोह ख़ुश्बू में तमाम बच्चों से मुमताज़ होता। ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं ने **हुज़ूर** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़े ज़ोहर अदा की फिर आप अपने घर की त़रफ़ रवाना हुए और मैं भी आप के साथ ही निकला। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देख कर छोटे छोटे बच्चे आप की त़रफ़ दौड़ पड़े तो आप उन में से हर एक के रुख़्सार पर अपना दस्ते रह़मत फैरने लगे। मैं सामने आया तो मेरे रुख़्सार पर भी आप ने अपना दस्ते मुबारक लगा दिया तो मैं ने अपने गालों पर आप के दस्ते मुबारक की

---

1 ......الشمائل المحمدیۃ،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم،الحدیث:۷،ص۲۱ ملتقطاً

2 ......الشمائل المحمدیۃ،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم،الحدیث:۷،ص۲۱ ملتقطاً

3 ......صحیح البخاری،کتاب المناقب،باب صفۃ النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم،الحدیث:۳۵۶۱،ج۲،ص۴۸۹

ठन्डक महसूस की और ऐसी खुश्बू आई कि गोया आप ने अपना हाथ किसी इत्र फ़रोश की सन्दूक़ची में से निकाला है ।[1]

(مسلم ج۲ص۲۵۶باب طیب ریحہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

इस दस्ते मुबारक से कैसे कैसे मो'जिज़ात व तसर्रुफ़ात आ़लमे ज़ुहूर में आए इन का कुछ तज़्किरा आप मो'जिज़ात के बयान में पढ़ेंगे ।

हाथ जिस सम्त उठ्ठा ग़नी कर दिया मौजे बहूरे समाहत पे लाखों सलाम

जिस को बारे दो आ़लम की परवा नहीं ऐसे बाज़ू की क़ुव्वत पे लाखों सलाम

का'बए दीनो ईमां के दोनों सुतूं साइदैने रिसालत पे लाखों सलाम

जिस के हर ख़त़ में है मौजे नूरे करम उस कफ़े बहूरे हिम्मत पे लाखों सलाम

नूर के चश्मे लहराएं दरिया बहें उंगलियों की करामत पे लाखों सलाम

शिकम व सीना

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का शिकम व सीनए अक़्दस दोनों हमवार और बराबर थे । न सीना शिकम से ऊंचा था न शिकम सीने से । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का सीना चौड़ा था और सीने के ऊपर के हिस्से से नाफ़ तक मुक़द्दस बालों की एक पतली सी लकीर चली गई थी मुक़द्दस छातियां और पूरा शिकम बालों से ख़ाली था । हां, शानों और कलाइयों पर क़द्रे बाल थे ।[2] (شمائل ترمذی ص۲)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب طیب رائحة النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، الحدیث: ۲۳۲۹، ص۱۲۷۱

2 ......الشمائل المحمدیة، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث:۷، ص۲۱ ملتقطاً

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का शिकम सब्र व क़नाअ़त की एक दुन्या और आप का सीना मा'रिफ़ते इलाही के अन्वार का सफ़ीना और वह्ये इलाही का गन्जीना था।

कुल जहां मिल्क और जव की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम

पाए अक़्दस

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस पाउं चौड़े पुर गोश्त, एड़ियां कम गोश्त वाली, तल्वा ऊंचा जो ज़मीन में न लगता था। दोनों पिंडलियां क़दरे पतली और साफ़ व शफ़्फ़ाफ़, पाउं की नर्मी और नज़ाकत का येह आ़लम था कि उन पर पानी ज़रा भी नहीं ठहरता था।[1]

(شمائل ترمذی ص۲ و مدارج النبوۃ وغیرہ)

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم चलने में बहुत ही वक़ार व तवाज़ोअ़ के साथ क़दम शरीफ़ को ज़मीन पर रखते थे। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बयान है कि चलने में मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से बढ़ कर तेज़ रफ़्तार किसी को नहीं देखा गोया ज़मीन आप के लिये लपेटी जाती थी। हम लोग आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ दौड़ा करते थे और तेज़ चलने से मशक़्क़त में पड़ जाते थे मगर आप निहायत ही वक़ार व सुकून के साथ चलते रहते थे मगर फिर भी हम सब लोगों से आप आगे ही रहते थे।[2]

(شمائل ترمذی ص۲ وغیرہ)

साक़े अस्ले क़दम शाख़े नख़्ले करम शमए़ राहे इसाबत पे लाखों सलाम
खाई क़ुरआं ने ख़ाके गुज़र की क़सम उस कफ़े पा की ह़ुरमत पे लाखों सलाम

---

1 ......الشمائل المحمدية،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم،الحدیث: ۷،ص ۲۱ ملتقطاً

2 ......الشمائل المحمدية،باب ماجاء فی مشية رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم،الحدیث:۱۱۶،ص۸٦

लिबास

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ियादा तर सूती लिबास पहनते थे। ऊन और कतान का लिबास भी कभी कभी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्ति'माल फ़रमाया है। लिबास के बारे में किसी ख़ास पोशाक या इमतियाज़ी लिबास की पाबन्दी नहीं फ़रमाते थे। जुब्बा, कुब्बा, पैरहन, तहमद, हुल्ला, चादर, इमामा, टोपी, मोज़ा इन सब को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ैबे तन फ़रमाया है। पाएजामा को आप ने पसन्द फ़रमाया और मिना के बाज़ार में एक पाएजामा ख़रीदा भी था लेकिन येह साबित नहीं कि कभी आप ने पाएजामा पहना हो।[1]

इमामा

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इमामे में शिम्ला छोड़ते थे जो कभी एक शाने पर और कभी दोनों शानों के दरमियान पड़ा रहता था। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इमामा सफ़ेद, सब्ज़, ज़ा'फ़रानी, सियाह रंग का था। फ़त्हे मक्का के दिन आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم काले रंग का इमामा बांधे हुए थे।[2] (شمائل ترمذی ص۹ وغیرہ)

इमामे के नीचे टोपी ज़रूर होती थी फ़रमाया करते थे कि हमारे और मुशरिकीन के इमामों में येही फ़र्क़ व इमतियाज़ है कि हम टोपियों पर इमामा बांधते हैं।[3] (ابوداؤد باب العمائم ص۲۰۹ ج۲ مجتبائی)

चादर

यमन की तय्यार शुदा सूती धारीदार चादरें जो अ़रब में "ह़बरह" या बुर्दे यमानी कहलाती थीं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत ज़ियादा

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني ،الفصل الثالث فيما تدعو ضرورته...الخ،ج ٦، ص ٢٥٤ـ٣٤٥ ملخصاً و ملتقطاً

2 ......الشمائل المحمدية،باب ماجاء في عمامةرسول الله صلى الله عليه و سلم،الحديث:١٠٧، ١١٠،ص ٨٢،٨٣

3 ......سنن ابى داود،كتاب اللباس ، باب فى العمائم،االحديث: ٤٠٧٨،ج٤،ص ٧٦

पसन्द थीं और आप इन चादरों को ब कसरत इस्ति'माल फ़रमाते थे। कभी कभी सब्ज़ रंग की चादर भी आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्ति'माल फ़रमाई है।[1] (ابوداؤد ج۲ص ۲۰۷باب فی الخضرۃ مجتبائی)

कमली

आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कमली भी ब कसरत इस्ति'माल फ़रमाते थे यहां तक कि ब वक़्ते वफ़ात भी एक कमली ओढ़े हुए थे। हज़रते अबू बरदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक मोटा कम्बल और एक मोटे कपड़े का तहबन्द निकाला और फ़रमाया कि इन्ही दोनों कपड़ों में हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वफ़ात पाई।[2] (ترمذی ج ا ص ۲۰۶ باب ماجاء فی الثوب)

ना'लैने अक़्दस

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'लैने अक़्दस की शक्लो सूरत और नक़्शा बिल्कुल ऐसा ही था जैसे हिन्दूस्तान में चप्पल होते हैं। चमड़े का एक तला होता था जिस में तस्मे लगे होते थे आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस जूतियों में दो तस्मे आ़म तौ़र पर लगे होते थे जो कुरूम चमड़े के हुवा करते थे।[3] (شمائل ترمذی ص ۷ وغیرہ)

पसन्दीदा रंग

आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सफ़ेद, सियाह, सब्ज़, ज़ा'फ़रानी रंगों के कपड़े इस्ति'माल फ़रमाए हैं। मगर सफ़ेद कपड़ा आप को बहुत

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی لبس الحبرۃ، الحدیث: ۴۰۶۰، ج ۴، ص ۷۱
و باب فی الخضرۃ، الحدیث: ۴۰۶۵، ج ۴، ص ۷۳ ملتقطاً

2 ......سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی لبس الصوف، الحدیث: ۱۷۳۹، ج ۳، ص ۲۸۴

3 ......الشمائل المحمدیۃ، باب ماجاء فی نعل رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث: ۷۲،۷۱، ص ۶۳

ज़ियादा महबूब व मरग़ूब था, सुर्ख़ रंग के कपड़ों को आप बहुत ज़ियादा ना पसन्द फ़रमाते थे। एक मरतबा हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا सुर्ख़ रंग के कपड़े पहने हुए बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुए तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ना गवारी ज़ाहिर फ़रमाते हुए दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह कपड़ा कैसा है? उन्हों ने उन कपड़ों को जला दिया। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुना तो फ़रमाया कि उस को जलाने की ज़रूरत नहीं थी किसी औ़रत को दे देना चाहिये था क्यूं कि औ़रतों के लिये सुर्ख़ लिबास पहनने में कोई ह़रज नहीं है। इसी त़रह़ **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा एक ऐसे शख़्स के पास से गुज़रे जो दो सुर्ख़ रंग के कपड़े पहने हुए था उस ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया तो आप ने उस के सलाम का जवाब नहीं दिया।[1] (ابوداؤد ج۲ ص ۲۰۷، ۲۰۸ باب فی الحمرۃ)

अंगूठी

जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बादशाहों के नाम दा'वते इस्लाम के ख़ुत़ूत़ भेजने का इरादा फ़रमाया तो लोगों ने कहा कि सलात़ीन बिग़ैर मोहर वाले ख़ुत़ूत़ को क़बूल नहीं करते तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने चांदी की एक अंगूठी बनवाई जिस पर ऊपर तले तीन सत़रों में "مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ" कन्दा किया हुवा था।[2] (شمائل ترمذی ص ۷ وغیرہ)

ख़ुश्बू

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश्बू बहुत ज़ियादा पसन्द थी आप हमेशा इ़त्र का इस्ति'माल फ़रमाया करते थे ह़ालां कि ख़ुद आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़हर से ऐसी ख़ुश्बू निकलती थी कि

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی الحمرۃ، الحدیث:٤٠٦٦، ٤٠٦٩، ج٤، ص٧٣، ٧٤ ملخصاً

2 ......الشمائل المحمدیۃ، باب ماجاء فی خاتم رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث:٨٥، ٨٦، ص٦٩

जिस गली में से आप गुज़र जाते थे वोह गली मुअ़त्त़र हो जाती थी। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि मर्दों की ख़ुश्बू ऐसी होनी चाहिये कि ख़ुश्बू फैले और रंग नज़र न आए और औ़रतों के लिये वोह ख़ुश्बू बेहतर है कि वोह ख़ुश्बू न फैले और रंग नज़र आए। कोई आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ख़ुश्बू भेजता तो आप कभी रद न फ़रमाते और इरशाद फ़रमाते कि ख़ुश्बू के तोह़फ़े को रद मत करो क्यूं कि येह जन्नत से निकली हुई है।[1] (شمائل ترمذی ص ۱۵)

सुरमा

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़ाना रात को "इसमिद" का सुरमा लगाया करते थे। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक सुरमा दानी थी उस में से तीन तीन सलाई दोनों आंखों में लगाया करते थे और फ़रमाया करते थे कि इसमिद का सुरमा लगाया करो येह निगाह को रौशन और तेज़ करता है और पलक के बाल उगाता है।[2] (شمائل ترمذی ص ۵)

सुवारी

घोड़े की सुवारी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत पसन्द थी। घोड़ों के इ़लावा ऊंट, ख़च्चर ह़िमार (अ़रबी गधा जो घोड़े से ज़ियादा ख़ूब सूरत होता है) पर भी सुवारी फ़रमाई है।[3] (صحیحین وغیرہ کتب احادیث وسیر)

नफ़ासत पसन्दी

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मिज़ाजे अक़्दस निहायत ही लत़ीफ़ और नफ़ासत पसन्द था। एक आदमी को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 ......الشمائل المحمدیة،باب ماجاء فی تعطر رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم،الحدیث:۲۰۷، ۲۰۸، ۲۱۰، ۲۱۱،ص ۱۳۰، ۱۳۲ ملخصاً

2 ......الشمائل المحمدیة،باب ماجاء فی کحل رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم،الحدیث:۴۸، ۴۹، ۵۰،ص ۵۰، ۵۱ ملخصاً

3 ......صحیح البخاری،کتاب الجهادو السیر،باب الرد ف علی الحمار،الحدیث:۲۹۸۷،ج۲، ص۳۰۶ و کتاب الاذان،باب ایجاب التکبیر...الخ،الحدیث:۷۳۲،ج۱،ص۲۶۰

ने मैले कपड़े पहने हुए देखा तो ना गवारी के साथ इरशाद फ़रमाया कि इस से इतना भी नहीं होता कि येह अपने कपड़ों को धो लिया करे ? इसी तरह एक शख़्स को देखा कि उस के बाल उलझे हुए हैं तो फ़रमाया कि क्या इस को कोई ऐसी चीज़ (तेलकंघी) नहीं मिलती कि येह अपने बालों को संवार ले ।[1] (ابوداؤد ج۲ص۲۰۷باب فی الخلقان الخ مجتبائی)

इसी तरह एक आदमी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बहुत ही ख़राब क़िस्म के कपड़े पहने हुए आ गया तो आप ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम्हारे पास क्या कुछ माल भी है ? उस ने अ़र्ज़ किया कि जी हां मेरे पास ऊंट बकरियां घोड़े ग़ुलाम सभी क़िस्म के माल हैं । तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने तुम को माल दिया है तो चाहिये कि तुम्हारे ऊपर उस की ने'मतों का कुछ निशान भी नज़र आए । (या'नी अच्छे और साफ़ सुथरे कपड़े पहनो)[2]

(ابوداؤد ج۲ص۲۰۷مجتبائی)

मरग़ूब ग़िज़ाएं

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़िन्दगी चूंकि बिल्कुल ही ज़ाहिदाना और सब्र व क़नाअ़त का मुकम्मल नुमूना थी इस लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कभी लज़ीज़ और पुर तकल्लुफ़ खानों की ख़्वाहिश ही नहीं फ़रमाते थे यहां तक कि कभी आप ने चपाती नहीं खाई फिर भी बा'ज़ खाने आप को बहुत पसन्द थे जिन को बड़ी रग़बत के साथ आप तनावुल फ़रमाते थे । मसलन अ़रब में एक खाना होता है जो ''हैस'' कहलाता है येह घी, पनीर और खजूर मिला कर पकाया जाता है इस को आप बड़ी रग़बत के साथ खाते थे ।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی غسل الثوب...الخ، الحدیث:٤٠٦٢، ج٤، ص٧٢

2 ......سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی غسل الثوب...الخ، الحدیث:٤٠٦٣، ج٤، ص٧٢

जव की मोटी मोटी रोटियां अकसर गि़ज़ा में इस्ति'माल फ़रमाते, सालनों में गोश्त, सिर्का, शहद, रोग़ने ज़ैतून, कद्दू खुसूसिय्यत के साथ मरग़ूब थे। गोश्त में कद्दू पड़ा होता तो प्याले में से कद्दू के टुकड़े तलाश कर के खाते थे।

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बकरी, दुम्बा, भेड़, ऊंट, गोरख़र, ख़रगोश, मुर्ग़, बटेर, मछली का गोश्त खाया है। इसी त़रह़ खजूर और सत्तू भी ब कसरत तनावुल फ़रमाते थे। तरबूज़ को खजूर के साथ मिला कर, खजूर के साथ ककड़ी मिला कर, रोटी के साथ खजूर भी कभी कभी तनावुल फ़रमाया करते थे। अंगूर, अनार वग़ैरा फल फ़्रूट भी खाया करते थे।

ठन्डा पानी बहुत मरग़ूब था दूध में कभी पानी मिला कर और कभी ख़ालिस दूध नोश फ़रमाते कभी किशमिश और खजूर पानी में मिला कर उस का रस पीते थे जो कुछ पीते तीन सांस में नोश फ़रमाते।

टेबल (मेज़) पर कभी खाना तनावुल नहीं फ़रमाया, हमेशा कपड़े या चमड़े के दस्तर ख़्वान पर खाना खाते, मस्नद या तक्ये पर टेक लगा कर या लेट कर कभी कुछ न खाते न इस को पसन्द फ़रमाते। खाना सिर्फ़ उंगलियों से तनावुल फ़रमाते चमचा कांटा वग़ैरा से खाना पसन्द नहीं फ़रमाते थे। हां उबले हुए गोश्त को कभी कभी छुरी से काट काट कर भी खाते थे।[1] (شمائل ترمذی)

रोज़ मर्रा के मा'मूलात

अह़ादीसे करीमा के मुत़ालए़ से पता चलता है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दिन रात के अवक़ात को तीन हिस्सों में तक़्सीम कर रखा था। एक : खुदा عَزَّوَجَلَّ की इबादत के लिये, दूसरा : आ़म मख़्लूक़ के लिये, तीसरा : अपनी ज़ात के लिये।

1 ......الشمائل المحمدية،باب ماجاء فی صفة اكل...الخ وباب ماجاء فی صفة خبز...الخ وباب ماجاء فی ادام رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم،ص٩٥_١١٤ ملتقطاً

आ़म तौ़र पर आप صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह मा'मूल था कि नमाज़े फ़ज्र के बा'द आप अपने मुसल्ले पर बैठ जाते यहां तक कि आफ़्ताब ख़ूब बुलन्द हो जाता। आ़म लोगों से मुलाक़ात का येही ख़ास वक़्त था। लोग आप صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर होते और अपनी ह़ाजात व ज़रूरिय्यात को आप की बारगाह में पेश करते। आप صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन की ज़रूरिय्यात को पूरी फ़रमाते और लोगों को मसाइल व अह़कामे इस्लाम की ता'लीम व तलक़ीन फ़रमाते। अपने और लोगों के ख़्वाबों की ता'बीर बयान फ़रमाते। इस के बा'द मुख़्तलिफ़ क़िस्म की गुफ़्तगू फ़रमाते। कभी कभी लोग ज़मानए जाहिलिय्यत की बातों और रस्मों का तज़किरा करते और हंसते तो **हुज़ूर** صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी मुस्कुरा देते कभी कभी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم आप को अश्आ़र भी सुनाते।[1] (مشکوۃ ج۲ص ۴۰۶ باب الضحک)(ابوداؤد ج۲ ص۳۱۸ باب فی الرجل تجلس متربعاً)

अकसर इसी वक़्त में माले ग़नीमत और वज़ाइफ़ की तक़्सीम भी फ़रमाते। जब सूरज ख़ूब बुलन्द हो जाता तो कभी चार रक्अ़त कभी आठ रक्अ़त नमाज़े चाश्त अदा फ़रमाते फिर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی الله تعالٰی عنهن के हुजरों में तशरीफ़ ले जाते और घरेलू ज़रूरिय्यात के बन्दोबस्त में मसरूफ़ हो जाते और घर के कामकाज में अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی الله تعالٰی عنهن की मदद फ़रमाते। (بخاری ج۱ ص۹۳ باب من کان فی حاجۃ اہلہ)

नमाज़े अ़स्र के बा'द आप صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی الله تعالٰی عنهن को शरफ़े मुलाक़ात से सरफ़राज़ फ़रमाते और सब के हुजरों में थोड़ी थोड़ी देर ठहर कर कुछ गुफ़्तगू फ़रमाते फिर जिस की बारी होती वहीं रात बसर फ़रमाते, तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی الله تعالٰی عنهن वहीं जम्अ़ हो जातीं, इशा तक आप صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب الضحك، الحديث: ٤٧٤٧، ج٢، ص١٧٩ ملخصاً
وسنن ابی داود، كتاب الادب، باب فی الرجل... الخ، الحديث: ٤٨٥٠، ج٤، ص٣٤٥ ملخصاً

उन से बातचीत फ़रमाते रहते फिर नमाज़े इ़शा के लिये मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और मस्जिद से वापस आ कर आराम फ़रमाते और इ़शा के बा'द बातचीत को ना पसन्द फ़रमाते।[1] (مسلم ج۱ص۴۷۲باب القسم بین الزوجات)

सोना जागना

नमाज़े इ़शा पढ़ कर आराम करना आ़म तौ़र पर येही आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मा'मूल था, सोने से पहले क़ुरआने मजीद की कुछ सूरतें ज़रूर तिलावत फ़रमाते और कुछ दुआ़ओं का भी विर्द फ़रमाते। फिर अकसर येह दुआ़ पढ़ कर दाहिनी करवट पर लेट जाते कि اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى या **अल्लाह** ! तेरा नाम ले कर वफ़ात पाता हूं और ज़िन्दा रहता हूं। नींद से बेदार होते तो अकसर येह दुआ़ पढ़ते कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ[2] उस ख़ुदा के लिये ह़म्द है जिस ने मौत के बा'द हम को ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ ह़श्र होगा।

आधी रात या पहर रात रहे बिस्तर से उठ जाते मिस्वाक फ़रमाते फिर वुज़ू करते और इ़बादत में मश्ग़ूल हो जाते। तिलावत फ़रमाते, मुख़्तलिफ़ दुआ़ओं का वज़ीफ़ा फ़रमाते, ख़ुसूसिय्यत के साथ नमाज़े तहज्जुद अदा फ़रमाते, तहज्जुद की नमाज़ में कभी लम्बी लम्बी कभी छोटी छोटी सूरतें पढ़ते, ज़ो'फ़े पीरी में कभी कुछ रक्अ़तें बैठ कर भी अदा फ़रमाते, नमाज़े तहज्जुद के बा'द वित्र पढ़ते और फिर सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ हो जाने के बा'द सुन्नते फ़ज्र अदा फ़रमा कर नमाज़े फ़ज्र के लिये मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते, कभी कभी कई बार रात में सोते और जागते और क़ुरआने मजीद की आयात तिलावत फ़रमाते और कभी अज़्वाजे मुत़हहरात رضی اللّٰه تعالٰی عنهن से गुफ़्तगू भी फ़रमाते। (صحاح ستہ وغیرہ)

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب الرضاع، باب القسم بين الزوجات...الخ، الحديث:١٤٦٢، ص٧٧٠ ملخصاً

2 ......صحيح البخارى، كتاب الدعوات، باب وضع اليد اليمنى...الخ، الحديث:٦٣١٤، ج٤، ص١٩٢

रफ़्तार

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत ही बा वक़ार रफ़्तार के साथ चलते थे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि ब वक़्ते रफ़्तार हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रा झुक कर चलते और ऐसा मा'लूम होता था कि गोया आप किसी बुलन्दी से उतर रहे हैं। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस क़दर तेज़ चलते थे कि गोया ज़मीन आप के क़दमों के नीचे से लपेटी जा रही है। हम लोग आप के साथ चलने में हांपने लगते और मशक़्क़त में पड़ जाते थे मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बिला तकल्लुफ़ बिग़ैर किसी मशक़्क़त के तेज़ रफ़्तारी के साथ चलते रहते थे।[1] (شمائل ترمذی ص۹)

कलाम

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत तेज़ी के साथ जल्दी जल्दी गुफ़्त्गू नहीं फ़रमाते थे बल्कि निहायत ही मतानत और सन्जीदगी से ठहर ठहर कर कलाम फ़रमाते थे बल्कि कलाम इतना साफ़ और वाज़ेह़ होता था कि सुनने वाले उस को समझ कर याद कर लेते थे। अगर कोई अहम बात होती तो उस जुम्ले को कभी कभी तीन तीन मरतबा फ़रमा देते ताकि सामिई़न उस को अच्छी त़रह़ ज़ेहन नशीन कर लें। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को "जवामिउ़ल कलम" का मो'जिज़ा अ़त़ा किया गया था कि मुख़्तसर से जुम्ले में लम्बी चौड़ी बात को बयान फ़रमा दिया करते थे। ह़ज़रते हिन्द बिन अबू हाला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बिला ज़रूरत गुफ़्त्गू नहीं फ़रमाते थे बल्कि अकसर ख़ामोश ही रहते थे।[2] (شمائل ترمذی ص۱۵)

---

1 ......الشمائل المحمدية ، باب ماجاء فی مشية رسول اللّٰه صلی اللّٰه وسلم،الحديث:١١٦، ١١٧، ١١٨، ص٨٦،٨٧ملخصاً

2 ......الشمائل المحمدية،باب كيف كان كلام رسول اللّٰه،الحديث:٢١٣، ٢١٤، ٢١٥،ص١٣٤،١٣٥

दरबारे नुबुव्वत

हुज़ूर ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दरबार सलातीन और बादशाहों जैसा दरबार न था। येह दरबार तख़्तो ताज, नक़ीब व दरबान, पहरेदार और बॉडीगार्ड वग़ैरा के तकल्लुफ़ात से क़त्अ़न बे नियाज़ था। मस्जिदे नबवी के सेहून में सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने एक छोटा सा मिट्टी का चबूतरा बना दिया था येही ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का वोह तख़्ते शाही था जिस पर एक चटाई बिछा कर दोनों आ़लम के ताजदार और शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रौनक़ अफ़्रोज़ होते थे मगर इस सादगी के बा वुजूद जलाले नुबुव्वत से हर शख़्स उस दरबार में पैकरे तस्वीर नज़र आता था। बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरा की रिवायात में आया है कि लोग आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में बैठते तो ऐसा मा'लूम होता था कि गोया उन के सरों पर चिड़ियां बैठी हुई हैं कोई ज़रा जुम्बिश नहीं करता था।[1] (بخاری ج۱ص۳۹۸)

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने इस दरबार में सब से पहले अहले ह़ाजत की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाते और सब की दरख़्वास्तों को सुन कर उन की ह़ाजत रवाई फ़रमाते। क़बाइल के नुमाइन्दों से मुलाक़ातें फ़रमाते तमाम ह़ाज़िरीन कमाले अदब से सर झुकाए रहते और जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ इरशाद फ़रमाते तो मजलिस पर सन्नाटा छा जाता और सब लोग हमातन गोश हो कर शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमाने नुबुव्वत को सुनते। (بخاری ج۱ص۳۸۰ شروط فی الجہاد)

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में आने वालों के लिये कोई रोक टोक नहीं थी अमीर व फ़क़ीर शहरी और बदवी सब क़िस्म के लोग ह़ाज़िरे दरबार होते और अपने अपने लहजों में सुवाल व जवाब करते कोई

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الجهادو السیر، باب فضل النفقة فی سبیل اللّٰه، الحدیث:۲۸٤۲، ج۲، ص۲٦٦ ملتقطاً

शख़्स अगर बोलता तो ख़्वाह वोह कितना ही ग़रीब व मिस्कीन क्यूं न हो मगर दूसरा शख़्स अगर्चे वोह कितना ही बड़ा अमीर कबीर हो उस की बात काट कर बोल नहीं सकता था। سُبْحٰنَ الله

वोह आ़दिल जिस के मीज़ाने अ़दालत में बराबर हैं
ग़ुबारे मस्कनत हो या वक़ारे ताजे सुल्ता़नी

जो लोग सुवाल व जवाब में ह़द से ज़ियादा बढ़ जाते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कमाले ह़िल्म से बरदाश्त फ़रमाते और सब को मसाइल व अह़कामे इस्लाम की ता'लीम व तल्क़ीन और मवाइज़ व नसाएह़ फ़रमाते रहते और अपने मख़्सूस अस्ह़ाब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم से मश्वरा भी फ़रमाते रहते और सुल्ह़ व जंग और उम्मत के निज़ाम व इनतिज़ाम के बारे में ज़रूरी अह़काम भी सादिर फ़रमाया करते थे। इसी दरबार में आप मुक़द्दमात का फ़ैसला भी फ़रमाते थे।

ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ुत़बात

नबी व रसूल चूंकि दीन के दाई और शरीअ़त व मिल्लत के मुबल्लिग़ होते हैं और ता'लीमे शरीअ़त और तल्क़ीने दीन का बेहतरीन ज़रीआ़ ख़ुत़बा और वा'ज़ ही है इस लिये हर नबी व रसूल का ख़त़ीब और वाइज़ होना ज़रूरिय्यात व लवाज़िमे नुबुव्वत में से है। येही वजह है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को अपनी रिसालत से सरफ़राज़ फ़रमा कर फ़िरऔ़न के पास भेजा तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस वक़्त येह दुआ़ मांगी कि

رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ ۝ وَیَسِّرْ لِیْۤ اَمْرِیْ ۝ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ ۝ یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ ۝ [1] (طٰہٰ)

ऐ मेरे रब मेरा सीना खोल दे मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे कि वोह लोग मेरी बात समझें।

---

[1] ......الف پ١٦، طٰہٰ:٢٥۔٢٨

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم चूंकि तमाम रसूलों के सरदार और सब नबियों के ख़ातिम हैं इस लिये ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने आप को ख़ित़ाबत व तक़रीर में ऐसा बे मिसाल कमाल अ़त़ा फ़रमाया कि आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم **अफ़्सहुल अ़रब** (तमाम अ़रब में सब से बढ़ कर फ़सीह़) हुए और आप को जवामिउ़ल कलम का मो'जिज़ा बख़्शा गया कि आप की ज़बाने मुबारक से निकले हुए एक एक लफ़्ज़ में मआ़नी व मत़ालिब का समुन्दर मौजें मारता हुवा नज़र आता था और आप के जोशे तकल्लुम की तासीरात से सामिईन के दिलों की दुन्या में इन्क़िलाबे अ़ज़ीम पैदा हो जाता था।

चुनान्चे जुमुआ़ व ईदैन के ख़ुत़्बों के सिवा सेंकड़ों मवाक़ेअ़ पर आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने ऐसे ऐसे फ़सीह़ो बलीग़ ख़ुत़्बात और मुअस्सिर मवाइज़ इरशाद फ़रमाए कि फ़ुसह़ाए अ़रब ह़ैरान रह गए और उन ख़ुत़्बों के असरात व तासीरात से बड़े बड़े संगदिलों के दिल मोम की त़रह़ पिघल गए और दम ज़दन में उन के **क़ुलूब** की दुन्या ही बदल गई।

चूंकि आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم मुख़्तलिफ़ ह़ैसिय्यतों के जामेअ़ थे इस लिये आप की येह मुख़्तलिफ़ ह़ैसिय्यात आप के ख़ुत़्बात के त़र्ज़े बयान पर असर अन्दाज़ हुवा करती थीं। आप एक दीन के दाई भी थे, फ़ातेह़ भी थे, अमीरे लश्कर भी थे, मुस्लिहे क़ौम भी थे, फ़रमां रवा भी थे, इस लिये इन ह़ैसिय्यतों के लिह़ाज़ से आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم के ख़ुत़्बात में क़िस्म क़िस्म का ज़ोरे बयान और त़रह़ त़रह़ का जोशे कलाम हुवा करता था। जोशे बयान का येह आ़लम था कि बसा अवक़ात ख़ुत़्बे के दौरान में आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم की आंखें सुर्ख़ और आवाज़ बहुत ही बुलन्द हो जाती थी और जलाले नुबुव्वत के जज़्बात से आप के चेहरए अन्वर पर ग़ज़ब के आसार नुमूदार हो जाते थे बार बार उंगलियों को उठा उठा कर इशारा फ़रमाते थे गोया ऐसा मा'लूम होता था कि आप किसी लश्कर को ललकार रहे हैं।[1] (مسلم جلد١ص٢٨٤ كتاب الجمعه)

1 ......صحیح مسلم، کتاب الجمعة،باب تخفیف الصلاة و الخطبة،الحدیث:٨٦٧،ص ٤٣٠

चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पुरजोश ख़ुत़्बे और तक़्रीर के जोशो ख़रोश की बेहतरीन तस्वीर खींचते हुए इरशाद फ़रमाते हैं कि मैं ने **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मिम्बर पर ख़ुत़्बा देते सुना, आप फ़रमा रहे थे कि ख़ुदा वन्दे जब्बार आस्मानों और ज़मीन को अपने हाथ में ले लेगा, फिर फ़रमाएगा कि मैं जब्बार हूं, मैं बादशाह हूं, कहां हैं जब्बार लोग ? किधर हैं मुतकब्बिरीन ? येह फ़रमाते हुए **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कभी मुट्ठी बन्द कर लेते कभी मुट्ठी खोल देते और आप का जिस्मे अक़्दस (जोश में) कभी दाएं कभी बाएं झुक झुक जाता यहां तक कि मैं ने येह देखा कि मिम्बर का निचला ह़िस्सा भी इस क़दर हिल रहा था कि मैं (अपने दिल में) येह कहने लगा कि कहीं येह मिम्बर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ले कर गिर तो नहीं पड़ेगा ! [1] (ابن ماجہ ص۳۲۶ذکر البعث)

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बर पर, ज़मीन पर, ऊंट की पीठ पर खड़े हो कर जैसा मौक़अ़ पेश आया ख़ुत़्बा दिया है। कभी कभी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़वील ख़ुत़्बात भी दिये लेकिन आ़म तौ़र पर आप के ख़ुत़्बात बहुत मुख़्तसर मगर जामेअ़ होते थे।

मैदाने जंग में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कमान पर टेक लगा कर ख़ुत़्बा इरशाद फ़रमाते और मस्जिदों में जुमुआ़ का ख़ुत़्बा पढ़ते वक़्त दस्ते मुबारक में "अ़सा" होता था।[2] (ابن ماجہ ص۷۹ باب ماجاء فی الخطبۃ یوم الجمعۃ)

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ुत़्बों के असरात का येह आ़लम होता था कि बा'ज़ मरतबा सख़्त से सख़्त इश्तिआ़ल अंगेज़ मौक़ओं पर आप के चन्द जुम्ले मह़ब्बत का दरिया बहा देते थे। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि एक दिन आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा असर अंगेज़ और वल्वला ख़ेज़ ख़ुत़्बा पढ़ा कि मैं ने कभी ऐसा ख़ुत़्बा

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر البعث ، الحديث: ٤٢٧٥، ج٤، ص٥٠٥

2 ......سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة، باب ماجاء في الخطبة...الخ، الحديث: ١١٠٧، ج٢، ص١٩

नहीं सुना था दरमियाने ख़ुत्बा में आप ने येह इरशाद फ़रमाया कि ऐ लोगो ! जो मैं जानता हूं अगर तुम जान लेते तो हंसते कम और रोते ज़ियादा । ज़बाने मुबारक से इस जुम्ले का निकलना था कि सामेईन का येह ह़ाल हो गया कि लोग कपड़ों में मुंह छुपा छुपा कर ज़ारो क़िता़र रोने लगे ।[1]

(بخاری جلد۲ص ۶۶۵تفسیر سورۂ مائدہ)

सरवरे काएनात की इबादात

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बा वुजूद बे शुमार मशाग़िल के इतने बड़े इबादत गुज़ार थे कि तमाम अम्बिया व मुर्सलीन علیہم الصلوٰۃ والتسلیم की मुक़द्दस ज़िन्दगियों में इस की मिसाल मिलनी दुश्वार है बल्कि सच तो येह है कि तमाम अम्बियाए साबिक़ीन के बारे में सह़ीह़ त़ौर से येह भी नहीं मा'लूम हो सकता कि उन का त़रीक़ए इबादत क्या था ? और उन के कौन कौन से अवक़ात इबादतों के लिये मख़्सूस थे ? तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की उम्मतों में येह फ़ख़्रो शरफ़ सिर्फ़ हुज़ूर ख़ातमुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ही को ह़ासिल है कि उन्हों ने अपने प्यारे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इबादात के तमाम त़रीक़ों, इन के अवक़ात व कैफ़िय्यात ग़रज़ इस के एक एक जुज़इय्ये को मह़फ़ूज़ रखा है। घरों के अन्दर और रातों की तारीकियों में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जो और जिस क़दर इबादतें फ़रमाते थे उन को अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن ने देख कर याद रखा और सारी उम्मत को बता दिया और घर के बाहर की इबादतों को ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने निहायत ही एहतिमाम के साथ अपनी आंखों से देख देख कर अपने ज़ेह्नों में मह़फ़ूज़ कर लिया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ियाम व क़ुऊ़द, रुकूअ़ व सुजूद और उन की कमियात व कैफ़िय्यात, अज़्कार और दुआ़ओं के बि ऐ़निही अल्फ़ाज़ यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب لاتسئلوا عن اشیاء...الخ، الحدیث:۴۶۲۱، ج۳، ص۲۱۷

इरशादात और खुशूओ खुज़ूअ़ की कैफ़िय्यात को भी अपनी याद दाश्त के ख़ज़ानों में महफ़ूज़ कर लिया। फिर उम्मत के सामने इन इ़बादतों का इस क़दर चर्चा किया कि न सिर्फ़ किताबों के अवराक़ में वोह महफ़ूज़ हो कर रह गए बल्कि उम्मत के एक एक फ़र्द यहां तक कि पर्दा नशीन ख़्वातीन को भी उन का इ़ल्म ह़ासिल हो गया और आज मुसलमानों का एक एक बच्चा ख़्वाह वोह कुर्रए ज़मीन के किसी भी गोशे में रहता हो उस को अपने नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़बादतों के मुकम्मल ह़ालात मा'लूम हैं और वोह उन इ़बादतों पर अपने नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में जोशे ईमान और जज़्बए अ़मल के साथ कारबन्द है। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़बादतों का एक इज्माली ख़ाका ह़स्बे ज़ैल है।

नमाज़

ए'लाने नुबुव्वत से क़ब्ल भी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ारे ह़िरा में क़ियाम व मुराक़बा और ज़िक्रो फ़िक्र के तौ़र पर खुदा عَزَّ وَجَلَّ की इ़बादत में मसरूफ़ रहते थे, नुज़ूले वह़्य के बा'द ही आप को नमाज़ का त़रीक़ा भी बता दिया गया, फिर शबे मे'राज में नमाज़े पन्जगाना फ़र्ज़ हुई। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े पन्जगाना के इ़लावा नमाज़े इश्राक़, नमाज़े चाश्त, तह़िय्यतुल वुज़ू, तह़िय्यतुल मस्जिद, सलातुल अव्वाबीन वग़ैरा सुनन व नवाफ़िल भी अदा फ़रमाते थे। रातों को उठ उठ कर नमाज़ें पढ़ा करते थे। तमाम उ़म्र नमाज़े तहज्जुद के पाबन्द रहे, रातों के नवाफ़िल के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं। बा'ज़ रिवायतों में येह आया है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े इ़शा के बा'द कुछ देर सोते फिर कुछ देर तक उठ कर नमाज़ पढ़ते फिर सो जाते फिर उठ कर नमाज़ पढ़ते। ग़रज़ सुब्ह़ तक येही ह़ालत क़ाइम रहती। कभी दो तिहाई रात गुज़र जाने के बा'द बेदार होते और सुब्ह़े सादिक़ तक नमाज़ों में मश्ग़ूल रहते। कभी निस्फ़ रात गुज़र जाने के बा'द बिस्तर से उठ जाते और फिर सारी रात बिस्तर पर पीठ नहीं लगाते थे और लम्बी लम्बी सूरतें नमाज़ों में पढ़ा

करते कभी रुकूअ़ व सुजूद त़वील होता कभी क़ियाम त़वील होता। कभी छे रक्अ़त, कभी आठ रक्अ़त, कभी इस से कम कभी इस से ज़ियादा। अख़ीर उ़म्र शरीफ़ में कुछ रक्अ़तें खड़े हो कर कुछ बैठ कर अदा फ़रमाते, नमाज़े वित्र नमाज़े तहज्जुद के साथ अदा फ़रमाते, रमज़ान शरीफ़ ख़ुसूसन आख़िरी अ़शरे में आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़बादत बहुत ज़ियादा बढ़ जाती थी। आप सारी रात बेदार रहते और अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی الله تعالیٰ عنهن से बे तअ़ल्लुक़ हो जाते थे और घर वालों को नमाज़ों के लिये जगाया करते थे और उ़मूमन ए'तिकाफ़ फ़रमाते थे। नमाज़ों के साथ साथ कभी खड़े हो कर, कभी बैठ कर, कभी सर ब सुजूद हो कर निहायत आहो ज़ारी और गिर्या व बुका के साथ गिड़गिड़ा गिड़गिड़ा कर रातों में दुआ़एं भी मांगा करते, रमज़ान शरीफ़ में ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के साथ क़ुरआने अ़ज़ीम का दौर भी फ़रमाते और तिलावते क़ुरआने मजीद के साथ साथ त़रह़ त़रह़ की मुख़्तलिफ़ दुआ़ओं का विर्द भी फ़रमाते थे और कभी कभी सारी रात नमाज़ों और दुआ़ओं में खड़े रहते यहां तक कि पाए अक़्दस में वरम आ जाया करता था। (صحاح ستہ وغیرہ کتب حدیث)

रोज़ा

रमज़ान शरीफ़ के रोज़ों के इ़लावा शा'बान में भी क़रीब क़रीब महीना भर आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़ादार ही रहते थे। साल के बाक़ी महीनों में भी येही कैफ़िय्यत रहती थी कि अगर रोज़ा रखना शुरूअ़ फ़रमा देते तो मा'लूम होता था कि अब कभी रोज़ा नहीं छोड़ेंगे फिर तर्क फ़रमा देते तो मा'लूम होता था कि अब कभी रोज़ा नहीं रखेंगे। ख़ास कर हर महीने में तीन दिन अय्यामे बीज़ के रोज़े, दो शम्बा व जुमा'रात के रोज़े, आ़शूरा के रोज़े, अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा के रोज़े, शव्वाल के छे रोज़े, मा'मूलन रखा करते थे। कभी कभी आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم "सौमे विसाल" भी रखते थे, या'नी कई कई दिन रात का एक रोज़ा, मगर अपनी उम्मत को ऐसा रोज़ा रखने से मन्अ़ फ़रमाते थे, बा'ज़ सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم ने

अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى الله تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप तो सौमे विसाल रखते हैं। इरशाद फ़रमाया कि तुम में मुझ जैसा कौन है? मैं अपने रब के दरबार में रात बसर करता हूं और वोह मुझ को (रूहानी ग़िज़ा) खिलाता और पिलाता है।[1] (بخاری و مسلم صوم وصال)

ज़कात

चूंकि ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने ज़कात फ़र्ज़ ही नहीं फ़रमाई है इस लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़कात फ़र्ज़ ही नहीं थी।[2] (زرقانی ج۸ ص۹۰) लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़ात व ख़ैरात का येह आ़लम था कि आप अपने पास सोना चांदी या तिजारत का कोई सामान या मवेशियों का कोई रेवड़ रखते ही नहीं थे बल्कि जो कुछ भी आप के पास आता सब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में मुस्तह़िक़ीन पर तक़्सीम फ़रमा दिया करते थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह गवारा ही नहीं था कि रात भर कोई माल व दौलत काशानए नुबुव्वत में रह जाए। एक मरतबा ऐसा इत्तिफ़ाक़ पड़ा कि ख़िराज की रक़म इस क़दर ज़ियादा आ गई कि वोह शाम तक तक़्सीम करने के बा वुजूद ख़त्म न हो सकी तो आप रात भर मस्जिद ही में रह गए जब ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आ कर येह ख़बर दी कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! सारी रक़म तक़्सीम हो चुकी तो आप ने अपने मकान में क़दम रखा।[3] (ابوداؤد باب قبول ہدایا المشرکین)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب الوصال...الخ، الحدیث: ۱۹۶۱، ج۱، ص۶۴۵
و وسائل الوصول الی شمائل الرسول، الباب السادس فی صفة عبادته صلی اللّٰه علیه وسلم، الفصل الثانی فی صفة صومه صلی اللّٰه علیه وسلم، ص۲۶۵۔۲۶۸ ملتقطاً

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، النوع الثالث فی ذکر سیرته فی الزکاة، ج۱۱، ص۲۰۲

3 ......سنن ابی داود، کتاب الخراج...الخ، باب فی الامام یقبل...الخ، الحدیث: ۳۰۵۵، ج۳، ص۲۳۱ ملخصاً

ह़ज

ए'लाने नुबुव्वत के बा'द मक्कए मुकर्रमा में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो या तीन ह़ज किये।[1] (ترمذی باب کم حج النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وابن ماجہ)

लेकिन हिजरत के बा'द मदीनए मुनव्वरह से सि. 10 हि. में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ह़ज फ़रमाया जो ह़िज्जतुल वदाअ़ के नाम से मश्हूर है जिस का मुफ़स्सल तज़्किरा गुज़र चुका। ह़ज के इ़लावा हिजरत के बा'द आप ने चार उ़मरे भी अदा फ़रमाए।[2] (ترمذی و بخاری و مسلم کتاب الحج)

ज़िक्रे इलाही

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का बयान है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर वक़्त हर घड़ी हर लह़्ज़ा ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ रहते थे।[3]

(ابوداؤد کتاب الطہارۃ وغیرہ)

उठते बैठते, चलते फिरते, खाते पीते, सोते जागते, वुज़ू करते, नए कपड़े पहनते, सुवार होते, सुवारी से उतरते, सफ़र में जाते, सफ़र से वापस होते, बैतुल ख़ला में दाख़िल होते और निकलते, मस्जिद में आते जाते, जंग के वक़्त, आंधी, बारिश, बिजली कड़कते वक़्त, हर वक़्त हर ह़ाल में दुआएं विर्दे ज़बान रहती थीं। ख़ुशी और ग़मी के अवक़ात में, सुब्ह़े सादिक़ तुलूअ़ होने के वक़्त, ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त, मुर्ग़ की आवाज़ सुन कर, गधे की आवाज़ सुन कर, ग़रज़ कौन सा ऐसा मौक़अ़ था कि आप कोई दुआ़ न पढ़ते दिन ही में नहीं बल्कि रात के सन्नाटों में भी बराबर दुआ़ ख़्वानी और ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहते यहां तक कि ब वक़्ते वफ़ात भी जो फ़िक़रा बार बार विर्दे ज़बान रहा वोह اَللّٰھُمَّ فِی الرَّفِیْقِ الْاَعْلٰی की दुआ़ थी। (صحاح ستہ و حصن حصین वग़ैरा कुतुबे अह़ादीस)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الحج، باب کم حج النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث:۸۱۵، ج۲، ص۲۲۰

2 ......سنن الترمذی، کتاب الحج، باب کم اعتمر النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث:۸۱۷، ج۲، ص۲۲۱

3 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان، تحت الباب ھل یتتبع المؤذن...الخ، ج۱، ص۲۲۹

अट्ठारहवां बाब

अख़्लाक़े नुबुव्वत

आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़सना के बारे में ख़ल्क़े ख़ुदा से क्या पूछना ? जब कि ख़ुद ख़ालिक़े अख़्लाक़ ने येह फ़रमा दिया कि

اِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیۡمٍ ﴿۴﴾ (1)

या'नी ऐ ह़बीब ! बिला शुबा आप अख़्लाक़ के बड़े दरजे पर हैं।

आज तक़्रीबन चौदह सो बरस गुज़र जाने के बा'द दुश्मनाने रसूल की क्या मजाल कि आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बद अख़्लाक़ कह सकें उस वक़्त जब कि आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने दुश्मनों के मज्मओं में अपने अ़मली किरदार का मुज़ाहरा फ़रमा रहे थे। ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने क़ुरआन में ए'लान फ़रमाया कि

فَبِمَا رَحۡمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنۡتَ لَهُمۡ ۚ وَلَوۡ كُنۡتَ فَظًّا غَلِيۡظَ الۡقَلۡبِ لَانۡفَضُّوۡا مِنۡ حَوۡلِكَ ۖ (2)

(آلِ عمران)

(ऐ ह़बीब) ख़ुदा की रह़मत से आप लोगों से नर्मी के साथ पेश आते हैं अगर आप कहीं बद अख़्लाक़ और सख़्त दिल होते तो येह लोग आप के पास से हट जाते।

दुश्मनाने रसूल ने क़ुरआन की ज़बान से येह ख़ुदाई ए'लान सुना मगर किसी की मजाल नहीं हुई कि इस के ख़िलाफ़ कोई बयान देता या इस आफ़्ताब से ज़ियादा रौशन ह़क़ीक़त को झुटलाता बल्कि आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बड़े से बड़े दुश्मन ने भी इस का ए'तिराफ़ किया कि आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत ही बुलन्द अख़्लाक़, नर्म ख़ू और रह़ीम व करीम हैं।

---

1 ......پ۲۹، القلم:۴

2 ......پ۴، اٰل عمرٰن:۱۵۹

बहर हाल **हुज़ूर** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم महासिने अख़्लाक़ के तमाम गोशों के जामेअ़ थे। या'नी हिल्म व अ़फ़्व, रह़म व करम, अ़दलो इन्साफ़, जूदो सख़ा, ईसार व कुरबानी, मेहमान नवाज़ी, अ़दमे तशद्दुद, शुजाअ़त, ईफ़ाए अ़ह्द, हुस्ने मुआ़मला, सब्र व क़नाअ़त, नर्म गुफ़्तारी, ख़ुशरूई, मिलन सारी, मसावात, ग़म ख़्वारी, सादगी व बे तकल्लुफ़ी, तवाज़ोअ़ व इन्किसारी, ह़यादारी की इतनी बुलन्द मन्ज़िलों पर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ाइज़ व सरफ़राज़ हैं कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने एक जुम्ले में इस की सह़ीह़ तस्वीर खींचते हुए इरशाद फ़रमाया कि "كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنَ" या'नी ता'लीमाते कुरआन पर पूरा पूरा अ़मल येही आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ थे।[1]

अख़्लाक़े नुबुव्वत का एक मुफ़स्सल वा'ज़ हम ने अपनी किताब "ह़क़्क़ानी तक़रीरें" में तह़रीर कर दिया है यहां भी हम अख़्लाक़े नुबुव्वत के "शजरतुल ख़ुल्द" की चन्द शाख़ों के कुछ फूल फल पेश कर देते हैं ताकि हम और आप इन पर अ़मल कर के अपनी इस्लामी ज़िन्दगी को कामिल व अक्मल बना कर आ़लमे इस्लाम में मुकम्मल मुसलमान बन जाएं और दारुल अ़मल से दारुल जज़ा तक ख़ुदा वन्द عَزَّ وَجَلَّ के शामियानए रह़मत में इस के आ'ला व अफ़्ज़ल इन्आ़मों के मीठे मीठे फल खाते रहें।

و اللّٰه تعالٰی هو الموفق و المعين

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़क़्ल

चूंकि तमाम इल्मी व अ़मली और अख़्लाक़ी कमालात का दारो मदार अ़क़्ल ही पर है इस लिये **हुज़ूर** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अ़क़्ल के बारे में भी कुछ तह़रीर कर देना इनतिहाई ज़रूरी है। चुनान्चे इस सिलिसले में हम यहां सिर्फ़ एक ह़वाला तह़रीर करते हैं :

---

1 ......دلائل النبوة للبیهقی، باب ذکراخبارروِیت فی شمائله...الخ، ج۱، ص۳۰۹

वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि मैं ने इकहत्तर (71) किताबों में येह पढ़ा है कि जब से दुन्या आ़लमे वुजूद में आई है उस वक़्त से क़ियामत तक के तमाम इन्सानों की अ़क़्लों का अगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़क़्ल शरीफ़ से मुवाज़ना किया जाए तो तमाम इन्सानों की अ़क़्लों को हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अ़क़्ल शरीफ़ से वोही निस्बत होगी जो एक रैत के ज़र्रे को तमाम दुन्या के रेगिस्तानों से निस्बत है। या'नी तमाम इन्सानों की अ़क़्लें एक रैत के ज़र्रे के बराबर हैं और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़क़्ल शरीफ़ तमाम दुन्या के रेगिस्तानों के बराबर है। इस ह़दीस को अबू नुऐ़म मुह़द्दिस ने ह़िल्या में रिवायत किया और मुह़द्दिस इब्ने अ़साकिर ने भी इस को रिवायत किया है।[1]

(زرقانی ج۴ص۲۵۰وشفاءشریف ج۱ص۴۲)

ह़िल्म व अ़फ़्व

हज़रते ज़ैद बिन सअ़ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ जो पहले एक यहूदी आ़लिम थे उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से खजूरें ख़रीदी थीं। खजूरें देने की मुद्दत में अभी एक दो दिन बाक़ी थे कि उन्हों ने भरे मज्मअ़ में हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इनतिहाई तल्ख़ व तुर्श लहजे में सख़्ती के साथ तक़ाज़ा किया और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दामन और चादर पकड़ कर निहायत तुन्द व तेज़ नज़रों से आप की त़रफ़ देखा और चिल्ला चिल्ला कर येह कहा कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) तुम सब अ़ब्दुल मुत्त़लिब की अवलाद का येही त़रीक़ा है कि तुम लोग हमेशा लोगों के हुक़ूक़ अदा करने में देर लगाया करते हो और टाल मटोल करना तुम लोगों की आ़दत बन चुकी है। येह मंज़र देख कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ आपे से बाहर हो गए और निहायत ग़ज़बनाक और ज़हरीली नज़रों से घूर घूर कर कहा कि ऐ ख़ुदा के दुश्मन ! तू ख़ुदा के रसूल से

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل واما وفور عقله،ج١،ص ٦٧

ऐसी गुस्ताख़ी कर रहा है ? ख़ुदा की क़सम ! अगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का अदब मानेअ़ न होता तो मैं अभी अभी अपनी तलवार से तेरा सर उड़ा देता। येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हें तो येह चाहिये था कि मुझ को अदाए ह़क़ की तरग़ीब दे कर और इस को नर्मी के साथ तक़ाज़ा करने की हिदायत कर के हम दोनों की मदद करते। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस को इस के ह़क़ के बराबर खजूरें दे दो, और कुछ ज़ियादा भी दे दो। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जब ह़क़ से ज़ियादा खजूरें दीं तो ह़ज़रते ज़ैद बिन सअ़ना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि ऐ उ़मर ! मेरे ह़क़ से ज़ियादा क्यूं दे रहे हो ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि चूंकि मैं ने टेढ़ी तिरछी नज़रों से देख कर तुम को ख़ौफ़ज़दा कर दिया था इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हारी दिलजूई व दिलदारी के लिये तुम्हारे ह़क़ से कुछ ज़ियादा देने का मुझे हुक्म दिया है। येह सुन कर ह़ज़रते ज़ैद बिन सअ़ना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि ऐ उ़मर ! क्या तुम मुझे पहचानते हो, मैं ज़ैद बिन सअ़ना हूं ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि तुम वोही ज़ैद बिन सअ़ना हो जो यहूदियों का बहुत बड़ा आ़लिम है। उन्हों ने कहा जी हां। येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि फिर तुम ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ऐसी गुस्ताख़ी क्यूं की ? ह़ज़रते ज़ैद बिन सअ़ना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जवाब दिया कि ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ दर अस्ल बात येह है कि मैं ने तौरात में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान की जितनी निशानियां पढ़ी थीं उन सब को मैं ने इन की ज़ात में देख लिया मगर दो निशानियों के बारे में मुझे इन का इमतिह़ान करना बाक़ी रह गया था। एक येह कि इन का ह़िल्म जह्ल पर ग़ालिब रहेगा और जिस क़दर ज़ियादा इन के साथ जह्ल का बरताव किया जाएगा उसी क़दर इन का ह़िल्म बढ़ता

जाएगा। चुनान्चे मैं ने इस तरकीब से इन दोनों निशानियों को भी इन में देख लिया और मैं शहादत देता हूं कि यक़ीनन येह नबिय्ये बरह़क़ हैं और ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मैं बहुत ही मालदार आदमी हूं मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने अपना आधा माल **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर सदक़ा कर दिया फिर येह बारगाहे रिसालत में आए और कलिमा पढ़ कर दामने इस्लाम में आ गए।[1] (دلائل النبوۃ ج۱ص۲۳وزرقانی ج۴ص۲۵۳)

हज़रते जुबैर बिन मुत़इम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि जंगे हुनैन से वापसी पर देहाती लोग आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से चिमट गए और आप से माल का सुवाल करने लगे, यहां तक आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को चिमटे कि आप पीछे हटते हटते एक बबूल के दरख़्त के पास ठहर गए। इतने में एक बदवी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की चादरे मुबारक उचक कर ले भागा फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग मेरी चादर तो मुझे दे दो अगर मेरे पास इन झाड़ियों के बराबर चौपाए होते तो मैं उन सब को तुम्हारे दरमियान तक़्सीम कर देता, तुम लोग मुझे न बख़ील पाओगे न झूटा न बुज़दिल।[2] (بخاری ج۱ص۴۴۶)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह चल रहा था और आप एक नजरानी चादर ओढ़े हुए थे जिस के कनारे मोटे और खुरदरे थे। एक दम एक बदवी ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को पकड़ लिया और इतने ज़बर दस्त झटके से चादर मुबारक को उस ने खींचा कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नर्मो

---

1 ......دلائل النبوۃ للبیہقی، باب استبراء زید بن سعنۃ...الخ، ج۱، ص۲۷۸

2 ......صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب ماکان النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، الحدیث: ۳۱۴۸، ج۲، ص ۳۵۹

नाज़ुक गरदन पर चादर की कनार से ख़राश आ गई फिर उस बदवी ने येह कहा कि **अल्लाह** का जो माल आप के पास है आप हुक्म दीजिये कि उस में से मुझे कुछ मिल जाए। **हुज़ूर** रहमते आलम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब उस बदवी की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई तो कमाले हिल्म व अ़फ़्व से उस की त़रफ़ देख कर हंस पड़े और फिर उस को कुछ माल अ़त़ा फ़रमाने का हुक्म सादिर फ़रमाया।[1] (بخاری ج اص ۴۴۶ باب ما کان یعطی النبی المولفۃ)

जंगे उहुद में उ़त्बा बिन अबी वक़्क़ास ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दन्दाने मुबारक को शहीद कर दिया और अ़ब्दुल्लाह बिन क़मीआ ने चेहरए अन्वर को ज़ख़्मी और ख़ून आलूद कर दिया मगर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों के लिये इस के सिवा कुछ भी न फ़रमाया कि اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِىْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी क़ौम को हिदायत दे क्यूं कि येह लोग मुझे जानते नहीं।[2]

ख़ैबर में ज़ैनब नामी यहूदी औरत ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़हर दिया मगर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से कोई इनतिक़ाम नहीं लिया, लुबैद बिन आ'सम ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर जादू किया और ब ज़रीअ़ए वह़्य इस का सारा ह़ाल मा'लूम हुवा मगर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से कुछ मुवाख़ज़ा नहीं फ़रमाया, ग़ौरस बिन अल ह़ारिस ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़त्ल के इरादे से आप की तलवार ले कर नियाम से खींच ली, जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नींद से बेदार हुए तो ग़ौरस कहने लगा कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) अब कौन है जो आप को मुझ से बचा लेगा ? आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह**।"

---

1 ......صحيح البخاري، كتاب فرض الخمس، باب ما كان النبي صلى الله عليه وسلم...الخ الحديث:٣١٤٩، ج٢، ص ٣٥٩

2 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى، فصل واما الحلم...الخ، ج١، ص ١٠٥

नुबुव्वत की हैबत से तलवार उस के हाथ से गिर पड़ी और हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तलवार हाथ में ले कर फ़रमाया कि बोल ! अब तुझ को मेरे हाथ से कौन बचाने वाला है ? ग़ौरस गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि आप ही मेरी जान बचा दें, रह़मते आ़लम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को छोड़ दिया और मुआ़फ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे ग़ौरस अपनी क़ौम में आ कर कहने लगा कि ऐ लोगो ! मैं ऐसे शख़्स के पास से आया हूं जो तमाम दुन्या के इन्सानों में सब से बेहतर है।[1] (شفا قاضی عیاض جلد۱ص ۶۲)

कुफ़्फ़ारे मक्का ने वोह कौन सा ऐसा ज़ालिमाना बरताव था जो आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ न किया हो मगर फ़त्ह़े मक्का के दिन जब येह सब जब्बाराने कुरैश, अन्सार व मुहाजिरीन के लश्करों के मुह़ासरे में मह़सूर व मजबूर हो कर ह़रमे का'बा में ख़ौफ़ व दहशत से कांप रहे थे और इनतिक़ाम के डर से उन के जिस्म का एक एक बाल लरज़ रहा था। रसूले रह़मत صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन मुजरिमों और पापियों को येह फ़रमा कर छोड़ दिया और मुआ़फ़ फ़रमा दिया कि لَا تَثْرِیْبَ عَلَیْکُمُ الْیَوْمَ فَاذْھَبُوْا اَنْتُمُ الطُّلَقَاءُ आज तुम से कोई मुवाख़ज़ा नहीं है जाओ तुम सब आज़ाद हो।

एक काफ़िर को सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہ تعَالٰی عَنْھُم पकड़ कर लाए कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) इस ने आप के क़त्ल का इरादा किया था वोह शख़्स ख़ौफ़ व दहशत से लरज़ा बर अन्दाम हो गया। रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम कोई ख़ौफ़ न रखो बिल्कुल मत डरो अगर तुम ने मेरे क़त्ल का इरादा किया था तो क्या हुवा ? तुम कभी मेरे ऊपर ग़ालिब नहीं हो सकते थे क्यूं कि ख़ुदा वन्दे तआ़ला ने मेरी ह़िफ़ाज़त का वा'दा फ़रमा लिया है।[2] (شفاء قاضی عیاض جلد۱ص ۶۳ وغیرہ)

---

1 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،فصل واما الحلم...الخ،ج۱،ص ۱۰۶،۱۰۷

2 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ، فصل اما الحلم...الخ ،ج۱،ص۱۰۸

अल ग़रज़ इस तरह के नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हयाते तय्यिबा में हज़ारों वाक़िआत हैं जिन से पता चलता है कि हिल्म व अफ़्व या'नी ईज़ाओं का बरदाश्त करना और मुजरिमों को क़ुदरत के बा वुजूद बिग़ैर इनतिक़ाम के छोड़ देना और मुआफ़ कर देना आप صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की येह आदते करीमा भी आप صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े हसना का वोह अ़ज़ीम शाहकार है जो सारी दुन्या में अदीमुल मिसाल है । हज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि

وَمَا انْتَقَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِنَفْسِهٖ اِلَّا اَنْ تُنْتَهَكَ حُرْمَةُ اللّٰهِ

(شفاء شریف جلد۱ ص۶۱ وغیرہ و بخاری جلد۱ ص۵۰۳)

अपनी ज़ात के लिये कभी भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी से इनतिक़ाम नहीं लिया हां अलबत्ता **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की हराम की हुई चीज़ों का अगर कोई मुर्तकिब होता तो ज़रूर उस से मुवाख़ज़ा फ़रमाते ।

तवाज़ोअ़

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने तवाज़ोअ़ भी सारे आलम से निराली थी, **अल्लाह** तआला ने आप صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इख़्तियार अता फ़रमाया कि ऐ हबीब ! صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अगर आप चाहें तो शाहाना ज़िन्दगी बसर फ़रमाएं और अगर आप صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم चाहें तो एक बन्दे की ज़िन्दगी गुज़ारें, तो आप صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बन्दा बन कर ज़िन्दगी गुज़ारने को पसन्द फ़रमाया । हज़रते इस्राफ़ील عَلَیْهِ السَّلَام ने आप صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की येह तवाज़ोअ़ देख कर फ़रमाया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप की इस तवाज़ोअ़ के सबब से **अल्लाह** तआला ने आप صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह जलीलुल क़द्र

[1]......صحيح البخاری، كتاب المناقب، باب صفة النبی صلى اللّٰه عليه و سلم، الحديث: ٣٥٦٠، ج٢، ص٤٨٩

मर्तबा अ़ता फ़रमाया है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम औलादे आदम में सब से ज़ियादा बुज़ुर्ग और बुलन्द मर्तबा हैं और क़ियामत के दिन सब से पहले आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी क़ब्रे अन्वर से उठाए जाएंगे और मैदाने मह़शर में सब से पहले आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे।[1] (زرقانی جلد۴ص ۲۶۲ وشفاء جلد۱ص ۸۶)

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रावी हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अ़साए मुबारक पर टेक लगाते हुए काशानए नुबुव्वत से बाहर तशरीफ़ लाए तो हम सब सह़ाबा ता'ज़ीम के लिये खड़े हो गए येह देख कर तवाज़ोअ़ के त़ौर पर इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग इस त़रह़ न खड़े रहा करो जिस त़रह़ अ़जमी लोग एक दूसरे की ता'ज़ीम के लिये खड़े रहा करते हैं मैं तो एक बन्दा हूं बन्दों की त़रह़ खाता हूं और बन्दों की त़रह़ बैठता हूं।[2] (شفاء شریف جلد۱ص ۸۶)

ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का बयान है कि हुज़ूर ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कभी कभी अपने पीछे सुवारी पर अपने किसी ख़ादिम को भी बिठा लिया करते थे। तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत है कि जंगे कुरैज़ा के दिन आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी के जानवर की लगाम छाल की रस्सी से बनी हुई थी।[3] (زرقانی جلد۴ص ۲۶۴)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم गुलामों की दा'वत को भी क़बूल फ़रमाते थे। जव की रोटी और पुरानी चरबी खाने की दा'वत दी जाती थी तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى صلى الله عليه وسلم،فصل واماتواضعه،ج١، ص ١٣٠

2 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل و اما تواضعه ، ج ١ ، ص ١٣٠

3 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،الفصل الثاني فيما اكرمه الله تعالى...الخ ،ج٦،ص ٤٥

दा'वत को क़बूल फ़रमाते थे। मिस्कीनों की बीमार पुर्सी फ़रमाते, फुक़रा के साथ हम नशीनी फ़रमाते और अपने सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के दरमियान मिलजुल कर निशस्त फ़रमाते।[1] (شفاء شریف جلد۱ص ۷۷)

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने घरेलू काम ख़ुद अपने दस्ते मुबारक से कर लिया करते थे। अपने ख़ादिमों के साथ बैठ कर खाना तनावुल फ़रमाते थे और घर के कामों में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ख़ादिमों की मदद फ़रमाया करते थे।[2] (شفاء شریف جلد۱ص ۷۷)

एक शख़्स दरबारे रिसालत में हाज़िर हुवा तो जलालते नुबुव्वत की हैबत से एक दम ख़ाइफ़ हो कर लरज़ा बर अन्दाम हो गया और कांपने लगा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम बिल्कुल मत डरो। मैं न कोई बादशाह हूं, न कोई जब्बार हाकिम, मैं तो क़ुरैश की एक औरत का बेटा हूं जो ख़ुश्क गोश्त की बोटियां खाया करती थी।[3]

(زرقانی ج۴ص ۲۷۶وشفاء جلد۱ص ۷۸)

फ़त्हे मक्का के दिन जब फ़ातेहाना शान के साथ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने लश्करों के हुजूम में शहरे मक्का के अन्दर दाख़िल होने लगे तो उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर तवाज़ोअ़ और इन्किसार की ऐसी तजल्ली नुमूदार थी कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ऊंटनी की पीठ पर इस तरह सर झुकाए हुए बैठे थे कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का सरे मुबारक कजावा के अगले हिस्से से लगा हुवा था।[4] (شفاء جلد۱ص ۷۷)

---

1 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ، فصل واما تو اضعہ،ج۱ ، ص ۱۳۱ ملتقطاً

2 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ، فصل واما تو اضعہ،ج۱ ، ص ۱۳۲ ملتقطاً

3 ......المواھب اللدنیةمع شرح الزرقانی ،الفصل الثانی فیما اکرمہ اللّٰہ...الخ ، ج۶، ص ۷۱

4 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ، فصل واما تو اضعہ...الخ ،ج۱، ص۱۳۲

इसी त़रह़ जब हिज्जतुल वदाअ़ में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक लाख शमए़ नुबुव्वत के परवानों के साथ अपनी मुक़द्दस ज़िन्दगी के आख़िरी ह़ज में तशरीफ़ ले गए तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ऊंटनी पर एक पुराना पालान था और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अन्वर पर एक चादर थी जिस की क़ीमत चार दिरहम से ज़ियादा न थी उसी ऊंटनी की पुश्त पर और उसी लिबास में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुदा वन्दे ज़ुल जलाल के नाइबे अकरम और ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم होने की ह़ैसिय्यत से अपना शहनशाही ख़ुत़्बा पढ़ा जिस को एक लाख से ज़ाइद फ़रज़न्दाने तौह़ीद हमातन गोश बन कर सुन रहे थे।[1] (زرقانی جلد۴ص۲۶۸)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि एक मरतबा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'लैने अक़्दस का तस्मा टूट गया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने दस्ते मुबारक से उस को दुरुस्त फ़रमाने लगे। मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मुझे दीजिये मैं इस को दुरुस्त कर दूं, मेरी इस दरख़्वास्त पर इरशाद फ़रमाया कि येह सह़ीह़ है कि तुम इस को ठीक कर दोगे मगर मैं इस को पसन्द नहीं करता कि मैं तुम लोगों पर अपनी बर्तरी और बड़ाई ज़ाहिर करूं, इसी त़रह़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को किसी काम में मश्ग़ूल देख कर बार बार दरख़्वास्त अ़र्ज़ करते कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! आप ख़ुद येह काम न करें इस काम को हम लोग अन्जाम देंगे मगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येही फ़रमाते कि येह सच है कि तुम लोग मेरा सब काम कर दोगे मगर मुझे येह गवारा नहीं है कि मैं तुम लोगों के दरमियान किसी इमतियाज़ी शान के साथ रहूं।[2]

(زرقانی جلد۴ص۲۶۵)

---

1 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی ،الفصل الثانی فیما اکرمہ اللّٰہ...الخ ، ج٦، ص ٥٤

2 ......المواھب اللدنیۃمع شرح الزرقانی ،الفصل الثانی فیما اکرمہ اللّٰہ...الخ ، ج٦، ص ٤٩

हुस्ने मुआ़शरत

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی الله تعالیٰ عنهن अपने अह़बाब, अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم, अपने रिश्तेदारों, अपने पड़ोसियों हर एक के साथ इतनी खुश अख़्लाक़ी और मिलनसारी का बरताव फ़रमाते थे कि उन में से हर एक आप صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़सना का गिरवीदा और मद्दाह़ था, ख़ादिमे ख़ास ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ का बयान है कि मैं ने दस बरस तक सफ़र व वत़न में हुज़ूर صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत का शरफ़ ह़ासिल किया मगर कभी भी हुज़ूर صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने न मुझे डांटा न झिड़का और न कभी येह फ़रमाया कि तूने फ़ुलां काम क्यूं किया और फ़ुलां काम क्यूं नहीं किया ?[1] (زرقانی جلد۴ص ۲۶۶)

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا कहती हैं कि हुज़ूर صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा कोई खुश अख़्लाक़ नहीं था । आप صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم या आप صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के घर वालों में से जो कोई भी आप صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को पुकारता तो आप लब्बैक कह कर जवाब देते । ह़ज़रते जरीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ इरशाद फ़रमाते हैं कि मैं जब से मुसलमान हुवा कभी भी हुज़ूर صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे पास आने से नहीं रोका और जिस वक़्त भी मुझे देखते तो मुस्कुरा देते और आप صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم से खुश त़बई भी फ़रमाते और सब के साथ मिलजुल कर रहते और हर एक से गुफ़्तगू फ़रमाते और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم के बच्चों से भी खुश त़बई फ़रमाते और उन बच्चों को अपनी मुक़द्दस गोद में बिठा लेते और आज़ाद नीज़ लौंडी गुलाम और मिस्कीन सब की दा'वतें क़बूल फ़रमाते और मदीने के इनतिहाई ह़िस्से

---

1 ......المواهب اللدنيةمع شرح الزرقاني،الفصل الثاني فيما اكرمه الله...الخ، ج٦، ص ٤٢، ٤٣

में रहने वाले मरीज़ों की बीमार पुर्सी के लिये तशरीफ़ ले जाते और उ़ज़्र पेश करने वालों के उ़ज़्र को क़बूल फ़रमाते ।[1] (شفاء شریف جلد ا ص ۷۱)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रावी हैं कि अगर कोई शख़्स हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कान में कोई सरगोशी की बात करता तो आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त तक अपना सर उस के मुंह से अलग न फ़रमाते जब तक वोह कान में कुछ कहता रहता और आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की मजलिस में कभी पाउं फैला कर नहीं बैठते थे और जो आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने आता आप सलाम करने में पहल करते और मुलाक़ातियों से मुसाफ़ह़ा फ़रमाते और अकसर अवक़ात अपने पास आने वाले मुलाक़ातियों के लिये आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी चादर मुबारक बिछा देते और अपनी मस्नद भी पेश कर देते और अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को उन की कुन्यतों और अच्छे नामों से पुकारते कभी किसी बात करने वाले की बात को काटते नहीं थे । हर शख़्स से ख़ुशरूई के साथ मुस्कुरा कर मुलाक़ात फ़रमाते, मदीने के ख़ुद्दाम और नोकर चाकर बरतनों में सुब्ह़ को पानी ले कर आते ताकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उन के बरतनों में दस्ते मुबारक डबों दें और पानी मुतबर्रक हो जाए तो सख़्त जाड़े के मौसिम में भी सुब्ह़ को हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर एक के बरतन में अपना मुक़द्दस हाथ डाल दिया करते थे और जाड़े की सर्दी के बा वुजूद किसी को मह़रूम नहीं फ़रमाते थे ।[2] (شفاء شریف جلد ا ص ۷۲)

---

1 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ، فصل و اما حسن عشرته، ج۱ ، ص ۱۲۱

2 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ،فصل و اما حسن عشرته، ج۱ ،ص ۱۲۱، ۱۲۲ ملتقطاً

हज़रते अम्र बिन साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने कहा कि मैं एक मरतबा हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर था तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रज़ाई बाप या'नी हज़रते बीबी हलीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के शोहर तशरीफ़ लाए तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने कपड़े का एक हिस्सा उन के लिये बिछा दिया और वोह उस पर बैठ गए फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रज़ाई मां हज़रते बीबी हलीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا तशरीफ़ लाईं तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने कपड़े का बाक़ी हिस्सा उन के लिये बिछा दिया फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रज़ाई भाई आए तो आप ने उन को अपने सामने बिठा लिया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सुवैबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के पास हमेशा कपड़ा वग़ैरा भेजते रहते थे येह अबू लहब की लौंडी थीं और चन्द दिनों तक हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इन्हों ने भी दूध पिलाया था।[1] (شفاء شریف ج۱ص۷۵)

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने लिये कोई मख़्सूस बिस्तर नहीं रखते थे बल्कि हमेशा अज़्वाजे मुतह्हरात के बिस्तरों ही पर आराम फ़रमाते थे और अपने प्यार व महब्बत से हमेशा अपनी मुक़द्दस बीवियों رضی اللہ تعالیٰ عنھن को ख़ुश रखते थे। हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाती हैं कि मैं प्याले में पानी पी कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जब प्याला देती तो आप प्याले में उसी जगह अपना लब मुबारक लगा कर पानी नोश फ़रमाते जहां मेरे होंट लगे होते और मैं गोश्त से भरी कोई हड्डी अपने दांतों से नोच कर वोह हड्डी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देती तो आप भी उसी जगह से गोश्त को अपने दांतों से नोच कर तनावुल फ़रमाते जिस जगह मेरा मुंह लगा होता।[2] (زُرقانی جلد۴ص۲۶۹)

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل واما خلقه ، ج ١ ، ص ١٢٨، ١٢٩

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،الفصل الثاني فيما اكرمه الله...الخ، ج٦،ص٥٥،٥٦ملتقطاً

आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़ाना अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن से मुलाक़ात फ़रमाते और अपनी साहिब ज़ादियों के घरों पर भी रौनक़ अफ़रोज़ हो कर उन की ख़बर गीरी फ़रमाते और अपने नवासों और नवासियों को भी अपने प्यार व शफ़्क़त से बार बार नवाज़ते और सब की दिलजूई व रवादारी फ़रमाते और बच्चों से भी गुफ़्तगू फ़रमा कर उन की बातचीत से अपना दिल ख़ुश करते और उन का भी दिल बहलाते अपने पड़ोसियों की भी ख़बर गीरी और उन के साथ इनतिहाई करीमाना और मुशिफ़क़ाना बरताव फ़रमाते अल ग़रज़ आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने त़र्ज़े अ़मल और अपनी सीरते मुक़द्दसा से ऐसे इस्लामी मुआ़शरे की तश्कील फ़रमाई कि अगर आज दुन्या आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका पर अ़मल करने लगे तो तमाम दुन्या में अम्नो सुकून और मह़ब्बत व रह़मत का दरिया बहने लगे और सारे आ़लम से जिदाल व क़िताल और निफ़ाक़ व शिक़ाक़ का जहन्नम बुझ जाए और आ़लमे काएनात अम्न व राह़त और प्यार व मह़ब्बत की बिहिश्त बन जाए।

ह़या

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की "ह़या" के बारे में ह़ज़रते ह़क़ جَلَّ جَلَالُہٗ का क़ुरआन में येह फ़रमान सब से बड़ा गवाह है कि

اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِی النَّبِیَّ فَیَسْتَحْیٖ مِنْكُمْ٘(1)

बेशक तुम्हारी येह बात नबी को ईज़ा पहुंचाती है लेकिन वोह तुम लोगों से ह़या करते हैं (और तुम को कुछ कह नहीं सकते)

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने ह़या की तस्वीर खींचते हुए एक मुअ़ज़्ज़ज़ सह़ाबी ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया

---

1 ......پ۲۲،الاحزاب:۵۳

कि ''आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कंवारी पर्दा नशीन औ़रत से भी कहीं ज़ियादा ह़यादार थे ।''[1] (زرقانی جلد۴ص۲۸۴و بخاری جلد۱ص۵۰۳باب صفۃ النبی)

इस लिये हर क़बीह़ क़ौल व फ़े'ल और क़ाबिले मज़म्मत ह़रकात व सकनात से उ़म्र भर हमेशा आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दामने इ़स्मत पाक व साफ़ ही रहा और पूरी ह़याते मुबारका में वक़ार व मुरुव्वत के ख़िलाफ़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कोई अ़मल सरज़द नहीं हुवा । ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم न फ़ोह़्श कलाम थे न बेहूदा गो न बाज़ारों में शोर मचाने वाले थे । बुराई का बदला बुराई से नहीं दिया करते थे बल्कि मुआ़फ़ फ़रमा दिया करते थे । आप येह भी फ़रमाया करती थीं कि कमाले ह़या की वजह से मैं ने कभी भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बरहना नहीं देखा ।[2] (شفاء شریف جلد۱ص۷۹)

वा'दे की पाबन्दी

ईफ़ाए अ़हद और वा'दे की पाबन्दी भी दरख़्ते अख़्लाक़ की एक बहुत ही अहम और निहायत ही हरी भरी शाख़ है । इस ख़ुसूसिय्यत में भी रसूले अ़रबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़े अ़ज़ीम बे मिसाल ही है । ह़ज़रते अबुल ह़म्सा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं कि ए'लाने नुबुव्वत से पहले मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ सामान ख़रीदा इसी सिल्सिले में आप की कुछ रक़म मेरे ज़िम्मे बाक़ी रह गई मैं ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा कि आप यहीं ठहरिये मैं अभी अभी घर से रक़म ला कर इसी जगह पर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देता हूं । हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसी जगह ठहरे रहने का वा'दा फ़रमा लिया मगर मैं घर आ कर अपना

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب،باب صفۃ النبی صلی اللّٰہ علیہ و سلم،الحدیث:۳۵۶۲، ج۲،ص۴۹۰

2 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ، فصل واما الحیاء ، ج۱، ص ۱۱۹ ملتقطاً

वा'दा भूल गया फिर तीन दिन के बा'द मुझे जब ख़याल आया तो रक़म ले कर उस जगह पर पहुंचा तो क्या देखता हूं कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उसी जगह ठहरे हुए मेरा इनतिज़ार फ़रमा रहे हैं। मुझे देख कर ज़रा भी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पेशानी पर बल नहीं आया और इस के सिवा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने और कुछ नहीं फ़रमाया कि ऐ नौ जवान ! तुम ने तो मुझे मशक़्क़त में डाल दिया क्यूं कि मैं अपने वा'दे के मुताबिक़ तीन दिन से यहां तुम्हारा इनतिज़ार कर रहा हूं।(1) (شفاء شریف ص ۷۴)

अद्ल

खुदा عَزَّوَجَلَّ के मुक़द्दस रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम जहान में सब से ज़ियादा अमीन सब से बढ़ कर आ़दिल और पाक दामन व रास्त बाज़ थे। येह वोह रौशन ह़क़ीक़त है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बड़े बड़े दुश्मनों ने भी इस का ए'तिराफ़ किया। चुनान्चे ए'लाने नुबुव्वत से क़ब्ल तमाम अहले मक्का आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को "सादिक़ुल वा'द" और "अमीन" के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से याद करते थे। ह़ज़रते रबीअ़ बिन ख़ुसीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मक्का वालों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ था कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आ'ला दरजे के अमीन और आ़दिल हैं इसी लिये ए'लाने नुबुव्वत से पहले अहले मक्का अपने मुक़द्दमात और झगड़ों का आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से फ़ैसला कराया करते थे और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम फ़ैसलों को इनतिहाई एह़तिराम के साथ बिला चूनो चरा तस्लीम कर लेते थे और कहा करते थे कि येह अमीन का फ़ैसला है।(2) (شفاء شریف جلد ۱ ص ۷۸، ۷۹)

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل واما خلقه...الخ، ج ١، ص ١٢٦

2 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل واما عدله، ج ١ ، ص ١٣٤ ملتقطاً

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم किस क़दर बुलन्द मर्तबा आ़दिल थे इस बारे में बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत सब से बढ़ कर शाहिदे अ़द्ल है। क़बीलए क़ुरैश के ख़ानदान बनी मख़्ज़ूम की एक औ़रत ने चोरी की, इस्लाम में चोर की येह सज़ा है कि उस का दायां हाथ पहुंचों से काट डाला जाए। क़बीलए क़ुरैश को इस वाक़िए से बड़ी फ़िक्र दामन गीर हो गई कि अगर हमारे क़बीले की इस औ़रत का हाथ काट डाला गया तो येह हमारी ख़ानदानी शराफ़त पर ऐसा बदनुमा दाग़ होगा जो कभी मिट न सकेगा और हम लोग तमाम अ़रब की निगाहों में ज़लीलो ख़्वार हो जाएंगे इस लिये उन लोगों ने येह तै किया कि बारगाहे रिसालत में कोई ज़बर दस्त सिफ़ारिश पेश कर दी जाए ताकि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस औ़रत का हाथ न काटें। चुनान्चे उन लोगों ने ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को जो निगाहे नुबुव्वत में इनतिहाई मह़बूब थे दबाव डाल कर इस बात के लिये आमादा कर लिया कि वोह दरबारे अक़्दस में सिफ़ारिश पेश करें। ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने अशराफ़े क़ुरैश के इस्रार से मुतअस्सिर हो कर बारगाहे रिसालत में सिफ़ारिश अ़र्ज़ कर दी येह सुन कर पेशानिये नुबुव्वत पर जलाल के आसार नुमूदार हो गए और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने निहायत ही ग़ज़ब नाक लहजे में फ़रमाया कि اَتَشْفَعُ فِیْ حَدٍّ مِنْ حُدُوْدِ اللّٰہِ कि ऐ उसामा ! तू **अल्लाह** तआ़ला की मुक़र्रर की हुई सज़ाओं में से एक सज़ा के बारे में सिफ़ारिश करता है ? फिर इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर एक ख़ुत़्बा दिया और उस ख़ुत़्बे में येह इरशाद फ़रमाया कि

یَا اَیُّھَا النَّاسُ اِنَّمَا ضَلَّ مَنْ قَبْلَکُمْ اَنَّھُمْ کَانُوْا اِذَا سَرَقَ الشَّرِیْفُ تَرَکُوْہُ وَاِذَا سَرَقَ الضَّعِیْفُ فِیْھِمْ اَقَامُوْا عَلَیْہِ الْحَدَّ وَاَیْمُ اللّٰہِ لَوْ اَنَّ فَاطِمَۃَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعَ مُحَمَّدٌ یَدَھَا[1]

(بخاری جلد۲ص۱۰۰۳باب کراہیۃ الشفاعت فی الحدود)

[1] ......صحیح البخاری، کتاب الحدود، باب کراھیۃ الشفاعۃ...الخ، الحدیث:٦٧٨٨، ج٤، ص٣٣٢

ऐ लोगो ! तुम से पहले के लोग इस वजह से गुमराह हो गए कि जब उन में कोई शरीफ़ चोरी करता था तो उस को छोड़ देते थे और जब कोई कमज़ोर आदमी चोरी करता तो उस पर सज़ाएं क़ाइम करते थे ख़ुदा की क़सम ! अगर मुह़म्मद की बेटी फ़ाति़मा भी चोरी करेगी तो यक़ीनन मुह़म्मद उस का हाथ काट लेगा । (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)

वक़ार

ह़ज़रते ख़ारिजा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी मजलिसों में जिस क़दर वक़ार के साथ रौनक़ अफ़्रोज़ रहते थे बड़े से बड़े बादशाहों के दरबार में भी इस की मिसाल नहीं मिल सकती । ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस ह़िल्म व ह़या और ख़ैर व अमानत की मजलिस हुवा करती थी । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस में कभी कोई बुलन्द आवाज़ से गुफ़्तगू नहीं कर सकता था और जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कलाम फ़रमाते थे तो तमाम अहले मजलिस इस त़रह़ सर झुकाए हुए हमातन गोश बन कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का कलाम सुनते थे कि गोया उन के सरों पर चिड़ियां बैठी हुई हैं । ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इरशाद फ़रमाती हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم निहायत ही वक़ार के साथ इस त़रह़ ठहर ठहर कर गुफ़्तगू फ़रमाते थे कि अगर कोई शख़्स आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जुम्लों को गिनना चाहता तो वोह गिन सकता था ।[1] (شفاء شریف جلد۱ص۸۰،۸۱ و بخاری جلد۱ص۵۰۳)

---

1 ...... الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،فصل واما وقارہ،ج۱،ص۱۳۷۔۱۳۹ ملتقطاً
و صحیح البخاری ، کتاب المناقب ، باب صفۃ النبی صلی اللّٰہ علیہ و سلم، الحدیث ۳۵٦۷، ج۲ ، ص ٤۹۱

आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم की निशस्त व बरख़ास्त, वक़ार व गुफ़्तार, हर अदा में एक ख़ालिस पैग़म्बराना वक़ार पाया जाता था जिस से आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم की अज़्मते नुबुव्वत का जाहो जलाल आफ़्ताबे आ़लमे ताब की त़रह़ हर ख़ासो आ़म की नज़्रों में नुमूदार रहता था।

ज़ाहिदाना ज़िन्दगी

आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم शहनशाहे कौनैन और ताजदारे दो आ़लम होते हुए ऐसी ज़ाहिदाना और सादा ज़िन्दगी बसर फ़रमाते थे कि तारीख़े नुबुव्वत में इस की मिसाल नहीं मिल सकती, ख़ूराक व पोशाक, मकान व सामान, रहन सहन ग़रज़ ह़याते मुबारका के हर गोशे में आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم का ज़ोहद और दुन्या से बे रग़बती का आ़लम इस दरजे नुमायां था कि जिस को देख कर येही कहा जा सकता है कि दुन्या की ने'मतें और लज़्ज़तें आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم की निगाहे नुबुव्वत में एक मच्छर के पर से भी ज़ियादा ज़लील व ह़क़ीर हैं।

ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बयान है कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़िन्दगी में कभी तीन दिन लगातार ऐसे नहीं गुज़रे कि आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने शिकम सैर हो कर रोटी खाई हो एक एक महीने तक काशानए नुबुव्वत में चूल्हा नहीं जलता था और खजूर व पानी के सिवा आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم के घर वालों की कोई दूसरी ख़ूराक नहीं हुवा करती थी। ह़ालां कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم अगर आप चाहें तो मैं मक्का की पहाड़ियों को सोना बना दूं और वोह आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم के साथ साथ चलती रहें और आप उन को जिस त़रह़ चाहें ख़र्च करते रहें मगर आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने इस को पसन्द नहीं किया और बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّ وَجَلَّ में अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब ! عَزَّ وَجَلَّ मुझे येही ज़ियादा मह़बूब है कि मैं एक दिन भूका रहूं और एक दिन खाना

खाऊं ताकि भूक के दिन ख़ूब गिड़गिड़ा कर तुझ से दुआ़एं मांगूं और आसूदगी के दिन तेरी ह़म्द करूं और तेरा शुक्र बजा लाऊं।

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बताया कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जिस बिस्तर पर सोते थे वोह चमड़े का गद्दा था जिस में रूई की जगह दरख़्तों की छाल भरी हुई थी।

ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कहती हैं कि मेरी बारी के दिन **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक मोटे टाट पर सोया करते थे जिस को मैं दो तेह कर के बिछा दिया करती थी। एक मरतबा मैं ने उस टाट को चार तेह कर के बिछा दिया तो सुब्ह़ को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि पहले की त़रह़ इस टाट को तुम दोहरा कर के बिछा दिया करो क्यूं कि मुझे अन्देशा है कि इस बिस्तर की नर्मी से कहीं मुझ पर गहरी नींद का ह़म्ला हो जाए तो मेरी नमाज़े तहज्जुद में ख़लल पैदा हो जाएगा। रिवायत है कि कभी कभी **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक ऐसी चारपाई पर भी आराम फ़रमाया करते थे जो खुरदरे बान से बनी हुई थी। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बिग़ैर बिछोने के उस चारपाई पर लेटते थे तो जिस्मे नाज़ुक पर बान के निशान पड़ जाया करते थे।[1] (شفاء شریف جلد۱ص۸۲،۸۳وغیرہ)

शुजाअ़त

हुज़ूर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बे मिसाल शुजाअ़त का येह आ़लम था कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसे बहादुर सह़ाबी का येह क़ौल है कि जब लड़ाई ख़ूब गर्म हो जाती थी और जंग की शिद्दत देख कर बड़े बड़े बहादुरों की आंखें पथरा कर सुर्ख़ पड़ जाया करती थीं उस वक़्त में हम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू में खड़े हो कर अपना बचाव करते थे। और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हम सब लोगों

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل واما زهده،ج١، ص ١٤٠ ـ ١٤٢ ملتقطاً

से ज़ियादा आगे बढ़ कर और दुश्मनों के बिल्कुल क़रीब पहुंच कर जंग फ़रमाते थे। और हम लोगों में सब से ज़ियादा बहादुर वोह शख़्स शुमार किया जाता था जो जंग में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم के क़रीब रह कर दुश्मनों से लड़ता था।[1]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाया करते थे कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा बहादुर और त़ाक़त वर, सख़ी और पसन्दीदा मेरी आंखों ने कभी किसी को नहीं देखा।

हज़रते बरा बिन आ़ज़िब और दूसरे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُم ने बयान फ़रमाया है कि जंगे हुनैन में बारह हज़ार मुसलमानों का लश्कर कुफ़्फ़ार के ह़म्लों की ताब न ला कर भाग गया था और कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से लगातार तीरों का मींह बरस रहा था उस वक़्त में भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم एक क़दम भी पीछे नहीं हटे बल्कि एक सफ़ेद ख़च्चर पर सुवार थे और ह़ज़रते अबू सुफ़्यान बिन अल ह़ारिस رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم के ख़च्चर की लगाम पकड़े हुए थे और आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم अकेले दुश्मनों के दल बादल लश्करों के हुजूम की त़रफ़ बढ़ते चले जा रहे थे। और रज्ज़ के येह कलिमात ज़बाने अक़्दस पर जारी थे कि

اَنَا النَّبِیُّ لَا کَذِبُ   اَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبُ (2)

मैं नबी हूं येह झूट नहीं है   मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूं।

(بخاری جلد۲ص ۶۱۷ باب قول اللہ و یوم حنین وزرقانی جلد۴ص ۲۹۳)

---

1 ...... الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،فصل و اما شجاعته،ج ۱،ص ۱۱٦ ملخصاً

2 ......صحیح البخاری،کتاب المغازی،باب قول اللّٰه تعالٰی:ویوم حنین...الخ،الحدیث: ٤٣١٥، ٤٣١٧،ج٣،ص ١١٠

والمواهب اللدنیة وشرح الزرقانی،الفصل الثانی فیما اکرمه اللّٰه...الخ،ج٦،ص ١٠١ ملخصاً

ताक़त

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जिस्मानी ताक़त भी हद्दे ए'जाज़ को पहुंची हुई थी और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी इस मो'जिज़ाना ताक़त व कुव्वत से ऐसे ऐसे मुहय्युरुल उ़क़ूल कारनामों और कमालात का मुज़ाहरा फ़रमाया कि अ़क़्ले इन्सानी इस के तसव्वुर से हैरान रह जाती है। ग़ज़्वए अहज़ाब के मौक़अ़ पर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم जब ख़न्दक़ खोद रहे थे एक ऐसी चट्टान ज़ाहिर हो गई जो किसी तरह किसी शख़्स से भी नहीं टूट सकी मगर जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ताक़ते नुबुव्वत से उस पर फावड़ा मारा तो वोह रैत के भुरभुरे टीले की तरह बिखर कर पाश पाश हो गई जिस का मुफ़स्सल तज़किरा जंगे ख़न्दक़ में हम तहरीर कर चुके हैं।[1]

रकाना पहलवान से कुश्ती

अ़रब का मशहूर पहलवान रकाना आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने से गुज़रा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को इस्लाम की दा'वत दी वोह कहने लगा कि ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! अगर आप मुझ से कुश्ती लड़ कर मुझे पछाड़ दें तो मैं आप की दा'वते इस्लाम को क़बूल कर लूंगा। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तय्यार हो गए और उस से कुश्ती लड़ कर उस को पछाड़ दिया, फिर उस ने दोबारा कुश्ती लड़ने की दा'वत दी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी मरतबा भी अपनी पैग़म्बराना ताक़त से उस को इस ज़ोर के साथ ज़मीन पर पटक दिया कि वोह देर तक उठ न सका और हैरान हो कर कहने लगा कि ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! ख़ुदा की क़सम ! आप की अ़जीब शान है कि आज तक अ़रब का कोई पहलवान मेरी पीठ ज़मीन पर नहीं लगा सका मगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दम ज़दन में मुझे दो मरतबा ज़मीन पर पछाड़ दिया। बा'ज़ मुअर्रिख़ीन का क़ौल है कि रकाना फ़ौरन ही मुसलमान

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب غزوۃ الخندق...الخ،الحدیث:٤١٠١،ج٣،ص٥١

हो गया मगर बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने लिखा है कि रकाना ने फ़त्हे मक्का के दिन इस्लाम क़बूल किया। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعلم [1] (زرقانی جلد۴ص ۲۹۱)

यज़ीद बिन रकाना से मुक़ाबला

इसी रकाना का बेटा यज़ीद बिन रकाना भी माना हुवा पहलवान था येह तीन सो बकरियां ले कर बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुवा और कहा कि ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप मुझ से कुश्ती लड़िये। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर मैं ने तुम्हें पछाड़ दिया तो तुम कितनी बकरियां मुझे इन्आ़म में दोगे ? उस ने कहा कि एक सो बकरियां मैं आप को दे दूंगा। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तय्यार हो गए और उस से हाथ मिलाते ही उस को ज़मीन पर पटक दिया और वोह हैरत से आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मुंह तकने लगा और वा'दे के मुताबिक़ एक सो बकरियां उस ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को दे दीं। मगर फिर दोबारा उस ने कुश्ती लड़ने के लिये चेलेन्ज दिया आप ने दूसरी मरतबा भी उस की पीठ ज़मीन पर लगा दी उस ने फिर एक सो बकरियां आप को दे दीं। फिर तीसरी बार उस ने कुश्ती के लिये ललकारा आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का चेलेन्ज क़बूल फ़रमा लिया और कुश्ती लड़ कर इस ज़ोर के साथ उस को ज़मीन पर दे मारा कि वोह चित हो गया, उस ने बाक़ी एक सो बकरियों को भी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश कर दिया, मगर कहने लगा कि ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! सारा अ़रब गवाह है कि आज तक कोई पहलवान मुझ पर ग़ालिब नहीं आ सका, मगर आप ने तीन बार जिस त़रह़ मुझे कुश्ती में पछाड़ा है इस से मेरा दिल मान गया कि यक़ीनन आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के नबी हैं, येह कहा और कलिमा पढ़ कर दामने इस्लाम में आ गया। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب،الفصل الثانی فیما اکرمہ اللّٰہ...الخ،ج٦،ص ١٠٢،١٠١

उस के मुसलमान हो जाने से बेहद खुश हुए और उस की तीन सो बकरियां वापस कर दीं।[1] (زرقانی جلد۴ص۲۹۲)

अबुल अस्वद से ज़ोर आज़माई

इसी तरह अबुल अस्वद जमही इतना बड़ा ताक़त वर पहलवान था कि वोह एक चमड़े पर बैठ जाता था और दस पहलवान उस चमड़े को खींचते थे ताकि वोह चमड़ा उस के नीचे से निकल जाए मगर वोह चमड़ा फट फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाने के बा वुजूद उस के नीचे से निकल नहीं सकता था। उस ने भी बारगाहे अक़्दस में आ कर येह चेलेन्ज दिया कि अगर आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे कुश्ती में पछाड़ दें तो मैं मुसलमान हो जाऊंगा। **हुज़ूर** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस से कुश्ती लड़ने के लिये खड़े हो गए और उस का हाथ पकड़ते ही उस को ज़मीन पर पछाड़ दिया। वोह आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इस ताक़ते नुबुव्वत से हैरान हो कर फ़ौरन ही मुसलमान हो गया।[2] (زرقانی جلد۴ص۲۹۲)

सख़ावत

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने सख़ावत मोहताजे बयान नहीं। हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْھُمَا का बयान है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम इन्सानों से ज़ियादा बढ़ कर सख़ी थे। खुसूसन माहे रमज़ान में आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ावत इस क़दर बढ़ जाती थी कि बरसने वाली बदलियों को उठाने वाली हवाओं से भी ज़ियादा आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सख़ी हो जाते थे।

हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि **हुज़ूर** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी साइल के जवाब में ख़्वाह वोह कितनी

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،الفصل الثانی فیما اکرمه اللّٰه ...الخ ، ج٦، ص١٠٣

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،الفصل الثانی فیما اکرمه اللّٰه...الخ،ج٦،ص١٠٣،١٠٤

ही बड़ी चीज़ का सुवाल क्यूं न करे आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने "ला" (नहीं) का लफ़्ज़ नहीं फ़रमाया। (شفاء شریف جلد ا ص ٦٥)

येही वोह मज़्मून है जिस को फ़रज़दक़ शाइर ताबेई मुतवफ़्फ़ा सि. 110 हि. ने क्या ख़ूब कहा है कि [1]

مَـا قَـالَ لَا قَطُّ اِلَّا فِیْ تَشَهُّدِهٖ   لَـوْلَا التَّشَهُّـدُ كَـانَتْ لَاؤُهٗ نَعَمٗ

इसी का तर्जमा किसी फ़ारसी के शाइर ने इस त़रह़ किया है कि

نہ گفت لا بزبان مبارکش ہرگز   مگر دراشھد ان لا الہ الا اللّٰہ

या'नी **हुज़ूर** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी साइल के जवाब में "ला" (नहीं) का लफ़्ज़ नहीं फ़रमाया बल्कि हमेशा "नअ़म" (हां) ही कहा मगर कलिमए शहादत में "ला" (नहीं) का लफ़्ज़ ज़रूर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक पर आता था और अगर कलिमए शहादत में "ला" कहने की ज़रूरत न होती तो उस में भी "ला" (नहीं) की जगह आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم "नअ़म" (हां) ही फ़रमाते।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ावत किसी साइल के सुवाल ही पर मह़्दूद व मुन्ह़सर नहीं थी बल्कि बिग़ैर मांगे हुए भी आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को इस क़दर ज़ियादा माल अ़ता फ़रमा दिया कि आ़लमे सख़ावत में इस की मिसाल नादिरो नायाब है। आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बहुत बड़े दुश्मन उमय्या बिन ख़लफ़ काफ़िर का बेटा सफ़्वान बिन उमय्या जब मक़ामे "जिइर्राना" में ह़ाज़िरे दरबार हुवा तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को इतनी कसीर ता'दाद में ऊंटों और बकरियों का रेवड़ अ़ता फ़रमा दिया कि दो पहाड़ियों के दरमियान का

---

1 ...... الشفاء بتعریف حقوق المصطفی، فصل و اما الجود و الکرم...الخ، ج ١، ص ١١١، ١١٢
و المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، الفصل الثانی فیما اکرمه اللّٰه...الخ، ج ٦، ص ١١٣

मैदान भर गया। चुनान्चे सफ़्वान मक्का जा कर चिल्ला चिल्ला कर अपनी क़ौम से कहने लगा कि ऐ लोगो ! दामने इस्लाम में आ जाओ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) इस क़दर ज़ियादा माल अ़ता फ़रमाते हैं कि फ़क़ीरी का कोई अन्देशा ही बाक़ी नहीं रहता इस के बा'द फिर सफ़्वान ख़ुद भी मुसलमान हो गए। رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ [1] (زرقانی ج۴ص۲۹۵)

बहर ह़ाल आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जूदो नवाल और सख़ावत के अह़वाल इस क़दर अ़दीमुल मिसाल और इतने ज़ियादा हैं कि अगर इन का तज़्किरा तह़रीर किया जाए तो बहुत सी किताबों का अम्बार तय्यार हो सकता है मगर इस से पहले के अवराक़ में हम जितना और जिस क़दर लिख चुके हैं वोह सख़ावते नुबुव्वत को समझने के लिये बहुत काफ़ी है। ख़ुदा वन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ हम सब मुसलमानों को **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका पर ज़ियादा से ज़ियादा अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

अस्माए मुबारका

अ़रब का मश्हूर मक़ूला है कि "کَثْرَۃُ الْاَسْمَآءِ تَدُلُّ عَلٰی شَرَفِ الْمُسَمّٰی" या'नी किसी चीज़ के नामों का बहुत ज़ियादा होना इस बात की दलील हुवा करती है कि वोह चीज़ इ़ज़्ज़त व शरफ़ वाली है। **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को चूंकि ख़ल्लाक़े आ़लम جَلَّ جَلَالُہٗ ने इस क़दर ए'ज़ाज़ो इक्राम और इ़ज़्ज़त व शरफ़ से सरफ़राज़ फ़रमाया है कि आप इमामुन्नबिय्यीन, सय्यिदुल मुर्सलीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हैं इस लिये आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्माए मुबारका और अल्क़ाब बहुत ज़ियादा हैं।[2]

---

1 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی،الفصل الثانی فیما اکرمہ اللّٰہ...الخ،ج٦،ص١٠٩،١١٠

2 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی،باب فی ذکراسمائہ الشریفۃ...الخ،ج٤،ص١٦١

हज़रते जुबैर बिन मुत्ड़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरे पांच नाम हैं मैं ﴿1﴾ "मुहम्मद" व ﴿2﴾ "अहमद" हूं और मैं ﴿3﴾ "माही" हूं कि **अल्लाह** तआला मेरी वजह से कुफ़्र को मिटाता है और मैं ﴿4﴾ "हाशिर" हूं कि मेरे क़दमों पर सब लोगों का हश्र होगा और ﴿5﴾ "आक़िब" हूं।[1] (या'नी सब से आख़िरी नबी)

(بخاری ج ا ص ۵۰۱ باب ماجاء فی اسماء رسول اللہ عزوجل وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

कुरआने मजीद में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अल्क़ाब व अस्मा बहुत ज़ियादा ता'दाद में मज़कूर हैं। चुनान्चे बा'ज़ उ़लमाए किराम ने फ़रमाया कि ख़ुदा वन्दे कुद्दूस के नामों की त़रह **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के भी निन्नानवे नाम और अ़ल्लामा इब्ने दह़िय्या ने अपनी किताब में तह़रीर फ़रमाया कि अगर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के उन तमाम नामों को शुमार किया जाए जो कुरआन व ह़दीस और अगली किताबों में मज़्कूर हैं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नामों की गिनती तीन सो तक पहुंचती है और बा'ज़ सूफ़ियाए किराम का बयान है कि **अल्लाह** तआ़ला के भी एक हज़ार नाम हैं और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नामों की ता'दाद भी एक हज़ार है।[2] (زرقانی جلد۳ص ۱۱۸)

बहर हाल **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम अस्माए मुबारका में से दो नाम सब से ज़ियादा मश्हूर हैं एक "**मुह़म्मद**" दूसरा "**अह़मद**" (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम "**मुह़म्मद**" रखा और इसी नाम पर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का अ़क़ीक़ा किया जब लोगों ने पूछा कि ऐ अ़ब्दुल मुत्तलिब ! आप ने अपने पोते का नाम "**मुह़म्मद**" क्यूं

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب ماجاء فی اسماء رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث: ۳۵۳۲، ج۲، ص ٤٨٤

2 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی، باب فی ذکر اسمائہ الشریفۃ...الخ، ج٤، ص ١٦٩

रखा आप के आबाओ अज्दाद में किसी का भी येह नाम नहीं रहा है। तो आप ने जवाब दिया कि मैं ने इस निय्यत से और इस उम्मीद पर इस बच्चे का नाम "**मुहम्मद**" रखा है कि तमाम रूए ज़मीन के लोग इस की ता'रीफ़ करेंगे। और एक रिवायत में येह है कि आप ने येह कहा कि मैं ने इस उम्मीद पर "**मुहम्मद**" नाम रखा कि **अल्लाह** तआला आस्मानों में इस की ता'रीफ़ फ़रमाएगा और ज़मीन में खुदा की तमाम मख़्लूक़ इस की ता'रीफ़ करेगी, और हज़रते अ़ब्दुल मुत्तलिब की इस निय्यत और उम्मीद की वजह येह है कि इन्हों ने एक ख़्वाब देखा था कि मेरी पीठ से एक चांदी की ज़न्जीर निकली जिस का एक कनारा ज़मीन में है और एक सिरा आस्मान को छू रहा है और तमाम मशरिक़ व मग़रिब के इन्सान उस ज़न्जीर से चिमटे हुए हैं हज़रते अ़ब्दुल मुत्तलिब ने जब कुरैश के काहिनों से इस ख़्वाब की ता'बीर दरयाफ़्त की तो उन्हों ने इस ख़्वाब की येह ता'बीर बताई कि ऐ अ़ब्दुल मुत्तलिब ! आप की नस्ल से अ़न क़रीब एक ऐसा लड़का पैदा होगा कि तमाम अहले मशरिक़ व मग़रिब उस की पैरवी करेंगे और तमाम आस्मान व ज़मीन वाले उस की मद्हो सना का ख़ुत्बा पढ़ेंगे।[1] (زرقانی جلد۳ص۱۱۴تا۱۱۵)

और बा'ज़ का क़ौल है कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम "**मुहम्मद**" रखा है क्यूं कि जब **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन के शिकम मुबारक में रौनक़ अफ़्रोज़ थे तो इन्हों ने ख़्वाब में एक फ़िरिश्ते को येह कहते हुए सुना था कि ऐ आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ! सारे जहान के सरदार तुम्हारे शिकम में तशरीफ़ फ़रमा हैं जब येह पैदा हों तो तुम इन का नाम "**मुहम्मद**" रखना।[2] (زرقانی جلد۳ص۱۱۵)

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب في ذكر اسمائه الشريفة...الخ، ج٤، ص١٦١، ١٦٢

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، باب في ذكر اسمائه...الخ، ج٤، ص١٦١، ١٦٢ ملتقطاً

इन दोनों रिवायतों में कोई तआ़रुज़ नहीं। हो सकता है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्तलिब ने अपने और ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के ख़्वाबों की वजह से दोनों ने बाहमी मश्वरे से **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम "**मुह़म्मद**" रखा हो।

अल्लाह तआ़ला ने कुरआने मजीद में कई जगह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को "**मुह़म्मद**" के नाम से ज़िक्र फ़रमाया है और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام "**अह़मद**" के नाम से तमाम ज़िन्दगी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िक्रे जमील का डंका बजाते रहे। चुनान्चे कुरआने मजीद में है कि وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ یَّاْتِیْ مِنْۢ بَعْدِی اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ[1] या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام येह खुश ख़बरी सुनाते हुए तशरीफ़ लाए थे कि मेरे बा'द एक रसूल तशरीफ़ लाने वाले हैं जिन का नामे नामी व इस्मे गिरामी "**अह़मद**" है।

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की कुन्यत

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मश्हूर कुन्यत "अबुल क़ासिम" है। चुनान्चे बहुत सी अह़ादीस में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की येह कुन्यत मज़्कूर है, मगर ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रिवायत की है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की कुन्यत "अबू इब्राहीम" भी है। चुनान्चे ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इन लफ़्ज़ों से सलाम किया कि "السلام علیك یا ابا ابراھیم" या'नी ऐ इब्राहीम के वालिद ! आप पर सलाम।[2] (زرقانی جلد۳ص۱۵۱)

---

1 ......پ ۲۸،الصف:٦

2 ...... المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،باب فی ذکراسمائه الشریفة...الخ،ج٤،ص۲۲۹

तिब्बे नबवी

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के बन्दो ! तुम लोग दवाएं इस्ति'माल करो इस लिये कि अल्लाह तआला ने एक बीमारी के सिवा तमाम बीमारियों के लिये दवा पैदा फ़रमाई है । लोगों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! वोह कौन सी बीमारी है जिस की कोई दवा नहीं है ? आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि वोह "बुढ़ापा" है ।[1]

(ترمذی جلد۲ص۲۵ابواب الطب)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग जिन जिन त़रीक़ों से इलाज करते हो उन में सब से बेहतर चार त़रीक़ए इलाज हैं :

सऊ़त़ : नाक के ज़रीए़ दवा चढ़ाना, **लदूद :** मुंह के किसी एक जानिब से दवा पिलाना, **ह़िजामह :** किसी उ़ज़्व पर पछना लगवा कर ख़ून निकलवा देना, **मशी :** जुल्लाब लेना ।[2] (ترمذی جلد۲ص۲۶ابواب الطب)

बा'ज़ दवाएं ख़ुद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्ति'माल फ़रमाई हैं और बा'ज़ दवाओं के औसाफ़ और उन के फ़वाइद से अपनी उम्मत को आगाह फ़रमाया है । हम यहां उन में से तबर्रुकन चन्द दवाओं का ज़िक्र तह़रीर करते हैं ताकि हमारी इस मुख़्तसर किताब के सफ़ह़ात "तिब्बे नबवी" के अहम बाब से मह़रूम न रह जाएं ।

---

1 ......سنن الترمذی،کتاب الطب،باب ماجاء فی الدواء...الخ،الحدیث:۲۰۴۵،ج۴،ص۴

2 ......سنن الترمذی،کتاب الطب،باب ماجاء فی السعوط،الحدیث:۲۰۵۴،ج۴،ص۸

इसमद (सुर्मए सियाह इस्फ़हानी) : **हुज़ूरे** अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस के बारे में इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग इसमद को इस्ति'माल में रखो येह निगाह को तेज़ करता है और पलक के बाल उगाता है।(1) (ابن ماجہ ص۲۵۸ باب الکحل بالاثمد)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا का बयान है कि **हुज़ूरे** अक्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक सुरमा दानी थी जिस में इसमद का सुरमा रहता था और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सोने से पहले हर रात तीन तीन सलाई दोनों आंखों में लगाया करते थे।(2) (شمائل ترمذی ص۵)

हिना मेहंदी : **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कोई फुन्सी निकलती या कांटा चुभ जाता तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस पर मेहंदी रख दिया करते थे।(3) (ابن ماجہ ص۲۵۸ ابواب الطب)

अल हृब्बतुस्सौदाउ (कलोंजी जिस को शोनेज़ भी कहते हैं और बा'ज़ जगह इस को मुंगरीला भी कहा जाता है) : **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि इस के इस्ति'माल को लाज़िम पकड़ो क्यूं कि इस में मौत के सिवा सब बीमारियों से शिफ़ा है।(4)

(ابن ماجہ ص۲۵۴ ابواب الطب و بخاری جلد۲ ص۸۴۸)

अत्तल्बीनह (आटा, पानी, शहद, तेल मिला कर हरीरा की त़रह़ बनाया जाता है) : **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के घर वालों में जब कोई शख़्स जाड़ा बुख़ार में मुब्तला होता था तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस त़आ़म के तय्यार करने का हुक्म देते थे और फ़रमाते थे कि येह खाना ग़मगीन आदमी

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب الكحل بالاثمد، الحديث: ٣٤٩٥، ج٤، ص ١١٤

2 ......الشمائل المحمدية، باب ماجاء فی كحل رسول اللّٰه صلی اللّٰه عليه وسلم، الحديث: ٤٩، ص ٥٠

3 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب الحناء، الحديث: ٣٥٠٢، ج٤، ص ١١٧

4 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب الحبة السوداء، الحديث: ٣٤٤٨، ج٤، ص ٩٣

के दिल को तक़्विय्यत देता है और बीमार दिल से तक्लीफ़ को इस त़रह़ दूर कर देता है जिस त़रह़ तुम लोग पानी से अपने चेहरों के मैल कुचैल को दूर कर देते हो ।[1] (ابن ماجہ ص۲۵۴ ابواب الطب و بخاری جلد۲ ص۸۴۹)

अल अ़सल (शहद) **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक शख़्स ने आ कर शिकायत की, कि इस के भाई को दस्त आ रहे हैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस को शहद पिलाओ । फिर वोह दोबारा आया और कहने लगा कि दस्त बन्द नहीं होते । इरशाद फ़रमाया कि उस को शहद पिलाओ । फिर वोह तीसरी बार आ कर कहने लगा कि दस्त का सिल्सिला जारी है । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर शहद पिलाने का हुक्म दिया उस ने कहा कि येह इलाज तो मैं कर चुका हूं । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला सच्चा है और तेरे भाई का पेट झूटा है उस को शहद पिलाओ उस ने जा कर शहद पिलाया तो वोह शिफ़ायाब हो गया ।[2] (بخاری جلد۲ ص۸۴۸ باب الدواء بالعسل)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स हर महीने में तीन दिन सुब्ह़ के वक़्त शहद चाट लिया करे उस को कोई बड़ी बला न पहुंचेगी ।[3] (ابن ماجہ ص۲۵۵ ابواب الطب)

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया कि दो शिफ़ाओं को लाज़िम पकड़ो, एक शहद, दूसरी कुरआन शरीफ़ ।[4] (ابن ماجہ ص۲۵۵ باب العسل)

---

1 ......سنن ابن ماجه ، كتاب الطب ، باب التلبينة ، الحديث: ٣٤٤٥، ج٤، ص ٩٢

2 ......صحيح البخارى، كتاب الطب، باب الدواء بالعسل، الحديث: ٥٦٨٤، ج٤، ص ١٧

3 ......سنن ابن ماجه ، كتاب الطب ، باب العسل ، الحديث: ٣٤٥٠، ج٤، ص ٩٤

4 ......سنن ابن ماجه ، كتاب الطب ، باب العسل ، الحديث: ٣٤٥٢، ج٤، ص ٩٥

ख़ल्लु (सिर्का) : हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बेहतरीन सालन सिर्का है ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ सिर्के में बरकत अ़ता फ़रमा, क्यूं कि येह अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का सालन है और जिस घर में सिर्का होगा वोह घर कभी मोह़ताज नहीं होगा ।[1] (ابن ما جہ ص ۲۴۶ باب الائتدام بالخل)

ज़ैत (रोग़ने ज़ैतून) : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग रोग़ने ज़ैतून को सालन के त़ौर पर इस्ति'माल करो और इस को बदन पर भी मलते रहो क्यूं कि येह मुबारक दरख़्त से निकला हुवा है । और दूसरी ह़दीस में यूं वारिद हुवा कि तुम लोग रोग़ने ज़ैतून को खाओ और इस को बदन में लगाओ क्यूं कि येह बरकत वाली चीज़ है ।[2] (ابن ماجہ ص ۲۴۶ باب الزیت)

मुसम्मिन (बदन को फ़र्बा करने वाली दवा) : ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهَا कहती हैं कि मेरी वालिदा ने जब मेरी रुख़्सती का इरादा किया तो मेरा इलाज करने लगीं कि मैं ज़रा फ़र्बा बदन हो जाऊं मगर कोई इलाज कारगर न हुवा । मगर जब मैं ने ककड़ी को ताज़ा खजूरों के साथ खाना शुरूअ़ कर दिया तो मैं ख़ूब फ़र्बा बदन वाली हो गई ।[3] (ابن ما جہ ص ۲۴۶)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ककड़ी ताज़ा खजूरों के साथ तनावुल फ़रमाया करते थे ।[4] (ابن ماجہ ص ۲۴۶ باب القثاء والرطب)

अ़शा (रात का खाना) : हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि रात का खाना तर्क न करो, कुछ न मिले तो एक मुठ्ठी खजूर ही खा लिया करो क्यूं कि रात को खाना छोड़ देने से जल्द बुढ़ापा आ जाता है ।[5] (ابن ماجہ ص ۲۴۸ باب ترک العشاء)

---

1 ......سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب الائتدام بالخل، الحديث: ۳۳۱۸، ج ٤، ص ٣٤

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب الزيت، الحديث: ۳۳۱۹، ۳۳۲۰، ج ٤، ص ٣٤، ٣٥

3 ......سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب القثاء و الرطب يجمعان، الحديث: ٣٣٢٤، ج ٤، ص ٣٧

4 ......سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب القثاء...الخ، الحديث: ٣٣٢٥، ج ٤، ص ٣٧

5 ......سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب ترك العشاء، الحديث: ٣٣٥٥، ج ٤، ص ٥٠

हिम्यह (मुज़िर चीज़ों से परहेज़) : **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने साथ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ले कर ह़ज़रते उम्मुल मुन्ज़िर सह़ाबिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के मकान पर तशरीफ़ ले गए उन्हों ने कच्ची पक्की खजूरों का एक ख़ोशा पेश किया और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस में से खाने लगे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने भी हाथ बढ़ाया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अ़ली ! رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तुम अभी बीमारी से उठे हो और नक़ाहत बाक़ी है इस लिये तुम इस को मत खाओ। इस के बा'द ह़ज़रते उम्मुल मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जव और चुक़न्दर मिला कर खाना पकाया तो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से फ़रमाया कि तुम येह खाओ येह तुम्हारे लिये बहुत ज़ियादा मुफ़ीद ग़िज़ा है।(1) (ابن ماجہ ص۲۵۴ باب الحمیہ)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग ज़बरदस्ती कर के अपने मरीज़ों को खाने पीने पर मजबूर मत किया करो, **अल्लाह** तआ़ला उन लोगों को खिला पिला दिया करता है।(2)

(ابن ماجہ ص۲۵۴ باب لاتکرہوا المریض علی الطعام)

ज़न्जबील (सूंठ) : बादशाहे रूम ने एक घड़ा ज़न्जबील से भरा हुवा आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास हदिय्यतन भेजा था, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस में से एक एक टुकड़ा अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को खाने के लिये दिया इस रिवायत को अबू नुऐ़म मुह़द्दिस ने अपनी किताब "तिब्बे नबवी" में बयान किया है।(3) (نشر الطیب)

---

1 ......سنن ابن ماجه ، كتاب الطب ، باب الحمية ، الحديث: ٣٤٤٢، ج٤، ص ٩٠

2 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب لاتكرهوا المريض...الخ، الحديث: ٣٤٤٤، ج٤، ص٩١

3 ......الطب النبوى لابن قيم الجوزية، زنجبيل، ص٢٧

अ़जवा : मदीनए मुनव्वरह की खजूरों में से एक खजूर का नाम है इस के बारे में इरशादे नबवी है कि "अ़जवा" जन्नत से है और वोह जुनून या ज़हर से शिफ़ा है।[1] (ابن ما جہ ص ۲۵۵ باب الکماۃ و العجوۃ)

कमअह : जिस को बा'ज़ लोग ककरमता और बा'ज़ लोग सांप की छत्री कहते हैं इस के बारे में **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कमअह "मन्न" के मिस्ल है जो बनी इस्राईल पर नाज़िल हुवा था (या'नी जैसे वोह मुफ़्त की चीज़ और बहुत ही मुफ़ीद चीज़ थी ऐसी ही येह है) और इस का अ़रक़ आंखों के लिये शिफ़ा है।[2] (ابن ما جہ ص ۲۵۵ باب الکماۃ و بخاری وغیرہ)

सना (सनामकी एक दवा है) **:** ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا से **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम किस दवा से जुल्लाब लेती हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि "शबरम" से, आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह तो बहुत ही गर्म दवा है, फिर आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को सना का जुल्लाब लेने के लिये हुक्म फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि अगर मौत से शिफ़ा देने वाली कोई चीज़ होती तो वोह सना है।[3] (ابن ما جہ ص ۲۵۵ باب دواء المشی)

सन्नूत : इस के मा'ना में शारिह़ीने ह़दीस का इख़्तिलाफ़ है मगर अति़ब्बा ने एक ख़ास तफ़्सीर को तरजीह़ दी है। या'नी वोह शहद जो घी के बरतन में रखा गया हो और उस में घी के कुछ असरात पहुंच गए हों, **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग सना और सन्नूत को इस्ति'माल करते रहो कि इन दोनों में मौत के सिवा तमाम अमराज़ से शिफ़ा है।[4] (ابن ما جہ ص ۲۵۵ باب السناء والسنوت)

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب الكمأة و العجوة، الحديث: ٣٤٥٣، ج٤، ص ٩٥

2 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب الكمأة و العجوة، الحديث: ٣٤٥٤، ج٤، ص ٩٦

3 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب دواء المشى، الحديث: ٣٤٦١، ج٤، ص ١٠٠

4 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب السنا والسنوت، الحديث: ٣٤٥٧، ج٤، ص ٩٧

बा'ज़ अतिब्बा ने वजहे तरजीह़ में कहा है कि शहद और घी से सना की इस्लाह़ और सहाल की इआनत हो जाती है। (وَاللّٰه تَعَالٰی اَعلم)

सम (ज़हर) ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि रसूलुल्लाह صَلَّى الله تَعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़बीस दवा या'नी ज़हर से मन्अ़ फ़रमाया है।[1] (ابن ماجہ ص۲۵۵ باب النہی عن الدواء الخبیث)

ऊ़द हिन्दी (क़िस्त़ शीरीं) : **हुज़ूर** صَلَّى الله تَعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि इस ऊ़द हिन्दी को इस्ति'माल में लाया करो क्यूं कि इस में सात शिफ़ाएं हैं ह़ल्क़ में कव्वों के लिये इस का सऊ़त़ करना चाहिये और निमोनिया के लिये इस का जोशांदा पिलाना चाहिये।[2]

(ابن ماجہ ص۲۵٦ باب دواء ذات الجنب)

दवा इर्क़ुन्निसा : ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى الله تَعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि जंगल में चरने वाली बकरी के सुरीन को गला कर तीन टुकड़े कर लिये जाएं और तीन दिन नहार मुंह एक टुकड़ा खाएं इस में **"इर्क़ुन्निसा"** की शिफ़ा है।[3]

(ابن ماجہ ص۲۵٦ باب دواء عرق النساء)

ह़राम दवाएं : **हुज़ूर** صَلَّى الله تَعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने बीमारी भी उतारी है और दवा भी और हर बीमारी की दवा बना दी है। लिहाज़ा तुम लोग दवा करो मगर ह़राम चीज़ से दवाइलाज मत करो।[4]

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب النهى عن الدواء الخبيث، الحديث:٣٤٥٩، ج٤، ص٩٩

2 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب دواء ذات الجنب، الحديث:٣٤٦٨، ج٤، ص١٠٤

3 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب دواء عرق النساء، الحديث:٣٤٦٣، ج٤، ص١٠١

4 ......سنن ابى داود، كتاب الطب، باب فى الادوية المكروهة، الحديث:٣٨٧٤، ج٤، ص١٠

शराब : ह़ज़रते सुवैद बिन त़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْهُ ने हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से शराब के बारे में दरयाफ़्त किया तो आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस के इस्ति'माल से मन्अ़ फ़रमाया। फिर दोबारा पूछा तो आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया। तीसरी बार उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या नबिय्यल्लाह صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह तो दवा है, आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "नहीं" येह बीमारी है।[1]

(ابوداود جلد۲ ص۱۸۵ مجتبائی)

ज़ख़्मों का इलाज : ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْهُ कहते हैं कि जंगे उहुद के दिन हु़ज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दन्दाने मुबारक शहीद हो गए और लोहे की टोपी आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे अक़्दस पर तोड़ डाली गई तो ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْهَا चेहरए अन्वर से ख़ून धो रही थीं और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْهُ ढाल में पानी रख कर ज़ख़्म पर बहा रहे थे लेकिन जब ख़ून बहने का सिल्सिला बढ़ता ही रहा तो ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْهَا ने खजूर की चटाई का एक टुकड़ा लिया और उस को जला कर राख बना डाला फिर उसी राख को ज़ख़्मों पर चिपका दिया तो ख़ून बहना बन्द हो गया।[2] (ابن ماجه ص۲۵۶ ابواب الطب)

त़ाऊ़न : (प्लेग) के बारे में हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह एक अ़ज़ाब है जिस को अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल पर भेजा था। जब तुम सुनो कि किसी ज़मीन में त़ाऊ़न फैल गया है तो तुम लोग उस ज़मीन में दाख़िल न हुवा करो और जब तुम्हारी ज़मीन में त़ाऊ़न आ जाए तो तुम उस ज़मीन से निकल कर न भागो।[3]

(مسلم جلد۲ ص۲۲۸ باب الطاعون)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الطب، باب فی الادوية المكروهة، الحديث:٣٨٧٣، ج٤، ص١٠

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب الطب، باب دواء الجراحة، الحديث: ٣٤٦٤، ج٤، ص ١٠٢

3 ......صحيح مسلم، کتاب السلام، باب الطاعون والطيرة...الخ، الحديث:٢٢١٨، ص١٢١٥

अनाड़ी त़बीब : **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स इल्मे तिब को नहीं जानता और इलाज करता है तो वोह (मरीज़ को अगर कोई नुक़्सान पहुंचा) ज़ामिन है या'नी उस से नुक़्सान का तावान लिया जाएगा।[1] (ابن ماجہ ص ۲۵۶)

बुख़ार : एक शख़्स ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रू बरू बुख़ार को गाली दी तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम बुख़ार को गाली मत दो, बुख़ार की बीमारी मरीज़ के गुनाहों को इस त़रह़ दूर कर देती है जिस त़रह़ लोहे के मैल को आग दूर कर देती है।[2]

(ابن ماجہ ص ۲۵۶ باب الحمّٰی)

बुख़ार का इलाज : **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि बुख़ार जहन्नम के जोश मारने से है। लिहाज़ा तुम लोग इस को पानी से (पिला कर और ग़ुस्ल करा कर) ठन्डा करो।[3] (ابن ماجہ ص ۲۵۶ باب الحمّٰی)

नोट : बुख़ार का येह इलाज एक ख़ास क़िस्म के बुख़ार का इलाज है जो अ़रब में होता है जिस को अतिब्बा सफ़रावी बुख़ार या ह़मी नारिया (लू लगने का बुख़ार कहते हैं) येह हर क़िस्म के बुख़ार का इलाज नहीं है।[4]

(حاشیہ ابن ماجہ ص ۲۵۶)

इस लिये हर क़िस्म के बुख़ारों में येह इलाज काम्याब नहीं हो सकता लिहाज़ा किसी त़बीबे ह़ाज़िक़ से अच्छी त़रह़ बुख़ार की तशख़ीस करा लेने के बा'द ही इस का इलाज कराना चाहिये। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب من تطبب...الخ، الحديث: ٣٤٦٦، ج٤، ص ١٠٣

2 ......سنن ابن ماجه ، كتاب الطب ، باب الحمى ، الحديث: ٣٤٦٩، ج٤، ص ١٠٤

3 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب الحمى...الخ، الحديث: ٣٤٧١، ج٤، ص ١٠٥

4 ......حاشية سنن ابن ماجه، ابواب الطب، باب الحمى...الخ، حاشية: ٦، ص ٢٤٨ ملخصاً

पैग़म्बरी दुआएं

खुदा वन्दे कुदूस के दरबार में बन्दों की दुआओं का बहुत ही बड़ा दरजा है और दवाओं की तरह दुआओं में भी ख़ल्लाक़े आलम جَلَّ جَلَالُهٗ ने बड़ी बड़ी ख़ास ख़ास तासीरात पैदा फ़रमा दी हैं। चुनान्चे परवर दगारे आलम عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद में बार बार बन्दों को दुआएं मांगने का हुक्म दिया और इरशाद फ़रमाया कि

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ (1) *या'नी ऐ बन्दो ! तुम लोग मुझ से दुआएं मांगो मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करूंगा।*

और हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी दुआओं की अहम्मिय्यत और इन के फ़वाइद का ज़िक्र फ़रमाते हुए अपनी उम्मत को दुआएं मांगने की तरग़ीब दिलाई और फ़रमाया कि لَيْسَ شَيْئٌ اَكْرَمَ عَلَى اللّٰهِ مِنَ الدُّعَآءِ या'नी अल्लाह तआला के दरबार में दुआ से बढ़ कर इ़ज़्ज़त वाली कोई चीज़ नहीं है।(2) (ترمذی باب فضل الدعا ص ۱۷۳ جلد ۲)

और दुआओं की फ़ज़ीलत व अहम्मिय्यत का इज़्हार फ़रमाते हुए यहां तक इरशाद फ़रमाया कि اَلدُّعَآءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ (3)(ترمذی جلد ۲ ص ۱۷۲)

या'नी दुआ इबादत का मग़्ज़ है और येह भी फ़रमाया : مَنْ لَّمْ يَسْئَلِ اللّٰهَ يَغْضَبْ عَلَيْهِ जो खुदा से दुआ नहीं मांगता खुदा عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ हो जाता है।(4) (ترمذی جلد ۲ ص ۱۷۲ ابواب الدعوات)

---

1 ......پ ۲٤، المؤمن: ٦٠

2 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، الحدیث: ۳۳۸۱، ج ٥، ص ۲٤۳

3 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، الحدیث: ۳۳۸۲، ج ٥، ص ۲٤۳

4 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، الحدیث: ۳۳۸٤، ج ٥، ص ۲٤٤

इस लिये तिब्बे नबवी की तरह हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उन चन्द दुआओं का तज़्किरा भी हम इस किताब में तहरीर करते हैं जो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मा'मूलात में रही हैं और जिन के फ़ज़ाइल व फ़वाइद से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को आगाह फ़रमा कर उन के विर्द का हुक्म फ़रमाया है ताकि सीरते नबविय्या के इस मुक़द्दस बाब से भी येह किताब मुशर्रफ़ हो जाए और मुसलमान इन दुआओं का विर्द कर के दुन्या व आख़िरत के बे शुमार मनाफ़ेअ़ व फ़वाइद से मालामाल होते रहें।

हर बला से नजात

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स सुब्ह व शाम को तीन मरतबा येह दुआ पढ़े तो उस को दुन्या की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचाएगी। (ترمذی جلد۲ص۱۷۳باب ماجاء فی الدعاء اذا صبح واذا مسی)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْئٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ (1)

सोते वक़्त की दुआएं

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स बिछोने पर येह दुआ तीन मरतबा पढ़ कर सोएगा तो अल्लाह तआला उस के तमाम गुनाहों को बख़्श देगा अगर्चे उस के गुनाह दरख़्तों के पत्तों और टीलों की रैत की ता'दाद में हों। (ترمذی جلد۲ص۱۷۴)

اَسْتَغْفِرُاللّٰهَ الْعَظِیْمَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ (2)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی الدعاء اذا اصبح...الخ، الحدیث:۳۳۹۹، ج۵، ص۲۵۰

2 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی الدعاء اذا اوی...الخ، الحدیث:۳۴۰۸، ج۵، ص۲۵۵

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सोते वक़्त येह दुआ़ पढ़ा करते थे : اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى

और जब नींद से बेदार होते तो येह दुआ़ पढ़ते थे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْيىٰ نَفْسِیْ بَعْدَ مَا اَمَاتَهَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ (1) (ترمذی جلد۲ص۱۷۷)

रात में जागे तो क्या पढ़े

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स रात में नींद से बेदार हो तो येह दुआ़ पढ़े फिर इस के बा'द जो दुआ़ मांगेगा वोह क़बूल होगी और वुज़ू कर के जो नमाज़ पढ़ेगा वोह नमाज़ भी मक़्बूल हो जाएगी। (ترمذی جلد۲ص۱۷۷)

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ وَّسُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ (2)

घर से निकलते वक़्त की दुआ़

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने घर से बाहर निकलते वक़्त येह दुआ़ पढ़ ले तो उस की मुश्किलात दूर हो जाएंगी और वोह दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रहेगा और शैत़ान उस से अलग हट जाएगा। (ترمذی جلد۲ص۱۸۰)

()بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ(3)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی الدعاء اذا انتبه...الخ، الحدیث:۳٤۲۸، ج٥، ص۲٦۳

2 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی الدعاء اذاانتبه...الخ، الحدیث:۳٤۲٥، ج٥، ص۲٦۲

3 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذاخرج من بیته، الحدیث:۳٤۳۷، ج٥، ص۲۷۰

बाज़ार में दाख़िल हो तो येह पढ़े

इरशादे नबवी है कि जो शख़्स बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त इन कलिमात को पढ़ ले तो ख़ुदा वन्दे तआला दस लाख नेकियां उस के नामए आ'माल में लिखने का हुक्म फ़रमाएगा और उस के दस लाख गुनाहों को मिटा देगा और उस के दस लाख दरजे बुलन्द फ़रमाएगा।

(ترمذی جلد۲ص۱۸۰)

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ(1)

दुआ़ए सफ़र

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब सफ़र के लिये रवाना होते तो येह दुआ़ पढ़ते थे। (ترمذی جلد۲ص۱۸۱)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ اصْحَبْنَا فِيْ سَفَرِنَا وَاخْلُفْنَا فِيْ اَهْلِنَا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَآءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَمِنَ الْحَوْرِ بَعْدَ الْكَوْرِ(2)

सफ़र से आने की दुआ़

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब सफ़र से लौट कर अपने काशानए नुबुव्वत पर मदीना तशरीफ़ लाते तो येह दुआ़ पढ़ते। (ترمذی جلد۲ص۱۸۲)

اٰئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ (3)

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات،باب مایقول اذا دخل السوق،الحدیث:۳۴۳۹،ج۵،ص۲۷۰

2 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات،باب مایقول اذا خرج مسافرا،الحدیث:۳۴۵۰،ج۵،ص۲۷۶

3 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات،باب مایقول اذا قدم من السفر،الحدیث:۳۴۵۱،ج۵،ص۲۷۶

मन्ज़िल पर इस दुआ का विर्द करे

रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जो शख़्स सफ़र में किसी जगह पड़ाव करे और येह दुआ़ पढ़ ले तो उस को उस जगह किसी क़िस्म का नुक़्सान नहीं पहुंचेगा। (ترمذی جلد۲ص۱۸۱)

اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ(1)

बेचैनी के वक़्त की दुआ़

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہ تعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जब कोई बेचैनी और परेशानी लाह़िक़ हुवा करती थी तो उस वक़्त आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुआ़ का विर्द फ़रमाते थे। (ترمذی جلد۲ص۱۸۱)

لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْحَکِیْمُ لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ
رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْکَرِیْمِ(2)

किसी मुसीबत ज़दा को देख कर येह पढ़े

हुज़ूर सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी बला में मुब्तला होने वाले को देखे (बीमार या मुसीबत ज़दा को) तो येह दुआ़ पढ़ ले तो तमाम उ़म्र वोह उस बला (बीमारी या मुसीबत) से बचा रहेगा। (ترمذی جلد۲ص۱۸۱)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاکَ بِہٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی کَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا(3)

किसी को रुख़्सत करने की दुआ़

हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी इन्सान को रुख़्सत फ़रमाते

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا نزل منزلا، الحدیث:۳٤٤۸، ج٥، ص۲۷٥
2 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء مایقول عند الکرب، الحدیث:۳٤٤٦، ج٥، ص۲۷٤
3 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذارأی مبتلی، الحدیث:۳٤٤۳، ج٥، ص۲۷۳

थे तो येह कलिमात ज़बाने मुबारक से इरशाद फ़रमाते थे कि

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ (1)(ترمذی جلد۲ص۱۸۲)

खाना खा कर क्या पढ़े

हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने से जब दस्तर ख़्वान उठाया जाता था तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ पढ़ते थे। (ترمذی جلد۲ص۱۸۳)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا (2)

आंधी के वक़्त की दुआ

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब आंधी चलती तो येह दुआ पढ़ते थे। (ترمذی جلد۲ص۱۸۳)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِهَا وَخَيْرِ مَا فِيْهَا وَخَيْرِ مَا اُرْسِلَتْ
بِهٖ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ (3)

बिजली गरजने की दुआ

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बादलों की गरज और बिजली की कड़क के वक़्त येह दुआ पढ़ते थे। (ترمذی جلد۲ص۱۸۳)

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ (4)

किसी क़ौम से डरे तो क्या पढ़े

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर किसी क़ौम या किसी लश्कर से जान व माल वग़ैरा का ख़ौफ़ हो तो येह दुआ पढ़े।

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذاودع انسانا، الحدیث:٣٤٥٤، ج٥، ص٢٧٧

2 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا فرغ من الطعام، الحدیث:٣٤٦٧، ج٥، ص٢٨٣

3 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا ھاجت الریح، الحدیث:٣٤٦٠، ج٥، ص٢٨٠

4 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذاسمع الرعد، الحدیث:٣٤٦١، ج٥، ص٢٨٠

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِھِمْ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِھِمْ (1) (ابوداؤد جلد۱ ص۲۲۲ مجتبائی)

क़र्ज़ अदा होने की दुआ

मश्हूर सहाबी हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन मस्जिद में तशरीफ़ ले गए तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां हज़रते अबू उमामा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को देखा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ अबू उमामा ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तुम इस वक़्त में जब कि नमाज़ का वक़्त नहीं है मस्जिद में क्यूं और कैसे बैठे हुए हो, हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं बहुत से अफ़्कार और क़र्ज़ों के बार से ज़ेरे बार हो रहा हूं। इरशाद फ़रमाया कि क्या मैं तुम को एक ऐसा कलाम न ता'लीम करूं कि जब तुम उस को पढ़ो तो अल्लाह तआला तुम्हारी फ़िक्र को दफ़्अ फ़रमा दे और तुम्हारे क़र्ज़ को अदा कर दे ? हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ किया कि क्यूं नहीं ! या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! ज़रूर मुझे इरशाद फ़रमाइये । तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम रोज़ाना सुब्ह व शाम को येह दुआ पढ़ लिया करो। (ابوداود جلد۱ ص۲۲۴).

وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ

हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने इस दुआ को पढ़ा तो मेरी फ़िक्र जाती रही और ख़ुदा वन्दे तआला ने मेरे क़र्ज़ को भी अदा फ़रमा दिया।(2)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب مایقول الرجل اذاخاف قوما، الحدیث:۱۵۳۷، ج۲، ص۱۲۷

2 ......سنن ابی داود ، کتاب الوتر ، باب فی الاستعاذة ، الحدیث:۱۵۵۵، ج۲، ص ۱۳۳

जुमुआ के दिन ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़ो

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारे दिनों में सब से अफ़्ज़ल दिन जुमुआ का दिन है। लिहाज़ा इस दिन मुझ पर ब कसरत दुरूद पढ़ा करो क्यूं कि तुम लोगों का दुरूद शरीफ़ मेरे हुज़ूर पेश किया जाता है। सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! जब क़ब्र शरीफ़ में आप का जिस्मे मुबारक बिखर कर पुरानी हड्डियों की सूरत में हो जाएगा तो हम लोगों का दुरूद शरीफ़ कैसे आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में पेश हुवा करेगा ? तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَآءِ या'नी अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के जिस्मों को ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है।[1] (ابوداود جلد ا ص ۲۲۱ مجتبائی)

ज़रूरी तम्बीह

इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि तमाम ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मुक़द्दस अजसाम उन की मुबारक क़ब्रों में सलामत रहते हैं और ज़मीन पर ह़ज़रते ह़क़ جَلَّ جَلَالُهٗ ने ह़राम फ़रमा दिया है कि इन के मुक़द्दस जिस्मों पर किसी क़िस्म का तग़य्युर व तबद्दुल पैदा करे। जब तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की येह शान है तो फिर भला हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया व सय्यिदुल मुर्सलीन और इमामुल अम्बिया व ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस जिस्मे अन्वर को ज़मीन क्यूंकर खा सकती है ? इस लिये तमाम उ़लमाए उम्मत व औलियाए उम्मत का येही अ़क़ीदा है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी क़ब्रे अत़हर में ज़िन्दा हैं और ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ के हुक्म से बड़े बड़े तसर्रुफ़ात फ़रमाते रहते हैं और अपनी ख़ुदा दाद पैग़म्बराना क़ुव्वतों और मो'जिज़ाना त़ाक़तों से अपनी उम्मत की मुश्किल कुशाई और उन की फ़रयाद रसी फ़रमाते रहते हैं।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحدیث: ۱۵۳۱، ج۲، ص ۱۲۵

ख़ूब याद रखिये कि जो शख़्स इस के ख़िलाफ़ अ़क़ीदा रखे वोह यक़ीनन बारगाहे अक़्दस का गुस्ताख़ बद अ़क़ीदा, गुमराह और अहले सुन्नत के मज़्हब से ख़ारिज है।

मुर्ग़ की आवाज़ सुन कर दुआ़

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रावी हैं कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि जब तुम लोग मुर्ग़ की आवाज़ सुनो तो अल्लाह तआ़ला से उस के फ़ज़्ल का सुवाल करो क्यूं कि मुर्ग़ फ़िरिश्ते को देख कर बोलता है। (या'नी येह दुआ़ पढ़ो اَسْئَلُ اللّٰہَ مِنْ فَضْلِہِ الْعَظِیْمِ) [1] (مسلم جلد۲ص۳۵۱)

गधा बोले तो क्या पढ़े

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि गधे की आवाज़ सुन कर शैतान से अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगो। (या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ) [2] (مسلم جلد۲ص۳۵۱)

जन्नत का ख़ज़ाना

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मुझ से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं तेरी रहनुमाई ऐसे कलिमे पर न करूं जो जन्नत के ख़ज़ानों में से है? मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)! वोह कौन सा कलिमा है? तो इरशाद फ़रमाया कि वोह कलिमा لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ है।[3] (مسلم جلد۲ص۳۴۶)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر...الخ،باب استحباب الدعاء...الخ،الحدیث:۲۷۲۹،ص۱۴۶۱

2 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر...الخ،باب استحباب الدعاء...الخ،الحدیث:۲۷۲۹،ص۱۴۶۱

3 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر...الخ،باب استحباب...الخ،الحدیث:۲۷۰۴،ص۱۴۵۰

बिहिश्त का टिकट

हुज़ूरे अन्वर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो इस दुआ़ को पढ़ता रहे उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई। वोह दुआ़ येह है :

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رُسُوْلًا (1) (ابوداود جلد۱ ص۲۲۱ مجتبائی)

सय्यिदुल इस्तिग़्फ़ार

हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो मुसलमान यक़ीने क़ल्ब के साथ दिन में इस दुआ़ को पढ़ लेगा अगर उस दिन शाम से पहले मरेगा तो जन्नती होगा। और अगर रात में पढ़ लेगा और सुब्ह़ से पहले मरेगा तो जन्नती होगा इस दुआ़ का नाम सय्यिदुल इस्तिग़्फ़ार है जो येह है :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ
وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَ
اَبُوْءُ بِذَنْبِىْ فَاغْفِرْلِىْ فَاِنَّهٗ لَايَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ (2) (بخاری جلد۲ ص۹۳۳)

जिमाअ़ की दुआ़

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है कि अगर कोई मुसलमान अपनी बीवी से सोह़बत करने से पहले येह दुआ़ पढ़ ले तो उस सोह़बत से जो औलाद पैदा होगी उस को कभी हरगिज़ शैत़ान कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा। दुआ़ येह है :

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَارَزَقْتَنَا (3) (بخاری جلد۲ ص۹۴۵)

शिफ़ाए अमराज़ के लिये

रिवायत है कि अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब और साबित बुनानी رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُمَا दोनों ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحدیث: ۱۵۲۹، ج۲، ص ۱۲۵

2 ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب افضل الاستغفار، الحدیث: ۶۳۰۶، ج۴، ص۱۸۹

3 ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا اتی اھلہ، الحدیث: ۶۳۸۸، ج۴، ص۲۱۴

हुए और साबित बुनानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अबू हम्ज़ा ! (अनस) मैं बीमार हो गया हूं। हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि क्या मैं उस दुआ़ से तुम्हारे मरज़ का झाड़ फूंक न कर दूं जिस दुआ़ से हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मरीज़ों पर शिफ़ा के लिये दम फ़रमाया करते थे ? साबित बुनानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि क्यूं नहीं। इस के बा'द हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह दुआ़ पढ़ी कि

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ مُذْهِبَ الْبَاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِيُ لَا شَافِيَ اِلَّا اَنْتَ شِفَاءً لَايُغَادِرُ سَقَمًا[1]

(بخاری جلد۲ص ۸۵۵ باب رقیۃ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

मुसीबत पर ने'मल बदल मिलने की दुआ़

हज़रते उम्मुल मोमिनीन बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا कहती हैं कि मैं ने हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से येह सुना था कि किसी मुसलमान को कोई मुसीबत पहुंचे तो वोह

اِنَّالِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِيْ وَاخْلُفْ لِيْ خَيْرًا مِّنْهَا

पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला उस मुसलमान को उस की ज़ाएअ़ शुदा चीज़ से बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमाएगा।

हज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि जब मेरे शोहर हज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इनतिक़ाल हो गया तो मैं ने (दिल में) कहा कि भला अबू सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से बेहतर कौन मुसलमान होगा ? येह पहला घर है जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास मक्का से हिजरत कर के मदीने पहुंचा लेकिन फिर मैं ने इस दुआ़ को पढ़ लिया तो अल्लाह तआ़ला ने मुझे अबू सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से बेहतर शोहर अ़ता फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से निकाह फ़रमा लिया।[2] (مسلم جلد۱ص ۳۰۰ کتاب الجنائز)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الطب، باب رقیة النبی صلی اللّٰه علیه وسلم، الحدیث: ۵۷۴۲، ج۴، ص ۳۲

2 ......صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب مایقال عند المصیبة، الحدیث: ۹۱۸، ص ۴۵۷

उन्नीसवां बाब

मुतअ़ल्लिक़ीने रिसालत

उन के मौला की उन पर करोड़ो दुरूद उन के अस्ह़ाबो इ़तरत पे लाखों सलाम

पारहाए सुहुफ़ गुन्चहाए कुदुस अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम

अहले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़ बानुवाने त़हारत पे लाखों सलाम

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बते मुबारका की वजह से अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن का भी बहुत ही बुलन्द मर्तबा है इन की शान में कुरआन की बहुत सी आयाते बय्यिनात नाज़िल हुईं जिन में इन की अ़ज़्मतों का तज़्किरा और इन की रिफ़्अ़ते शान का बयान है। चुनान्चे खुदा वन्दे कुद्दूस ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

يٰنِسَآءَ النَّبِیِّ لَسْتُنَّ کَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَیْتُنَّ[1](احزاب)

ऐ नबी की बीवियो ! तुम और औ़रतों की तरह़ नहीं हो अगर अल्लाह से डरो।

दूसरी आयत में येह इरशाद फ़रमाया कि

وَاَزْوَاجُہٗۤ اُمَّھٰتُھُمْ ؕ[2](احزاب)

और इस (नबी) की बीवियां उन (मोमिनीन) की माएं हैं।

येह तमाम उम्मत का मुत्तफ़िक़ अ़लैह मस्अला है कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस बीवियां दो बातों में ह़क़ीक़ी मां के मिस्ल हैं। एक येह कि उन के साथ हमेशा हमेशा के लिये किसी का निकाह़ जाइज़

---

1 ......پ ٢٢،الاحزاب:٣٢

2 ......پ ٢١،الاحزاب:٦

नहीं। दुवुम येह कि उन की ता'ज़ीम व तकरीम हर उम्मती पर इसी त़रह़ लाज़िम है जिस त़रह़ ह़क़ीक़ी मां की बल्कि इस से भी बहुत ज़ियादा लेकिन नज़र और ख़ल्वत के मुआ़मले में अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن का हुक्म ह़क़ीक़ी मां की त़रह़ नहीं है। क्यूं कि क़ुरआने मजीद में ह़ज़रते ह़क़ جَلَّ جَلَالُہٗ का इरशाद है कि

وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ[1] (احزاب)

जब नबी की बीवियों से तुम लोग कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के पीछे से मांगो।

मुसलमान अपनी ह़क़ीक़ी मां को तो देख भी सकता है और तन्हाई में बैठ कर उस से बातचीत भी कर सकता है मगर **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस बीवियों से हर मुसलमान के लिये पर्दा फ़र्ज़ है और तन्हाई में इन के पास उठना बैठना ह़राम है।

इसी त़रह़ ह़क़ीक़ी मां के मां बाप, लड़कों के नानी नाना और ह़क़ीक़ी मां के भाई बहन, लड़कों के मामूं और ख़ाला हुवा करते हैं मगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن के मां बाप उम्मत के नानी नाना और अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن के भाई बहन उम्मत के मामूं ख़ाला नहीं हुवा करते।

येह हुक्म **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उन तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن के लिये है जिन से **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने निकाह़ फ़रमाया, चाहे **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले उन का इन्तिक़ाल हुवा हो या **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द उन्हों ने वफ़ात पाई हो। येह सब की सब उम्मत की माएं हैं और हर उम्मती के लिये उस की ह़क़ीक़ी मां से बढ़ कर लाइक़े ता'ज़ीम व वाजिबुल एह़तिराम हैं।[2] (زرقانی جلد۳ص۲۱۶)

---

1 ......پ ۲۲، الاحزاب:۵۳

2 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،باب فی ذکر ازواجه...الخ ،ج٤،ص۳۵٦-۳۵۷

अज़्वाजे मुतृहहरात رضی اللہ تعالٰی عنھن की ता'दाद और उन के निकाहों की तरतीब के बारे में मुअर्रिख़ीन का क़दरे इख़्तिलाफ़ है मगर ग्यारह उम्महातुल मोमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنھن के बारे में किसी का भी इख़्तिलाफ़ नहीं इन में से हज़रते ख़दीजा और हज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का तो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सामने ही इनतिक़ाल हो गया था मगर नव बीवियां हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ाते अक़्दस के वक़्त मौजूद थीं।

इन ग्यारह उम्मत की माओं में से छे ख़ानदाने क़ुरैश के ऊंचे घरानों की चश्मो चराग़ थीं जिन के अस्माए मुबारका येह हैं :

﴾1﴿ ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद ﴾2﴿ आइशा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ ﴾3﴿ ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर फ़ारूक़ ﴾4﴿ उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान ﴾5﴿ उम्मे सलमह बिन्ते अबू उमय्या ﴾6﴿ सौदह बिन्ते ज़म्आ رضی اللہ تعالٰی عنھن

और चार अज़्वाजे मुतृहहरात رضی اللہ تعالٰی عنھن ख़ानदाने क़ुरैश से नहीं थीं बल्कि अ़रब के दूसरे क़बाइल से तअ़ल्लुक़ रखती थीं वोह येह हैं :

﴾1﴿ ज़ैनब बिन्ते जह़श ﴾2﴿ मैमूना बिन्ते ह़ारिस ﴾3﴿ ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा "उम्मुल मसाकीन" ﴾4﴿ जुवैरिया बिन्ते ह़ारिस और एक बीवी या'नी सफ़िय्या बिन्ते हुयैय येह अ़रबिय्युन्नस्ल नहीं थीं बल्कि ख़ानदाने बनी इस्राईल की एक शरीफ़ुन्नसब रईस ज़ादी थीं।

इस बात में भी किसी मुअर्रिख़ का इख़्तिलाफ़ नहीं है कि सब से पहले हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह फ़रमाया और जब तक वोह ज़िन्दा रहीं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी दूसरी औ़रत से अ़क़्द नहीं फ़रमाया।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۱۸تا۲۱۹)

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى، باب فى ذكر ازواجه الطاهرات...الخ، ج٤، ص٣٥٩-٣٦٢

ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہا

येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से पहली रफ़ीक़ए ह़यात हैं। इन के वालिद का नाम खुवैलद बिन असद और इन की वालिदा का नाम फ़ाति़मा बिन्ते ज़ाइदा है। येह ख़ानदाने क़ुरैश की बहुत ही मुअ़ज़्ज़ज़ और निहायत दौलत मन्द ख़ातून थीं। हम इस किताब के तीसरे बाब में लिख चुके हैं कि अहले मक्का इन की पाक दामनी और पारसाई की बिना पर इन को "ता़हिरा" के लक़ब से याद करते थे। इन्हों ने हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अख़्लाक़ व आ़दात और जमाले सूरत व कमाले सीरत को देख कर खुद ही हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह़ की रग़बत ज़ाहिर की और फिर बा क़ाइदा निकाह़ हो गया जिस का मुफ़स्सल तज़्किरा गुज़र चुका। अ़ल्लामा इब्ने असीर और इमाम ज़हबी का बयान है कि इस बात पर तमाम उम्मत का इज्माअ़ है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर सब से पहले येही ईमान लाईं और इब्तिदाए इस्लाम में जब कि हर त़रफ़ से आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त का तूफ़ान उठ रहा था ऐसे कठिन वक़्त में सिर्फ़ इन्हीं की एक ज़ात थी जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मूनिसे ह़यात बन कर तस्कीने ख़ाति़र का बाइ़स थी। इन्हों ने इतने ख़ौफ़नाक और ख़त़रनाक अवक़ात में जिस इस्तिक़्लाल और इस्तिक़ामत के साथ ख़त़रात व मसाइब का मुक़ाबला किया और जिस त़रह़ तन मन धन से बारगाहे नुबुव्वत में अपनी क़ुरबानी पेश की इस ख़ुसूसिय्यत में तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن पर इन को एक ख़ुसूसी फ़ज़ीलत ह़ासिल है। चुनान्चे वलिय्युद्दीन इराक़ी का बयान है कि क़ौले सह़ीह़ और मज़हबे मुख़्तार येही है कि उम्महातुल मोमिनीन में ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہا सब से ज़ियादा अफ़्ज़ल हैं।

इन के फ़ज़ाइल में चन्द ह़दीसें वारिद भी हुई हैं। चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रावी हैं कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास तशरीफ़ लाए और अ़र्ज़ किया कि ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! येह ख़दीजा हैं जो आप के पास एक बरतन ले कर आ रही हैं जिस में खाना है। जब येह आप के पास आ जाएं तो आप इन से इन के रब का और मेरा सलाम कह दें और इन को येह खुश ख़बरी सुना दें कि जन्नत में इन के लिये मोती का एक घर बना है जिस में न कोई शोर होगा न कोई तक्लीफ़ होगी।[1] (بخاری جلد۱ص۵۳۹ باب تزویج النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

इमाम अह़मद व अबू दावूद व नसाई, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रावी हैं कि अहले जन्नत की औ़रतों में सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते ख़दीजा, ह़ज़रते फ़ातिमा, ह़ज़रते मरयम व ह़ज़रते आसिया हैं।[2] (رضی اللہ تعالٰی عنھن) (زرقانی جلد۳ص ۲۲۳ تا ۲۲۴)

इसी त़रह़ रिवायत है कि एक मरतबा जब ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़बाने मुबारक से ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ सुनी तो उन्हें ग़ैरत आ गई और उन्हों ने येह कह दिया कि अब तो **अल्लाह** तआ़ला ने आप को उन से बेहतर बीवी अ़त़ा फ़रमा दी है। येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि नहीं ख़ुदा की क़सम ! ख़दीजा से बेहतर मुझे कोई बीवी नहीं मिली जब सब लोगों ने मेरे साथ कुफ़्र किया उस वक़्त वोह मुझ पर ईमान लाईं और जब सब लोग मुझे झुटला रहे थे उस वक़्त उन्हों ने मेरी तस्दीक़ की और जिस वक़्त कोई शख़्स मुझे कोई चीज़ देने के लिये

---

1 ...... صحیح البخاری ، کتاب مناقب الانصار ، باب تزویج النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ... الخ، الحدیث: ۳۸۲۰، ج۲، ص ٥٦٥

والمواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی، باب خدیجۃ ام المؤمنین، ج٤، ص ٣٦٣ـ٣٦٥، ٣٧١

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ ابن عباس، الحدیث: ۲۹۰۳، ج۱، ص ٦٧٨

तय्यार न था उस वक़्त ख़दीजा ने मुझे अपना सारा माल दे दिया और उन्हीं के शिकम से अल्लाह तआला ने मुझे औलाद अ़ता फ़रमाई ।(1)
(زرقانی جلد۳ص۲۲۴)

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का बयान है कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात में सब से ज़ियादा मुझे ह़ज़रते ख़दीजा के बारे में ग़ैरत आया करती थी ह़ालां कि मैं ने उन को देखा भी नहीं था। ग़ैरत की वजह येह थी कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत ज़ियादा उन का ज़िक्रे ख़ैर फ़रमाते रहते थे और अकसर ऐसा हुवा करता था कि आप जब कोई बकरी ज़ब्ह़ फ़रमाते थे तो कुछ गोश्त ह़ज़रते ख़दीजा की सहेलियों के घरों में ज़रूर भेज दिया करते थे इस से मैं चिड़ जाया करती थी और कभी कभी येह कह दिया करती थी कि "दुन्या में बस एक ख़दीजा ही तो आप की बीवी थीं।" मेरा येह जुम्ला सुन कर आप फ़रमाया करते थे कि हां हां बेशक वोह थीं वोह थीं उन्हीं के शिकम से तो अल्लाह तआला ने मुझे औलाद अ़ता फ़रमाई ।(2) (بخاری جلد ا ص ۵۳۹ ذکر خدیجہ)

इमाम त़बरानी ने ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से एक ह़दीस नक़्ल की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को दुन्या में जन्नत का अंगूर खिलाया। इस ह़दीस को इमाम सुहैली ने भी नक़्ल फ़रमाया है ।(3) (زرقانی جلد۳ص۲۲۶)

ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पच्चीस साल तक हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत गुज़ारी से सरफ़राज़ रहीं, हिजरत से तीन

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني ، باب خديجة ام المؤمنين ، ج٤، ص ٣٧٢

2 ......صحيح البخاري، كتاب مناقب الانصار، باب تزويج النبي صلى الله عليه وسلم خديجة...الخ، الحديث: ٣٨١٨، ج٢، ص٥٦٥

3 ...... شرح الزرقاني على المواهب ، باب خديجة ام المؤمنين ، ج٤، ص ٣٧٦

बरस क़ब्ल पैंसठ बरस की उ़म्र पा कर माहे रमज़ान में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के अन्दर उन्हों ने वफ़ात पाई। **हुज़ूरे** अक्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा के मश्हूर क़ब्रिस्तान ह़जून (जन्नतुल मअ़्ला) में ख़ुद ब नफ़्से नफ़ीस इन की क़ब्र में उतर कर अपने मुक़द्दस हाथों से इन को सिपुर्दे ख़ाक फ़रमाया चूंकि उस वक़्त तक नमाज़े जनाज़ा का हुक्म नाज़िल नहीं हुवा था इस लिये आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ाई।[1] (زرقانی جلد۳ص ۲۲۷واکمال فی اسماء الرجال ص ۵۹۳)

ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

इन के वालिद का नाम "ज़मआ़" और इन की वालिदा का नाम शमूस बिन्ते क़ैस बिन अ़म्र है। येह पहले अपने चचाज़ाद भाई सकरान बिन अ़म्र से बियाही गई थीं। येह मियां बीवी दोनों इब्तिदाई इस्लाम में ही मुसलमान हो गए थे और इन दोनों ने ह़बशा की हिजरते सानिया में ह़बशा की त़रफ़ हिजरत भी की थी, लेकिन जब ह़बशा से वापस आ कर येह दोनों मियां बीवी मक्कए मुकर्रमा आए तो इन के शोहर सकरान बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वफ़ात पा गए और येह बेवा हो गईं इन के एक लड़का भी था जिन का नाम "अ़ब्दुर्रह़मान" था।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक ख़्वाब देखा कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पैदल चलते हुए इन की त़रफ़ तशरीफ़ लाए और इन की गरदन पर अपना मुक़द्दस पाउं रख दिया। जब ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस ख़्वाब को अपने शोहर से बयान किया तो उन्हों ने कहा कि अगर तेरा ख़्वाब सच्चा है तो मैं यक़ीनन अ़न क़रीब ही मर जाऊंगा और **हुज़ूर**

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی ، باب خديجة ام المؤمنين ، ج٤، ص ٣٧٦
والاكمال فی اسماء الرجال،حرف الخاء ، خديجة بنت خويلد، ص ٥٩٣

صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तुझ से निकाह़ फ़रमाएंगे। इस के बा'द दूसरी रात में ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھَا ने येह ख़्वाब देखा कि एक चांद टूट कर इन के सीने पर गिरा है सुब्ह़ को इन्हों ने इस ख़्वाब का भी अपने शोहर से ज़िक्र किया तो इन के शोहर ह़ज़रते सकरान رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने चौंक कर कहा की अगर तेरा येह ख़्वाब सच्चा है तो मैं अब बहुत जल्द इनतिक़ाल कर जाऊंगा और तुम मेरे बा'द **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह़ करोगी। चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि उसी दिन ह़ज़रते सकरान رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ बीमार हुए और चन्द दिनों के बा'द वफ़ात पा गए।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۲۷)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا की वफ़ात से हर वक़्त बहुत ज़ियादा मग़्मूम और उदास रहा करते थे। येह देख कर ह़ज़रते ख़ौला बिन्ते ह़कीम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھَا ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में येह दरख़्वास्त पेश की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! आप ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا से निकाह़ फ़रमा लें ताकि आप का ख़ानए मईशत आबाद हो जाए और एक वफ़ादार और ख़िदमत गुज़ार बीवी की सोह़बत व रफ़ाक़त से आप का ग़म मिट जाए। आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के इस मुख़्लिसाना मश्वरे को क़बूल फ़रमा लिया। चुनान्चे ह़ज़रते ख़ौला رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھَا ने ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھَا के बाप से बातचीत कर के निस्बत तै करा दी और निकाह़ हो गया और येह उम्महातुल मोमिनीन के ज़ुमरे में दाख़िल हो गईं और अपनी ज़िन्दगी भर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत के शरफ़ से सरफ़राज़ रहीं और इनतिहाई वालिहाना अ़क़ीदत व मह़ब्बत के साथ आप की वफ़ादार और ख़िदमत गुज़ार रहीं। येह बहुत ही फ़य्याज़ और सख़ी थीं एक मरतबा ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ

---

1 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی،باب سودۃ ام المؤمنین ، ج٤، ص ٣٧٧۔٣٧٨

ने दिरहमों से भरा हुवा एक थेला इन की ख़िदमत में भेजा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने पूछा येह क्या है ? लाने वाले ने बताया कि दिरहम हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने फ़रमाया कि भला दिरहम खजूरों के थेले में भेजे जाते हैं ? येह कहा और उठ कर उसी वक़्त उन तमाम दिरहमों को मदीने के फ़ुक़रा व मसाकीन पर तक़्सीम कर दिया।

हदीस की मशहूर किताबों में इन की रिवायत की हुई पांच हदीसें मज़्कूर हैं जिन में से एक हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और हज़रते यहूया बिन अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا इन के शागिर्दों में बहुत ही मुमताज़ हैं।

इन की वफ़ात के साल में मुख़्तलिफ़ और मुतज़ाद अक़्वाल हैं, इमाम ज़हबी और इमाम बुख़ारी ने इस रिवायत को सहीह बताया है कि हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के आख़िरी दौरे ख़िलाफ़त सि. 23 हि. में मदीनए मुनव्वरह के अन्दर इन की वफ़ात हुई लेकिन वाक़िदी ने इस क़ौल को तरजीह दी है कि इन की वफ़ात का साल सि. 54 हि. है और साहिबे अक्माल ने भी इन का सिने वफ़ात शव्वाल सि. 54 हि. ही तहरीर किया है मगर हज़रते अ़ल्लामा इब्ने हजर अ़स्क़लानी ने अपनी किताब तक़्रीबुत्तहज़ीब में येह लिखा है कि इन की वफ़ात शव्वाल सि. 55 हि. में हुई।[1] وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلم

(زرقانی جلد۳ص۲۲۹واکمال ص۵۹۹)

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا

येह अमीरुल मोमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की नूरे नज़र और दुख़्तरे नेक अख़्तर हैं। इन की वालिदए माजिदा का नाम "उम्मे रूमान" है येह छे बरस की थीं जब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लाने नुबुव्वत के दसवें साल माहे शव्वाल में हिजरत से तीन साल

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب سودة ام المؤمنين، ج٤، ص٣٧٩ـ٣٨١ والاكمال في اسماء الرجال، حرف السين، سودة، ص٥٩٩

क़ब्ल निकाह़ फ़रमाया और शव्वाल सि. 2 हि. में मदीनए मुनव्वरह के अन्दर येह काशानए नुबुव्वत में दाख़िल हो गई और नव बरस तक **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत से सरफ़राज़ रहीं। अज़्वाजे मुत़ह्हरात में येही कंवारी थीं और सब से ज़ियादा बारगाहे नुबुव्वत में मह़बूब तरीन बीवी थीं। **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इन के बारे में इरशाद है कि किसी बीवी के लिह़ाफ़ में मेरे ऊपर वह्य नाज़िल नहीं हुई मगर ह़ज़रते आ़इशा जब मेरे साथ बिस्तरे नुबुव्वत पर सोती रहती हैं तो इस ह़ालत में भी मुझ पर वह्ये इलाही उतरती रहती है।[1] (بخاری جلد۱ص۵۳۲فضل عائشہ)

बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायत है कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया कि तीन रातें मैं ख़्वाब में येह देखता रहा कि एक फ़िरिश्ता तुम को एक रेशमी कपड़े में लपेट कर मेरे पास लाता रहा और मुझ से येह कहता रहा कि येह आप की बीवी हैं। जब मैं ने तुम्हारे चेहरे से कपड़ा हटा कर देखा तो ना गहां वोह तुम ही थीं। इस के बा'द मैं ने अपने दिल में कहा कि अगर येह ख़्वाब **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है तो वोह इस ख़्वाब को पूरा कर दिखाएगा।[2] (مشکوٰۃ جلد۲ص۵۷۳)

फ़िक़्ह व ह़दीस के उ़लूम में अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن के अन्दर इन का दरजा बहुत ही बुलन्द है। दो हज़ार दो सो दस ह़दीसें इन्हों ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत की हैं। इन की रिवायत की हुई ह़दीसों

---

1 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،باب عائشة ام المؤمنین،ج٤،ص ٣٨١۔٣٨٨ملتقطاً و صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم،باب فضل عائشة رضی اللّٰہ عنھا،الحدیث:٣٧٧٥،ج٢،ص ٥٥٢

2 ......مشکاة المصابیح ، کتاب المناقب،باب مناقب ازواج النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ورضی اللّٰہ عنھن، الحدیث: ٦١٨٨،ج٢، ص ٤٤٤

में से एक सो चोहत्तर ह़दीसें ऐसी हैं जो बुख़ारी व मुस्लिम दोनों किताबों में हैं और चौवन ह़दीसें ऐसी हैं जो सिर्फ़ बुख़ारी शरीफ़ में हैं और अड़सठ ह़दीसें वोह हैं जिन को सिर्फ़ इमाम मुस्लिम ने अपनी किताब सह़ीह़ मुस्लिम में तह़रीर किया है। इन के इलावा बाक़ी ह़दीसें अह़ादीस की दूसरी किताबों में मज़्कूर हैं।(1)

इब्ने सा'द ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से नक़्ल किया है कि खुद ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाया करती थीं कि मुझे तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात पर ऐसी दस फ़ज़ीलतें ह़ासिल हैं जो दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात को ह़ासिल नहीं हुईं।

﴾1﴿ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सिवा किसी दूसरी कंवारी औ़रत से निकाह़ नहीं फ़रमाया।

﴾2﴿ मेरे सिवा अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से कोई भी ऐसी नहीं जिस के मां बाप दोनों मुहाजिर हों।

﴾3﴿ अल्लाह तआ़ला ने मेरी बराअत और पाक दामनी का बयान आस्मान से कु़रआन में नाज़िल फ़रमाया।

﴾4﴿ निकाह़ से क़ब्ल ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने एक रेशमी कपड़े में मेरी सूरत ला कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को दिखला दी थी और आप तीन रातें ख़्वाब में मुझे देखते रहे।

﴾5﴿ मैं और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक ही बरतन में से पानी ले ले कर गुस्ल किया करते थे येह शरफ़ मेरे सिवा अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से किसी को भी नसीब नहीं हुवा।

﴾6﴿ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े तहज्जुद पढ़ते थे और मैं आप के आगे सोई रहती थी उम्महातुल मोमिनीन में से कोई भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इस करीमाना मह़ब्बत से सरफ़राज़ नहीं हुई।

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانی ، باب عائشة ام المؤمنين ، ج٤ ، ص ٣٨٩

﴿7﴾ मैं **हुज़ूर** صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक लिहाफ़ में सोती रहती थी और आप पर खुदा की वह्य नाज़िल हुवा करती थी येह वोह ए'ज़ाज़े खुदा वन्दी है जो मेरे सिवा **हुज़ूर** صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की किसी ज़ौजए मुत़ह्हरा को ह़ासिल नहीं हुवा।

﴿8﴾ वफ़ाते अक्दस के वक़्त मैं **हुज़ूर** صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी गोद में लिये हुए बैठी थी और आप का सरे अन्वर मेरे सीने और ह़ल्क़ के दरमियान था और इसी ह़ालत में **हुज़ूर** صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा।

﴿9﴾ **हुज़ूर** صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी बारी के दिन वफ़ात पाई।

﴿10﴾ **हुज़ूरे** अक्दस صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर ख़ास मेरे घर में बनी।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۳۳)

इबादत में भी आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का मर्तबा बहुत ही बुलन्द है आप के भतीजे हज़रते इमाम क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का बयान है कि हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रोज़ाना बिला नाग़ा नमाज़े तहज्जुद पढ़ने की पाबन्द थीं और अकसर रोज़ादार भी रहा करती थीं।

सख़ावत और सदक़ात व ख़ैरात के मुआमले में भी तमाम उम्महातुल मोमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنھن में ख़ास तौर पर बहुत मुमताज़ थीं। उम्मे दुर्रह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا कहती हैं कि मैं हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास थी उस वक़्त एक लाख दिरहम कहीं से आप के पास आया आप ने उसी वक़्त उन सब दिरहमों को लोगों में तक़्सीम कर दिया और एक दिरहम भी घर में बाक़ी नहीं छोड़ा। उस दिन में वोह रोज़ादार थीं मैं ने अ़र्ज़ किया कि आप ने सब दिरहमों को बांट दिया और एक दिरहम भी बाक़ी नहीं रखा ताकि आप गोश्त ख़रीद कर रोज़ा इफ़्त़ार करतीं तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया कि तुम ने अगर मुझ से पहले कहा होता तो मैं एक दिरहम का गोश्त मंगा लेती।

---

1 ......الطبقات الکبری لابن سعد ، باب ذکر ازواج رسول اللّٰہ ، ج۸، ص ۵۰۔۵۱

हज़रते उ़र्वह बिन जु़बैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के भान्जे थे इन का बयान है कि फ़िक़्ह व ह़दीस के इ़लावा मैं ने ह़ज़रते आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) से बढ़ कर किसी को अश्आ़रे अ़रब का जानने वाला नहीं पाया वोह दौराने गुफ़्त्गू में हर मौक़अ़ पर कोई न कोई शे'र पढ़ दिया करती थीं जो बहुत ही बर मह़ल हुवा करता था।

इ़ल्मे तिब और मरीज़ों के इ़लाज मुआ़लजे में भी इन्हें काफ़ी बहुत महारत थी। ह़ज़रते उ़र्वह बिन जु़बैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا कहते हैं कि मैं ने एक दिन ह़ैरान हो कर ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से अ़र्ज़ किया कि ऐ अम्मांजान ! मुझे आप के इ़ल्मे ह़दीस व फ़िक़्ह पर कोई तअ़ज्जुब नहीं क्यूं कि आप ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत और सोह़बत का शरफ़ पाया है और आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सब से ज़ियादा मह़बूब तरीन ज़ौजए मुक़द्दसा हैं इसी त़रह़ मुझे इस पर भी कोई तअ़ज्जुब और ह़ैरानी नहीं है कि आप को इस क़दर ज़ियादा अ़रब के अश्आ़र क्यूं और किस तरह याद हो गए ? इस लिये कि मैं जानता हूं कि आप ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नूरे नज़र हैं और वोह अश्आ़रे अ़रब के बहुत बड़े ह़ाफ़िज़ व माहिर थे मगर मैं इस बात पर बहुत ही ह़ैरान हूं कि आख़िर येह तिब्बी मा'लूमात और इ़लाज व मुआ़लजा की महारत आप को कहां से और कैसे ह़ासिल हो गई ? येह सुन कर ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया कि **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी आख़िरी उ़म्र शरीफ़ में अकसर अ़लील हो जाया करते थे और अ़रब व अ़जम के अतिब्बा आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये दवाएं तजवीज़ करते थे और मैं उन दवाओं से आप का इ़लाज किया करती थी इस लिये मुझे तिब्बी मा'लूमात भी ह़ासिल हो गईं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के शागिर्दों में सहा़बा और ताबिई़न की एक बहुत बड़ी जमाअ़त है और आप के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में बहुत सी ह़दीसें भी वारिद हुई हैं।

17 रमज़ान शबे सेह शम्बा सि. 57 हि. या सि. 58 हि. में मदीनए मुनव्वरह के अन्दर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का विसाल हुवा। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप की वसिय्यत के मुत़ाबिक़ रात में लोगों ने आप को जन्नतुल बक़ीअ़ के क़ब्रिस्तान में दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن की क़ब्रों के पहलू में दफ़्न किया।[1] (اکمال وحاشیہ اکمال ص۶۱۲ وزرقانی جلد۳ص۲۳۴تا۲۳۵)

ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के वालिदे माजिद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर इब्नुल ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हैं और इन की वालिदए माजिदा ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते मज़्ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا हैं जो एक मश्हूर सहा़बिया हैं। ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की पहली शादी ह़ज़रते ख़ुनैस बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से हुई और उन्हों ने अपने शोहर के साथ मदीनए त़य्यिबा को हिजरत भी की थी लेकिन इन के शोहर जंगे बद्र या जंगे उहु़द में ज़ख़्मी हो कर वफ़ात पा गए और येह बेवा हो गईं फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सि. 3 हि. में इन से निकाह़ फ़रमाया और उम्मुल मोमिनीन की हैसिय्यत से काशानए नबवी की सुकूनत से मुशर्रफ़ हो गईं।

येह बहुत ही शानदार, बुलन्द हिम्मत और सख़ावत शिआ़र ख़ातून हैं। ह़क़ गोई ह़ाज़िर जवाबी और फ़ह्मो फ़िरासत में अपने वालिदे बुज़ुर्गवार का मिज़ाज पाया था। अकसर रोज़ादार रहा करती थीं और

---

1 ......المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی،باب عائشة ام المؤمنین،ج٤،ص٣٨٩-٣٩٢
والاکمال فی اسماء الرجال،حرف العین ، عائشة الصدیقة ، ص٦١٢

तिलावते कुरआने मजीद और दूसरी क़िस्म क़िस्म की इबादतों में मसरूफ़ रहा करती थीं । इन के मिज़ाज में कुछ सख़्ती थी इस लिये हज़रते अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अल ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते थे कि कहीं इन की किसी सख़्त कलामी से **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दिल आज़ारी न हो जाए । चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बार बार इन से फ़रमाया करते थे कि ऐ हफ़्सा ! तुम को जिस चीज़ की ज़रूरत हो मुझ से तलब कर लिया करो, ख़बरदार कभी **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से किसी चीज़ का तक़ाज़ा न करना न **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की कभी हरगिज़ हरगिज़ दिल आज़ारी करना वरना याद रखो कि अगर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तुम से नाराज़ हो गए तो तुम ख़ुदा के ग़ज़ब में गरिफ़्तार हो जाओगी ।

येह बहुत बड़ी इबादत गुज़ार होने के साथ साथ फ़िक़्ह व हदीस में भी एक मुमताज़ दरजा रखती हैं । इन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से साठ हदीसें रिवायत की हैं जिन में से पांच हदीसें बुख़ारी शरीफ़ में मज़कूर हैं बाक़ी अहादीस दूसरी कुतुबे हदीस में दर्ज हैं ।

इल्मे हदीस में बहुत से सहाबा और ताबिईन इन के शागिर्दों की फ़ेहरिस्त में नज़र आते हैं जिन में ख़ुद इन के भाई अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बहुत मश्हूर हैं । शा'बान सि. 45 हि. में मदीनए मुनव्वरह के अन्दर इन की वफ़ात हुई उस वक़्त हज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की हुकूमत का ज़माना था और मरवान बिन हकम मदीने का हाकिम था । इसी ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और कुछ दूर तक इन के जनाज़े को भी उठाया फिर हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ क़ब्र तक जनाज़े को कांधा दिये चलते रहे । इन के दो भाई हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रते आसिम बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا और इन के तीन भतीजे हज़रते सालिम बिन अब्दुल्लाह व हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह व हज़रते

हम्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने इन को क़ब्र में उतारा और येह जन्नतुल बक़ीअ़ में दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن के पहलू में मदफ़ून हुईं। ब वक़्ते वफ़ात इन की उ़म्र साठ या तिरसठ बरस की थी।(1)

(زرقانی جلد۳ص۲۳۶تا۲۳۸)

ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا

इन का नाम हिन्द है और कुन्यत "उम्मे सलमह" है मगर येह अपनी कुन्यत के साथ ही ज़ियादा मश्हूर हैं। इन के बाप का नाम "हुज़ैफ़ा" और बा'ज़ मुअर्रिख़ीन के नज़्दीक "सह्ल" है मगर इस पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि इन की वालिदा "आ़तिका बिन्ते आ़मिर" हैं। इन का निकाह़ पहले ह़ज़रते अबू सलमह अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल असद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से हुवा था जो **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रज़ाई भाई थे। येह दोनों मियां बीवी ए'लाने नुबुव्वत के बा'द जल्द ही दामने इस्लाम में आ गए थे और सब से पहले इन दोनों ने ह़बशा की जानिब हिजरत की फिर येह दोनों ह़बशा से मक्कए मुकर्रमा आ गए और मदीनए मुनव्वरह की त़रफ़ हिजरत का इरादा किया। चुनान्चे ह़ज़रते अबू सलमह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ऊंट पर कजावा बांधा और ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमह और अपने फ़रज़न्द सलमह को कजावे में सुवार कर दिया मगर जब ऊंट की नकील पकड़ कर ह़ज़रते अबू सलमह रवाना हुए तो ह़ज़रते उम्मे सलमह के मैके वाले बनू मुग़ीरा दौड़ पड़े और उन लोगों ने येह कहा कि हम अपने ख़ानदान की इस लड़की को हरगिज़ हरगिज़ मदीने नहीं जाने देंगे और ज़बर दस्ती उन को ऊंट से उतार लिया। येह देख कर ह़ज़रते अबू सलमह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ख़ानदानी लोगों को भी तैश आ गया और उन लोगों ने ग़ज़ब नाक हो कर कहा कि तुम लोग उम्मे सलमह को मह़्ज़ इस बिना पर रोकते हो कि येह तुम्हारे ख़ानदान की लड़की है तो हम इस के बच्चे "सलमह" को हरगिज़ हरगिज़ तुम्हारे पास नहीं रहने

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانى،باب حفصة ام المؤمنين ، ج٤، ص ٣٩٣،٣٩٦

देंगे इस लिये कि येह बच्चा हमारे ख़ानदान का एक फ़र्द है। येह कह कर उन लोगों ने बच्चे को उस की मां की गोद से छीन लिया मगर ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हिजरत का इरादा तर्क नहीं किया बल्कि बीवी और बच्चे दोनों को छोड़ कर तन्हा मदीनए मुनव्वरह चले गए। ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने शोहर और बच्चे की जुदाई पर सुब्ह़ से शाम तक मक्का की पथरीली ज़मीन में किसी चट्टान पर बैठी हुई तक़रीबन सात दिनों तक ज़ारो क़ित़ार रोती रहीं इन का येह ह़ाल देख कर इन के एक चचाज़ाद भाई को इन पर रह़्म आ गया और उस ने बनू मुग़ीरा को समझा बुझा कर येह कहा कि आख़िर इस मिस्कीना को तुम लोगों ने इस के शोहर और बच्चे से क्यूं जुदा कर रखा है? तुम लोग क्यूं नहीं इस को इजाज़त दे देते कि वोह अपने बच्चे को साथ ले कर अपने शोहर के पास चली जाए। बिल आख़िर बनू मुग़ीरा इस पर रिज़ा मन्द हो गए कि येह मदीने चली जाए। फिर ह़ज़रते अबू सलमह के ख़ानदान वाले बनू अ़ब्दुल असद ने भी बच्चे को ह़ज़रते उम्मे सलमह के सिपुर्द कर दिया और ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बच्चे को गोद में ले कर ऊंट पर सुवार हो गईं और अकेली मदीने को चल पड़ीं मगर जब मक़ामे "तन्ईम" में पहुंचीं तो उ़समान बिन त़ल्ह़ा से मुलाक़ात हो गई जो मक्का का माना हुवा एक निहायत ही शरीफ़ इन्सान था उस ने पूछा कि ऐ उम्मे सलमह! कहां का इरादा है? इन्हों ने कहा कि मैं अपने शोहर के पास मदीने जा रही हूं। उस ने कहा कि क्या तुम्हारे साथ कोई दूसरा नहीं है? ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दर्द भरी आवाज़ में जवाब दिया कि नहीं मेरे साथ **अल्लाह** और मेरे इस बच्चे के सिवा कोई नहीं है। येह सुन कर उ़समान बिन त़ल्ह़ा की रगे शराफ़त फड़क उठी और उस ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! मेरे लिये येह ज़ैब नहीं देता कि तुम्हारी जैसी एक शरीफ़ ज़ादी और एक शरीफ़ इन्सान की बीवी को तन्हा छोड़ दूं। येह कह कर उस ने ऊंट की मुहार अपने हाथ में ले ली और पैदल चलने लगा ह़ज़रते उम्मे

सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बयान है कि खुदा की क़सम ! मैं ने उ़समान बिन त़ल्ह़ा से ज़ियादा शरीफ़ किसी अ़रब को नहीं पाया। जब हम किसी मन्ज़िल पर उतरते तो वोह अलग किसी दरख़्त के नीचे लेट जाता और मैं अपने ऊंट के पास सो रहती। फिर रवानगी के वक़्त जब मैं अपने बच्चे को गोद में ले कर ऊंट पर सुवार हो जाती तो वोह ऊंट की मुहार पकड़ कर चलने लगता। इसी त़रह़ उस ने मुझे क़ुबा तक पहुंचा दिया और वहां से वोह येह कह कर मक्का चला गया कि अब तुम चली जाओ तुम्हारा शोहर इसी गाऊं में है। चुनान्चे ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इस त़रह़ ब ख़ैरिय्यत मदीनए मुनव्वरह पहुंच गईं।[1]

(زرقانی جلد۳ص۲۳۹)

येह दोनों मियां बीवी आ़फ़िय्यत के साथ मदीनए मुनव्वरह में रहने लगे मगर 4 हिजरी में जब इन के शोहर ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इनतिक़ाल हो गया तो बा वुजूदे कि इन के चन्द बच्चे थे मगर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से निकाह़ फ़रमा लिया और येह अपने बच्चों के साथ काशानए नुबुव्वत में रहने लगीं और उम्मुल मोमिनीन के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से सरफ़राज़ हो गईं।

ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا हुस्नो जमाल के साथ साथ अ़क़्लो फ़ह्म के कमाल का भी एक बे मिसाल नुमूना थीं। इमामुल ह़रमैन का बयान है कि मैं ह़ज़रते उम्मे सलमह के सिवा किसी औ़रत को नहीं जानता कि उस की राय हमेशा दुरुस्त साबित हुई हो। सुल्ह़े हुदैबिया के दिन जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को हुक्म दिया कि अपनी अपनी क़ुरबानियां कर के सब लोग एह़राम खोल दें और बिग़ैर उ़मरह अदा किये सब लोग मदीने वापस चले जाएं क्यूं कि इसी शर्त़ पर सुल्ह़े हुदैबिया हुई है। तो लोग इस क़दर रन्जो ग़म में थे कि एक शख़्स भी

[1] ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني ،باب في ذكر ازواجه...الخ،ج٤،ص٣٦٠وباب ام سلمة ام المؤمنين ، ج٤، ص ٣٩٦،٣٩٨

कुरबानी के लिये तय्यार नहीं था। हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُم के इस तर्जे अमल से रूहानी कोफ्त हुई और आप ने मुआमले का हज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا से तज़किरा किया तो उन्हों ने येह राय दी कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप किसी से कुछ भी न फ़रमाएं और खुद अपनी कुरबानी ज़ब्ह कर के अपना एहराम उतार दें। चुनान्चे हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा ही किया येह देख कर कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एहराम खोल दिया है सब सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُم मायूस हो गए कि अब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सुल्हे हुदैबिया के मुआहदे को हरगिज़ हरगिज़ न बदलेंगे इस लिये सब सहाबा ने भी अपनी अपनी कुरबानियां कर के एहराम उतार दिया और सब लोग मदीनए मुनव्वरह वापस चले गए।

हुस्नो जमाल और अक्ल व राय के साथ साथ फ़िक्ह व हदीस में भी इन की महारत खुसूसी तौर पर मुमताज़ थी। तीन सो अठत्तर हदीसें इन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत की हैं और बहुत से सहाबा व ताबिईन हदीस में इन के शागिर्द हैं और इन के शागिर्दों में हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُم भी शामिल हैं। मदीनए मुनव्वरह में चोरासी बरस की उम्र पा कर वफ़ात पाई और इन की वफ़ात का साल सि. 53 हि. है। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और येह जन्नतुल बक़ीअ में अज़्वाजे मुतहहरात رضی اللہ تعالٰی عنہن के क़ब्रिस्तान में मदफ़ून हुईं। बा'ज़ मुअर्रिख़ीन का क़ौल है कि इन के विसाल का साल सि. 59 हि. है और इब्राहीम हर्बी ने फ़रमाया कि सि. 62 हि. में इन का इनतिक़ाल हुवा और बा'ज़ कहते हैं कि सि. 63 हि. के बा'द इन की वफ़ात हुई है।[1] (زرقانی جلد۳ص ۲۳۸ تا ۲۴۲ واکمال وحاشیۂ اکمال ص ۵۹۹) وَاللّٰه تَعَالٰى اَعلم

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني،باب ام سلمة ام المؤمنين،ج٤،ص٣٩٦۔٤٠٣ وباب امر الحديبية،ج٣،ص ٢٢٦

ومدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب دوم ، ج٢، ص٤٧٦

हज़रते उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

इन का अस्ली नाम "रमला" है । येह सरदारे मक्का अबू सुफ़्यान बिन हर्ब की साहिब ज़ादी हैं और इन की वालिदा का नाम सफ़िय्या बिन्ते अबुल आस है जो अमीरुल मोमिनीन हज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फूफी हैं ।

येह पहले उ़बैदुल्लाह बिन जहश के निकाह में थीं और मियां बीवी दोनों ने इस्लाम क़बूल किया और दोनों हिजरत कर के हबशा चले गए थे । लेकिन हबशा पहुंच कर इन के शोहर उ़बैदुल्लाह बिन जहश पर ऐसी बद नसीबी सुवार हो गई कि वोह इस्लाम से मुर्तद हो कर नसरानी हो गया और शराब पीते पीते नसरानियत ही पर वोह मर गया ।

इब्ने सा'द ने हज़रते उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से येह रिवायत की है कि उन्हों ने हबशा में एक रात में ख़्वाब देखा कि उन के शोहर उ़बैदुल्लाह बिन जहश की सूरत अचानक बहुत ही बदनुमा और बद शक्ल हो गई वोह इस ख़्वाब से बहुत ज़ियादा घबरा गईं । जब सुब्ह हुई तो उन्हों ने अचानक येह देखा कि उन के शोहर उ़बैदुल्लाह बिन जहश ने इस्लाम से मुर्तद हो कर नसरानी दीन क़बूल कर लिया, हज़रते उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने शोहर को अपना ख़्वाब सुना कर डराया और इस्लाम की त़रफ़ बुलाया मगर उस बद नसीब ने इस पर कान नहीं धरा और मुर्तद होने ही की ह़ालत में मर गया मगर हज़रते उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने इस्लाम पर इस्तिक़ामत के साथ साबित क़दम रहीं । जब **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इन की ह़ालत मा'लूम हुई तो क़ल्बे नाज़ुक पर बेहद सदमा गुज़रा और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की दिलजूई के लिये हज़रते अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नज्जाशी बादशाहे हबशा के पास भेजा और ख़त़ लिखा कि तुम मेरे वकील बन कर हज़रते उम्मे हबीबा के साथ मेरा निकाह कर दो । नज्जाशी को जब येह फ़रमाने नुबुव्वत पहुंचा तो उस ने अपनी एक ख़ास लौंडी को जिस

का नाम ''अबरहा'' था ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास भेजा और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पैग़ाम की ख़बर दी। ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इस खुश ख़बरी को सुन कर इस क़दर खुश हुई कि अपने कुछ ज़ेवरात इस बिशारत के इन्आ़म में अबरहा लौंडी को इन्आ़म के त़ौर पर दे दिये और ह़ज़रते ख़ालिद बिन सईद बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को जो उन के मामूं के लड़के थे अपने निकाह़ का वकील बना कर नज्जाशी के पास भेज दिया। नज्जाशी ने अपने शाही मह़ल में निकाह़ की मजलिस मुन्अ़क़िद की और ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब और दूसरे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को जो उस वक़्त ह़बशा में मौजूद थे इस मजलिस में बुलाया और खुद ही ख़ुत़्बा पढ़ कर सब के सामने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ज़रते बीबी उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के साथ निकाह़ कर दिया और चार सो दीनार अपने पास से महर अदा किया जो उसी वक़्त ह़ज़रते ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सिपुर्द कर दिया गया। जब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم इस निकाह़ की मजलिस से उठने लगे तो नज्जाशी बादशाह ने कहा कि आप लोग बैठे रहिये अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام का येह त़रीक़ा है कि निकाह़ के वक़्त खाना खिलाया जाता है। येह कह कर नज्जाशी ने खाना मंगाया और तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم शिकम सैर खाना खा कर अपने अपने घरों को रवाना हुए फिर नज्जाशी ने ह़ज़रते शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को मदीनए मुनव्वरह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेज दिया और ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने ह़रमे नबवी में दाख़िल हो कर उम्मुल मोमिनीन का मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब पा लिया।

हज़रते उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا बहुत पाकीज़ा ज़ात व हमीदा सिफ़ात की जामेअ और निहायत ही बुलन्द हिम्मत और सख़ी तबीअत की मालिक थीं और बहुत ही क़विय्युल ईमान थीं। इन के वालिद अबू सुफ्यान जब कुफ्र की हालत में थे और सुल्हे हुदैबिया की तजदीद के लिये मदीना आए तो बे तकल्लुफ़ उन के मकान में जा कर बिस्तरे नुबुव्वत पर बैठ गए। हज़रते उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا ने अपने बाप की ज़रा भी परवा नहीं की और येह कह कर अपने बाप को बिस्तर से उठा दिया कि येह बिस्तरे नुबुव्वत है। मैं कभी येह गवारा नहीं कर सकती कि एक नापाक मुशरिक इस पाक बिस्तर पर बैठे।

हज़रते उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا ने पैंसठ हदीसें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत की हैं जिन में से दो हदीसें बुख़ारी व मुस्लिम दोनों किताबों में मौजूद हैं और एक हदीस वोह है जिस को तन्हा मुस्लिम ने रिवायत किया है। बाक़ी हदीसें हदीस की दूसरी किताबों में मौजूद हैं। इन के शागिर्दों में इन के भाई हज़रते अमीरे मुआविया और इन की साहिब ज़ादी हज़रते हबीबा और इन के भान्जे अबू सुफ्यान बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُم बहुत मशहूर हैं।

सि. 44 हि. में मदीनए मुनव्वरह के अन्दर इन की वफ़ात हुई और जन्नतुल बक़ीअ में अज़्वाजे मुतहहरात رضی اللہ تعالٰی عنھن के हज़ीरे में मदफ़ून हुई।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۴۲تا۲۴۵ومدارج النبوۃ ج۲ص۴۸۱تا۴۸۲)

हज़रते ज़ैनब बिन्ते जहश رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا

येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी हज़रते उमैमा बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब की साहिब ज़ादी हैं। हुजूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रते ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ से इन का

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،باب ام حبيبة ام المؤمنين،ج٤،ص٤٠٣،٤٠٨
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ،باب دوم ، ج ٢ ،ص ٤٨١،٤٨٢

निकाह़ कर दिया था मगर चूंकि ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ख़ानदाने क़ुरैश की एक बहुत ही शानदार ख़ातून थीं और हुस्नो जमाल में भी येह ख़ानदाने क़ुरैश की बे मिसाल औ़रत थीं और ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को गो कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आज़ाद कर के अपना मुतबन्ना (मुंह बोला बेटा) बना लिया था मगर फिर भी चूंकि वोह पहले ग़ुलाम थे इस लिये ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا इन से ख़ुश नहीं थीं और अकसर मियां बीवी में अनबन रहा करती थी यहां तक कि ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इन को त़लाक़ दे दी। इस वाक़िए़ से फ़ित़्री त़ौर पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे नाज़ुक पर सदमा गुज़रा। चुनान्चे जब इन की इ़द्दत गुज़र गई तो मह़्ज़ ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की दिलजूई के लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के पास अपने निकाह़ का पैग़ाम भेजा। रिवायत है कि येह पैग़ामे बिशारत सुन कर ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और सज्दे में सर रख कर येह दुआ़ मांगी कि ख़ुदा वन्दा ! तेरे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे निकाह़ का पैग़ाम दिया है अगर मैं तेरे नज़्दीक उन की ज़ौजिय्यत में दाख़िल होने के लाइक़ औ़रत हूं तो या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू उन के साथ मेरा निकाह़ फ़रमा दे इन की येह दुआ़ फ़ौरन ही क़बूल हो गई और येह आयत नाज़िल हो गई कि

فَلَمَّا قَضٰی زَیۡدٌ مِّنۡھَا وَطَرًا زَوَّجۡنٰکَھَا (1)(احزاب)

जब ज़ैद ने उस से ह़ाजत पूरी कर ली (ज़ैनब को त़लाक़ दे दी और इ़द्दत गुज़र गई) तो हम ने उस (ज़ैनब) का आप के साथ निकाह़ कर दिया।

इस आयत के नुज़ूल के बा'द हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि कौन है जो ज़ैनब के पास जाए और उस को येह ख़ुश

(1) ......پ ۲۲، الاحزاب:۳۷

ख़बरी सुनाए कि अल्लाह तआ़ला ने मेरा निकाह़ उस के साथ फ़रमा दिया है। येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की एक ख़ादिमा दौड़ती हुई ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास पहुंचीं और येह आयत सुना कर ख़ुश ख़बरी दी। ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا इस बिशारत से इस क़दर ख़ुश हुईं कि अपना ज़ेवर उतार कर उस ख़ादिमा को इन्आ़म में दे दिया और ख़ुद सज्दे में गिर पड़ीं और इस ने'मत के शुक्रिया में दो माह लगातार रोज़ादार रहीं।

रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस के बा'द ना गहां ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मकान में तशरीफ़ ले गए उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! बिग़ैर ख़ुत़्बा और बिग़ैर गवाह के आप ने मेरे साथ निकाह़ फ़रमा लिया ? इरशाद फ़रमाया कि तेरे साथ मेरा निकाह़ अल्लाह तआ़ला ने कर दिया है और ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام और दूसरे फ़िरिश्ते इस निकाह़ के गवाह हैं। **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इन के निकाह़ पर जितनी बड़ी दा'वते वलीमा फ़रमाई इतनी बड़ी दा'वते वलीमा अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن में से किसी के निकाह़ के मौक़अ़ पर भी नहीं फ़रमाई। आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ निकाह़ की दा'वते वलीमा में तमाम सह़ाबए किराम को नान व गोश्त खिलाया।

इन के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में चन्द अह़ादीस भी मरवी हैं। चुनान्चे रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरी वफ़ात के बा'द तुम अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से मेरी वोह बीवी सब से पहले वफ़ात पा कर मुझ से आन मिलेगी जिस का हाथ सब से ज़ियादा लम्बा है। येह सुन कर तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن ने एक लकड़ी से अपना हाथ नापा तो ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का

हाथ सब से ज़ियादा लम्बा निकला लेकिन जब हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द अज़्वाजे मुतहहरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن में से सब से पहले हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने वफ़ात पाई तो उस वक़्त लोगों को पता चला कि हाथ लम्बा होने से मुराद कसरत से सदक़ा देना था। क्यूं कि हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا अपने हाथ से कुछ दस्त कारी का काम करती थीं और उस की आमदनी फ़ुक़रा व मसाकीन पर सदक़ा कर दिया करती थीं।

इन की वफ़ात की ख़बर जब हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास पहुंची तो उन्हों ने कहा कि हाए एक क़ाबिले ता'रीफ़ औरत जो सब के लिये नफ़्अ़ बख़्श थी और यतीमों और बूढ़ी औरतों का दिल ख़ुश करने वाली थी आज दुन्या से चली गई, हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बयान है कि मैं ने भलाई और सच्चाई में और रिश्तेदारों के साथ मेहरबानी के मुआ़मले में हज़रते ज़ैनब से बढ़ कर किसी औरत को नहीं देखा।

मन्क़ूल है कि हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا अज़्वाजे मुतहहरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن से अकसर येह कहा करती थीं कि मुझ को ख़ुदा वन्दे तआ़ला ने एक ऐसी फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई है जो अज़्वाजे मुतहहरात में से किसी को भी नसीब नहीं हुई क्यूं कि तमाम अज़्वाजे मुतहहरात का निकाह तो उन के बाप दादाओं ने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ किया लेकिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मेरा निकाह अल्लाह तआ़ला ने कर दिया।

इन्हों ने ग्यारह हदीसें हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत की हैं जिन में से दो हदीसें बुख़ारी व मुस्लिम दोनों किताबों में मज़्कूर हैं। बाक़ी नव हदीसें दूसरी कुतुबे अहादीस में लिखी हुई हैं।

मन्क़ूल है कि जब हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की वफ़ात का हाल अमीरुल मोमिनीन हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को मा'लूम हुवा तो

आप ने हुक्म दे दिया कि मदीने के हर कूचा व बाज़ार में येह ए'लान कर दिया जाए कि तमाम अहले मदीना अपनी मुक़द्दस मां की नमाज़े जनाज़ा के लिये हाज़िर हो जाएं। अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़ुद ही इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और येह जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न की गईं। सि. 20 हि. या सि. 21 हि. में 53 बरस की उम्र पा कर मदीनए मुनव्वरह में दुन्या से रुख़्सत हुईं।[1] (مدارج النبوۃ جلد۲ص۴۷۶تا۴۷۸وغیرہ)

हज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

ज़मानए जाहिलिय्यत में चूंकि येह ग़ुरबा और मसाकीन को ब कसरत खाना खिलाया करती थीं इस लिये इन का लक़ब "उम्मुल मसाकीन" (मिस्कीनों की मां) है पहले इन का निकाह़ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुवा था मगर जब वोह जंगे उहुद में शहीद हो गए तो सि. 3 हि. में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से निकाह़ फ़रमा लिया और येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह़ के बा'द सिर्फ़ दो महीने या तीन महीने ज़िन्दा रहीं और रबीउ़ल आख़िर सि. 4 हि. में तीस बरस की उम्र पा कर वफ़ात पा गईं और जन्नतुल बक़ीअ़ के क़ब्रिस्तान में दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن के साथ दफ़्न हुईं येह मां की जानिब से ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन हैं।[2] (زرقانی جلد۳ص۲۴۹)

ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

इन के वालिद का नाम ह़ारिस बिन ह़ज़्न है और इन की वालिदा हिन्द बिन्ते औ़फ़ हैं। ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम पहले "बर्रह" था लेकिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम बदल कर "मैमूना" (बरकत दिहन्दा) रख दिया।

---

1 ...... مدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب دوم ، ج ۲ ، ص ٤٧٦ ، ٤٧٩

2 ......المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی،باب زینب ام المساکین والمؤمنین،ج٤،ص٤١٦،٤١٧

येह पहले अबू रहम बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा के निकाह़ में थीं मगर जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सि. 7 हि. में उ़म्रतुल क़ज़ा के लिये मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले गए तो येह बेवा हो चुकी थीं ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इन के बारे में हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू की और आप ने इन से निकाह़ फ़रमा लिया और उ़म्रतुल क़ज़ा से वापसी पर मक़ामे "सरफ़" में इन को अपनी सोह़बत से सरफ़राज़ फ़रमाया।

ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا की सगी बहनें चार हैं जिन के नाम येह हैं :

﴾1﴿ उम्मुल फ़ज़्ल लुबाबतिल कुब्रा : येह हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की बीवी हैं और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ इन ही के शिकम से पैदा हुए।

﴾2﴿ लुबाबतिस्सुग़रा : येह ह़ज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद सैफ़ुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की वालिदा हैं।

﴾3﴿ इस्मा : येह उबय्य बिन ख़लफ़ से बियाही गई थीं। इन्हों ने इस्लाम क़बूल किया और सह़ाबिय्यात में इन का शुमार है।

﴾4﴿ इ़ज़्ज़ह : येह भी सह़ाबिय्या हैं जो ज़ियाद बिन मालिक के घर में थीं।

ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا की इन सगी बहनों के इ़लावा वोह बहनें जो सिर्फ़ मां की जानिब से हैं वोह भी चार हैं जिन के नाम येह हैं :

﴾1﴿ अस्मा बिन्ते उ़मैस : येह पहले ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के घर में थीं इन से अ़ब्दुल्लाह व औ़न व मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم तीन फ़रज़न्द पैदा हुए फिर जब ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ "जंगे मौता" में शहीद हो गए तो इन से ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने निकाह़ कर लिया और इन से मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ पैदा हुए फिर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की वफ़ात के बा'द ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इन से अ़क़्द फ़रमा लिया और इन से भी एक फ़रज़न्द पैदा हुए जिन का नाम "यह़्या" था।

﴾2﴿ सलमा बिन्ते उमैस : येह पहले सय्यिदुश्शुहदा हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के निकाह में आई और इन से एक साहिब ज़ादी पैदा हुई जिन का नाम "उम्मतुल्लाह" था हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शहादत के बा'द इन से शद्दाद बिन अल्हाद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने निकाह कर लिया और इन से अ़ब्दुल्लाह व अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا दो फ़रज़न्द पैदा हुए।

﴾3﴿ सलमा बिन्ते उमैस : इन का निकाह अ़ब्दुल्लाह बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से हुवा था।

﴾4﴿ उम्मुल मोमिनीन हज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا जो उम्मुल मसाकीन के लक़ब से मशहूर हैं जिन का ज़िक्रे ख़ैर ऊपर गुज़र चुका है।

हज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की वालिदा "हिन्द बिन्ते औ़फ़" के बारे में आ़म तौ़र पर येह कहा जाता था कि दामादों के ए'तिबार से रूए ज़मीन पर कोई बुढ़िया इन से ज़ियादा ख़ुश नसीब नहीं हुई क्यूं कि इन के दामादों की फ़ेहरिस्त में मुन्दरिजए ज़ैल हस्तियां हैं :

﴾1﴿ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ﴾2﴿ हज़रते अबू बक्र ﴾3﴿ हज़रते अ़ली ﴾4﴿ हज़रते हम्ज़ा ﴾5﴿ हज़रते अ़ब्बास ﴾6﴿ हज़रते शद्दाद बिन अल्हाद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم । येह सब के सब बुज़ुर्गवार "हिन्द बिन्ते औ़फ़" رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के दामाद हैं।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۵۱ومدارج جلد۲ص۴۸۴)

हज़रते बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कुल छिहत्तर ह़दीसें मरवी हैं जिन में से सात ह़दीसें ऐसी हैं जो बुख़ारी व मुस्लिम दोनों किताबों में मज़कूर हैं और एक ह़दीस सिर्फ़ बुख़ारी में है और एक ऐसी ह़दीस है जो सिर्फ़ मुस्लिम में है और बाक़ी ह़दीसें अह़ादीस की दूसरी किताबों में मज़कूर हैं।

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانی ، باب ميمونة ام المؤمنين ، ج٤، ص٤١٨، ٤١٩
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب دوم ، ج ٢، ص٤٨٣، ٤٨٤

येह हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आख़िरी ज़ौजए मुबारका हैं इन के बा'द हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी दूसरी औ़रत से निकाह़ नहीं फ़रमाया इन के इनतिक़ाल के साल में मुअर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है। मगर क़ौले मश्हूर येह है कि इन्हों ने सि. 51 हि. में ब मक़ाम "सरफ़" वफ़ात पाई जहां रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन से ज़िफ़ाफ़ फ़रमाया था। इब्ने सा'द ने वाक़िदी से नक़्ल किया है कि इन्हों ने सि. 61 हि. में वफ़ात पाई और इब्ने इस्ह़ाक़ का क़ौल है कि सि. 63 हि. इन के इनतिक़ाल का साल है। (وَاللّٰه تَعَالٰى اَعلم)

इन की वफ़ात के वक़्त इन के भान्जे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُمَا मौजूद थे और उन्हों ने ही आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और इन को क़ब्र में उतारा, मुह़द्दिस अ़त़ा का बयान है कि हम लोग ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُمَا के साथ ह़ज़रते बीबी मैमूना رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهَا के जनाज़े में शरीक थे। जब जनाज़ा उठाया गया तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُمَا ने ब आवाज़े बुलन्द फ़रमाया कि ऐ लोगो ! येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बीवी हैं। तुम लोग इन के जनाज़े को बहुत आहिस्ता आहिस्ता ले कर चलो और इन की मुक़द्दस लाश न झंझोड़ो। ह़ज़रते यज़ीद बिन असम رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं कि हम लोगों ने ह़ज़रते बीबी मैमूना رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهَا को मक़ामे सरफ़ में उसी छप्पर की जगह दफ़्न किया जिस में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को पहली बार अपनी क़ुर्बत से सरफ़राज़ फ़रमाया था।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۵۳)

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانی،باب ميمونة ام المؤمنين،ج٤،ص٤٢٣،٤٢٤
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب دوم،ج٢،ص ٤٨٥

हज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا

येह क़बीलए बनी मुस्त़लिक़ के सरदारे आ'ज़म ह़ारिस बिन अबू ज़रार की बेटी हैं "ग़ज़्वए मुरैसीअ़" में जो कुफ़्फ़ार मुसलमानों के हाथों में गरिफ़्तार हो कर क़ैदी बनाए गए थे उन ही क़ैदियों में ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا भी थीं। जब क़ैदियों को लौंडी ग़ुलाम बना कर मुजाहिदीन पर तक़्सीम कर दिया गया तो ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا ह़ज़रते साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के ह़िस्से में आईं। उन्हों ने मुकातबत कर ली या'नी येह लिख कर दे दिया कि तुम इतनी इतनी रक़म मुझे दे दो तो मैं तुम को आज़ाद कर दूंगा, ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं अपने क़बीले के सरदारे आ'ज़म ह़ारिस बिन अबू ज़रार की बेटी हूं और मुसलमान हो चुकी हूं। साबित बिन क़ैस ने मुझे मुकातबा बना दिया है मगर मेरे पास इतनी रक़म नहीं है कि मैं बदले किताबत अदा कर के आज़ाद हो जाऊं इस लिये आप इस वक़्त मेरी माली इमदाद फ़रमाएं क्यूं कि मेरा तमाम ख़ानदान इस जंग में गरिफ़्तार हो चुका है और हमारे तमाम माल व सामान मुसलमानों के हाथों में माले ग़नीमत बन चुके हैं और मैं इस वक़्त बिल्कुल ही मुफ़्लिसी व बे कसी के आ़लम में हूं। हुज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को उन की फ़रयाद सुन कर उन पर रह़्म आ गया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अगर मैं इस से बेहतर सुलूक तुम्हारे साथ करूं तो क्या तुम इस को मंज़ूर कर लोगी ? उन्हों ने पूछा कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप मेरे साथ इस से बेहतर सुलूक क्या फ़रमाएंगे ? आप ने फ़रमाया कि मैं येह चाहता हूं कि तुम्हारे बदले किताबत की तमाम रक़म मैं ख़ुद तुम्हारी त़रफ़ से अदा कर दूं और फिर तुम को आज़ाद कर के मैं ख़ुद तुम से निकाह़ कर लूं ताकि तुम्हारा ख़ानदानी ए'ज़ाज़ व वक़ार बर क़रार रह

जाए । येह सुन कर ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की शादमानी व मसर्रत की कोई इनतिहा न रही । उन्हों ने इस ए'ज़ाज़ को ख़ुशी ख़ुशी मंज़ूर कर लिया। चुनान्चे **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बदले किताबत की सारी रक़म अदा फ़रमा कर और इन को आज़ाद कर के अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالیٰ عنھن में शामिल फ़रमा लिया और येह उम्मुल मोमिनीन के ए'ज़ाज़ से सरफ़राज़ हो गईं ।

जब इस्लामी लश्कर में येह ख़बर फैली कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से निकाह़ फ़रमा लिया तो तमाम मुजाहिदीन एक ज़बान हो कर कहने लगे कि जिस ख़ानदान में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने निकाह़ फ़रमा लिया उस ख़ानदान का कोई फ़र्द लौंडी ग़ुलाम नहीं रह सकता। चुनान्चे उस ख़ानदान के जितने लौंडी ग़ुलाम मुजाहिदीने इस्लाम के क़ब्ज़े में थे फ़ौरन ही सब के सब आज़ाद कर दिये गए।

येही वजह है कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا येह फ़रमाया करती थीं कि दुन्या में किसी औ़रत का निकाह़ ह़ज़रते जुवैरिया के निकाह़ से बढ़ कर मुबारक नहीं साबित हुवा क्यूंकि इस निकाह़ की वजह से तमाम ख़ानदाने बनी मुस्त़लिक़ को ग़ुलामी से नजात ह़ासिल हो गई।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۵۴)

ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बयान है कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मेरे क़बीले में तशरीफ़ लाने से तीन रात पहले मैं ने येह ख़्वाब देखा था कि मदीने की जानिब से एक चांद चलता हुवा आया और मेरी गोद में गिर पड़ा मैं ने किसी से इस ख़्वाब का तज़्किरा नहीं किया लेकिन जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से निकाह़ फ़रमा लिया तो मैं ने समझ लिया कि येही उस ख़्वाब की ता'बीर है।[2] (زرقانی جلد۳ص۲۵۴)

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،باب جويرية ام المؤمنين،ج٤،ص٤٢٤۔٤٢٦

2 ......شرح الزرقاني على المواهب ، باب جويرية ام المؤمنين ،ج٤، ص ٤٢٦

इन का अस्ली नाम "बर्रह" (नेकूकार) था लेकिन चूंकि इस नाम से बुज़ुर्गी और बड़ाई का इज़्हार होता था इस लिये आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने इन का नाम बदल कर "जुवैरिया" (छोटी लड़की) रख दिया येह बहुत ही इबादत गुज़ार औरत थीं नमाज़े फ़ज्र से नमाज़े चाश्त तक हमेशा अपने विर्दो वज़ाइफ़ में मश्ग़ूल रहा करती थीं।[1] (مدارج جلد۲ص۴۷۹)

हज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के दो भाई अ़म्र बिन अल हारिस और अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस और इन की एक बहन अ़म्रह बिन्ते हारिस येह तीनों भी मुसलमान हो कर शरफ़े सहाबिय्यत से सर बुलन्द हुए।

इन के भाई अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस के इस्लाम लाने का वाक़िआ़ बहुत ही तअ़ज्जुब ख़ैज़ भी है और दिलचस्प भी, येह अपनी क़ौम के क़ैदियों को छुड़ाने के लिये दरबारे रिसालत में हाज़िर हुए इन के साथ चन्द ऊंटनियां और लौंडी थी। इन्हों ने उन सब को एक पहाड़ की घाटी में छुपा दिया और तन्हा बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और असीराने जंग की रिहाई के लिये दरख़्वास्त पेश की। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम क़ैदियों के फ़िदये के लिये क्या लाए हो? इन्हों ने कहा कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम्हारी वोह ऊंटनियां क्या हुईं? और तुम्हारी वोह लौंडी किधर गई? जिसे तुम फ़ुलां घाटी में छुपा कर आए हो। ज़बाने रिसालत से येह इल्मे ग़ैब की ख़बर सुन कर अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस हैरान रह गए कि आख़िर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم को मेरी लौंडी और ऊंटनियों की ख़बर किस तरह हो गई एक दम इन के अंधेरे दिल में **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب دوم ، ج۲، ص ٤٧٩

की सदाक़त और आप की नुबुव्वत का नूर चमक उठा और वोह फ़ौरन ही कलिमा पढ़ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए।[1] (کتاب الاستیعاب)

हज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने सात ह़दीसें भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत की हैं जिन में से दो ह़दीसें बुख़ारी शरीफ़ में और दो ह़दीसें मुस्लिम शरीफ़ में हैं बाक़ी तीन ह़दीसें दूसरी किताबों में मज़्कूर हैं। और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, ह़ज़रते उ़बैद बिन सबाक़ और इन के भतीजे ह़ज़रते तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم वग़ैरा ने इन से रिवायत की है।[2] (مدارج النبوۃ جلد۲ص۴۸۱وزرقانی جلد۳ص۲۵۵)

सि. 50 हि. में पैंसठ बरस की उ़म्र पा कर इन्हों ने मदीनए त़य्यिबा में वफ़ात पाई और ह़ाकिमे मदीना मरवान ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और येह जन्नतुल बक़ीअ़ के क़ब्रिस्तान में मदफ़ून हुईं।[3]

(زرقانی جلد۳ص۲۵۵ومدارج النبوۃ جلد۲ص۴۸۱)

ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

इन का अस्ली नाम ज़ैनब था। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम "सफ़िय्या" रख दिया। येह यहूदियों के क़बीले बनू नज़ीर के सरदारे आ'ज़म हुयैय बिन अख़्त़ब की बेटी हैं और इन की मां का नाम ज़रह बिन्ते समूइल है। येह ख़ानदाने बनी इस्राईल में से ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के भाई ह़ज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद में से हैं और इन का शोहर किनाना बिन अबिल हुक़ैक़ भी बनू नज़ीर का रईसे आ'ज़म था जो जंगे ख़ैबर में क़त्ल हो गया।

---

1 ......الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، حرف العین، عبداللّٰہ بن الحارث الخزاعی، ج۳، ص۲۰

2 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی، باب جویریۃ ام المؤمنین، ج٤، ص٤٢٨
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب دوم، ج۲، ص٤٨١

3 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی ، باب جویریۃ ام المؤمنین، ج٤، ص٤٢٨

मुहर्रम सि. 7 हि. में जब ख़ैबर को मुसलमानों ने फ़त्ह़ कर लिया और तमाम असीराने जंग गरिफ़्तार कर के इकठ्ठा जम्अ़ किये गए तो उस वक़्त ह़ज़रते दह़िय्या बिन ख़लीफ़ कल्बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और एक लौंडी त़लब की, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपनी पसन्द से इन क़ैदियों में से कोई लौंडी ले लो। उन्हों ने ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को ले लिया मगर एक सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर की शाहज़ादी हैं। इन के ख़ानदानी ए'ज़ाज़ का तक़ाज़ा है कि आप उन को अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात में शामिल फ़रमा लें। चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को ह़ज़रते दह़िय्या कल्बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से ले लिया और उन के बदले में उन्हें एक दूसरी लौंडी अ़त़ा फ़रमा दी फिर ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को आज़ाद फ़रमा कर उन से निकाह़ फ़रमा लिया और जंगे ख़ैबर से वापसी में तीन दिनों तक मन्ज़िले सहबा में इन को अपने ख़ैमे के अन्दर अपनी क़ुर्बत से सरफ़राज़ फ़रमाया और दा'वते वलीमा में खजूर, घी, पनीर का मालीदा सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم को खिलाया जिस का मुफ़स्सल तज़किरा जंगे ख़ैबर में गुज़र चुका। **हुज़ूरे** अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते बीबी सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पर बहुत ही ख़ुसूसी तवज्जोह और इनतिहाई करीमाना इनायत फ़रमाते थे और इस क़दर इन का ख़याल रखते थे कि ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पर ग़ैरत सुवार हो जाया करती थी।

मन्क़ूल है कि एक मरतबा ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने ह़ज़रते बीबी सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के बारे में येह कह दिया कि "वोह तो पस्ता क़द है" तो **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ आ़इशा ! तूने ऐसी बात कह दी कि अगर तेरे इस कलाम को दरिया में

डाल दिया जाए तो दरिया मुतग़य्यर हो जाएगा। (या'नी येह ग़ीबत है जो बहुत ही गन्दी बात है) इसी त़रह़ एक मरतबा एक सफ़र में ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का ऊंट ज़ख़्मी हो गया और ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास एक फ़ाज़िल ऊंट था **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ ज़ैनब ! तुम अपना ऊंट सफ़िय्या को दे दो। ह़ज़रते ज़ैनब ने त़ैश में आ कर कह दिया कि मैं इस यहूदिया को अपनी कोई चीज़ नहीं दूंगी। येह सुन कर **हुज़ूरे** अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पर इस क़दर ख़फ़ा हो गए कि दो तीन माह तक उन के बिस्तर पर आप ने क़दम नहीं रखा।[1] (مدارج النبوۃ جلد۲ص۴۸۳)

तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत है कि एक रोज़ नबी صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा कि ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا रो रही हैं आप ने रोने का सबब पूछा तो उन्हों ने कहा : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! ह़ज़रते आ़इशा और ह़ज़रते ह़फ़्सा ने येह कहा है कि हम दोनों दरबारे रिसालत में तुम से बहुत ज़ियादा इ़ज़्ज़त दार हैं क्यूं कि हमारा ख़ानदान **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलता है। येह सुन कर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ सफ़िय्या ! तुम ने उन दोनों से येह क्यूं न कह दिया कि तुम दोनों मुझ से बेहतर क्यूं कर हो सकती हो। ह़ज़रते हारून عَلَیۡہِ السَّلَام मेरे बाप हैं और ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام मेरे चचा है और ह़ज़रते मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) मेरे शोहर हैं।[2] (زرقانی جلد۳ص۲۵۹)

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني ، باب صفية ام المؤمنين ،ج ٤ ، ص ٤٢٨ـ٤٣٢
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب دوم ،ج ٢ ، ص ٤٨٢،٤٨٣

2 ......شرح الزرقاني على المواهب ،باب صفية ام المؤمنين ج٤، ص ٤٣٥
وسنن الترمذي،كتاب المناقب،باب فضل ازواج النبي صلى الله عليه وسلم،الحديث:٣٩١٨،
ج٥،ص٤٧٤

इन्हों ने दस ह़दीसें भी हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत की हैं जिन में से एक ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों किताबों में है और बाक़ी नव ह़दीसें दूसरी किताबों में दर्ज हैं।

इन की वफ़ात के साल में इख़्तिलाफ़ है वाक़िदी का क़ौल है कि सि. 50 हि. में इन की वफ़ात हुई। और इब्ने सा'द ने लिखा है कि सि. 52 हि. में इन का इनतिक़ाल हुवा। ब वक़्ते रिह़लत इन की उ़म्र साठ बरस की थी येह भी मदीने के मशहूर क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ में सिपुर्दे ख़ाक की गईं।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۵۹ومدارج جلد۲ص۴۸۳)

येह शहनशाहे मदीना صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वोह ग्यारह अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی الله تعالٰی عنهن हैं जिन पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है। इन में से ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का तो हिजरत से पहले ही इनतिक़ाल हो चुका था और ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا जिन का लक़ब "उम्मुल मसाकीन" है। हम पहले भी तह़रीर कर चुके हैं कि निकाह़ के दो तीन माह बा'द हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सामने ही येह वफ़ात पा गई थीं। हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिह़लत के वक़्त आप की नव बीवियां मौजूद थीं जिन में से आठ की आप बारियां मुक़र्रर फ़रमाते रहे क्यूं कि ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपनी बारी का दिन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को हिबा कर दिया था। इन नव मुक़द्दस अज़्वाज में से हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिह़लत के बा'द सब से पहले ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने वफ़ात पाई और सब के बा'द आख़िर में सि. 62 हि. में ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने रिह़लत फ़रमाई इन की वफ़ात के बा'द दुन्या उम्महातुल मोमिनीन से ख़ाली हो गई।

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی ، باب صفية ام المؤمنين ،ج٤، ص ٤٣٦
ومدارج النبوت،قسم پنجم ، باب دوم ،ج ٢،ص ٤٨٣

मुक़द्दस बांदियां

मज़्कूरा बाला अज़्वाजे मुत़ह्हरात के इलावा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चार बांदियां भी थीं जो आप के ज़ेरे तसर्रुफ़ थीं जिन के नाम ह़स्बे ज़ैल हैं :

ह़ज़रते मारिया क़िब्त़िया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا

इन को मिस्र व सिकन्दरिया के बादशाह मक़ूक़स क़िब्त़ी ने बारगाहे अक़्दस में चन्द हदाया और तह़ाइफ़ के साथ बत़ौरे हिबा के नज़्र किया था। इन की मां रूमी थीं और बाप मिसरी इस लिये येह बहुत ही ह़सीन व ख़ूब सूरत थीं। येह हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मे वलद हैं क्यूं कि आप के फ़रज़न्द ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इन ही के शिकमे मुबारक से पैदा हुए थे।

कनीज़ होने के बा वुजूद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन को पर्दे में रखते थे और इन के लिये मदीनए त़य्यिबा के क़रीब मक़ामे आ़लिया में आप ने एक अलग घर बनवा दिया था जिस में येह रहा करती थीं और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इन के पास तशरीफ़ ले जाया करते थे। वाक़िदी का बयान है कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपनी ज़िन्दगी भर इन के नान व नफ़्क़े का इनतिज़ाम करते रहे और इन के बा'द ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ येह ख़िदमत अन्जाम देते रहे। यहां तक कि सि. 15 हि. या सि.16 हि. में इन की वफ़ात हो गई और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इन की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत के लिये ख़ास त़ौर पर लोगों को जम्अ़ फ़रमाया और ख़ुद ही इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर इन को जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून किया।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۷۱تا۲۷۲)

---

1 ...... المواهب اللدنية وشرح الزرقاني ، باب ذكر سراريه ، ج٤، ص ٤٥٩ـ٤٦١

ह़ज़रते रैह़ाना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا

येह यहूद के ख़ानदान बनू क़ुरैज़ा से थीं, गरिफ़्तार हो कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आईं मगर इन्हों ने कुछ दिनों तक इस्लाम क़बूल नहीं किया जिस से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इन से नाराज़ रहा करते थे मगर ना गहां एक दिन एक सहाबी ने आ कर येह ख़ुश ख़बरी सुनाई कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! रैह़ाना ने इस्लाम क़बूल कर लिया। इस ख़बर से आप बेहद ख़ुश हुए और आप ने उन से फ़रमाया कि ऐ रैह़ाना ! अगर तुम चाहो तो मैं तुम को आज़ाद कर के तुम से निकाह़ कर लूं। मगर इन्हों ने येह गुज़ारिश की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप मुझे अपनी लौंडी ही बना कर रखें। येही मेरे और आप दोनों के ह़क़ में अच्छा और आसान रहेगा।

येह हुज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सामने ही जब आप ह़िज्जतुल वदाअ़ से वापस तशरीफ़ लाए सि. 10 हि. में वफ़ात पा कर जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुईं।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۷۳)

ह़ज़रते नफ़ीसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا

येह पहले ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا की मम्लूका लौंडी थीं। उन्हों ने इन को हुज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में बतौरे हिबा के नज़्र कर दिया और येह हुज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के काशानए नुबुव्वत में बांदी की ह़ैसिय्यत से रहने लगीं।[2] (زرقانی جلد۳ص۲۷۴)

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني ،باب ذكر سراريه ، ج٤، ص ٤٦٢

2 ...... شرح الزرقاني على المواهب ، باب ذكر سراريه ، ج٤، ص ٤٦٣

चौथी बांदी साहिबा

मज़्कूरा बाला बांदियों के इलावा हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की एक चौथी बांदी साहिबा भी थीं जिन के बारे में आ़म तौ़र पर मुअर्रिख़ीन ने लिखा है कि इन का नाम मा'लूम नहीं। येह भी किसी जिहाद में गरिफ़्तार हो कर बारगाहे अक़्दस में आई थीं और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बांदी बन कर आप की सोह़बत से सरफ़राज़ होती रहीं।[1] (زرقانی جلد۳ ص۲۷۴)

औलादे किराम

इस बात पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि हुज़ूरे अक़्दस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की औलादे किराम की ता'दाद छे है। दो फ़रज़न्द क़ासिम व ह़ज़रते इब्राहीम और चार साहिब ज़ादियां ह़ज़रते ज़ैनब व ह़ज़रते रुक़य्या व ह़ज़रते उम्मे कुलसूम व ह़ज़रते फ़ाति़मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) लेकिन बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने येह बयान फ़रमाया है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के एक साहिब ज़ादे अ़ब्दुल्लाह भी हैं जिन का लक़ब त़य्यिब व त़ाहिर है। इस क़ौल की बिना पर हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद सात है। तीन साहिब ज़ादगान और चार साहिब ज़ादियां, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसी क़ौल को ज़ियादा सह़ीह़ बताया है। इस के इलावा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस औलाद के बारे में दूसरे अक़्वाल भी हैं जिन का तज़्किरा त़वालत से ख़ाली नहीं।

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इन सातों मुक़द्दस औलाद में से ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते मारिया क़िब्ति़या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के शिकम से तवल्लुद हुए थे बाक़ी तमाम औलादे किराम ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के बत़्ने मुबारक से पैदा हुईं।[2] (زرقانی جلد۲ ص۱۹۳ و مدارج النبوۃ جلد۳ ص۴۵۱)

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب ، باب ذکر سراریہ ، ج ٤ ، ص ٤٦٣

2 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی ، باب ذکر اولادہ الکرام ، ج ٤ ، ص ٣١٣ ، ٣١٤
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب اول ، ج ٢ ، ص ٤٥٠ ، ٤٥١

अब हम इन औलादे किराम के ज़िक्रे जमील पर क़दरे तफ़्सील के साथ रौशनी डालते हैं।

हज़रते क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ

येह सब से पहले फ़रज़न्द हैं जो हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا की आग़ोशे मुबारक में ए'लाने नुबुव्वत से क़ब्ल पैदा हुए। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की कुन्यत अबुल क़ासिम इन्हीं के नाम पर है। जमहूर उ़लमा का येही क़ौल है कि येह पाउं पर चलना सीख गए थे कि इन की वफ़ात हो गई और इब्ने सा'द का बयान है कि इन की उ़म्र शरीफ़ दो बरस की हुई मगर अ़ल्लामा ग़लाबी कहते हैं कि येह फ़क़त् सतरह माह ज़िन्दा रहे।[1] وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم (زرقانی جلد۳ص۱۹۴)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ

इन ही का लक़ब त़य्यिब व त़ाहिर है। ए'लाने नुबुव्वत से क़ब्ल मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में पैदा हुए और बचपन ही में वफ़ात पा गए।[2]

हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ

येह हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की औलादे मुबारका में सब से आख़िरी फ़रज़न्द हैं। येह ज़ुल हिज्जा सि. 8 हि. में मदीनए मुनव्वरह के क़रीब मक़ामे "आ़लिया" के अन्दर हज़रते मारिया क़िब्त़िया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا के शिकमे मुबारक से पैदा हुए। इस लिये मक़ामे आ़लिया का दूसरा नाम "मशरबए इब्राहीम" भी है। इन की विलादत की ख़बर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने मक़ामे आ़लिया से मदीने आ कर बारगाहे अक़्दस में सुनाई। येह ख़ुश ख़बरी सुन कर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ......المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی ، باب فی ذکر اولادہ الکرام ، ج٤، ص ٣١٦

2 ......المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی ، باب فی ذکر اولادہ الکرام ، ج٤، ص ٣١٤

इन्आ़म के तौ़र पर ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक गुलाम अ़ता फ़रमाया। इस के बा'द फ़ौरन ही ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام नाज़िल हुए और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को "یاابا ابراھیم" (ऐ इब्राहीम के बाप) कह कर पुकारा, **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेह़द खुश हुए और इन के अ़क़ीक़े में दो मेंढे आप ने ज़ब्ह़ फ़रमाए और इन के सर के बाल के वज़्न के बराबर चांदी ख़ैरात फ़रमाई और इन के बालों को दफ़्न करा दिया और ''इब्राहीम'' नाम रखा, फिर इन को दूध पिलाने के लिये ह़ज़रते ''उम्मे सैफ़'' رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सिपुर्द फ़रमाया। इन के शोहर ह़ज़रते अबू सैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लुहारी का पेशा करते थे। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत थी और कभी कभी आप इन को देखने के लिये तशरीफ़ ले जाया करते थे। चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज़रते अबू सैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मकान पर गए तो येह वोह वक़्त था कि ह़ज़रते इब्राहीम जान कनी के आ़लम में थे। येह मंज़र देख कर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों से आंसू जारी हो गए। उस वक़्त अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)! क्या आप भी रोते हैं? आप ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ औ़फ़ के बेटे! येह मेरा रोना एक शफ़्क़त का रोना है। इस के बा'द फिर दोबारा जब चश्माने मुबारक से आंसू बहे तो आप की ज़बाने मुबारक पर येह कलिमात जारी हो गए कि

اِنَّ الْعَیْنَ تَدْمَعُ وَ الْقَلْبَ یَحْزَنُ وَلَا نَقُوْلُ اِلَّا مَا یَرْضٰی رَبُّنَا وَاِنَّا بِفِرَاقِكَ یَا اِبْرَاھِیْمُ لَمَحْزُوْنُوْنَ

आंख आंसू बहाती है और दिल ग़मज़दा है मगर हम वोही बात ज़बान से निकालते हैं जिस से हमारा रब खुश हो जाए और बिला शुबा ऐ इब्राहीम! हम तुम्हारी जुदाई से बहुत ज़ियादा ग़मगीन हैं।

जिस दिन ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इनतिक़ाल हुवा इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन सूरज में ग्रहन लगा। अ़रबों के दिलों में ज़मानए जाहिलिय्यत का येह अ़क़ीदा जमा हुवा था कि किसी बड़े आदमी की मौत से चांद और सूरज में ग्रहन लगता है। चुनान्चे बा'ज़ लोगों ने येह ख़याल किया कि ग़ालिबन येह सूरज ग्रहन ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात की वजह से हुवा है। **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मौक़अ़ पर एक ख़ुत़्बा दिया जिस में जाहिलिय्यत के इस अ़क़ीदे का रद फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि

اِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ اٰيَتَانِ مِنْ اٰيَاتِ اللّٰهِ لَايَنْكَسِفَانِ
لِمَوْتِ اَحَدٍ وَّلَا لِحَيَاتِهٖ فَاِذَا رَاَيْتُمُوْهَا فَادْعُوا اللّٰهَ وَصَلُّوْا حَتّٰى يَنْجَلِىَ

(بخاری جلد ۱ ص ۱۴۵ باب الدعاء فی الکسوف)

यक़ीनन चांद और सूरज **अल्लाह** तआ़ला की निशानियों में से दो निशानियां हैं। किसी के मरने या जीने से इन दोनों में ग्रहन नहीं लगता जब तुम लोग ग्रहन देखो तो दुआ़एं मांगो और नमाज़े कुसूफ़ पढ़ो यहां तक कि ग्रहन ख़त्म हो जाए।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया कि मेरे फ़रज़न्द इब्राहीम ने दूध पीने की मुद्दत पूरी नहीं कि और दुन्या से चला गया। इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने उस के लिये बिहिश्त में एक दूध पिलाने वाली को मुक़र्रर फ़रमा दिया है जो मुद्दते रज़ाअ़त भर उस को दूध पिलाती रहेगी।[1]

(مدارج النبوۃ جلد ۲ ص ۲۵۴)

---

1 ...... صحيح البخاری، کتاب الکسوف، باب الدعاء فی الکسوف، الحديث: ١٠٦٠، ج ١، ص ٣٦٣
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب اول ، ج ٢ ، ص ٤٥٢-٤٥٤
وصحيح البخاری، کتاب الجنائز، باب قول النبی صلی اللّٰه عليه وسلم انابك... الخ،
الحديث: ١٣٠٣، ج ١، ص ٤٤١

रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जन्नतुल बक़ीअ़ में हज़रते उ़समान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़ब्र के पास दफ़्न फ़रमाया और अपने दस्ते मुबारक से उन की क़ब्र पर पानी का छिड़काव किया।[1] (مدارج النبوۃ جلد۲ص۴۵۳)

ब वक़्ते वफ़ात हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की उ़म्र शरीफ़ 17 या 18 माह की थी। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم [2]

हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की साहिब ज़ादियों में सब से बड़ी थीं। ए'लाने नुबुव्वत से दस साल क़ब्ल जब कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ तीस साल की थी मक्कए मुकर्रमा में इन की विलादत हुई। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गई थीं और जंगे बद्र के बा'द हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरह बुला लिया था और येह हिजरत कर के मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरह तशरीफ़ ले गईं।

ए'लाने नुबुव्वत से क़ब्ल ही इन की शादी इन के ख़ालाज़ाद भाई अबुल आ़स बिन रबीअ़ से हो गई थी। अबुल आ़स हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन हज़रते हाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बेटे थे। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सिफ़ारिश से हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अबुल आ़स के साथ निकाह़ फ़रमा दिया था। हज़रते ज़ैनब तो मुसलमान हो गई थीं मगर अबुल आ़स शिर्क व कुफ़्र पर अड़ा रहा। रमज़ान सि. 2 हि. में जब अबुल आ़स जंगे बद्र से गरिफ़्तार हो कर मदीने आए। उस वक़्त तक हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मुसलमान होते हुए मक्कए मुकर्रमा ही में मुक़ीम थीं।

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب اول ، ج ۲ ، ص ۴۵۳

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني،باب في ذكر اولاده الكرام ، ج ٤،ص ٣٥٠

चुनान्चे अबुल आ़स को क़ैद से छुड़ाने के लिये उन्हों ने मदीने में अपना वोह हार भेजा जो इन की मां ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इन को जहेज़ में दिया था। येह हार **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इशारा पा कर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास वापस भेज दिया और **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबुल आ़स से येह वा'दा ले कर उन को रिहा कर दिया कि वोह मक्का पहुंच कर ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को मदीनए मुनव्वरह भेज देंगे। चुनान्चे अबुल आ़स ने अपने वा'दे के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को अपने भाई किनाना की ह़िफ़ाज़त में "बत़्ने याजज" तक भेज दिया। इधर **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को एक अन्सारी के साथ पहले ही मक़ामे "बत़्ने याजज" में भेज दिया था। चुनान्चे येह दोनों ह़ज़रात "बत़्ने याजज" से अपनी ह़िफ़ाज़त में ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को मदीनए मुनव्वरह लाए।

मन्क़ूल है कि जब ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا मक्कए मुकर्रमा से रवाना हुईं तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने इन का रास्ता रोका यहां तक कि एक बद नसीब ज़ालिम "हिबार बिन अल अस्वद" ने इन को नेज़े से डरा कर ऊंट से गिरा दिया जिस के सदमे से इन का ह़म्ल साक़ित़ हो गया। मगर इन के देवर किनाना ने अपने तरकश से तीरों को बाहर निकाल कर येह धमकी दी कि जो शख़्स भी ह़ज़रते ज़ैनब के ऊंट का पीछा करेगा। वोह मेरे इन तीरों से बच कर न जाएगा। येह सुन कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश सहम गए। फिर सरदारे मक्का अबू सुफ़्यान ने दरमियान में पड़ कर ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के लिये मदीनए मुनव्वरह की रवानगी के लिये रास्ता साफ़ करा दिया।

ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को हिजरत करने में येह दर्दनाक मुसीबत पेश आई इसी लिये **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के फ़ज़ाइल में येह इरशाद फ़रमाया कि هِیَ اَفۡضَلُ بَنَاتِیۡ اُصِیۡبَتۡ فِیَّ या'नी येह मेरी बेटियों में

इस ए'तिबार से बहुत ही ज़ियादा फ़ज़ीलत वाली हैं कि मेरी जानिब हिजरत करने में इतनी बड़ी मुसीबत उठाई। इस के बा'द अबुल आ़स मुह़र्रम सि. 7 हि. में मुसलमान हो कर मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरह हिजरत कर के चले आए और ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡھَا के साथ रहने लगे।[1] (زرقانی جلد۳ص۱۹۵تا۱۹۶)

सि. 8 हि. में ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡھَا की वफ़ात हो गई और ह़ज़रते उम्मे ऐमन व ह़ज़रते सौदह बिन्ते ज़मआ़ व ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھن ने इन को ग़ुस्ल दिया और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के कफ़न के लिये अपना तहबन्द शरीफ़ अ़ता फ़रमाया और अपने दस्ते मुबारक से इन को क़ब्र में उतारा।

ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡھَا की औलाद में एक लड़का जिस का नाम "अ़ली" और एक लड़की ह़ज़रते "इमामह" थीं। "अ़ली" के बारे में एक रिवायत है कि अपनी वालिदए माजिदा की ह़यात ही में बुलूग़ के क़रीब पहुंच कर वफ़ात पा गए लेकिन इब्ने अ़साकिर का बयान है कि नसब नामों के बयान करने वाले बा'ज़ उ़लमा ने येह ज़िक्र किया है कि येह जंगे यरमूक में शहादत से सरफ़राज़ हुए।[2] (زرقانی جلد۳ص۱۹۷)

ह़ज़रते इमामह رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡھَا से हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बड़ी मह़ब्बत थी। आप इन को अपने दोशे मुबारक पर बिठा कर मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले जाते थे।

रिवायत है कि एक मरतबा ह़बशा के बादशाह नज्जाशी ने आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बतौ़रे हदिय्या एक हुल्ला भेजा जिस

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،باب في ذكر اولاد الكرام،ج٤،ص٣١٨-٣١٩
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب اول ، ج ٢ ، ص ٤٥٥-٤٥٦

2 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،باب في ذكر اولاد ہ الكرام،ج٤،ص٣١٨،٣٢١
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب اول ،ج ٢،ص٤٥٧

के साथ सोने की एक अंगूठी भी थी जिस का नगीना ह़बशी था। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह अंगूठी ह़ज़रते इमामह को अ़त़ा फ़रमाई।

इसी त़रह़ एक मरतबा एक बहुत ही ख़ूब सूरत सोने का हार किसी ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को नज़्र किया जिस की ख़ूब सूरती को देख कर तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن ह़ैरान रह गईं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी मुक़द्दस बीवियों से फ़रमाया कि मैं येह हार उस को दूंगा जो मेरे घर वालों में मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब है। तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने येह ख़याल कर लिया कि यक़ीनन येह हार ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को अ़त़ा फ़रमाएंगे मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते इमामह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को क़रीब बुलाया और अपनी प्यारी नवासी के गले में अपने दस्ते मुबारक से येह हार डाल दिया।[1] (زرقانی جلد۳ص۱۹۷)

ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह ए'लाने नुबुव्वत से सात बरस पहले जब कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ का तेंतीसवां साल था पैदा हुई और इब्तिदाए इस्लाम ही में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गईं। पहले इन का निकाह़ अबू लहब के बेटे "उ़तबा" से हुवा था लेकिन अभी इन की रुख़्सती नहीं हुई थी कि "**सूरए तब्बत यदा**" नाज़िल हो गई। अबू लहब क़ुरआन में अपनी इस दाइमी रुस्वाई का बयान सुन कर ग़ुस्से में आग बगोला हो गया और अपने बेटे उ़तबा को मजबूर कर दिया कि वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की साह़िब ज़ादी ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को त़लाक़ दे दे। चुनान्चे उ़तबा ने त़लाक़ दे दी।

इस के बा'द हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का निकाह़ ह़ज़रते उ़समान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से कर दिया। निकाह़ के बा'द ह़ज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते बीबी

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب في ذكر اولاده الكرام، ج ٤، ص ٣٢١

रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को साथ ले कर मक्का से ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की फिर ह़बशा से मक्का वापस आ कर मदीनए मुनव्वरह की त़रफ़ हिजरत की और येह मियां बीवी दोनों "साह़िबुल हिजरतैन" (दो हिजरतों वाले) के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से सरफ़राज़ हो गए। जंगे बद्र के दिनों में ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बहुत सख़्त बीमार थीं। चुनान्चे **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जंगे बद्र में शरीक होने से रोक दिया और येह हुक्म दिया कि वोह ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की तीमार दारी करें। ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जिस दिन जंगे बद्र में मुसलमानों की फ़त्ह़े मुबीन की खुश ख़बरी ले कर मदीने पहुंचे उसी दिन ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने बीस साल की उ़म्र पा कर वफ़ात पाई। **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जंगे बद्र के सबब से इन के जनाज़े में शरीक न हो सके।

ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अगर्चे जंगे बद्र में शरीक न हुए लेकिन **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को जंगे बद्र के मुजाहिदीन में शुमार फ़रमाया और जंगे बद्र के माले ग़नीमत में से इन को मुजाहिदीन के बराबर ह़िस्सा भी अ़त़ा फ़रमाया और शुरकाए जंगे बद्र के बराबर अज्रे अ़ज़ीम की बिशारत भी दी।

ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के शिकमे मुबारक से ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के एक फ़रज़न्द भी पैदा हुए थे जिन का नाम "अ़ब्दुल्लाह" था। येह अपनी मां के बा'द सि. 4 हि. में छे बरस की उ़म्र पा कर इनतिक़ाल कर गए।[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) (زرقانی جلد۳ص۱۹۸تا۱۹۹)

ह़ज़रते उम्मे कुलसूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह पहले अबू लहब के बेटे "उ़तैबा" के निकाह़ में थीं लेकिन अबू लहब के मजबूर कर देने से बद नसीब उ़तैबा ने इन को रुख़्सती से क़ब्ल ही त़लाक़ दे दी और इस ज़ालिम ने बारगाहे नुबुव्वत में इनतिहाई

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، باب في ذكر اولاده الكرام ، ج٤، ص٣٢٢، ٣٢٤

गुस्ताख़ी भी की। यहां तक कि बद ज़बानी करते हुए **हुज़ूर** रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर झपट पड़ा और आप के मुक़द्दस पैराहन को फाड़ डाला। इस गुस्ताख़ की बे अदबी से आप के क़ल्बे नाज़ुक पर इनतिहाई रन्ज व सदमा गुज़रा और जोशे ग़म में आप की ज़बाने मुबारक से येह अल्फ़ाज़ निकल पड़े कि "या **अल्लाह** ! अपने कुत्तों में से किसी कुत्ते को इस पर मुसल्लत़ फ़रमा दे।"

इस दुआ़ए नबवी का येह असर हुवा कि अबू लहब और उ़तैबा दोनों तिजारत के लिये एक क़ाफ़िले के साथ मुल्के शाम गए और मक़ामे "ज़रक़ा" में एक राहिब के पास रात में ठहरे राहिब ने क़ाफ़िले वालों को बताया कि यहां दरिन्दे बहुत हैं। आप लोग ज़रा होशियार हो कर सोएं। येह सुन कर अबू लहब ने क़ाफ़िले वालों से कहा कि ऐ लोगो ! मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने मेरे बेटे उ़तैबा के लिये हलाकत की दुआ़ कर दी है। लिहाज़ा तुम लोग तमाम तिजारती सामानों को इकठ्ठा कर के उस के ऊपर उ़तैबा का बिस्तर लगा दो और सब लोग उस के इर्द गिर्द चारों त़रफ़ सो रहो ताकि मेरा बेटा दरिन्दों के हम्ले से महफ़ूज़ रहे। चुनान्चे क़ाफ़िले वालों ने उ़तैबा की हिफ़ाज़त का पूरा पूरा बन्दोबस्त किया लेकिन रात में बिल्कुल ना गहां एक शेर आया और सब को सूंघते हुए कूद कर उ़तैबा के बिस्तर पर पहुंचा और उस के सर को चबा डाला। लोगों ने हर चन्द शेर को तलाश किया मगर कुछ भी पता नहीं चल सका कि येह शेर कहां से आया था ? और किधर चला गया।[1] (زرقانی جلد۳ص۱۹۷تا۱۹۸)

ख़ुदा की शान देखिये कि अबू लहब के दोनों बेटों उ़तबा और उ़तैबा ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दोनों शहज़ादियों को अपने बाप के मजबूर करने से त़लाक़ दे दी मगर उ़तबा ने चूंकि बारगाहे नुबुव्वत में कोई

---

1 ......المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی،باب فی ذکر اولادہ الکرام،ج٤، ص ٣٢٥،٣٢٦

गुस्ताख़ी और बे अदबी नहीं की थी। इस लिये वोह क़हरे इलाही में मुब्तला नहीं हुवा बल्कि फ़त्हे मक्का के दिन इस ने और इस के एक दूसरे भाई "मुअ़तब" दोनों ने इस्लाम क़बूल कर लिया और दस्ते अक़्दस पर बैअ़त कर के शरफ़े सहाबिय्यत से सरफ़राज़ हो गए। और "उ़तैबा" ने अपनी ख़बासत से चूंकि बारगाहे अक़्दस में गुस्ताख़ी व बे अदबी की थी इस लिये वोह क़हरे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार में गरिफ़्तार हो कर कुफ़्र की हालत में एक ख़ूंख़ार शेर के ह़म्ले का शिकार बन गया। (والعياذ بالله تعالىٰ منه)

ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की वफ़ात के बा'द रबीउ़ल अव्वल सि. 3 हि. में **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बीबी उम्मे कुलसूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से निकाह़ कर दिया मगर इन के शिकमे मुबारक से कोई औलाद नहीं हुई। शा'बान सि. 9 हि. में ह़ज़रते उम्मे कुलसूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने वफ़ात पाई और **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और येह जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुई।[(1)] (زرقانی جلد۳ص۲۰۰)

ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह शहनशाहे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सब से छोटी मगर सब से ज़ियादा प्यारी और लाडली शहज़ादी हैं। इन का नाम "फ़ाति़मा" और लक़ब "ज़हरा" और "बतूल" है। इन की पैदाइश के साल में उ़लमाए मुअर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है। अबू उ़मर का क़ौल है कि ए'लाने नुबुव्वत के पहले साल जब कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ इक्तालीस बरस की थी येह पैदा हुई और बा'ज़ ने लिखा है कि ए'लाने नुबुव्वत से एक साल क़ब्ल इन की विलादत हुई और अ़ल्लामा इब्नुल

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، باب فی اولاد ہ الکرام، ج٤، ص ٣٢٧

जौज़ी ने येह तह़रीर फ़रमाया कि ए'लाने नुबुव्वत से पांच साल क़ब्ल इन की पैदाइश हुई।[1] وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم (زرقانی جلد۳ص۲۰۲تا۲۰۳)

اَللّٰہُ اَکْبَر ! इन के फ़ज़ाइल व मनाक़िब का क्या कहना ? इन के मरातिब व दरजात के ह़ालात से कुतुबे अह़ादीस के सफ़ह़ात मालामाल हैं। जिन का तज़्किरा हम ने अपनी किताब ''ह़क़्क़ानी तक़रीरें'' में तह़रीर कर दिया है। **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि येह सय्यिदतुन्निसाइल आ़लमीन (तमाम जहान की औ़रतों की सरदार) और सय्यिदतुन्निसाए अहलिल जन्नह (अहले जन्नत की तमाम औ़रतों की सरदार) हैं। इन के ह़क़ में इरशादे नबवी है कि फ़ाति़मा मेरी बेटी मेरे बदन की एक बोटी है जिस ने फ़ाति़मा को नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया।[2] (مشکوٰۃ ص۵۶۸مناقب اہل بیت وزرقانی جلد۳ص۲۰۴)

सि. 2 हि. में ह़ज़रते अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इन का निकाह़ हुवा और इन के शिकमे मुबारक से तीन साहि़ब ज़ादगान ह़ज़रते ह़सन, ह़ज़रते हुसैन, ह़ज़रते मोह़सिन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم और तीन साहि़ब ज़ादियां ज़ैनब व उम्मे कुलसूम व रुक़य्या رضی اللہ تعالٰی عنھن की विलादत हुई। ह़ज़रते मोह़सिन व रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا तो बचपन ही में वफ़ात पा गए। उम्मे कुलसूम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا का निकाह़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से हुवा। जिन के शिकमे मुबारक से आप के एक फ़रज़न्द ह़ज़रते ज़ैद और एक साहि़ब ज़ादी ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا की

---

1 ......المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی ، باب فی ذکر اولادہ الکرام ، ج٤، ص ٣٣١

2 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،باب فی ذکر اولادہ الکرام،ج٤،ص٣٣٥،٣٣٦
ومشکاۃ المصابیح،کتاب المناقب،باب مناقب اھل بیت النبی صلی اللہ علیہ وسلم،الحدیث:
٦١٣٨،٦١٣٩،ج٢،ص٤٣٥،٤٣٦

पैदाइश हुई और ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की शादी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुई।[1] (مدارج النبوۃ جلد۲ص۴۶۰)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल शरीफ़ का ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا के क़ल्बे मुबारक पर बहुत ही जांकाह सदमा गुज़रा। चुनान्चे विसाले अक़्दस के बा'द ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا कभी हंसती हुई नहीं देखी गईं। यहां तक कि विसाले नबवी के छे माह बा'द 3 रमज़ान सि. 11 हि. मंगल की रात में आप ने दाइये अजल को लब्बैक कहा। ह़ज़रते अ़ली या ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और सब से ज़ियादा सह़ीह़ और मुख़्तार क़ौल येही है कि जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुईं।[2] (مدارج النبوۃ جلد۲ص۴۶۱)

चचाओं की ता'दाद

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाओं की ता'दाद में मुअर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ के नज़दीक इन की ता'दाद नव, बा'ज़ ने कहा कि दस और बा'ज़ का क़ौल है कि ग्यारह मगर साहि़बे मवाहिबे लदुन्निय्यह ने "ज़ख़ाइरुल उ़क़्बा फ़ी मनाक़िबे ज़विल क़ुर्बा" से नक़्ल करते हुए तह़रीर फ़रमाया कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे माजिद ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के इलावा अ़ब्दुल मुत्तलिब के बारह बेटे थे जिन के नाम येह हैं :

﴾1﴿ ह़ारिस ﴾2﴿ अबू त़ालिब ﴾3﴿ ज़ुबैर ﴾4﴿ ह़म्ज़ा
﴾5﴿ अ़ब्बास ﴾6﴿ अबू लहब ﴾7﴿ ग़ैदाक़ ﴾8﴿ मक़ूम
﴾9﴿ ज़रार ﴾10﴿ क़ुस्म ﴾11﴿ अ़ब्दुल का'बा ﴾12﴿ जह़ल

---

1 ......مدارج النبوت ، قسم پنجم ،باب اول ، ج ۲ ، ص ۴۶۰
والمواھب اللدنیة وشرح الزرقانی،باب فی ذکر اولادہ الکرام ، ج۴،ص ۳۴۰،۳۴۱

2 ......مدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب اول ، ج ۲ ، ص ۴۶۱

इन में से सिर्फ़ ह़ज़रते ह़म्ज़ा व ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इस्लाम क़बूल किया। ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ बहुत ही त़ाक़त वर और बहादुर थे। इन को **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने असदुल्लाह व असदुर्रसूल (**अल्लाह** व रसूल का शेर) के मुअ़ज़्ज़ज़ व मुमताज़ लक़ब से सरफ़राज़ फ़रमाया। येह सि. 3 हि. में जंगे उहुद के अन्दर शहीद हो कर "सय्यिदुश्शुहदा" के लक़ब से मश्हूर हुए और मदीनए मुनव्वरह से तीन मील दूर ख़ास जंगे उहुद के मैदान में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का मज़ारे पुर अन्वार ज़ियारत गाहे आ़लमे इस्लाम है।

ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के फ़ज़ाइल में बहुत सी अह़ादीस वारिद हुई हैं। **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के और इन की औलाद के बारे में बहुत सी बिशारतें दीं और अच्छी अच्छी दुआ़एं भी फ़रमाई हैं।

सि. 32 हि. या सि. 33 हि. में सत्तासी या अठ्ठासी बरस की उ़म्र पा कर वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुए।[1]

(زرقانی جلد۳ص ۲۷۰ تا۲۸۵ و مدارج جلد۲ص ۲۸۸)

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की फूफियां

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की फूफियों की ता'दाद छे है जिन के नाम येह हैं :

﴾1﴿ आ़तिका ﴾2﴿ उमैमा ﴾3﴿ उम्मे ह़कीम
﴾4﴿ बर्रह ﴾5﴿ सफ़िय्या ﴾6﴿ अरवी

इन में से तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इस्लाम क़बूल किया। येह ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की वालिदा हैं। येह बहुत ही बहादुर और ह़ौसला मन्द ख़ातून थीं। ग़ज़्वए ख़न्दक़ में इन्हों ने एक मुसल्लह़ और ह़म्ला आवर

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی،الفصل الرابع فی اعمامه...الخ،ج٤،ص٤٦٤،٤٦٥
وباب ذكر بعض مناقب العباس،ج٤،ص٤٨٥،٤٨٦ ملتقطاً
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ،باب سوم ،ج٢،ص٤٩٠ ،٤٩٣ ملخصاً

यहूदी को तन्हा एक चौब से मार कर क़त्ल कर दिया था। जिस का तज़्किरा ग़ज़्वए ख़न्दक़ में गुज़र चुका और येह भी रिवायत है कि जंगे उहुद में भी जब मुसलमानों का लश्कर बिखर चुका था येह अकेली कुफ़्फ़ार पर नेज़ा चलाती रहीं। यहां तक कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इन की ग़ैर मा'मूली शुजाअ़त पर इनतिहाई तअ़ज्जुब हुवा और आप ने इन के फ़रज़न्द हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुख़ातब फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया कि ज़रा इस औ़रत की बहादुरी और जां निसारी तो देखो। सि. 20 हि. में तिहत्तर बरस की उ़म्र पा कर मदीनए मुनव्वरह में वफ़ात पा कर जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुईं।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۸۷تاص۲۸۸)

हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इ़लावा अरवी व आ़तिका व उमैमा के इस्लाम में मुअर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ों ने इन तीनों को मुसलमान तह़रीर किया है और बा'ज़ों के नज़दीक इन का इस्लाम साबित नहीं।[2] وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم (زرقانی جلد۳ص۲۸۷)

ख़ुद्दामे ख़ास

यूं तो तमाम ही सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم **हुज़ूर** शमए नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के परवाने थे और इनतिहाई जां निसारी के साथ आप की ख़िदमत गुज़ारी के लिये सभी तन मन धन से ह़ाज़िर रहते थे मगर फिर भी चन्द ऐसे ख़ुश नसीब हैं जिन का शुमार **हुज़ूर** ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ुसूसी ख़ुद्दाम में है। इन ख़ुश बख़्तों की मुक़द्दस फ़ेहरिस्त में मुन्दरिजे ज़ैल सह़ाबए किराम ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं :

﴾1﴿ हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ : येह **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सब से ज़ियादा मशहूर व मुमताज़ ख़ादिम हैं। इन्हों ने दस बरस मुसल्सल हर सफ़र व ह़ज़र में आप की वफ़ादाराना

---

1 ......المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی،باب ذکر بعض مناقب العباس،ج٤،ص٤٨٨،٤٩٠

2 ......المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی،باب فی ذکر بعض مناقب العباس،ج٤،ص٤٩٠۔٤٩٢ملتقطاً

ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ हासिल किया है । इन के लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ास तौर पर येह दुआ फ़रमाई थी कि ''اَللّٰهُمَّ اَكْثِرْ مَالَهٗ وَوَلَدَهٗ وَاَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ'' या'नी ऐ अल्लाह ! इस के माल और अवलाद में कसरत अ़ता फ़रमा और इस को जन्नत में दाख़िल फ़रमा ।

हज़रते अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बयान है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इन तीन दुआओं में से दो दुआओं की मक़्बूलिय्यत का जल्वा तो मैं ने देख लिया कि हर शख़्स का बाग़ साल में एक मरतबा फलता है और मेरा बाग़ साल में दो मरतबा फलता है । और फलों में मुश्क की ख़ुश्बू आती है । और मेरी औलाद की ता'दाद एक सो छे है जिन में सत्तर लड़के और बाक़ी लड़कियां हैं । और मैं उम्मीद रखता हूं कि मैं तीसरी दुआ का जल्वा भी ज़रूर देखूंगा । या'नी जन्नत में दाख़िल हो जाऊंगा । इन्हों ने दो हज़ार दो सो छियासी ह़दीसें हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत की हैं और ह़दीस में इन के शागिर्दों की ता'दाद बहुत ज़ियादा है । इन की उ़म्र सो बरस से ज़ाइद हुई । बसरा में सि. 91 हि. या सि. 92 हि. या सि. 93 हि. में वफ़ात पाई ।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۹۶تاص۲۹۷)

﴾2﴿ हज़रते रबीआ़ बिन का'ब अस्लमी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ : येह हुज़ूर عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये वुज़ू कराने की ख़िदमत अन्जाम देते थे । या'नी पानी और मिस्वाक वग़ैरा का इनतिज़ाम करते थे । हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को जन्नत की बिशारत दी थी । सि.63 हि. में वफ़ात पाई ।[2] (زرقانی جلد۳ص۲۹۷)

﴾3﴿ हज़रते ऐमन बिन उम्मे ऐमन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ : हुज़ूर عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की एक छोटी मशक जिस से आप इस्तिन्जा और वुज़ू फ़रमाया करते थे

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی،باب فی خدمه صلی الله علیه وسلم...الخ،ج٤،ص٥٠٦،٥٠٧
ومدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب چهارم ، ج ٢ ، ص٤٩٤،٤٩٥ ملخصاً

2 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،باب فی خدمه صلی الله علیه وسلم...الخ،ج٤،ص٥٠٧،٥٠٨

हमेशा आप ही की तह्वील में रहा करती थी। येह जंगे हुनैन के दिन शहादत से सरफ़राज़ हुए।[1] (زرقانی جلد۳ص۲۹۷)

《4》 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ : येह ना'लैने शरीफ़ैन और वुज़ू का बरतन और मस्नद व मिस्वाक अपने पास रखते थे। और सफ़र व ह़ज़र में हमेशा येह ख़िदमत अन्जाम दिया करते थे। साठ बरस से ज़ियादा उ़म्र पा कर सि. 32 हि. या सि. 33 हि. में बा'ज़ का क़ौल है कि मदीने में और बा'ज़ के नज़दीक कूफ़ा में विसाल फ़रमाया।[2]

(زرقانی جلد۳ص۲۹۷تا۲۹۸)

《5》 ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ : येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुवारी के ख़च्चर की लगाम थामे रहते थे। क़ुरआने मजीद और फ़राइज़ के उ़लूम में बहुत ही माहिर थे और आ'ला दरजे के फ़सीह़ ख़त़ीब और शो'ला बयान शाइ़र थे। ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी हुकूमत के दौर में इन को मिस्र का गवर्नर बना दिया था। सि. 58 हि. में मिस्र के अन्दर ही इन का विसाल हुवा।[3] (زرقانی جلد۳ص۲۹۹)

《6》 ह़ज़रते अस्लअ़ बिन शरीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ : येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ऊंट पर कजावा बांधने की ख़िदमत अन्जाम दिया करते थे।[4]

《7》 ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ : येह बहुत ही क़दीमुल इस्लाम सह़ाबी हैं। इनतिहाई तारिकुद्दुन्या और आ़बिदो ज़ाहिद थे और दरबारे नुबुव्वत के बहुत ही ख़ास ख़ादिम थे। इन के फ़ज़ाइल में चन्द

---

1 ......المواھب اللدنية مع شرح الزرقانی،باب فی خدمه صلی اللّٰه علیه وسلم...الخ،ج٤،ص٥٠٨

2 ......المواھب اللدنية مع شرح الزرقانی،باب فی خدمه صلی اللّٰه علیه وسلم...الخ،ج٤،ص٥٠٨،٥٠٩

3 ......المواھب اللدنية مع شرح الزرقانی،باب فی خدمه صلی اللّٰه علیه وسلم...الخ،ج٤،ص٥١٠ـ٥١١

4 ......المواھب اللدنية و شرح الزرقانی،باب فی خدمه صلی اللّٰه علیه وسلم...الخ،ج٤،ص٥١١

ह़दीसें भी वारिद हुई हैं। सि. 31 हि. में मदीनए मुनव्वरह से कुछ दूर "रबज़ा" नामी गाऊं में इन का विसाल हुवा और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।[1] (زرقانی جلد۳ص۳۰۰)

《8》 ह़ज़रते मुहाजिर मौला उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُمَا : येह उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھَا के आज़ाद कर्दा गुलाम थे। शरफ़े सह़ाबिय्यत के साथ साथ पांच बरस तक हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत का भी शरफ़ ह़ासिल किया। बहुत ही बहादुर मुजाहिद थे। मिस्र को फ़त्ह़ करने वाली फ़ौज में शामिल थे। कुछ दिनों तक मिस्र में रहे। फिर "त़ह़ा" चले गए और वहां अपनी वफ़ात तक मुक़ीम रहे।[2] (زرقانی جلد۳ص۳۰۱)

《9》 ह़ज़रते हुनैन मौला अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُمَا : येह पहले हुज़ूर صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के गुलाम थे और दिन रात आप की ख़िदमत करते थे। फिर आप صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें अपने चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को अ़त़ा फ़रमा दिया और येह ह़ज़रते अ़ब्बास के गुलाम हो गए। लेकिन चन्द ही दिनों के बा'द ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने इन को इस लिये आज़ाद कर दिया ताकि येह दिन रात बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर रहें और ख़िदमत करते रहें।[3] (زرقانی جلد۳ص۳۰۱)

《10》 ह़ज़रते नुऐ़म बिन रबीआ़ अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ : येह भी ख़ादिमाने बारगाहे रिसालत की फ़ेहरिस्ते ख़ास में शुमार किये जाते हैं।[4]
(زرقانی جلد۳ص۳۰۱)

《11》 ह़ज़रते अबुल ह़मरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ : इन का नाम हिलाल बिन अल ह़ारिस था। येह हुज़ूर صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा

---

1 ......المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی،باب فی خدمه صلی اللہ علیه وسلم...الخ،ج٤،ص٥١٣-٥١٤

2 ......المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی،باب فی خدمه صلی اللہ علیه وسلم...الخ،ج٤،ص٥١٤

3 ......المواھب اللدنیة و شرح الزرقانی،باب فی خدمه صلی اللہ علیه وسلم...الخ،ج٤،ص٥١٤،٥١٥

4 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی،باب فی خدمه صلی اللہ علیه وسلم...الخ،ج٤،ص٥١٥

गुलाम और ख़ादिमे ख़ास हैं। वफ़ाते नबवी के बा'द येह मदीने से "हिम्स" चले गए थे और वहीं इन की वफ़ात हुई।[1] (زرقانی جلد۳ص۳۰۱)

﴾12﴿ हज़रते अबुस्सम्अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के गुलाम थे फिर आप ने इन को आज़ाद फ़रमा दिया मगर येह दरबारे नुबुव्वत से जुदा नहीं हुए बल्कि हमेशा ख़िदमत गुज़ारी में मसरूफ़ रहे। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अकसर येही गुस्ल कराया करते थे। इन का नाम "इयाद" था।[2] (زرقانی جلد۳ص۳۰۱)

ख़ुसूसी मुहाफ़िज़ीन

कुफ़्फ़ार चूंकि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जानी दुश्मन थे और हर वक़्त इस ताक में लगे रहते थे कि अगर इक ज़रा भी मौक़अ़ मिल जाए तो आप को शहीद कर डालें। बल्कि बारहा क़ातिलाना ह़म्ला भी कर चुके थे। इस लिये कुछ जां निसार सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم बारी बारी से रातों को आप की मुख़्तलिफ़ ख़्वाब गाहों और क़ियाम गाहों का शमशीर बकफ़ हो कर पहरा दिया करते थे। येह सिल्सिला उस वक़्त तक जारी रहा जब कि येह आयत नाज़िल हो गई कि وَاللّٰہُ یَعْصِمُکَ مِنَ النَّاسِ ط[3] या'नी "अल्लाह तआ़ला आप को लोगों से बचाएगा।" इस आयत के नुज़ूल के बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अब पहरा देने की कोई ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआ़ला ने मुझ से वा'दा फ़रमा लिया है कि वोह मुझ को मेरे तमाम दुश्मनों से बचाएगा। इन जां निसार पहरा दारों में चन्द खुश नसीब सहाबए किराम खुसूसिय्यत के साथ क़ाबिले ज़िक्र हैं जिन के अस्माए गिरामी येह हैं :

---

1 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی،باب فی خدمہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ،ج٤،ص٥١٥

2 ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی،باب فی خدمہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ،ج٤،ص٥١٥،٥١٦

3 ......پ٦،المائدۃ:٦٧

《1》 हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ 《2》 हज़रते सा'द बिन मुआज़ अन्सारी 《3》 हज़रते मुहम्मद बिन मस्लमा 《4》 हज़रते ज़क्वान बिन अ़ब्दे क़ैस 《5》 हज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम 《6》 हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास 《7》 हज़रते अ़ब्बाद बिन बिश्र 《8》 हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी 《9》 हज़रते बिलाल 《10》 हज़रते मुग़ीरा बिन शअ़बा।[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن)

कातिबीने वह्य

जो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم क़ुरआन की नाज़िल होने वाली आयतों और दूसरी ख़ास ख़ास तह़रीरों को **हुज़ूरे** अक्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म के मुत़ाबिक़ लिखा करते थे उन मो'तमद कातिबों में ख़ास तौर पर मुन्दरिजए ज़ैल हज़रात क़ाबिले ज़िक्र हैं :

《1》 हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ 《2》 हज़रते उ़मर फ़ारूक़ 《3》 हज़रते उ़समाने ग़नी 《4》 हज़रते अ़ली मुर्तज़ा 《5》 हज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह 《6》 हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास 《7》 हज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम 《8》 हज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा 《9》 हज़रते साबित बिन क़ैस 《10》 हज़रते ह़न्ज़ला बिन रबीअ़ 《11》 हज़रते ज़ैद बिन साबित 《12》 हज़रते उबय्य बिन का'ब 《13》 हज़रते अमीरे मुआ़विया 《14》 हज़रते अबू सुफ़्यान।[2] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن) (مدارج النبوۃ جلد۲ص۵۲۹تا۵۴۰)

दरबारे नुबुव्वत के शुअ़रा

यूं तो बहुत से सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم **हुज़ूरे** अक्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ो सना में क़साइद लिखने की सआ़दत से सरफ़राज़ हुए मगर दरबारे नबवी के मख़्सूस शुअ़राए किराम तीन हैं जो ना'त गोई के साथ साथ कुफ़्फ़ार के शाइराना ह़म्लों का अपने क़साइद के ज़रीए़ दन्दान शिकन जवाब भी दिया करते थे।

---

1 .....المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب في خدمه صلى الله عليه وسلم...الخ، ج٤، ص٥١٩ـ٥٢٢ ملتقطاً

2 ......مدارج النبوت ، قسم پنجم ، باب هفتم ، ج٢ ، ص٥٢٩ـ٥٤٠ ملتقطاً

《1》 ह़ज़रते का'ब बिन मालिक अन्सारी सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो जंगे तबूक में शरीक न होने की वजह से मा'तूब हुए मगर फिर इन की तौबा की मक़्बूलिय्यत कुरआने मजीद में नाज़िल हुई। इन का बयान है कि हम लोगों से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग मुशरिकीन की हिजू करो क्यूं कि मोमिन अपनी जान और माल से जिहाद करता रहता है और तुम्हारे अश्आ़र गोया कुफ़्फ़ार के ह़क़ में तीरों की मार के बराबर हैं। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त या ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सल्त़नत के दौर में इन की वफ़ात हुई।[1]

《2》 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा अन्सारी ख़ज़रजी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इन के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में चन्द अह़ादीस भी हैं। **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को "**सय्यिदुश्शुअ़रा**" का लक़ब अ़त़ा फ़रमाया था। येह जंगे मौता में शहादत से सरफ़राज़ हुए।[2]

《3》 ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित बिन मुन्ज़िर बिन अ़म्र अन्सारी ख़ज़रजी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह दरबारे रिसालत के शुअ़राए किराम में सब से ज़ियादा मश्हूर हैं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के ह़क़ में दुआ़ फ़रमाई कि اَللّٰھُمَّ اَیِّدْہُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ या'नी या **अल्लाह**! ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام के ज़रीए़ इन की मदद फ़रमा। और येह भी इरशाद फ़रमाया कि जब तक येह मेरी त़रफ़ से कुफ़्फ़ारे मक्का को अपने अश्आ़र के ज़रीए़ जवाब देते रहते हैं उस वक़्त तक ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام इन के साथ रहा करते हैं। एक सो बीस बरस की उ़म्र पा कर सि. 54 हि. में वफ़ात पाई। साठ बरस की उ़म्र ज़मानए जाहिलिय्यत में गुज़ारी और साठ बरस की उ़म्र ख़िदमते इस्लाम में सर्फ़ की। येह एक तारीख़ी लत़ीफ़ा है कि इन की और इन के वालिद "साबित"

---

1 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی،باب فی مؤذنیہ وخطبائہ...الخ،ج٥، ص٧٥

2 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی،باب فی مؤذنیہ وخطبائہ...الخ،ج٥، ص٧٥

और इन के दादा "मुन्ज़िर" और नगर दादा "ह़िराम" सब की उ़म्रें एक सो बीस बरस की हुई।[1] (زرقانی جلد۳ص۳۷۲تا۳۷۳)

ख़ुसूसी मुअज़्ज़िनीन

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ुसूसी मुअज़्ज़िनों की ता'दाद चार है :

《1》 ह़ज़रते बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

《2》 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (नाबीना) رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ येह दोनों मदीनए मुनव्वरह में मस्जिदे नबवी के मुअज़्ज़िन हैं।

《3》 ह़ज़रते सा'द बिन आइज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो "सा'दे क़रज़" के लक़ब से मश्हूर हैं। येह मस्जिदे क़ुबा के मुअज़्ज़िन हैं।

《4》 ह़ज़रते अबू मह़ज़ूरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ येह मक्कए मुकर्रमा की मस्जिदे ह़राम में अज़ान पढ़ा करते थे।[2] (زرقانی جلد۳ص۳۶۹تاص۳۷۱)

दा'वते इस्लामी *के सुन्नतों की तरबिय्यत के* ***मदनी क़ाफ़िलों*** *में सफ़र और रोज़ाना* ***फ़िक्रे मदीना*** *के ज़रीए़* ***मदनी इन्आ़मात*** *का कार्ड पुर कर के हर मदनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये,* اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلّ *इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और* ***ईमान की ह़िफ़ाज़त*** *के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।*

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى،باب فى مؤذنيه و خطبائه...الخ،ج٥،ص٧٦،٧٧

2 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانى،باب فى مؤذنيه و خطبائه...الخ،ج٥،ص٧٠-٧٣

बीसवां बाब

मो'जिज़ाते नुबुव्वत

साहिबे रज्अ़ते शम्सो शक़्क़ुल क़मर नाइबे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

फ़र्श ता अ़र्श है जिस के ज़ेरे नगीं उस की क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम

मो'जिज़ा क्या है ?

हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से उन की नुबुव्वत की सदाक़त ज़ाहिर करने के लिये किसी ऐसी तअ़ज्जुब ख़ैज़ चीज़ का ज़ाहिर होना जो आ़दतन नहीं हुवा करती इसी ख़िलाफ़े आ़दत ज़ाहिर होने वाली चीज़ का नाम **मो'जिज़ा** है ।(1)

मो'जिज़ा चूंकि नबी की सदाक़त ज़ाहिर करने के लिये एक ख़ुदा वन्दी निशान हुवा करता है। इस लिये मो'जिज़े के लिये ज़रूरी है कि वोह ख़ारिक़े आ़दत हो। या'नी ज़ाहिरी इ़लल व अस्बाब और आ़दाते जारिया के बिल्कुल ही ख़िलाफ़ हो वरना ज़ाहिर है कि कुफ़्फ़ार उस को देख कर कह सकते हैं कि येह तो फ़ुलां सबब से हुवा है और ऐसा तो हमेशा आ़दतन हुवा ही करता है। इस बिना पर मो'जिज़े के लिये येह लाज़िमी शर्त़ है बल्कि येह मो'जिज़े के मफ़्हूम में दाख़िल है कि वोह किसी न किसी ए'तिबार से अस्बाबे आ़दिया और आ़दाते जारिया के ख़िलाफ़ हो और ज़ाहिरी अस्बाब व इ़लल के अ़मल दख़्ल से बिल्कुल ही बाला तर हो, ताकि उस को देख कर कुफ़्फ़ार येह मानने पर मजबूर हो जाएं कि चूंकि इस चीज़ का कोई ज़ाहिरी सबब भी नहीं है और आ़दतन कभी ऐसा हुवा भी नहीं करता इस लिये बिला शुबा इस चीज़ का किसी शख़्स से ज़ाहिर होना इन्सानी त़ाक़तों से बाला तर कारनामा है। लिहाज़ा यक़ीनन येह शख़्स **अल्लाह** की त़रफ़ से भेजा हुवा और उस का नबी है।

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، المقصد الرابع فی معجزاته...الخ، ج٦،ص٤٠٦ملخصاً

मो'जिज़ात की चार क़िस्में

जब मो'जिज़े के लिये येह ज़रूरी और लाज़िमी शर्त़ है कि वोह किसी न किसी लिह़ाज़ से इन्सानी त़ाक़तों से बाला तर और आ़दाते जारिया के ख़िलाफ़ हो। इस बिना पर अगर बग़ौर देखा जाए तो ख़ारिक़े आ़दत होने के ए'तिबार से मो'जिज़ात की चार क़िस्में मिलेंगी जो ह़स्बे ज़ैल हैं :

अव्वल : बज़ाते ख़ुद वोह चीज़ ही ऐसी हो जो ज़ाहिरी अस्बाब व आ़दात के बिल्कुल ही ख़िलाफ़ हो जैसे **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का चांद को दो टुकड़े कर के दिखा देना। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के अ़सा का सांप बन कर जादूगरों के सांपों को निगल जाना। ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का मुर्दों को ज़िन्दा कर देना वग़ैरा वग़ैरा।

दुवुम : बज़ाते ख़ुद वोह चीज़ तो ख़िलाफ़े आ़दत नहीं होती मगर किसी ख़ास वक़्त पर बिल्कुल ही ना गहां नबी से उस का ज़ुहूर हो जाना इस ए'तिबार से येह चीज़ ख़ारिक़े आ़दत हो जाया करती है लिहाज़ा येह भी मो'जिज़ा ही कहलाएगा। मसलन जंगे ख़न्दक़ में अचानक एक ख़ौफ़नाक आंधी का आ जाना जिस से कुफ़्फ़ार के ख़ैमे उखड़ उखड़ कर उड़ गए और भारी भारी देगें चूल्हों पर से उलट पलट कर दूर जा कर गिर पड़ीं या जंगे बद्र में तीन सो तेरह मुसलमानों के मुक़ाबले में कुफ़्फ़ार के एक हज़ार लश्करे जर्रार का जो मुकम्मल तौर पर मुसल्लह़ थे शिकस्त खा कर मक़्तूल व गरिफ़्तार हो जाना। ज़ाहिर है कि आंधी का आना या किसी लश्कर का शिकस्त खा जाना येह बज़ाते ख़ुद कोई ख़िलाफ़े आ़दत बात नहीं है बल्कि येह तो हमेशा हुवा ही करता है लेकिन इस एक ख़ास मौक़अ़ पर जब कि रसूल को ताईदे रब्बानी की ख़ास ज़रूरत मह़सूस हुई बिग़ैर किसी ज़ाहिरी सबब के बिल्कुल ही अचानक आंधी का आ जाना

और कुफ़्फ़ार का बा वुजूदे कसरते ता'दाद के क़लील मुसलमानों से शिकस्त खा जाना इस को ताईदे खुदा वन्दी और ग़ैबी इमदाद व नुस्रत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इस लिहाज़ से यक़ीनन येह आदाते जारिया के ख़िलाफ़ और ज़ाहिरी अस्बाब व इलल से बाला तर है। लिहाज़ा येह भी यक़ीनन मो'जिज़ा है।

सिवुम : एक सूरत येह भी है कि न तो बज़ाते खुद वोह वाक़िआ ख़िलाफ़े आदत होता है न उस के ज़ाहिर होने के वक़्ते ख़ास में ख़िलाफ़े आदत कोई बात होती है। मगर उस वाक़िए के ज़ाहिर होने का त़रीक़ा बिल्कुल ही नादिरुल वुजूद और ख़िलाफ़े आदत हुवा करता है। मसलन अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की दुआओं से बिल्कुल ही ना गहां पानी का बरसना, बीमारों का शिफ़ायाब हो जाना, आफ़तों का टल जाना।

ज़ाहिर है कि येह बातें न तो ख़िलाफ़े आदत हैं न इन के ज़ाहिर होने का कोई ख़ास वक़्त है बल्कि येह बातें तो हमेशा हुवा ही करती हैं लेकिन जिन त़रीक़ों और जिन अस्बाब से येह चीज़ें वुक़ूअ पज़ीर हुई कि एक दम ना गहां नबी ने दुआ मांगी और बिल्कुल ही अचानक येह चीज़ें ज़ुहूर में आ गईं। इस ए'तिबार से यक़ीनन बिला शुबा येह सारी चीज़ें ख़ारिक़े आदात और ज़ाहिरी अस्बाब से अलग और बाला तर हैं। लिहाज़ा येह चीज़ें भी मो'जिज़ात ही कहलाएंगे।

चहारुम : कभी ऐसा भी होता है कि न तो खुद वाक़िआ आदाते जारिया के ख़िलाफ़ होता है न उस का त़रीक़ए ज़ुहूर ख़ारिक़े आदत होता है लेकिन बिला किसी ज़ाहिरी सबब के नबी को उस वाक़िए का क़ब्ल अज़ वक़्त इल्मे ग़ैब ह़ासिल हो जाना और वाक़िए के वुक़ूअ से पहले ही नबी का इस वाक़िए की ख़बर दे देना येह ख़िलाफ़े आदत होता है। मसलन ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ने वाक़िआत के ज़ुहूर से बहुत पहले जो ग़ैब की ख़बरें दी हैं येह सब वाक़िआत इस ए'तिबार से ख़ारिक़े आदात और

मो'जिज़ात हैं। चुनान्चे मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है कि एक रोज़ बहुत ही ज़ोरदार आंधी चली उस वक़्त **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने से बाहर तशरीफ़ फ़रमा थे आप ने उसी जगह फ़रमाया कि येह आंधी मदीने के एक मुनाफ़िक़ की मौत के लिये चली है। चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि जब लोग मदीना पहुंचे तो मा'लूम हुवा कि मदीने का एक मुनाफ़िक़ इस आंधी से हलाक हो गया।[1] (مشکوٰۃ شریف جلد۲ص ۵۳۷باب المعجزات)

ग़ौर कीजिये कि इस वाक़िए में न तो आंधी का चलना ख़िलाफ़े आदत है न किसी आदमी का आंधी से हलाक होना अस्बाब व आदात के ख़िलाफ़ है क्यूं कि आंधी हमेशा आती ही रहती है और आंधी में हमेशा आदमी मरते ही रहते हैं लेकिन इस वाक़िए का क़ब्ल अज़ वक़्त **हुज़ूर** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इल्म हो जाना और आप का लोगों को इस ग़ैब की ख़बर पर क़ब्ल अज़ वक़्त मुत्तलअ़ कर देना यक़ीनन बिला शुबा येह ख़र्क़े आदात और मो'जिज़ात में से है।

अम्बियाए साबिक़ीन और ख़ातमुन्नबिय्यीन के मो'जिज़ात

हर नबी का मो'जिज़ा चूंकि उस की नुबुव्वत के सुबूत की दलील हुवा करता है इस लिये ख़ुदा वन्दे आलम ने हर नबी को उस दौर के माहोल और उस की उम्मत के मिज़ाजे अक़्ल व फ़हम के मुनासिब मो'जिज़ात से नवाज़ा। चुनान्चे मसलन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के दौर में चूंकि जादू और साहिराना कारनामे अपनी तरक़्क़ी की आ'ला तरीन मन्ज़िल पर पहुंचे हुए थे इस लिये **अल्लाह** तआला ने आप को "यदे बैज़ा" और "असा" के मो'जिज़ात अता फ़रमाए जिन से आप ने जादूगरों के साहिराना कारनामों पर इस तरह ग़लबा हासिल फ़रमाया कि तमाम जादूगर सज्दे में गिर पड़े और आप की नुबुव्वत पर ईमान लाए।

---

1 ......مشكاة المصابيح ، كتاب احوال القيامة ...الخ ،باب المعجزات ، الحديث: ٥٩٠٠، ج٢ ، ص ٣٨٧

इसी त़रह़ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में इल्मे त़िब इनतिहाई मे'राजे तरक़्क़ी पर पहुंचा हुवा था और उस दौर के त़बीबों और डॉक्टरों ने बड़े बड़े अमराज़ का इलाज कर के अपनी फ़न्नी महारत से तमाम इन्सानों को मस्ह़ूर कर रखा था इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को मादर ज़ाद अन्धों और कोढ़ियों को शिफ़ा देने और मुर्दों को ज़िन्दा कर देने का मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया जिस को देख कर दौरे मसीह़ी के अत़िब्बा और डॉक्टरों के होश उड़ गए और वोह ह़ैरान व शश्दर रह गए और बिल आख़िर उन्हों ने इन मो'जिज़ात को इन्सानी कमालात से बाला तर मान कर आप की नुबुव्वत का इक़रार कर लिया।

इसी त़रह़ ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام के दौरे बिअ़्सत में संग तराशी और मुजस्समा साज़ी के कमालात का बहुत ही चर्चा था इस लिये ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने आप को येह मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमा कर भेजा कि आप ने एक पहाड़ी की त़रफ़ इशारा फ़रमा दिया तो उस की एक चट्टान शक़ हो गई और उस में से एक बहुत ही ख़ूब सूरत और तन्दुरुस्त ऊंटनी और उस का बच्चा निकल पड़ा और आप ने फ़रमाया कि

هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً (1)

*येह **अल्लाह** की ऊंटनी है जो तुम्हारे लिये मो'जिज़ा बन कर आई है।*

ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम आप का येह मो'जिज़ा देख कर ईमान लाई।

अल ग़रज़ इसी त़रह़ हर नबी को उस दौर के माह़ोल के मुत़ाबिक़ और उस की क़ौम के मिज़ाज और उन की उफ़्तादे त़ब्अ़ के मुनासिब किसी को एक, किसी को दो, किसी को इस से ज़ियादा मो'जिज़ात मिले मगर हमारे **हुज़ूर** नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم चूंकि तमाम नबियों के भी नबी हैं और आप की सीरते मुक़द्दसा तमाम अम्बिया

1 ......پ ٨، الاعراف:٧٣

عَلَیۡہِمُ السَّلَام की मुक़द्दस ज़िन्दगियों का खुलासा और आप की ता'लीम तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام की ता'लीमात का इत्र है और आप दुन्या में एक आलमगीर और अबदी दीन ले कर तशरीफ़ लाए थे और आलमे काएनात में अव्वलीन व आख़िरीन के तमाम अक़्वाम व मिलल आप की मुक़द्दस दा'वत के मुख़ातब थे, इस लिये **अल्लाह** तआला ने आप की ज़ाते मुक़द्दसा को अम्बियाए साबिक़ीन के तमाम मो'जिज़ात का मजमूआ बना दिया और आप को क़िस्म क़िस्म के ऐसे बे शुमार मो'जिज़ात से सरफ़राज़ फ़रमाया जो हर तब्क़ा, हर गुरौह, हर क़ौम और तमाम अहले मज़ाहिब के मिज़ाजे अक़्ल व फ़हम के लिये ज़रूरी थे। इसी लिये आप की सूरत व सीरत आप की सुन्नत व शरीअत आप के अख़्लाक़ व आदात आप के दिन रात के मा'मूलात ग़रज़ आप की ज़ात व सिफ़ात की हर हर अदा और एक एक बात अपने दामन में मो'जिज़ात की एक दुन्या लिये हुए है। आप पर जो किताब नाज़िल हुई वोह आप का सब से बड़ा और क़ियामत तक बाक़ी रहने वाला ऐसा अबदी मो'जिज़ा है जिस की हर हर आयत आयाते बय्यिनात की किताब और जिस की सत्र सत्र मो'जिज़ात का दफ़्तर है। आप के मो'जिज़ात आलमे आ'ला और आलमे अस्फ़ल की काएनात में इस तरह जल्वा फ़िगन हुए कि फ़र्श से अर्श तक आप के मो'जिज़ात की अज़मत का डंका बज रहा है। रूए ज़मीन पर जमादात, नबातात, हैवानात के तमाम आलमों में आप के तरह तरह के मो'जिज़ात की ऐसी हमागीर हुक्मरानी व सल्तनत का परचम लहराया कि बड़े बड़े मुन्किरों को भी आप की सदाक़त व नुबुव्वत के आगे सर निगूं होना पड़ा और मुआनिदीन के सिवा हर इन्सान ख़्वाह वोह किसी क़ौम व मज़हब से तअल्लुक़ रखता हो और अपनी उफ़्तादे तब्अ और मिज़ाजे अक़्ल के लिहाज़ से कितनी ही मन्ज़िले बुलन्द पर फ़ाइज़ क्यूं न हो मगर आप के मो'जिज़ात की कसरत और इन की नौइय्यत व अज़मत को देख कर उस को इस बात पर ईमान लाना ही पड़ा कि बिला शुबा आप नबिय्ये बरहक़

और ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं। ख़ुद आप की जिस्मानी व रूहानी ख़ुदादाद ताक़तों पर अगर नज़र डाली जाए तो पता चलता है कि आप की ह़याते मुक़द्दसा के मुख़्तलिफ़ दौर के मुह़य्यिरुल उ़क़ूल कारनामे बजाए ख़ुद अ़ज़ीम से अ़ज़ीम तर मो'जिज़ात ही मो'जिज़ात हैं। कभी अ़रब के ना क़ाबिले तस्ख़ीर पहलवानों से कुश्ती लड़ कर उन को पछाड़ देना, कभी दम ज़दन में फ़र्शे ज़मीन से सिद्रतुल मुन्तहा पर गुज़रते हुए अ़र्शे मुअ़ल्ला की सैर, कभी उंगलियों के इशारे से चांद के दो टुकड़े कर देना, कभी डूबे हुए सूरज को वापस लौटा देना, कभी ख़न्दक़ की चट्टान पर फावड़ा मार कर रूम व फ़ारस की सल्त़नतों में अपनी उम्मत को परचमे इस्लाम लहराता हुवा दिखा देना, कभी उंगलियों से पानी के चश्मे जारी कर देना, कभी मुठ्ठी भर खजूर से एक भूके लश्कर को इस त़रह़ राशन देना कि हर सिपाही ने शिकम सैर हो कर खा लिया वग़ैरा वग़ैरा मो'जिज़ात का ज़ाहिर कर देना यक़ीनन बिला शुबा येह वोह मो'जिज़ाना वाक़िआ़त हैं कि दुन्या का कोई भी सलीमुल अ़क़्ल इन्सान इन से मुतअस्सिर हुए बिग़ैर नहीं रह सकता।

मो'जिज़ाते कसीरा में से चन्द

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात की ता'दाद का हज़ार दो हज़ार की गिनतियों से शुमार करना इनतिहाई दुश्वार है। क्यूं कि हम तह़रीर कर चुके हैं कि आप की ज़ाते मुक़द्दसा तमाम अम्बियाए साबिक़ीन عليهم الصلوٰة والتسليم के मो'जिज़ात का मजमूआ़ है। और इन के इलावा ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने आप को दूसरे ऐसे बे शुमार मो'जिज़ात भी अ़त़ा फ़रमाए हैं जो किसी नबी व रसूल को नहीं दिये गए। इस लिये येह कहना आफ़्ताब से ज़ियादा ताबनाक ह़क़ीक़त है कि आप की मुक़द्दस ज़िन्दगी के तमाम लम्ह़ात दर ह़क़ीक़त मो'जिज़ात की एक दुन्या और ख़वारिक़े आ़दात का एक आ़लमे अक्बर हैं।

ज़ाहिर है कि जब बड़ी बड़ी अ़ज़ीम व ज़ख़ीम किताबों के मुसन्निफ़ीन **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के तमाम मो'जिज़ात को अपनी

अपनी किताबों में जम्अ़ नहीं फ़रमा सके तो हमारी इस मुख़्तसर किताब का तंग दामन भला इन मो'जिज़ाते कसीरा का किस त़रह़ मुतह़म्मिल हो सकता है ? लेकिन मसल मश्हूर है कि "مَالَا یُدْرَكُ كُلُّهٗ لَا یُتْرَكُ كُلُّهٗ" या'नी जिस चीज़ को पूरा पूरा न ह़ासिल किया जा सके उस को बिल्कुल ही छोड़ देना भी नहीं चाहिये। इस लिये मैं ने मुनासिब समझा कि अपनी इस मुख़्तसर किताब में चन्द मो'जिज़ात का भी ज़िक्र करूं ताकि इस किताब का दामन मो'जिज़ाते नुबुव्वत के गुलहाए रंगारंग से बिल्कुल ही ख़ाली न रह जाए। चूंकि हम अ़र्ज़ कर चुके कि हमारे हुज़ूर नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात आ़लमे अस्फ़ल ही तक मह़दूद नहीं बल्कि आ़लमे अस्फ़ल व आ़लमे आ'ला दोनों जहानों में मो'जिज़ाते नबविय्या की हुक्मरानी है इस लिये हम चन्द अक़्साम के मो'जिज़ात की चन्द मिसालें मुख़्तलिफ़ उ़न्वानों के तह़्त दर्ज करते हैं।

आस्मानी मो'जिज़ात

चांद दो टुकड़े हो गया

हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में "शक़्क़ुल क़मर" का मो'जिज़ा बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान और फ़ैसला कुन मो'जिज़ा है। ह़दीसों में आया है कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप से येह मुत़ालबा किया कि आप अपनी नुबुव्वत की सदाक़त पर बत़ौरे दलील के कोई मो'जिज़ा और निशानी दिखाइये। उस वक़्त आप ने उन लोगों को "शक़्क़ुल क़मर" का मो'जिज़ा दिखाया कि चांद दो टुकड़े हो कर नज़र आया। चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास व ह़ज़रते अनस बिन मालिक व ह़ज़रते ज़ुबैर बिन मुत़्इ़म व ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब व ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم वग़ैरा ने इस वाक़िए़ की रिवायत की है।[1] (زرقانی علی المواہب جلد۵ ص۱۲۴)

---

[1]......المواهب اللدنية وشرح الزرقانى، المقصد الرابع فى معجزاته...الخ، ج٦، ص٤٧٢، ٤٧٣ ملخصاً

इन रिवायात में सब से ज़ियादा सह़ीह़ और मुस्तनद ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत है जो बुख़ारी व मुस्लिम व तिरमिज़ी वग़ैरा में मज़्कूर है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस मौक़अ़ पर मौजूद थे और उन्हों ने इस मो'जिज़े को अपनी आंखों से देखा था। उन का बयान है कि

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में चांद दो टुकड़े हो गया। एक टुकड़ा पहाड़ के ऊपर और एक टुकड़ा पहाड़ के नीचे नज़र आ रहा था। आप ने कुफ़्फ़ार को येह मन्ज़र दिखा कर उन से इरशाद फ़रमाया कि गवाह हो जाओ गवाह हो जाओ।[1] (بخاری جلد۲ص ۷۲۱،ص۷۲۲ باب قولہ وانشق القمر)

इन अह़ादीसे मुबारका के इ़लावा इस अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़े का ज़िक्र कुरआने मजीद में भी है। चुनान्चे इरशादे रब्बानी है कि

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ٥ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ٥[2] (قمر)

क़ियामत क़रीब आ गई और चांद फट गया और येह कुफ़्फ़ार अगर कोई निशानी देखते हैं तो उस से मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि येह जादू तो हमेशा से होता चला आया है।

इस आयत का साफ़ व सरीह़ मत़लब येही है कि क़ियामत क़रीब आ गई और दुन्या की उ़म्र का क़लील हिस्सा बाक़ी रह गया क्यूं कि चांद का दो टुकड़े हो जाना जो अ़लामाते क़ियामत में से था वोह **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में हो चुका मगर येह वाज़ेह़ तरीन और फ़ैसला कुन मो'जिज़ा देख कर भी कुफ़्फ़ारे मक्का मुसलमान नहीं हुए बल्कि ज़ालिमों ने येह कहा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने हम लोगों पर जादू कर दिया और इस क़िस्म की जादू की चीज़ें तो हमेशा होती ही रहती हैं।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب و انشق القمر...الخ، الحدیث: ٤٨٦٤، ٤٨٦٥، ج٣، ص ٣٣٩، ٣٤٠

2 ......پ٢٧، القمر: ١، ٢

एक ग़लत फ़हमी का इज़ाला

आयते मज़्कूरए बाला के बारे में बा'ज़ उन मुल्हिदीन का जो मो'जिज़ए शक़्क़ुल क़मर के मुन्किर हैं येह ख़याल है कि इस शक़्क़ुल क़मर से मुराद ख़ालिस क़ियामत के दिन चांद का टुकड़े टुकड़े होना है जब कि आस्मान फट जाएगा और चांद सितारे झड़ कर बिखर जाएंगे।

मगर अहले फ़ह्म पर रौशन है कि इन मुल्हिदों की येह बक्वास सरासर लग़्व और बिल्कुल ही बे सरो पा ख़ुराफ़ात वाली बात है क्यूं कि अव्वलन तो इस सूरत में बिला किसी क़रीने के انشق (चांद फट गया) माज़ी के सीग़े को ينشق (चांद फट जाएगा) मुस्तक़्बिल के मा'ना में लेना पड़ेगा जो बिल्कुल ही बिला ज़रूरत है। दूसरे येह कि चांद शक़ होने का ज़िक्र करने के बा'द येह फ़रमाया गया है कि

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝ (1)

या'नी शक़्क़ुल क़मर की अज़ीमुश्शान निशानी को देख कर कुफ़्फ़ार ने येह कहा कि येह जादू है जो हमेशा से होता आया है।

ज़ाहिर है कि जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने शक़्क़ुल क़मर का मो'जिज़ा देखा तो उस को जादू कहा वरना खुली हुई बात है कि क़ियामत के दिन जब आस्मान फट जाएगा और चांद सितारे टुकड़े टुकड़े हो कर झड़ जाएंगे और तमाम इन्सान मर जाएंगे तो उस वक़्त उस को जादू कहने वाला भला कौन होगा ? इस लिये बिला शुबा यक़ीनन इस आयत के येही मा'ना मुतअय्यन हैं कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में चांद फट गया और इस मो'जिज़े को देख कर कुफ़्फ़ार ने इस को जादू का करतब बताया।

---

1 ......پ ۲۷، القمر: ۲

एक सुवाल व जवाब

हां अलबत्ता यहां एक सुवाल पैदा होता है जो अकसर लोग पूछा करते हैं कि शक़्क़ुल क़मर का मो'जिज़ा जब मक्का में ज़ाहिर हुवा तो आख़िर येह मो'जिज़ा दूसरे मुमालिक और दूसरे शहरों में क्यूं नहीं नज़र आया ?

इस सुवाल का येह जवाब है कि अव्वलन तो मक्कए मुकर्रमा के इलावा दूसरे शहरों के लोगों ने भी जैसा कि अह़ादीस से साबित है इस मो'जिज़े को देखा। चुनान्चे ह़ज़रते मसरूक़ ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की है कि येह मो'जिज़ा देख कर कुफ़्फ़ारे मक्का ने कहा कि अबू कबशा के बेटे (मुह़म्मद صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने तुम लोगों पर जादू कर दिया है। फिर उन लोगों ने आपस में येह तै किया कि बाहर से आने वाले लोगों से पूछना चाहिये कि देखें वोह लोग इस बारे में क्या कहते हैं ? क्यूं कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का जादू तमाम इन्सानों पर नहीं चल सकता। चुनान्चे बाहर से आने वाले मुसाफ़िरों ने भी येह गवाही दी कि "हम ने भी **शक़्क़ुल क़मर** देखा है।"[1]

(شفاء قاضی عیاض جلد ا ص ۱۸۳)

और अगर येह तस्लीम भी कर लिया जाए कि दूसरे मुमालिक और शहरों के बाशिन्दों ने इस मो'जिज़े को नहीं देखा तो किसी चीज़ को न देखने से येह कब लाज़िम आता है कि वोह चीज़ हुई ही नहीं। आस्मान में रोज़ाना क़िस्म क़िस्म के आसार नुमूदार होते रहते हैं। मसलन रंग बिरंग के बादल, क़ौस क़ुज़ह़, सितारों का टूटना, मगर येह सब आसार उन्ही लोगों को नज़र आते हैं जो इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त आस्मान की त़रफ़ देख रहे हों दूसरे लोगों को नज़र नहीं आते।

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب، المقصد الرابع فی معجزاته...الخ، ج٦، ص٤٧٥، ٤٧٦

इसी त़रह़ दूसरे मुमालिक और शहरों में येह मो'जिज़ा नज़र न आने की एक वजह येह भी हो सकती है कि इख़्तिलाफ़े मत़ालेअ़ की वजह से बा'ज़ मक़ामात पर एक वक़्त में चांद का तुलूअ़ होता है और उस वक़्त में दूसरे शहरों के अन्दर चांद का तुलूअ़ ही नहीं होता इसी लिये जब चांद में ग्रहन लगता है तो तमाम मुमालिक में ग्रहन नज़र नहीं आता। और बा'ज़ मरतबा ऐसा भी होता है कि दूसरे मुल्कों और शहरों में अब्र या पहाड़ वग़ैरा के ह़ाइल हो जाने से किसी किसी वक़्त चांद नज़र नहीं आता।

इस मौक़अ़ पर मुनासिब मा'लूम होता है कि हम यहां वोह नक़्शा बि ऐ़निही नक़्ल कर दें जो क़ाज़ी मुह़म्मद सुलैमान साह़िब सलमान मन्सूर पूरी ने अपनी किताब "रह़मतुल्लिल आ़लमीन" में तह़रीर किया है जिस से येह मा'लूम होता है कि जिस वक़्त मक्कए मुकर्रमा में "**मो'जिज़ए शक़्कुल क़मर**" वाक़ेअ़ हुवा उस वक़्त दुन्या के बड़े बड़े मुमालिक में क्या अवक़ात थे? इस नक़्शे की ज़िम्मादारी मुसन्निफ़े "रह़मतुल्लिल आ़लमीन" के ऊपर है। हम सिर्फ़ नक़्ल मुत़ाबिक़े अस्ल होने के ज़िम्मेदार हैं। उन की इ़बारत और नक़्शा ह़स्बे ज़ैल है। मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

इस से बढ़ कर अब हम दिखलाना चाहते हैं कि अगर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में येह वाक़िआ़ रात को 9 बजे वुक़ूअ़ पज़ीर हुवा तो उस वक़्त दुन्या के बड़े बड़े मुमालिक में क्या अवक़ात थे।

नाम मुल्क	घन्टा	मिनट	दिन या रात
हिन्दूस्तान	12	50	रात
मॉरेशिस	11	20	रात

रूमानिया, बिलगेरिया, टर्की, यूनान, जर्मन	8	20	दिन
लिक्सम्बर्ग, डेन्मार्क, स्वीडन	8	20	दिन
आइस लेन्ड, मिडेरिया	5	20	दिन
मशरिक़ी ब्राज़ील	3	20	बा'द नीम शब
मुतवस्सित़ ब्राज़ील व चिल्ली	2	20	बा'द नीम शब
ब्रिटिश कोलम्बिया	10	20	क़ब्ल दोपहर
लोकोन	9	24	क़ब्ल दोपहर
बरहमा	1	50	बा'द नीम शब
सिमाली लेन्ड मिडग़ास्कर	10	20	रात
रियासतहाए मलाया	2	20	बा'द नीम शब
जज़ाइर सन्डोक	7	50	दिन
इंग्लिस्तान, आयर लेन्ड, फ़्रान्स, बेल्जियम, स्पेन, पुर्तुगाल, जबलुत्तारिक़, अल्जीरिया	6	20	दिन
पेरू, पतामा, जमीका, भाहन, अमरीका	1	20	बा'द नीम शब
समूआ	6	20	दिन
न्यूज़ीलेन्ड	6	50	सुब्ह़
तिस्मानिया, विक्टोरिया, न्यू साउथ वेल्ज़	5	22	सुब्ह़
जुनूबी ऑस्ट्रेलिया	4	50	सुब्ह़
जापान, कोरिया	4	20	बा'द दोपहर
मग़रिबी ऑस्ट्रेलिया, शिमाली बोरनियो, जज़ाइर फ़िलिपाइन, हॉंगकॉंग, चीन	3	20	बा'द दोपहर

येह नक़्शए अवकात स्टान्डर्ड टाइम के हिसाब से है।

(रह़मतुल्लिल आ़लमीन, जिल्द सिवुम, स. 190)

सूरज पलट आया

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आस्मानी मो'जिज़ात में सूरज पलट आने का मो'जिज़ा भी बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा और सदाक़ते नुबुव्वत का एक वाज़ेह़ तरीन निशान है। इस का वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते बीबी अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि "ख़ैबर" के क़रीब "मन्ज़िले सहबा" में **हुज़ूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े अ़स्र पढ़ कर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की गोद में अपना सरे अक़्दस रख कर सो गए और आप पर वह्य नाज़िल होने लगी। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सरे अक़्दस को अपनी आग़ोश में लिये बैठे रहे। यहां तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया और आप को येह मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नमाज़े अ़स्र क़ज़ा हो गई तो आप ने येह दुआ़ फ़रमाई कि "या **अल्लाह** ! यक़ीनन अ़ली तेरी और तेरे रसूल की इत़ाअ़त में थे लिहाज़ा तू सूरज को वापस लौटा दे ताकि अ़ली नमाज़े अ़स्र अदा कर लें।"

ह़ज़रते बीबी अस्मा बिन्ते उ़मैस कहती हैं कि मैं ने अपनी आंखों से देखा कि डूबा हुवा सूरज पलट आया और पहाड़ों की चोटियों पर और ज़मीन के ऊपर हर त़रफ़ धूप फैल गई।[1]

(زرقانی جلد۵ص۱۱۳وشفاء جلد۱ص۱۸۵ومدارج النبوۃ جلد۲ص۲۵۲)

इस में शक नहीं कि बुख़ारी की रिवायतों में इस मो'जिज़े का ज़िक्र नहीं है लेकिन याद रखिये कि किसी ह़दीस का बुख़ारी में न होना इस बात की दलील नहीं है कि वोह ह़दीस बिल्कुल ही बे अस्ल है। इमाम बुख़ारी को छे लाख ह़दीसें ज़बानी याद थीं। इन्ही ह़दीसों में से चुन कर उन्हों ने बुख़ारी शरीफ़ में अगर मुकर्ररात व मुताबआ़त को शामिल कर के शुमार की जाएं तो सिर्फ़ नव हज़ार बयासी ह़दीसें लिखी हैं और अगर

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانی ، باب رد الشمس له ، ج٦، ص ٤٨٤، ٤٨٥

मुकर्रात व मुताबआत को छोड़ कर गिनती की जाए तो कुल ह़दीसों की ता'दाद दो हज़ार सात सो इक्सठ 2761 रह जाती हैं ।[1] (مقدمہ فتح الباری)

बाक़ी ह़दीसें जो ह़ज़रते इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ الرَّحْمَة को ज़बानी याद थीं । ज़ाहिर है कि वोह बे अस्ल और मौज़ूअ़ न होंगी बल्कि वोह भी यक़ीनन सह़ीह़ या ह़सन ही होंगी तो आख़िर वोह सब कहां हैं ? और क्या हुईं ? तो इस बारे में येह कहना ही पड़ेगा कि दूसरे मुह़द्दिसीन ने उन्ही ह़दीसों को और कुछ दूसरी ह़दीसों को अपनी अपनी किताबों में लिखा होगा । चुनान्चे मन्ज़िले सहबा में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नमाज़े अ़स्र के लिये सूरज पलट आने की ह़दीस को बहुत से मुह़द्दिसीन ने अपनी अपनी किताबों में लिखा है । जैसा कि ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَة ने फ़रमाया कि ह़ज़रते इमाम अबू जा'फ़र त़ह़ावी, अह़मद बिन सालेह़, व इमाम त़बरानी व क़ाज़ी इयाज़ ने इस ह़दीस को अपनी अपनी किताबों में तह़रीर फ़रमाया है और इमाम त़ह़ावी ने तो येह भी तह़रीर फ़रमाया है कि इमाम अह़मद बिन सालेह़ जो इमाम अह़मद बिन ह़म्बल के हम पल्ला हैं, फ़रमाया करते थे कि येह रिवायत अ़ज़ीम तरीन मो'जिज़ा और अ़लामाते नुबुव्वत में से है लिहाज़ा इस को याद करने में अहले इल्म को न पीछे रहना चाहिये न ग़फ़्लत बरतनी चाहिये ।[2] (مدارج النبوۃ جلد۲ص۲۵۴)

बहर ह़ाल जिन जिन मुह़द्दिसीन ने इस ह़दीस को अपनी अपनी किताबों में लिखा है उन की एक मुख़्तसर फ़ेहरिस्त येह है :

---

1 ......مقدمة فتح الباری، الفصل الاول، ج۱، ص۱۰

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب ششم ، ج ۲ ، ص ۲٥٤ ملتقطاً

नाम मुहद्दिस	नाम किताब
﴾1﴿ हज़रते इमाम अबू जा'फ़र तहावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	मुश्किलुल आसार में
﴾2﴿ हज़रते इमाम हाकिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	मुस्तदरक में
﴾3﴿ हज़रते इमाम तबरानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	मो'जमे कबीर में
﴾4﴿ हज़रते हाफ़िज़ इब्ने मरदूया رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	अपनी मरवियात में
﴾5﴿ हज़रते हाफ़िज़ अबुल बशर رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	अज़्ज़ुर्रिय्यतित्ताहिरा में
﴾6﴿ हज़रते क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	शिफ़ा शरीफ़ में
﴾7﴿ हज़रते ख़तीब बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	तल्ख़ीसुल मुतशाबेह में
﴾8﴿ हज़रते हाफ़िज़ मुग़लताई رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	अज़्ज़ुरुल बासिम में
﴾9﴿ हज़रते अ़ल्लामा ऐनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	उ़म्दतुल क़ारी में
﴾10﴿ हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	कश्फ़ुल्लब्स में
﴾11﴿ हज़रते अ़ल्लामा इब्ने यूसुफ़ दिमश्क़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	मुज़ीलुल्लब्स में
﴾12﴿ हज़रते शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	इज़ालतिल ख़िफ़ा में
﴾13﴿ हज़रते शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	मदारिजुन्नुबुव्वह में
﴾14﴿ हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब में
﴾15﴿ हज़रते अ़ल्लामा क़स्तलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने	मवाहिबे लदुन्निय्यह में

इस हदीस पर अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी ने अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ जो जरहें की हैं और इस हदीस को मौज़ूअ़ क़रार दिया है, हज़रते अ़ल्लामा ऐनी ने उ़म्दतुल क़ारी जिल्द 7 स. 146 में तहरीर फ़रमाया है कि अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी की जरहें क़ाबिले इल्तिफ़ात नहीं हैं, हज़रते इमाम अबू जा'फ़र

तहावी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस हदीस को सनदें लिख कर फ़रमाया कि هٰذَانِ الْحَدِیْثَانِ ثَابِتَانِ وَرُوَاتُهُمَا ثِقَاتٌ....... या'नी येह दोनों रिवायतें साबित हैं और इन के रावी सिक़ा हैं। (شفاءشریف جلد۱ص۱۸۵)

इसी तरह हज़रते शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी की जरहों को रद कर दिया है और इस हदीस के सहीह और हसन होने की पुरज़ोर ताईद फ़रमाई है।(2)

(مدارج النبوۃ جلد۲ص۲۵۴)

इसी तरह इज़ालतिल ख़िफ़ा में अ़ल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ़ दिमश्क़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किताब "मुज़ीलुल्लब्स अ़न हदीसि रद्दिश्शम्स" की येह इबारत मन्क़ूल है कि

اعلم ان هذا الحديث رواه الطحاوى فى كتابه "شرح مشكل الاثار" عن اسماء بنت عميس من طريقين وقال هذان الحديثان ثابتان ورواتهما ثقات ونقله قاضى عياض فى "الشفاء" والحافظ ابن سيد الناس فى "بشرى اللبيب" والحافظ علاء الدين مغلطائى فى كتابه "الزهر الباسم" وصححه ابو الفتح الازدى وحسنه ابو زرعة بن العراقى وشيخنا الحافظ جلال الدين السيوطى فى "الدرر المنتشرة فى الاحاديث المشتهرة" وقال الحافظ احمد بن صالح وناهيك به لاينبغى لمن سبيله العلم التخلف عن حديث اسماء لانه من اجل علامات النبوة وقدانكرالحفاظ على ابن الجوزى ايراده الحديث فى "كتاب الموضوعات"

(3)(التقریر المعقول فی فضل الصحابۃ واہل بیت الرسول ص۸۸)

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل فى انشقاق القمر وحبس الشمس ، ج ۱ ، ص ۲۸٤

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب ششم ، ج ۲ ، ص ۲۵٤

3 ......ازالة الخفاء،مقصد دوم،امامآثر امير المؤمنين...الخ،ج٤،ص٤٨٨

तुम जान लो कि इस ह़दीस को इमाम त़ह़ावी ने अपनी किताब "शर्ह़े मुश्किलुल आसार" में ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से दो सनदों के साथ रिवायत किया है और फ़रमाया है कि येह दोनों ह़दीसें साबित हैं और इन दोनों के रिवायत करने वाले सक़्क़ा हैं और इस ह़दीस को क़ाज़ी इ़याज़ ने "शिफ़ा" में और ह़ाफ़िज़ इब्ने सय्यिदुन्नास ने "बशरिल्लबीब" में और ह़ाफ़िज़ अ़लाउद्दीन मुग़लत़ाई ने अपनी किताब "अज़्ज़हरुल बासिम" में नक़्ल किया है और अबुल फ़त्ह़ अज़्दी ने इस ह़दीस को "सह़ीह़" बताया और अबू ज़रआ़ इ़राक़ी और हमारे शैख़ जलालुद्दीन सुयूत़ी ने "अद्दुररुल मुन्तशिरह फ़िल अह़ादीसिल मुश्तहिरह" में इस ह़दीस को "ह़सन" बताया और ह़ाफ़िज़ अह़मद बिन सालेह़ ने फ़रमाया कि तुम को येही काफ़ी है और उ़लमा को इस ह़दीस से पीछे नहीं रहना चाहिये क्यूं कि येह नुबुव्वत के बहुत बड़े मो'जिज़ात में से है और ह़दीस के ह़ुफ़्फ़ाज़ ने इस बात को बुरा माना है कि "इब्ने जौज़ी" ने इस ह़दीस को "किताबुल मौज़ूआ़त" में ज़िक्र कर दिया है।

सूरज ठहर गया

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आस्मानी मो'जिज़ात में से सूरज पलट आने के मो'जिज़े की त़रह़ चलते हुए सूरज का ठहर जाना भी एक बहुत ही अ़ज़ीम मो'जिज़ा है जो मे'राज की रात गुज़र कर दिन में वुक़ूअ़ पज़ीर हुवा। चुनान्चे यूनुस बिन बुकैर ने इब्ने इस्ह़ाक़ से रिवायत की है कि जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने उस क़ाफ़िले के ह़ालात दरयाफ़्त किये जो मुल्के शाम से मक्का आ रहा था तो आप ने फ़रमाया कि वहां मैं ने तुम्हारे उस क़ाफ़िले को बैतुल मुक़द्दस के रास्ते में देखा है और वोह बुध के दिन मक्का आ जाएगा।

चुनान्चे कुरैश ने बुध के दिन शहर से बाहर निकल कर अपने क़ाफ़िले की आमद का इनतिज़ार किया यहां तक कि सूरज गुरूब होने लगा और क़ाफ़िला नहीं आया उस वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही में दुआ मांगी तो अल्लाह तआला ने सूरज को ठहरा दिया और एक घड़ी दिन को बढ़ा दिया। यहां तक कि वोह क़ाफ़िला आन पहुंचा।[1] (زرقانی جلد۵ص۱۱۶وشفاء جلد۱ص۱۸۵)

वाज़ेह रहे कि "हबसिश्शम्स" या'नी सूरज को ठहरा देने का मो'जिज़ा येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही के लिये मख़्सूस नहीं बल्कि अम्बियाए साबिक़ीन में से हज़रते यूशअ़ बिन नून عَلَیْہِ السَّلَام के लिये भी येह मो'जिज़ा ज़ाहिर हो चुका है जिस का वाक़िआ येह है कि जुमुआ के दिन वोह बैतुल मुक़द्दस में क़ौमे जब्बारीन से जिहाद फ़रमा रहे थे ना गहां सूरज डूबने लगा और येह ख़तरा पैदा हो गया कि अगर सूरज गुरूब हो गया तो सनीचर का दिन आ जाएगा और सनीचर के दिन मूसवी शरीअ़त के हुक्म के मुताबिक़ जिहाद न हो सकेगा तो उस वक़्त अल्लाह तआला ने एक घड़ी तक सूरज को चलने से रोक दिया यहां तक कि हज़रते यूशुअ़ बिन नून عَلَیْہِ السَّلَام क़ौमे जब्बारीन पर फ़त्ह याब हो कर जिहाद से फ़ारिग़ हो गए।[2] (تفسیر جلالین سورہ مائدہ ص۹۸وتفسیر جمل جلد۱ص۴۸۰)

मे'राज शरीफ़

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आस्मानी मो'जिज़ात में से मे'राज का वाक़िआ भी बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत का हामिल और हमारी माद्दी दुन्या से बिल्कुल ही मा वरा और अ़क़्ले इन्सानी के क़ियास व गुमान की सरहदों से बहुत ज़ियादा बाला तर है।

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل فى انشقاق القمر و حبس الشمس ، ج١ ، ص ٢٨٤، ٢٨٥

2 ......حاشية الجمل على الجلالين و تفسير الجلالين ، سورة المائدة ، تحت الاية:٢٦، ج٢، ص ٢٠٨ ملخصاً

मे'राज का दूसरा नाम "**अस्रा**" भी है। "**अस्रा**" के मा'ना रात को चलाना या रात को ले जाना चूंकि **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वाक़िअ़ए मे'राज को ख़ुदा वन्दे आ़लम ने क़ुरआने मजीद में سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا[1] के अल्फ़ाज़ से बयान फ़रमाया है इस लिये मे'राज का नाम "**अस्रा**" पड़ गया और चूंकि ह़दीसों में मे'राज का वाक़िआ़ बयान फ़रमाते हुए **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने "عُرِجَ بِی" (मुझ को ऊपर चढ़ाया गया) का लफ़्ज़ इरशाद फ़रमाया इस लिये इस वाक़िए का नाम "मे'राज" पड़ा।

अह़ादीस व सीरत की किताबों में इस वाक़िए को बहुत कसीरुत्ता'दाद सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने बयान किया है। चुनान्चे अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी ने 45 सह़ाबियों को नाम बनाम गिनाया है जिन्हों ने ह़दीसे मे'राज को रिवायत किया है[2] जैसा कि हम अपनी किताब "नूरानी तक़रीरें" में इस का किसी क़दर मुफ़स्सल तज़किरा तह़रीर कर चुके हैं।

मे'राज कब हुई?

मे'राज की तारीख़, दिन और महीने में बहुत ज़ियादा इख़्तिलाफ़ात हैं। लेकिन इतनी बात पर बिला इख़्तिलाफ़ सब का इत्तिफ़ाक़ है कि मे'राज नुज़ूले वह़्य के बा'द और हिजरत से पहले का वाक़िआ़ है जो मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में पेश आया और इब्ने क़ुतैबा दीनवरी (अल मुतवफ़्फ़ा सि. 267 हि.) और इब्ने अ़ब्दुल बर्र (अल मुतवफ़्फ़ा सि. 463 हि.) और इमाम राफ़ेई व इमाम नववी ने तह़रीर फ़रमाया कि वाक़िअ़ए मे'राज रजब के महीने में हुवा। और मुह़द्दिस अ़ब्दुल ग़नी मक़्दसी ने रजब की

---

1 ...... پ ۱۵، بنی اسراء یل:۱

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی،المقصد الخامس فی تخصيصه...الخ،ج۸، ص ۲۵_۲۷

सत्ताईसवीं भी मुतअ़य्यन कर दी है और अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी ने तह़रीर फ़रमाया है कि लोगों का इसी पर अ़मल है और बा'ज़ मुअर्रिख़ीन की राय है कि येही सब से ज़ियादा क़वी रिवायत है।[(1)] (زرقانی جلد۱ص۳۵۵تا ص۳۵۸)

मे'राज कितनी बार और कैसे हुई

जमहूर उ़लमाए मिल्लत का सह़ीह़ मज़हब येही है कि मे'राज ब ह़ालते बेदारी जिस्म व रूह़ के साथ सिर्फ़ एक बार हुई। जमहूर सह़ाबा व ताबिईन और फ़ुक़हा व मुह़द्दिसीन नीज़ सूफ़ियाए किराम का येही मज़हब है। चुनान्चे अ़ल्लामा ह़ज़रते मुल्ला अह़मद जीवन رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه (उस्ताद औरंग ज़ैब आ़लमगीर बादशाह) ने तह़रीर फ़रमाया कि

وَالْاَصَحُّ اَنَّهٗ كَانَ فِى الْيَقْظَةِ بِجَسَدِهٖ مَعَ رُوْحِهٖ وَعَلَيْهِ اَهْلُ السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ فَمَنْ قَالَ اِنَّهٗ بِالرُّوْحِ فَقَطْ اَوْ فِى النَّوْمِ فَقَط فَمُبْتَدِعٌ ضَالٌّ مُضِلٌّ فَاسِقٌ (2)(تفسیرات احمدیہ بنی اسرائیل ص ۴۰۸)

और सब से ज़ियादा सह़ीह़ क़ौल येह है कि मे'राज ब ह़ालते बेदारी जिस्म व रूह़ के साथ हुई येही अहले सुन्नत व जमाअ़त का मज़हब है। लिहाज़ा जो शख़्स येह कहे कि मे'राज फ़क़त़ रूह़ानी हुई या मे'राज फ़क़त़ ख़्वाब में हुई वोह शख़्स बिद्अ़ती व गुमराह और गुमराह कुन व फ़ासिक़ है।

दीदारे इलाही

क्या मे'राज में हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुदा वन्दे तआ़ला को देखा ? इस मस्अले में सलफ़ सालिह़ीन का इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهَا और बा'ज़ सह़ाबा ने फ़रमाया के मे'राज में आप

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانى ، باب وقت الاسراء ، ج ٢ ، ص ٧٠ ، ٧١ ملتقطاً

2 ......التفسيرات الاحمدية ، سورة بنى اسراء يل ، ص ٥٠٥

ने अल्लाह तआला को नहीं देखा और इन हज़रात ने مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰی ○[1] की तफ़्सीर में येह फ़रमाया कि आप ने खुदा को नहीं देखा बल्कि मे'राज में हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام को उन की अस्ली शक्लो सूरत में देखा कि उन के छे सो पर थे और बा'ज़ सलफ़ मसलन हज़रते सईद बिन जुबैर ताबेई ने इस मस्अले में कि देखा या न देखा कुछ भी कहने से तवक्कुफ़ फ़रमाया मगर सहाबए किराम और ताबिईन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم की एक बहुत बड़ी जमाअत ने येह फ़रमाया है कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सर की आंखों से अल्लाह तआला को देखा।[2] (شفاء جلد ا ص ۱۲۰ تا ۱۲۱)

चुनान्चे अ़ब्दुल्लाह बिन अल हारिस ने रिवायत किया है कि हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا एक मजलिस में जम्अ़ हुए तो हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया कि कोई कुछ भी कहता रहे लेकिन हम बनी हाशिम के लोग येही कहते हैं कि बिला शुबा हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने यक़ीनन अपने रब को मे'राज में दो मरतबा देखा। येह सुन कर हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस ज़ोर के साथ ना'रा मारा कि पहाड़ियां गूंज उठीं और फ़रमाया कि बेशक हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने खुदा से कलाम किया और हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुदा को देखा।

इसी तरह हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰی ○[3] की तफ़्सीर में फ़रमाया कि नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने रब को देखा। इसी तरह हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत किया है कि "رَأَیْتُ رَبِّی" या'नी मैं ने अपने रब को देखा।

---

1 ......پ ۲۷، النجم: ۱۱

2 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل واما رؤيته لربه، ج ۱، ص ۱۹۶، ۱۹۷ ملخصاً

3 ......پ ۲۷، النجم: ۱۱

मुहृद्दिस अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ नाक़िल हैं कि ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी इस बात पर ह़ल्फ़ उठाते थे कि यक़ीनन ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने रब को देखा और बा'ज़ मुतकल्लिमीन ने नक़्ल किया है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का भी येही मज़्हब था और इब्ने इस्ह़ाक़ नाक़िल हैं कि ह़ाकिमे मदीना मरवान ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से सुवाल किया कि क्या ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने रब को देखा ? तो आप ने जवाब दिया कि "जी हां।"

इसी त़रह़ नक़्क़ाश ने ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बारे में ज़िक्र किया है कि आप ने येह फ़रमाया कि मैं ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के मज़्हब का क़ाइल हूं कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुदा को देखा, देखा, देखा......, इतनी देर तक वोह देखा कहते रहे कि उन की सांस टूट गई।[1] (شفاء جلد ۱ ص ۱۱۹ تا ص ۱۲۰)

सह़ीह़ बुख़ारी में ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से शरीक बिन अ़ब्दुल्लाह ने जो मे'राज की रिवायत की है उस के आख़िर में है कि

حَتّٰی جَآءَ سِدْرَةَ الْمُنْتَهٰی وَدَنَا الْجَبَّارُ رَبُّ الْعِزَّةِ فَتَدَلّٰی حَتّٰی كَانَ مِنْهُ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰی ـ[2] (بخاری جلد ۲ ص ۱۱۲۰ باب قول اللہ: وکلم اللہ ۔ الخ)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सिद्रतुल मुन्तहा पर तशरीफ़ लाए और इ़ज़्ज़त वाला जब्बार (**अल्लाह** तआ़ला) यहां तक क़रीब हुवा और नज़दीक आया कि दो कमानों या इस से भी कम का फ़ासिला रह गया।

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى، فصل و امارؤيته لربه، ج ١، ص ١٩٦، ١٩٧

2 ......صحيح البخاري، كتاب التوحيد، باب قوله تعالٰى: و كلم الله موسى...الخ، الحديث: ٧٥١٧، ج ٤، ص ٥٨٠، ٥٨١

बहर हाल उ़लमाए अहले सुन्नत का येही मस्लक है कि हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने शबे मे'राज में अपने सर की आंखों से अल्लाह तआ़ला की ज़ाते मुक़द्दसा का दीदार किया।

इस मुआ़मले में रूयत के इलावा एक रिवायत भी ख़ास तौ़र पर क़ाबिले तवज्जोह है और वोह येह है कि अपने मह़बूब को अल्लाह तआ़ला ने इनतिहाई शौकत व शान और आन बान के साथ अपना मेहमान बना कर अ़र्शे आ'ज़म पर बुलाया और ख़ल्वत गाहे राज़ में...... के नाज़ो नियाज़ के कलामों से सरफ़राज़ भी फ़रमाया। मगर इन बे पनाह इ़नायतों के बा वुजूद अपने ह़बीब को अपना दीदार नहीं दिखाया और ह़िजाब फ़रमाया येह एक ऐसी बात है जो मिज़ाजे इ़श्क़ो मह़ब्बत के नज़दीक मुश्किल ही से क़ाबिले क़बूल हो सकती है क्यूं कि कोई शानदार मेज़बान अपने शानदार मेहमान को अपनी मुलाक़ात से मह़रूम रखे और उस को अपना दीदार न दिखाए येह इ़श्क़ो मह़ब्बत का ज़ौक़ रखने वालों के नज़दीक बहुत ही ना क़ाबिले फ़ह्म बात है। लिहाज़ा हम इ़श्क़ बाज़ों का गुरौह तो इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़रह़ अपनी आख़िरी सांस तक येही कहता रहेगा कि

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه)

मुख़्तसर तज़किरए मे'राज

मे'राज की रात आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के घर की छत खुली और ना गहां ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام चन्द फ़िरिश्तों के साथ नाज़िल हुए और आप को ह़रमे का'बा में ले जा कर आप के सीनए मुबारक को चाक किया और क़ल्बे अन्वर को निकाल कर आबे ज़मज़म से धोया फिर ईमान व ह़िक्मत से भरे हुए एक त़श्त को आप के सीने में उंडेल कर

शिकम का चाक बराबर कर दिया। फिर आप बुराक़ पर सुवार हो कर बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ लाए। बुराक़ की तेज़ रफ़्तारी का येह आ़लम था कि उस का क़दम वहां पड़ता था जहां उस की निगाह की आख़िरी ह़द होती थी। बैतुल मुक़द्दस पहुंच कर बुराक़ को आप ने उस ह़ल्क़े में बांध दिया जिस में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी अपनी सुवारियों को बांधा करते थे फिर आप ने तमाम अम्बिया और रसूलों عَلَيْهِمُ السَّلَام को जो वहां ह़ाज़िर थे दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल जमाअ़त से पढ़ाई।[(1)] (تفسیر روح البیان جلد۵ص۱۱۲)

जब यहां से निकले तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने शराब और दूध के दो प्याले आप के सामने पेश किये आप ने दूध का प्याला उठा लिया। येह देख कर ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि आप ने फ़ित़रत को पसन्द फ़रमाया अगर आप शराब का प्याला उठा लेते तो आप की उम्मत गुमराह हो जाती। फिर ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आप को साथ ले कर आस्मान पर चढ़े पहले आस्मान में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से, दूसरे आस्मान में ह़ज़रते यह़्या व ह़ज़रते ईसा علیهما السلام से जो दोनों ख़ालाज़ाद भाई थे मुलाक़ातें हुईं और कुछ गुफ़्तगू भी हुई। तीसरे आस्मान में ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام, चौथे आस्मान में ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام और पांचवें आस्मान में ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام और छटे आस्मान में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मिले और सातवें आस्मान पर पहुंचे तो वहां ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से मुलाक़ात हुई वोह बैतुल मा'मूर से पीठ लगाए बैठे थे जिस में रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते दाख़िल होते हैं। ब वक़्ते मुलाक़ात हर पैग़म्बर ने "ख़ुश आमदीद ! ऐ पैग़म्बरे सालेह़" कह कर आप का इस्तिक़्बाल किया। फिर आप को जन्नत की सैर कराई गई। इस के बा'द आप सिद्रतुल मुन्तहा पर पहुंचे। इस दरख़्त पर जब अन्वारे इलाही का

---

1 ......تفسیر روح البیان، پ۱۵،الاسراء،تحت الآیۃ:۱،ج۵،ص۱۰۶-۱۱۲ ملتقطاً

परतौ पड़ा तो एक दम उस की सूरत बदल गई और उस में रंग बिरंग के अन्वार की ऐसी तजल्ली नज़र आई जिन की कैफ़िय्यतों को अल्फ़ाज़ अदा नहीं कर सकते। यहां पहुंच कर ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام येह कह कर ठहर गए कि अब इस से आगे मैं नहीं बढ़ सकता। फिर ह़ज़रते ह़क़ جَلَّ جَلَالُہٗ ने आप को अ़र्श बल्कि अ़र्श के ऊपर जहां तक उस ने चाहा बुला कर आप को बारयाब फ़रमाया और ख़ल्वत गाहे राज़ में नाज़ो नियाज़ के वोह पैग़ाम अदा हुए जिन की लत़ाफ़त व नज़ाकत अल्फ़ाज़ के बोझ को बरदाश्त नहीं कर सकती। चुनान्चे कु़रआने मजीद में فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ؕ के रम्ज़ व इशारे में ख़ुदा वन्दे कु़द्दूस ने इस ह़क़ीक़त को बयान फ़रमा दिया है।[2]

बारगाहे इलाही में बे शुमार अ़त़िय्यात के इ़लावा तीन ख़ास इन्आ़मात मर्ह़मत हुए जिन की अ़ज़मतों को **अल्लाह** व रसूल के सिवा और कौन जान सकता है।

﴾1﴿ सूरए बक़रह की आख़िरी आयतें। ﴾2﴿ येह ख़ुश ख़बरी कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत का हर वोह शख़्स जिस ने शिर्क न किया हो बख़्श दिया जाएगा। ﴾3﴿ उम्मत पर पचास वक़्त की नमाज़।

जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन ख़ुदा वन्दी अ़त़िय्यात को ले कर वापस आए तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने आप से अ़र्ज़ किया कि आप की उम्मत से इन पचास नमाज़ों का बार न उठ सकेगा लिहाज़ा आप वापस जाइये और **अल्लाह** तआ़ला से तख़्फ़ीफ़ की दरख़्वास्त कीजिये। चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के मश्वरे से चन्द बार आप बारगाहे इलाही में आते जाते और अ़र्ज़ परदाज़ होते रहे यहां तक कि सिर्फ़ पांच वक़्त की

---

1 ......پ۲۷،النجم:۱۰

2 ......مدارج النبوت ، قسم اول ،باب پنجم ، ج۱، ص ۱۶۲ـ۱۶۴ ملتقطاً
والمواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،المقصدالخامس في تخصيصه...الخ،ج۸،ص ۳۰ـ۳۷

नमाज़ें रह गईं और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाया कि मेरा क़ौल बदल नहीं सकता। ऐ मह़बूब ! आप की उम्मत के लिये येह पांच नमाज़ें भी पचास होंगी। नमाज़ें तो पांच होंगी मगर मैं आप की उम्मत को इन पांच नमाज़ों पर पचास नमाज़ों का अज्र अ़ता करूंगा।

फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आ़लमे मलकूत की अच्छी त़रह़ सैर फ़रमा कर और आयाते इलाहिय्यह का मुआ़यना व मुशाहदा फ़रमा कर आस्मान से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए और बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हुए और बुराक़ पर सुवार हो कर मक्कए मुकर्रमा के लिये रवाना हुए। रास्ते में आप ने बैतुल मुक़द्दस से मक्का तक की तमाम मन्ज़िलों और कुरैश के क़ाफ़िले को भी देखा। इन तमाम मराह़िल के त़ै होने के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिदे ह़राम में पहुंच कर चूंकि अभी रात का काफ़ी ह़िस्सा बाक़ी था सो गए और सुब्ह़ को बेदार हुए और जब रात के वाक़िआत का आप ने कुरैश के सामने तज़्किरा फ़रमाया तो रुअसाए कुरैश को सख़्त तअ़ज्जुब हुवा यहां तक कि बा'ज़ कोर बात़िनों ने आप को झूटा कहा और बा'ज़ ने मुख़्तलिफ़ सुवालात किये चूंकि अकसर रुअसाए कुरैश ने बार बार बैतुल मुक़द्दस को देखा था और वोह येह भी जानते थे कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कभी भी बैतुल मुक़द्दस नहीं गए हैं इस लिये इमतिह़ान के त़ौर पर उन लोगों ने आप से बैतुल मुक़द्दस के दरो दीवार और उस की मेह़राबों वग़ैरा के बारे में सुवालों की बोछाड़ शुरूअ़ कर दी। उस वक़्त **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ौरन ही आप की निगाहे नुबुव्वत के सामने बैतुल मुक़द्दस की पूरी इमारत का नक़्शा पेश फ़रमा दिया। चुनान्चे कुफ़्फ़ारे कुरैश आप से सुवाल करते जाते थे और आप इमारत को देख देख कर उन के सुवालों का ठीक ठीक जवाब देते जाते थे।

(بخاری کتاب الصلوٰۃ، کتاب الانبیاء، کتاب التوحید، باب المعراج وغیرہ مسلم باب المعراج وشفاء جلد۱ ص۱۸۵ وتفسیر روح المعانی جلد۱۵ ص۴ تا ص۱۰)

सफ़रे मे'राज की सुवारियां

इमाम अ़लाई ने अपनी तफ़्सीर में तह़रीर फ़रमाया है कि मे'राज में हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पांच क़िस्म की सुवारियों पर सफ़र फ़रमाया। मक्का से बैतुल मुक़द्दस तक बुराक़ पर, बैतुल मुक़द्दस से आस्माने अव्वल तक नूर की सीढ़ियों पर, आस्माने अव्वल से सातवें आस्मान तक फ़िरिश्तों के बाज़ूओं पर, सातवें आस्मान से सिद्रतुल मुन्तहा तक ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के बाज़ू पर, सिद्रतुल मुन्तहा से मक़ामे क़ाब क़ौसैन तक रफ़रफ़ पर।[1] (تفسیر روح المعانی جلد۱۵ص۱۰)

सफ़रे मे'राज की मन्ज़िलें

बैतुल मुक़द्दस से मक़ामे क़ाब क़ौसैन तक पहुंचने में आप ने दस मन्ज़िलों पर क़ियाम फ़रमाया और हर मन्ज़िल पर कुछ गुफ़्तगू हुई और बहुत सी ख़ुदा वन्दी निशानियों को मुलाह़ज़ा फ़रमाया।

﴾1﴿ आस्माने अव्वल ﴾2﴿ दूसरा आस्मान ﴾3﴿ तीसरा आस्मान ﴾4﴿ चौथा आस्मान ﴾5﴿ पांचवां आस्मान ﴾6﴿ छटा आस्मान ﴾7﴿ सातवां आस्मान ﴾8﴿ सिद्रतुल मुन्तहा ﴾9﴿ मक़ामे मुस्तवा जहां आप ने क़लमे क़ुदरत के चलने की आवाज़ें सुनीं ﴾10﴿ अ़र्शे आ'ज़म।[2]

(تفسیر روح المعانی جلد۱۵ص۱۰)

बादल फट गया

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बयान है कि अ़रब में निहायत ही सख़्त क़िस्म का क़ह़त़ पड़ा हुवा था उस वक़्त जब कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुत़्बे के लिये मिम्बर पर चढ़े तो एक आ'राबी ने खड़े हो कर फ़रयाद की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) !

---

1 ......تفسیرروح المعانی،پ۱۵، الاسراء،تحت الآیة: ۱، ج۱۵،ص۱۴

2 ......تفسیرروح المعانی ،پ۱۵،الاسراء،تحت الآیة:۱، ج۱۵، ص ۱۵ ملخصاً

बारिश न होने से जानवर हलाक और बाल बच्चे भूक से तबाह हो रहे हैं लिहाज़ा आप दुआ़ फ़रमाइये। उस वक़्त आस्मान में कहीं बदली का नामो निशान नहीं था मगर जूं ही रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक उठाया हर त़रफ़ से पहाड़ों की त़रह़ बादल आ कर छा गए और अभी आप मिम्बर पर से उतरे भी न थे कि बारिश के क़त़रात आप की नूरानी दाढ़ी पर टपकने लगे और आठ दिन तक मुसल्सल मूसला धार बारिश होती रही यहां तक कि जब दूसरे जुमुआ़ को आप ख़ुत़्बे के लिये मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो वोही आ'राबी या कोई दूसरा खड़ा हो गया और बुलन्द आवाज़ से फ़रयाद करने लगा कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मकानात मुन्हदिम हो गए और माल मवेशी ग़रक़ हो गए लिहाज़ा दुआ़ फ़रमाइये कि बारिश बन्द हो जाए। येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर अपना मुक़द्दस हाथ उठा दिया और येह दुआ़ फ़रमाई कि "اَللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا" ऐ अल्लाह ! हमारे इर्द गिर्द बारिश हो और हम पर न बारिश हो। फिर आप ने बदली की त़रफ़ अपने दस्ते मुबारक से इशारा फ़रमाया तो मदीने के इर्द गिर्द से बादल कट कर छट गया और मदीने और इस के अत़राफ़ में बारिश बन्द हो गई।[1] (بخاری جلد۱ ص ۱۲۷ باب الاستسقاء فی الجمعه)

एक ज़रूरी तबसेरा

येह चन्द आस्मानी मो'जिज़ात जो मज़्कूर हुए इस बात की दलील हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा की अ़त़ा की हुई त़ाक़त से आस्मानी काएनात में भी तसर्रुफ़ात फ़रमाते हैं और आप की ख़ुदादाद सल्त़नत की हुक्मरानी ज़मीन ही तक मह़दूद नहीं बल्कि आस्मानी

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاستسقاء، باب من تمطر فی المطر ...الخ، الحدیث: ۱۰۳۳، ج۱، ص ۳۵۳

मख़्लूक़ात में भी आप की हुकूमत का सिक्का चलता है। चुनान्चे तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीस है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि हर नबी के लिये दो वज़ीर आस्मान वालों में से और दो वज़ीर ज़मीन वालों में से हुवा करते हैं और मेरे दोनों आस्मानी वज़ीर "जिब्रील व मीकाईल" हैं और मेरे ज़मीन के दोनों वज़ीर "अबू बक्र व उ़मर" हैं।[1]

(مشکوٰۃ جلد۲ص۵٦٠ باب مناقب ابوبکر وعمر)

ज़ाहिर है कि किसी बादशाह के वज़ीर उस की सल्त़नत की हुदूद ही में रहा करते हैं। अगर आस्मानों में **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सल्त़नते ख़ुदादाद न होती तो ह़ज़रते जिब्रईल व मीकाईल علیہما السلام आप के दो वज़ीरों की हैसिय्यत से भला आस्मानों में किस त़रह़ मुक़ीम रहे। लिहाज़ा साबित हुवा कि शहनशाहे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बादशाही ब अ़त़ाए इलाही ज़मीन व आस्मान की तमाम मख़्लूक़ात पर है।

साह़िबे रजअ़ते शम्सो शक़्क़ुल क़मर नाइबे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम
अ़र्श ता फ़र्श है जिस के ज़ेरे नगीं उस की क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम

क़ुरआने मजीद

रसूले आ'ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ाते नुबुव्वत में से क़ुरआने मजीद भी एक बहुत ही जलीलुल क़द्र मो'जिज़ा और आप की सदाक़त का एक फ़ैसला कुन निशान है। बल्कि अगर इस को "आ'ज़मुल मो'जिज़ात" कह दिया जाए तो येह एक ऐसी ह़क़ीक़त का इन्किशाफ़ होगा जिस की पर्दापोशी ना मुमकिन है क्यूं कि **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दूसरे मो'जिज़ात तो अपने वक़्त पर ज़ुहूर पज़ीर हुए और आप के ज़माने ही के लोगों ने उस को देखा मगर क़ुरआने मजीद आप का वोह अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा है कि क़ियामत तक बाक़ी रहेगा।

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابو بکر وعمر رضی اللّٰہ عنهما، الحدیث: ۳۷۰۰، ج۵، ص ۳۸۲

कौन नहीं जानता कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ुसह़ाए अ़रब को कुरआन का मुक़ाबला करने के लिये एक बार इस त़रह़ चेलेन्ज दिया कि

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓی اَنْ یَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا یَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِیْرًا٥ (1) (بنی اسرائیل)

(ऐ मह़बूब) फ़रमा दीजिये कि अगर तमाम इन्सान व जिन्न इस काम के लिये जम्अ़ हो जाएं कि कुरआन का मिस्ल लाएं तो न ला सकेंगे अगर्चे इन के बा'ज़ बा'ज़ की मदद करें।

मगर कोई भी इस खुदावन्दी चेलेन्ज को क़बूल करने पर तय्यार नहीं हुवा। फिर कुरआन ने एक बार इस त़रह़ चेलेन्ज दिया कि

قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ (2)(ہود)

या'नी अगर तुम लोग पूरे कुरआन का मिस्ल नहीं ला सकते तो कुरआन जैसी दस ही सूरतें बना कर लाओ।

मगर इनतिहाई जिद्दो जहद के बा वुजूद येह भी न हो सका। फिर कुरआन ने इस त़रह़ ललकारा कि

وَاِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ص وَادْعُوْا شُهَدَآءَ كُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ٥ (3)(بقرۃ)

*(ऐ ह़बीब) आप फ़रमा दीजिये कि अगर तुम लोगों को इस में कुछ शक हो जो हम ने अपने ख़ास बन्दे पर नाज़िल फ़रमाया है तो तुम इस जैसी एक ही सूरह ले आओ और **अल्लाह** के सिवा अपने तमाम ह़िमायतियों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो।*

---

1 ...... پ ۱۵، بنی اسراءیل: ۸۸

2 ......پ ۱۲، ھود: ۱۳

3 ......پ ۱، البقرة: ۲۳

اَللہُ اَکْبَر ! कुरआने अ़ज़ीम की अ़ज़ीमुश्शान व मो'जिज़ाना फ़साहृत व बलाग़त का बोलबाला तो देखो कि अ़रब के तमाम वोह फ़ुसहा व बुलग़ा जिन की फ़सीहाना शे'र गोई और ख़त़ीबाना बलाग़त का चार दांगे आ़लम में डंका बज रहा था मगर वोह अपनी पूरी पूरी कोशिशों के बा वुजूद कुरआन की एक सूरह के मिस्ल भी कोई कलाम न ला सके। हृद हो गई कि कुरआने मजीद ने फ़ुसहाए अ़रब से यहां तक कह दिया कि

فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖۤ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ○[1] (سورہ طور)

या'नी अगर कुफ़्फ़ारे अ़रब सच्चे हैं तो कुरआन जैसी कोई एक ही बात लाएं।

अल ग़रज़ चार चार मरतबा कुरआने करीम ने फ़ुसहाए अ़रब को ललकारा, चेलेन्ज दिया, झंझोड़ा कि वोह कुरआन का मिस्ल बना कर लाएं। मगर तारीख़े आ़लम गवाह है कि चौदह सो बरस का त़वील अ़र्सा गुज़र जाने के बा वुजूद आज तक कोई शख़्स भी इस ख़ुदावन्दी चेलेन्ज को क़बूल न कर सका और कुरआन के मिस्ल एक सूरह भी बना कर न ला सका। येह आफ़्ताब से ज़ियादा रौशन दलील है कि कुरआने मजीद हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का एक लासानी मो'जिज़ा है जिस का मुक़ाबला न कोई कर सका है न क़ियामत तक कर सकता है।

इल्मे ग़ैब

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में से आप का "**इल्मे ग़ैब**" भी है। इस बात पर तमाम उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है कि इल्मे ग़ैबे ज़ाती तो ख़ुदा के सिवा किसी और को नहीं मगर अल्लाह अपने बरगुज़ीदा बन्दों या'नी अपने नबियों और रसूलों वग़ैरा को इल्मे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाता है। येह इल्मे ग़ैब अ़त़ाई कहलाता है कुरआने मजीद में है कि

[1] ......پ٢٧، الطور: ٣٤

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًاۙ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (1)(جن)

(अल्लाह) आलिमुल गै़ब है वोह अपने गै़ब पर किसी को मुत्तलअ़ नहीं करता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के।

इसी त़रह़ कुरआने मजीद में दूसरी जगह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया कि

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ(2)(آل عمران)

अल्लाह की शान नहीं कि ऐ आ़म लोगो ! तुम्हें गै़ब का इल्म दे दे। हां अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों में से जिसे चाहे।

चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीबे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बे शुमार ग़ुयूब का इल्म अ़ता फ़रमाया। और आप ने हज़ारों गै़ब की ख़बरें अपनी उम्मत को दीं जिन में से कुछ का तज़किरा तो कुरआने मजीद में है बाक़ी हज़ारों गै़ब की ख़बरों का ज़िक्र अह़ादीस की किताबों और सियर व तवारीख़ के दफ़्तरों में मज़कूर है। अल्लाह तआ़ला ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ(3)(هود)

येह गै़ब की ख़बरें हैं जिन को हम आप की त़रफ़ वह़्य करते हैं।

हम यहां उन बे शुमार गै़ब की ख़बरों में से मिसाल के त़ौर पर चन्द का ज़िक्र तह़रीर करते हैं। पहले उन चन्द गै़ब की ख़बरों का तज़किरा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये जिन का ज़िक्र कुरआने मजीद में है।

1......پ۲۹،الجن:۲۶-۲۷ 2......پ٤،ال عمرٰن:۱۷۹ 3......پ۱۲،ھود:٤۹

ग़ालिब, मग़्लूब होगा

सि. 614 ई. में रूम और फ़ारस के दोनों बादशाहों में एक जंगे अ़ज़ीम शुरूअ़ हुई छब्बीस हज़ार यहूदियों ने बादशाहे फ़ारस के लश्कर में शामिल हो कर साठ हज़ार ईसाइयों का क़त्ले आ़म किया यहां तक कि सि. 616 ई. में बादशाहे फ़ारस की फ़त्ह़ हो गई और बादशाहे रूम का लश्कर बिल्कुल ही मग़्लूब हो गया और रूमी सल्त़नत के पुरज़े पुरज़े उड़ गए। बादशाहे रूम अहले किताब और मज़्हबन ईसाई था और बादशाहे फ़ारस मजूसी मज़्हब का पाबन्द और आतश परस्त था। इस लिये बादशाहे रूम की शिकस्त से मुसलमानों को रन्जो ग़म हुवा और कुफ़्फ़ार को इनतिहाई शादमानी व मसर्रत हुई। चुनान्चे कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को त़ा'ना दिया और कहने लगे कि तुम और नसारा अहले किताब हो और हम और अहले फ़ारस बे किताब हैं जिस त़रह़ हमारे भाई तुम्हारे भाइयों पर फ़त्ह़ याब हो कर ग़ालिब आ गए इसी त़रह़ हम भी एक दिन तुम लोगों पर ग़ालिब आ जाएंगे। कुफ़्फ़ार के इन त़ा'नों से मुसलमानों को और ज़ियादा रन्ज व सदमा हुवा।

उस वक़्त रूमियों की येह अफ़्सोस नाक ह़ालत थी कि वोह अपने मशरीक़ी मक़्बूज़ात का एक एक चप्पा खो चुके थे। ख़ज़ाना ख़ाली था। फ़ौज मुन्तशिर थी मुल्क में बग़ावतों का तूफ़ान उठ रहा था। शहनशाहे रूम बिल्कुल ना लाइक़ था। इन ह़ालात में कोई सोच भी नहीं सकता था कि बादशाहे रूम बादशाहे फ़ारस पर ग़ालिब हो सकता था मगर ऐसे वक़्त में नबिय्ये सादिक़ ने क़ुरआन की ज़बान से कुफ़्फ़ारे मक्का को येह पेशगोई सुनाई कि

الٓمّٓ ۝ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۝ فِیْۤ اَدْنَی الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَیَغْلِبُوْنَ ۝ فِیْ بِضْعِ سِنِیْنَ ط [1] (روم)

रूमी मग़्लूब हुए पास की ज़मीन में और वोह अपनी मग़्लूबी के बा'द अ़न क़रीब ग़ालिब होंगे चन्द बरसों में।

---

1 ......پ ۲۱، الروم: ۱ ـ ٤

चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि सिर्फ़ नव साल के बा'द ख़ास "सुल्हे हुदैबिया" के दिन बादशाहे रूम का लश्कर अहले फ़ारस पर ग़ालिब आ गया और मुख़्बिरे सादिक़ की येह ख़बरे ग़ैब आलमे वुजूद में आ गई।

हिजरत के बा'द क़ुरैश की तबाही

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिस बे सरो सामानी के साथ हिजरत फ़रमाई थी और सहाबए किराम जिस कस मपुर्सी और बे कसी के आलम में कुछ हबशा, कुछ मदीने चले गए थे। इन हालात के पेशे नज़र भला किसी के हाशियए ख़याल में भी येह आ सकता था कि येह बे सरो सामान और ग़रीबुद्दियार मुसलमानों का क़ाफ़िला एक दिन मदीने से इतना ताक़त वर हो कर निकलेगा कि वोह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की ना क़ाबिले तस्ख़ीर अस्करी ताक़त को तहस नहस कर डालेगा जिस से काफ़िरों की अज़मत व शौकत का चराग़ गुल हो जाएगा और मुसलमानों की जान के दुश्मन मुठ्ठी भर मुसलमानों के हाथों से हलाक व बरबाद हो जाएंगे। लेकिन ख़ुदा वन्दे अल्लामुल ग़ुयूब का महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हिजरत से एक साल पहले ही क़ुरआन पढ़ पढ़ कर इस ख़बरे ग़ैब का ए'लान कर रहा था कि

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا۝ (بنی اسرائیل) (1)

अगर वोह तुम को सर ज़मीने मक्का से घबरा चुके ताकि तुम को इस से निकाल दें तो वोह अहले मक्का तुम्हारे बा'द बहुत ही कम मुद्दत तक बाक़ी रहेंगे।

चुनान्चे येह पेशगोई हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हुई और एक ही साल के बा'द ग़ज़्वए बद्र में मुसलमानों की फ़त्हे मुबीन ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सरदारों का ख़ातिमा कर दिया और कुफ़्फ़ारे मक्का की लश्करी ताक़त की जड़ कट गई और उन की शानो शौकत का जनाज़ा निकल गया।

---

1 ......پ۱۵،بنی اسراءیل:۷۶

मुसलमान एक दिन शहनशाह होंगे

हिजरत के बा'द कुफ़्फ़ारे कुरैश जोशे इनतिक़ाम में आपे से बाहर हो गए और बद्र की शिकस्त के बा'द तो जज़्बए इनतिक़ाम ने उन को पागल बना डाला था। तमाम क़बाइले अ़रब को इन लोगों ने जोश दिला दिला कर मुसलमानों पर यलग़ार कर देने के लिये तय्यार कर दिया था। चुनान्चे मुसल्सल आठ बरस तक ख़ूंरेज़ लड़ाइयों का सिल्सिला जारी रहा। जिस में मुसलमानों को तंग दस्ती, फ़ाक़ा मस्ती, क़त्ल व ख़ूंरेज़ी, क़िस्म क़िस्म की हौसला शिकन मुसीबतों से दो चार होना पड़ा। मुसलमानों को एक लम्हे के लिये सुकून मयस्सर नहीं था। मुसलमान ख़ौफ़ो हिरास के आ़लम में रातों को जाग जाग कर वक़्त गुज़ारते थे और रात रात भर रहमते आ़लम के काशानए नुबुव्वत का पहरा दिया करते थे लेकिन ऐन इस परेशानी और बे सरो सामानी के माहोल में दोनों जहान के सुल्तान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुरआन का येह ए'लान नश्र फ़रमाया कि मुसलमानों को "ख़िलाफ़ते अर्ज़" या'नी दीन व दुन्या की शहनशाही का ताज पहनाया जाएगा। चुनान्चे ग़ैब दां रसूल ने अपने दिलकश और शीरीं लहजे में कुरआन की इन रूह परवर और ईमान अफ़रोज़ आयतों को अ़लल ए'लान तिलावत फ़रमाना शुरूअ़ कर दिया कि

وَعَدَ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسۡتَخۡلِفَنَّھُمۡ فِی الۡاَرۡضِ کَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِھِمۡ ص وَلَیُمَکِّنَنَّ لَھُمۡ دِیۡنَھُمُ الَّذِی ارۡتَضٰی لَھُمۡ وَلَیُبَدِّلَنَّھُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِھِمۡ اَمۡنًا ط (1)

(سورہ نور)

तुम में से जो लोग ईमान लाए और अ़मले सालेह़ किया ख़ुदा ने उन से वा'दा किया है कि उन को ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उस ने इन के पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया था और जो दीन उन के लिये पसन्द किया है उस को मुस्तह़कम कर देगा और उन के ख़ौफ़ को अम्न से बदल देगा।

---

1 ......پ۱۸، النور:۵۵

मुसलमान जिन ना मुसाइद हालात और परेशान कुन माहोल की कशमकश में मुब्तला थे इन हालात में ख़िलाफ़ते अर्ज़ और दीन व दुन्या की शहनशाही की येह अ़ज़ीम बिशारत इनतिहाई हैरत नाक ख़बर थी भला कौन था जो येह सोच सकता था कि मुसलमानों का एक मज़लूम व बेकस गुरौह जिस को कुफ़्फ़ारे मक्का ने त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतें दे कर कुचल डाला था और उस ने अपना सब कुछ छोड़ कर मदीने आ कर चन्द नेक बन्दों के ज़ेरे साया पनाह ली थी और उस को यहां आ कर भी सुकून व इत़्मीनान की नींद नसीब नहीं हुई थी भला एक दिन ऐसा भी आएगा कि उस गुरौह को ऐसी शहनशाही मिल जाएगी कि ख़ुदा के आस्मान के नीचे और ख़ुदा की ज़मीन पर ख़ुदा के सिवा उन को किसी और का डर न होगा। बल्कि सारी दुन्या उन के जाहो जलाल से डर कर लरज़ा बर अन्दाम रहेगी मगर सारी दुन्या ने देख लिया की येह बिशारत पूरी हुई और उन मुसलमानों ने शहनशाह बन कर दुन्या पर इस त़रह़ काम्याब हुकूमत की, कि उस के सामने दुन्या की तमाम मुतमद्दन हुकूमतों का शीराज़ा बिखर गया और तमाम सलात़ीने आ़लम की सुल्त़ानी के परचम अ़ज़्मते इस्लाम की शहनशाही के आगे सर निगूं हो गए। क्या अब भी किसी को इस पेशीन गोई की सदाक़त में बाल के करोड़वें हिस्से के बराबर भी शक व शुबा हो सकता है ?

फ़त्हे़ मक्का की पेशगोई

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा से इस त़रह़ हिजरत फ़रमाई थी कि रात की तारीकी में अपने यारे ग़ार के साथ निकल कर ग़ारे सौर में रौनक़ अफ़्रोज़ रहे। आप की जान के दुश्मनों ने आप की तलाश में सर ज़मीने मक्का के चप्पे चप्पे को छान मारा और आप उन दुश्मनों की निगाहों से छुपते और बचते हुए ग़ैर मा'रूफ़ रास्तों

से मदीनए मुनव्वरह पहुंचे। इन ह़ालात में भला किसी के वह्मो गुमान में भी येह आ सकता था कि रात की तारीकी में छुप कर रोते हुए अपने प्यारे वत़न मक्का को ख़ैरबाद कहने वाला रसूले बरह़क़ एक दिन फ़ातेहे़ मक्का बन कर फ़ातेह़ाना जाहो जलाल के साथ शहरे मक्का में अपनी फ़त्हे़ मुबीन का परचम लहराएगा और इस के दुश्मनों की क़ाहिर फ़ौज इस के सामने क़ैदी बन कर दस्त बस्ता सर झुकाए लरज़ा बर अन्दाम खड़ी होगी ! मगर नबिय्ये ग़ैब दां ने क़ुरआन की ज़बान से इस पेशीन गोई का ए'लान फ़रमाया कि

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ o وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًاo فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًاo (1)(سورہ نصر)

जब अल्लाह की मदद और फ़त्ह़ (मक्का) आ जाए और लोगों को तुम देखो कि अल्लाह के दीन में फ़ौज फ़ौज दाख़िल होते हैं तो अपने रब की सना करते हुए उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है।

चुनान्चे येह पेशगोई ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ पूरी हुई कि सि. 8 हि. में मक्का फ़त्ह़ हो गया और आप फ़ातेहे़ मक्का होने की ह़ैसिय्यत से अफ़्वाजे इलाही के जाहो जलाल के साथ मक्कए मुकर्रमा के अन्दर दाख़िल हुए और का'बए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हो कर आप ने दोगाना अदा फ़रमाया और अहले अ़रब फ़ौज दर फ़ौज इस्लाम में दाख़िल होने लगे। ह़ालां कि इस से क़ब्ल इक्का दुक्का लोग इस्लाम क़बूल करते थे।

---

1 ......پ ۳۰،النصر:۱-۳

जंगे बद्र में फ़त्ह का ए'लान

जंगे बद्र में जब कि कुल तीन सो तेरह मुसलमान थे जो बिल्कुल ही निहत्ते, कमज़ोर और बे सरो सामान थे भला किसी के ख़याल में भी आ सकता था कि इन के मुक़ाबले में एक हज़ार का लश्करे जर्रार जिस के पास हथयार और अ़स्करी त़ाक़त के तमाम सामान व औज़ार मौजूद थे शिकस्त खा कर भाग जाएगा और सत्तर मक़्तूल और सत्तर गरिफ़्तार हो जाएंगे ! मगर जंगे बद्र से बरसों पहले मक्कए मुकर्रमा में आयतें नाज़िल हुई और रसूले बरह़क़ ने अक़्वामे आ़लम को कई बरस पहले जंगे बद्र में इस त़रह़ इस्लामी फ़त्ह़े मुबीन की बिशारत सुनाई कि

اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ○ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ○(1)

क्या वोह कुफ़्फ़ार कहते हैं कि हम सब मुत्तह़िद और एक दूसरे के मददगार हैं। येह लश्कर अ़न क़रीब शिकस्त खा जाएगा और वोह पीठ फेर कर भाग जाएगें।

وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَايَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا○(2)(فتح)

और अगर कुफ़्फ़ार तुम (मुसलमानों) से लड़ेंगे तो यक़ीनन वोह पीठ फेर कर भाग जाएंगे फिर वोह कोई ह़ामी व मददगार न पाएंगे।

यहूदी मग़्लूब होंगे

मदीनए मुनव्वरह और इस के अत़राफ़ के यहूदी क़बाइल बहुत ही मालदार, इनतिहाई जंगजू और बहुत बड़े जंगबाज़ थे और उन को अपनी लश्करी त़ाक़त पर बड़ा घमन्ड और नाज़ था। जंगे बद्र में मुसलमानों की फ़त्ह़े मुबीन का ह़ाल सुन कर उन यहूदियों ने मुसलमानों को येह त़ा'ना दिया कि

---

1 ......پ۲۷، القمر: ۴۴۔۴۵

2 ......پ۲۶، الفتح: ۲۲

क़बाइले कुरैश फ़ुनूने जंग से ना वाक़िफ़ और बे ढंगे थे इस लिये वोह जंग हार गए अगर मुसलमानों को हम जंगबाज़ों और बहादुरों से पाला पड़ा तो मुसलमानों को उन की छटी का दूध याद आ जाएगा। और वाक़ेई सूरते ह़ाल ऐसी ही थी कि समझ में नहीं आ सकता था कि मुठ्ठी भर कमज़ोर और बे सरो सामान मुसलमानों से क़बाइले यहूद का येह मुसल्लह़ व मुनज़्ज़म लश्कर कभी शिकस्त खा जाएगा। मगर इस ह़ाल व माह़ोल में ग़ैब दां रसूल ने क़ुरआन की ज़बां से इस ग़ैब की ख़बर का ए'लान फ़रमाया कि

وَ لَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ○ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ○ (1) (آل عمران)

अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उन के लिये येह बेहतर होता उन में कुछ ईमानदार और अकसर फ़ासिक़ हैं और वोह तुम (मुसलमानों) को बजुज़ थोड़ी तक्लीफ़ देने के कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते और अगर वोह तुम से लड़ेंगे तो यक़ीनन पुश्त फैर देंगे फिर उन का कोई मददगार नहीं होगा।

चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि यहूद के क़बाइल में से बनू **क़ुरैज़ा** क़त्ल कर दिये गए और बनू नज़ीर जिला वत़न कर दिये गए और ख़ैबर को मुसलमानों ने फ़त्ह़ कर लिया और बाक़ी यहूद ज़िल्लत के साथ जिज़्या अदा करने पर मजबूर हो गए।

अ़हदे नबवी के बा'द की लड़ाइयां

क़ुरआने मजीद की पेशगोइयां और ग़ैब की ख़बरें सिर्फ़ उन्हीं जंगों के साथ मख़्सूस व मह़दूद नहीं थीं जो अ़हदे नबवी में हुई बल्कि इस के बा'द ख़ुलफ़ा के दौरे ख़िलाफ़त में अ़रब व अ़जम में जो अ़ज़ीम व

1 ......پ۳،ال عمران: ۱۱۰، ۱۱۱

ख़ूँरेज़ लड़ाइयां हुईं उन के मुतअ़ल्लिक़ भी कुरआने मजीद ने पहले से पेशगोई कर दी थी जो ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ पूरी हुई। मुसलमानों को रूम व ईरान की ज़बर दस्त हुकूमतों से जो लड़ाइयां लड़नी पड़ीं वोह तारीख़े इस्लाम के बहुत ही ज़र्रीं अवराक़ और नुमायां वाक़िआ़त हैं मगर कुरआने मजीद ने बरसों पहले इन जंगों के नताइज का ए'लान इन लफ़्ज़ों में कर दिया था :

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِیْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰی قَوْمٍ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ یُسْلِمُوْنَ ۚ (1)(فتح)

जिहाद में पीछे रह जाने वाले देहातियों से कह दो कि अ़न क़रीब तुम को एक सख़्त जंगजू क़ौम से जंग करने के लिये बुलाया जाएगा तुम लोग उन से लड़ोगे या वोह मुसलमान हो जाएंगे।

इस पेशगोई का ज़ुहूर इस त़रह़ हुवा कि रूम व ईरान की जंगजू अक़्वाम से मुसलमानों को जंग करनी पड़ी जिस में बा'ज़ जगह ख़ूँरेज़ मा'रिके हुए और बा'ज़ जगह के कुफ़्फ़ार ने इस्लाम क़बूल कर लिया। अल ग़रज़ इस क़िस्म की बहुत सी ग़ैब की ख़बरें कुरआने मजीद में मज़कूर हैं जिन को ग़ैब दां रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वाक़िआ़त के वाक़ेअ़ होने से बहुत पहले अक़्वामे आ़लम के सामने बयान फ़रमा दिया और येह तमाम ग़ैब की ख़बरें आफ़्ताब की त़रह़ ज़ाहिर हो कर अहले आ़लम के सामने ज़बाने ह़ाल से ए'लान कर रही हैं और क़ियामत तक ए'लान करती रहेंगी कि

चश्मे अक़्वाम येह नज़्ज़ारा अबद तक देखे **रिफ़्अ़ते शाने** رفعنا لك ذكرك **देखे**

---

1 ......پ٢٦، الفتح:١٦

अहादीस में ग़ैब की ख़बरें

इस्लामी फ़ुतूहात की पेश गोइयां

इब्तिदाए इस्लाम में मुसलमान जिन आलाम व मसाइब में गरिफ़्तार और जिस बे सरो सामानी के आ़लम में थे उस वक़्त कोई इस को सोच भी नहीं सकता था कि चन्द निहत्ते, फ़ाक़ा कश और बे सरो सामान मुसलमान क़ैसरो किस्रा की जाबिर हुकूमतों का तख़्ता उलट देंगे। लेकिन ग़ैब जानने वाले पैग़म्बरे सादिक़ ने इस ह़ालत में पूरे अ़ज़्म व यक़ीन के साथ अपनी उम्मत को येह बिशारतें दीं कि ऐ मुसलमानो ! तुम अ़न क़रीब क़ुस्तुन्तुनिया को फ़त्ह़ करोगे और क़ैसरो किस्रा के ख़ज़ानों की कुन्जियां तुम्हारे दस्ते तसर्रुफ़ में होंगी। मिस्र पर तुम्हारी हुकूमत का परचम लहराएगा। तुम से तुर्कों की जंग होगी जिन की आंखें छोटी छोटी और चेहरे चौड़े चौड़े होंगे और उन जंगों में तुम को फ़त्ह़े मुबीन ह़ासिल होगी।[1]

(بخاری جلد ا ص ۵۰۴ تا ص ۵۱۳ باب علامات النبوۃ)

तारीख़ गवाह है कि ग़ैब दां नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दी हुई येह सब ग़ैब की ख़बरें आ़लमे ज़ुहूर में आईं।

क़ैसरो किस्रा की बरबादी

ऐ़न उस वक़्त जब कि क़ैसरो किस्रा की हुकूमतों के परचम इनतिहाई जाहो जलाल के साथ दुन्या पर लहरा रहे थे और ब ज़ाहिर इन की बरबादी का कोई सामान नज़र नहीं आ रहा था मगर ग़ैब दां नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को येह ग़ैब की ख़बर सुनाई कि

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب،باب علامات النبوۃ فی الاسلام،الحدیث:۳۵۸۷، ۳۵۹۰،ج۲، ص۴۹۷۔۴۹۸

اِذَا هَلَكَ كِسْرٰى فَلَا كِسْرٰى بَعْدَهٗ وَاِذَا هَلَكَ قَيْصَرُ فَلَا قَيْصَرَ بَعْدَهٗ وَالَّذِىْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ لَتُنْفَقَنَّ كُنُوْزُهُمَا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ۔(1)

(بخاری جلد۱ ص۵۱۱ باب علامات النبوۃ)

जब किस्रा हलाक होगा तो उस के बा'द कोई किस्रा न होगा और जब क़ैसर हलाक होगा तो उस के बा'द कोई क़ैसर न होगा और उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मुह़म्मद की जान है ज़रूर इन दोनों के ख़ज़ाने **अल्लाह** तआ़ला की राह में (मुसलमानों के हाथ से) ख़र्च किये जाएंगे।

दुन्या का हर मुअर्रिख़ इस ह़क़ीक़त का गवाह है कि ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में किस्रा और क़ैसर की तबाही के बा'द न फिर किसी ने सल्त़नते फ़ारस का ताजे ख़ुस्रवी देखा न रूमी सल्त़नत का रूए ज़मीन पर कहीं वुजूद नज़र आया। क्यूं न हो कि येह ग़ैब दां नबिय्ये सादिक़ की वोह ग़ैब की ख़बरें हैं जो ख़ुदा वन्दे अ़ल्लामुल ग़ुयूब की वह़्य से आप ने दी हैं। भला क्यूंकर मुमकिन है कि ग़ैब दां नबी की दी हुई ग़ैब की ख़बरें बाल के करोड़वें हिस्से के बराबर भी ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ हो सकें।

यमन, शाम, इ़राक़ फ़त्ह़ होंगे

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यमन व शाम व इ़राक़ के फ़त्ह़ होने से बरसों पहले येह ग़ैब की ख़बर दी थी कि यमन फ़त्ह़ किया जाएगा तो लोग अपनी सुवारियों को हंकाते हुए और अपने अहलो इ़याल और मुत्तबिईन को ले कर (मदीने से) यमन चले आएंगे ह़ालां कि मदीने ही का क़ियाम उन के लिये बेहतर था। काश वोह लोग इस बात को जान लेते।

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب المناقب ،باب علامات النبوۃ فی الاسلام،الحدیث:۳۶۱۸، ج۲، ص۵۰۶

फिर शाम फ़त्ह़ किया जाएगा तो एक क़ौम अपने घर वालों और अपने पैरवी करने वालों को ले कर सुवारियों को हंकाते हुए (मदीने से) शाम चली आएगी ह़ालां कि मदीना ही उन के लिये बेहतर था काश ! वोह लोग इस को जान लेते ।

फिर इ़राक़ फ़त्ह़ होगा तो कुछ लोग अपने घर वालों और जो उन का कहना मानेंगे उन सब को ले कर सुवारियों को हंकाते हुए (मदीने से) इ़राक़ आ जाएंगे ह़ालां कि मदीने ही की सुकूनत उन के लिये बेहतर थी काश ! वोह इस को जान लेते ।[1] (مسلم جلد۱ص ۴۴۵ باب ترغیب الناس فی سکنی المدینہ)

यमन सि. 8 हि. में फ़त्ह़ हुवा और शाम व इ़राक़ इस के बा'द फ़त्ह़ हुए लेकिन ग़ैब जानने वाले मुख़्बिरे सादिक़ صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बरसों पहले येह ग़ैब की ख़बरें दे दी थीं जो ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ पूरी हुईं ।

फ़त्हे मिस्र की बिशारत

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग अ़न क़रीब मिस्र को फ़त्ह़ करोगे और वोह ऐसी ज़मीन है जहां का सिक्का ''क़ीरात़'' कहलाता है । जब तुम लोग उस को फ़त्ह़ करो तो उस के बाशिन्दों के साथ अच्छा सुलूक करना क्यूं कि तुम्हारे और उन के दरमियान एक तअ़ल्लुक़ और रिश्ता है । (ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام की वालिदा हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا मिस्र की थीं जिन की औलाद में सारा अ़रब है ।) और जब तुम देखना कि वहां एक ईंट भर जगह के लिये दो आदमी झगड़ा करते हों तो तुम मिस्र से निकल जाना । चुनान्चे ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने ख़ुद अपनी

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب الحج، باب الترغيب فى المدينة...الخ، الحديث:١٣٨٨، ص٧١٩

आंख से मिस्र में येह देखा कि अ़ब्दुर्रह़मान बिन शुरह़बील और उन के भाई रबीआ़ एक ईंट भर जगह के लिये लड़ रहे हैं। येह मंज़र देख कर ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वसिय्यत के मुत़ाबिक़ मिस्र छोड़ कर चले आए।[1] (مسلم جلد۲ص۳۱۱باب وصیۃ النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

बैतुल मुक़द्दस की फ़त्ह़

बैतुल मुक़द्दस की फ़त्ह़ होने से बरसों पहले हुज़ूरे अक़्दस मुख़्बिरे सादिक़ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर देते हुए अपनी उम्मत से इरशाद फ़रमाया कि

क़ियामत से पहले छे चीज़ें गिन रखो ﴾1﴿ मेरी वफ़ात ﴾2﴿ बैतुल मुक़द्दस की फ़त्ह़ ﴾3﴿ फिर त़ाऊ़न की वबा जो बकरियों की गिलटियों की त़रह़ तुम्हारे अन्दर शुरूअ़ हो जाएगी। ﴾4﴿ इस क़दर माल की कसरत हो जाएगी कि किसी आदमी को सो दीनार देने पर भी वोह ख़ुश नहीं होगा। ﴾5﴿ एक ऐसा फ़ितना उठेगा कि अ़रब का कोई घर बाक़ी नहीं रहेगा जिस में फ़ितना दाख़िल न हुवा हो। ﴾6﴿ तुम्हारे और रूमियों के दरमियान एक सुल्ह़ होगी और रूमी अ़ह्द शिकनी करेंगे वोह अस्सी झन्डे ले कर तुम्हारे ऊपर ह़म्ला आवर होंगे और हर झन्डे के नीचे बारह हज़ार फ़ौज होगी।[2]

(بخاری جلد۱ص۴۵۰باب ما یحذر من الغدر)

ख़ौफ़नाक रास्ते पुर अम्न हो जाएंगे

ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर था तो एक शख़्स ने आ कर फ़ाक़ा की शिकायत की फिर एक दूसरा शख़्स आया। उस ने रास्तों में डाका ज़नी का शिक्वा किया। येह सुन कर शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب وصیۃ النبی با ھل مصر، الحدیث:۲۵۴۳،ص۱۳۷۶

2 ......صحیح البخاری، کتاب الجزیۃ و الموادعۃ، باب مایحذر من الغدر، الحدیث:۳۱۷۶،ج۲،ص ۳۶۹

फ़रमाया कि ऐ अ़दी ! अगर तुम्हारी उ़म्र लम्बी होगी तो तुम यक़ीनन देखोगे कि एक पर्दा नशीन औ़रत अकेली "ह़ीरह" से चलेगी और मक्का आ कर का'बे का त़वाफ़ करेगी और उस को खु़दा के सिवा किसी का कोई डर नहीं होगा।

हज़रते अ़दी कहते हैं कि मैं ने अपने दिल में कहा कि भला क़बीलए "त़य" के वोह डाकू जिन्हों ने शहरों में आग लगा रखी है कहां चले जाएंगे ?

फिर आप ने इरशाद फ़रमाया कि अगर तुम ने लम्बी उ़म्र पाई तो यक़ीनन तुम देखोगे कि किस्रा के ख़ज़ानों को मुसलमान अपने हाथों से खोलेंगे और ऐ अ़दी ! अगर तुम्हारी ज़िन्दगी दराज़ हुई तो तुम ज़रूर ज़रूर देखोगे कि एक आदमी मुठ्ठी भर सोना या चांदी ले कर तलाश करता फिरेगा कि कोई उस के सदक़े को क़बूल करे मगर कोई शख़्स ऐसा नहीं आएगा जो उस के सदक़े को क़बूल करे (क्यूं कि हर शख़्स के पास ब कसरत माल होगा और कोई फ़क़ीर न होगा।) हज़रते अ़दी बिन ह़ातिम का बयान है कि ऐ लोगो ! येह तो मैं ने अपनी आंखों से देख लिया कि वाक़ेई "ह़ीरह" से एक पर्दा नशीन औ़रत अकेली त़वाफ़े का'बा के लिये चली आई है और वोह खु़दा के सिवा किसी से नहीं डरती और मैं खु़द उन लोगों में से हूं जिन्हों ने किस्रा बिन हुरमुज़ के ख़ज़ानों को खोल कर निकाला। येह दो चीज़ें तो मैं ने देख लीं ऐ लोगो ! अगर तुम लोगों की उ़म्रें दराज़ हुईं तो यक़ीनन तुम लोग तीसरी चीज़ को भी देख लोगे कि कोई फ़क़ीर नहीं मिलेगा जो सदक़ा क़बूल करे।[1] (بخاری جلد۱ص۵۰۷تا ص۵۰۸باب علامات النبوۃ)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، الحدیث:۳۵۹۵، ج۲، ص۴۹۹

फ़ातेहे ख़ैबर कौन होगा

जंगे ख़ैबर के दौरान एक दिन ग़ैब दां नबी صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया कि कल मैं उस शख़्स के हाथ में झन्डा दूंगा जो **अल्लाह** व रसूल से महब्बत करता है और **अल्लाह** व रसूल उस से महब्बत करते हैं और उसी के हाथ से ख़ैबर फ़त्ह होगा। इस ख़ुश ख़बरी को सुन कर लश्कर के तमाम मुजाहिदीन ने इस इनतिज़ार में निहायत ही बे क़रारी के साथ रात गुज़ारी कि देखें कौन वोह ख़ुश नसीब है जिस के सर इस बिशारत का सहरा बंधता है। सुब्ह को हर मुजाहिद इस उम्मीद पर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा कि शायद वोही इस ख़ुश नसीबी का ताजदार बन जाए। हर शख़्स गोश बर आवाज़ था की ना गहां शहनशाहे मदीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अ़ली बिन अबी त़ालिब कहां हैं? लोगों ने कहा कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)! उन की आंखों में आशोब है। इरशाद फ़रमाया कि क़ासिद भेज कर उन्हें बुलाओ। जब ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنْهُ दरबारे रिसालत में हाज़िर हुए तो **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की आंखों में अपना लुआ़बे दहन लगा कर दुआ़ फ़रमा दी जिस से फ़िलफ़ौर वोह इस त़रह़ शिफ़ायाब हो गए कि गोया उन्हें कभी आशोबे चश्म हुवा ही नहीं था। फिर आप ने उन के हाथ में झन्डा अ़त़ा फ़रमाया और ख़ैबर का मैदान उसी दिन उन के हाथों से सर हो गया।[1] (بخاری جلد۲ص۶۰۵ باب غزوه خیبر)

इस ह़दीस से साबित होता है कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक दिन क़ब्ल ही येह बता दिया कि कल ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنْهُ ख़ैबर को फ़त्ह़ करेंगे। مَاذَا تَكْسِبُ غَدًاؕ[2] या'नी "कल कौन क्या करेगा" का इल्म ग़ैब है जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने रसूल को अ़त़ा फ़रमाया।

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب غزوة خيبر، الحديث: ٤٢١٠، ج٣، ص ٨٥

2 ......پ ٢١، لقمٰن: ٣٤

तीस बरस ख़िलाफ़त फिर बादशाही

हज़रते सफ़ीना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरे बा'द तीस बरस तक ख़िलाफ़त रहेगी इस के बा'द बादशाही हो जाएगी। इस ह़दीस को सुना कर ह़ज़रते सफ़ीना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि तुम लोग गिन लो ! हज़रते अबू बक्र की ख़िलाफ़त दो बरस और ह़ज़रते उ़मर की ख़िलाफ़त दस बरस और ह़ज़रते उ़समान की ख़िलाफ़त बारह बरस और ह़ज़रते अ़ली की ख़िलाफ़त छे बरस येह कुल तीस बरस हो गए।[1] (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) (مشکوٰۃ جلد۲ص۴۶۲کتاب الفتن)

सि. 70 हि. और लड़कों की हुकूमत

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रावी हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि सि. 70 हि. के शुरूअ़ और लड़कों की हुकूमत से पनाह मांगो।[2] (مشکوٰۃ جلد۲ص۳۲۳)

इसी त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत की तबाही कुरैश के चन्द लड़कों के हाथों पर होगी। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस ह़दीस को सुना कर फ़रमाया करते थे कि अगर तुम चाहो तो मैं उन लड़कों के नाम बता सकता हूं वोह फुलां के बेटे और फुलां के बेटे हैं।[3] (بخاری جلد۱ص۵۰۹باب علامات النبوۃ)

तारीख़े इस्लाम गवाह है कि सि. 70 हि. में बनू उमय्या के कम उ़म्र ह़ाकिमों ने जो फ़ितने बरपा किये वाक़ेई येह ऐसे फ़ितने थे कि जिन से

---

1 ......مشکاۃ المصابیح ، کتاب الرقاق ،الفصل الثانی ، الحدیث:۵۳۹۵،ج۲،ص ۲۸۱

2 ......مشکاۃ المصابیح ، کتاب الامارۃ والقضاء ،الفصل الثالث ، الحدیث:۳۷۱۶،ج۲، ص ۱۱

3 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب،باب علامات النبوۃ فی الاسلام،الحدیث:۳۶۰۵،ج۲،ص ۵۰۱

हर मुसलमान को ख़ुदा की पनाह मांगनी चाहिये। इन वाक़िआत की बरसों पहले नबिय्ये बरह़क़ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी जो यक़ीनन ग़ैब की ख़बर है।

तुर्कों से जंग

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि उस वक़्त तक क़ियामत क़ाइम नहीं होगी जब तक तुम लोग ऐसी क़ौम से न लड़ोगे जिन के जूते बाल के होंगे और जब तक तुम लोग क़ौमे तुर्क से न लड़ोगे जो छोटी आंखों वाले, सुर्ख़ चेहरों वाले, चपटी नाकों वाले होंगे। उन के चेहरे गोया हथोड़ों से पीटी हुई ढालों की मानिन्द (चौड़े चपटे) होंगे और उन के जूते बाल के होंगे।

और दूसरी रिवायत में है कि तुम लोग "ख़ूज़ व किरमान" के अ़जमिय्यों से जंग करोगे जिन के चेहरे सुर्ख़, नाकें चपटी, आंखें छोटी होंगी।

और तीसरी रिवायत में येह है कि क़ियामत से पहले तुम लोग ऐसी क़ौम से जंग करोगे जिन के जूते बाल के होंगे वोह अहले "बारज़" हैं। (या'नी सह़राओं और मैदानों में रहने वाले हैं।) (1) (بخاری جلد۱ص ۵۰۷ باب علامات النبوۃ)

ग़ैब दां नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह ख़बरें उस वक़्त दी थीं जब इस्लाम अभी पूरे तौ़र पर ज़मीने ह़िजाज़ में भी नहीं फैला था। मगर तारीख़ गवाह है कि मुख़्बिरे सादिक़ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की येह तमाम पेश गोइयां पहली ही सदी के आख़िर तक पूरी हो गईं कि मुजाहिदीने इस्लाम के लश्करों ने तुर्कों और सह़राओं में रहने वाले बरबरियों से

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب المناقب، باب علامات النبوة فی الاسلام، الحديث: ۳۵۸۷، ۳۵۹۱، ج۲، ص ۴۹۷، ۴۹۸ ملتقطاً

जिहाद किया और इस्लाम की फ़त्हे मुबीन हुई और तुर्क व बरबरी अक़्वाम दामने इस्लाम में आ गईं।

हिन्दूस्तान में मुजाहिदीन

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिन्दूस्तान में इस्लाम के दाखि़ल और ग़ालिब होने की ख़ुश ख़बरी सुनाते हुए येह इरशाद फ़रमाया कि

मेरी उम्मत के दो गुरौह ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला ने उन दोनों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दिया है। एक वोह गुरौह जो हिन्दूस्तान में जिहाद करेगा और एक वोह गुरौह जो ह़ज़रते ईसा बिन मरयम عَلَیْہِ السَّلَام के साथ होगा।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहा करते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम मुसलमानों से हिन्दूस्तान में जिहाद करने का वा'दा फ़रमाया था तो अगर मैं ने वोह ज़माना पा लिया जब तो मैं उस की राह में अपनी जान व माल कुरबान कर दूंगा और अगर मैं उस जिहाद में शहीद हो गया तो मैं बेहतरीन शहीद ठहरूंगा और अगर मैं ज़िन्दा लौटा तो मैं दोज़ख़ से आज़ाद होने वाला अबू हुरैरा होऊंगा।[1] (نسائی جلد۲ص۶۳ باب غزوۃ الہند)

इमाम नसाई ने सि. 302 हि. में वफ़ात पाई और उन्हों ने अपनी किताब सुल्तान महमूद ग़ज़्नवी के ह़म्लए हिन्दूस्तान सि. 392 हि. से तक़रीबन सो बरस पहले तह़रीर फ़रमाई।

तमाम दुन्या के मुअर्रिख़ीन गवाह हैं कि ग़ैब दां नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने कुदसी बयान से हिन्दूस्तान के बारे में सेंकड़ों बरस पहले जिस ग़ैब की ख़बर का ए'लान फ़रमाया था वोह ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ पूरी हो कर रही कि मुह़म्मद बिन क़ासिम ने सर ज़मीने सिन्ध व

1 ......سنن النسائی، کتاب الجهاد، باب غزوة الهند، الحديث: ۳۱۷۱، ۳۱۷۲، ص ۵۱۷

मकरान पर जिहाद फ़रमाया और महमूद ग़ज़्नवी व शहाबुद्दीन ग़ौरी ने हिन्दूस्तान के सोमनात व अजमेर वग़ैरा पर जिहाद कर के इस मुल्क में इस्लाम का परचम लहराया। यहां तक कि सर ज़मीने हिन्द में नागालेन्ड की पहाड़ियों से कोहे हिन्दू कश तक और रास कुमारी से हिमालिया की चोटियों तक इस्लाम का परचम लहरा चुका। हालां कि मुख़्बिरे सादिक़ صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह पेशीन गोई उस वक़्त दी थी जब इस्लाम सर ज़मीने हिजाज़ से भी आगे नहीं पहुंच पाया था। इन ग़ैब की ख़बरों को लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ पूरा होते हुए देख कर कौन है जो ग़ैब दां नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में इस तरह नज़रानए अ़क़ीदत न पेश करेगा कि

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं, वोह जो तुझ पे इयां नहीं

(आ'ला हज़रत बरेल्वी عَلَيْهِ الرَّحْمَة)

कौन कहां मरेगा

जंगे बद्र में लड़ाई से पहले ही हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबा को ले कर मैदाने जंग में तशरीफ़ ले गए और अपनी छड़ी से लकीर खींच खींच कर बताया कि येह फ़ुलां काफ़िर की क़त्ल गाह है। येह अबू जहल का मक़्तल है। इस जगह क़ुरैश का फ़ुलां सरदार मारा जाएगा। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का बयान है कि हर सरदारे क़ुरैश के क़त्ल होने के लिये आप ने जो जो जगहें मुक़र्रर फ़रमा दी थीं उसी जगह उस काफ़िर की लाश ख़ाक व ख़ून में लिथड़ी हुई पाई गई।[1] (مسلم جلد۲ص۱۰۲باب غزوہ بدر)

1 ......صحيح مسلم، كتاب الجهاد والسير، باب غزوة بدر، الحديث:١٧٧٩، ص ٩٨١

ह़ज़रते फ़ातिमा की वफ़ात कब होगी

ह़ज़रते रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मरज़े वफ़ात में ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को अपने पास बुला कर उन के कान में कोई बात फ़रमाई तो वोह रोने लगीं। फिर थोड़ी देर के बा'द उन के कान में एक और बात कही तो वोह हंसने लगीं। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को येह देख कर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। उन्हों ने ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से इस रोने और हंसने का सबब पूछा। तो उन्हों ने साफ़ कह दिया कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का राज़ ज़ाहिर नहीं कर सकती। जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात हो गई तो ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के दोबारा दरयाफ़्त करने पर ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने कहा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहली मरतबा मेरे कान में येह फ़रमाया था कि मैं अपनी इसी बीमारी में वफ़ात पा जाऊंगा। येह सुन कर मैं फ़र्ते ग़म से रो पड़ी फिर फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा ! मेरे घर वालों में सब से पहले तुम वफ़ात पा कर मुझ से मिलोगी। येह सुन कर मैं हंस पड़ी कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मेरी जुदाई का ज़माना बहुत ही कम होगा।[1] (بخاری جلد۱ص۵۱۲)

अहले इ़ल्म जानते हैं कि येह दोनों ग़ैब की ख़बरें ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ पूरी हुईं कि आप ने अपनी उसी बीमारी में वफ़ात पाई और ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا भी सिर्फ़ छे महीने के बा'द वफ़ात पा कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से जा मिलीं।

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب المناقب ، باب علامات النبوة فی الاسلام ، الحدیث:٣٦٢٦، ج٢، ص٥٠٧، ٥٠٨ و کتاب الاستئذان ، باب من ناجی بین یدی الناس...الخ،الحدیث: ٦٢٨٥، ج٤،ص ١٨٤

ख़ुद अपनी वफ़ात की इत्तिलाअ़

जिस साल हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस दुन्या से रिह़लत फ़रमाई, पहले ही से आप ने अपनी वफ़ात का ए'लान फ़रमाना शुरूअ़ कर दिया। चुनान्चे ह़िज्जतुल वदाअ़ से पहले ही हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को यमन का ह़ाकिम बना कर रवाना फ़रमाया तो उन के रुख़्सत करते वक़्त आप ने उन से फ़रमाया कि ऐ मुआ़ज़ ! अब इस के बा'द तुम मुझ से न मिल सकोगे जब तुम वापस आओगे तो मेरी मस्जिद और मेरी क़ब्र के पास से गुज़रोगे।[1] (مسند امام احمد بن حنبل جلد۵ ص۳۵)

इसी त़रह़ ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर जब कि अ़रफ़ात में एक लाख पच्चीस हज़ार से ज़ाइद मुसलमानों का इजतिमाए़ अ़ज़ीम था। आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां दौराने ख़ुत़्बा में इरशाद फ़रमाया कि शायद आयन्दा साल तुम लोग मुझ को न पाओगे।[2]

इसी त़रह़ मरज़े वफ़ात से कुछ दिनों पहले आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने एक बन्दे को येह इख़्तियार दिया था कि वोह चाहे तो दुन्या की ज़िन्दगी को इख़्तियार कर ले और चाहे तो आख़िरत की ज़िन्दगी क़बूल कर ले तो उस बन्दे ने आख़िरत को क़बूल कर लिया। येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ रोने लगे। ह़ज़रते अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि हम लोगों को बड़ा तअ़ज्जुब हुवा कि आप तो एक बन्दे के बारे में येह ख़बर दे रहे हैं तो इस पर ह़ज़रते अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ) के रोने का क्या मौक़अ़ है ? मगर जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस के चन्द ही दिनों के बा'द

---

1 ......المسندللامام احمد بن حنبل ، مسند الانصار ، الحديث:٢٢١١٥،ج٨، ص ٢٤٣

2 ......تاريخ الطبرى ،حجة الوداع ، الحديث:١٠٣٠،ج٢،ص ٣٤٤

वफ़ात पाई तो हम लोगों को मा'लूम हुवा कि वोह इख़्तियार दिया हुवा बन्दा हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही थे और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ हम लोगों में से सब से ज़ियादा इल्म वाले थे। (क्यूं कि उन्हों ने हम सब लोगों से पहले येह जान लिया था कि वोह इख़्तियार दिया हुवा बन्दा खुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही हैं।) (1)

(بخاری جلد۱ص۵۱۹باب قول النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سدواالا بواب الخ)

हज़रते उमर व हज़रते उसमान رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا शहीद होंगे

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि नबी صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा हज़रते अबू बक्र व हज़रते उमर व हज़रते उसमान رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنْهُم को साथ ले कर उहुद पहाड़ पर चढ़े। उस वक़्त पहाड़ हिलने लगा तो आप ने फ़रमाया कि ऐ उहुद ! ठहर जा और यक़ीन रख कि तेरे ऊपर एक नबी है एक सिद्दीक़ है और दो (उमर व उसमान) शहीद हैं।(2) (بخاری جلد۱ص۵۱۹باب فضل ابی بکر)

नबी और सिद्दीक़ को तो सब जानते थे लेकिन हज़रते उमर और हज़रते उसमान رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا की शहादत के बा'द सब को येह भी मा'लूम हो गया कि वोह दो शहीद कौन थे।

हज़रते अम्मार رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ को शहादत मिलेगी

हज़रते अबू सईद खुदरी व हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا का बयान है कि हज़रते अम्मार رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ख़न्दक़ खोद रहे थे उस वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते अम्मार رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ के सर

---

1 ......صحیح البخاری ،کتاب فضائل ا صحاب النبی صلی اللّٰه علیه و سلم ، باب قول النبی سدوا الابواب ...الخ، الحدیث:٣٦٥٤،ج٢،ص٥١٧

2 ......صحیح البخاری،کتاب فضائل اصحاب النبی،باب قول النبی لو کنت متخذا...الخ، الحدیث: ٣٦٧٥، ج٢،ص٥٢٤

पर अपना दस्ते शफ़्क़त फैर कर इरशाद फ़रमाया कि अफ़्सोस ! तुझे एक बाग़ी गुरौह क़त्ल करेगा ।[1] (مسلم جلد۲ ص۳۹۵ کتاب الفتن)

येह पेशगोई इस त़रह़ पूरी हुई कि ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ जंगे सिफ़्फ़ीन के दिन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के साथ थे और ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के साथियों के हाथ से शहीद हुए ।

अहले सुन्नत का अ़क़ीदा है कि जंगे सिफ़्फ़ीन में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ यक़ीनन ह़क़ पर थे और ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का गुरौह यक़ीनन ख़त़ा का मुर्तकिब था । लेकिन चूंकि उन लोगों की ख़त़ा इजतिहादी थी लिहाज़ा येह लोग गुनहगार न होंगे क्यूं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि कोई मुज्तहिद अगर अपने इजतिहाद में सह़ीह़ और दुरुस्त मस्अले तक पहुंच गया तो उस को दो गुना सवाब मिलेगा और अगर मुज्तहिद ने अपने इजतिहाद में ख़त़ा की जब भी उस को एक सवाब मिलेगा ।[2] (حاشیہ بخاری بحوالہ کرمانی جلد۱ ص۵۰۹ باب علامات النبوۃ)

इस लिये ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की शान में ला'न ता'न हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं क्यूं कि बहुत से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُم इस जंग में ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के साथ थे ।

फिर येह बात भी यहां ज़ेह्न में रखनी ज़रूरी है कि मिस्री बाग़ियों का गुरौह जिन्हों ने ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का मुह़ासरा कर के उन को शहीद कर दिया था येह लोग जंगे सिफ़्फ़ीन में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के लश्कर में शामिल हो कर

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الفتن...الخ،باب لاتقوم الساعة...الخ،الحدیث:۲۹۱۵، ۲۹۱۶، ص۱۵۵۸

2 ......حاشية صحيح البخاري، كتاب المناقب،باب علامات النبوة...الخ،حاشية:۱۱، ج۱، ص۵۰۹

हज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से लड़ रहे थे तो मुमकिन है कि घुमसान की जंग में उन्ही बाग़ियों के हाथ से हज़रते अम्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहीद हो गए हों। इस सूरत में हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इरशाद बिल्कुल सहीह़ होगा कि "अफ़्सोस ऐ अम्मार ! तुझ को एक बाग़ी गुरौह क़त्ल करेगा" और इस क़त्ल की ज़िम्मादारी से हज़रते मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का दामन पाक रहेगा। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

बहर हाल हज़रते मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शान में ला'न ता'न करना राफ़िज़ियों का मज़हब है हज़राते अहले सुन्नत को इस से परहेज़ करना लाज़िम व ज़रूरी है।

हज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इमतिह़ान

हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने के एक बाग़ में टेक लगाए हुए बैठे थे। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दरवाज़ा खुलवा कर अन्दर आए तो आप ने उन को जन्नत की बिशारत दी। फिर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए तो आप ने उन को भी जन्नत की खुश ख़बरी सुनाई। इस के बा'द हज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए तो आप ने उन को जन्नत की बिशारत के साथ साथ एक इमतिह़ान और आज़्माइश में मुब्तला होने की भी इत्तिलाअ़ दी। येह सुन कर हज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सब्र की दुआ़ मांगी और येह कहा कि खुदा मददगार है।[1] (مسلم جلد۲ص۲۷۷باب فضائل عثمان)

हज़रते अ़ली की शहादत

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और बा'ज़ दूसरे सहाबए किराम

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل عثمان بن عفان، الحدیث: ٦١٥٩، ص١٣٠٨

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक सफ़र में थे तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि मैं बता दूं कि सब से बढ़ कर दो बद बख़्त इन्सान कौन हैं ? लोगों ने अ़र्ज़ किया कि हां या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! बताइये। आप ने इरशाद फ़रमाया कि एक क़ौमे समूद का सुर्ख़ रंग वाला वोह बद बख़्त जिस ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की ऊंटनी को क़त्ल किया और दूसरा वोह बद बख़्त इन्सान जो ऐ अ़ली ! तुम्हारे यहां पर (गरदन की त़रफ़ इशारा किया) तलवार मारेगा।[1]

(مستدرک حاکم جلد۳ص۱۴۰تاص۱۴۱مطبوعہ حیدرآباد)

येह ग़ैब की ख़बर इस त़रह़ ज़ुहूर पज़ीर हुई कि 17 रमज़ान सि. 40 हि. को अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुल्जम ख़ारिजी ने ह़ज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ पर तलवार से क़ातिलाना ह़म्ला किया जिस से ज़ख़्मी हो कर दो दिन बा'द ह़ज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ शहादत से सरफ़राज़ हो गए।[2] (تاریخ الخلفاء)

ह़ज़रते सा'द رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ के लिये ख़ुश ख़बरी

ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ ह़िज्जतुल वदाअ़ में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जा कर इस क़दर शदीद बीमार हो गए कि उन को अपनी ज़िन्दगी की उम्मीद न रही। उन को इस बात की बहुत ज़ियादा बेचैनी थी कि अगर मैं मर गया तो मेरी हिजरत ना मुकम्मल रह जाएगी। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन की इयादत के लिये तशरीफ़ ले गए। आप ने उन की बे क़रारी देख कर तसल्ली दी और उन के लिये दुआ़ भी फ़रमाई और येह बिशारत दी कि उम्मीद है कि तुम अभी नहीं मरोगे बल्कि तुम्हारी ज़िन्दगी लम्बी होगी और बहुत से लोगों को तुम से नफ़्अ़ और बहुत से लोगों को तुम से नुक़्सान पहुंचेगा।[3] (بخاری جلد۱ص۳۸۳کتاب الوصایا)

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب وجه تلقيب على بابى تراب، الحديث: ٤٧٣٤، ج٤، ص١١٦

2 ......تاريخ الخلفاء، فصل فى مبايعة على رضى الله عنه...الخ، ص١٣٩

3 ......صحيح البخارى، كتاب الوصايا، باب ان يترك ورثته...الخ، الحديث: ٢٧٤٢، ج٢، ص٢٣٢

येह ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये फ़ुतूह़ाते अ़जम की बिशारत थी। क्यूं कि तारीख़ गवाह है कि ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस्लामी लश्कर का सिपह सालार बन कर ईरान पर फ़ौज कुशी की और चन्द साल में बड़े बड़े मा'रिकों के बा'द बादशाहे ईरान किस्रा के तख़्त व ताज को छीन लिया। इस त़रह़ मुसलमानों को इन की ज़ात से बड़ा फ़ाएदा और कुफ़्फ़ारे मजूस को इन की ज़ात से नुक़्साने अ़ज़ीम पहुंचा। ईरान ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में फ़त्ह़ हुवा और इस लड़ाई का नक़्शए जंग ख़ुद अमीरुल मोमिनीन ने माहिरीने जंग के मश्वरों से तय्यार फ़रमाया था।

ह़िजाज़ की आग

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि क़ियामत उस वक़्त तक नहीं आएगी जब तक ह़िजाज़ की ज़मीन से एक ऐसी आग न निकले जिस की रौशनी में बसरा के ऊंटों की गरदनें नज़र आएंगी।[1] (مسلم جلد۲ص۳۹۳ کتاب الفتن)

इस ग़ैब की ख़बर का ज़ुहूर सि. 654 हि. में हुवा। चुनान्चे ह़ज़रते इमाम नववी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस ह़दीस की शर्ह़ में तह़रीर फ़रमाया कि येह आग हमारे ज़माने में सि. 654 हि. में मदीने के अन्दर ज़ाहिर हुई। येह आग इस क़दर बड़ी थी कि मदीने के मशरिक़ी जानिब से ले कर ''ह़ुर्रह'' की पहाड़ियों तक फैली हुई थी उस आग का ह़ाल मुल्के शाम और तमाम शहरों में तवातुर के त़रीक़े पर मा'लूम हुवा है और हम से उस शख़्स ने बयान किया जो उस वक़्त मदीने में मौजूद था।[2] (شرح مسلم نووی جلد۲ص۳۹۳ کتاب الفتن)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الفتن، باب لاتقوم الساعة...الخ، الحدیث:۲۹۰۲، ص۱۵۵۲

2 ......شرح مسلم للنووی، کتاب الفتن، ج۲، ص۳۹۳

इसी त़रह़ अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तह़रीर फ़रमाया है कि 3 जुमादल आख़िरह सि. 654 हि. को मदीनए मुनव्वरह में ना गहां एक घरघराहट की आवाज़ सुनाई देने लगी फिर निहायत ही ज़ोरदार ज़ल्ज़ला आया जिस के झटके थोड़े थोड़े वक़्फ़े के बा'द दो दिन तक मह़सूस किये जाते रहे। फिर बिल्कुल अचानक क़बीलए क़ुरैज़ा के क़रीब पहाड़ों में एक ऐसी ख़ौफ़नाक आग नुमूदार हुई जिस के बुलन्द शो'ले मदीने से ऐसे नज़र आ रहे थे कि गोया येह आग मदीनए मुनव्वरह के घरों में लगी हुई है। फिर येह आग बहते हुए नालों की त़रह़ सैलाब के मानिन्द फैलने लगी और ऐसा मह़सूस होने लगा कि पहाड़ियां आग बन कर बहती चली जा रही हैं और फिर उस के शो'ले इस क़दर बुलन्द हो गए कि आग का एक पहाड़ नज़र आने लगा और आग के शरारे हर चहार त़रफ़ फ़ज़ाओं में उड़ने लगे। यहां तक कि उस आग की रौशनी मक्कए मुकर्रमा से नज़र आने लगी और बहुत से लोगों ने शहरे बसरा में रात को उसी आग की रौशनी में ऊंटों की गरदनों को देख लिया। अहले मदीना आग के इस होलनाक मंज़र से लरज़ा बर अन्दाम हो कर दहशत और घबराहट के आ़लम में तौबा और इस्तिग़्फ़ार करते हुए हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अक़्दस के पास पनाह लेने के लिये मुज्तमअ़ हो गए। एक माह से ज़ाइद अ़र्से तक येह आग जलती रही और फिर ख़ुद ब ख़ुद रफ़्ता रफ़्ता इस त़रह़ बुझ गई कि उस का कोई निशान भी बाक़ी नहीं रहा।[1] (تاریخ الخلفاء ص ۳۲۴)

फ़ित्नों के अ़लम बरदार

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि ख़ुदा की क़सम ! मैं नहीं जानता कि मेरे साथी भूल गए हैं या जानते हुए अनजान बन रहे हैं। वल्लाह ! दुन्या के ख़ातिमे तक जितने फ़ित्नों के

1 ...... تاریخ الخلفاء، المستعصم باللّٰہ عبداللّٰہ بن المستنصرباللّٰہ، ص٤٦٥

ऐसे क़ाइदीन हैं जिन के मुत्तबिईन की ता'दाद तीन सो या इस से ज़ाइद हों उन सब फ़ितनों के अ़लम बरदारों का नाम, उन के बापों का नाम, उन के क़बीलों का नाम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम लोगों को बता दिया है।[(1)] (ابوداود جلد۲ ص ۲۳۱ کتاب الفتن)

इस ह़दीस से साबित होता है कि क़ियामत तक पैदा होने वाले गुमराहों और फ़ितनों के हज़ारों लाखों सरदारों और अ़लम बरदारों के नाम मअ़ वलदिय्यत व सुकूनत हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबा को बता दिये। ज़ाहिर है कि येह इल्मे ग़ैब है जो अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़ता फ़रमाया।

क़ियामत तक के वाक़िआ़त

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है, ह़ज़रते अ़म्र बिन अख़्त़ब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि एक दिन हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हम लोगों को नमाज़े फ़ज्र पढ़ा कर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और हम लोगों को ख़ुत़्बा सुनाते रहे यहां तक कि नमाज़े ज़ोहर का वक़्त आ गया। फिर आप ने मिम्बर से उतर कर नमाज़े ज़ोहर अदा फ़रमाई। फिर ख़ुत़्बा देने में मशग़ूल हो गए यहां तक कि नमाज़े अ़स्र का वक़्त हो गया। उस वक़्त आप ने मिम्बर से उतर कर नमाज़े अ़स्र पढ़ाई फिर मिम्बर पर चढ़ कर ख़ुत़्बा पढ़ने लगे यहां तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया तो उस दिन भर के ख़ुत़्बे में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम लोगों को उन तमाम वाक़िआ़त की ख़बर दे दी जो क़ियामत तक होने वाले थे तो जिस शख़्स ने जिस क़दर ज़ियादा उस ख़ुत़्बे को याद रखा वोह हम सह़ाबा में सब से ज़ियादा इल्म वाला है।[(2)] (مشکوٰۃ جلد۲ ص ۵۴۳)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الفتن و الملاحم، باب ذکر الفتن ودلائلها، الحدیث:۴۲۴۳، ج۴، ص۱۲۹

2 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ...الخ، باب فی المعجزات، الحدیث:۵۹۳۶، ج۲، ص۳۹۷

ज़रूरी इनतिबाह

मज़्कूरा बाला वाक़िआ़त उन हज़ारों वाक़िआ़त में से सिर्फ़ चन्द हैं जिन में **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बरें दी हैं। बिला शुबा हज़ारों वाक़िआ़त जो सिहाह सित्ता और अहादीस की दूसरी किताबों में सितारों की तरह चमक रहे हैं, उम्मत को झंझोड़ कर मुतनब्बेह कर रहे हैं कि अव्वल से अबद तक के तमाम उ़लूमे ग़ैबिया के ख़ज़ानों को अ़ल्लामुल ग़ुयूब جَلَّ جَلَالُهٗ ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सीनए नुबुव्वत में वदीअ़त फ़रमा दिया है। लिहाज़ा हर उम्मती को येह अ़क़ीदा रखना लाज़िमी और ज़रूरी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इ़ल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया है। येह अ़क़ीदा क़ुरआने मजीद की मुक़द्दस ता'लीम का वोह इ़त्र है जिस से अहले सुन्नत की दुन्याए ईमान मुअ़त्तर है जैसा कि ख़ुद ख़ुदा वन्दे आ़लम جل مجدہٗ ने इरशाद फ़रमाया कि

وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ○ (1)

(۴:۱۳)

__अल्लाह__ ने आप को हर उस चीज़ का इ़ल्म अ़ता फ़रमा दिया जिस को आप नहीं जानते थे और आप पर __अल्लाह__ का बहुत ही बड़ा फ़ज़्ल है।

इस मौज़ूअ़ पर सैर ह़ासिल बह़स हमारी किताब (क़ुरआनी तक़रीरें) में पढ़िये।

---

(1)......پ ۵، النساء: ۱۱۳

आ़लमे जमादात के मो'जिज़ात

हम पहले तह़रीर कर चुके हैं कि **हुज़ूर** शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात की हुक्मरानी का परचम आ़लमे काएनात की तमाम मख़्लूक़ात पर लहरा चुका है। चुनान्चे चन्द आस्मानी मो'जिज़ात का तज़्किरा तो हम तह़रीर कर चुके हैं अब मुनासिब मा'लूम होता है कि रूए ज़मीन पर ज़ाहिर होने वाले बे शुमार मो'जिज़ात की चन्द मिसालें भी तह़रीर कर दी जाएं ताकि नाज़िरीन के ज़ेह्नों में इस ह़क़ीक़त की तजल्ली आफ़्ताब की त़रह़ रौशन हो जाए कि ख़ुदा की मख़्लूक़ात में कोई ऐसा आ़लम नहीं जहां रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात व तसर्रुफ़ात की सल्त़नत का सिक्का न चलता हो।

चट्टान का बिखर जाना

ग़ज़्वए ख़न्दक़ के बयान में हम तफ़्सील के साथ लिख चुके हैं कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُم मदीने के चारों त़रफ़ कुफ़्फ़ार के ह़म्लों से बचने के लिये ख़न्दक़ खोद रहे थे इत्तिफ़ाक़ से एक बहुत ही सख़्त चट्टान निकल आई सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُم ने अपनी इजतिमाई त़ाक़त से हर चन्द उस को तोड़ना चाहा मगर वोह किसी त़रह़ न टूट सकी, फावड़े उस पर पड़ पड़ कर उचट जाते थे। जब लोगों ने मजबूर हो कर ख़िदमते अक़्दस में येह माजरा अ़र्ज़ किया तो आप ख़ुद उठ कर तशरीफ़ लाए और फावड़ा हाथ में ले कर एक ज़र्ब लगाई तो वोह चट्टान रैत के भुरभुरे टीलों की त़रह़ चूर हो कर बिखर गई।[1] (بخاری جلد۲ص ۵۸۸خندق)

इशारे से बुतों का गिर जाना

हर शख़्स जानता है कि फ़त्ह़े मक्का से पहले ख़ानए का'बा में

---

1 ......صحیح البخاری،کتاب المغازی،باب غزوة الخندق،الحدیث:۴۱۰۱،ج۳،ص۵۱

तीन सो साठ बुतों की पूजा होती थी। फ़त्हे मक्का के दिन **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का'बे में तशरीफ़ ले गए, उस वक़्त दस्ते मुबारक में एक छड़ी थी और आप ज़बाने अक़्दस से येह आयत तिलावत फ़रमा रहे थे कि

جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ○(1) *हक़ आ गया और बातिल मिट गया यक़ीनन बातिल मिटने ही के क़ाबिल था।*

आप अपनी छड़ी से जिस बुत की तरफ़ इशारा फ़रमाते थे वोह बिग़ैर छूए हुए फ़क़त इशारा करते ही धम से ज़मीन पर गिर पड़ता था।[2]

(مدارج النبوۃ جلد۲ص۲۹۰ بخاری جلد۲ص۶۱۴)

पहाड़ों का सलाम करना

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं **हुज़ूरे** अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मक्कए मुकर्रमा में एक तरफ़ को निकला तो मैं ने देखा कि जो दरख़्त और पहाड़ भी सामने आता है उस से "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه" की आवाज़ आती है और मैं खुद इस आवाज़ को अपने कानों से सुन रहा था।[3] (ترمذی جلد۲ص۲۰۳ باب ماجاء فی آیات نبوۃ النبی)

इसी तरह हज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मक्का में एक पथ्थर है जो

---

1 ......پ ۱۵، بنی اسرء یل: ۸۱

2 ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب ھفتم ، ج ۲ ، ص ۲۹۰

3 ......سنن الترمذی ، کتاب المناقب ، باب ماجاء فی آیات اثبات نبوۃ...الخ، الحدیث: ۳٦٤٦،ج۵،ص ۳۵۹

मुझ को सलाम किया करता था मैं अब भी उस को पहचानता हूं।[1]

(ترمذی جلد۲ص۲۰۳)

पहाड़ का हिलना

बुख़ारी शरीफ़ की येह रिवायत चन्द अवराक़ पहले हम तह़रीर कर चुके हैं कि एक दिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने साथ ह़ज़रते अबू बक्र व ह़ज़रते उ़मर व ह़ज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को ले कर उहुद पहाड़ पर चढ़े। पहाड़ (जोशे मसर्रत में) झूम कर हिलने लगा उस वक़्त आप ने पहाड़ को ठोकर मार कर येह फ़रमाया कि "ठहर जा" इस वक़्त तेरी पुश्त पर एक **पैग़म्बर** है और एक **सिद्दीक़** है और दो (ह़ज़रते उ़मर व ह़ज़रते उ़समान) **शहीद** हैं।[2] (بخاری جلد۱ص۵۱۹باب فضل ابی بکر)

मुट्ठी भर ख़ाक का शाहकार

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि जंगे हुनैन में जब कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को चारों त़रफ़ से घेर लिया तो आप अपनी सुवारी से उतर पड़े और ज़मीन से एक मुठ्ठी मिट्टी ले कर कुफ़्फ़ार के चेहरों पर फेंकी और "شَاهَتِ الْوُجُوْهُ" फ़रमाया तो काफ़िरों के लश्कर में कोई एक इन्सान भी बाक़ी नहीं रहा जिस की दोनों आंखें इसी मिट्टी से न भर गई हों चुनान्चे वोह सब अपनी अपनी आंखें मलते हुए पीठ फैर कर भाग निकले और शिकस्त

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب ماجاء فی آیات اثبات نبوة...الخ، الحدیث:٣٦٤٤، ج٥، ص٣٥٨

2 ......صحیح البخاری ، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، باب قول النبی: لو کنت متخذا خلیلا، ج٢، ص ٥٢٤

खा गए और **हुज़ूर** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के अम्वाले ग़नीमत को मुसलमानों के दरमियान तक़्सीम फ़रमा दिया।[1] (مشکوٰۃ جلد۲ص۵۳۴باب المعجزات)

इसी त़रह़ हिजरत की रात में **हुज़ूर** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने काशानए नुबुव्वत का मुह़ासरा करने वाले काफ़िरों पर जब एक मुठ्ठी ख़ाक फेंकी तो येह मुठ्ठी भर मिट्टी तमाम काफ़िरों के सरों पर पड़ गई।[2]

(مدارج جلد۲ص۵۷)

तबसरा

मज़्कूरा बाला पांचों मुस्तनद वाक़िआ़त गवाही दे रहे हैं कि **हुज़ूर** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात व तसर्रुफ़ात की हुक्मरानी आ़लमे जमादात पर भी है और आ़लमे जमादात की हर हर चीज़ जानती पहचानती और मानती है कि आप **अल्लाह** तआ़ला के रसूले बरह़क़ हैं और आप की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी को आ़लमे जमादात का हर हर फ़र्द अपने लिये लाज़िमुल ईमान और वाजिबुल अ़मल जानता है, येही वजह है कि आप का इशारा पा कर कंकरियों ने कलिमा पढ़ा, आप के दस्ते मुबारक में संगरेज़ों ने ख़ुदा की तस्बीह़ पढ़ी, आप की दुआ़ पर दीवारों ने "आमीन" कहा।[3] (دلائل النبوت وشفاء جلد ا ص۲۰۱ تا ۲۰۲)

आ़लमे नबातात के मो'जिज़ात

ख़ोशा दरख़्त से उतर पड़ा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि एक आ'राबी बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और उस ने आप से अ़र्ज़

---

1 ......صحیح مسلم ،کتاب الجهاد و السیر، باب فی غزوة حنین،الحدیث:۱۷۷۷،ص ۹۸۱

2 ......مدارج النبوت ، قسم اول ، باب دوم،ج ۲، ص ۵۷

3 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی، الباب الرابع،فصل و مثل هذا...الخ،ج ۱،ص ۳۰۶،۳۰۷

किया कि मुझे येह क्यूंकर यक़ीन हो कि आप ख़ुदा के पैग़म्बर हैं ? आप ने फ़रमाया कि उस खजूर के दरख़्त पर जो ख़ोशा लटक रहा है अगर मैं उस को अपने पास बुलाऊं और वोह मेरे पास आ जाए तो क्या तुम मेरी नुबुव्वत पर ईमान लाओगे ? उस ने कहा कि हां बेशक मैं आप का येह मो'जिज़ा देख कर ज़रूर आप को ख़ुदा का रसूल मान लूंगा । आप ने खजूर के उस ख़ोशे को बुलाया तो वोह फ़ौरन ही चल कर दरख़्त से उतरा और आप के पास आ गया फिर आप ने हुक्म दिया तो वोह वापस जा कर दरख़्त में अपनी जगह पर पैवस्त हो गया । येह मो'जिज़ा देख कर वोह आ'राबी फ़ौरन ही दामने इस्लाम में आ गया ।[1] (ترمذی جلد۲ص۲۰۳باب ماجاء فی آیات نبوۃ النبی الخ)

दरख़्त चल कर आया

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया कि हम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक सफ़र में थे । एक आ'राबी आप के पास आया, आप ने उस को इस्लाम की दा'वत दी, उस आ'राबी ने सुवाल किया कि क्या आप की नुबुव्वत पर कोई गवाह भी है ? आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि हां येह दरख़्त जो मैदान के कनारे पर है मेरी नुबुव्वत की गवाही देगा । चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस दरख़्त को बुलाया और वोह फ़ौरन ही ज़मीन चीरता हुवा अपनी जगह से चल कर बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हो गया और उस ने ब आवाज़े बुलन्द तीन मरतबा आप की नुबुव्वत की गवाही दी । फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को इशारा फ़रमाया तो वोह दरख़्त ज़मीन में चलता हुवा अपनी जगह पर चला गया ।

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب،باب ماجاء فی آیات اثبات نبوۃ...الخ،الحدیث:۳٦٤٨، ج٥،ص ٣٦٠

मुहद्दिस बज़्ज़ार व इमाम बैहक़ी व इमाम बग़वी ने इस ह़दीस में येह रिवायत भी तह़रीर फ़रमाई है कि उस दरख़्त ने बारगाहे अक़्दस में आ कर "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه" कहा, आ'राबी येह मो'जिज़ा देखते ही मुसलमान हो गया और जोशे अ़क़ीदत में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं आप को सज्दा करूं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अगर मैं ख़ुदा के सिवा किसी दूसरे को सज्दा करने का हुक्म देता तो मैं औ़रतों को हुक्म देता कि वोह अपने शोहरों को सज्दा किया करें। येह फ़रमा कर आप ने उस को सज्दा करने की इजाज़त नहीं दी। फिर उस ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! अगर आप इजाज़त दें तो मैं आप के दस्ते मुबारक और मुक़द्दस पाउं को बोसा दूं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को इस की इजाज़त दे दी। चुनान्चे उस ने आप के मुक़द्दस हाथ और मुबारक पाउं को वालिहाना अ़क़ीदत के साथ चूम लिया।[1] (زرقانی جلد۵ص۱۲۸تاص۱۳۱)

इसी त़रह़ ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं कि सफ़र में एक मन्ज़िल पर **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस्तिन्जा फ़रमाने के लिये मैदान में तशरीफ़ ले गए मगर कहीं कोई आड़ की जगह नज़र नहीं आई हां अलबत्ता उस मैदान में दो दरख़्त नज़र आए, जो एक दूसरे से काफ़ी दूरी पर थे। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक दरख़्त की शाख़ पकड़ कर चलने का हुक्म दिया तो वोह दरख़्त इस त़रह़ आप के साथ साथ चलने लगा जिस त़रह़ मुहार वाला ऊंट मुहार पकड़ने वाले के साथ चलने लगता है फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूसरे दरख़्त की टहनी थाम कर उस को भी चलने का इशारा फ़रमाया तो वोह भी चल पड़ा और दोनों दरख़्त एक

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب كلام الشجرله وسلامهاعليه...الخ، ج٦، ص٥١٧۔٥١٩

दूसरे से मिल गए और आप ने उस की आड़ में अपनी ह़ाजत रफ़्अ़ फ़रमाई । इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया तो वोह दोनों दरख़्त ज़मीन चीरते हुए चल पड़े और अपनी अपनी जगह पर पहुंच कर जा खड़े हुए ।[1] (زرقانی جلد۵ص۱۳۱تا ص۱۳۲)

इनतिबाह

येही वोह मो'जिज़ा है जिस को ह़ज़रते अ़ल्लामा बूसेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने अपने क़सीदए बुर्दा में तह़रीर फ़रमाया कि

جَاءَتْ لِدَعْوَتِهِ الْاَشْجَارُ سَاجِدَةً
تَمْشِىْ اِلَيْهِ عَلٰى سَاقٍ بِلَا قَدَمٖ

या'नी आप के बुलाने पर दरख़्त सज्दा करते हुए और बिला क़दम के अपनी पिंडली से चलते हुए आप के पास ह़ाज़िर हुए । नीज़ पहली ह़दीस से साबित हुवा कि दीनदार बुज़ुर्गों मसलन उ़लमा व मशाइख़ की ता'ज़ीम के लिये उन के हाथ पाउं को बोसा देना जाइज़ है । चुनान्चे ह़ज़रते इमाम नववी رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने अपनी किताब "अज़्कार" में और हम ने अपनी किताब "नवादिरुल ह़दीस" में इस मस्अले को मुफ़स्सल तह़रीर किया है । وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعلم

छड़ी रौशन हो गई

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि दो सह़ाबी ह़ज़रते उसैद बिन हुज़ैर और अ़ब्बाद बिन बिश्र رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا अंधेरी रात में बहुत देर तक **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से बात करते रहे जब येह दोनों बारगाहे रिसालत से अपने घरों के लिये रवाना हुए तो एक की छड़ी ना गहां ख़ुद ब ख़ुद रौशन हो गई और वोह दोनों उसी छड़ी की रौशनी में चलते रहे जब

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، باب كلام الشجرله وسلامهاعليه...الخ، ج٦، ص ٥٢١،٥٢٠

कुछ दूर चल कर दोनों के घरों का रास्ता अलग अलग हो गया तो दूसरे की छड़ी भी रौशन हो गई और दोनों अपनी अपनी छड़ियों की रौशनी के सहारे सख़्त अंधेरी रात में अपने अपने घरों तक पहुंच गए।[1]

(مشکوٰۃ جلد۲ص۵۴۴ و بخاری جلد۱ص ۵۳۷)

इसी त़रह़ इमाम अह़मद ने ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि एक मरतबा ह़ज़रते क़तादा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ इ़शा की नमाज़ पढ़ी। रात सख़्त अंधेरी थी और आस्मान पर घन्घोर घटा छाई हुई थी। ब वक़्ते रवानगी **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से उन्हें दरख़्त की एक शाख़ अ़त़ा फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि तुम बिला ख़ौफ़ो ख़त़र अपने घर जाओ येह शाख़ तुम्हारे हाथ में ऐसी रौशन हो जाएगी कि दस आदमी तुम्हारे आगे और दस आदमी तुम्हारे पीछे इस की रौशनी में चल सकें और जब तुम घर पहुंचोगे तो एक काली चीज़ को देखोगे उस को मार कर घर से निकाल देना। चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि जूं ही ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ काशानए नुबुव्वत से निकले वोह शाख़ रौशन हो गई और वोह उसी की रौशनी में चल कर अपने घर पहुंच गए और देखा कि वहां एक काली चीज़ मौजूद है आप ने फ़रमाने नुबुव्वत के मुत़ाबिक़ उस को मार कर घर से बाहर निकाल दिया।[2]

(الکلام المبین فی آیات رحمۃ للعالمین ص۱۱۶)

लकड़ी की तलवार

जंगे बद्र के दिन ह़ज़रते अ़काशा बिन मोह़सिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तलवार टूट गई तो **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को एक

---

1 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب الفضائل و الشمائل، باب الکرامات، الحدیث: ٥٩٤٤، ج٢، ص٣٩٩

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث: ١١٦٢٤، ج٤، ص١٣١

दरख़्त की टहनी दे कर फ़रमाया कि "तुम इस से जंग करो" वोह टहनी उन के हाथ में आते ही एक निहायत नफ़ीस और बेहतरीन तलवार बन गई जिस से वोह उम्र भर तमाम लड़ाइयों में जंग करते रहे यहां तक कि ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में वोह शहादत से सरफ़राज़ हो गए।

इसी त़रह़ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तलवार जंगे उहुद के दिन टूट गई थी तो उन को भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक खजूर की शाख़ दे कर इरशाद फ़रमाया कि "तुम इस से लड़ो" वोह ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ में आते ही एक बर्राक़ तलवार बन गई। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की उस तलवार का नाम "उ़रजून" था येह ख़ुलफ़ा बनू अल अ़ब्बास के दौरे हुकूमत तक बाक़ी रही यहां तक कि ख़लीफ़ा मो'तसिम बिल्लाह के एक अमीर ने इस तलवार को बाईस दीनार में ख़रीदा और ह़ज़रते अ़काशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तलवार का नाम "औ़न" था, येह दोनों तलवारें हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात और आप के तसर्रुफ़ात की यादगार थीं।[1] (مدارج النبوۃ جلد۲ص۱۲۳)

रोने वाला सुतून

मस्जिदे नबवी में पहले मिम्बर नहीं था, खजूर के तना का एक सुतून था इसी से टेक लगा कर आप ख़ुत़्बा पढ़ा करते थे। जब एक अन्सारी औ़रत ने एक मिम्बर बनवा कर मस्जिदे नबवी में रखा तो आप ने उस पर खड़े हो कर ख़ुत़्बा देना शुरूअ़ कर दिया। ना गहां उस सुतून से बच्चों की त़रह़ रोने की आवाज़ आने लगी और बा'ज़ रिवायात में आया है कि ऊंटनियों की त़रह़ बिलबिलाने की आवाज़ आई। येह राावियाने ह़दीस के मुख़्तलिफ़ ज़ौक़ की बिना पर रोने की मुख़्तलिफ़ तश्बीहें हैं राावियों का मक़्सूद येह है कि दर्दे फ़िराक़ से बिलबिला कर और बे क़रार

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب چهارم، ج ۲، ص ۱۲۳ ملخصاً

हो कर सुतून ज़ार ज़ार रोने लगा और बा'ज़ रिवायतों में येह भी आया है कि सुतून इस क़दर ज़ोर ज़ोर से रोने लगा कि क़रीब था कि जोशे गिर्या से फट जाए और उस रोने की आवाज़ को मस्जिदे नबवी के तमाम मुसल्लियों ने अपने कानों से सुना। सुतून की गिर्या व ज़ारी को सुन कर **हुज़ूर** रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर से उतर कर आए और सुतून पर तस्कीन देने के लिये अपना मुक़द्दस हाथ रख दिया और उस को अपने सीने से लगा लिया तो वोह सुतून इस तरह हिचकियां ले ले कर रोने लगा जिस तरह रोने वाले बच्चे को जब चुप कराया जाता है तो वोह हिचकियां ले ले कर रोने लगता है। बिल आख़िर जब आप ने सुतून को अपने सीने से चिमटा लिया तो वोह सुकून पा कर ख़ामोश हो गया और आप ने इरशाद फ़रमाया कि सुतून का येह रोना इस बिना पर था कि येह पहले ख़ुदा का ज़िक्र सुनता था अब जो न सुना तो रोने लगा।[1]

(بخاری جلد۱ ص۲۸۱ باب النجار و ص۵۰۶ باب علامات النبوۃ)

और हज़रते बरीदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की हदीस में येह भी वारिद है कि **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस सुतून को अपने सीने से लगा कर येह फ़रमाया कि ऐ सुतून ! अगर तू चाहे तो मैं तुझ को फिर उसी बाग़ में तेरी पहली जगह पर पहुंचा दूं ताकि तू पहले की तरह हरा भरा दरख़्त हो जाए और हमेशा फलता फूलता रहे और अगर तेरी ख़्वाहिश हो तो मैं तुझ को बाग़े बिहिश्त का एक दरख़्त बना देने के लिये ख़ुदा से दुआ कर दूं ताकि जन्नत में ख़ुदा के औलिया तेरा फल खाते रहें। येह सुन कर सुतून ने इतनी बुलन्द आवाज़ से जवाब दिया कि आस पास के लोगों ने भी सुन लिया, सुतून का जवाब येह था कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मेरी येही तमन्ना है कि मैं जन्नत का एक दरख़्त बना दिया जाऊं ताकि ख़ुदा के औलिया मेरा फल खाते रहें और मुझे

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، الحدیث:۳۵۸۴، ج۲، ص۴۹۶

हयाते जाविदानी मिल जाए। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ सुतून ! मैं ने तेरी इस आरज़ू को मंज़ूर कर लिया। फिर आप ने सामिईन को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया कि ऐ लोगो ! देखो इस सुतून ने दारुल फ़ना की ज़िन्दगी को ठुकरा कर दारुल बक़ा की ह़यात को इख़्तियार कर लिया।[1] (شفاء شریف جلد ۱ ص ۲۰۰)

एक रिवायत में येह भी आया है कि आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुतून को अपने सीने से लगा कर इरशाद फ़रमाया कि मुझे उस ज़ात की क़सम है जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि अगर मैं इस सुतून को अपने सीने से न चिमटाता तो येह क़ियामत तक रोता ही रहता।

वाज़ेह़ रहे कि गिर्यए सुतून का येह मो'जिज़ा अह़ादीस और सीरत की किताबों में ग्यारह सह़ाबियों से मन्क़ूल है जिन के नाम येह हैं : ﴾1﴿ जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﴾2﴿ उबय्य बिन का'ब ﴾3﴿ अनस बिन मालिक ﴾4﴿ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ﴾5﴿ अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﴾6﴿ सह्ल बिन सा'द ﴾7﴿ अबू सईद ख़ुदरी ﴾8﴿ बरीदा ﴾9﴿ उम्मे सलमह ﴾10﴿ मुत्त़लिब बिन अबी वदाआ़ ﴾11﴿ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم) फिर दौरे सह़ाबा के बा'द भी हर ज़माने में रावियों की एक जमाअ़ते कसीरा इस ह़दीस को रिवायत करती रही यहां तक कि अ़ल्लामा क़ाज़ी इयाज़ और अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी (رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِمَا) ने फ़रमाया कि गिर्यए सुतून की ह़दीस "ख़बरे मुतवातिर" है।[2]

(شفاء شریف جلد ۱ ص ۱۹۹ والکلام المبین ص ۱۱۶)

इस सुतून के बारे में एक रिवायत है कि आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को अपने मिम्बर के नीचे दफ़्न फ़रमा दिया और एक रिवायت में

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ،فصل فی قصة حنين الجذع ، ج۱، ص ۳۰۵،۳۰٤

2 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل فی قصة حنين الجذع، ج۱، ص ۳۰٤،۳۰۳
و المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی ، باب حنين الجذع شوقااليه ، ج۶، ص ۵۲٤

आया है कि आप ने उस को मस्जिदे नबवी की छत में लगा दिया। इन दोनों रिवायतों में शारिहीने हदीस ने इस तरह ततबीक़ दी है कि पहले हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस को दफ़्न फ़रमा दिया फिर इस ख़याल से कि येह लोगों के क़दमों से पामाल होगा उस को ज़मीन से निकाल कर छत में लगा दिया इस तरह ज़मीन में दफ़्न करने और छत में लगाने की दोनों रिवायतें दो वक़्तों में होने के लिहाज़ से दुरुस्त हैं। وَاللّٰه تَعَالٰی اَعلم

फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द जब ता'मीरे जदीद के लिये मस्जिदे नबवी मुन्हदिम की गई और येह सुतून छत से निकाला गया तो इस को मशहूर सहाबी हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक मुक़द्दस तबर्रुक समझ कर उठा लिया और इस को अपने पास रख लिया यहां तक कि येह बिल्कुल ही कुहना और पुराना हो कर चूर चूर हो गया।

इस सुतून को दफ़्न करने के बारे में अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने येह नुक्ता तहरीर फ़रमाया है कि अगर्चे येह ख़ुश्क लकड़ी का एक सुतून था मगर येह दरजात व मरातिब में एक मर्दे मोमिन के मिस्ल क़रार दिया गया क्यूं कि येह हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इश्क़ व महब्बत में रोया था और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ इश्क़ व महब्बत का बरताव येह ईमान वालों ही का ख़ास्सा है।[1]

(شفاء شریف جلد۱ص۲۰۰وزرقانی جلد۵ص۱۳۸)(وَاللّٰه تَعَالٰی اَعلم)

आ़लमे हैवानात के मो'जिज़ात

जानवरों का सज्दा करना

अहादीस की अकसर किताबों में चन्द अल्फ़ाज़ के तग़य्युर के साथ येह रिवायत मज़कूर है कि एक अन्सारी का ऊंट बिगड़ गया था और

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل فى قصة حنين الجذع ، ج ١ ، ص ٣٠٤
و شرح الزرقانى على المواهب ،باب حنين الجذع شوقااليه ، ج٦، ص ٥٣٤

किसी के क़ाबू में नहीं आता था बल्कि लोगों को काटने के लिये ह़म्ला किया करता था। लोगों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मुत्त़लअ़ किया। आप ने खु़द उस ऊंट के पास जाने का इरादा फ़रमाया तो लोगों ने आप को रोका कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! येह ऊंट लोगों को दौड़ कर कुत्ते की त़रह़ काट खाता है। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया "मुझे इस का कोई ख़ौफ़ नहीं है" येह कह कर आप आगे बढ़े तो ऊंट ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने आ कर अपनी गरदन डाल दी और आप को सज्दा किया आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के सर और गरदन पर अपना दस्ते शफ़्क़त फैर दिया तो वोह बिल्कुल ही नर्म पड़ गया और फ़रमां बरदार हो गया और आप ने उस को पकड़ कर उस के मालिक के ह़वाले कर दिया। फिर येह इरशाद फ़रमाया कि खु़दा की हर मख़्लूक़ जानती और मानती है कि मैं अल्लाह का रसूल हूं लेकिन जिन्नों और इन्सानों में से जो कुफ़्फ़ार हैं वोह मेरी नुबुव्वत का इक़रार नहीं करते। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने ऊंट को सज्दा करते हुए देख कर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! जब जानवर आप को सज्दा करते हैं तो हम इन्सानों को तो सब से पहले आप को सज्दा करना चाहिये येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर किसी इन्सान का दूसरे इन्सान को सज्दा करना जाइज़ होता तो मैं औ़रतों को हुक्म देता कि वोह अपने शोहरों को सज्दा किया करें।[1]

(زرقانی جلد۵ص۱۴۰تا ص۱۴۱ومشکوۃ جلد۲ص۵۴۰باب المعجزات)

बारगाहे रिसालत में ऊंट की फ़रयाद

एक बार हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक अन्सारी के बाग़ में तशरीफ़ ले गए वहां एक ऊंट खड़ा हुवा ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रहा था। जब उस ने आप को देखा तो एक दम बिलबिलाने लगा और उस की

---

1 ......المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی،باب سجود الجمل وشکواہ الیه،ج٦،ص٥٣٨_٥٤٤ملخصاً

दोनों आंखों से आंसू जारी हो गए । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़रीब जा कर उस के सर और कन्पटी पर अपना दस्ते शफ़्क़त फैरा तो वोह तसल्ली पा कर बिल्कुल ख़ामोश हो गया। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों से दरयाफ़्त फ़रमाया कि इस ऊंट का मालिक कौन है ? लोगों ने एक अन्सारी का नाम बताया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन उन को बुलवाया और फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ने इन जानवरों को तुम्हारे क़ब्ज़े में दे कर इन को तुम्हारा मह्कूम बना दिया है लिहाज़ा तुम लोगों पर लाज़िम है कि तुम इन जानवरों पर रह्म किया करो। तुम्हारे इस ऊंट ने मुझ से तुम्हारी शिकायत की है कि तुम इस को भूका रखते हो और इस की ताक़त से ज़ियादा इस से काम ले कर इस को तकलीफ़ देते हो।[1] (ابوداود جلد۱ص۳۵۲ مجتبائی)

बे दूध की बकरी ने दूध दिया

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं कि मैं एक नौ उम्र लड़का था और मक्का में काफ़िरों के सरदार उक़्बा बिन अबी मुईत की बकरियां चराया करता था। इत्तिफ़ाक़ से **हुज़ूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का मेरे पास से गुज़र हुवा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि ऐ लड़के ! अगर तुम्हारी बकरियों के थनों में दूध हो तो हमें भी दूध पिलाओ, मैं ने अर्ज़ किया कि मैं इन बकरियों का मालिक नहीं हूं बल्कि इन का चरवाहा होने की हैसिय्यत से अमीन हूं, मैं भला बिग़ैर मालिक की इजाज़त के किस तरह इन बकरियों का दूध किसी को पिला सकता हूं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क्या तुम्हारी बकरियों में कोई बच्चा भी है ? मैं ने कहा : "जी हां" आप ने फ़रमाया : उस बच्चे को मेरे पास लाओ। मैं ले आया। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उस बच्चे की टांगों को पकड़ लिया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के थन को अपना मुक़द्दस हाथ लगा दिया तो उस का थन दूध से भर गया फिर एक गहरे पथ्थर में आप

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني ، باب سجود الجمل وشكواه اليه ، ج٦،ص٥٤٣

ने उस का दूध दोहा, पहले खुद पिया फिर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को पिलाया। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि इस के बा'द मुझ को भी पिलाया फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस बकरी के थन में हाथ मार कर फ़रमाया कि ऐ थन ! तू सिमट जा। चुनान्चे फ़ौरन ही उस का थन सिमट कर खुश्क हो गया।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि मैं इस मो'जिज़े को देख कर बेहृद मुतअस्सिर हुवा और मैं ने अ़र्ज़ किया कि आप पर आस्मान से जो कलाम नाज़िल हुवा है मुझे भी सिखाइये। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम ज़रूर सीखो तुम्हारे अन्दर सीखने की सलाहिय्यत है। चुनान्चे मैं ने आप की ज़बाने मुबारक से सुन कर कुरआने मजीद की सत्तर सूरतें याद कर लीं। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहा करते थे कि मेरे इस्लाम क़बूल करने में इस मो'जिज़े को बहुत बड़ा दख़्ल है।[1] (طبقات ابن سعد ج۱ص۱۲۲)

तब्लीग़े इस्लाम करने वाला भेड़िया

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक भेड़िये ने एक बकरी को पकड़ लिया लेकिन बकरियों के चरवाहे ने भेड़िये पर ह़म्ला कर के उस से बकरी को छीन लिया। भेड़िया भाग कर एक टीले पर बैठ गया और कहने लगा कि ऐ चरवाहे ! अल्लाह तआ़ला ने मुझ को रिज़्क़ दिया था मगर तूने उस को मुझ से छीन लिया। चरवाहे ने येह सुन कर कहा कि खुदा की क़सम ! मैं ने आज से ज़ियादा कभी कोई हैरत अंगेज़ और तअ़ज्जुब खैज़ मंज़र नहीं देखा कि एक भेड़िया अ़रबी ज़बान में मुझ से कलाम करता है। भेड़िया कहने लगा कि ऐ चरवाहे ! इस से कहीं ज़ियादा अ़जीब बात तो येह है कि तू यहां बकरियां चरा रहा है और तू उस नबी को छोड़े और उन से मुंह मोड़े हुए बैठा है जिन से ज़ियादा बुज़ुर्ग

[1] ......الطبقات الكبرى لابن سعد ، باب ومن خلفاء ...الخ،عبدالله بن مسعود،ج۳،ص۱۱۱

और बुलन्द मर्तबा कोई नबी नहीं आया। इस वक़्त जन्नत के तमाम दरवाज़े खुले हुए हैं और तमाम अहले जन्नत उस नबी के साथियों की शाने जिहाद का मंज़र देख रहे हैं और तेरे और उस नबी के दरमियान बस एक घाटी का फ़ासिला है। काश ! तू भी उस नबी की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अल्लाह के लश्करों का एक सिपाही बन जाता। चरवाहे ने इस गुफ़्तगू से मुतअस्सिर हो कर कहा कि अगर मैं यहां से चला गया तो मेरी बकरियों की हिफ़ाज़त कौन करेगा ? भेड़िये ने जवाब दिया कि तेरे लौटने तक मैं ख़ुद तेरी बकरियों की निगहबानी करूंगा। चुनान्चे चरवाहे ने अपनी बकरियों को भेड़िये के सिपुर्द कर दिया और ख़ुद बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर मुसलमान हो गया और वाक़ेई भेड़िये के कहने के मुताबिक़ उस ने नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हाब को जिहाद में मसरूफ़ पाया। फिर चरवाहे ने भेड़िये के कलाम का हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से तज़्किरा किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम जाओ तुम अपनी सब बकरियों को ज़िन्दा व सलामत पाओगे। चुनान्चे चरवाहा जब लौटा तो येह मन्ज़र देख कर हैरान रह गया कि भेड़िया उस की बकरियों की हिफ़ाज़त कर रहा है और उस की कोई बकरी भी ज़ाएअ़ नहीं हुई है चरवाहे ने ख़ुश हो कर भेड़िये के लिये एक बकरी ज़ब्ह कर के पेश कर दी और भेड़िया उस को खा कर चल दिया।[1] (زرقانی جلد۵ص۱۳۵تا ص۱۳۶)

ए'लाने ईमान करने वाली गोह

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि क़बीलए बनी सुलैम का एक आ'राबी ना गहां हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानी महफ़िल के पास से गुज़रा आप अपने अस्हाब के मज्मअ़ में तशरीफ़ फ़रमा थे। येह आ'राबी जंगल से एक गोह पकड़ कर ला रहा था

1 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی،باب کلام الذئب وشھادتہ...الخ،ج٦،ص٥٤٩

आ'राबी ने आप के बारे में लोगों से सुवाल किया कि वोह कौन हैं ? लोगों ने बताया कि येह **अल्लाह** के नबी हैं। आ'राबी येह सुन कर आप की तरफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा कि मुझे लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम है कि मैं उस वक़्त तक आप पर ईमान नहीं लाऊंगा जब तक मेरी येह गोह आप की नुबुव्वत पर ईमान न लाए, येह कह कर उस ने गोह को आप के सामने डाल दिया। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने गोह को पुकारा तो उस ने "لَبَّیْکَ وَسَعْدَیْکَ" इतनी बुलन्द आवाज़ से कहा कि तमाम हाज़िरीन ने सुन लिया। फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा कि तेरा मा'बूद कौन है ? गोह ने जवाब दिया कि मेरा मा'बूद वोह है कि उस का अ़र्श आस्मान में है और उस की बादशाही ज़मीन में है और उस की रह़मत जन्नत में है और उस का अ़ज़ाब जहन्नम में है। फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा कि ऐ गोह ! येह बता कि मैं कौन हूं ? गोह ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि आप रब्बुल आ़लमीन के रसूल हैं और ख़ातमुन्नबिय्यीन है जिस ने आप को सच्चा माना वोह काम्याब हो गया और जिस ने आप को झुटलाया वोह ना मुराद हो गया। येह मंज़र देख कर आ'राबी इस क़दर मुतअस्सिर हुवा कि फ़ौरन ही कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया और कहने लगा कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं जिस वक़्त आप के पास आया था तो मेरी नज़र में रूए ज़मीन पर आप से ज़ियादा ना पसन्द कोई आदमी नहीं था लेकिन इस वक़्त मेरा येह ह़ाल है कि आप मेरे नज़्दीक मेरी औलाद बल्कि मेरी जान से भी ज़ियादा प्यारे हो गए हैं। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ख़ुदा के लिये ह़म्द है जिस ने तुझ को ऐसे दीन की हिदायत दी जो हमेशा ग़ालिब रहेगा और कभी मग़्लूब नहीं होगा। फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को सूरए फ़ातिह़ा और सूरए इख़्लास की ता'लीम दी। आ'राबी क़ुरआन की इन दो सूरतों को सुन कर कहने लगा कि मैं ने

बड़े बड़े फ़सीह़ व बलीग़, त़वील व मुख़्तसर हर क़िस्म के कलामों को सुना है मगर ख़ुदा की क़सम ! मैं ने आज तक इस से बढ़ कर और इस से बेहतर कलाम कभी नहीं सुना । फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم से फ़रमाया कि येह क़बीलए बनी सुलैम का एक मुफ़्लिस इन्सान है तुम लोग इस की माली इमदाद कर दो । येह सुन कर बहुत से लोगों ने उस को बहुत कुछ दिया यहां तक कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उस को दस गाभन ऊंटनियां दीं । येह आ'राबी तमाम माल व सामान को साथ ले कर जब अपने घर की त़रफ़ चला तो रास्ते में देखा कि उस की क़ौम बनी सुलैम के एक हज़ार सुवार नेज़ा और तलवार लिये हुए चले आ रहे हैं । उस ने पूछा कि तुम लोग कहां के लिये और किस इरादे से चले हो ? सुवारों ने जवाब दिया कि हम लोग उस शख़्स से लड़ने के लिये जा रहे हैं जो येह गुमान करता है कि वोह नबी है और हमारे देवताओं को बुरा भला कहता है । येह सुन कर आ'राबी ने बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ा और अपना सारा वाक़िआ़ उन सुवारों से बयान किया । उन सुवारों ने जब आ'राबी की ज़बान से उस का ईमान अफ़रोज़ बयान सुना तो सब ने لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه पढ़ा । फिर सब के सब बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हुए तो **हुज़ूरे** अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस क़दर तेज़ी के साथ उन लोगों के इस्तिक़्बाल के लिये खड़े हुए कि आप की चादर आप के जिस्मे अत़्हर से गिर पड़ी और येह लोग कलिमा पढ़ते हुए अपनी अपनी सुवारियों से उतर पड़े और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप हमें जो हुक्म देंगे हम आप के हर हुक्म की फ़रमां बरदारी करेंगे । आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग ह़ज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के झन्डे के नीचे जिहाद करते रहो । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का बयान है कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में बनी सुलैम के सिवा कोई क़बीला भी ऐसा नहीं था जिस के

एक हज़ार आदमी बयक वक़्त मुसलमान हुए हों । इस ह़दीस को त़बरानी व बैहक़ी व ह़ाकिम व इब्ने अ़दी जैसे बड़े बड़े मुह़द्दिसीन ने रिवायत किया है ।[1] (زرقانی ج۵ ص۱۴۸تا ص۱۴۹)

इनतिबाह

इस क़िस्म के सेंकड़ों मो'जिज़ात में से येह चन्द वाक़िआत इस बात की सूरज से ज़ियादा रौशन दलीलें हैं कि रूए ज़मीन के तमाम ह़ैवानात **हु़जू़रे** अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जानते पहचानते और मानते हैं कि आप नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, ख़ातमे पैग़म्बरां हैं और येह सब के सब आप की मद्ह़ो सना के ख़त़ीब और आप की मुक़द्दस दा'वते इस्लाम के नक़ीब हैं और येह सब आप के अम्र व नह्य की हुक्मरानी और आप के इक़्तिदार व तसर्रुफ़ात की सुल्त़ानी को तस्लीम करते हुए आप के हर फ़रमान को अपने लिये वाजिबुल ईमान और लाज़िमुल अ़मल समझते हैं और आप के ए'ज़ाज़ो इक्राम और आप की ता'ज़ीम व एह़तिराम को अपने लिये सरमायए ह़यात तसव्वुर करते हैं । काश ! इस ज़माने के मुस्लिम नुमा कलिमा पढ़ने पढ़ाने वाले इन्सान इन बे ज़बान जानवरों से ता'ज़ीम व एह़तिरामे रसूल का सबक़ सीखते और दिलो जान से इस रौशन ह़क़ीक़त पर ध्यान देते कि

अपने मौला की है बस शान अ़ज़ीम, जानवर भी करें जिन की ता'ज़ीम
संग करते हैं अदब से तस्लीम, पेड़ सज्दे में गिरा करते हैं
हां यहीं करती हैं चिड़ियां फ़रयाद, हां यहीं चाहती है हिरनी दाद
इसी दर पे शुतराने नाशाद, गिलए रन्जो अ़ना करते हैं

(आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّهٗ)

---

[1] ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،باب حديث الحمار ، ج٦،ص ٥٥٤-٥٥٧

आ़लमे इन्सानिय्यत के मो'जिज़ात

थोड़ी चीज़ ज़ियादा हो गई

तमाम दुन्या जानती है कि मुसलमानों का इब्तिदाई ज़माना बहुत ही फ़क़्रो फ़ाक़े में गुज़रा है। कई कई दिन गुज़र जाते थे कि उन लोगों को कोई चीज़ खाने के लिये नहीं मिलती थी। ऐसी ह़ालत में अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह मो'जिज़ा उन फ़ाक़ा ज़दा मुसलमानों की नुस्रत व दस्त गीरी न करता तो भला उन मुफ़्लिस और फ़ाक़ा मस्त मुसलमानों का क्या ह़ाल होता।

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने आस्मान से उतरने वाले दस्तर ख़्वान की सात रोटियों और सात मछलियों से कई सो आदमियों को शिकम सैर कर दिया। यक़ीनन येह उन का बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा है जिस का ज़िक्र इन्जील व क़ुरआन दोनों मुक़द्दस आस्मानी किताबों में मज़कूर है। लेकिन हुज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक से सेंकड़ों मरतबा इस क़िस्म की मो'जिज़ाना बरकतों का ज़ुहूर हुवा कि थोड़ा सा खाना पानी सेंकड़ों बल्कि हज़ारों इन्सानों को शिकम सैर और सैराब करने के लिये काफ़ी हो गया। इस क़िस्म के सेंकड़ों मो'जिज़ात में से मुन्दरिजे ज़ैल चन्द मो'जिज़ात आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ाना तसर्रुफ़ात की आयाते बय्यिनात बन कर अह़ादीस की किताबों में इस त़रह़ चमक रहे हैं जिस त़रह़ आस्मान पर अंधेरी रातों में सितारे चमकते और जगमगाते रहते हैं।

उम्मे सुलैम की रोटियां

एक दिन ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपने घर में आए और अपनी बीवी ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कहा कि क्या तुम्हारे पास खाने की कोई चीज़ है? मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم की कमज़ोर आवाज़ से येह मह़सूस किया कि आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم भूके हैं। उम्मे

सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जव की चन्द रोटियां दुपट्टे में लपेट कर ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ आप की ख़िदमत में भेज दीं। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब बारगाहे नुबुव्वत में पहुंचे तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदे नबवी में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मज्मअ़ में तशरीफ़ फ़रमा थे। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा कि क्या अबू त़ल्ह़ा ने तुम्हारे हाथ खाना भेजा है? उन्हों ने कहा कि "जी हां" येह सुन कर आप अपने अस्ह़ाब के साथ उठे और ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मकान पर तशरीफ़ लाए। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दौड़ कर ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस बात की ख़बर दी, उन्हों ने बीबी उम्मे सुलैम से कहा कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक जमाअ़त के साथ हमारे घर पर तशरीफ़ ला रहे हैं। ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मकान से निकल कर निहायत ही गर्मजोशी के साथ आप का इस्तिक़्बाल किया आप ने तशरीफ़ ला कर ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया कि जो कुछ तुम्हारे पास हो लाओ। उन्हों ने वोही चन्द रोटियां पेश कर दीं जिन को ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ बारगाहे रिसालत में भेजा था। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से उन रोटियों का चूरा बनाया गया और ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस चूरे पर बत़ौरे सालन के घी डाल दिया, उन चन्द रोटियों में आप के मो'जिज़ाना तसर्रुफ़ात से इस क़दर बरकत हुई कि आप दस दस आदमियों को मकान के अन्दर बुला बुला कर खिलाते रहे और वोह लोग ख़ूब शिकम सैर हो कर खाते रहे और जाते रहे यहां तक कि सत्तर या अस्सी आदमियों ने ख़ूब शिकम सैर हो कर खा लिया।[1] (بخاری جلد ۱ ص ۵۰۵ علامات النبوۃ و بخاری جلد ۲ ص ۹۸۹)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، الحدیث: ۳۵۷۸، ج ۲، ص ٤٩٤

ह़ज़रते जाबिर की खजूरें

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के वालिद यहूदियों के क़र्ज़दार थे और जंगे उहुद में शहीद हो गए, ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मेरे वालिद ने अपने ऊपर क़र्ज़ छोड़ कर वफ़ात पाई है और खजूरों के सिवा मेरे पास क़र्ज़ अदा करने का कोई सामान नहीं है, सिर्फ़ खजूरों की पैदावार से कई बरस तक येह क़र्ज़ अदा नहीं हो सकता आप मेरे बाग़ में तशरीफ़ ले चलें ताकि आप के अदब से यहूदी अपना क़र्ज़ वुसूल करने में मुझ पर सख़्ती न करें। चुनान्चे आप बाग़ में तशरीफ़ लाए और खजूरों का जो ढेर लगा हुवा था उस के गिर्द चक्कर लगा कर दुआ़ फ़रमाई और खुद खजूरों के ढेर पर बैठ गए। आप के मो'जिज़ाना तसर्रुफ़ और दुआ़ की तासीर से उन खजूरों में इस क़दर बरकत हुई कि तमाम क़र्ज़ अदा हो गया और जिस क़दर खजूरें क़र्ज़दारों को दी गईं उतनी ही बच रहीं।[1]

(بخاری ج۲ص۵۰۵علامات النبوۃ)

ह़ज़रते अबू हुरैरा की थैली

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का बयान है कि मैं हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में कुछ खजूरें ले कर ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! इन खजूरों में बरकत की दुआ़ फ़रमा दीजिये। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन खजूरों को इकठ्ठा कर के दुआ़ए बरकत फ़रमा दी और इरशाद फ़रमाया कि तुम इन को अपने तोशादान में रख लो और तुम जब चाहो हाथ डाल कर इस में से निकालते रहो लेकिन कभी तोशादान झाड़ कर बिल्कुल ख़ाली न कर देना। चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तीस बरस

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب المناقب،باب علامات النبوۃ فی الاسلام ، الحدیث: ۳۵۸۰، ج۲، ص ۴۹۵

तक उन खजूरों को खाते और खिलाते रहे बल्कि कई मन उस में से ख़ैरात भी कर चुके मगर वोह ख़त्म न हुई।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमेशा उस थेली को अपनी कमर से बांधे रहते थे यहां तक कि हज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के दिन वोह थेली उन की कमर से कट कर कहीं गिर गई।[1]

(مشکوٰۃ جلد۲ص۵۴۲معجزات و ترمذی جلد۲ص۲۲۴مناقب ابوہریرہ)

इस थेली के ज़ाएअ़ होने का हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को उ़म्र भर सदमा और अफ़्सोस रहा। चुनान्चे वोह हज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के दिन निहायत रिक़्क़त अंगेज़ और दर्द भरे लहजे में येह शे'र पढ़ते हुए चलते फिरते थे कि

لِلنَّاسِ هَمٌّ وَلِي هَمَّانِ بَيْنَهُمُ
هَمُّ الْجِرَابِ وَهَمُّ الشَّيْخِ عُثْمَانَا (2)

(مرقاۃ شرح مشکوٰۃ)

लोगों के लिये एक ग़म है और मेरे लिये दो ग़म हैं एक थेली का ग़म दूसरे शैख़ उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ग़म।

उम्मे मालिक का कुप्पा

हज़रते उम्मे मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास एक कुप्पा था जिस में वोह हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास हदिय्ये में घी भेजा करती थीं उस कुप्पे में इतनी अ़ज़ीम बरकतों का ज़ुहूर हुवा कि जब भी उम्मे मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बेटे सालन मांगते थे और घर में कोई सालन नहीं होता था तो वोह उस कुप्पे में से घी निकाल कर अपने बेटों को

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی هريرة رضی الله عنه، الحديث:٣٨٦٥، ج٥، ص٤٥٤

2 ......مرقاۃ المفاتيح شرح مشکاۃ المصابيح، کتاب الفضائل، تحت الحديث:٥٩٣٣، ج١٠، ص٢٧٠

दे दिया करती थीं। एक मुद्दते दराज़ तक वोह हमेशा उस कुप्पे में से घी निकाल निकाल कर अपने घर का सालन बनाया करती थीं। एक दिन उन्हों ने उस कुप्पे को निचोड़ कर बिल्कुल ही ख़ाली कर दिया जब बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुईं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा कि क्या तुम ने उस कुप्पे को निचोड़ डाला? उन्हों ने कहा कि "जी हां" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम उस कुप्पे को न निचोड़तीं और यूं ही छोड़ देतीं तो हमेशा उस में से घी निकलता ही रहता।[1] इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है। (مشکوٰۃ جلد۲ص۵۳۷باب المعجزات)

बा बरकत प्याला

हज़रते समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक प्याला भर कर खाना था, हम लोग दस दस आदमी बारी बारी सुब्ह से शाम तक उस प्याले में से लगातार खाते रहे। लोगों ने पूछा कि एक ही प्याला तो खाना था तो वोह कहां से बढ़ता रहता था? (कि लोग इस क़दर ज़ियादा ता'दाद में दिन भर उस को खाते रहे) तो उन्हों ने आस्मान की त़रफ़ इशारा कर के कहा कि "वहां से।"[2]

(ترمذی جلد۲ص۲۰۳باب ماجاء فی آیات نبوۃ النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

थोड़ा तोशा अ़ज़ीम बरकत

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चौदह सो अश्ख़ास की जमाअ़त के साथ एक सफ़र में थे, सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने भूक से बेताब हो कर सुवारी की ऊंटनियों को ज़ब्ह़ करने का इरादा किया तो

---

1 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ وبدء الخلق، باب فی المعجزات، الحدیث:٥٩٠٧، ج٢، ص٣٨٩

2 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب ماجاء فی آیات اثبات نبوۃ...الخ، الحدیث:٣٦٤٥، ج٥، ص٣٥٨

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमा दिया और हुक्म दिया कि तमाम लश्कर वाले अपना अपना तोशा एक दस्तर ख़्वान पर जम्अ़ करें। चुनान्चे जिस के पास जो कुछ था ला कर रख दिया तो तमाम सामान इतनी जगह में आ गया जिस पर एक बकरी बैठ सकती थी लेकिन चौदह सो आदमियों ने उस में से शिकम सैर हो कर खा भी लिया और अपने अपने तोशादानों को भी भर लिया। खाने के बा'द आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पानी मांगा, एक सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक बरतन में थोड़ा सा पानी लाए, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को प्याले में उंडेल दिया और अपना दस्ते मुबारक उस में डाल दिया तो चौदह सो आदमियों ने उस से वुज़ू किया।[1]

(مسلم جلد۲ص۸۱باب استحباب خلط الازواد)

बरकत वाली कलेजी

एक सफ़र में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक सो तीस सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم हमराह थे, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों से दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या तुम लोगों के पास खाने का सामान है ? येह सुन कर एक शख़्स एक साअ़ आटा लाया और वोह गूंधा गया फिर एक बहुत तन्दुरुस्त लम्बा चौड़ा काफ़िर बकरियां हांकता हुवा आप के पास आया। आप ने उस से एक बकरी ख़रीदी और ज़ब्ह़ करने के बा'द उस की कलेजी को भूनने का हुक्म दिया फिर एक सो तीस आदमियों में से हर एक का उस कलेजी में से एक एक बोटी काट कर ह़िस्सा लगाया, अगर वोह ह़ाज़िर था तो उस को अ़त़ा फ़रमा दिया और अगर वोह ग़ाइब था तो उस का ह़िस्सा छुपा कर रख दिया, जब गोश्त तय्यार हुवा तो उस में से दो प्याला भर कर अलग रख दिया फिर बाक़ी गोश्त और एक साअ़ आटे की रोटी से एक सो तीस आदमियों की जमाअ़त शिकम सैर खा कर आसूदा हो गई और दो प्याला भर कर गोश्त फ़ाज़िल

[1] ......صحیح مسلم،کتاب اللقطۃ،باب استحباب خلط الازواد...الخ،الحدیث:۱۷۲۹،ص۹۵۲

बच गया जिस को ऊंट पर लाद लिया गया।[1]

(بخاری جلد۲ص ۸۱۱ باب من اکل حتی شبع)

ह़ज़रते अबू हुरैरा और एक प्याला दूध

एक दिन ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भूक से निढाल हो कर रास्ते में बैठ गए, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सामने से गुज़रे तो उन से इन्हों ने क़ुरआन की एक आयत को दरयाफ़्त किया मक़्सद येह था कि शायद वोह मुझे अपने घर ले जा कर कुछ खिलाएं मगर उन्हों ने रास्ता चलते हुए आयत बता दी और चले गए। फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस रास्ते से निकले उन से भी इन्हों ने एक आयत का मत़लब पूछा ग़रज़ वोही थी कि वोह कुछ खिला देंगे मगर वोह भी आयत का मत़लब बता कर चल दिये। इस के बा'द **हुज़ूरे** अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरे को देख कर अपनी ख़ुदादाद बसीरत से जान लिया कि "येह भूके हैं" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें पुकारा, उन्हों ने जवाब दिया और साथ हो लिये जब आप काशानए नुबुव्वत में पहुंचे तो घर में दूध से भरा हुवा एक प्याला देखा। घर वालों ने आप को उस शख़्स का नाम बतलाया जिस ने दूध का येह हदिय्या भेजा था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया कि जाओ और तमाम अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को बुला लाओ। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने दिल में सोचने लगे कि एक ही प्याला तो दूध है इस दूध का सब से ज़ियादा ह़क़दार तो मैं था अगर मुझे मिल जाता तो मुझ को भूक की तक्लीफ़ से कुछ राह़त मिल जाती अब देखिये अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा के आ जाने के बा'द भला इस में से कुछ मुझे मिलता है या नहीं ? इन के दिल में येही ख़यालात चक्कर

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاطعمة، باب من اکل حتی شبع، الحدیث:۵۳۸۲، ج۳، ص ۵۲۳

लगा रहे थे मगर अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم की इताअ़त से कोई चारा न था, लिहाज़ा वोह अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को बुला कर ले गए येह सब लोग अपनी अपनी जगह एक क़ित़ार में बैठ गए फिर आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया कि "तुम ख़ुद ही इन सब लोगों को येह दूध पिलाओ।" चुनान्चे उन्हों ने सब को पिलाना शुरूअ़ कर दिया जब सब के सब शिकम सैर पी कर सैराब हो गए तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते रह़मत में येह प्याला ले लिया और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की त़रफ़ देख कर मुस्कुराए और फ़रमाया कि अब सिर्फ़ हम और तुम बाक़ी रह गए हैं आओ बैठो और तुम पीना शुरूअ़ कर दो। उन्हों ने पेट भर दूध पी कर प्याला रखना चाहा तो आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "और पियो" चुनान्चे उन्हों ने फिर पिया लेकिन आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बार बार फ़रमाते रहे कि "और पियो और पियो" यहां तक कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मुझे उस ज़ात की क़सम है जिस ने आप को ह़क़ के साथ भेजा है कि अब मेरे पेट में बिल्कुल ही गुन्जाइश नहीं रही। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने प्याला अपने हाथ में ले लिया और जितना दूध बच गया था आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बिस्मिल्लाह पढ़ कर पी गए।[1] (بخاری جلد۲ص ۹۵۵ تا ص ۹۵۶ باب کیف کان عیش النبی)

येही वोह मो'जिज़ा है जिस की त़रफ़ इशारा करते हुए आ'ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेल्वी عَلَیْہِ رَحْمَۃ ने फ़रमाया कि

क्यूं जनाबे बू हुरैरा कैसा था वोह जामे शीर   जिस से सत्तर साह़िबों का दूध से मुंह फिर गया

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی ...الخ، الحدیث:٦٤٥٢، ج ٤، ص ٢٣٤

शिफ़ाए अमराज़

आशोबे चश्म से शिफ़ा

हम ग़ज़्वए ख़ैबर के बयान में मुफ़स्सल तौर पर येह मो'जिज़ा तह़रीर कर चुके हैं कि जब आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़त्ह़ का झन्डा अ़ता फ़रमाने के लिये ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को त़लब फ़रमाया तो मा'लूम हुवा कि उन की आंखों में आशोब है और मुस्नदे अह़मद बिन ह़म्बल की रिवायत से पता चलता है कि येह आशोबे चश्म इतना सख़्त था कि ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन का हाथ पकड़ कर लाए थे। आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आंखों में अपना लुआ़बे दहन लगा दिया और दुआ़ फ़रमा दी तो वोह फ़ौरन ही शिफ़ायाब हो गए और ऐसा मा'लूम होता था कि उन की आंखों में कभी दर्द था ही नहीं और वोह उसी वक़्त झन्डा ले कर रवाना हो गए और जोशे जिहाद में भरे हुए इनतिहाई जांबाज़ी के साथ जंग की और ख़ैबर का क़लआ़ उन के दस्ते ह़क़ परस्त से उसी दिन फ़त्ह़ हो गया।[1] (بخاری جلد۱ص۵۲۵مناقب علی بن ابی طالب)

सांप का ज़ह्र उतर गया

वाक़िअ़ए हिजरत में हम तफ़्सील के साथ लिख चुके हैं कि जब ग़ारे सौर में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पाउं में सांप ने काट लिया और दर्दो कर्ब की शिद्दत से बेताब हो कर रो पड़े तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के ज़ख़्म पर अपना लुआ़बे दहन लगा दिया जिस से फ़ौरन ही दर्द जाता रहा और सांप का ज़ह्र उतर गया।[2] (زرقانی علی المواہب جلد۱ص۳۳۹)

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب فضائل اصحاب النبی ، باب مناقب علی بن ابی طالب...الخ ، الحدیث: ۳۷۰۱، ج۲،ص ۵۳۴
والمسند للامام احمد بن حنبل،مسند المدنیین،حدیث ابن الاکوع،الحدیث:۱۶۵۳۸، ج۵، ص ۵۵۶۔۵۵۷

2 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی ، باب ھجرۃ المصطفی ...الخ، ج۲، ص ۱۲۱

टूटी हुई टांग दुरुस्त हो गई

बुख़ारी शरीफ़ की एक त़वील ह़दीस में मज़्कूर है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ जब अबू राफ़ेअ़ यहूदी को क़त्ल कर के वापस आने लगे तो उस के कोठे के ज़ीने से गिर पड़े जिस से उन की टांग टूट गई और उन के साथी उन को उठा कर बारगाहे नुबुव्वत में लाए, **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की ज़बान से अबू राफ़ेअ़ के क़त्ल का सारा वाक़िआ़ सुना। फिर उन की टूटी हुई टांग पर अपना दस्ते मुबारक फैर दिया तो वोह फ़ौरन ही अच्छी हो गई और येह मा'लूम होने लगा कि उन की टांग में कभी कोई चोट लगी ही न थी।[1]

(بخاری جلد۲ص۵۷۷ باب قتل ابی رافع)

तलवार का ज़ख़्म अच्छा हो गया

ग़ज़्वए ख़ैबर में ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की टांग में तलवार का ज़ख़्म लग गया, वोह फ़ौरन ही बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हो गए आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के ज़ख़्म पर तीन मरतबा दम कर दिया फिर उन्हें दर्द की कोई शिकायत मह़सूस नहीं हुई सिर्फ़ ज़ख़्म का निशान रह गया था।[2] (بخاری جلد۲ص۶۰۵ غزوۂ خیبر)

अन्धा, बीना हो गया

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में एक अन्धा ह़ाज़िर हुवा और अपनी तकालीफ़ बयान करने लगा, आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो मैं दुआ़

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب قتل ابی رافع عبداللّٰہ بن ابی الحقیق، الحدیث: ۴۰۳۹، ج۳، ص ۳۱

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر، الحدیث: ۴۲۰۶، ج۳، ص ۸۳

कर दूं और अगर चाहो तो सब्र करो येही तुम्हारे लिये बेहतर है। उस ने दरख़्वास्त की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मेरी बीनाई के लिये दुआ़ फ़रमा दीजिये। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के येह दुआ़ मांगो कि "ख़ुदा वन्दा ! अपने रह़मते वाले पैग़म्बर के वसीले से मेरी ह़ाजत पूरी कर दे" तिरमिज़ी और ह़ाकिम की रिवायत में इतना ही मज़्मून है मगर इब्ने ह़म्बल और ह़ाकिम की दूसरी रिवायत में इस के बा'द येह भी है कि उस नाबीना ने ऐसा किया तो फ़ौरन ही अच्छा हो गया और उस की आंखों पर भरपूर रौशनी आ गई।[1]

(مسند ابن حنبل جلد۴ص۱۳۸ومستدرک جلد۱ص۵۲۶)

गूंगा बोलने लगा

हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में क़बीलए "ख़सअ़म" की एक औ़रत अपने बच्चे को ले कर आई और कहने लगी कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! येह मेरा इक्लौता बेटा बोलता नहीं है। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पानी त़लब फ़रमाया और उस में हाथ धो कर कुल्ली फ़रमा दी और इरशाद फ़रमाया कि येह पानी इस बच्चे को पिला दो और कुछ इस के ऊपर छिड़क दो। दूसरे साल वोह औ़रत आई तो उस ने लोगों से बयान किया कि उस का लड़का अच्छा हो गया और बोलने लगा।[2] (ابن ماجہ ص۲۶باب النشرہ)

ह़ज़रते क़तादा की आंख

जंगे उहुद में ह़ज़रते क़तादा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आंख में एक तीर लगा जिस से उन की आंख उन के रुख़्सार पर बह कर आ गई, येह दौड़ कर हुज़ूर रसूले अकरम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل ، حدیث عثمان بن حنیف ،الحدیث: ۱۷۲۴۰،۱۷۲۴۱، ج۶، ص ۱۰۶،۱۰۷

2 ......سنن ابن ماجه ، کتاب الطب ، باب النشرة ،الحدیث: ۳۵۳۲، ج۴، ص ۱۲۹

में हाज़िर हो गए, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन ही अपने दस्ते मुबारक से उन की बही हुई आंख को आंख के ह़ल्के़ में रख कर अपना मुक़द्दस हाथ उस पर फैर दिया तो उसी वक़्त उन की आंख अच्छी हो गई और येह आंख उन की दूसरी आंख से ज़ियादा ख़ूब सूरत और रौशन रही।

एक रिवायत में येह भी आया है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम चाहो तो तुम्हारी आंख को तुम्हारे ह़ल्क़ए चश्म में रख दूं और वोह अच्छी हो जाए और अगर तुम चाहो तो सब्र करो और तुम्हें इस के बदले पर जन्नत मिलेगी। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! जन्नत बिला शुबा बहुत ही बड़ी ने'मत है मगर मुझे काना होना बहुत बुरा मा'लूम होता है इस लिये आप मेरी आंख अच्छी कर दीजिये और मेरे लिये जन्नत की दुआ़ भी फ़रमा दीजिये। **हुज़ूर** रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने इस जां निसार पर प्यार आ गया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आंख को ह़ल्क़ए चश्म में रख कर हाथ फैर दिया तो उन की आंख भी अच्छी हो गई और उन के लिये जन्नती होने की दुआ़ भी फ़रमा दी और येह दोनों ने'मतों से सरफ़राज़ हो गए।[1] (الکلام المبین ص ۷۸ بحوالہ بیہقی)

फ़ाएदा

येह मो'जिज़ा बहुत ही मश्हूर है और ह़ज़रते क़तादा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की औलाद में हमेशा इस बात का तफ़ाख़ुर रहा कि इन के जद्दे आ'ला की आंख रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक की बरकत से अच्छी हो गई। चुनान्चे ह़ज़रते क़तादा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पोते ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब ख़लीफ़ए आ़दिल ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उमवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरबारे ख़िलाफ़त में पहुंचे

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ احد، ج۲، ص ۴۳۲

तो उन्हों ने अपना तआ़रुफ़ कराते हुए अपना येह क़त़्आ़ पढ़ा कि

اَنَا ابْنُ الَّذِیْ سَالَتْ عَلَی الْخَدِّ عَیْنُهٗ　　فَرُدَّتْ بِکَفِّ الْمُصْطَفٰی اَحْسَنَ الرَّدِّ

فَعَادَتْ کَمَا کَانَتْ لِاَوَّلِ اَمْرِهَا　　فَیَا حُسْنَ مَا عَیْنٍ وَّ یَا حُسْنَ مَا رَدِّ

या'नी मैं उस शख़्स का बेटा हूं कि जिस की आंख उस के रुख़्सार पर बह आई थी तो ह़ज़रते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हथेली से वोह अपनी जगह पर क्या ही अच्छी त़रह़ से रख दी गई तो फिर वोह जैसी पहले थी वैसी ही हो गई तो क्या ही अच्छी वोह आंख थी और क्या ही अच्छा **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का उस आंख को उस की जगह रखना था।[1] (الکلام المبین ص ۸۹)

कै़ में काला पिल्ला गिरा

एक औ़रत अपने बेटे को ले कर **हुज़ूर** रिसालत मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आई और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मेरे इस बच्चे पर सुब्ह़ व शाम जुनून का दौरा पड़ता है। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस बच्चे के सीने पर अपना दस्ते रह़मत फैर दिया और दुआ़ दी तो उस बच्चे को एक ज़ोरदार कै़ हुई और एक काले रंग का (कुत्ते का) पिल्ला कै़ में गिरा जो दौड़ता फिर रहा था और बच्चा शिफ़ायाब हो गया।[2] (مشکوٰۃ جلد۲ص۵۴۱ معجزات)

जुनून अच्छा हो गया

ह़ज़रते या'ला बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि मैं ने

---

1 ……شرح الزرقانی علی المواهب ، باب غزوة احد ، ج۲، ص ۴۳۳
و الاستیعاب فی معرفة الاصحاب ،حرف القاف، قتادة بن النعمان ، ج۳، ص ۳۳۹

2 ……مشكاة المصابيح ،كتاب احوال القيامة و بدء الخلق،باب في المعجزات،الحديث:۵۹۲۳، ج۲، ص ۳۹۴

एक सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तीन मो'जिज़ात देखे । पहला मो'जिज़ा येह कि एक ऊंट को देखा कि उस ने बिलबिला कर अपनी गरदन आप के सामने डाल दी । आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस ऊंट के मालिक को बुलाया और उस से फ़रमाया कि इस ऊंट ने काम की ज़ियादती और ख़ूराक की कमी का मुझ से शिक्वा किया है लिहाज़ा तुम इस के साथ अच्छा सुलूक करते रहो ।

दूसरा मो'जिज़ा येह कि एक मन्ज़िल में आप सो रहे थे तो मैं ने देखा कि एक दरख़्त चल कर आया और आप को ढांप लिया फिर लौट कर अपनी जगह पर चला गया । जब आप बेदार हुए और मैं ने आप से इस का ज़िक्र किया तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस दरख़्त ने अपने रब से इजाज़त तलब की थी कि वोह मुझे सलाम करे तो ख़ुदा ने इस को इजाज़त दे दी और वोह मेरे सलाम के लिये आया था ।

तीसरा मो'जिज़ा येह कि एक औरत अपने बच्चे को ले कर आई जो जुनून का मरीज़ था तो नबी صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस बच्चे के नथने को पकड़ कर फ़रमाया कि "निकल जा क्यूं कि मैं मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हूं" फिर हम वहां से चल पड़े और जब वापसी में हम उस जगह पहुंचे और आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस औरत से उस के बच्चे के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने कहा कि उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा है कि आप के तशरीफ़ ले जाने के बा'द से इस बच्चे को कोई तक्लीफ़ होते हुए हम ने नहीं देखा ।[1] (مشکوٰۃ جلد۲ص۵۴۰ معجزات)

जला हुवा बच्चा अच्छा हो गया

मुहम्मद बिन हातिब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ एक सहाबी हैं येह बचपन

---

1 ......مشكاة المصابيح، كتاب احوال القيامة وبدء الخلق، باب في المعجزات، الحديث:٥٩٢٢، ج٢، ص٣٩٣

में अपनी मां की गोद से आग में गिर पड़े और कुछ जल गए, इन की मां इन को ले कर ख़िदमते अक़्दस में आईं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना लुआ़बे दहन इन पर मल कर दुआ़ फ़रमा दी। मुह़म्मद बिन ह़ातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मां कहती थीं कि मैं बच्चे को ले कर वहां से उठने भी नहीं पाई थी कि बच्चे का ज़ख़्म बिल्कुल ही अच्छा हो गया।[1]

(مسند ابن حنبل جلد۴ص ۲۵۹ وخصائص کبریٰ جلد۲ص ۲۹)

मरज़े निस्यान दूर हो गया

तग़य्युरे अल्फ़ाज़ और चन्द जुम्लों की कमी बेशी के साथ बुख़ारी शरीफ़ की मुतअ़द्दद रिवायतों में इस मो'जिज़े का ज़िक्र है कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने ह़ाफ़िज़े की कमज़ोरी की शिकायत की तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया कि अपनी चादर फैलाओ। उन्हों ने फैलाया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक उस चादर पर डाला फिर फ़रमाया कि अब इस को समेट लो। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने ऐसा ही किया इस के बा'द से फिर मैं कोई बात नहीं भूला।[2] (بخاری شریف جلد۱ص ۲۲ باب حفظ العلم)

मक़्बूलिय्यते दुआ़

येह हम पहले तह़रीर कर चुके हैं कि ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام की दुआ़ओं से बिल्कुल ना गहां आ़दते जारिया के ख़िलाफ़ किसी ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ बात का ज़ाहिर हो जाना इस का भी मो'जिज़ात ही में शुमार है। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام की दुआ़ओं से बड़ी बड़ी मुश्किलात को ह़ल फ़रमा देता है और क़िस्म क़िस्म की बलाएं टल जाती हैं और बहुत सी ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ चीजें ज़ुहूर में आ जाती हैं।

---

1 ......الخصائص الکبری للسیوطی،باب ایاته فی ابراء المرضی...الخ، ج۲،ص ۱۱۵
و المسند للامام احمد بن حنبل،مسند المکیین،حدیث محمد بن حاطب ...الخ،الحدیث:
۱۵۴۵۳،ج۵،ص ۲۶۵

2 ......صحیح البخاری ، کتاب العلم ، باب حفظ العلم،الحدیث: ۱۱۹،ج۱، ص ۶۲

चुनान्चे हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में से आप की दुआ़ओं की मक़्बूलिय्यत भी है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब भी मुश्किलात या त़लबे ह़ाजात के वक़्त ख़ुदा की इमदादे ग़ैबी का सहारा ढूंढते हुए दुआ़एं मांगीं तो हर मौक़अ़ पर ह़क़ तआ़ला ने आप की दुआ़ओं के लिये मक़्बूलिय्यत का दरवाज़ा खोल दिया और आप की दुआ़ओं से ऐसी ऐसी ख़िलाफ़े उम्मीद और ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ चीज़ें आ़लमे वुजूद में आ गईं कि जिन को मो'जिज़ात के सिवा कुछ नहीं कहा जा सकता, उन में से चन्द मो'जिज़ात का तज़्किरा ह़स्बे ज़ैल है।

क़ुरैश पर क़ह़त़ का अ़ज़ाब

जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهُم पर बे पनाह मज़ालिम ढाने लगे जो ज़ब्त़ व बरदाश्त से बाहर थे तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन शरीरों की सरकशी का इलाज करने के लिये उन लोगों के ह़क़ में क़ह़त़ की दुआ़ फ़रमा दी। चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों पर क़ह़त़ का ऐसा अ़ज़ाबे शदीद भेजा कि अहले मक्का सख़्त मुसीबत में मुब्तला हो गए यहां तक कि भूक से बेताब हो कर मुर्दार जानवरों की हड्डियां और सूखे चमड़े उबाल उबाल कर खाने लगे। बिल आख़िर इस के सिवा कोई चारा नज़र न आया कि रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे रह़मत का दरवाज़ा खट खटाएं और उन के हुज़ूर में अपनी फ़रयाद पेश करें। चुनान्चे अबू सुफ़्यान ब ह़ालते कुफ़्र चन्द रुअसाए क़ुरैश को साथ ले कर आप के आस्तानए रह़मत पर ह़ाज़िर हुए और गिड़गिड़ा कर कहने लगे कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) तुम्हारी क़ौम बरबाद हो गई, ख़ुदा से दुआ़ करो कि येह क़ह़त़ का अ़ज़ाब टल जाए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को उन लोगों की बे क़रारी और गिर्या व ज़ारी पर रह़्म आ गया। चुनान्चे आप ने दुआ़ के लिये हाथ उठाए फ़ौरन ही आप की दुआ़ मक़्बूल हुई और

इस क़दर ज़ोरदार बारिश हुई कि सारा अ़रब सैराब हो गया और अहले मक्का को क़हत़ के अ़ज़ाब से नजात मिली ।[1]

(بخاری جلد۱ص ۱۳۷ابواب الاستسقاء وبخاری جلد۲ص ۷۱۴تفسیر سورۂ دخان)

सरदाराने क़ुरैश की हलाकत

एक मरतबा **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सेह़ने ह़रम में नमाज़ पढ़ रहे थे कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के चन्द सरकश शरीरों ने ब ह़ालते नमाज़ आप की मुक़द्दस गरदन पर एक ऊंट की ओझड़ी ला कर डाल दी और ख़ूब ज़ोर ज़ोर से हंसने लगे और मारे हंसी के एक दूसरे पर गिरने लगे। ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने आ कर उस ओझड़ी को आप की पुश्ते अत़्हर से उठाया। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सज्दे से सर उठाया तो उन शरीरों का नाम ले ले कर नाम बनाम येह दुआ़ मांगी कि या **अल्लाह** ! तू इन सभों को अपनी गरिफ़्त में पकड़ ले। चुनान्चे येह सब के सब जंगे बद्र में इनतिहाई ज़िल्लत के साथ क़त्ल हो कर हलाक हो गए।[2] (بخاری جلد۲ص ۵۶۵غزوہ بدر)

मदीने की आबो हवा अच्छी हो गई

पहले मदीने की आबो हवा अच्छी नहीं थी, वहां क़िस्म क़िस्म की वबाओं का असर था। चुनान्चे हिजरत के बा'द अकसर मुहाजिरीन बीमार पड़ गए और बीमारी की ह़ालत में अपने वत़न मक्का को याद कर के पुरदर्द लहजे में अश्आ़र पढ़ा करते थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों का येह ह़ाल देख कर येह दुआ़ फ़रमाई कि "**इलाही** ! मदीने को भी हमारे लिये वैसा ही मह़बूब कर दे जैसा कि मक्का मह़बूब है बल्कि

---

1 ......صحيح البخارى، كتاب الاستسقاء، باب دعاء النبى صلى اللّٰه عليه و سلم...الخ الحديث: ١٠٠٧، ج١، ص٣٤٥ و كتاب التفسير، باب ثم تولوا عنه...الخ، الحديث: ٤٨٢٤، ج٣، ص٣٢٣

2 ......صحيح البخارى، كتاب الوضوء، باب اذا القى على ظهر المصلى...الخ، الحديث: ٢٤٠، ج١، ص١٠٢

इस से भी ज़ियादा महबूब बना दे। इलाही ! हमारे "साअ" और "मुद" में बरकत दे और मदीने को हमारे लिये सिह्हत बख़्श बना दे और यहां के बुख़ार को "जुह़फ़ा" में मुन्तक़िल कर दे।" आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ मक़्बूल हुई और मुहाजिरीन को शहरे मदीना से ऐसी उल्फ़त और वालिहाना मह़ब्बत हो गई कि वोही ह़ज़रते अबू बक्र व ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا जो चन्द रोज़ पहले मदीने की बीमारियों से घबरा उठे थे और अपने वत़न मक्का की याद में ख़ून रुलाने वाले अश्आ़र गाया करते थे, अब मदीने के ऐसे आ़शिक़ बन गए कि फिर कभी भूल कर भी मक्का की सुकूनत का नाम नहीं लिया और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने ख़्वाब में येह दिखला दिया कि मदीने की वबाएं मदीने से दफ़्अ़ हो गईं और मदीने की आबो हवा सिह्हत बख़्श हो गई।[1]

(بخاری جلد۱ص۵۵۸باب مقدم النبی و بخاری جلد۲ص۱۰۴۲باب المرأۃ السوداء)

उम्मे ह़िराम के लिये दुआ़ए शहादत

एक रोज़ **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते बीबी उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهَا के मकान में खाने के बा'द क़ैलूला फ़रमा रहे थे कि ना गहां हंसते हुए नींद से बेदार हुए, ह़ज़रते बीबी उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهَا ने हंसी की वजह दरयाफ़्त की तो इरशाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में मुजाहिदीन का एक गुरौह मेरे सामने पेश किया गया जो जिहाद की ग़रज़ से दरिया में कश्तियों पर इस त़रह़ बैठा हुवा सफ़र करेगा जिस त़रह़ तख़्त पर बादशाह बैठे रहा करते हैं। येह सुन कर उन्हों ने दरख़्वास्त की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! दुआ़ फ़रमा दीजिये कि मैं भी उन मुजाहिदीन के गुरौह में शामिल रहूं। आप ने दुआ़ फ़रमा दी। चुनान्चे ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ के ज़माने में जब बह़री जंग का

[1] صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار،باب مقدم النبی...الخ،الحدیث:۳۹۲۶،ج۲،ص ۶۰۱

सिल्सिला शुरूअ़ हुवा तो ह़ज़रते बीबी उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا भी मुजाहिदीन की इस जमाअ़त के साथ कश्ती पर सुवार हो कर रवाना हुईं और दरिया से निकल कर जब ख़ुश्की पर आईं तो सुवारी से गिर कर शहादत का शरफ़ ह़ासिल किया।[1] (بخاری جلد۲ص۱۰۳۶باب الرویا بالنہار)

सत्तर बरस का जवान

ह़ज़रते अबू क़तादा सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़क़ में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह दुआ़ फ़रमा दी कि. اَفْلَحَ وَجْھُكَ اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَهٗ فِیْ شَعْرِهٖ وَبَشَرِهٖ या'नी फ़लाह़ वाला हो जाए तेरा चेहरा, या अल्लाह ! इस के बाल और इस की खाल में बरकत दे।

ह़ज़रते अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सत्तर बरस की उ़म्र पा कर वफ़ात पाई मगर इन का एक बाल भी सफ़ेद नहीं हुवा था न बदन में झुरियां पड़ी थीं, चेहरे पर जवानी की ऐसी रौनक़ थी कि गोया अभी पन्दरह बरस के जवान हैं।[2] (الکلام المبین ص۶۸بحوالہ دلائل النبوۃ بیہقی)

बरकते अवलाद की दुआ़

ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बीवी ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बड़ी होश मन्द और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निहायत ही जां निसार थीं इन का बच्चा बीमार हो गया और ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घर से बाहर ही थे कि बच्चे का इनतिक़ाल हो गया। ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने बच्चे को अलग मकान में लिटा दिया और जब ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मकान में दाख़िल हुए और बीवी से पूछा कि बच्चा कैसा है? बीवी ने जवाब दिया कि उस का सांस ठहर गया है और मुझे उम्मीद है कि वोह आराम पा गया है। ह़ज़रते

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب الجهاد و السير، باب الدعاء بالجهاد والشهادة...الخ، الحديث: ۲۷۸۸، ۲۷۸۹، ج۲، ص۲۵۰

2 ......الشفا بتعريف حقوق المصطفى، الجزء الاول، ص۳۲۷

अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह समझा कि वोह अच्छा है। चुनान्चे दोनों मियां बीवी एक ही बिस्तर पर सोए लेकिन सुब्ह़ को जब अबू त़ल्ह़ा ग़ुस्ल कर के मस्जिदे नबवी में नमाज़े फ़ज्र के लिये जाने लगे तो बीवी ने बच्चे की मौत का ह़ाल सुना दिया। ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रात का सारा माजरा बारगाहे नुबुव्वत में अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि ख़ुदा वन्दे तआ़ला तुम्हारी आज की रात में बरकत अ़त़ा फ़रमाएगा। चुनान्चे उस रात की बरकत मुक़र्ररा महीनों के बा'द ज़ाहिर हुई कि ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पैदा हुए और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को अपनी गोद में बिठा कर और अ़ज्वा खजूर को चबा कर उन के मुंह में डाला और उन के चेहरे पर अपना दस्ते रह़मत फिरा दिया और अ़ब्दुल्लाह नाम रखा।

एक अन्सारी ह़ज़रते इ़बाया बिन रिफ़ाआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि दुआ़ए नबवी की बरकत का येह असर हुवा कि मैं ने अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नव अवलादों को देखा जो सब के सब क़ुरआने मजीद के क़ारी थे।(1)

(مسلم جلد۲ص۲۹۲باب فضائل اُم سلیم و بخاری جلد۱ص۱۷۴باب من لم یظہر حزنہ عند المصیبۃ)

ह़ज़रते जरीर के ह़क़ में दुआ़

ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घोड़े की पीठ पर जम कर बैठ नहीं सकते थे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب من لم یظهر حزنه عند المصیبة، الحدیث: ۱۳۰۱، ج۱، ص۴۴۰
وصحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل ابی طلحة الانصاری، الحدیث: ۲۱۴۴، ص۱۳۳۳

उन को "ज़ुल ख़लसा" के बुतख़ाने को तोड़ने के लिये भेजना चाहा तो उन्हों ने येही उ़ज़्र पेश किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं घोड़े पर जम कर बैठ नहीं सकता। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के सीने पर हाथ मारा और येह दुआ़ फ़रमाई कि "या **अल्लाह** ! इस को घोड़े पर जम कर बैठने की कुव्वत अ़ता फ़रमा और इस को हादी व महदी बना" इस दुआ़ के बा'द ह़ज़रते जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घोड़े पर सुवार हुए और क़बीलए अह़मस के एक सो पचास सुवारों का लश्कर ले कर गए और उस बुतख़ाने को तोड़ फोड़ कर जला डाला और मुज़ाह़मत करने वाले कुफ़्फ़ार को भी क़त्ल कर डाला जब वापस आए तो **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिये और क़बीलए अह़मस के ह़क़ में दुआ़ फ़रमाई।[1] (مسلم جلد۲ص ۲۹۷ فضائل جریر)

क़बीलए दौस का इस्लाम

ह़ज़रते तुफ़ैल दौसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने चन्द साथियों के साथ बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! क़बीलए दौस ने इस्लाम की दा'वत क़बूल करने से इन्कार कर दिया, लिहाज़ा आप उस क़बीले की हलाकत के लिये दुआ़ फ़रमा दीजिये। लोगों ने आपस में येह कहना शुरूअ़ कर दिया कि अब आप की दुआ़ए हलाकत से येह क़बीला हलाक हो जाएगा। लेकिन रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीलए दौस के लिये येह रह़मत भरी दुआ़ फ़रमाई कि "इलाही ! तू क़बीलए दौस को हिदायत दे और उन को मेरे पास ला।"

रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की येह दुआ़ क़बूल हुई। चुनान्चे पूरा क़बीला मुसलमान हो कर बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हो गया।[2] (مسلم جلد۲ص ۳۰۷ باب فضائل غفار ودوس وغیرہ)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ،باب من فضائل جریر بن عبد اللّٰہ،الحدیث:۲۴۷۶،ص۱۳۴۵

2 ......صحیح مسلم ، کتاب فضائل الصحابۃ ،باب دعاء النبی بغفار و اسلم ،الحدیث: ۲۵۲۴،ص۱۳۶۷

एक मुतकब्बिर का अन्जाम

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने एक शख़्स बाएं हाथ से खाने लगा, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "दाएं हाथ से खाओ" उस ने ग़ुरूर से कहा कि "मैं दाएं हाथ से नहीं खा सकता।" चूंकि उस मग़रूर ने घमन्ड से ऐसा कहा था इस लिये आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ख़ुदा करे ऐसा ही हो" चुनान्चे इस के बा'द ऐसा ही हुवा कि वोह अपने दाएं हाथ को उठा कर वाक़ेई अपने मुंह तक नहीं ले जा सकता था।[1] (مسلم جلد۲ص۱۷۲باب آداب الطعام)

मुर्दे ज़िन्दा हो गए

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा कर देना येह हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का एक बहुत ही मशहूर मो'जिज़ा है मगर चूंकि **अल्लाह** तआला ने हुज़ूर रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के मो'जिज़ात का जामेअ़ बनाया है इस लिये आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को भी इस मो'जिज़े के साथ सरफ़राज़ फ़रमाया है। चुनान्चे इस क़िस्म के चन्द मो'जिज़ात अहादीस और सीरते नबविय्या की किताबों में मज़कूर हैं।

लड़की क़ब्र से निकल आई

रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को इस्लाम की दा'वत दी तो उस ने कहा कि मैं उस वक़्त तक आप पर ईमान नहीं ला सकता जब तक कि मेरी मुर्दा बच्ची ज़िन्दा न हो जाए। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम मुझे उस की क़ब्र दिखाओ। उस ने अपनी लड़की की क़ब्र दिखा दी। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस लड़की का नाम ले कर पुकारा तो उस लड़की ने क़ब्र से निकल कर

1 ......صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ،باب اداب الطعام و الشراب...الخ،الحدیث:۲۰۲۱،ص۱۱۱۸

जवाब दिया कि ऐ हुज़ूर ! मैं आप के दरबार में हाज़िर हूं। फिर आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस लड़की से फ़रमाया कि "क्या तुम फिर दुन्या में लौट कर आना पसन्द करती हो ?" लड़की ने जवाब दिया कि "नहीं या रसूलल्लाह صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने अल्लाह तआला को अपने मां बाप से ज़ियादा मेहरबान और आख़िरत को दुन्या से बेहतर पाया।"(1)

(زرقانی علی المواہب جلد۵ص۱۸۲وشفاء جلد۱ص۲۱۱)

पकी हुई बकरी ज़िन्दा हो गई

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक बकरी ज़ब्ह कर के उस का गोश्त पकाया और रोटियों का चूरा कर के सरीद बनाया और उस को बारगाहे नुबुव्वत में ले कर हाज़िर हुए। हुज़ूर صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने उस को तनावुल फ़रमाया जब सब लोग खाने से फ़ारिग़ हो गए तो हुज़ूर रहमते आलम صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम हड्डियों को एक बरतन में जम्अ़ फ़रमाया और उन हड्डियों पर अपना दस्ते मुबारक रख कर कुछ कलिमात इरशाद फ़रमा दिये तो येह मो'जिज़ा ज़ाहिर हुवा कि वोह बकरी ज़िन्दा हो कर खड़ी हो गई और दुम हिलाने लगी फिर आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ जाबिर ! तुम अपनी बकरी अपने घर ले जाओ। चुनान्चे हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब उस बकरी को ले कर मकान में दाख़िल हुए तो उन की बीवी ने हैरान हो कर पूछा कि येह बकरी कहां से आ गई ? हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि हम ने अपनी इस बकरी को रसूलुल्लाह صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ज़ब्ह किया था, उन्हों ने अल्लाह तआला से दुआ़ मांगी तो अल्लाह तआला ने इस बकरी को ज़िन्दा फ़रमा दिया। येह सुन कर उन की बीवी ने बुलन्द आवाज़ से **कलिमए शहादत** पढ़ा। इस हदीस को

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب ابراء ذوی العاهات...الخ، ج۷،ص ٦١، ٦٢

जलीलुल क़द्र मुहद्दिस अबू नुऐम ने रिवायत किया है और मश्हूर हाफ़िज़ुल हदीस मुहम्मद बिन अल मुन्ज़िर ने भी "किताबुल अ़जाइब वल ग़राइब" में इस हदीस को नक़्ल फ़रमाया है।[1] (زرقانی علی المواہب جلد۵ص۱۸۴وخصائص کبریٰ جلد۳ص۶۷)

आ़लमे जिन्नात के मो'जिज़ात

जिन्न ने इस्लाम की तरग़ीब दिलाई

हज़रते सवाद बिन क़ारिब رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ का बयान है कि एक जिन्न मेरा ताबेअ़ हो गया था। वोह आयन्दा की ख़बरें मुझे दिया करता था और मैं लोगों को वोह ख़बरें बता कर नज़राने वुसूल किया करता था। एक बार उस जिन्न ने मुझे आ कर जगाया और कहा कि उठ और होश में आ, अगर तुझ में कुछ शुऊ़र है तो चल और बनी हाशिम के सरदार के दरबार में हाज़िर हो कर उन का दीदार कर जो लवी बिन ग़ालिब की औलाद में पैग़म्बर हो कर तशरीफ़ लाए हैं। हज़रते सवाद बिन क़ारिब رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मुसल्सल तीन रातें ऐसी गुज़रीं कि मेरा येह जिन्न मुझे नींद से जगा जगा कर बराबर येही कहता रहा यहां तक कि मेरे दिल में इस्लाम की उल्फ़त व महब्बत पैदा हो गई और मैं अपने घर से रवाना हो कर मक्कए मुकर्रमा में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो गया। आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे देख कर "ख़ुश आमदीद" कहा और फ़रमाया कि मैं जानता हूं कि किस सबब से तुम यहां आए हो। मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم)! मैं ने आप की मद्ह में एक क़सीदा कहा है पहले आप उस को सुन लीजिये। आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि पढ़ो। चुनान्चे मैं ने अपना क़सीदए बाइया जो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मद्ह में नज़्म किया था पढ़ कर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم को सुनाया उस क़सीदे का आख़िर शे'र येह है कि

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني ، باب ابراء ذوى العاهات ...الخ ، ج٧، ص ٦٦

وَكُنْ لِّيْ شَفِيْعًا يَوْمَ لَا ذُوْشَفَاعَةٍ سِوَاكَ بِمُغْنٍ عَنْ سَوَادِ بْنِ قَارِبٍ

या'नी आप उस दिन मेरे शफ़ीअ़ बन जाइये जिस दिन आप के सिवा सवाद बिन क़ारिब की न कोई शफ़ाअ़त करने वाला होगा न कोई नफ़्अ़ पहुंचाने वाला होगा । इस ह़दीस को इमाम बैहक़ी ने रिवायत फ़रमाया है ।[1]

(الکلام المبین ص ۸۷ بحوالہ بیہقی)

जिन्नों का सलाम व पैग़ाम

इब्ने सा'द ने जा'द बिन क़ैस मुरादी से रिवायत की है कि हम चार आदमी ह़ज का इरादा कर के अपने वत़न से रवाना हुए यमन के एक जंगल में हम लोग चल रहे थे कि ना गहां अश्आ़र पढ़ने की आवाज़ आई हम ने उन अश्आ़र को ग़ौर से सुना तो उन का मज़्मून येह था कि ऐ सुवारो ! जब तुम लोग ज़मज़म और ह़त़ीम पर पहुंचो तो ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हमारा सलाम अ़र्ज़ कर देना जिन को **अल्लाह** तआ़ला ने अपना रसूल बना कर भेजा है और हमारा येह पैग़ाम भी पहुंचा देना कि हम आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन के फ़रमां बरदार हैं क्यूं कि ह़ज़रते मसीह़ बिन मरयम عَلَيْهِ السَّلَام ने हम लोगों को इस बात की वसिय्यत फ़रमाई थी । (यक़ीनन येह यमन के जंगल में रहने वाले जिन्नों की आवाज़ थी ।) (الکلام المبین ص ۹۳ بحوالہ ابن سعد)

जिन्न सांप की शक्ल में आया

ख़त़ीब ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रावी हैं कि हम लोग एक सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे । आप एक खजूर के दरख़्त के नीचे तशरीफ़ फ़रमा थे कि बिल्कुल ही अचानक एक बहुत बड़े काले सांप ने आप की त़रफ़ रुख़ किया, लोगों ने उस को मार डालने का इरादा किया लेकिन आप ने फ़रमाया कि इस को

1 ...... دلائل النبوة للبيهقى، جماع ابواب المبعث، حديث سواد بن قارب... الخ، ج۲، ص ۲۵۰

मेरे पास आने दो। जब येह आप के पास पहुंचा तो अपना सर आप के कानों के पास कर दिया। फिर आप ने उस सांप के मुंह के क़रीब अपना मुंह कर के चुपके चुपके कुछ इरशाद फ़रमाया इस के बा'द उसी जगह यक्बारगी वोह सांप इस त़रह़ ग़ाइब हो गया कि गोया ज़मीन उस को निगल गई। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि हम लोगों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! आप ने सांप को अपने कानों तक पहुंचने दिया येह मंज़र देख कर हम लोग डर गए कि कहीं येह सांप आप को काट न ले। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह सांप नहीं था बल्कि जिन्नों की जमाअ़त का भेजा हुवा एक जिन्न था। फ़ुलां सूरह में से कुछ आयतें येह भूल गया। उन आयतों को दरयाफ़्त करने के लिये जिन्नों ने उस को मेरे पास भेजा था। मैं ने उस को वोह आयतें बता दीं और वोह उन को याद करता हुवा चला गया। (الکلام المبین ص۹۴)

अ़नासिरे अरबआ़ के आ़लम में मो'जिज़ात

अंगुश्ते मुबारक की नहरें

अह़ादीस की तलाश व जुस्त्जू से पता चलता है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक उंगलियों से तक़रीबन तेरह मवाक़ेअ़ पर पानी की नहरें जारी हुईं। इन में से सिर्फ़ एक मौक़अ़ का ज़िक्र यहां तह़रीर किया जाता है।

सि. 6 हि. में रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उ़मरह का इरादा कर के मदीनए मुनव्वरह से मक्कए मुकर्रमा के लिये रवाना हुए और हुदैबिया के मैदान में उतर पड़े। आदमियों की कसरत की वजह से हुदैबिया का कूंआं ख़ुश्क हो गया और ह़ाज़िरीन पानी के एक एक क़त़रे के लिये मोह़ताज हो गए। उस वक़्त रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दरियाए रह़मत में जोश आ गया और आप ने एक बड़े प्याले में अपना

दस्ते मुबारक रख दिया तो आप صَلَّى الله تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक उंगलियों से इस त़रह़ पानी की नहरें जारी हो गईं कि पन्दरह सो का लश्कर सैराब हो गया। लोगों ने वुज़ू व ग़ुस्ल भी किया जानवरों को भी पिलाया तमाम मशकों और बरतनों को भी भर लिया। फिर आप صَلَّى الله تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने प्याले में से दस्ते मुबारक को उठा लिया और पानी ख़त्म हो गया। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से लोगों ने पूछा कि उस वक़्त तुम लोग कितने आदमी थे ? तो उन्हों ने फ़रमाया कि हम लोग पन्दरह सो की ता'दाद में थे मगर पानी इस क़दर ज़ियादा था कि لَوْ کُنَّا مِائَۃَ اَلْفٍ لَکَفَانَا या'नी अगर हम लोग एक लाख भी होते तो सब को येह पानी काफ़ी हो जाता।(1)

(مشکوٰۃ جلد۲ص۵۳۲باب المعجزات)

येह ह़दीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है और ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इलावा ह़ज़रते अनस व ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायतों से भी उंगलियों से पानी की नहरें जारी होने की ह़दीसें मरवी हैं मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। (بخاری جلد۱ص۵۰۴و ص۵۰۵علامات النبوۃ)

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! इसी ह़सीन मंज़र की तस्वीर कशी करते हुए आ'ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेल्वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क्या ख़ूब फ़रमाया :

उंगलियां हैं फ़ैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर
नदियां पंजाबे रह़मत की हैं जारी वाह वाह

ज़मीन ने लाश को ठुकरा दिया

एक नसरानी मुसलमान हो कर दरबारे नुबुव्वत में रहने लगा सूरए बक़रह और सूरए आले इमरान पढ़ चुका था। ख़ुश ख़त़ कातिब था इस लिये उस को वह़्य लिखने की ख़िदमत सिपुर्द कर दी गई। मगर येह

---

1 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ وبدء الخلق، باب المعجزات، الحدیث: ۵۸۸۲،
ج ۲، ص ۳۸۳

बद नसीब फिर काफ़िर व मुर्तद हो कर कुफ़्फ़ार से जा मिला और कहने लगा कि नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बस इतना ही इल्म रखते हैं जितना मैं उन को लिख कर दे दिया करता था। क़हरे इलाही ने उस गुस्ताख़ को अपनी गरिफ़्त में पकड़ लिया और येह मर गया। नसरानियों ने उस को दफ़्न किया मगर ज़मीन ने उस की लाश को बाहर फेंक दिया, नसरानियों ने गहरी क़ब्र खोद कर तीन मरतबा उस को दफ़्न किया मगर हर मरतबा ज़मीन ने उस की लाश को बाहर फेंक दिया। चुनान्चे नसरानियों ने भी इस बात का यक़ीन कर लिया कि इस की लाश को ज़मीन के बाहर निकाल फेंकना येह किसी इन्सान का काम नहीं है इस लिये उन लोगों ने उस की लाश को ज़मीन पर डाल दिया।[1] (بخاری جلد۱ص۵۱۱علامات النبوۃ)

जंगे ख़न्दक़ की आंधी

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि نُصِرْتُ بِالصَّبَا وَاُهْلِكَتْ عَادُ بِالدَّبُوْرِ (بخاری جلد۲ص۵۸۹غزوۂ خندق) या'नी पुरवा हवा से मेरी मदद की गई और क़ौमे आ़द पछवा हवा से हलाक की गई।[2]

इस का वाक़िआ़ येह है कि ग़ज़्वए ख़न्दक़ में क़बाइले कुरैश व ग़त़फ़ान और कुरैज़ा व बनी अन्नज़ीर के यहूद और दूसरे मुशरिकीन ने मुत्तह़िदा अफ़्वाज के दल बादल लश्करों के साथ मदीने पर चढ़ाई कर दी और मुसलमानों ने मदीने के गिर्द ख़न्दक़ खोद कर उन अफ़्वाज के ह़म्लों से पनाह ली तो उन शैत़ानी लश्करों ने मदीने का ऐसा सख़्त मुह़ासरा कर लिया कि मदीने के अन्दर मदीने के बाहर से एक गेहूं का दाना और एक क़त़रा पानी का जाना मुह़ाल हो गया था। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم इन मसाइब व शदाइद से गो परेशान ह़ाल थे मगर उन के जोशे ईमानी के

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب،باب علامات النبوۃ...الخ، الحدیث:۳۶۱۷،ج۲، ص۵۰۶

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب غزوۃ الخندق...الخ،الحدیث:۴۱۰۵،ج۳،ص۵۳

इस्तिक़्लाल में बाल बराबर फ़र्क़ नहीं आया था। ठीक इसी ह़ालत में नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह मो'जिज़ा ज़ाहिर हुवा कि पूरब की त़रफ़ से एक ऐसी ज़ोरदार आंधी आई जिस में कड़ाके का जाड़ा भी था और उस में शिद्दत के झोंके और झटके थे कि गर्दो ग़ुबार का बादल छा गया। कुफ़्फ़ार की आंखें धूल और कंकरियों से भर गईं उन के चूल्हों की आग बुझ गई और बड़ी बड़ी देगें चूल्हों से उलट पलट कर दूर तक लुढ़कती हुई चली गईं, ख़ैमों की मैख़ें उखड़ गईं और ख़ैमे उड़ उड़ कर फट गए, घोड़े एक दूसरे से टकरा कर लड़ने लगे, ग़रज़ येह आंधी कुफ़्फ़ार के लिये ऐसा अ़ज़ाबे शदीद बन कर उन पर मुसल्लत़ हो गई कि कुफ़्फ़ार के क़दम उखड़ गए उन की कमरे हिम्मत टूट गई और वोह फ़िरार पर मजबूर हो गए और बद ह़वासी के आ़लम में सर पर पैर रख कर भाग निकले। येही वोह आंधी है जिस का ज़िक्र ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस ने अपनी किताबे मुक़द्दस क़ुरआने मजीद में इन लफ़्ज़ों के साथ इरशाद फ़रमाया कि

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْجَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۟ [1] (احزاب)

*ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर याद करो जब तुम पर कुछ लश्कर आए तो हम ने उन पर आंधी और वोह लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए और **अल्लाह** तुम्हारे कामों को देखता है।*

आग जला न सकी

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में बहुत से ऐसे वाक़िआ़त हैं कि आग उन चीज़ों को न जला सकी जिन को आप की ज़ात से कोई तअ़ल्लुक़ रहा हो।

---

1 ......پ ۲۱،الاحزاب:۹

चुनान्चे कुत्बुद्दीन क़िस्तलानी عَلَيْهِ رَحْمَة ने अपनी किताब "जमलुल ऐजाज़ फ़िल ए'जाज़" में लिखा है कि वोह आग जो रसूलुल्लाह صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़बरे ग़ैब के मुताबिक़ सि. 654 हि. में मदीनए मुनव्वरह के पास क़बीलए कुरैज़ा की पहाड़ियों से नुमूदार हुई वोह पथ्थरों को जला देती थी और कुछ पथ्थरों को गला देती थी। येह आग जब बढ़ते बढ़ते ह़रमे मदीना के क़रीब एक पथ्थर के पास पहुंची जिस का आधा हिस्सा ह़रमे मदीना में दाख़िल था और आधा हिस्सा ह़रमे मदीना से ख़ारिज था तो पथ्थर का जो हिस्सा ख़ारिजे ह़रम था उस को उस आग ने जला दिया लेकिन जब उस निस्फ़ हिस्से तक पहुंची जो ह़रमे मदीना में दाख़िल था तो फ़ौरन ही वोह आग बुझ गई।

इसी त़रह़ इमाम कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَة ने तह़रीर फ़रमाया है कि वोह आग मदीनए त़य्यिबा के क़रीब से ज़ाहिर हुई और दरिया की त़रह़ मौज मारती हुई यमन के एक गाऊं तक पहुंच गई और उस को जला कर राख कर दिया मगर मदीनए त़य्यिबा की जानिब उस आग में से ठन्डी ठन्डी नसीमे सुब्ह़ जैसी हवाएं आती थीं। इस आग का वाक़िआ चन्द अवराक़ पहले हम मुफ़स्सल तौर पर लिख चुके हैं। (الکلام المبین ص ۱۰۷)

इसी त़रह़ "नसीमुर्रियाज़" में लिखा है कि "अ़दीम बिन त़ाहिर अ़लवी" के पास चौदह मूए मुबारक थे उन्हों ने उन को अमीरे ह़ल्ब के दरबार में पेश किया। अमीरे ह़ल्ब ने ख़ुश हो कर इस मुक़द्दस तोह़फ़े को क़बूल किया और अ़लवी साह़िब की इनतिहाई ता'ज़ीमो तक्रीम करते हुए उन को इन्आमो इक्राम से मालामाल कर दिया लेकिन इस के बा'द जब दोबारा अ़लवी साह़िब अमीरे ह़ल्ब के दरबार में गए तो अमीर ने तेवरी चढ़ा कर बहुत ही तुर्श रूई के साथ बात की और उन की त़रफ़ से निहायत ही बे इल्तिफ़ाती के साथ मुंह फेर लिया। अ़लवी साह़िब ने इस बे तवज्जोगी और तुर्श रूई का सबब पूछा तो अमीरे ह़ल्ब ने कहा कि मैं ने

लोगों की ज़बानी सुना है कि तुम जो मूए मुबारक मेरे पास लाए थे उन की कुछ अस्ल और कोई सनद नहीं है। अ़लवी साहि़ब ने कहा कि आप उन मुक़द्दस बालों को मेरे सामने लाइये। जब वोह आ गए तो उन्हों ने आग मंगवाई और मूए मुबारक को दहकती हुई आग में डाल दिया पूरी आग जल जल कर राख हो गई मगर मूए मुबारक पर कोई आंच नहीं आई बल्कि आग के शो'लों में मूए मुबारक की चमक दमक और ज़ियादा निखर गई। येह मंज़र देख कर अमीरे ह़ल्ब ने अ़लवी साहि़ब के क़दमों का बोसा लिया और फिर इस क़दर इन्आ़मो इक्राम से अ़लवी साहि़ब को नवाज़ा कि अहले दरबार उन के ए'ज़ाज़ व वक़ार को देख कर ह़ैरान रह गए।

(الکلام المبین ص ۱۰۸)

इसी त़रह़ ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ के दस्तर ख़्वान की रिवायत मश्हूर है कि चूंकि उस दस्तर ख़्वान से **ह़ुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक और रूए अक़्दस को साफ़ कर लिया था इस लिये येह दस्तर ख़्वान आग के जलते हुए तन्नूर में डाल दिया जाता था मगर आग उस को जलाती नहीं थी बल्कि उस को साफ़ सुथरा कर देती थी।[1]

(مثنوی شریف مولانا رومی)

एक ज़रूरी इनतिबाह

येह सुल्त़ाने कौनैन व शहनशाहे दारैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के उन हज़ारों मो'जिज़ात में से सिर्फ़ चन्द हैं जिन के तज़किरों से अह़ादीस व सीरते नबविय्या की किताबें मालामाल हैं हम ने इन चन्द मो'जिज़ात को बिला किसी तसन्नोअ़ के सादा अल्फ़ाज़ में निहायत ही इख़्तिसार के साथ तह़रीर कर दिया है ताकि इन नूरानी मो'जिज़ात को पढ़ कर नाज़िरीन के सीनों में अ़ज़मते मुस्त़फ़ा और मह़ब्बते रसूल के हज़ारों ईमानी चराग़

1 ......مثنوی مولانا روم(مترجم)،دفترسوم،ص ۵۸

रौशन हो जाएं और हर मुसलमान अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीमो तक्रीम और इन के इक्राम व एह्तिराम की रिफ्अ़त को पहचान ले और उस के गुलशने ईमान में हर लह्ज़ा और हर आन मह़ब्बत व अ़ज़मते रसूल के हज़ारों फूल खिलते रहें और वोह जोशे इरफ़ान व जज़्बए ईमान के साथ दोनों जहां में येह ए'लान करता रहे कि

***अल्लाह* की सर ता ब क़दम शान हैं येह　इन सा नहीं इन्सान वोह इन्सान हैं येह**
कुरआन तो ईमान बताता है इन्हें　ईमान येह कहता है मेरी जान हैं येह

और शायद उन लोगों को भी इस से कुछ इब्रत हासिल हो जिन्हों ने सीरते नबविय्यह के मौज़ूअ़ पर क़लम घिस कर और काग़ज़ सियाह कर के सरवरे अम्बिया, महबूबे किब्रिया صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस पैग़म्बराना ज़िन्दगी को एक आ़म इन्सान के रूप में पेश किया है और बार बार अपने इस मक्रूह नज़रिये और गन्दे नस्बुल ऐ़न का ए'लान करते रहते हैं कि पैग़म्बरे ख़ुदा की सीरत में ऐसे कमालात का ज़िक्र नहीं करना चाहिये जिस से लोग पैग़म्बरे इस्लाम को आ़म इन्सानों की सत्ह़ से ऊंचा समझने लगें। (وَالْعِيَاذُبِاللّٰهِ)

बहर हाल इस पर तमाम अहले ह़क़ का इजमाअ़ व इत्तिफ़ाक़ है कि **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जिन जिन मो'जिज़ात से सरफ़राज़ फ़रमाया है उन तमाम मो'जिज़ात को **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते वाला सिफ़ात में जम्अ़ फ़रमा दिया है और इन के इलावा बे शुमार ऐसे मो'जिज़ात से भी ह़ज़रते ह़क़ جَلَّ جَلَالُهٗ ने अपने आख़िरी पैग़म्बर, शफ़ीए़ मह़शर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मुमताज़ फ़रमाया जो आप के ख़साइस कहलाते हैं। या'नी येह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वोह कमालात व मो'जिज़ात हैं जो किसी नबी व रसूल को नहीं अ़ता किये गए मसलन।

चन्द ख़साइसे कुब्रा

《1》 आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पैदाइश के ए'तिबार से "अव्वलुल अम्बिया" होना जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में आया है कि كَانَ نَبِيًّا وَّ اٰدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ या'नी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त शरफ़े नुबुव्वत से सरफ़राज़ हो चुके थे जब कि आदम عَلَیْہِ السَّلَام जिस्म व रूह़ की मन्ज़िलों से गुज़र रहे थे।[1] (زرقانی علی المواہب جلد۵ص۲۴۲)

《2》 आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ातमुन्नबिय्यीन होना।

《3》 तमाम मख़्लूक़ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये पैदा हुई।

《4》 आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस नाम अ़र्श और जन्नत की पेशानियों पर तह़रीर किया गया।

《5》 तमाम आस्मानी किताबों में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बिशारत दी गई।

《6》 आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत के वक़्त तमाम बुत औंधे हो कर गिर पड़े।

《7》 आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का शक़्क़े सद्र हुवा।

《8》 आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मे'राज का शरफ़ अ़त़ा किया गया और आप की सुवारी के लिये बुराक़ पैदा किया गया।

《9》 आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल होने वाली किताब तब्दील व तह़रीफ़ से मह़फ़ूज़ कर दी गई और क़ियामत तक इस की बक़ा व ह़िफ़ाज़त की ज़िम्मादारी **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ज़िम्मए करम पर ले ली।

《10》 आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को आयतुल कुर्सी अ़त़ा की गई।

《11》 आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम ख़ज़ाइनुल अर्ज़ की कुन्जियां अ़त़ा कर दी गईं।

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، الفصل الرابع ما اختص به...الخ، ج۷، ص ۱۸٦

﴾12﴿ आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जवामिउ़ल कलम के मो'जिजे़ से सरफ़राज़ किया गया।

﴾13﴿ आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को रिसालते आ़म्मा के शरफ़ से मुमताज़ किया गया।

﴾14﴿ आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ के लिये मो'जिज़ए शक़्कुल क़मर जुहूर में आया।

﴾15﴿ आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये अम्वाले ग़नीमत को **अल्लाह** तआ़ला ने ह़लाल फ़रमाया।

﴾16﴿ तमाम रूए ज़मीन को **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये मस्जिद और पाकी ह़ासिल करने (तयम्मुम) का सामान बना दिया।

﴾17﴿ आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'ज़ मो'जिज़ात (कु़रआने मजीद) क़ियामत तक बाक़ी रहेंगे।

﴾18﴿ **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन का नाम ले कर पुकारा मगर आप को अच्छे अच्छे अल्क़ाब से पुकारा।

﴾19﴿ **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को **"ह़बीबुल्लाह"** के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से सर बुलन्द फ़रमाया।

﴾20﴿ **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत, आप की ह़यात, आप के शहर, आप के ज़माने की क़सम याद फ़रमाई।

﴾21﴿ आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम औलादे आदम के सरदार हैं।

﴾22﴿ आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला के दरबार में **"अकरमुल ख़ल्क़"** हैं।

﴾23﴿ क़ब्र में आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात के बारे में मुन्कर व नकीर सुवाल करेंगे।

﴾24﴿ आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द आप की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنهن के साथ निकाह़ करना ह़राम ठहराया गया।

﴾25﴿ हर नमाज़ी पर वाजिब कर दिया गया कि ब ह़ालते नमाज़ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ कह कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम करे।

﴾26﴿ अगर किसी नमाज़ी को ब ह़ालते नमाज़ **हुज़ूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पुकारें तो वोह नमाज़ छोड़ कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पुकार पर दौड़ पड़े येह उस पर वाजिब है और ऐसा करने से उस की नमाज़ फ़ासिद भी नहीं होगी।

﴾27﴿ **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी शरीअ़त का आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मुख़्तार बना दिया है, आप जिस के लिये जो चाहें ह़लाल फ़रमा दें और जिस के लिये जो चाहें ह़राम फ़रमा दें।

﴾28﴿ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मिम्बर और क़ब्रे अन्वर के दरमियान की ज़मीन जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

﴾29﴿ सूर फूंकने पर सब से पहले आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी क़ब्रे अन्वर से बाहर तशरीफ़ लाएंगे।

﴾30﴿ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मक़ामे मह़मूद अ़ता किया गया।

﴾31﴿ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को शफ़ाअ़ते कुब्रा के ए'ज़ाज़ से नवाज़ा गया।

﴾32﴿ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत के दिन "लिवाउल ह़म्द" अ़ता किया गया।

﴾33﴿ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सब से पहले जन्नत में दाख़िल होंगे।

﴾34﴿ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हौज़े कौसर अ़ता किया गया।

﴾35﴿ क़ियामत के दिन हर शख़्स का नसब व तअ़ल्लुक़ मुन्क़तेअ़ हो जाएगा मगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नसब व तअ़ल्लुक़ मुन्क़तेअ़ नहीं होगा।

﴾36﴿ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सिवा किसी नबी के पास ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام नहीं उतरे।

﴾37﴿ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में बुलन्द आवाज़ से बोलने वाले के आ'माले सालिहा बरबाद कर दिये जाते हैं।

﴾38﴿ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को हुजरों के बाहर से पुकारना हराम कर दिया गया।

﴾39﴿ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अदना सी गुस्ताख़ी करने वाले की सज़ा क़त्ल है।

﴾40﴿ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام से ज़ियादा मो'जिज़ात अ़ता किये गए।[1] (فہرست زرقانی علی المواہب جلد۵)

रोज़ी का एक सबब

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी के दौरे अक़्दस में दो भाई थे जिन में एक आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में (इल्मे दीन सीखने के लिये) ह़ाज़िर होता, (एक रोज़) कारीगर भाई ने सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने भाई की शिकायत की (या'नी इस ने सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है, इस को मेरे काम काज में हाथ बटाना चाहिये) तो मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَعَلَّکَ تُرْزَقُ بِہٖ या'नी शायद तुझे इस की बरकत से रोज़ी मिल रही है। (سنن الترمذی حدیث ۲۳۴۵،ص۱۸۸۷، واشعۃ اللمعات، ج۴، ص۲۶۲)

---

[1] ......المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی،الفصل الرابع مااختص بہ...الخ،ج۷،ص۱۸۵۔۳۸۸

इक्कीसवां बाब

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

उम्मत पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक़ूक़

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत की हिदायत व इस्लाह़ और इन की सलाह़ व फ़लाह़ के लिये जैसी जैसी तक्लीफ़ें बरदाश्त फ़रमाईं और इस राह में आप को जो जो मुश्किलात दरपेश हुईं उन का कुछ ह़ाल आप इस किताब में पढ़ चुके हैं। फिर आप को अपनी उम्मत से जो बे पनाह मह़ब्बत और इस की नजात व मग़फ़िरत की फ़िक्र और एक एक उम्मती पर आप की शफ़्क़त व रह़मत की जो कैफ़िय्यत है इस पर कुरआन में खुदा वन्दे कुद्दूस का फ़रमान गवाह है कि

لَقَدۡ جَآءَکُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِکُمۡ عَزِیۡزٌ عَلَیۡهِ مَاعَنِتُّمۡ حَرِیۡصٌ عَلَیۡکُمۡ بِالۡمُؤۡمِنِیۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِیۡمٌ ○ (1)
(سورہ توبہ)

बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वोह रसूल जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर बहुत ही निहायत ही रह़्म फ़रमाने वाले हैं।

पूरी पूरी रातें जाग कर इबादत में मसरूफ़ रहते और उम्मत की मग़फ़िरत के लिये दरबारे बारी में इनतिहाई बे क़रारी के साथ गिर्या व ज़ारी फ़रमाते रहते। यहां तक कि खड़े खड़े अकसर आप के पाए मुबारक पर वरम आ जाता था।

ज़ाहिर है कि हुज़ूर सरवरे अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत के लिये जो जो मशक़्क़तें उठाईं उन का तक़ाज़ा है कि उम्मत पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के कुछ हुक़ूक़ है जिन को अदा करना हर उम्मती पर फ़र्ज़ व वाजिब है।

---

1 ......پ۱۱،التوبة:۱۲۸

हज़रते अ़ल्लामा क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप के मुक़द्दस हुक़ूक़ को अपनी किताब "शिफ़ा शरीफ़" में बहुत ही मुफ़स्सल तौ़र पर बयान फ़रमाया। हम यहां इनतिहाई इख़्तिसार के साथ उस का ख़ुलासा तह़रीर करते हुए मुन्दरिजे ज़ैल आठ हुक़ूक़ का ज़िक्र करते हैं।

《1》 ईमान बिर्रसूल 《2》 इत्तिबाए़ सुन्नते रसूल
《3》 इता़अ़ते रसूल 《4》 मह़ब्बते रसूल
《5》 ता'ज़ीमे रसूल 《6》 मद्ह़े रसूल
《7》 दुरूद शरीफ़ 《8》 क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत[1]

《1》 ईमान बिर्रसूल

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत व रिसालत पर ईमान लाना और जो कुछ आप **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से लाए हैं, सिद्क़े दिल से उस को सच्चा मानना हर हर उम्मती पर फ़र्ज़े ऐन है और हर मोमिन का इस पर ईमान है कि बिग़ैर रसूल पर ईमान लाए हुए हरगिज़ हरगिज़ कोई मुसलमान नहीं हो सकता क़ुरआन में ख़ुदा वन्दे आ़लम جَلَّ جَلَالُہٗ का फ़रमान है कि

وَمَنْ لَّمْ یُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِیْنَ سَعِیْرًا ۝ [2] (فتح)

*जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान न लाया तो यक़ीनन हम ने काफ़िरों के लिये भड़कती हुई आग तय्यार कर रखी है।*

इस आयत ने निहायत वज़ाह़त और सफ़ाई के साथ येह फ़ैसला कर दिया कि जो लोग रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत पर ईमान नहीं लाएंगे वोह अगर्चे ख़ुदा की तौह़ीद का उ़म्र भर डंका बजाते रहें मगर वोह काफ़िर और जहन्नमी ही रहेंगे। इस लिये इस्लाम का बुन्यादी

---

1 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،القسم الثانی فیمایجب علی الانام...الخ،الجزء الثانی،ص۲

2 ......پ۲۶،الفتح:۱۳

कलिमा या'नी कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ है या'नी मुसलमान होने के लिये ख़ुदा की तौह़ीद और रसूल की रिसालत दोनों पर ईमान लाना ज़रूरी है।(1)

﴾2﴿ इत्तिबाए सुन्नते रसूल

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका और आप की सुन्नते मुक़द्दसा की इत्तिबाअ़ और पैरवी हर मुसलमान पर वाजिब व लाज़िम है। रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُہٗ का फ़रमान है कि

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝ (2)

(آلِ عمران)

*(ऐ रसूल) फ़रमा दीजिये कि अगर तुम लोग **अल्लाह** से मह़ब्बत करते हो तो मेरी इत्तिबाअ़ करो **अल्लाह** तुम को अपना मह़बूब बना लेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा और **अल्लाह** बहुत ज़ियादा बख़्शने वाला और रह़म फ़रमाने वाला है।*

इसी लिये आस्माने उम्मत के चमकते हुए सितारे, हिदायत के चांद तारे, **अल्लाह** व रसूल के प्यारे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم आप की हर सुन्नते करीमा की इत्तिबाअ़ और पैरवी को अपनी ज़िन्दगी के हर दम क़दम पर अपने लिये लाज़िमुल ईमान और वाजिबुल अ़मल समझते थे और बाल बराबर भी कभी किसी मुआ़मले में भी अपने प्यारे रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस सुन्नतों से इन्ह़िराफ़ या तर्क गवारा नहीं कर सकते थे।(3)

---

1 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،القسم الثانی فیمایجب علی الانام...الخ،الباب الاول فی فرض الایمان به...الخ، الجزء الثانی،ص ۲۔۳ملخصاً

2 ......پ۳،اٰل عمرٰن:۳۱

3 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،القسم الثانی فیمایجب علی الانام...الخ،الباب الاول فی فرض الایمان به...الخ، فصل و اماو جوب...الخ،الجزء الثانی،ص۸۔۹ملخصاً

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आख़िरी तमन्ना

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी वफ़ात से सिर्फ़ चन्द घन्टे पहले उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से दरयाफ़्त किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कफ़न मुबारक में कितने कपड़े थे और आप की वफ़ात किस दिन हुई ? इस सुवाल की वजह येह थी कि आप की येह इनतिहाई तमन्ना थी कि ज़िन्दगी के हर हर लम्ह़ात में तो मैं ने अपने तमाम मुआ़मलात में ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नतों की मुकम्मल त़ौर पर इत्तिबाअ़ की है। मरने के बा'द कफ़न और वफ़ात के दिन में भी मुझे आप की इत्तिबाए़ सुन्नत नसीब हो जाए।[1] (بخاری جلد ا ص ۱۸۶ باب موت یوم الاثنین)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और भुनी हुई बकरी

एक मरतबा ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का गुज़र एक ऐसी जमाअ़त पर हुवा जिस के सामने खाने के लिये भुनी हुई मुसल्लम बकरी रखी हुई थी। लोगों ने आप को खाने के लिये बुलाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह कह कर खाने से इन्कार कर दिया कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से तशरीफ़ ले गए और कभी जव की रोटी पेट भर कर न खाई। मैं भला इन लज़ीज़ और पुर तकल्लुफ़ खानों को खाना क्यूंकर गवारा कर सकता हूं।[2] (مشکوۃ جلد ۲ ص ۴۴۶ باب فضل الفقراء)

ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का परनाला

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मकान मस्जिदे नबवी से मिला हुवा था और उस मकान का परनाला बारिश में आने जाने वाले नमाज़ियों के ऊपर गिरा करता था। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب موت یوم الاثنین، الحدیث:۱۳۸۷، ج۱، ص۴٦۸

2 ......مشکوۃ المصابیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء...الخ، الحدیث:۵۲۳۸، ج۲، ص۲۵٤

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस परनाले को उखाड़ दिया। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप के पास आए और कहा कि ख़ुदा की क़सम ! इस परनाले को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी गरदन पर सुवार हो कर अपने मुक़द्दस हाथों से लगाया था। येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया कि ऐ अ़ब्बास ! मुझे इस का इ़ल्म न था अब मैं आप को हुक्म देता हूं कि आप मेरी गरदन पर सुवार हो कर इस परनाले को फिर उसी जगह लगा दीजिये चुनान्चे ऐसा ही किया गया।[1] (وفاء الوفا جلد۱ص۳۴۸)

«3» इत़ाअ़ते रसूल

येह भी हर उम्मती पर रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़क़ है कि हर उम्मती हर ह़ाल में आप के हर हुक्म की इत़ाअ़त करे और आप जिस बात का हुक्म दे दें बाल के करोड़वें ह़िस्से के बराबर भी उस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी का तसव्वुर भी न करे क्यूं कि आप की इत़ाअ़त और आप के अह़काम के आगे सरे तस्लीम ख़म कर देना हर उम्मती पर फ़र्ज़े ऐ़न है। क़ुरआने मजीद में इरशादे ख़ुदा वन्दी है कि

«1» اَطِیْعُوا اللّٰہَ وَاَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ (نساء)[2]

*हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का।*

«2» مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰہَ (نساء)[3]

*जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना।*

---

1 ......وفاء الوفاء باخبار دار المصطفی،الباب الثالث،الفصل الثانی عشرفی زیادۃعمر...الخ، ج۱، ص ٤٨٦ ملتقطاً

2 ......پ٥،النساء:٥٩

3 ......پ٥،النساء:٨٠

﴿3﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ۝ (1)(نساء)

और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने इन्आ़म फ़रमाया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग येह क्या ही अच्छे साथी हैं।

कुरआने मजीद की येह मुक़द्दस आयात ए'लान कर रही हैं कि इत़ाअ़ते रसूल के बिग़ैर इस्लाम का तसव्वुर ही नहीं किया जा सकता और इत़ाअ़ते रसूल करने वालों ही के लिये ऐसे ऐसे बुलन्द दरजात हैं कि वोह ह़ज़रात अम्बिया व सिद्दीक़ीन और शुहदा व सालिह़ीन के साथ रहेंगे।

हर उम्मती के लिये इत़ाअ़ते रसूल की क्या शान होनी चाहिये इस का जल्वा देखना हो तो इस रिवायत को बग़ौर पढ़िये :

सोने की अंगूठी फेंक दी

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने रिवायत की है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को देखा कि वोह सोने की अंगूठी पहने हुए है। आप ने उस के हाथ से अंगूठी निकाल कर फेंक दी और फ़रमाया कि क्या तुम में से कोई चाहता है कि आग के अंगारे को अपने हाथ में डाले ? **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ ले जाने के बा'द लोगों ने उस शख़्स से कहा कि तू अपनी अंगूठी को उठा ले और (इस को बेच कर) इस से नफ़्अ़ उठा। तो उस ने जवाब दिया कि ख़ुदा की क़सम ! जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस अंगूठी को फेंक दिया तो अब मैं इस अंगूठी को कभी भी नहीं उठा सकता। (और वोह इस को छोड़ कर चला गया) (2) (مشکوٰۃ جلد۲ص۳۷۸باب الخاتم)

---

1 ......پ ٥، النساء: ٦٩

2 ......مشكاة المصابيح، كتاب اللباس، باب الخاتم، الحديث: ٤٣٨٥، ج ٢، ص ١٢٣

﴾4﴿ महब्बते रसूल

इसी त़रह़ हर उम्मती पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़क़ है कि वोह सारे जहान से बढ़ कर आप से मह़ब्बत रखे और सारी दुन्या की मह़बूब चीज़ों को आप की मह़ब्बत के क़दमों पर कुरबान कर दे। खुदा वन्दे कुद्दूस جَلَّ جَلَالُہٗ का फ़रमान है कि

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِیْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ﰳاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَیْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِیْ سَبِیْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى یَاْتِیَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ۠ [1] (توبہ)

*(ऐ रसूल) आप फ़रमा दीजिये अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्दीदा मकान येह चीज़ें **अल्लाह** और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए और **अल्लाह** फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।*

इस आयत से साबित होता है की हर मुसलमान पर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत फ़र्ज़े ऐ़न है क्यूं कि इस आयत का ह़ासिले मत़लब येह है की ऐ मुसलमानो ! जब तुम ईमान लाए हो और **अल्लाह** व रसूल की मह़ब्बत का दा'वा करते हो तो अब इस के बा'द अगर तुम लोग किसी ग़ैर की मह़ब्बत को **अल्लाह** व रसूल की मह़ब्बत पर तरजीह़ दोगे तो ख़ूब समझ लो कि तुम्हारा ईमान और **अल्लाह** व रसूल की मह़ब्बत का दा'वा बिल्कुल ग़लत़ हो जाएगा और तुम अ़ज़ाबे इलाही और क़हरे ख़ुदा वन्दी से न बच सकोगे।

---

[1] ......پ ١٠، التوبة:٢٤

नीज़ आयत के आख़िरी टुकड़े से येह भी साबित होता है कि जिस के दिल में **अल्लाह** व रसूल की मह़ब्बत नहीं यक़ीनन बिला शुबा उस के ईमान में ख़लल है।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़दीक उस के बाप उस की औलाद और तमाम लोगों से बढ़ कर मह़बूब न हो जाऊं।[1] (بخاری جلد۱ص۷باب حب الرسول)

ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कितनी वालिहाना मह़ब्बत थी अगर आप को इस की तजल्लियों का नज़ारा करना है तो मुन्दरिजए ज़ैल वाक़िआ़त को इ़ब्रत की निगाहों से देखिये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये।

एक बुढ़िया का जज़्बए मह़ब्बत

आप जंगे उहुद के बयान में पढ़ चुके हैं कि शैत़ान ने बे पर की येह ख़बर उड़ा दी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो गए। येह होलनाक ख़बर जब मदीनए मुनव्वरह में पहुंची तो वहां की ज़मीन दहल गई यहां तक कि वहां की पर्दा नशीन औ़रतों के दिलो दिमाग़ में सदमाते ग़म का भोंचाल आ गया और क़बीलए बनी दीनार की एक औ़रत अपने जज़्बात से मग़लूब हो कर अपने घर से निकल पड़ी और मैदाने जंग की त़रफ़ चल पड़ी रास्ते में उस को अपने बाप और भाई और शोहर की शहादत की ख़बर मिली मगर उस ने इस की कोई परवा नहीं की और लोगों से येही पूछती रही कि मुझे येह बताओ कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कैसे हैं? जब उसे बताया गया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर त़रह़ ब ख़ैरिय्यत हैं तो इस से बुढ़िया की तसल्ली नहीं हुई और कहने

1 ......صحیح البخاری، کتاب الایمان،باب حب الرسول من الایمان،الحدیث:۱۵،ج۱،ص۱۷

लगी कि तुम लोग मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार करा दो। जब लोगों ने उस को रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब ले जा कर खड़ा कर दिया और उस ने जमाले नुबुव्वत को देखा तो बे इख़्तियार उस की ज़बान से येह जुम्ला निकल पड़ा कि كُـلُّ مُصِيبَةٍ بَعْدَكَ جَلَلٌ आप के होते हुए हर मुसीबत हेच है।[1] (سیرۃ ابن ہشام جلد۳ص۹۹مطبوعہ مصر)

बढ़ कर उस ने रुख़े अन्वर को जो देखा तो कहा !

तू सलामत है तो फिर हेच हैं सब रन्जो अलम

मैं भी और बाप भी शोहर भी बरादर भी फ़िदा

ऐ शहे दीं ! तेरे होते क्या चीज़ हैं हम

ह़ज़रते समामा का ए'लाने मह़ब्बत

ह़ज़रते समामा बिन असाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ईमान ला कर कहने लगे कि ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ख़ुदा की क़सम ! पहले मेरे नज़्दीक रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आप के चेहरे से ज़ियादा मबग़ूज़ नहीं था लेकिन आज आप का वोही चेहरा मुझे सब चेहरों से ज़ियादा मह़बूब है। ख़ुदा की क़सम ! मेरे नज़्दीक कोई दीन आप के दीन से ज़ियादा मबग़ूज़ न था। मगर अब आप का वोही दीन मेरे नज़्दीक सब दीनों से ज़ियादा मह़बूब है। ख़ुदा की क़सम ! मेरे नज़्दीक कोई शहर आप के शहर से ज़ियादा मबग़ूज़ न था। लेकिन अब आप का वोही शहर मेरे नज़्दीक तमाम शहरों से ज़ियादा मह़बूब है।[2] (بخاری جلد۲ص۶۲۷ باب وفد بنی حنیفہ)

बिस्तरे मौत पर इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की वफ़ात का वक़्त आया तो उन की बीवी ने ग़म से निढाल हो कर कहा कि "وا حزناه" (हाए रे ग़म) येह सुन

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة احد،شان عاصم بن ثابت،ص ٣٤٠ ملخصاً

2 ......صحيح البخارى، كتاب المغازى،باب وفدبنى حنيفة...الخ،الحديث:٤٣٧٢،ج٣،ص ١٣١

कर हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बिस्तरे मौत पर तड़प कर कहा कि[1]

وَا طَرَبَاہُ غَدًا اَلْقَی الْاَحِبَّۃَ مُحَمَّدًا وَّحِزْبَہٗ (زرقانی علی المواہب)

वाह रे ख़ुशी मैं कल तमाम दोस्तों से या'नी मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्हाब से मिलूंगा।

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और महब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से किसी ने सुवाल किया कि आप को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कितनी महब्बत है ? तो आप ने फ़रमाया कि खुदा की क़सम ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे माल, हमारी औलाद, हमारे बाप, हमारी मां और सख़्त प्यास के वक़्त पानी से भी बढ़ कर हमारे नज़्दीक महबूब हैं।[2] (شفاء شریف جلد۲ص۱۸)

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا का इश्क़

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا का पाउं सुन हो गया। लोगों ने उन को इस मरज़ के इलाज के तौर पर येह अ़मल बताया की तमाम दुन्या में आप को सब से ज़ाइद जिस से महब्बत हो उस को याद कर के पुकारिये येह मरज़ जाता रहेगा। येह सुन कर आप ने **"या मुहम्मदाह"** का ना'रा मारा और आप का पाउं अच्छा हो गया।[3] (شفاء شریف جلد۲ص۱۸)

---

1 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،القسم الثانی فیمایجب علی الانام...الخ،الباب الثانی ،فصل فیماروی عن السلف و الائمة،الجزء الثانی،ص۲۳

2 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،القسم الثانی،الباب الاول،فصل فیماروی عن السلف و الائمة،الجزء الثانی،ص۲۲

3 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،القسم الثانی،الباب الاول،فصل فیماروی عن السلف و الائمة،الجزء الثانی،ص۲۳

कद्दू से महब्बत

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ का बयान है कि एक दरज़ी ने **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत की। मैं भी साथ में था। जव की रोटी और शोरबा आप के सामने लाया गया जिस में ख़ुश्क गोश्त की बोटियां और कद्दू के टुकड़े पड़े हुए थे। मैं ने देखा कि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم प्याले के अत्राफ़ से कद्दू के टुकड़े तलाश कर के तनावुल फ़रमाते थे। इसी लिये मैं उस दिन से कद्दू को हमेशा महबूब रखता हूं।[1] (بخاری جلد۲ص۸۱۷باب المرق)

मन्क़ूल है कि हज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ (शागिर्दे इमाम अबू ह़नीफ़ा عَلَیۡہِ رَحۡمَۃ) के सामने इस रिवायत का ज़िक्र आया कि **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को कद्दू बहुत ज़ियादा पसन्द था। उस मजलिस में एक शख़्स ने कह दिया कि "اَنَامَااُحِبُّہٗ" (मैं तो इस को पसन्द नहीं करता) येह सुन कर हज़रते इमाम अबू यूसुफ़ ने तलवार खींच ली और फ़रमाया कि جَدِّدِ الۡاِسۡلَامَ وَاِلَّا قَتَلۡتُكَ[2] अपने ईमान की तजदीद करो वरना मैं तुझ को क़त्ल कर डालूंगा। (مرقاۃ شرح مشکوۃ ج۲ص۷۷)

सोते वक़्त रसूल की याद

अ़ब्दह बिन्ते ख़ालिद बिन मा'दान का बयान है कि हर रात हज़रते ख़ालिद बिन मा'दान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ जब अपने बिस्तर पर लेटते तो इनतिहाई शौक़ व इश्तियाक़ के साथ **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्हाबे किबार, मुहाजिरीन व अन्सार को नाम ले ले कर याद करते और येह दुआ मांगते कि या **अल्लाह** ! मेरा दिल इन हज़रात की महब्बत में बे क़रार है और मेरा इश्तियाक़ अब हद से बढ़ चुका है

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاطعمة، باب المرق، الحدیث:٥٤٣٦، ج٣، ص٥٣٧

2 ......شرح ا لشفاء للقاضی عیاض، القسم الثانی، الباب الثانی، فصل فی علامۃ محبتہ صلی اللہ علیہ وسلم ج٢، ص ٥١

लिहाज़ा तू मुझे जल्द वफ़ात दे कर इन लोगों के पास पहुंचा दे। येही कहते कहते उन को नींद आ जाती थी। اَللّٰہُ اَکْبَر[1] (شفاء شریف جلد۲ص۱۷)

मैं सो जाऊं या मुस्तफ़ा कहते कहते   खुले आंख सल्ले अ़ला कहते कहते

मह़ब्बते रसूल की निशानियां

वाज़ेह़ रहे कि मह़ब्बते रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दा'वा करने वाले तो बहुत लोग हैं। मगर याद रखिये कि इस की चन्द निशानियां हैं जिन को देख कर इस बात की पहचान होती है कि वाक़ेई इस के दिल में मह़ब्बते रसूल का चराग़ रौशन है। इन अ़लामतों में से चन्द येह हैं :

《1》 आप के अक़्वाल व अफ़्आ़ल की पैरवी, आप की सुन्नतों पर अ़मल, आप के अवामिर व नवाही की फ़रमा बरदारी, ग़रज़ शरीअ़ते मुत़ह्हरा पर पूरे त़ौर से आ़मिल हो जाना।

《2》 आप का ज़िक्र शरीफ़ ब कसरत करना, बहुत ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ना, आप के ज़िक्र की मजालिसे मुक़द्दसा मसलन मीलाद शरीफ़ और दीनी जल्सों का शौक़ और इन मजालिसे मुबारका में ह़ाज़िरी।

《3》 हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और तमाम उन लोगों और उन चीज़ों से मह़ब्बत और उन का अदबो एह़तिराम जिन को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत व तअ़ल्लुक़ ह़ासिल है। मसलन सह़ाबए किराम, अज़्वाजे मुत़ह्हरात, अहले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن शहरे मदीना, क़ब्रे अन्वर, मस्जिदे नबवी, आप के आसारे शरीफ़ा व मशाहदे मुक़द्दसा, कुरआने मजीद व अह़ादीसे मुबारका, सब की ता'ज़ीम व तौक़ीर और इन का अदबो एह़तिराम करना।

《4》 हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्तों से दोस्ती और इन के दुश्मनों या'नी बद दीनों, बद मज़्हबों से दुश्मनी रखना।

---

1 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ، فصل فیما روی عن السلف والائمۃ...الخ،ج۲، ص ۲۱

﴾5﴿ दुन्या से बे रग़्बती और फ़क़ीरी को मालदारी से बेहतर समझना। इस लिये कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि मुझ से महब्बत करने वाले की तरफ़ फ़क्रो फ़ाक़ा इस से भी ज़ियादा जल्दी पहुंचता है जैसे कि पानी का सैलाब अपने मुन्तहा की तरफ़।[1]

(ترمذی جلد۲ص۵۸ ابواب الزہد)

﴾5﴿ ता'ज़ीमे रसूल

उम्मत पर **हुज़ूर** عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हुक़ूक़ में एक निहायत ही अहम और बहुत ही बड़ा हक़ येह भी है कि हर उम्मती पर फ़र्ज़े ऐन है कि **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप से निस्बत व तअ़ल्लुक़ रखने वाली तमाम चीज़ों की ता'ज़ीम व तौक़ीर और इन का अदबो एह़तिराम करे और हरगिज़ हरगिज़ कभी इन की शान में कोई बे अदबी न करे। अह़कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُهٗ का फ़रमाने वाला शान है कि

اِنَّـآ اَرۡسَلۡنٰـکَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًاo لِّتُـؤۡمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَتُـعَزِّرُوۡهُ وَتُوَقِّرُوۡهُ ؕ وَتُسَبِّحُوۡهُ بُكۡرَةً وَّاَصِيۡلًاo[2](فتح)

*बेशक हम ने तुम्हें (ऐ रसूल) भेजा ह़ाज़िर व नाज़िर और ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला ताकि ऐ लोगो! तुम **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीम व तौक़ीर करो और सुब्ह़ व शाम **अल्लाह** की पाकी बोलो।*

हुज़ूर की तौहीन करने वाला काफ़िर है

ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ाज़ी इयाज़ رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने फ़रमाया कि इस बात पर तमाम उ़लमाए उम्मत का इज्माअ़ है कि

---

1 ......سنن الترمذی ، کتاب الزهد ،باب ماجاء فی فضل الفقر ، الحدیث:۲۳۵۷،ج٤، ص ١٥٦

2 ......پ ٢٦ ،الفتح:٨،٩

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को गाली देने वाला या इन की ज़ात, इन के ख़ानदान, इन के दीन, इन की किसी ख़स्लत में नक़्स बताने वाला या इस की त़रफ़ इशारा किनाया करने वाला या हुज़ूर को बदगोई के त़रीक़े पर किसी चीज़ से तश्बीह देने वाला या आप को ऐ़ब लगाने वाला या आप की शान को छोटी बताने वाला या आप की तह़क़ीर करने वाला बादशाहे इस्लाम के हुक्म से क़त्ल कर दिया जाएगा। इसी त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ला'नत करने वाला या आप के लिये बद दुआ़ करने वाला या आप की त़रफ़ किसी ऐसी बात की निस्बत करने वाला जो आप के मन्सब के लाइक़ न हो या आप के लिये किसी मुज़र्रत की तमन्ना करने वाला या आप की मुक़द्दस जनाब में कोई ऐसा कलाम बोलने वाला जिस से आप की शान में इस्तिख़्फ़ाफ़ होता हो या किसी आज़्माइश या इमतिह़ान की बातों से आप को आ़र दिलाने वाला भी सुल्त़ाने इस्लाम के हुक्म से क़त्ल कर दिया जाएगा। और वोह मुर्तद क़रार दिया जाएगा और उस की तौबा क़बूल नहीं की जाएगी और इस मस्अले में उ़लमाए अम्सार और सलफ़ सालिह़ीन के माबैन कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है कि ऐसा शख़्स काफ़िर क़रार दे कर क़त्ल कर दिया जाएगा। मुह़म्मद बिन सह़नून عَلَيْهِ رَحْمَةٌ ने फ़रमाया कि नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में बद ज़बानी करने वाला और आप की तन्क़ीस करने वाला काफ़िर है और जो उस के कुफ़्र और अ़ज़ाब में शक करे वोह भी काफ़िर है और तौहीने रिसालत करने वाले की दुन्या में येह सज़ा है कि वोह क़त्ल कर दिया जाएगा।[1] (شفاء شريف جلد٢ص١٨٩وص١٩٠)

इसी त़रह़ ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुतअ़ल्लिक़ीन या'नी आप के अस्ह़ाब, आप के अहले बैत, आप की अज़्वाजे मुत़ह्हरात वग़ैरा को गाली देने वाले के बारे में फ़रमाया कि

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى،الباب الاول فى بيان ماهو فى حقه...الخ، ج٢، ص ٢١٤،٢١٦

हुज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अहले बैत व आप की अज़्वाजे मुतहहरात और आप के अस्हाब को गाली देना या उन की शान में तन्क़ीस करना हराम है और ऐसा करने वाला मलऊन है।[1] (شفاء شریف جلد۲ص۲۶۶)

येही वजह है कि हज़राते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُم हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इस क़दर अदबो एहतिराम करते थे और आप की मुक़द्दस बारगाह में इतनी ता'ज़ीम व तक्रीम का मुज़ाहरा करते थे कि हज़रते उर्वह बिन मसऊद सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ जब कि मुसलमान नहीं हुए थे और कुफ़्फ़ारे मक्का के नुमाइन्दा बन कर मैदाने हुदैबिया में गए थे तो वहां से वापस आ कर उन्हों ने कुफ़्फ़ार के मज्मअ़ में अ़लल ए'लान येह कहा था कि

ऐ मेरी क़ौम ! मैं ने बादशाहे रूम क़ैसर और बादशाहे फ़ारस किस्रा और बादशाहे हबशा नज्जाशी सब का दरबार देखा है मगर ख़ुदा की क़सम ! मैं ने किसी बादशाह के दरबारियों को अपने बादशाह की इतनी ता'ज़ीम करते नहीं देखा जितनी ता'ज़ीम मुहम्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) के अस्हाब मुहम्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की करते हैं।[2] (بخاری جلد۱ص۳۸۰باب الشروط فی الجہاد وغیرہ)

चुनान्चे मुन्दरिजए ज़ैल मिसालों से येह अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्हाबे किबार अपने आक़ाए नामदार के दरबार में किस क़दर ता'ज़ीम व तक्रीम के जज़्बात से सरशार रहते थे।

सर पर चिड़ियां

हज़रते अमीरुल मोमिनीन अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ हाज़िरीने मजलिस के साथ हुज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सीरते मुक़द्दसा का तज़्किरा

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل ومن سب آل بيته...الخ،ج٢، ص ٣٠٧

2 ......صحيح البخارى،كتاب الشروط،باب الشروط فى الجهاد...الخ،الحديث:٢٧٣١،٢٧٣٢، ج٢،ص ٢٢٥

करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त आप कलाम फ़रमाते थे तो आप की मजलिस में बैठने वाले सहाबए किराम इस त़रह़ सर झुका कर ख़ामोश और सुकून के साथ बैठे रहा करते थे कि गोया उन के सरों पर परन्दे बैठे हुए हैं। जिस वक़्त आप ख़ामोश हो जाते तो सहाबए किराम गुफ़्तगू करते और कभी आप के सामने कलाम में तनाज़ुअ़ नहीं करते और जो आप के सामने कलाम करता आप तवज्जोह के साथ उस के कलाम को सुनते रहते यहां तक कि वोह ख़ामोश हो जाता।[1]

(شمائل ترمذی ص۲۵ باب ما جاء فی خلق النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स के तीन दौर

ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बिस्तरे मौत पर अपने साहिब ज़ादे से अपनी ज़िन्दगी के तीन दौर का तज़्किरा फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि मेरी पहली ह़ालत येह थी कि मैं कुफ़्र की ह़ालत में सब से ज़ियादा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का जानी दुश्मन था। अगर मैं उस ह़ालत में मर जाता तो यक़ीनन मैं दोज़ख़ी होता। दूसरी ह़ालत मुसलमान होने के बा'द थी कि कोई शख़्स मेरे नज़्दीक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा मह़बूब न था और मेरी आंखों में आप से ज़ियादा अ़ज़मत व जलालत वाला कोई भी न था। और मैं आप की हैबत की वजह से आप की त़रफ़ नज़र भर कर देख नहीं सकता था। येही वजह है कि अगर मुझ से **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का हुल्या दरयाफ़्त किया जाए तो मैं अच्छी त़रह़ बयान नहीं कर सकता अगर मैं इस ह़ाल पर मर गया तो मुझे उम्मीद है कि मैं अहले जन्नत में से होता। तीसरी ह़ालत मेरी गवर्नरी और हुकूमत की थी जिस में मुझे अपना ह़ाल मा'लूम नहीं।[2]

(مسلم جلد۱ ص۷۶ باب کون الاسلام یہدم ما قبلہ)

---

1 ......الشمائل المحمدية، باب ماجاء في خلق رسول الله، الحديث:٣٣٤، ص ١٩٨

2 ......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب كون الاسلام...الخ، الحديث:١٢١، ص ٧٤

कौन बड़ा ?

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़समान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते क़ुबास बिन उशैम से पूछा कि तुम बड़े हो या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ? उन्हों ने कहा कि बड़े तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही हैं मगर मेरी पैदाइश ह़ुज़ूर से पहले हुई है।(1)

(ترمذی جلد۲ص۲۰۲باب ماجاء فی میلاد النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

ह़ज़रते बरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का अदब

ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि मैं ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ दरयाफ़्त करने का इरादा रखता था मगर कमाले अदब और आप की हैबत से बरसों दरयाफ़्त नहीं कर सकता था।(2)

(شفاء شریف جلد۲ص۳۲)

आसारे शरीफ़ा की ता'ज़ीम

ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुक़द्दसा के अदबो एह़तिराम को ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم अपने ईमान की जान समझते थे। बल्कि वोह चीज़ें कि जिन को आप की ज़ाते वाला से कुछ तअ़ल्लुक़ व इनतिसाब हो उन की ता'ज़ीम व तौक़ीर को भी अपने लिये लाज़िमुल ईमान जानते थे। इसी त़रह़ ताबिईन और दूसरे सलफ़ सालिह़ीन भी आप के तबर्रुकात का बेह़द एह़तिराम और उन का ए'ज़ाज़ो इक्राम करते थे। इस की चन्द मिसालें हम ज़ैल में तह़रीर करते हैं जो अहले ईमान के लिये निहायत ही इ़ब्रत ख़ेज़ व नसीह़त आमोज़ हैं।

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب،باب ماجاء فی میلادالنبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم،الحدیث: ۳۶۳۹،ج۵،ص۳۵۶

2 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،فصل فی عادۃالصحابۃ فی تعظیمہ...الخ،ج۲،ص ۴۰

﴾1﴿ हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की टोपी में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चन्द मुक़द्दस बाल सिले हुए थे। किसी जंग में इन की टोपी सर से गिर पड़ी तो आप ने इतना ज़बर दस्त हम्ला कर दिया कि बहुत से मुजाहिदीन शहीद हो गए। आप के लश्कर वालों ने एक टोपी के लिये इतने शदीद हम्ले को पसन्द नहीं किया। लोगों का ता'ना सुन कर आप ने फ़रमाया कि मैं ने टोपी के लिये येह हम्ला नहीं किया था बल्कि मेरे इस हम्ले की येह वजह थी कि मेरी इस टोपी में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक हैं मुझे येह अन्देशा हो गया कि मैं इन की बरकतों से कहीं मह़रूम न हो जाऊं और येह कुफ़्फ़ार के हाथों में पहुंच न जाएं इस लिये मैं ने अपनी जान पर खेल कर इस टोपी को उठा कर ही दम लिया।[1] (شفاء شریف جلد۲ ص۴۴)

﴾2﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मिम्बर शरीफ़ पर जिस जगह आप बैठते थे ख़ास उस जगह पर अपना हाथ फिरा कर अपने चेहरे पर मस्ह़ किया करते थे।[2] (شفاء شریف جلد۲ ص۴۴)

﴾3﴿ हज़रते अबू मह़ज़ूरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो सह़ाबी और मस्जिदे ह़राम के मुअज़्ज़िन हैं इन के सर के अगले हिस्से में बालों का एक जोड़ा था। जब वोह ज़मीन पर बैठते और उस जोड़े को खोल देते तो बाल ज़मीन से लग जाते थे। किसी ने उन से कहा कि आप इन बालों को मुंडवाते क्यूं नहीं? आप ने जवाब दिया कि मैं इन बालों को मुंडवा नहीं सकता क्यूं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे इन बालों को अपने दस्ते मुबारक से मस्ह़ फ़रमा दिया है।[3] (شفاء شریف جلد۲ ص۴۴)

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى ، فصل ومن اعظامه واكباره...الخ ، ج٢، ص ٥٦،٥٧

2 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى،فصل ومن اعظامه واكباره...الخ ،ج٢، ص ٥٧

3 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى،فصل ومن اعظامه واكباره...الخ ،ج٢، ص ٥٦

﴿4﴾ ह़ज़रते साबित बुनानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मुझ से ह़ज़रते अनस बिन मालिक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह फ़रमाइश की, कि येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस बाल है मैं जब मर जाऊं तो तुम इस को मेरी ज़बान के नीचे रख देना। चुनान्चे मैं ने उन की वसिय्यत के मुत़ाबिक़ उन की ज़बान के नीचे रख दिया और वोह इसी ह़ालत में दफ़्न हुए।[1] (اصابہ ترجمہ انس بن مالک)

इसी त़रह़ ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उमवी ख़लीफ़ए आ़दिल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात का वक़्त आया तो उन्हों ने **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चन्द मूए मुबारक और नाख़ुन दिखा कर लोगों से वसिय्यत फ़रमाई कि इन तबर्रुकात को आप लोग मेरे कफ़न में रख दें। चुनान्चे ऐसा ही किया गया।[2] (طبقات ابن سعد جلد۵ ص۳۰۰)

﴿5﴾ ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ को चन्द घोड़े इनायत फ़रमाए तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि एक घोड़ा आप अपनी सुवारी के लिये रख लीजिये तो आप ने फ़रमाया कि मुझ को बड़ी शर्म आती है कि जिस शहर की ज़मीन में **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे हैं उस शहर की ज़मीन को मैं अपनी सुवारी के जानवर के ख़ुरों से रौंदवाऊं। (चुनान्चे ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी ज़िन्दगी भर मदीने ही में रहे मगर कभी किसी सुवारी पर मदीनए मुनव्वरह में सुवार नहीं हुए।)[3] (شفاء شریف ج۲ ص۴۴)

﴿6﴾ ह़ज़रते अह़मद बिन फ़ज़्लविय्या जिन का लक़ब ज़ाहिद है, येह बहुत बड़े मुजाहिद थे और तीर अन्दाज़ी में बहुत ही बा कमाल थे। इन का बयान है कि जब से मुझे येह ह़दीस पहुंची है कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से कमान भी उठाई है। उस वक़्त से मैं कमान का

---

1 ......الاصابة فی تمييز الصحابة ، انس بن مالك بن النضر ، ج ١ ، ص ٢٧٦

2 ......الطبقات الكبرى لابن سعد ، عمربن عبدالعزيز، ج ٥، ص ٣١٨

3 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى،فصل ومن اعظامه واكباره...الخ ، ج ٢ ، ص ٥٧

इतना अदबो एह्तिराम करता हूं कि बिला वुज़ू किसी भी कमान को हाथ नहीं लगाता।[1] (شفاء شریف ج۲ص۴۴)

《7》 ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सामने किसी ने येह कह दिया कि "मदीने की मिट्टी ख़राब है" येह सुन कर ह़ज़रते इमाम मौसूफ़ ने येह फ़तवा दिया कि इस गुस्ताख़ को तीस दुर्रे लगाए जाएं और इस को क़ैद में डाल दिया जाए और येह भी फ़रमाया कि उस शख़्स को क़त्ल कर देने की ज़रूरत है जो येह कहे कि मदीने की मिट्टी अच्छी नहीं है।[2] (شفاء شریف ج۲ص۴۴)

《8》 एक दिन सक़ीफ़ए बनी साइदा में **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ रौनक़ अफ़्रोज़ थे। आप ने ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया कि हमें पानी पिलाओ। चुनान्चे ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक प्याले में आप को पानी पिलाया। ह़ज़रते अबू ह़ाज़िम का बयान है कि हम लोग ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द के यहां मेहमान हुए तो उन्हों ने वोही प्याला हमारे वासिते़ निकाला और बरकत ह़ासिल करने के लिये हम लोगों ने उसी प्याले में पानी पिया। उस प्याले को ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उमवी ख़लीफ़ए आ़दिल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द से मांग कर अपने पास रख लिया।[3] (صحیح مسلم جلد۲ص۱۶۹باب اباحۃ النبیذ الذی الخ)

《9》 जब बनू ह़नीफ़ा का वफ़्द बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा तो उस वफ़्द में ह़ज़रते सियार बिन त़लक़ यमामी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी थे उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मुझे अपने पैराहन शरीफ़ का एक टुकड़ा इनायत फ़रमाइये मैं इस से अपना दिल बहलाया

---

1 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى،فصل ومن اعظامه واكباره...الخ ،ج٢، ص ٥٧

2 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى،فصل ومن اعظامه واكباره...الخ ،ج٢، ص ٥٧

3 ......صحيح مسلم ،كتاب الاشربة ، باب اباحة النبيذ...الخ،الحديث:٢٠٠٧،ص١١١٢

करूंगा। हुज़ूर ने उन की दरख़्वास्त को मंज़ूर फ़रमा कर उन को पैराहन शरीफ़ का एक टुकड़ा दे दिया। उन के पोते मुहम्मद बिन जाबिर का बयान है कि मेरे वालिद कहते हैं कि वोह मुक़द्दस टुकड़ा बरसहा बरस हमारे पास था और हम उस को धो कर ब गरज़े शिफ़ा बीमारों को पिलाया करते थे।[1] (اصابہ ترجمہ سیار بن طلق)

﴾10﴿ मशक का मुंह काट लिया

एक सहाबिय्या हज़रते कुबशा अन्सारिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के घर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए और उन की मशक के मुंह से आप ने अपना मुंह लगा कर पानी नोश फ़रमा लिया तो हज़रते कुबशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने उस मशक का मुंह काट कर तबर्रुकन अपने पास रख लिया।[2] (ابن ماجہ ص۲۵۳ باب الشرب قائماً)

﴾11﴿ **हुज़ूरे अक़्दस** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस तलवार "ज़ुलफ़िक़ार" हज़रते ज़ैनुल आबिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास थी। जब हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत के बा'द वोह मदीनए मुनव्वरा वापस आए तो हज़रते मिस्वर बिन मख़्रमा सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन से कहा कि मुझे येह ख़तरा महसूस हो रहा है कि बनू उमय्या आप से इस तलवार को छीन लेंगे। इस लिये आप मुझे वोह तलवार दे दीजिये जब तक मेरे जिस्म में जान है कोई इस को मुझ से नहीं छीन सकता।[3]

(بخاری جلد۱ ص۴۳۸ باب ماذکر من درع النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

---

1 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،سیار بن طلق الیمامی ،ج۳، ص ۱۹٤

2 ......سنن ابن ماجه ،کتاب الاشربة، باب الشرب قائما،الحدیث:۳٤۲۳،ج٤، ص ۸۰

3 ......صحیح البخاری،کتاب فرض الخمس،باب ماذکرمن درع النبی...الخ،الحدیث: ۳۱۱۰،ج۲،ص ۳٤٤

﴾6﴿ मद्हे रसूल

हर उम्मती पर येह भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़क़ है जिस को अदा करना उम्मत पर लाज़िम है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मद्ह़ो सना का हमेशा ए'लान और चरचा करते रहें और उन के फ़ज़ाइलो कमालात को अ़लल ए'लान बयान करते रहें।

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़ज़ाइल व महासिन का ज़िक्रे जमील रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُہٗ और तमाम अम्बिया व मुर्सलीन علیهم الصلوٰۃ والتسلیم का मुक़द्दस त़रीक़ा है। ह़ज़रते ह़क़ جل مجدہٗ ने क़ुरआने करीम को अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मद्ह़ो सना के क़िस्म क़िस्म के गुलहाए रंगा रंग का एक ह़सीन गुलदस्ता बना कर नाज़िल फ़रमाया है और पूरे क़ुरआन में आप की मुक़द्दस ना'त व सिफ़ात की आयाते बय्यिनात इस त़रह़ चमक चमक कर जगमगा रही हैं जिस त़रह़ आस्मान पर सितारों की बरात अपनी तजल्लियात का नूर बिखेरती रहती है। और अम्बियाए साबिक़ीन की मुक़द्दस आस्मानी किताबें भी ए'लान कर रही हैं कि हर नबी व रसूल, **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मद्ह़ो सना का नक़ीब और इन के फ़ज़ाइल व महासिन का ख़त़ीब बन कर उम्र भर फ़ज़ाइले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो कमाल और इन के जाहो जलाल का डंका बजाता रहा। येही वजह है कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के मुक़द्दस दौर में हज़ारों अस्ह़ाबे किबार हर कूचा व बाज़ार और मैदाने कारज़ार में ना'ते रसूल के नग़्मों से इन्क़िलाबे अ़ज़ीम बरपा कर के ऐसे ऐसे अ़ज़ीम शाहकार आ़लमे वुजूद में लाए कि काएनाते हस्ती में हिदायत की नसीमे बहार से हज़ारों गुलज़ार नुमूदार हो गए। और दौरे सह़ाबा से आज तक प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ुश नसीब मद्दाह़ों ने नज़्म व नस्र में ना'ते पाक का इतना बड़ा ज़ख़ीरा जम्अ़ कर दिया है कि अगर इन का शुमार किया जाए तो दफ़्तरों के अवराक़ तो क्या रूए ज़मीन की वुस्अ़त भी इन की ताब न ला सकेगी।

हज़रते हस्सान बिन साबित और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा, का'ब बिन ज़ुहैर वग़ैरा सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने दरबारे नुबुव्वत का शाइर होने की हैसिय्यत से ऐसी ऐसी ना'ते पाक की मिसालें पेश कीं कि आज तक बड़े बड़े बा कमाल शुअ़रा इन को सुन कर सर धुनते रहते हैं और اِنۡ شَآءَ اللّٰہ تعالٰی क़ियामत तक **हुज़ूर** सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मद्हो सना का चर्चा नज़्म व नस्र में इसी शान से होता रहेगा।

रहेगा यूं ही उन का चरचा रहेगा पड़े ख़ाक हो जाएं जल जाने वाले

﴾7﴿ दुरूद शरीफ़

हर मुसलमान पर वाजिब है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहे। चुनान्चे ख़ालिक़े काएनात جَلَّ جَلَالُہٗ का हुक्म है कि

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّھَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا ۝ (1)

(احزاب)

*बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं ऐ मोमिनो ! तुम भी उन पर दुरूद भेजते रहो और उन पर सलाम भेजते रहो जैसा कि सलाम भेजने का ह़क़ है।*

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जो मुझ पर एक मरतबा दुरुद शरीफ़ भेजता है **अल्लाह** तआ़ला उस पर दस मरतबा दुरूद शरीफ़ (रह़मत) भेजता है।[2]

اَللّٰہُ اَکۡبَر ! शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने मह़बूबिय्यत का क्या कहना ! एक ह़क़ीर व ज़लील बन्दा ख़ुदा के पैग़म्बरे जमील की बारगाहे अ़ज़मत में दुरूद शरीफ़ का हदिय्या भेजता

---

1 ......پ۲۲،الاحزاب:۵٦

2 ......صحیح مسلم،کتاب الصلوۃ،باب الصلوۃعلی النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، الحدیث: ۴۰۸،ص۲۱٦

है तो खुदा वन्दे जलील उस के बदले में दस रह़मतें उस बन्दे पर नाज़िल फ़रमाता है।

दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल व फ़वाइद बहुत ज़ियादा हैं यहां ब नज़रे इख़्तिसार हम ने उस का ज़िक्र नहीं किया। खुदा वन्दे करीम हम तमाम मुसलमानों को ज़ियादा से ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

﴾8﴿ क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुक़द्दसा की ज़ियारत सुन्नते मुअक्कदा क़रीबे वाजिब है। अल्लाह तआ़ला ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝ (1) (نساء)

और अगर येह लोग जिस वक़्त कि अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं आप के पास आ जाते और खुदा से बख़्शिश मांगते और रसूल उन के लिये बख़्शिश की दुआ़ फ़रमाते तो येह लोग खुदा को बहुत ज़ियादा बख़्शने वाला मेहरबान पाते।

इस आयत में गुनाहगारों के गुनाह की बख़्शिश के लिये अरह़मुर्राह़िमीन ने तीन शर्तें लगाई हैं अव्वल दरबारे रसूल में ह़ाज़िरी। दुवुम इस्तिग़फ़ार। सिवुम रसूल की दुआ़ए मग़फ़िरत। और येह हुक्म हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी दुन्यवी ह़यात ही तक मह़दूद नहीं बल्कि रौज़ए अक़्दस में ह़ाज़िरी भी यक़ीनन दरबारे रसूल ही में ह़ाज़िरी है। इसी लिये उ़लमाए किराम ने तस्रीह़ फ़रमा दी है कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दरबार का येह फ़ैज़ आप की वफ़ाते अक़्दस से मुन्क़तेअ़ नहीं हुवा है। इस लिये जो गुनाहगार क़ब्रे अन्वर के पास ह़ाज़िर हो जाए और वहां खुदा से इस्तिग़फ़ार

---

(1)......پ٥، النساء: ٦٤

करे और चूंकि **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तो अपनी क़ब्रे अन्वर में अपनी उम्मत के लिये इस्तिग़फ़ार फ़रमाते ही रहते हैं। लिहाज़ा उस गुनाहगार के लिये मग़फ़िरत की तीनों शर्तें पाई गईं। इस लिये ان شاءاللہ تعالیٰ उस की ज़रूर मग़फ़िरत हो जाएगी।

येही वजह है कि चारों मज़ाहिब के उ़लमाए किराम ने मनासिके ह़ज व ज़ियारत की किताबों में येह तह़रीर फ़रमाया है कि जो शख़्स भी रौज़ए मुनव्वरा पर ह़ाज़िरी दे उस के लिये मुस्तह़ब है कि इस आयत को पढ़े और फिर ख़ुदा से अपनी मग़फ़िरत की दुआ़ मांगे।

मज़्कूरा बाला आयते मुबारका के इ़लावा बहुत सी ह़दीसें भी रौज़ए मुनव्वरह की ज़ियारत के फ़ज़ाइल में वारिद हुई हैं जिन को अ़ल्लामा सम्हूदी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "वफ़ाउल वफ़ा" और दूसरे मुस्तनद सलफ़ सालिह़ीन उ़लमाए दीन ने अपनी अपनी किताबों में नक़्ल फ़रमाया है। हम यहां मिसाल के तौर पर सिर्फ़ तीन ह़दीसें बयान करते हैं।

﴿1﴾ مَنْ زَارَ قَبْرِی وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ[1] (دار قطنی وبیہقی وغیرہ)

जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।

﴿2﴾ مَنْ حَجَّ الْبَيْتَ وَلَمْ يَزُرْنِىْ فَقَدْ جَفَانِىْ[2] (کامل ابن عدی)

जिस ने बैतुल्लाह का ह़ज किया और मेरी ज़ियारत न की उस ने मुझ पर ज़ुल्म किया।

﴿3﴾ مَنْ زَارَنِیْ بَعْدَ مَوْتِیْ فَكَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَيَاتِیْ وَمَنْ مَّاتَ بِاَحَدِ الْحَرَمَيْنِ بُعِثَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ[3] (دار قطنی وغیرہ)

---

1 ......سنن الدار قطنی ، کتاب الحج ، باب المواقیت، الحدیث:٢٦٦٩،ج٢،ص ٣٥١

2 ......الکامل فی ضعفاء الرجال ، النعمان بن شبل الباھلی البصری،ج٨، ص ٢٤٨

3 ......سنن الدار قطنی ، کتاب الحج ، باب المواقیت، الحدیث:٢٦٦٨،ج٢، ص ٣٥١

जिस ने मेरी वफ़ात के बा'द मेरी ज़ियारत की उस ने गोया मेरी ह़यात में मेरी ज़ियारत की और जो ह़रमैने शरीफ़ैन में से एक में मर गया वोह क़ियामत के दिन अम्न वालों की जमाअ़त में उठाया जाएगा।

इसी लिये सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के मुक़द्दस ज़माने से ले कर आज तक तमाम दुन्या के मुसलमान क़ब्रे मुनव्वरह की ज़ियारत करते और आप की मुक़द्दस जनाब में तवस्सुल और इस्तिग़ासा करते रहे हैं और ان شاءاللہ تعالیٰ क़ियामत तक येह मुबारक सिल्सिला जारी रहेगा।

चुनान्चे ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि वफ़ाते अक़्दस के तीन दिन बा'द एक आ'राबी मुसलमान आया और क़ब्रे अन्वर पर गिर कर लिपट गया फिर कुछ मिट्टी अपने सर पर डाल कर यूं अ़र्ज़ करने लगा कि

या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप ने जो कुछ फ़रमाया हम उस पर ईमान लाए हैं। **अल्लाह** तआ़ला ने आप पर कु़रआन नाज़िल फ़रमाया जिस में उस ने इरशाद फ़रमाया : وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ...الخ[1] तो या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं ने अपनी जान पर (गुनाह कर के) ज़ुल्म किया है इस लिये मैं आप के पास आया हूं ताकि आप मेरे ह़क़ में मग़फ़िरत की दुआ़ फ़रमाएं। आ'राबी की इस फ़रयाद के जवाब में क़ब्रे अन्वर से आवाज़ आई कि "ऐ आ'राबी ! तू बख़्श दिया गया।"[2]

(وفاء الوفا جلد۲ص۴۱۲)

ज़रूरी तम्बीह

नाज़िरीने किराम येह सुन कर ह़ैरान होंगे कि मैं ने ब चश्मे खुद देखा है कि गुम्बदे ख़ज़रा के अन्दर मुवाजहए अक़्दस और उस के क़रीब मस्जिदे नबवी की दीवारों पर क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत के फ़ज़ाइल के बारे

---

1 ......پ٥،النسآء:٦٤

2 ......وفاء الوفاء للسمهودی ، الفصل الثانی فی بقیة ادلة الزیارة...الخ،ج٢، ص ١٣٦١

में जो ह़दीसें कन्दा की हुई थीं, नज्दी हुकूमत ने उन ह़दीसों पर मसाला लगवा कर उन को मिटाने की कोशिश की है अगर्चे अब भी उस के बा'ज़ ह़ुरूफ़ ज़ाहिर हैं। इसी त़रह़ मस्जिदे नबवी के गुम्बदों के अन्दरूनी ह़िस्से में क़सीदए बुर्दा शरीफ़ के जिन अश्आ़र में तवस्सुल व इस्तिग़ासा के मज़ामीन थे उन सब को मिटा दिया गया है। बाक़ी अश्आ़र बाक़ी गुम्बदों पर उस वक़्त तक बाक़ी थे। मैं ने जो कुछ देखा है वोह जूलाई सि. 1959 ई. का वाक़िआ़ है इस के बा'द वहां क्या तब्दीली हुई इस का ह़ाल हुज्जाजे किराम से दरयाफ़्त करना चाहिये।

इब्ने तीमिया का फ़तवा

बा'ज़ लोग अम्बियाए किराम और औलिया व शुहदा के मज़ारों की त़रफ़ सफ़र करने को ह़राम व ना जाइज़ बताते हैं। चुनान्चे वहाबियों के मूरिसे आ'ला इब्ने तीमिया ने तो खुले अल्फ़ाज़ में येह फ़तवा दे दिया कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुबारका के क़स्द से सफ़र करना गुनाह है इस लिये इस सफ़र में नमाज़ों के अन्दर क़स्र जाइज़ नहीं। (مَعَاذَاللّٰه)

इब्ने तीमिया के इस फ़तवे से शाम व मिस्र में बहुत बड़ा फ़ितना बरपा हो गया। चुनान्चे शामियों ने इब्ने तीमिया के बारे में उ़लमाए ह़क़ से इस्तिफ़्ता त़लब किया और अ़ल्लामा बुरहान बिन काह़ फ़ज़ारी ने तक़रीबन चालीस सत़रों में फ़तवा लिख कर इब्ने तीमिया को "काफ़िर" बताया और अ़ल्लामा शहाब बिन जहबल ने इस फ़तवे पर अपनी मोहरे तस्दीक़ लगाई। फिर मिस्र में येही फ़तवा ह़नफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, ह़म्बली, चारों मज़ाहिब के क़ाज़ियों के सामने पेश किया गया। चुनान्चे अ़ल्लामा बद्र बिन जमाअ़ा शाफ़ेई ने इस पर येह फ़ैसला तह़रीर फ़रमाया कि इब्ने तीमिया को ऐसे फ़तावा बात़िला से ब ज़ज्र व तौबीख़ मन्अ़ किया जाए अगर बाज़ न आए तो उस को क़ैद कर दिया जाए और मुह़म्मद बिन अल जरीरी ह़नफ़ी ने येह हुक्म दिया कि इसी वक़्त बिला किसी शर्त़ के उस को क़ैद किया जाए और मुह़म्मद बिन अबी बक्र मालिकी

ने येह हुक्म दिया कि इस को इस क़िस्म की ज़ज्र व तौबीख़ की जाए कि वोह ऐसे मफ़ासिद से बाज़ आ जाए और अह़मद बिन उ़मर मक़्दसी ह़म्बली ने भी ऐसा ही हुक्म लिखा । नतीजा येह हुवा कि इब्ने तीमिया शा'बान सि. 726 हि. में दिमश्क़ के क़लए के अन्दर क़ैद किया गया और जेलख़ाने ही में 20 ज़ुल क़ा'द सि. 728 हि. को वोह इस दुन्या से रुख़्सत हुवा । मुवाख़ज़ए उख़्रवी अभी बाक़ी है ।[1] (منقول از سیرت رسول عربی ص۵۳۳)

ह़दीस "لاتشدالرحال"

इब्ने तीमिया और इस की मा'नवी औलाद या'नी फ़िर्क़ए वहाबिया क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत से मन्अ़ करने के लिये बुख़ारी की इस ह़दीस को बतौरे दलील के पेश करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि

لَا تُشَدُّ الرِّحَالُ اِلَّا اِلٰی ثَلٰثَةِ مَسَاجِدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ مَسْجِدِ الرَّسُوْلِ وَمَسْجِدِ الْاَقْصٰی.[2]

कजावे न बांधे जाएं मगर तीन ही मस्जिदों या'नी मस्जिदे ह़राम व मस्जिदे रसूल व मस्जिदे अक़्सा की त़रफ़ । (بخاری جلد۱ص۱۵۸باب فضل الصلوٰۃ فی مسجد مکۃ والمدینۃ)

इस ह़दीस का सीधा सादा मत़लब जिस को तमाम शर्राहे ह़दीस ने समझा है येही है कि तमाम दुन्या में तीन ही मस्जिदें या'नी मस्जिदे ह़राम, मस्जिदे रसूल, मस्जिदे अक़्सा ऐसी मसाजिद हैं जिन को तमाम दुन्या की मस्जिदों पर अज्रो सवाब के मुआ़मले में एक ख़ास फ़ज़ीलत ह़ासिल है । लिहाज़ा इन तीन मस्जिदों की त़रफ़ कजावे बांध कर दूर दूर से सफ़र कर के जाना चाहिये लेकिन इन तीन मस्जिदों के सिवा चूंकि दुन्या भर की तमाम मस्जिदें अज्रो सवाब के मुआ़मले में बराबर हैं । इस लिये

---

1 ......سیرت رسول عربی ، باب امت پر آنحضرت صلی اللّٰہ علیہ وسلم کے حقوق کا بیان ، ص۵۰۵

2 ......صحیح البخاری ، کتاب فضل الصلاۃ فی مسجد مکۃ والمدینۃ، باب فضل الصلاۃ...الخ، الحدیث: ۱۱۸۹،ج۱، ص ۴۰۱

इन तीन मस्जिदों के सिवा किसी दूसरी मस्जिद की त़रफ़ कजावे बांध कर दूर दूर से सफ़र करने की कोई ज़रूरत नहीं है। इस ह़दीस को मशाहदए मक़ाबिर की त़रफ़ सफ़र करने या न करने से तो कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है।

अगर इस बात को आ़लिमों की ज़बान में समझना हो तो यूं समझिये कि इस ह़दीस में اِلَّا اِلٰی ثَلٰثَةِ مَسَاجِد मुस्तसना मफ़रग़ है और "मुस्तसना मफ़रग़" में "मुस्तसना मिन्ह" हमेशा वोही मुक़द्दर माना जाएगा जो मुस्तसना की नौअ़ हो मसलन "مَا جَاءَنِیْ اِلَّا زَیْدٌ" में लफ़्ज़ جِسْمٌ या حَیْوَانٌ को मुस्तसना मिन्ह मुक़द्दर नहीं माना जाएगा और इस इबारत का मत़लब "مَاجَاءَنِیْ جِسْمٌ اِلَّا زَیْدٌ" या "مَاجَاءَنِیْ حَیْوَانٌ اِلَّا زَیْدٌ" नहीं माना जाएगा बल्कि इस का मत़लब येही माना जाएगा कि "مَا جَاءَنِیْ رَجُلٌ اِلَّا زَیْدٌ" तो इस ह़दीस में भी "मुस्तसना मिन्ह" बजुज़ लफ़्ज़ "मस्जिद" और कोई दूसरा हो ही नहीं सकता लिहाज़ा ह़दीस की अस्ल इबारत येह हुई कि "لَا تُشَدُّ الرِّحَالُ اِلٰی مَسْجِدٍ اِلَّا اِلٰی ثَلٰثَةِ مَسَاجِد" या'नी तीन मस्जिदों के सिवा किसी दूसरी मस्जिद की त़रफ़ कजावे न बांधे जाएं।

चुनान्चे इस ह़दीस की बा'ज़ रिवायात में येह लफ़्ज़ भी आया है। मसलन एक रिवायत में यूं आया है कि لاینبغی للمطی ان یشد رحاله الی مسجد یبتغی فیه الصلاة غیر المسجد الحرام والمسجد الاقصیٰ ومسجدی هذا[1] (قسطلانی وعمدۃ القاری) या'नी सुवारियों पर कजावे किसी मस्जिद की त़रफ़ ब क़स्दे नमाज़ न बांधे जाएं सिवाए मस्जिदे ह़राम और मस्जिदे अक़्सा और मेरी इस मस्जिद के।

मुलाह़ज़ा फ़रमाइये कि इस ह़दीस में मुस्तसना मिन्ह का ज़िक्र कर दिया गया है और वोह اِلٰی مَسْجِدٍ है बहर ह़ाल वहाबिया خذلهم الله ने

1 ......عمدة القاری شرح صحیح البخاری، کتاب فضل الصلوة فی مسجدمکة والمدینة، باب فضل الصلاة فی مسجدمکة...الخ،تحت الحدیث:۱۱۸۹،ج۵،ص۵۶۳،۵۶۴،۵۶۶

अ़दावते रसूल में इस ह़दीस का मत़लब बयान करने में इतनी बड़ी जहालत का सुबूत दिया है कि क़ियामत तक तमाम अहले इ़ल्म इन की इस जहालत पर मातम करते रहेंगे।

बारगाहे ख़ुदा वन्दी में रसूल का वसीला

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बारगाहे इलाही में वसीला बना कर दुआ़ मांगना जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है। इसी को तवस्सुल व इस्तिग़ासा व तशफ़्फ़ुअ़ वग़ैरा मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से ता'बीर किया जाता है। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ख़ुदा के दरबार में वसीला बनाना येह ह़ज़राते अम्बिया मुर्सलीन की सुन्नत और सलफ़ सालिह़ीन का मुक़द्दस त़रीक़ा है। और येह तवस्सुल हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते शरीफ़ा से पहले आप की ज़ाहिरी ह़यात में और आप की वफ़ाते अक़्दस के बा'द तीनों ह़ालतों में साबित है। चुनान्चे हम यहां तीनों ह़ालतों में आप से तवस्सुल करने की चन्द मिसालें निहायत ही इख़्तिसार के त़ौर पर ज़िक्र करते हैं।

﴾1﴿ विलादत से क़ब्ल तवस्सुल

रिवायत है कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने दुन्या में आ कर बारी तआ़ला से यूं दुआ़ मांगी कि

يَارَبِّ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ اَنْ تَغْفِرَ لِیْ

ऐ मेरे परवर दगार ! मैं तुझ से मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से सुवाल करता हूं कि तू मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे।

अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ आदम ! तुम ने मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को किस त़रह़ पहचाना ह़ालां कि मैं ने अभी तक उन को पैदा भी नहीं फ़रमाया ? ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर दगार ! जब तूने मुझे पैदा फ़रमा कर मेरे बदन में

रूह़ फूंकी तो मैं ने सर उठा कर देखा कि अ़र्शे मजीद के पायों पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ लिखा हुवा है। इस से मैं ने समझ लिया कि तूने जिस के नाम को अपने नाम के साथ मिला कर अ़र्श पर तह़रीर कराया है वोह यक़ीनन तेरा सब से बड़ा मह़बूब होगा। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ आदम (عَلَیْہِ السَّلَام) बेशक तुम ने सच कहा वोह मेरे नज़्दीक तमाम मख़्लूक़ से ज़ियादा मह़बूब हैं चूंकि तुम ने इन को मेरे दरबार में वसीला बनाया है इस लिये मैं ने तुम को मुआ़फ़ कर दिया और सुन लो कि अगर मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) न होते तो मैं तुम को पैदा न करता। इस ह़दीस को इमाम बैहक़ी ने रिवायत फ़रमाया है।[1]

(روح البیان سورۂ احزاب ص۲۳۰)

﴾2﴿ ज़ाहिरी ह़याते अक़्दस में तवस्सुल

ह़ज़राते सह़ाबए किराम आप की मुक़द्दस मजालिस में ह़ाज़िर हो कर जिस त़रह़ अपनी दीन व दुन्या की तमाम ह़ाजतें त़लब फ़रमाते थे इसी त़रह़ अपनी दुआ़ओं में आप को वसीला भी बनाया करते थे। बल्कि खुद **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बा'ज़ सह़ाबा को येह ता'लीम दी कि वोह अपनी दुआ़ओं में रसूल की मुक़द्दस ज़ात को खुदा वन्दे तआ़ला के दरबार में वसीला बनाएं। चुनान्चे "मो'जिज़ात" के ज़िक्र में आप एक नाबीना के बारे में येह ह़दीस पढ़ चुके कि एक नाबीना बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया कि आप **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ कर दें कि वोह मुझे आ़फ़िय्यत बख़्शे। आप ने फ़रमाया कि अगर तू चाहे तो मैं दुआ़ कर देता हूं और अगर तू चाहे तो सब्र कर, सब्र तेरे ह़क़ में अच्छा है। जब उस ने दुआ़ के लिये इस्रार किया तो आप ने उस को हुक्म दिया की तुम अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के यूं दुआ़ मांगो कि

---

1 ......تفسیر روح البیان ، الجزء الثانی والعشرون ، سورة الاحزاب ، ج۷، ص ۲۳۰

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيۡكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحۡمَةِ يَامُحَمَّدُ اِنِّیۡ تَوَجَّهۡتُ بِكَ اِلٰی رَبِّیۡ فِیۡ حَاجَتِیۡ هٰذِهٖ لِتَقۡضٰی لِیۡ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعۡهُ فِیَّ

या **अल्लाह** ! मैं तेरी बारगाह में सुवाल करता हूं और तेरे नबी, नबिय्ये रह़मत का वसीला पेश करता हूं या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं ने अपने परवर दगार की बारगाह में आप का वसीला पेश किया है अपनी इस ज़रूरत में ताकि वोह पूरी हो जाए या **अल्लाह** ! तू मेरे ह़क़ में **हुज़ूर** की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।

इस ह़दीस को तिरमिज़ी व नसाई ने रिवायत किया है और तिरमिज़ी ने फ़रमाया कि هذا حديث حسن صحيح غريب और इमाम बैहक़ी व त़बरानी ने भी इस ह़दीस को सह़ीह़ कहा है मगर इमाम बैहक़ी ने इतना और कहा है कि उस नाबीना ने ऐसा किया और उस की आंखें अच्छी हो गईं।[1]

(وفاء الوفا جلد۲ص۴۳۰)

दुआ़ए नबवी में वसीला

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ की वालिदए माजिदा ह़ज़रते फ़ाति़मा बिन्ते असद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا का जब इनतिक़ाल हुवा और उन की क़ब्र तय्यार हो गई तो खुद **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से उन की क़ब्र की लह़द खोदी फिर उस क़ब्र में लेट कर आप ने यूं दुआ़ फ़रमाई कि

या **अल्लाह** ! मेरी मां (चची) फ़ाति़मा बिन्ते असद को बख़्श दे और इस पर इस की क़ब्र को कुशादा फ़रमा दे। ब वसीला अपने नबी के और उन नबियों के वसीले से जो मुझ से पहले हुए हैं क्यूं कि तू अरह़मुर्राह़िमीन है।[2] (وفاء الوفاء جلد۲ص۸۹)

---

1 ......سنن الترمذی ، کتاب احادیث شتی ، باب:۱۱۸، الحدیث:۳۵۸۹،ج۵، ص ۳۳۶
و وفاء الوفا ء للسمهودی،الفصل الثالث فی تو سل الزائرو تشفعه...الخ،ج۲،ص۱۳۷۲

2 ......وفاء الوفاء للسمهودی،الفصل السادس القبور التی نزلها رسول اللّٰه...الخ،ج۲،ص۸۹۸۔۸۹۹

जब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बचपन में अबू त़ालिब की कफ़ालत में थे तो हुज़ूर की येह चची या'नी अबू त़ालिब की बीवी फ़ात़िमा बिन्ते असद आप का बड़ा ख़ास ख़याल रखती थीं येह उसी एह़सान का बदला था कि आप ने इन को अपनी चादरे मुबारक का कफ़न पहनाया और खुद अपने दस्ते रह़मत से उन की क़ब्र की लह़द खोदी और उन की क़ब्र में कुछ देर लेट कर दुआ़ फ़रमाई।

اَللّٰهُ اَكْبَر ! वल्लाह ! उस क़ब्र में क़ियामत तक रह़मत के फूलों की बारिश होती रहेगी जिस क़ब्र वाले पर रह़मतुल्लिल आ़लमीन की रह़मत का इतना बड़ा करम हुवा।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى نَبِيِّكَ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ دَائِمًا اَبَدًا

﴾3﴿ वफ़ाते अक़्दस के बा'द तवस्सुल

वफ़ाते अक़्दस के बा'द भी ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم अपनी ह़ाजतों और मुसीबतों के वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी दुआ़ओं में वसीला बनाया करते थे बल्कि आप को पुकार कर आप से इस्तिग़ासा किया करते थे।

बारिश के लिये इस्तिग़ासा

ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में क़ह़त़ पड़ गया तो ह़ज़रते बिलाल बिन ह़ारिस सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! अपनी उम्मत के लिये बारिश की दुआ़ फ़रमाएं वोह हलाक हो रही है। रसूल صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में उन से इरशाद फ़रमाया कि तुम ह़ज़रते उ़मर के पास जा कर मेरा सलाम कहो और बिशारत दे दो कि बारिश होगी और येह भी कह दो कि वोह नर्मी इख़्तियार करें। उस शख़्स ने बारगाहे ख़िलाफ़त में ह़ाज़िर हो कर ख़बर कर दी। ह़ज़रते उ़मर

رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ येह सुन कर रोए फिर कहा ऐ रब ! मैं कोताही नहीं करता मगर उसी चीज़ में कि जिस से मैं आ़जिज़ हूं ।[1] (وفاءالوفاء)

फ़त्ह़ के लिये आप का वसीला

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुरत़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के हाथ अपना ख़त़ अमीरे लश्कर ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के नाम मक़ामे "यरमूक" में भेजा और सलामती की दुआ़ मांगी । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुरत़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ जब मस्जिदे नबवी से बाहर आए तो उन को ख़याल आया कि मुझ से बड़ी ग़लत़ी हुई कि मैं ने रौज़ए अक़्दस पर सलाम नहीं अ़र्ज़ किया । चुनान्चे वापस जा कर जब क़ब्रे अन्वर के पास ह़ाज़िर हुए तो वहां ह़ज़रते आ़इशा, ह़ज़रते अ़ब्बास, व ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते इमामे ह़सन व ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ह़ाज़िर थे । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुरत़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उन ह़ज़रात से जंगे यरमूक में इस्लाम की फ़त्ह़ के लिये दुआ़ की दरख़्वास्त की तो ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने हाथ उठा कर यूं दुआ़ मांगी कि

या **अल्लाह** ! हम उस नबिय्ये मुस्त़फ़ा और रसूले मुज्तबा कि जिन के वसीले से ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ क़बूल हो गई और ख़ुदा ने उन को मुआ़फ़ फ़रमा दिया इन ही के वसीले से दुआ़ करते हैं कि तू ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुरत़ पर इस का रास्ता आसान कर दे और दूर को नज़दीक कर दे और अपने नबी के अस्ह़ाब की मदद फ़रमा कर उन को फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमा दे ।

इस के बा'द ह़ज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुरत़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया की अब आप जाइये । **अल्लाह** तआ़ला ह़ज़रते उ़मर व अ़ब्बास व अ़ली व ह़सन व ह़ुसैन व अज़्वाजे नबी

---

1 ......وفاء الوفاء للسمهودى ، الفصل الثالث فى توسل الزائر وتشفعه...الخ، ج٢، ص ١٣٧٤

(رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم) की दुआ़ को रद नहीं फ़रमाएगा जब कि इन लोगों ने उस की बारगाह में उस नबी का वसीला पकड़ा है जो अक्रमुल ख़ल्क़ हैं।[1]

(فتوح الشام جلد اول ص ۱۰۵)

ह़ज़रते उ़मर की दुआ़ में वसीला

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का बयान है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जब उन के दौरे ख़िलाफ़त में क़ह़त़ पड़ जाता था तो वोह बारिश के लिये इस त़रह़ दुआ़ मांगा करते थे कि

या अल्लाह ! हम तेरे नबी को वसीला बना कर दुआ़ मांगा करते थे तो उस वक़्त तू हम को बारिश दिया करता था अब हम तेरे दरबार में तेरे नबी के चचा (ह़ज़रते अ़ब्बास) को वसीला बना कर दुआ़ करते हैं लिहाज़ा तू हम को बारिश अ़त़ा फ़रमा।[2] (بخاری جلد۱ ص ۱۳۷ باب سوال الناس الامام الاستسقاء)

अल ग़रज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم اَجۡمَعِین के बा'द ताबिईन व तबए़ ताबिईन और दूसरे सलफ़ सालिह़ीन ने हमेशा हुज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस से तवस्सुल व इस्तिग़ासे का सिल्सिला जारी रखा और बि ह़म्दिही तआ़ला अहले सुन्नत व जमाअ़त में आज तक इस का सिल्सिला जारी है। और ان شاءاللہ تعالیٰ क़ियामत तक जारी रहेगा। इस सिल्सिले में सेंकड़ों ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़त पेशे नज़र हैं। लेकिन किताब के त़वील हो जाने का ख़त़रा क़लम पर करफ़्यू लगाए हुए है फिर भी चन्द वाक़िआ़त तह़रीर करता हूं।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अस्सी दीनार अ़त़ा फ़रमाए

मश्हूर ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुन्कदिर (मुतवफ़्फ़ा सि. 205 हि.) का बयान है कि एक शख़्स ने मेरे वालिद के पास अस्सी

---

1 ......فتوح الشام،جبلة بن الايهم،الجزء١،ص١٦٧۔١٦٩

2 ......صحيح البخاری ،كتاب الاستسقاء ، باب سؤال الناس الامام ...الخ،الحديث:١٠١٠، ج١، ص ٣٤٦

दीनार बतौरे अमानत रखे और येह कह कर जिहाद में चला गया कि मेरी वापसी तक अगर तुम्हें इस की ज़रूरत पड़े तो खुद खर्च कर लेना। वालिद ने क़ह्त़ साली में येह रक़म खर्च कर डाली। उस शख़्स ने जिहाद से वापस आ कर अपनी रक़म का मुत़ालबा किया। वालिद ने उस से वा'दा कर लिया कि कल आना और रात मस्जिदे नबवी में गुज़ारी कभी क़ब्रे अन्वर से लिपटते, कभी मिम्बरे अत़्हर से चिमटते इसी ह़ाल में सुब्ह़ कर दी अभी कुछ अंधेरा ही था कि ना गहां एक शख़्स नुमूदार हुवा वोह येह कह रहा था कि ऐ अबू मुह़म्मद ! येह लो ! वालिद ने हाथ बढ़ाया तो क्या देखते हैं कि वोह एक थेली है जिस में अस्सी दीनार हैं सुब्ह़ को वालिद ने वोही दीनार उस शख़्स को दे दिये।[1]

क़ब्रे अन्वर से रोटी मिली

मश्हूर बुज़ुर्ग और सूफ़ी ह़ज़रते इब्ने जलाद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि मैं मदीनए मुनव्वरह में दाख़िल हुवा और फ़ाक़े से था मैं ने क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं आप का मेहमान हूं इतना अ़र्ज़ कर के मैं सो गया। ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे एक रोटी इनायत फ़रमाई आधी मैं ने खा ली। जब आंख खुली तो आधी रोटी मेरे हाथ में थी।[2]

इमाम त़बरानी को कैसे खाना मिला ?

इमाम अबू बक्र मक़री कहते हैं कि मैं और इमाम त़बरानी और अबू शैख़ तीनों ह़रमे नबवी में फ़ाक़े से थे जब इ़शा का वक़्त आया तो मैं ने क़ब्र शरीफ़ के पास ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! "हम लोग भूके हैं।" येह अ़र्ज़ कर के मैं लौट आया। इमाम अबुल क़ासिम त़बरानी ने मुझ से कहा कि बैठो रिज़्क़

1 ......وفاء الوفاء للسمهودى،الفصل الثالث فى توسل الزائر...الخ،ج٢،ص ١٣٨٠، ١٣٨١

2 ......وفاء الوفاء للسمهودى ، الفصل الثالث فى توسل الزائر...الخ،ج٢،ص ١٣٨٠، ١٣٨١

आएगा या मौत। अबू बक्र मक़री का बयान है कि मैं और अबुश्शैख़ तो सो गए मगर त़बरानी बैठे हुए थे कि एक अ़लवी ने आ कर दरवाज़ा खटखटाया। हम ने खोला तो क्या देखते हैं कि उन के साथ दो ग़ुलाम हैं जिन में से हर एक के हाथ में एक टोकरी है जो क़िस्म क़िस्म के खानों से भरी हुई है। हम लोगों ने बैठ कर खाया और ख़याल किया कि बचे हुए खाने को ग़ुलाम ले लेगा मगर वोह बाक़ी खाना भी हमारे पास छोड़ कर चला गया। जब हम खाने से फ़ारिग़ हुए तो अ़लवी ने हम से कहा कि क्या तुम ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रयाद की थी क्यूं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में मुझे हुक्म दिया कि मैं तुम्हारे पास कुछ खाना ले जाऊं।[1]

एक ज़ालिम पर फ़ालिज गिरा

एक शख़्स ने रौज़ए अक़्दस के पास नमाज़े फ़ज्र के लिये अज़ान दी और जूंही उस ने "اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ" कहा, ख़ुद्दामे मस्जिद में से एक शख़्स ने उठ कर उस को एक ठप्पड़ मारा। उस शख़्स ने रो कर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! "आप के हुज़ूर में मेरे साथ येह सुलूक किया जाता है ?" उसी वक़्त उस ख़ादिम पर फ़ालिज गिरा। उसे वहां से उठा कर ले गए और वोह तीन दिन के बा'द मर गया।[2]

(تذکرۃ الحفاظ، مصباح الظلام وکتاب الوفاء وغیرہ)

अल ग़रज़ ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और औलियाए उ़ज़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से तवस्सुल और इस्तिग़ासा जाइज़ बल्कि मुस्तह़सन है। येही वजह है कि लाखों उ़लमाए रब्बानिय्यीन व औलियाए कामिलीन हर दौर में बुज़ुर्गाने दीन से नज़्म व नस्र में तवस्सुल व इस्तिग़ासा करते रहे और येही अहले सुन्नत व जमाअ़त का मुक़द्दस मज़हब है।

---

1 ......وفاء الوفاء للسمهودی، الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، ص ۱۳۸۰، ۱۳۸۱

2 ......وفاء الوفاء للسمهودی، الفصل الثالث فی توسل الزائر وتشفعه...الخ، ج۲، ص ۱۳۸۲

हज़रते इमामे आ'ज़म का इस्तिग़ासा

अगर हम इस की मिसालें तह़रीर करें तो किताब बहुत त़वील हो जाएगी मिसाल के तौर पर हम सिर्फ़ इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के क़सीदे में से तीन अश्आ़र तबर्रुकन नक़्ल करते हैं जिन में ह़ज़रते इमाम मौसूफ़ ने किस त़रह़ दरबारे रिसालत में अपना इस्तिग़ासा पेश किया है इस को ब निगाहे इ़ब्रत देखिये और इन्ही अश्आ़र पर हम अपनी **किताब** को **ख़त्म** करते हैं, मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

يَا سَيِّدَ السَّادَاتِ جِئْتُكَ قَاصِدًا
اَرْجُوْا رِضَاكَ وَاَحْتَمِىْ بِحِمَاكَ

اَنْتَ الَّذِىْ لَوْلَاكَ مَا خُلِقَ امْرَءٌ
كَلَّا وَّ لَا خُلِقَ الْوَرٰى لَوْلَاكَ

اَنَا طَامِعٌ بِالْجُوْدِ مِنْكَ وَلَمْ يَكُنْ
لِاَبِىْ حَنِيْفَةَ فِى الْاَنَامِ سِوَاكَ (قصيدهٔ نعمانيه)

तर्जमा : *ऐ सय्यिदुस्सादात ! मैं आप के पास क़स्द कर के आया हूं मैं आप की ख़ुश्नूदी का उम्मीद वार हूं और आप की पनाह गाह में पनाह गुज़ीन हूं। आप की वोह ज़ात है कि अगर आप न होते तो कोई आदमी पैदा न किया जाता और न कोई मख़्लूक़ आ़लमे वुजूद में आती। मैं आप के जूदो करम का उम्मीद वार हूं। आप के सिवा तमाम मख़्लूक़ में अबू ह़नीफ़ा का कोई सहारा नहीं !*

واخر دعونا ان الحمد للّٰه رب العٰلمين واكرم الصلوٰة وافضل السلام
على سيد المرسلين واله الطيبين اصحابه المكرمين وعلى اهل طاعته
اجمعين برحمته وهو ارحم الراحمين اٰمين يارب العالمين .

हदिय्यए सलाम ब हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

सलाम ऐ मुस्तफ़ा महबूबे रहमां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ मुज्तबा महबूबे यज़्दां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ मत्लए अन्वारे सुब्हां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ मम्बए अन्हारे एहसां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ ताजदारे बज़्मे इम्कां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ शहरे यारे मुल्के इरफ़ां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ यावरे मोहताजो सुल्तां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ गौहरे ताजे सुलैमां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ कारसाज़े दर्दे मन्दां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ सरफ़राज़े अ़र्शे यज़्दां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ क़िब्लए दिल, का'बए जां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ रूहे मिल्लत, जाने ईमां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ ख़ातिमे दौरे रसूलां, या रसूलल्लाह

सलाम ऐ काशिफ़े असरारे पिन्हां, या रसूलल्लाह

क़ित्अ़ए तारीख़े तस्नीफ़

अज़ : मौलवी फ़ज़्ले रसूल बिन ह़ज़रते मुसन्निफ़ مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی

ख़ुदा की शान ! लिखी आ'ज़मी ने जब सीरत
तो ख़ूब ख़ूब हुई मुल्ह़िदों की बैख़कुनी

निशाने ह़क़ से मिटाया तिलिस्मे बातिल को
ह़रीमे का'बा में जैसी हुई थी बुत शिकनी

है ताजदारे दो आलम की सीरते अक़्दस
है इस के ह़र्फ़ों पे क़ुरबान गौहरे यमनी

लिखी किताब बहुत मुख़्तसर मगर जामेअ़
कि सब ख़रीद सकें हों ग़रीब या कि धनी

क़बूल करे इलाही इसे दो आलम में
बहक़्क़े आले मुह़म्मद पैग़म्बरे मदनी

*कहा येह हातिफ़े ग़ैबी ने "**फ़ज़्ल**" से हंस कर*
कि इस किताब की तारीख़ कितनी अच्छी बनी

मिला के चार सरों को निकालिये तारीख़
सरे वली सरे सूफ़ी सरे शरीफ़ो ग़नी

वली का सर "واؤ", सूफ़ी का सर "ص", शरीफ़ का सर "ش", ग़नी का सर "غ", इन चार ह़र्फ़ों को ब ह़िसाबे अबजद जोड़ देने से **सि.1396 हि.** हो जाते हैं इस त़रह़ से ....

غ ش ص و

1000 300 90 6 = सि. 1396 हि.

क़त्अ़ए साले तबाअ़त

खुदा की क़सम मुझ पे फ़ज़्ले खुदा है
कि सर पर मेरे दामने मुस्त़फ़ा है

मेरे दिल में है उल्फ़ते शाहे त़यबा
मेरे सर में सौदाए ख़ैरुल वरा है

मैं कुरबान हूं उन के नक़्शे क़दम पर
मेरा दीनो ईमान उन की अदा है

नहीं मेरे आ'माल बख़्शिश के क़ाबिल
मुझे आसरा उन का रोज़े जज़ा है

ज़ईफ़ी में इक दिन ख़याल आया मुझ को
कि अब जल्द ही मौत का सामना है

खुदा वन्द को मुंह दिखाना पड़ेगा
अ़मल ही वहां पर मदारे जज़ा है

मगर मेरे आ'माल अच्छे नहीं हैं
जराइम से आलूदा दामन मेरा है

मैं किस त़रह़ जाऊंगा दरबारे रब में
गुनाहों का सर पर मेरे टोकरा है

अचानक मेरे दिल से आवाज़ आई

न घबरा कि तेरा वसीला बड़ा है

शफ़ीए़ दो आ़लम का तू मद्ह़ ख़्वां है

तुझे उन की रह़मत से ह़िस्सा मिला है

तेरा ह़श्र इस शानो शौकत से होगा

कि तेरे लिये हर त़रफ़ मरह़बा है

ख़ुदा प्यारो रह़मत से देखेगा तुझ को

तेरे हाथ में **"सीरतुल मुस्त़फ़ा"** है

हज़ारों दुरूद इस में लिखे हैं तूने

नबी की अदाओं का येह तज़्किरा है

ख़ुदा को न क्यूं प्यार आएगा तुझ पर

कि तू मद्ह़ ख़्वाने ह़बीबे ख़ुदा है

हुई इस त़रह़ दिल को मेरे तसल्ली

कि मह़शर में अब पार बेड़ा मेरा है

हुई मुझ को जब फ़िक्रे साले त़बाअ़त

कहा मुझ से हातिफ़ ने क्या सोचता है

लिख ऐ **"आ'ज़मी"** इस का साले त़बाअ़त

शमीमे नबी **"सीरतुल मुस्त़फ़ा"** है

सि. 1397 हि.

दुआ

ऐ खुदा वन्दे जहां ऐ किरदिगार
तेरी रह़मत का हूं मैं उम्मीद वार

गो कि मैं इक बन्दए नाकारा हूं
बे कसो मजबूर हूं, बेचारा हूं

तेरी रह़मत से मगर दिलशाद हूं
ने'मतों के बाग़ का शमशाद हूं

तूने ऐसा फ़ज़्ल मुझ पर कर दिया !
रह़मतों से मेरा दामन भर दिया !

मेरी क़िस्मत इस त़रह़ नूरी हुई
सीरते ख़त्मुर्रुसुल पूरी हुई

किस ज़बां से शुक्र तेरा हो अदा
मैं तेरा बन्दा हूं, तू मेरा खुदा

ऐ खुदा जब तक रहे लैलो नहार
दो जहां में हो येह मेरी यादगार

गुन्चए उम्मीद खिल कर फूल हो !
नूर की सरकार में मक़्बूल हो

आंख रौशन पढ़ के हर दिल सैर हो
और मेरा ख़ातिमा बिलख़ैर हो

हों मेरे मां बाप या रब जन्नती
अज़ तुफ़ैले "رَبِّ هَبْ لِیْ اُمَّتِیْ"

मेरे सब उस्ताद भी अह़बाब भी
जन्नतुल फ़िरदौस पा जाएं सभी

कर दुआए "आ'ज़मी" या रब क़बूल
बहरे अस्ह़ाबे नबी आले रसूल

ماٰخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف	مطبوعہ
تفسیر الطبری	ابو جعفر محمد بن جریر الطبری ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر نسفی	عبد اللّٰہ بن احمد بن محمود النسفی ۷۱۰ھ	دار المعرفۃ بیروت
تفسیر روح المعانی	ابو الفضل شہاب الدین السید محمود الالوسی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی
تفسیر روح البیان	الشیخ اسماعیل حقی البروسوی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ
التفسیرات الاحمدیۃ	علامہ احمد ملا جیون جونپوری ۱۱۳۰ھ	پشاور
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشیری ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسی الترمذی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت
سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی
سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعیب النسائی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن یزید القزوینی ۲۷۳ھ	دار الفکر بیروت
المسند	امام احمد بن حنبل ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
الموطاء	امام مالک بن انس ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت
المستدرک للحاکم	امام ابو عبداللّٰہ محمد بن عبد اللّٰہ نیشاپوری ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت
مشکاۃ المصابیح	الشیخ ولی الدین ابی عبداللّٰہ محمد بن عبداللّٰہ ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
سنن الدار قطنی	الامام الکبیر علی بن عمر الدار قطنی ۳۸۵ھ	نشر السنۃ ملتان
فتح الباری	الامام الحافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
ارشاد الساری	ابو العباس شہاب الدین احمد القسطلانی ۹۲۳ھ	دار الفکر بیروت
مرقاۃ المفاتیح	نور الدین علی بن سلطان (ملا علی قاری) ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت
عمدۃ القاری	الامام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد العینی ۸۵۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
حاشیۃ صحیح البخاری	احمد علی السہارنفوری ۱۲۹۷ھ	باب المدینہ کراچی
حاشیۃ سنن الترمذی	احمد علی السہارنفوری ۱۲۹۷ھ	باب المدینہ کراچی
حاشیۃ سنن ابن ماجہ	عبد الغنی المجددی الدہلوی ۱۲۹۵ھ	باب المدینہ کراچی
اشعۃ اللمعات	شاہ عبدالحق محدث دہلوی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ
الشمائل المحمدیۃ	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی ۲۷۹ھ	دار احیاء التراث العربی

وفاء الوفاء	نور الدین علی بن احمد السمہودی ۹۱۱ھ	دار احیاء التراث العربی
السیرة النبویة	ابو محمد عبدالملک بن ہشام الحمیری ۲۱۳ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
دلائل النبوة	ابو بکر احمد بن حسین البیہقی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
السیرة الحلبیة	ابو الفرج نور الدین علی بن ابراہیم الحلبی ۱۰۴۴ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
الشفاء	القاضی ابو الفضل عیاض بن موسیٰ ۵۴۴ھ	مرکزاہلسنت برکات رضا
شرح الشفاء	نور الدین علی بن سلطان (ملا علی قاری) ۱۰۱۴ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
الخصائص الکبری	امام جلال الدین عبد الرحمان بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
المواہب اللدنیة	الشیخ احمد بن محمد القسطلانی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
شرح الزرقانی	محمد بن عبد الباقی الزرقانی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
الاکتفا	ابو الربیع سلیمان بن موسیٰ بن سالم الحمیری ۶۳۴ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
مدارج النبوت	شاہ عبد الحق محدث دہلوی ۱۰۵۲ھ	مرکزاہلسنت برکات رضا
سیرت رسول عربی	علامہ نور بخش توکلی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز
تاریخ الطبری	امام ابو جعفر بن جریر الطبری ۳۱۰ھ	دار ابن کثیر
الکامل فی التاریخ	ابن الاثیر ابو الحسن علی بن ابی الکرم ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
الاستیعاب	ابوعمر یوسف بن عبداللّٰہ القرطبی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
الطبقات الکبریٰ	محمد بن سعد بن منیع الہاشمی البصری ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
الاصابة	امام الحافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
اسدالغابة	عز الدین بن الاثیر ابو الحسن علی بن محمد ۶۳۰ھ	دار احیاء التراث العربی
کتاب المغازی	محمد بن عمر بن واقد ۲۰۷ھ	مؤسسة الاعلمی للمطبوعات
الاکمال	الشیخ ولی الدین ابی عبد اللّٰہ محمد بن عبد اللّٰہ ۷۴۱ھ	باب المدینہ کراچی
تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین عبدالرحمان بن ابی بکرالسیوطی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
الکامل فی ضعفاء الرجال	ابی احمد عبد اللّٰہ بن عدی الجرجانی ۳۶۵ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
فتوح الشام	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن عمر بن واقد ۲۰۷ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
الروض الانف	ابو القاسم عبد الرحمن بن عبد اللّٰہ سہیلی ۵۸۱ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز
الاشباہ والنظائر	الشیخ زین الدین بن ابراہیم ۹۷۰ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
شرح دیوان حسان	عبد الرحمان البرقوقی ۱۳۶۳ھ	باب المدینہ کراچی
مثنوی مولانا روم	مولانا جلال الدین رومی ۶۷۲ھ	مرکز الاولیاء لاہور
حیاة الحیوان الکبری	کمال الدین محمد بن موسیٰ الدمیری ۸۰۸ھ	دارالکتب العلمیة بیروت

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुबो रसाइल शो’बए कुतुबे आ’ला ह़ज़रत उर्दू कुतुब

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم فِي اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم) (कुल सफ़ह़ात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ़ (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء) (कुल सफ़ह़ात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِفِي تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوق) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मा’रूफ़ ब मल्फ़ूज़ाते आ’ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

07....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

10....आ’ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

13....अवलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान (कुल सफ़ह़ात : 1185)

17....ह़दाइके़ बख़्शिश (कुल सफ़ह़ात : 446)

18....बयाज़े पाक हुज्जतुल इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 37)

19....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान (जिल्द अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 524)

20....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान (जिल्द दुवुम) (कुल सफ़ह़ात : 495)

अ़रबी कुतुब

21.....جَدُّ الْمُمْتَارِ عَلٰی رَدِّ الْمُحْتَار (सात जिल्दें) (कुल सफ़ह़ात : 4000)

22.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی (कुल सफ़ह़ात : 458)

23.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़ह़ात : 74)

24..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़ह़ात : 62)

शो'बए तराजिमे कुतुब ﴾अ़रबी से उर्दू तराजुम﴿

शो'बए दर्सी कुतुब

15....نصاب النحو (कुल सफ़्हात : 288)

16....نصاب اصولِ حديث (कुल सफ़्हात : 95)

17....نصاب التجويد (कुल सफ़्हात : 79)

18....المحادثة العربية (कुल सफ़्हात : 101)

19....تعريفاتِ نحوية (कुल सफ़्हात : 45)

20....خاصيات ابواب (कुल सफ़्हात : 141)

21....شرح مئة عامل (कुल सफ़्हात : 44)

22....نصاب الصرف (कुल सफ़्हात : 343)

23....نصاب المنطق (कुल सफ़्हात : 168)

24....انوار الحديث (कुल सफ़्हात : 466)

25....نصاب الادب (कुल सफ़्हात : 184)

26....खुलफ़ाए राशिदीन (कुल सफ़्हात : 341)

27....قصيده برده مع شرح خرپوتی (कुल सफ़्हात : 317)

28.... كافيه مع شرح ناجيه (कुल सफ़्हात : 252)

29....अल हक़्क़ुल मुबीन (कुल सफ़्हात : 128)

30....تفسير الجلالين مع حاشيةانوار الحرمين (कुल सफ़्हात : 364)

31.... فيض الادب (कुल सफ़्हात : 228)

32.... منتخب الابواب من احياء علوم الدين (अ़रबी) (कुल सफ़्हात : 173)

शो'बए तख़रीज

01....सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का इश्क़े रसूल (कुल सफ़्हात : 274)

02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 ता 6) (कुल सफ़्हात : 1360)

03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़्हात : 1304)

04....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़्हात : 1332)

05....बहारे शरीअ़त जिल्द (सोलहवां हिस्सा) (कुल सफ़्हात : 312)

06....उम्महातुल मोअमिनीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ (कुल सफ़्हात : 59)

07....अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़्हात : 422)

08....जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़्हात : 470)

09....फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआए निस्फ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म (कुल सफ़्हात : 20)

शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा

﴾शो'बए फ़ैज़ाने सहाबिय्यात﴿

﴾शो'बए इस्लाही कुतुब﴿

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये। सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133024
MC 1226

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
- नागपुर :- सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 9326310099
- अजमेर :- 19 / 216, फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, राजस्थान, फ़ोन : 09352694586
- हुबली :- ए जे मुढोल कोम्प्लेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 09900332092
- बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यू.पी, फ़ोन : 09369023101

-: नाशिर :-

फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर,
अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

Web : www.dawateislami.net / E-mail:maktabaahmedabad@gmail.com